दीवारों के ऊपर भिनभिना रहीं थीं। एक सिरे से सब प्रफुल्लित थे—क्या पेड़-पौधे और क्या पशु-पक्षी, क्या कीड़े-मकोड़े और क्या बाल-बच्चे। पर जन-समुदाय का, वयस्क स्त्री-पुरुषों का, परस्पर एक दूसरे को सताने का व्यापार उसी प्रकार जारी था। यह वयस्क जन-समुदाय भगवान के इस धराधाम के सौन्दर्य को पवित्र और पूजनीय न समझता था। जिस सौन्दर्य की सृजना प्राणी-मात्र के उल्लास के लिए की गई थी, जो सौन्दर्य हृदय को शान्ति, एकरूपता और प्रेम की ओर आवृत्त करता है, उसी की यह जन-समुदाय उपेक्षा कर रहा था। इतना ही नहीं, वह एक दूसरे को दास्य-शृङ्खला में आबद्ध करने की योजनाओं के स्थिर करने में भी दत्त-चित्त था।

इसी प्रकार सरकारी शहर के जेलख़ाने के दफ्तर में इस बात को महत्वपूर्ण न समझा जाता था कि प्राणी-मात्र को वसन्त ऋतु का प्रसाद और उल्लास प्राप्त हुआ है, बल्कि इस बात को महत्व-पूर्ण समझा जाता था कि गत दिवस उन्हें एक नोटिस प्राप्त हुआ था, जिसमें उन्हें आदेश दिया गया था कि आज २८ अप्रेल को ६ बजे हवालात में बन्द हुए तीन कैदियों को अदालत में हाज़िर किया जाय। इन कैदियो मे एक पुरुष था और दो स्त्रियाँ। इन दोनों स्त्रियों में एक प्रधान अपराधिनी थी। उसके लिए यह आदेश था कि वह अन्य दोनों कैदियों से अलग अदालत में लाई जाय। फलतः आज २८ अप्रैल को सुबह आठ बजे प्रधान जेलर जेल के ज़नाने हिस्से के अँधेरे, बदबूदार बरामदे में पहुँचा। इसके बाद ही एक भूरे घूँघरदार बालों वाली, दुबली-पतली स्त्री बरामदे में आ

पहुँची। वह एक जाकट पहने हुए थी। जाकट की आस्तीनों पर सोने के कलाबत्तू का काम था। स्त्री की कमर में नीले रङ्ग की धारी वाली पेटी कसी हुई थी।

जेलर ने लोहे का ताला खड़काते हुए बारक का दरवाज़ा खोला। उसमें से इतनी गन्दी हवा का झोंका आया जो बरामदे की बदबू को भी मात करता था। जेलर ने सहन की ओर मुँह करके ज़ोर से कहा—'मसलोवा!' और फिर दरवाज़ा बन्द कर दिया।

खेतों की ताज़ी, स्फूर्तिदायिनी वायु जेल के सहन तक आ पहुँचती थी, पर बरामदे में आकर वह वायु ज्वर के कीटाणुओं, मैल और कोलतार की दुर्गन्धि से दब जाती थी। कोई नवागन्तुक उस सहन में आते ही विषण्ण और भग्न-हृदय हो उठता था। स्त्री वार्डर भी इसका अनुभव करती थी, यद्यपि वह इस प्रकार की दुर्गन्धि की अभ्यस्त हो गई थी। वह बाहर से आकर सहन में पैर रखते ही उदास और खिन्न हो गई।

बारक के भीतर से चहल-पहल, स्त्रियों के कण्ठ-स्वर और नङ्गे पैरों की थपथपाहट की ध्वनि आ रही थी।

जेलर ने जोर से कहा—'जल्दी करो! जल्दी करो!' इसके दो-एक मिनट के भीतर ही एक ठिगने क़द की युवती स्त्री, जिसका वक्ष-स्थल पूरी तरह उभरा हुआ था, फुर्ती के साथ क़दम रखती हुई जेलर के पास आ पहुँची। वह सफ़ेद जाकट पर भूरा कोट और पेटीकोट पहने हुए थी। उसके पैरों में मोज़े और जेल के जूते थे। उसके माथे पर एक सफ़ेद रूमाल बँधा हुआ था, जिसमें से काले बालों के दो-एक गुच्छे निकल कर ललाट पर लोट रहे थे। ऐसा

जान पड़ता था कि उन गुच्छों को वहाँ लोटने के लिए जान-बूझ कर छोड़ दिया गया था। उक्त स्त्री के मुख-मण्डल पर एक ऐसी सफेदी छाई हुई थी, जो किसी स्थान पर बहुत दिनों तक बन्द रहने वाले व्यक्तियों के मुख-मण्डल पर छा जाया करती है। वह सफेदी देख कर उन आलुओं में से फूट कर निकले हुए अङ्कुरों का ध्यान आ जाता था, जिन्हें कुछ दिनों तक भण्डार में बन्द छोड़ दिया जाता है। उसके नन्हे-नन्हें चौड़े हाथ और उरुकी कॉलर के भीतर से चमकती हुई गर्दन भी इसी रङ्ग की थी। उसके काले-काले प्रोज्ज्वल नेत्र, जिनमें से एक में ज़रा सी फुल्ली थी, उसके मुख-मण्डल के निर्जीव पीलेपन के साथ स्पष्ट विषमता स्थापित करते थे।

वह अपना सीना पूरी तरह उभार कर, ख़ूब तन कर चलती थी। वह अपना सिर तनिक पीछे की ओर करके बरामदे में जेलर के सामने जा खड़ी हुई और ठीक उसके नेत्रों की ओर देख कर, ऐसा मालूम हुआ, मानो उसके किसी भी आदेश का पालन करने के लिए उसने अपनी तत्परता प्रगट की।

जेलर दरवाज़ा बन्द करने वाला ही था कि एक झुर्रीदार चेहरे वाली वृद्धा स्त्री अपने सफ़ेद बालों वाले सिर को बाहर निकाल कर मसलोवा से बातचीत करने लगी। पर जेलर ने दरवाज़ा फिर भी बन्द कर दिया और दरवाज़े के साथ वृद्धा का सिर भी भीतर हो गया। भीतर से एक स्त्री की अट्टहास ध्वनि सुनाई दी और मसलोवा भी वारक के दरवाजे की छोटी सी झिरी की ओर देखती हुई कुछ मुस्कराई। वृद्धा स्त्री ने भीतर से झिरी पर मुँह लगा कर

भर्राए हुए स्वर में कहा—घबराने की कोई बात नहीं है। जब तुमसे सवाल-जवाब करें तो एक ही बात को बराबर दुहराते जाना और उसी पर जमे रहना, इधर-उधर की बात कुछ मत कहना।

मसलोवा बोली—कुछ भी हो, इससे बुरा दिन और क्या होगा? पर इधर हो या उधर, कुछ न कुछ निपटारा ज़रूर हो जाय।

प्रधान जेलर ने बड़प्पन भरे आत्म-विश्वास और स्फुरित विनोद के साथ कहा—हाँ, इधर हो या उधर, कुछ न कुछ निपटारा ज़रूर हो जायगा। बस, अब चलो।

वृद्धा स्त्री के नेत्र झिरी के पीछे से अदृश्य हो गए और मसलोवा ने बरामदे में क़दम रक्खा। जेलर आगे-आगे था। इस प्रकार दोनों सीढ़ियों पर से उतरे और, और भी तीव्रतर दुर्गन्धि से भरे हुए मर्दाने वार्ड से होकर जाने लगे। यहाँ की प्रत्येक वारक में से नेत्र बाहर की ओर झाँक रहे थे। ये लोग ऑफ़िस में पहुँचे, तो दो सिपाही मसलोवा को अदालत में ले जाने को मुस्तैद थे। एक क्लर्क ने, एक सिपाही को तम्बाकू का बदबूदार काग़ज़ देते हुए, मसलोवा की ओर सङ्केत करके कहा—इसे ले जाओ।

यह सिपाही निज़नी नोवगोरोड का देहाती था। उसका चेहरा लाल और चेचक के दाग़ों से भरा हुआ था। उसने काग़ज़ अपने कोट की आस्तीन में रखते हुए क़ैदी की तरफ़ आँख मारी और अपने साथी और क़ैदी दोनों को साथ लेकर चल पड़ा। ये लोग प्रवेश-द्वार को पार करके जेल के सहन के उस पार ऊबड़-खाबड़ सड़क पर जा पहुँचे।

इक्के ताँगे वाले, व्यापारी, बावर्चिनें, मज़दूर और सरकारी क्लर्क

रुक-रुक कर कैदी मसलोवा की ओर कौतूहल भरे नेत्रों से देखने लगे। कुछ ने अपने सिर हिलाए और मन ही मन कहा—"देखा न, बुरे कामो का यह नतीजा होता है ! इस अभागे से हम लोग कितने अच्छे हैं !" बच्चे रुके और उन्होंने इस बटमारिन की ओर सशङ्कित दृष्टि से देखा, पर यह सोच कर उनका डर दूर हो गया कि उसे सिपाही पकड़े हुए हैं—वह और अधिक क्षति न पहुँचा सकेगी। एक देहाती शहर में अपना कोयला बेच कर आया था, और थोड़ी सी चाय भी पी आया था। उसने क्रॉस का चिन्ह बनाया और मसलोवा को एक कूपक दिया। वह लज्जा से लाल हो उठी, उसके ओठ फरफराने लगे। यह अनुभव करके कि सबकी दृष्टि उसी की ओर उठी हुई है, उसने चारों ओर कनखियों से देखा। अपनी ओर दूसरो की दृष्टि लगी देख कर उसे मन ही मन प्रसन्नता हो रही थी। अपेक्षाकृत नवीन वायु ने भी उसे आह्लादित कर दिया था। पर वह पैदल चलने मे अनभ्यस्त हो गई थी, और बेढङ्गे जेली जूतों को पहन कर चलने-फिरने में भी उसे कष्ट हो हा था। वह एक आढ़त की दूकान के सामने से गुज़री। यहाँ कुछ कबूतर अबाध रूप से दाना चुग रहे थे ; उनमें से एक से मसलोवा का पैर लगभग छू गया और वह फड़फड़ा कर उसके कानों पर हवा करता हुआ उड़ गया। वह किञ्चित मुस्कराई, और तत्काल ही अपनी वर्त्तमान अवस्था का ध्यान करके उसने गहरी साँस ली।
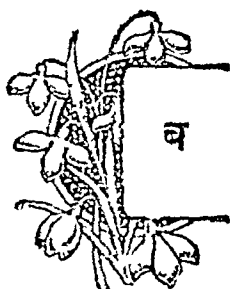
न्दी मसलोवा के जीवन की कहानी बिल्कुल साधारण सी थी।

मसलोवा की माँ एक ग्रामीण स्त्री की अविवाहिता लड़की थी। वह दो अविवाहिता धनी ज़मींदारिनियों की गोशाला में काम करती थी। इस अविवाहिता स्त्री को प्रति वर्ष एक बालक होता था। और जैसा कि ग्रामीणों में साधारणतया होता है, उसे दीक्षित करा कर भूखे मरने के लिए छोड़ दिया जाता था, क्योंकि वह उसकी माँ के काम-काज में रुकावट डालता था। पाँच बालकों के प्राण इसी प्रकार निकल गए। उन्हें दीक्षा दी गई, उसके बाद उनके खाने-पीने की सुध न ली गई, और इस प्रकार उन्हें मरने दिया गया। छठे बालक का पिता एक बदमाश नट था। इस बालक की भी वही गति होती, पर भाग्य की बात, संयोग से एक कुमारी ज़मींदारिन उस दिन गोशाला में दासियों को डाटने-डपटने आ निकली। उसने देखा कि वह स्त्री एक सुन्दर, स्वस्थ, नवजात

बालिका को लिए गोशाला में लेटी है। उस वृद्धा कुमारी ने दासियों को उसे यहाँ लेटने देने पर भी डाटा-डपटा, पर वहाँ से जाते-जाते उसका कलेजा पसीज गया और वह उस नवजात शिशु की धर्म-माता बन गई। उस नन्हीं-सी बालिका के प्रति उस कुमारी ज़मीं-दारिन का हृदय दया से अभिभूत हो गया। उसने उसे थोडा-बहुत दूध देना और उसकी माँ को कुछ रुपया-पैसा देना शुरू कर दिया, जिससे वह उसका पालन-पोषण कर सके। इस प्रकार लडकी पलती गई। वृद्धा महिलाओं ने उसे 'रामरक्खी' के नाम से पुकारना शुरू कर दिया। जब लडकी तीन बरस की हुई तो उसकी माँ बीमार पड़ी और मर गई। अब लड़की का संरक्षण वृद्धा महिलाओं ने स्वयं अपने ऊपर ले लिया।

वह नन्हीं सी काले-काले नेत्रों वाली बालिका जब कुछ बडी हुई तो अत्यन्त रूपवती निकली। उसकी सजीवता और स्फूर्ति देख-देख कर वृद्धा महिलाओं का अच्छा मनोरञ्जन होता।

दोनों महिलाओं में से छोटी महिला सोफ़िया इवानोला—जो लडकी की धर्ममाता बनी थी—अपनी बहिन की अपेक्षा कोमल हृदय की थी, मेरी इवानोला ज़रा कठोर थी। सोफिया इवानोला इस नन्हीं बालिका को अच्छे-अच्छे कपड़े पहनाती और पढ़ना-लिखना सिखाती, जिससे वह बडी होकर सम्भ्रान्त महिला बन सके। मेरी इवानोला ने उसे काम-काज में साधना चाहा। वह उसे दासी बनाना चाहती थी। मेरी इवानोला क़ायदे-क़ानून का बड़ी निर्दयता के साथ पालन करती थी, वह उस नन्हीं बालिका को दण्ड देती थी, और क्रोध आने पर मार भी बैठती थी। इस

प्रकार इन दो विभिन्न वातावरणों में लालन-पालन पाकर नन्हीं लड़की आधी महिला हो गई और आधी दासी। दोनों वृद्धा महिलाएँ उसे कट्टशा के नाम से पुकारती थीं। कट्टशा कपड़े सीती, कमरों की सफाई करती, मूर्तियों के स्थानों को खड़िया से साफ़ करती और इसी प्रकार के और बहुत से छोटे-मोटे काम करती, कभी-कभी बैठ कर महिलाओं को कुछ पढ़ कर भी सुनाती।

यद्यपि उसके विवाह के कई प्रस्ताव किए गए, पर वह राज़ी न हुई। इस परिश्रमहीन जीवन से उसका स्वभाव तो बिगड़ ही गया था, अब उसने सोचा कि इन काम-काजी आदमियों में से किसी की स्त्री बनना उसके लिए बड़ा कष्टकर होगा।

इसी प्रकार रहते-रहते वह सोलह बरस की हो गई। इसी अवसर पर वृद्धा महिलाओं का भतीजा—जो एक धनी युवक और प्रिन्स-यूनिवर्सिटी का विद्यार्थी था—अपनी बुआओं के पास आया। कट्टशा उसके प्रेम में आकण्ठ लिप्त हो गई, यद्यपि यह बात स्वीकार करने का उसे साहस न होता था।

दो बरस बाद यही भतीजा रेजिमेण्ट में जाने से पहले अपनी बुआओं के पास चार दिन के लिए आकर फिर ठहरा। वहाँ से विदा होने के पहले की रात उसने कट्टशा से अपनी भोग-लिप्सा शान्त की, और इसके बाद वह उसे सौ रूबल का नोट देकर चला गया। पाँच महीने के बाद मसलोवा को निश्चयात्मक रूप से मालूम हो गया कि वह गर्भिणी है। इसके बाद उसे सबसे घृणा हो गई। अब उसके मस्तिष्क में दिन-रात एक-मात्र यही विचार चक्कर काटता रहता था कि वह आसन्न लज्जा-ग्लानि से किस प्रकार

निस्तार पा सकेगी। उसने वृद्धा महिलाओं की सेवा न केवल ऊपरी मन से ही करनी आरम्भ कर दी, बल्कि एक बार तो वह उनसे उद्दण्डता भी कर बैठी, यद्यपि वह यह स्वयं न जान सकी कि ऐसा आचरण उससे किस प्रकार हुआ। उसने उनसे क्षमा-याचना की और उनके पास से चले जाने की अनुमति चाही। बेहद रुष्ट होकर उन्होंने उसे जाने की अनुमति दे दी। इसके बाद वह एक पुलिस-अफसर के यहाँ दासी हो गई, पर वहाँ केवल तीन महीने रह सकी। पुलिस-अफ़सर पचास बरस का बुड्ढा था। वह उससे छेड़-छाड़ करने-लगा। एक बार उसके बहुत तङ्ग करने पर कटूशा बहुत नाराज़ हुई और उसे 'कलमुँहा', 'मूर्ख' आदि कहते हुए इतनी ज़ोर से धक्का दिया कि वह गिर पडा। फलतः उस स्थान से उसे भागना पडा। अब किसी दूसरे स्थान की खोज करना व्यर्थ था, क्योंकि उसके गर्भ के दिन पूरे हो चले थे। वह एक गाँव की दाई के पास पहुँची, जो गैर-क़ानूनी शराब का व्यापार भी करती थी। उसके यहाँ बच्चे का जन्म सकुशल हो गया, पर गाँव में एक बुख़ार की रोगिणी रहती थी, जिसकी सेवा उस दाई ने की थी, अतः कटूशा भी ज्वराक्रान्त हो गई। इससे बच्चे को अनाथा-लय में भेजना पड़ा। दाई ने आकर ख़बर दी कि बच्चा तो वहाँ पहुँचने से पहले ही मर गया था। जिस समय कटूशा दाई के घर पहुँची, उस समय उसके पास कुल मिला कर एक सौ सत्ताईस रूबल थे। सत्ताईस रूबल उसने ख़ुद कमाए थे, बाकी सौ रूबल उसके भ्रष्टकर्ता ने दिए थे। दाई के घर से निकलने पर उसके पास केवल छः रूबल शेष रहे। वह रुपया-पैसा रखना न जानती

थी, अपने ऊपर जी खोल कर ख़र्च करती थी और जो कोई कुछ माँगता था, उसे भी खुले हाथों दे देती थी। दाई ने चालीस रूबल दो महीने की सेवा-शुश्रूषा के लिए, २५ रूबल बच्चे को अनाथालय तक भेजने में ख़र्च हो गए, और चालीस रूबल दाई ने गाय ख़रीदने के लिए उधार माँग लिए। बीस रूबल कपड़े-लत्तों में और मीठे पकवान में ख़र्च हो गए। अब निर्वाह के लिए पास कुछ न रहा तो कटूशा को फिर किसी स्थान की खोज करनी पड़ी। अबकी बार उसे एक फॉरेस्टर के यहाँ जगह मिल गई। वैसे फॉरेस्टर विवाहित था, पर उसने भी कटूशा पर पहले ही दिन से डोरे डालने शुरू कर दिए। वह उससे घृणा करती थी और उसे टालते रहने की चेष्टा भी। पर वह उसका स्वामी तो था ही, जी में आने पर उसे कभी भी घर से निकाल बाहर कर सकता था। साथ ही वह धूर्त भी था, उसने किसी न किसी तरह उससे बलात्कार कर ही लिया। उसकी स्त्री को इसका पता लग गया। उसने अपने पति के पास कटूशा को एक कमरे में बिलकुल अकेले पाकर मारना शुरू कर दिया। कटूशा ने आत्म-रक्षा का प्रयत्न किया तो दोनों में द्वन्द्व युद्ध हो पड़ा। अन्त में कटूशा को बिना वेतन दिए घर के बाहर निकाल दिया गया।

इसके बाद वह शहर में अपनी मौसी के यहाँ जा रही। उसका मौसा जिल्दसाज़ था। किसी जमाने में उसकी अच्छी चलती थी, पर धीरे-धीरे उसके सारे गाहक टूट गए। वह शराब पीकर घर की सारी चीजें धीरे-धीरे शराबख़ाने में दे आने लगा। मौसी ने कपड़े धोने की एक छोटी सी दूकान खोल रक्खी थी। उसी से

वह अपना, अपने बच्चों का और अपने दुराचारी पति का निर्वाह करती थी। वह कटूशा को अपनी दूकान मे स्थान देने के लिए फौरन तैयार हो गई, पर यह देख कर कि उनका जीवन कितने कष्ट और दरिद्रता के साथ कटता है, कटूशा सङ्कोच में पड गई, तब उसने रजिस्ट्री ऑफिस में किसी स्थान के लिए प्रार्थना-पत्र भेजा। यहाँ जगह जल्दी ही मिल गई। पर उसे एक ऐसी महिला के साथ काम करना था, जिसके दो लडके एक सार्वजनिक स्कूल मे पढते थे। एक सप्ताह कठिनता से बीता होगा कि बडे लडके ने—जिसकी मूँछें उभर आई थीं—पुस्तकों को आले में उठा कर रख दिया और रात-दिन कटूशा के पीछे-पीछे फिरने लगा। लडके की माँ ने सारा दोप कटूशा के माथे थोपा और उसे नोटिस दे दिया।

कहीं कोई स्थान प्राप्त करने के अनेक निष्फल प्रयत्न करने के बाद कटूशा फिर उसी रजिस्ट्री ऑफिस में आ पहुँची। यहाँ उसकी भेंट एक स्त्री से हुई। उस स्त्री की नग्न मांसल बाँहों में कडे पडे थे और उसकी अधिकाश अँगुलियाँ अँगूठियो से ढकी हुई थीं। जब उक्त स्त्री को पता लगा कि कटूशा को कोई न कोई स्थान अवश्य मिलना चाहिए तो उसने उसे अपना पता दिया और अपने घर बुलाया। कटूशा गई। उक्त स्त्री ने उसकी बडी आवभगत की, उसके सामने मीठी रोटियाँ और मीठी शराब रक्खी, और इसके बाद एक पुर्जा लिख कर नौकर को किसी के पास ले जाने को दिया। शाम के वक्त एक लम्बा सा आदमी—जिसके लम्बे-लम्बे सफेद बाल और सफ़ेद दाढी थी—आया और एकदम कटूशा के पास बैठ कर मुस्कराते हुए उसकी ओर देखने लगा। वह उसके साथ

हँसी-मज़ाक भी करने लगा। वह स्त्री उस आदमी को एक ओर ले गई। कट्टूशा के कानों में सुनाई दिया—"गाँव का ताज़ा माल है।" इसके बाद उक्त स्त्री ने कट्टूशा को बुलाया और कहा कि उक्त आदमी एक लेखक है, उसके पास बहुत सा रुपया-पैसा है, यदि वह उसके मन भा गई तो संसार में उसे किसी चीज की कमी न रहेगी। उस आदमी ने कट्टूशा को पसन्द कर लिया और उसे पचीस रूबल देकर बीच-बीच में मिलते रहने की बात कह गया। पचीस रूबल खर्च होते कितनी देर लगती है? कुछ तो उसने अपनी मौसी को रहने और खाने के दिए, और बाकी से रिबन, टोपी और बनाव-सिङ्गार की और चीज़ें खरीद डालीं। कुछ दिनों बाद लेखक ने उसे बुलवा भेजा, वह उसके पास गई। लेखक ने उसे पचीस रूबल और दिए तथा रहने को एक अलग घर दे दिया।

उसके लिए जो किराए का घर लिया गया था, उसके पड़ोस ही में एक मनचला युवक दूकानदार रहा करता था। कट्टूशा शीघ्र ही उस पर अनुरक्त हो गई। उसने यह बात लेखक से कह दी और उसका आश्रय छोड़ कर एक छोटे से घर में जा रही। दूकानदार ने कट्टूशा से विवाह करने का वायदा किया था, पर वह उससे बिना कुछ कहे-सुने काम से निज़नी चला गया। इससे कट्टूशा बिलकुल अकेली रह गई, क्योंकि दूकानदार उसे हमेशा के लिए छोड़ गया था। वह उस घर में उसी प्रकार रहना चाहती थी, पर उसे पुलिस ने इत्तिला दी कि ऐसी दशा में उसे पीली सनद (वेश्यावृत्ति का सार्टिफ़िकेट) हासिल करना होगा और डॉक्टरी परीक्षा करानी पड़ेगी। यह सुन कर वह अपनी मौसी के पास जा पहुँची। पर

मौसी ने उसकी तड़क-भड़क की पोशाक देख कर उससे दूकान का काम कराना उचित न समझा, उसकी समझ में उसकी भानजी अब उच्चतर पद पर पहुँच गई थी। कटूशा को भी यह निर्णय करने की आवश्यकता न पड़ी कि उसे धोबिन बनना है या और कुछ। वह उन पतले-पतले हाथों और बाँहों वाली स्त्रियों को—जिनमें से कई को क्षय-रोग भी हो चुका था—तपते हुए कमरे में खड़े होकर इस्तरी करते देखती और उसे उनकी अवस्था पर रह-रह कर दया आ जाती। यह सोच कर उसका हृदय काँप उठा कि उसकी भी यही दशा होगी। इस अवसर पर उसका हाथ बिल्कुल खाली हो चला था। जब उसका कोई 'सरक्षक' न मिला तो एक दलालिन उसकी सहायता करने लगी।

कटूशा ने कुछ समय पहले से ही सिगरेट पीना शुरू कर दिया था, और जब से युवक दूकानदार ने उसका परित्याग किया था, उसके मदिरापान का व्यसन भी बढ़ता जा रहा था। उसे शराब की गन्ध से उतनी अनुरक्ति नहीं थी, जितनी उसके नशे से। उसकी सहायता से वह अपने उन सारे क्लेशों और सन्तापों को भूल जाती थी और रूप के हाट में अपने ऊँचे मूल्य की ओर से निश्चिन्त रहती थी। स्वस्थ होने पर उसकी यह अवस्था न रहती थी। यदि वह सुरापान न करती तो लज्जा और ग्लानि से दग्ध हो जाती। दलालिन उसे भाँति-भाँति के स्वादिष्ट पदार्थ खिलाती। इस भोज में कटूशा अपनी मौसी को भी शामिल करती। शराब के प्याले पर प्याले उड़ते। दलालिन बार-बार उसे अपने शहर के बड़े कोठीख़ाने में ले चलने की बात कहती और वहाँ जाने की उपयोगिता तथा लाभ

की बात सुझाती। अब कटूशा के सामने दो मार्ग थे, या तो वह दुबारा किसी की नौकरी कर लेती, जिसमें उसे फिर उसी प्रकार लाञ्छित होना और सम्भवतः पुरुष-समाज की लुब्ध दृष्टि का शिकार बनना और बीच-बीच में गुप्त रूप से किसी-किसी की काम-लिप्सा की तृप्ति का साधन बनना पड़ता; अथवा वह ऐसी खुली म्ररक्षित अवस्था ग्रहण कर लेती जो क़ानून की दृष्टि में वैध था और जिसके द्वारा वह अच्छी ख़ासी आमदनी के साथ मनचाही कामवृत्ति सन्तुष्ट करती। उसने दूसरा मार्ग ग्रहण किया। उसे प्रतीत हुआ कि वह इस प्रकार अपने भ्रष्टकर्ता और युवक दूकानदार और उन सबसे बदला ले सकेगी, जिन्होंने उसे चोट पहुँचाई थी। यह निश्चय करने में उसे दलालिन के इस बात ने विशेष रूप से प्रभावित किया कि वह रेशमी, साटन या मख़मल की मनचाही पोशाकें बनवा सकेगी, और वह जो कुछ चाहेगी उसे प्राप्त करने में किसी तरह की अड़चन न पड़ेगी। उसने मन ही मन काली मख़मल की गोट वाली पीली रेशमी पोशाक—जिसका गला इतना नीचे तक कटा हुआ था कि वक्षस्थल का बहुत सा भाग खुला दिखाई देता था और जिसकी आस्तीनें बहुत छोटी-छोटी थीं—पहन कर अपनी तड़क-भड़क की कल्पना की और वह पूरी तरह इस प्रलोभन के वश में आ गई। उसने दलालिन को अपनी सनद दे दी। वह उसे उसी दिन शाम को गाड़ी में बिठा कर मास्को की कैरोलीन ऐल्बर्टोवा कीटिया के कुख्यात कोठीखाने में ले गई।

बस, उसी दिन से कटूशा मसलोवा के लिए एक ऐसे जीवन का आरम्भ हो गया, जो मानवी और दैवी विधानों के विरुद्ध घोर

पाप का जीवन था—ऐसा जीवन, जिसे सैकड़ों-हज़ारों स्त्रियों ने ग्रहण कर रक्खा है और अपनी प्रजा का मङ्गल चाहने वाली सरकार जिसको न केवल सहन ही करती है, बल्कि जिसकी अनुमति भी देती है—ऐसा जीवन, जिसका अन्त दस पीछे नौ स्त्रियों के निदारुण रोग, अपरिपक्व जरावस्था और मृत्यु के रूप में होता है।

रात-रात भर की उच्छृङ्खलताओं के बाद तीसरे पहर तक घोर निद्रा का आधिपत्य रहता। तीन और चार बजे के बीच मे गन्दे बिछौने पर अलस भाव से जागने पर बहुत सा समय सोडावाटर, कॉफी इत्यादि पीने, रात के ही कपडे और ड्रेसिङ्ग जाकट पहने कमरे में चहल-क़दम करने, खिडकी पर पड़े हुए पर्दों को हटा-हटा कर बाहर की ओर शान्त भाव से झॉकने और एक दूसरी के साथ लड़ने-झगडने मे बीतता। फिर नहाने-धोने, तेल-फुलेल से अपने शरीर और बालों को चिकना-चुपडा करने, गृहस्वामिनी के साथ पहनने की पोशाकों के ऊपर वादविवाद करने, शीशों मे अपनी सूरत-शक्ल निहारने, मुँह और भवों को रँगने, बढ़िया स्वादिष्ट भोजन करने, फिर शरीर को अधिक से अधिक नग्न रखने वाली पतली रेशमी पोशाकें पहनने, और सजे-बजे, प्रकाश से जगमगाते हुए ड्राइङ्ग-रूम में आकर बैठने का सिलसिला शुरू होता। इसके बाद मुलाक़ातियों के आने, गाने, बजाने, नाचने तथा युवा, वृद्ध और अधेड़ों के साथ, नए लड़कों और दुर्बल वृद्धों के साथ, कुमारों, विवाहितों, व्यापारियों, क्लर्कों, आर्मीनियनों, यहूदियों और तातारों के साथ; धनियों और दरिद्रों के साथ, स्वस्थों और रुग्णों के साथ, मदोन्मत्तों और विवेकयुक्त व्यक्तियों के साथ, नाज़ुक-नर्म लोगों के

साथ और ताज़े-तगड़े आदमियों के साथ, सैनिकों के साथ और नागरिकों के साथ; विद्यार्थियों के साथ और निरे स्कूली छोकरों के साथ—सभी श्रेणियों, आचरणों और आयु वाले व्यक्तियों के साथ अत्यन्त वीभत्स और विवेकहीन भाव से कामुकता का दौर-दौरा चलता। शाम से सुबह तक बराबर शोर-गुल, हँसी-मज़ाक, गाना-बजाना, सिगरेट-शराब—बीच में ज़रा भी विश्राम का नाम नहीं—और इसके बाद घोर निद्रा। इसी सिलसिले में दिन पर दिन निकल जाते और हफ्ता पूरा हो जाता। हफ्ते की समाप्ति पर सरकार द्वारा संस्थापित पुलिस के थाने में जाना होता। वहाँ सरकार के वेतनभोगी डॉक्टर कभी गम्भीरता और कठोरता के साथ, और कभी कौतुकपूर्ण उच्छृङ्खलता के साथ इन औरतों की जाँच-पड़ताल के बहाने उस स्वर्गीय सलज्जता की हत्या करते, जिसे प्रकृति ने न केवल मनुष्यों को ही आत्मरक्षा के लिए दी है, बल्कि बड़ी दयालुतापूर्वक पशु-पक्षियों तक को प्रदान की है। इसके बाद सरकारी डॉक्टर उन औरतों को उस जघन्य पाप का सिलसिला जारी रखने की लिखित अनुमति देते, जो पिछले हफ्ते वे और उनके यार करते रहे थे। इसके बाद फिर वैसा ही सप्ताह आता। क्या गर्मी, क्या जाड़ा, क्या काम के दिन और क्या छुट्टी के दिन, सारी रात वही व्यापार चलता रहता।

कट्टूशा मसलोवा ने अपने सात साल इसी तरह बिताए। इस अन्तर में उसने दो-एक बार मकान बदले, और एक बार अस्पताल की भी यात्रा कर आई। सातवें साल—जब वह अट्ठाइस बरस की हो चली—वह घटना घटित हुई, जिसके लिए उसे जेल

में रक्खा गया था और जिसके लिए—तीन महीने तक जेल के दम घोटने वाले वातावरण में चोरों और हत्यारों के बीच रखने के बाद—उस पर अब अभियोग चल रहा था।
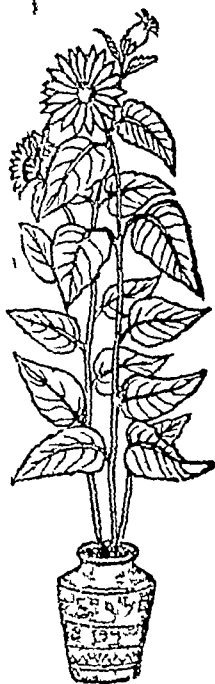
इधर मसलोवा दोनों सिपाहियों के साथ हारी-थकी न्यायालय में पहुँची, उधर उसका भ्रष्टकर्ता प्रिन्स डिमित्री इवानिच निख्ल्यूडोव अभी तक अपने ऊँचे स्प्रिङ्ग-दार पलंग पर बढ़िया इस्तरीदार कमीज़ पहने लेटा-लेटा सिगरेट पी रहा था और सोच रहा था कि आज उसे क्या करना है और कल क्या हुआ था।

उसने स्थानीय धनी और कुलीन कोरास्चेगिन परिवार के साथ, जिसकी युवती कन्या पुति उससे विवाह का प्रस्ताव सुनने की प्रतीक्षा कर रही थी, गत सन्ध्याकाल व्यतीत करने की बात स्मरण की और एक लम्बी साँस लेकर अपने हाथ का जला हुआ सिगरेट फेंकते हुए दूसरा सिगरेट निकालने को हाथ बढ़ाया, पर तत्काल ही उसने अपना इरादा बदल दिया और अपने सुडौल पैर सफेद बिछौने से नीचे रख कर स्लीपर पहने, अपने चौड़े कन्धों पर रेशमी ड्रेसिङ्ग गाउन डाला, और तेज़ी से चल कर

वह ड्रेसिङ्ग रूम में पहुँचा। यह कमरा यूडीकोलोन से महक रहा था। उसने अपने दाँतों को अच्छी तरह पाउडर से साफ किया (उसने बहुत से नकली दाँत जड़वा लिए थे) और इसके बाद सुगन्धित जल से मुँह साफ़ किया। फिर उसने सुगन्धित साबुन से हाथ साफ किए और बड़ी सावधानी के साथ नाख़ूनों को भी साफ़ किया। सङ्गमर्मर के वाश-स्टैण्ड पर मुँह और गर्दन साफ़ करके वह तीसरे कमरे में चला गया, जहाँ शावर बाथ तैयार था। उसने अपना मांसल, सफेद, हृष्ट-पुष्ट शरीर जल-स्नान से ताज़ा किया, उसे रूखे तौलिए से पोंछ कर सुखाया, अपने भीतरी कपड़े और बूट पहने तथा इसके बाद एक शीशे के सामने बैठ कर वह अपनी काली दाढ़ी और घुँघराले बालों में कङ्घी करने लगा।

उसके उपयोग के सारे पदार्थ—उसके बनाव-सिंगार से सम्बन्ध रखने वाली सारी चीज़ें—उसके कपड़े-लत्ते, बूट, नेकटाई, पिन, आभूषण—सब बढ़िया, बहुमूल्य, टिकाऊ और सादे थे। उसने भाँति-भाँति की दस टाइयों और पिनों में सबसे पहले जो हाथ में आई, उसी को उठा लिया। किसी समय यह सब उसे बड़ा रोचक और नवीन लगता था, पर अब उसे उसमें कोई अनूठी बात दिखाई न देती थी।

निख्ल्यूडोव ने अपने कपड़े पहने, जो पहले से ही ब्रुश किए हुए कुर्सी पर तैयार रक्खे थे; और इस प्रकार स्वच्छ और सुगन्धित होकर—ताजा होकर न सही—वह भोजनालय में पहुँचा। एक कमरे में, जिसका फ़र्श पिछले दिन तीन आदमियों ने रगड़-रगड़ कर साफ़ किया था, एक मेज़ लगी हुई थी, जो अपने गेर

के पञ्जों के आकार के पायों के साथ बड़ी शानदार दिखाई दे रही थी। उसके पास ही सजे हुए विशालकाय साइड बोर्ड ने कमरे की शोभा और भी बढ़ा दी थी। मेज़ पर बढ़िया कलफ़दार चादर बिछी हुई थी। उसके बीचोबीच में बड़ा सा मोनोग्राम अङ्कित था। इस पर एक चाँदी का कॉफीदान रक्खा हुआ था, जिसमें सुगन्धित कॉफी भरी हुई थी, शकरदानी सजी हुई थी, गर्म मक्खन का बर्तन लगा हुआ था, और ताज़ी रोटियों और बिस्कुटों से भरी हुई बास्केट रक्खी हुई थी। तश्तरी के पास ही Revue des Deux Mondes नामक समाचार-पत्र का ताज़ा अङ्क और कुछ पत्र रक्खे हुए थे।

निखल्यूडोव पत्र खोलने ही वाला था कि शोक-वस्त्र धारण किए एक वृद्धा स्त्री कमरे में आ पहुँची। यह ऐग्राफ़ेना पेट्रोला थी, जो निखल्यूडोव की माँ की अनुचरी का काम करती थी। उसकी गृह-स्वामिनी का शरीरान्त अभी हाल ही में इसी घर में हुआ था, और वह अब उसके पुत्र के साथ गृहसंरक्षिका की हैसियत से रह गई थी। ऐग्राफ़ेना पेट्रोला ने अपनी मृत स्वामिनी के साथ विभिन्न अवसरों पर कोई दस साल विदेश में बिताए थे, और अब वह अच्छी खासी महिला दिखाई देती थी। वह निखल्यूडोव के साथ उसके शैशव-काल से रहती आई थी, और डिमिट्री इवानिच को उस समय से जानती थी जब सब लोग उसे मिटिन्का के नाम से पुकारते थे।

"डिमट्री इवानिच, सलाम।"

"सलाम, ऐग्राफ़ेना पेट्रोला, कहो, क्या बात है ?"—निखल्यू-डोव ने पूछा।

"प्रिन्सेस के पास से एक पत्र आया है—माँ का होगा या बेटी का। दासी कुछ देर पहले लाई थी और अब वह मेरे कमरे में बैठी है।" ऐग्राफ़ेना पैट्रोवा ने मर्म भरे ढङ्ग से मुस्करा कर निख-ल्यूडोव के हाथ में पत्र देते हुए कहा।

निखल्यूडोव ने उसकी मुस्कराहट देखी और तेवर चढ़ा कर बोला—अच्छा-अच्छा, अभी ठहरो।

मुस्कराहट का अर्थ यह था कि पत्र युवती प्रिन्सेस कोरच्चे-गिन के पास से आया है। ऐग्राफ़ेना का अनुमान था कि निखल्यू-डोव उसके साथ विवाह करेगा। और उसके इस अनुमान से निखल्यूडोव को चिढ़ लगती थी।

"तो मैं उसे ठहरने को कह दूँ?" कह कर ऐग्राफेना पैट्रोवा रोटी का ब्रुश यथास्थान रख कर कमरे के बाहर चली गई।

निखल्यूडोव ने सुगन्धित पत्र खोला और पढ़ा। पत्र एक मोटे बादामी काग़ज़ पर लिखा गया था, जिसके किनारे छोटे-बड़े थे। पत्र की लिखावट अङ्गरेज़ी जैसी दिखाई देती थी। लिखा था :—

"मैं बड़ी नम्रता के साथ तुम्हें स्मरण दिलाना चाहती हूँ कि आज अप्रैल की २८ तारीख़ को तुम्हें अदालत में जूरी में सम्मि-लित होना है, और फलतः तुम हमारे और कोलोसोव के साथ चित्रशाला को न जा सकोगे, यद्यपि तुमने अपनी स्वाभाविक चञ्चलता के वशवर्ती होकर कल इसका वचन दे डाला था। हाँ, अगर तुम्हें अदालत में नियत समय पर न पहुँच सकने के दण्ड-स्वरूप ३०० रूबल अदा करने की धुन सवार हो जाय तो यह

बात दूसरी है। कल तुम्हारे चले आने के बाद यह बात मुझे स्मरण आई, इसलिए याद दिलाए देती हूँ, भूलना मत।

—प्रिन्सेस म० कोरश्चेगिन ”

पत्र के दूसरी ओर लिखा था—‘मामा कहती हैं कि तुम्हारे लिए यहाँ रात तक जगह खाली रहेगी। अवश्य आना, चाहे कितना ही समय हो जाय।

—म० को० ”

निखल्यूडोव ने पत्र पढ़ कर मुँह बिचका दिया। यह पत्र एक ऐसे कौशल-व्यापार के सिलसिले में था, जिसका प्रयोग प्रिन्सेस कोरश्चेगिन पिछले दो मास से अथक रूप से कर रही थी। वह चाहती थी कि उसके प्रति निखल्यूडोव का प्रेम-बन्धन दिनोंदिन अधिकाधिक दृढ़ होता जाय। पर निखल्यूडोव ने युवावस्था तक किसी के प्रेम के नितान्त वशवर्ती न होने के कारण विवाह नहीं किया था। अत. उसके मन में विवाह के प्रति एक सङ्कोच का भाव तो था ही, इसके अलावे और भी ऐसे कारण थे जिनकी वजह से वह इरादा होने पर भी तत्काल विवाह का प्रस्ताव न कर सकता था। कारण यह न था कि अब से दस साल पहले उसने मसलोवा को भ्रष्ट किया था और फिर उसकी कोई सुध न ली थी। वह इस घटना को बिलकुल भूल गया था, और इसे विवाह न करने का कोई प्रबल कारण भी न समझता। असल कारण यह था कि एक विवाहिता स्त्री के साथ उसका अवैध सम्पर्क था, और यद्यपि वह स्वयं उस सम्पर्क को टूटा हुआ समझता था, तथापि कम से कम वह न समझती थी।

निखल्यूडोव स्त्रियों से कुछ लजाता सा था, और उसके इस लजाने के कारण ही मार्शल ऑफ़ दी नोबिलिटी की आचार-विहीन विवाहिता स्त्री के हृदय में उस पर विजय प्राप्त करने की अभिलाषा उत्पन्न हो गई थी। यह स्त्री उससे अधिकाधिक अन्तरङ्ग सम्बन्ध स्थापित करती गई और वह उत्तरोत्तर फँसता गया; साथ ही उसकी अरुचि भी प्रबलतर होती गई। अन्त में निखल्यूडोव प्रलोभन को संवरण न कर सका, और इसके बाद वह अपने आपको अपराधी समझने लगा, पर साथ ही उस स्त्री की सहमति बिना वह उसके साथ अपना सम्पर्क तोडने का साहस भी न कर सकता था। यही कारण था जिससे वह युवती प्रिन्सेस के साथ विवाह करने की अभिलाषा रहते हुए भी ऐसा करने के लिए अपने आपको स्वतन्त्र न समझता था।

मेज़ पर रक्खे हुए पत्रों मे से एक पत्र उस स्त्री के पति का भी था। उसकी लिखावट और मुहर का चिन्ह देख कर निखल्यूडोव उत्तेजित हो उठा। उसे अनुभव होने लगा कि उसकी कार्यकारिणी शक्तियाँ जाग्रत हो रही हैं, जिस प्रकार कोई सङ्कट का अवसर आने पर वे सदैव जाग्रत हो उठती थीं।

पर उसकी उत्तेजना शीघ्र ही शान्त हो गई। मार्शल ऑफ दी नोबिलिटी ने निखल्यूडोव को केवल इतना लिखा था कि मई के अन्त में एक विशेष मीटिङ्ग होने वाली है और उसे उसमें सहायता प्रदान करने के लिए अवश्य भाग लेना चाहिए, क्योंकि उस मीटिङ्ग में स्कूलों और सडकों के प्रबन्ध के विषय में वादविवाद होने वाला है और उसमें अनुदार दल के प्रबल विरोध की आशङ्का है।

निखल्यूडोव की अधिकांश जायदाद उसी जिले में थी, जिसका मार्शल उस स्त्री का पति था।

मार्शल उदार दल से सम्बन्ध रखता था और अपने कुछ अनुयायियों को लेकर वह अनुदार विचारों की उस प्रबल बाढ़ का सामना करता था, जिसने ऐलेक्ज़ेण्डर तृतीय के समय में इतना उग्र रूप धारण कर लिया था। इस सङ्घर्ष में वह इतना तन्मय हो गया था कि उसे अपने गृह-सम्बन्धी दुर्भाग्य का गुमान तक न था।

निखल्यूडोव को याद आया कि किस प्रकार इस व्यक्ति के डर से उसे अनेकानेक भयङ्कर घड़ियाँ बितानी पड़ी थीं; किस प्रकार एक दिन उसे ऐसी धारणा हो गई थी कि उसे सारे गुप्त व्यापार का पता लग गया है और किस प्रकार वह उसे चुनौती देने वाला है; किस प्रकार उसने निश्चय कर लिया था कि वह हवा में फ़ायर कर देगा; साथ ही उसे यह भी याद आया कि जब वह स्त्री-क्षोभ से विह्वल होकर डूबने के लिए पार्क में दौड़ गई थी, तो किस प्रकार उसे उस स्त्री के कारण विकट स्थिति का सामना करना पड़ा था, और उसे उसकी देख-रेख के लिए जाना पड़ा था।

निखल्यूडोव ने सोचा—कुछ भी हो, मैं अभी न जा सकूँगा, और उसके पास से पत्र आने तक मैं कुछ न कर सकूँगा। एक सप्ताह पहले उसने उस स्त्री को एक पत्र लिखा था, जिसमें उसने अपना अपराध स्वीकार किया था और उसका प्रायश्चित्त करने के लिए तत्परता प्रकट की थी, पर साथ ही उसने यह भी घोषित कर दिया था कि अब उनके सम्बन्ध का अन्त हो गया। अन्त में उसने लिखा था—'और यह केवल तुम्हारे ही अच्छे के लिए है'। इस पत्र

का उत्तर उसे अभी तक प्राप्त न हुआ था, और इसे वह शुभ लक्षण समझता था, क्योंकि यदि वह सम्बन्ध तोड़ने को राजी न होती तो उसे तत्काल पत्र लिखती या खुद आती, जैसा कि वह पहले भी कर चुकी थी। निखल्यूडोव ने सुना था कि एक अफ़सर उसके प्रति बेतरह आकृष्ट हो गया है। इससे निखल्यूडोव के हृदय में ईर्ष्या का उद्रेक तो हुआ, पर साथ ही प्रोत्साहन भी मिला कि अब वह इस व्यथाकारी दुराचरण से निस्तार पा सकेगा।

दूसरा पत्र उसके थनैत के पास से आया था। इसमें उसने लिखा था कि जिस जायदाद का वह स्वामी बनने वाला है, उसमें उसे एक बार दौरा अवश्य कर आना चाहिए। उसने यह भी लिखा कि उसे तय कर लेना चाहिए कि वह जायदाद का प्रबन्ध पहले ही की तरह रहने देना चाहता है या जो ज़मीन अब तक किसानों को लगान पर दी गई है, उसे वह अपना खेती-बाड़ी का सामान बढ़ा कर खुद जोतना पसन्द करेगा। थनैत ने लिखा कि यह पिछली योजना उसके लिए कहीं अधिक लाभकारी सिद्ध होगी। मृत प्रिन्सेस को भी उसने कई बार यही राय दी थी। साथ ही उसने यह क्षमा-प्रार्थना की कि पहली तारीख़ तक वह तीन हज़ार रूबल न पहुँचा सकेगा। यह रुपया वह दूसरी डाक से रवाना करेगा। उसने इस विलम्ब का कारण यह बतलाया कि उसे किसानों से नियत समय पर रुपया न मिल सका। उसका कहना था कि किसान अब इतने बेईमान हो गए हैं कि रुपए वसूल करने में जब तक सरकारी अफ़सरों की सहायता नहीं ली जाती, तब तक वे रुपया देने का नाम ही नहीं लेते।

इस पत्र से निखल्यूडोव को हर्ष भी हुआ और विषाद भी। हर्ष यह सोच कर हुआ कि वह इतनी विशाल सम्पत्ति का स्वामी है और विषाद इस कारण हुआ कि वह हर्बर्ट स्पेन्सर का बड़ा भक्त था। वह अतुल सम्पत्ति का उत्तराधिकारी था ही, अतः वह हर्बर्ट स्पेन्सर की पुस्तक 'सामाजिक सङ्गठन' के इस तथ्य से विशेष रूप से प्रभावित हुआ था कि भूमि पर अलग-अलग व्यक्तियों का अधिकार रहना न्याय के अनुकूल नहीं। यौवन के जोश में उसने इस सिद्धान्त को केवल स्वीकार ही नहीं किया था, बल्कि उसने अपने पिता से प्राप्त हुई पाँच सौ एकड़ ज़मीन देहातियों को दे भी डाली थी। अब जब उसके लिए अपनी माता की अतुल सम्पत्ति का उत्तराधिकारी बनने का समय आया तो उसके सामने फिर यह समस्या उपस्थित हुई कि या तो वह अपनी माता की सम्पत्ति को भी उसी प्रकार दे डाले जिस प्रकार अब से दस साल पहले उसने अपने पिता की सम्पत्ति दे डाली थी अथवा वह इस बात को चुपचाप स्वीकार कर ले कि उसके पूर्व विचार और धारणाएँ भ्रान्त और असत्य थीं।

वह पहली बात न चुन सका, क्योंकि उसके पास जीवन-निर्वाह के लिए स्थावर सम्पत्ति के अतिरिक्त और कुछ न था (और सरकारी नौकरी करने की उसे रुचि न थी)। साथ ही उसने आमोद-प्रमोद का अभ्यास डाल लिया था, जिसका वह सहज ही परित्याग न कर सकता था। इसके अलावा उसकी पहले जैसी प्रवृत्तियाँ भी न रही थीं, उसके दृढ सङ्कल्प, उसकी युवावस्था सुलभ दृढता, और कोई न कोई असाधारण काम कर दिखाने की

उसकी आकांक्षा अब जाती रही थी। रही दूसरी बात, जिसे उसने हर्बर्ट स्पेन्सर की पुस्तक 'सामाजिक सङ्गठन' से सीखी थी और जिसके स्पष्ट और अकाट्य प्रमाणों को हेनरी जॉर्ज की पुस्तक ने पीछे से और भी पुष्ट कर दिया था—अर्थात् भूमि पर से व्यक्तिगत अधिकार उठा लेने की बात—सो यह उसके लिए असम्भव था। और यही कारण था कि जो उसे अपने थनैत के पत्र से विषाद हुआ था।

फ़ी पी चुकने के बाद निखल्यूदोव अपनी अध्ययनशाला में गया। वह यह देखना चाहता था कि उसे अदालत में किस समय उपस्थित होना है, और साथ ही प्रिन्सेस को उत्तर भी देना चाहता था। चित्रशाला में से गुज़रते हुए उसने चौखटे में लगा हुआ एक अपूर्ण चित्र देखा। कुछ चित्र दीवारों पर भी टँग रहे थे। इन चित्रों को देख कर इसे कला-विषयक प्रगति में अपनी असमर्थता की अनुभूति हुई। इधर कुछ समय से उसके हृदय में इस प्रकार के भाव विशेष ज़ोर पकड़ने लगे थे, परन्तु वह समझता था कि उसकी सौन्दर्य-शास्त्र विषयक आवश्यकता से अधिक परिष्कृत अभिरुचि ही इसका कारण थी। चाहे जो हो, इस प्रकार के भावों से उसे क्षोभ अवश्य होता था। अब से सात साल पहले उसने सैनिक कार्यक्षेत्र का परित्याग कर दिया था। उस समय उसका विश्वास था कि उसमें कला सम्बन्धी प्रतिभा है। वह अपनी कला के उत्तुङ्ग दृष्टि-कोण से संसार के अन्य सारे कार्यों को तुच्छ दृष्टि से देखता था। पर

अब उसे पता चला कि उसे ऐसा करने का कोई अधिकार न था, और फलतः इन सारी बातों का स्मरण कराने वाली किसी बात से वह क्षुब्ध हो उठता था। उसने चित्रशाला के राजसी ठाट-बाट को खिन्न भाव से देखा और जिस समय वह सजी-धजी, साफ-सुथरी और सुखमयी दिखाई देने वाली अपनी विशाल अध्ययनशाला में पहुँचा उस समय उसका चित्त नाम-मात्र को भी प्रफुल्लित न था। उसे अपनी लिखने की मेज़ के एक खाने में, जिस पर 'बहुत ज़रूरी' लिखा हुआ था, अदालत का सम्मन मिल गया। उसे अदालत में ग्यारह बजे उपस्थित होना था।

निखल्यूडोव प्रिन्सेस को उत्तर देने बैठ गया। उसने प्रिन्सेस को निमन्त्रण के लिए धन्यवाद दिया और वादा किया कि वह भोजन के समय आने का प्रयत्न करेगा। यह पत्र लिखने के बाद उसने उसे फाड डाला, क्योंकि वह उसे विशेष अन्तरङ्ग प्रतीत हुआ। उसने दूसरा पत्र लिखा, पर वह बहुत शुष्क था; उसे आशङ्का हुई कि कहीं इससे प्रिन्सेस बुरा न मान जाय; अतः उसने वह भी फाड कर फेंक दिया। उसने घण्टी बजाई और घण्टी की आवाज़ के साथ ही उसका गलमुच्छों वाला विपण्ण वयस्क नौकर कमरे में आ पहुँचा।

"गाड़ी मँगाओ।"

"बहुत अच्छा।"

"और कोरश्चेगिन के यहाँ से आई हुई दासी से कहो कि मैं उनके निमन्त्रण के लिए धन्यवाद देता हूँ और आने की चेष्टा करूँगा।"

"बहुत अच्छा।"

निखल्यूडोव ने मन ही मन कहा—"काम कुछ अधिक सौजन्य का न हुआ, पर मैं लिखने में असमर्थ हूँ; फिर भी आज मैं उससे भेंट अवश्य करूँगा।" यह निश्चय करके वह ओवर पहनने चला गया।

वापस आने पर उसने देखा, एक परिचित गाड़ी वाला दरवाज़े पर खड़ा उसकी प्रतीक्षा कर रहा है। इस गाड़ी वाले को वह अच्छी तरह पहचानता था। गाड़ी वाले ने आधा मुड़ कर कहा—"कल आप प्रिन्स कोरश्चेगिन के यहाँ से गए ही थे कि मैं गाड़ी लेकर दरवाजे पर आ खड़ा हुआ। पीछे दरबान से मालूम हुआ कि अभी गए हैं।" गाड़ी वाला जानता था कि निखल्यूडोव कोरश्चेगिन-परिवार में जाया करता है और उसने भाड़े की आशा में वहाँ का फेरा लगाया था।

निखल्यूडोव ने सोचा—"ये किराए की गाड़ियाँ हाँकने वाले तक जानते हैं कि कोरश्चेगिन-परिवार के साथ मेरा क्या सम्बन्ध है!" और एक बार फिर उसके मन में प्रश्न उठा कि क्या उसे प्रिन्सेस कोरश्चेगिन के साथ विवाह न कर लेना चाहिए? वह इस प्रश्न का उत्तर भी उन अनेक प्रश्नों के उत्तर की भाँति ही, जो उस समय उसके मन में उठ रहे थे, न दे सका।

विवाह के अनुकूल तर्कों में घर-गृहस्थी के सुख-चैन की बात तो थी ही, इसके अलावा वह यह भी सोचता था कि विवाह कर लेने से उसके लिए नैतिक जीवन व्यतीत करना सम्भव हो जायगा। और सबसे बड़ी बात तो यह थी कि परिवार और बाल-बच्चों के

होने से उसके उद्देशहीन जीवन का एक निश्चित लक्ष्य हो जायगा। कम से कम निखल्यूडोव को यही आशा थी। विवाह के विरुद्ध जो बाते उसके मन में उठती थीं, उनमें एक बात यह थी—और जो व्यक्ति युवावस्था बीत जाने तक विवाह नहीं करता, उसके मन में यह बात स्वभावत: ही उठा करती है—कि कहीं वह अपनी स्वतन्त्रता से वञ्चित न हो जाय। साथ ही उस रहस्यमयी स्त्री-जाति की ओर से उसके हृदय में एक प्रकार का अचेतन भय भी था।

मिसी के साथ (वैसे प्रिन्सेस कोरश्चेगिन का असली नाम मेरी था, फिर भी विशिष्ट वर्गों के चलन के अनुसार उसका एक उपनाम भी रख दिया गया था) विवाह करने के पक्ष में यह विचारणीय बात थी कि वह सद्कुलोत्पन्न थी और बोलने-चालने में, चलने-फिरने में, हँसने-मुस्कराने में—कहने का मतलब यह कि सभी बातों में वह साधारण श्रेणी के व्यक्तियों से बिल्कुल भिन्न थी (किसी असाधारण गुण के कारण नहीं, बल्कि अपने 'सस्कृत-संस्कारों' के कारण—वह इसके लिए इससे अच्छा कोई शब्द ही न पा सका, यद्यपि उसकी दृष्टि मे इन 'संस्कारों' का बहुत बड़ा मूल्य था)। इसके अतिरिक्त मिसी और किसी पुरुष की अपेक्षा निखल्यूडोव का ध्यान अधिक रखती थी और इससे स्पष्ट था कि वह उसके गुणों से परिचित हो गई थी। मिसी की यह अवगति—अर्थात उसे निखल्यूडोव की उत्कृष्टता का ज्ञान होना निखल्यूडोव की दृष्टि मे उसकी बुद्धि-विवेक का परिचायक था। परन्तु उसके साथ विवाह करने के सम्बन्ध में एक विचारणीय बात यह भी थी

कि उससे भी अधिक सद्‌गुणशील लड़की का मिलना सम्भव था, और उसकी उम्र भी सत्ताईस वर्ष की हो चली थी, और सम्भवतः निखल्यूडोव ही एक ऐसा व्यक्ति न था जिसके साथ उसने पहली बार प्रेम किया था। इस अन्तिम बात के विचार मात्र से उसे पीड़ा होती थी। उसका गर्वपूर्ण स्वभाव उसे इस विचार को सहन करने की तनिक अनुमति न देता था कि मिसी ने किसी और से भी प्रेम किया था, चाहे अतीत काल में ही सही। इस बात के विचार मात्र से निखल्यूडोव को रोष हो उठता था कि मिसी किसी अन्य पुरुष से प्रेम करने में भी समर्थ हो सकती थी। इस प्रकार निखल्यूडोव के पास उसके साथ विवाह करने के पक्ष में जितने तर्क थे, उतने ही उसके विपक्ष में भी थे। कम से कम उसकी दृष्टि में दोनों का पलड़ा बराबर था, और इस बात को सोच कर वह मन ही मन हँसा करता था और अपने आप को कहानी में वर्णित उस गधे के समान समझता था जो यह निश्चय न कर सका था कि किस घास के बोझे की ओर मुड़े।

उसने स्वगत कहा—"कुछ भी हो, जब तक मेरी—वेसलीटना (मार्शल-पत्नी) के पास से उत्तर न आ जायगा और जब तक उसके साथ पूरा निबटारा न हो जायगा, मैं कुछ न कर सकूँगा।" इस विचार से कि वह अपने निर्णय में विलम्ब भी कर सकता है, और उसे करना चाहिए, उसे बड़ी सुख-सान्त्वना का बोध हुआ। "ख़ैर, इन सारी बातों पर फिर ग़ौर करूँगा।" इतने में गाड़ी न्यायालय के फर्श पर जा खड़ी हुई।

"अब मुझे अपने सार्वजनिक कर्त्तव्य का विवेक के साथ पालन

करना चाहिए, यही मेरी आदत है, और इसी को मैं उचित समझता हूँ। इसके अलावा कभी-कभी मामला भी बड़ा दिलचस्प हो जाता है।" यह सोचते हुए द्वार-रक्षक के पास से होकर वह न्यायालय के हॉल में जा पहुँचा।

दालत के बरामदों में चहल-पहल जारी थी। नौकर हाँफते-हाँफते हाथों में काग़ज़ पकड़े या सन्देशे लिए इधर से उधर दौड़-धूप कर रहे थे। ऐडवोकेट और क़ानूनी अफसर इधर से उधर और उधर से इधर घूम-फिर रहे थे। प्रार्थी और ज़मानत पर छूटे हुए अभियुक्त खिन्न भाव से घूम रहे थे या दीवारों के सहारे बैठे हुए प्रतीक्षा कर रहे थे।

निखल्यूदोव ने एक अर्दली से पूछा—अदालत कहाँ है?

"कौन सी? यह दीवानी है और यह फौजदारी है।"

"मैं जूरी में हूँ।"

"तो फौजदारी से आपका मतलब है। इधर दाहिनी तरफ़ जाइए, फिर बाईं तरफ मुड़ कर दूसरा दरवाज़ा।"

निखल्यूदोव उसी ओर चला। बताए हुए दरवाज़े पर दो आदमी खड़े थे। उनमें से एक लम्बे कद का मृदुल स्वभाव व्यापारी था। उसके मुख की उत्फुल्लता से स्पष्ट था कि उसे कुछ जलपान और थोड़ी सी शराब मिल गई है। दूसरा यहूदी जाति का एक दूकान-

दार था। दोनों ऊन की दर के विषय में बातचीत कर रहे थे। इसी समय निखल्यूडोव ने उनके पास आकर पूछा—"क्या जूरी का कमरा यही है?"

"हाँ महोदय, यही है। आप भी हमीं में से हैं न? जूरी में?"—व्यापारी ने उल्लसित भाव से आँख मार कर कहा।

जब निखल्यूडोव ने स्वीकारोक्ति-सूचक उत्तर दिया तो व्यापारी ने फिर कहना आरम्भ किया—"अच्छा तो फिर हमें एक साथ काम करने का मौका मिलेगा। मेरा नाम बकलाशोव है। मैं सैकिएट गिल्ट का व्यापारी हूँ।" उसने अपना चौड़ा, मुलायम हाथ बढ़ाते हुए कहा—"क्या मैं जान सकता हूँ, ... मुझे किसके साथ बात करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है?"

निखल्यूडोव ने अपना नाम बताया और फिर वह जूरी के कमरे में चला गया।

कमरे में विभिन्न प्रकार के लगभग दस आदमी मौजूद थे। वे सब हाल ही में वहाँ पहुँचे थे, कुछ बैठे थे, कुछ इधर-उधर चहल-कदमी करते हुए एक-दूसरे की ओर देख रहे थे और परस्पर मेल-मुलाकात कर रहे थे। उनमें एक रिटायर्ड कर्नल वर्दी पहने था, और बाकी फ्रॉक कोट या मॉर्निङ्ग कोट पहने हुए थे। एक देहाती केवल सीधा-सादा अँगरखा पहने था। उन सबके चेहरों पर अपना सम्भावित कर्त्तव्य पालन करने की सन्तोष-मुद्रा विराज रही थी, परन्तु उनमें से बहुत से अपना-अपना काम छोड़ कर आए थे और इसकी शिकायत कर रहे थे।

जूरर आपस में वसन्त ऋतु के असामयिक आगमन और काम-

काज की बातें कर रहे थे। उनमें से कुछ ने आपस में एक-दूसरे का परिचय प्राप्त कर लिया था, बाकी अनुमान लगा रहे थे कि कौन-कौन क्या-क्या है। जिन्होंने निखल्यूडोव से परिचय नहीं किया था, उन्होंने झटपट परिचय प्राप्त किया और इसमें अपना गौरव समझा। निखल्यूडोव ने इसे अपने न्याय्य स्वत्व की तरह ग्रहण किया, जैसा कि वह अपरिचितों के बीच में जा पहुँचने पर सदा ही किया करता था। यदि उससे पूछा जाता कि वह अधिकांश जन-समुदाय की अपेक्षा अपने आपको उच्चतर क्यों समझता है, तो शायद वह खुद उत्तर न दे सकता। इधर कुछ दिनों से वह जिस ढङ्ग का जीवन बिता रहा था वह कुछ विशेष श्लाघ्य न था। वह अच्छी तरह जानता था कि उसका अङ्गरेजी, जर्मन, फ्रेञ्च आदि भाषाएँ तद्देशीय उच्चारणों के अनुसार बोल सकना या बहुमूल्य वस्त्र, टाई और आभूषण पहनना ही उसकी उच्चता का कारण नहीं हो सकता। पर साथ ही वह अपनी उच्चता प्रतिपादित करने और दूसरों के आदर-सम्मान को अपने न्याय्य अधिकार की तरह ग्रहण करने का प्रयत्न करता था और आदृत-सम्मानित न होने पर दिल ही दिल में कुढ़ता था। यहाँ जूरी के कमरे में यह देख कर कि लोग उसका सम्मान नहीं कर रहे हैं, उसके भावों को आघात पहुँचा। उस दिन की जूरी में संयोगवश एक ऐसा आदमी भी था, जिसे वह अपनी बहिन के बालकों के शिक्षक की हैसियत में देख चुका था। उसका नाम था जीरासिमोविच। निखल्यूडोव उसका राशि का नाम न जानता था और इसके लिए अपने आपको बड़प्पन भी देता था। अब यह आदमी एक पब्लिक स्कूल का मास्टर था। निखल्यूडोव

उसके घनिष्ठता-द्योतक आचरण को, उसके आत्मविश्वासपूर्ण हास्य को—संक्षेप में—उसकी बर्बरता को न सह सका।

जीगासिमोविच ने अट्टहास-ध्वनि के साथ निखल्यूडोव का इन शब्दों में अभिवादन किया—अच्छा, आज तुम भी आ फंसे। तुम इसमें से खिसक नहीं सके ?

निखल्यूडोव ने विषण्ण भाव से और किञ्चित कठोरतापूर्वक कहा—मैंने कभी खिसकने की कोशिश नहीं की।

"और क्या ! मैं इसी को तो लोक-हितैषणा के नाम से पुकारता हूँ। पर घबरायो नहीं, जब भूख लगेगी और नींद आएगी तो तुम कोई दूसरा ही राग अलापोगे।"

निखल्यूडोव ने मन ही मन कहा—"यह पादरी का बच्चा थोड़ी देर बाद मुझे 'तू' कह कर पुकारने लगेगा।" यह सोच कर वह वहाँ से इस प्रकार की शोक-मुद्रा बना कर चला गया, मानो उसे अपने किसी सम्बन्धी की मृत्यु का समाचार मिला हो। वहाँ से हट कर वह एक ऐसी मण्डली के पास आ खड़ा हुआ, जो एक लम्बे क़द के रोबदार आदमी के चारों ओर खड़ी हुई थी। यह आदमी बड़ी सजीवता के साथ कोई बात सुना रहा था। वह दीवानी अदालत के एक ऐसे मामले का ज़िक्र कर रहा था, जिसमें उसे ख़ूब जानकारी थी। वह उस अदालत के जजों और एक प्रसिद्ध ऐडवोकेट का नाम बड़ी घनिष्ठता के साथ लेता था। उसकी कहानी का आशय यह था कि किस प्रकार उक्त प्रसिद्ध ऐडवोकेट ने एक मामले का रुख़ इतनी चतुरता के साथ मोड़ दिया था कि एक

वृद्धा महिला को—स्वयं अपना न्याय्य अधिकार रहने पर भी—उल्टे अपने प्रतिपक्षी को बड़ी सी रकम अदा करनी पड़ी।

उसने कहा—उस ऐडवोकेट का दिमाग गज़ब का है।

श्रोताओं ने सारी बात बड़े आदर के साथ ध्यानपूर्वक सुनी और उनमें से कुछ ने कुछ कहने की चेष्टा की, पर उक्त रोबदार व्यक्ति ने उन्हें बीच ही में रोक दिया, मानो उस मामले के सम्बन्ध में अकेला वही सारी बातें जानता हो।

यद्यपि निखल्यूदोव देर से आया था, फिर भी उसे प्रतीक्षा करनी पड़ी। अदालत का एक सदस्य अभी तक न आया था और सब उसकी बाट देख रहे थे।

अदालत का प्रेसीडेण्ट जल्दी ही आ गया था। वह एक लम्बे क़द का भारी-भरकम आदमी था, जिसकी लम्बी-लम्बी सफ़ेद गलमुच्छें थीं। विवाहित होने पर भी उसका जीवन बड़ा असंयत था, उसकी स्त्री की भी यही दशा थी, अतः दोनों में से कोई किसी के मार्ग में रुकावट न डालता था। आज सुबह उसे एक स्विस छोकरी के पास से पत्र मिला था। यह छोकरी पहले इसी के परिवार में अध्यापिका का कार्य करती थी और अब वह दक्षिणी रूस से पीटर्सबर्ग जा रही थी। उसने उसे लिखा था कि वह पाँच से छः बजे तक होटल इटालिया में उसकी बाट देखेगी, इसीलिए प्रेसीडेण्ट को जल्दी से जल्दी अदालत का काम समाप्त करने की चिन्ता थी, जिससे वह लाल बालों वाली क्लेरा वेसिलीटना से छः बजे से पहले-पहले मिल सके। इस छोकरी के साथ उसने पिछली गर्मियों में देहात में बाक़ायदा एक रसीली प्रेम-लीला आरम्भ कर दी थी। वह अपने प्राइवेट कमरे में पहुँचा

और दरवाज़ा भीतर से बन्द करके उसने एक जोड़ी डम्बल निकाले। उन्हें बीस बार ऊपर-नीचे, दाएं-बाएं हाथ घुमाने के बाद डम्बलों को सिर के ऊपर उठा कर उसने तीन बार अपने घुटने झुकाए।

उसने अपनी बाँह की रगों को बाएँ हाथ से—जिसकी तीसरी अँगुली में वह सोने की अँगूठी पहने था—टटोलते हुए कहा—"बस, ठण्डे जल से स्नान करने और व्यायाम करने से शरीर में जो स्फूर्ति रहती है वह और किसी चीज़ से नहीं रहती।" उसे अभी बैठकें और करनी थीं (वह ये दो कसरतें करने से पहले कभी अदालत में नहीं बैठता था) कि दरवाज़े पर थपथपाहट हुई। उसने डम्बल रख दिए। दरवाज़ा खोला और कहा—"मुझे खेद है कि मैंने आपको इतनी देर तक रोक रक्खा।"

एक ऊँचे कन्धों वाला असन्तुष्ट सा आदमी—जो अदालत का सदस्य था—कमरे में आ पहुँचा।

उसने असन्तोषपूर्ण स्वर में कहा—हज़रत मैथ्यू निकिटिच अभी तक नहीं आए।

प्रेसीडेण्ट ने अपनी वर्दी पहनते हुए कहा—अभी तक? वह हमेशा देर करके आते हैं।

आगन्तुक सदस्य ने बैठ कर सिगरेट निकालते हुए रोषपूर्ण स्वर में कहा—मेरी समझ में नहीं आता कि उन्हें अपनी आदत पर शर्म क्यों नहीं आती।

यह सदस्य क़ायदे-क़ानून का बड़ा पाबन्द था। आज सुबह-सुबह उसकी अपनी बीबी के साथ खटक गई थी। बीबी ने मासिक

वेतन का सब रुपया महीना समाप्त होने से पहले ही ख़र्च कर डाला था, अब उसने और रुपया माँगा तो सदस्य ने देने में असमर्थता प्रगट की; बस इसी पर दोनों में चल गई। बीबी ने साफ़-साफ़ कह दिया कि यदि उसने ऐसा रङ्ग-ढङ्ग बर्ता तो उसे पकी-पकाई रोटियाँ मिलने से रहीं, आज चूल्हे में आग भी न सुलगेगी। इसके बाद ही वह सदस्य घर से चला आया था; उसे मन ही मन आशङ्का हो रही थी कि कहीं उसकी बीबी अपनी धमकी पूरी न कर डाले, क्योंकि वह सब कुछ कर सकती है। उसने स्वस्थ और सबल शरीर वाले प्रेसीडेण्ट की ओर देखा, जो अपनी वर्दी के सुनहरे कॉलर पर फैली हुई सफ़ेद गलमुच्छों को अपने सफ़ेद हाथों से चिकना रहा था। उसने मन ही मन कहा—सुन्दर, सदाचारपूर्ण जीवन व्यतीत करने से क्या होता है सो देखा! यह हमेशा प्रसन्नचित और सन्तुष्ट रहते हैं, मैं हर वक़्त जल-भुन रहा हूँ।

सेक्रेटरी कोई कागज लेकर भीतर आ पहुँचा। प्रेसीडेण्ट ने सिगरेट सुलगाते हुए कहा—धन्यवाद! पहले किसका नम्बर है?

सेक्रेटरी ने उदासीन भाव से कहा—विष वाले मामले का!

प्रेसीडेण्ट ने सोचा, चार बजे तक विष वाला मामला समाप्त हो जायगा और इसके बाद वह क्लिस छोकरी से मिलने जा सकेगा। बोला—अच्छी बात है, यही सही। और हाँ, मैथ्यू निकिटिच अभी आए या नहीं?

"अभी नहीं।"

"और ब्रीव?"

"वह यहीं हैं"—सेक्रेटरी ने उत्तर दिया।

"तो उनसे मिलने पर कह देना कि विष वाला मामला पहले शुरू होगा।"

ब्रीव पब्लिक प्रॉसीक्यूटर था और यह मामला इसी के हाथ में था। बरामदे में सेक्रेटरी को ब्रीव मिल गया। वह कन्धे उचकाए एक बगल में कोर्ट फ्रोलियो दबाए और दूसरे हाथ की हथेली को सामने किए उसे हिलाता-डुलाता बरामदे में शीघ्रतापूर्वक जा रहा था।

सेक्रेटरी ने पूछा—माइकेल पैट्रोविच जानना चाहते हैं कि क्या आप तैयार हैं?

पब्लिक प्रॉसीक्यूटर ने कहा—बिल्कुल। मैं हर वक्त तैयार रहता हूँ। पहले कौन से मामले की सुनवाई होगी?

"विष वाले मामले की।"

पब्लिक प्रॉसीक्यूटर ने कहा—"हाँ, वही ठीक भी रहेगा।" पर वास्तव में वह उसे ठीक न समझता था। उसने पिछली रात एक होटल में अपने मित्र के साथ—जो एक अफ़सर को विदाई का भोज दे रहा था—ताशबाज़ी करने में बिताई थी। सुबह के पाँच बजे तक ताशबाज़ी और मदिरापान का सिलसिला चलता रहा था। फल-स्वरूप उसे इस विष वाले मामले का अध्ययन करने का अवसर न मिला था। अत: अब वह उस पर एक सरसरी निगाह डाल लेना चाहता था। सेक्रेटरी को किसी प्रकार यह सारा व्यापार ज्ञात था और इसीलिए उसने प्रेसीडेण्ट को पहले विष वाला मामला

शुरू करने की सलाह दी थी। सेक्रेटरी उदार दल का था। ब्रीव अनुदार दल से सम्बन्ध रखता था और प्राचीन मत की ओर विशेष रूप से झुका हुआ था। इसलिए सेक्रेटरी को वह फूटी आँख न सुहाता था। वह उसके इस पद को ईर्ष्या की दृष्टि से देखता था।

सेक्रेटरी ने पूछा—हाँ, और स्कोप्स्की सम्प्रदाय वाले मामले का क्या समाचार है?

"मैं पहले ही कह चुका हूँ कि गवाहों के बिना मैं उस मामले को न उठा सकूँगा। मैं अदालत से भी यही बात कह दूँगा।"

"फिर भी क्या बात हुई?"

"मैं इस मामले को न उठा सकूँगा।"—ब्रीव ने ज़ोर से अपनी बाँह हिला कर कहा। इसके बाद वह तेज़ी से पैर बढ़ा कर अपने प्राइवेट कमरे में चला गया।

वह स्कोप्स्की सम्प्रदाय के मामले को एक नगण्य से गवाह की अनुपस्थिति के कारण टाल रहा था, पर वास्तविक कारण यह था कि यदि इस मामले का विचार विद्वान जूरों के हाथ में पड़ गया तो सारे अभियुक्त छूट जाएँगे। फलतः उसने प्रेसीडेण्ट से सहमति प्राप्त कर ली थी कि यह मामला आगामी सेशन में एक प्रान्तीय शहर में शुरू किया जाय। वह समझता था कि ऐसे शहर में अधिकतर देहाती जूरर रहेंगे और इसलिए अभियुक्तों के दण्डित होने की सम्भावना अधिक रहेगी।

बरामदे की चहल-पहल उत्तरोत्तर बढ़ती गई। लोग-बाग अधिकतर दीवानी अदालत के दरवाज़े पर जमा हो रहे थे। इन

समय वहाँ उसी मामले की सुनवाई हो रही थी, जिसका ज़िक्र उस रोबदार आदमी ने किया था।

मुक़दमा कुछ देर के लिए मुल्तवी हो गया। फिर अदालत के कमरे से वह वृद्धा स्त्री निकली, जिसकी सम्पत्ति उस प्रतिभा-सम्पन्न ऐडवोकेट ने क़ानूनी कौशल के द्वारा अपने अनधिकारी मुवक्किल को दिलवा दी थी। जज सारे मामले को अच्छी तरह जानते थे, पर ऐडवोकेट और उसके मुवक्किल की जो कौशलमय युक्ति पेश थी वह ऐसी अकाट्य थी कि वृद्धा महिला की सम्पत्ति उससे छिन कर कानून-पटु व्यक्ति के हाथ में पहुँच जाने के सिवा और कोई चारा ही न था।

वृद्धा स्त्री मोटी-ताज़ी थी और बढ़िया कपड़े पहने हुए थी। उसके टोपे में बहुत से फूल खुँसे हुए थे। वह दरवाज़े के बाहर निकल कर रुकी और अपनी दोनों बाँहें फैला कर अपने ऐड-वोकेट से बार-बार कहने लगी—यह सब क्या हो रहा है? यह कैसा ढोंग है?

उसका ऐडवोकेट चुपचाप उसके टोपे के फूलों की ओर देख रहा था। यह स्पष्ट था कि उसका ध्यान उसकी बात की ओर न था, बल्कि वह कोई और ही बात सोच रहा था।

थोड़ी देर बाद अदालत के कमरे से वह प्रसिद्ध ऐडवोकेट निकला, जिसकी गढ़ी हुई अकाट्य युक्ति की बदौलत उस वृद्ध स्त्री का सर्वस्व छिन गया था। फिर वह मुवक्किल भी निकला, जिसने उस ऐडवोकेट को दस हज़ार रुबल दिए थे, और जिसे स्वयं एक लाख से अधिक रूबल मिले थे। वह जल्दी-जल्दी क़दम बढ़ाए

चला जा रहा था, उसका चेहरा सन्तोष और आत्म-तुष्टि की आभा से दमक रहा था। अपनी ओर सबकी आँखें उठी देख कर उसका रोम-रोम कहता दिखाई देता था—आदर-सत्कार की आवश्यकता ही क्या है?

न्त मे मैथ्यू निकिटिच भी आ पहुँचा और उसके साथही अर्दली आया। यह अर्दली एक पतला-दुबला आदमी था, जिसकी गर्दन लम्बी थी और निचला ओंठ पिचका हुआ था। दोनों जूरी के कमरे में पहुँचे। अर्दली वैसे ईमानदार आदमी था और उसे यूनीवर्सिटी की शिक्षा भी प्राप्त हुई थी, पर मदिरापान की अत्यधिक प्रवृत्ति के कारण वह किसी एक पद पर अधिक दिनों तक न रह सकता था। पिछले तीन महीने से एक काउण्टेस ने, जो उसकी स्त्री को बहुत चाव की दृष्टि से देखती थी, यह पद दिलवा दिया था और उसे बड़ी प्रसन्नता थी कि वह इस पद को इतने दिनो तक कायम रख सका।

उसने अपनी नाक पर चश्मा लगा कर चारो ओर देखते हुए कहा—सब साहब मौजूद हैं?

उल्लसित व्यापारी ने उत्तर दिया—हाँ, शायद सभी मौजूद हैं।

"अच्छी बात है, अभी पता लग जाता है।"—इतना कह कर

उसने अपनी जेब से एक सूची निकाल कर नाम पुकारना आरम्भ किया। बीच-बीच में वह कभी आदमियों की तरफ देख लेता, कभी चश्मे के ऊपर-नीचे देखता।

"कौन्सिलर ऑफ स्टेट, आई० एम० निकी फ़ोरोव !"

उस रोबदार आदमी ने, जो क़ानूनी मामलों में ख़ूब जानकारी रखता था, कहा—मैं यह रहा।

"इवान सैमेनिच इवानोव, रिटायर्ट कर्नल !"

वर्दी पहने रिटायर्ड अफ़सर ने उत्तर दिया—मौजूद हूँ।

"मर्चेण्ट ऑफ दी सैकण्ड गिल्ड, पीटर बकलाशोव !"

मृदुल स्वभाव व्यापारी ने मुस्करा कर कहा—तैयार !

"लैफ्टिनेण्ट ऑफ दी गार्ड्स, प्रिन्स दिमित्री निखल्यूडोव !"

निखल्यूडोव ने उत्तर दिया—मैं मौजूद हूँ।

अर्दली ने अपने चश्मे के ऊपर से देखते हुए उसका विनम्र भाव से अभिवादन किया, मानो वह उसे दूसरे लोगों की अपेक्षा महत्त्व देना चाहता हो। इसके बाद उसने अपना सिल-सिला फिर शुरू किया—"कैप्टेन डरी डिमिट्रिय लन्चेन्को" आदि, आदि। दो को छोड़ कर बाकी सब जूरर मौजूद थे। अर्दली ने नम्रतापूर्वक हाथ का सङ्केत करके कहा—"महोदय, अदालत में पधारिए।"

इस पर सब जूरर दरवाज़े की तरफ़ बढ़े और एक-दूसरे को निक-लने का अवकाश देने के लिए रुकने लगे। फिर सब बरामदे में से होकर अदालत में पहुँचे। अदालत का कमरा ख़ूब बड़ा और लम्बा था। उसके एक सिरे पर तीन सीढ़ियाँ चढ़ने के बाद एक चबूतरा

बनाया गया था, जिस पर एक मेज़ रक्खी हुई थी। मेज़ पर हरे रङ्ग की एक चादर पड़ी हुई थी और उसमें लाल रङ्ग की गोट लगी हुई थी। मेज़ के आगे खूब ऊँची पीठ वाली शाहबलूट की लकड़ी की तीन कुर्सियां रक्खी हुई थीं। इन कुर्सियों के पीछे वर्दी और टोप पहने, तलवार हाथ में लिए, एक पैर आगे बढ़ाए सम्राट का चित्र टंगा हुआ था। दाहिनी ओर एक केस लटका हुआ था, जिसमें काँटों का मुकुट पहने प्रभु ईसा की मूर्ति रक्खी थी। उसी ओर पब्लिक प्रॉसीक्यूटर का डेस्क सजा हुआ था। बाईं ओर पब्लिक प्रॉसीक्यूटर की मेज़ लगी हुई थी और उससे भी पहली तरफ जनता के पास कठघरा बना हुआ था, जिसमें कैदियों के लिए एक बेञ्च पड़ी थी। यह कठघरा अभी तक ख़ाली था। इसके अतिरिक्त दाहिनी ओर, चबूतरे के ऊपर जूरी की ऊँची कुर्सियाँ रक्खी हुई थीं और नीचे फर्श पर ऐडवोकेटों के लिए मेजें लगी हुई थीं।

प्रेसीडेण्ट ने कुछ काग़ज़ों पर निगाह डालते हुए अर्दली और सेक्रेटरी से दो-चार प्रश्न किए, और उनसे सहमति-सूचक उत्तर पाने के बाद कैदियों के लाए जाने की आज्ञा दी।

कठघरे के पीछे का दरवाज़ा तत्काल खुल गया। दो सिपाही अपनी टोपियों के ऊपर हाथ उठाए और दूसरे हाथ में नङ्गी तलवारें पकड़े भीतर आए। उनके पीछे-पीछे तीन कैदी आए—एक लाल बालों और पीले दागों वाला पुरुष था और दो स्त्रियाँ। पुरुष जेल का चोग़ा पहने हुए था, जो उसके लिए बहुत लम्बा और ज़रूरत से ज़्यादा चौड़ा था। वह अपने अँगूठे उठाए हुए था और दोनों बाँहों को

अपने बालों से लगाए हुए था, जिससे उसकी आस्तीनें खिसक कर हाथों पर न आ पड़ें। उसने जजों की ओर दृष्टिपात तक न किया। उसकी निगाह बराबर बेञ्च की ओर लगी हुई थी। वह चुपचाप आकर बेन्च के एक किनारे बैठ गया और इस प्रकार उसने दूसरों के लिए बहुत सी जगह छोड़ दी। उसने प्रेसीडेण्ट की ओर निर्निमेष नेत्रों से देखा, उसके गाल की नसें फड़कने लगीं, मानो वह कुछ फुसफुसा रहा हो। उसके पीछे जो स्त्री आई थी, वह भी जेल की पोशाक पहने थी उसके बालों से सफ़ेद कपड़े की पट्टी बँधी हुई थी। वह वयस्क थी, उसके होंठ मुड़े हुए थे, भवें और पलक बिल-कुल नदारद थे और आँखें लाल थीं। वह बिलकुल शान्त-संयत दिखाई देती थी। उसका चोगा किसी चीज़ में फँस गया तो उसने बड़ी सावधानतापूर्वक बिना कोई आतुरता दिखाए उसे छुड़ा लिया और इसके बाद वह चुपचाप आकर बैठ गई।

तीसरा क़ैदी मसलोवा थी।

उसके आने की देर थी कि अदालत के सारे पुरुषों के नेत्र उसकी ओर उठ गए। उसके सफ़ेद चेहरे, उसके प्रोज्ज्वल काले-काले नेत्र और क़ैदियों के चोगे में से बार-बार उछलती हुई उसकी छातियों की ओर लोगों की आँखें बँध गईं। वह सिपाही तक, जिसके पास से गुज़र कर वह बैठने के स्थान की ओर गई थी, उसके बैठने तक उसकी ओर लगातार देखता रहा और इसके बाद उसने—मानो अपने आपको अपराधी समझ कर—एक फुरहरी ली और सामने की खिड़की की ओर दृष्टि उठा कर देखने लगा।

प्रेसीडेण्ट कैदियों के स्थान ग्रहण करने तक रुका रहा, और जब मसलोवा बैठ गई तो वह सेक्रेटरी की तरफ मुख़ातिब हुआ।

इसके बाद वही हमेशा का सिलसिला शुरू हुआ; जूररों की गणना, अनुपस्थित जूररों के विषय में टीका-टिप्पणी, उनसे वसूल किए जाने वाले जुर्माने का निर्णय, जो जूरर जुर्माने से मुक्त रहने का दावा पेश करते थे, उनके सम्बन्ध में फैसला, और नए जूररों की नियुक्ति।

प्रेसीडेण्ट ने काग़ज़ के कुछ टुकड़ों की गोलियाँ बना कर शीशे के बर्तन में डाला और इसके बाद अपनी वर्दी के सुनहरे कफों को कुछ चढ़ा कर किसी जादूगर की तरह अपने रोएँदार हाथों से उन गोलियों को एक-एक करके निकालने लगा। इसके बाद उसने अपनी आस्तीनें फिर सीधी कर लीं और पादरी से जूररों को शपथ खिलाने का अनुरोध किया।

शपथ खिलाने के बाद प्रेसीडेण्ट ने जूरी से अपना फ़ोरमैन चुनने का अनुरोध किया। इस पर जूरी विवाद-गृह में चली गई, वहाँ लगभग सबने फ़ौरन सिगरेट पीना शुरू कर दिया। कुछ ने उस रोबदार आदमी का नाम लिया और अन्त में उसी को फ़ोरमैन चुन लिया गया। इसके बाद जूररों ने अपने सिगरेट बुझा कर फेंक दिए और सब अदालत में वापस आ गए। रोबदार आदमी ने प्रेसीडेण्ट को इत्तिला दी कि उसे फोरमैन चुना गया है। इसके बाद सब जूरर ऊँची पीठ वाली कुर्सियों पर बैठ गए।

सारा व्यापार सरल, सहज और शीघ्र भाव से होता गया। इस व्यापार में एक विशेष गम्भीरता भी निहित थी। इस

व्यवस्था, एकरूपता और गम्भीरता ने उन सबको हर्ष प्रदान किया, जिन्होंने उसमें भाग लिया था ; इससे उनकी यह धारणा और भी पुष्ट हो गई कि वे एक महत्वपूर्ण और गम्भीर लोकहित का कार्य कर रहे हैं। निखल्यूडोव को भी यही अनुभूति हुई।

जूरी के बैठते ही प्रेसीडेण्ट ने जूररों के अधिकारों, उत्तरदायित्व और बाध्यता पर एक व्याख्यान दिया। बोलते हुए वह अपना ढङ्ग बराबर बदलता गया। वह कभी दाहिने हाथ का सहारा लेकर खड़ा होता, कभी बाएं हाथ का; कभी कुर्सी की पीठ पर लुढ़क जाता, कभी उसके दस्तों पर, कभी मेज़ के कागज़ों को सीधा करके रखता, कभी पेन्सिल उठाता, और कभी चाकू।

उसने उन्हें बताया कि उन्हें प्रेसीडेण्ट के मार्फ़त क़ैदियों से सवाल करने का, कागज़-पेन्सिल का उपयोग करने का और साक्षी के रूप में पेश की गई वस्तुओं की परीक्षा करने का अधिकार है। उनका कर्त्तव्य है कि वे असत्य के साथ नहीं, न्याय के साथ फ़ैसला करें। उनके उत्तरदायित्व का यह अर्थ है कि यदि उनके पारस्परिक वादविवाद को उनमें से कोई जूरर दूसरों पर प्रगट कर दे या किसी बाहरी आदमी के साथ मिल कर किसी प्रकार का षड्यन्त्र रचे तो उसे दण्ड दिया जायगा। सब सम्मानपूर्ण मनोयोग के साथ सुनते रहे। व्यापारी अपने चारों ओर ब्रांडी की दुर्गन्धि फैलाता हुआ और बार-बार खखारता हुआ एक-एक वाक्य पर सिर हिलाता रहा।

पना वक्तव्य समाप्त करने के बाद प्रेसीडेण्ट कैदियों की तरफ़ मुड़ा—सायमन कार्टिनकिन, उठो।

सायमन उठ खड़ा हुआ। उसके ओठ पहले से अधिक तेज़ी के साथ हिलने लगे।

"तुम्हारा क्या नाम है?"

"सायमन पैट्रोप कार्टिनकिन।"—उसने टूटी हुई आवाज़ में जल्दी से कहा।

"तुम्हारी क्या जात है?"

"देहाती।"

"तुम्हारी गवर्नमेण्ट, ज़िला और गिर्जा कौन सा है?"

"टूला गवर्नमेण्ट, क्रेपीवेन्स्की ज़िला, कुप्यान्सकी चर्च, वोकी गाँव।"

"तुम्हारी क्या उम्र है?"

"तेतीस... .... ,..।"

"क्या धर्म है ?"

"रूसी धर्म, सनातनी।"

"ब्याह हो गया है ?"

"नहीं सरकार।"

"पेशा ?"

"मैं होटल मारीटानिया में नौकर था।"

"तुम्हारे ऊपर पहले भी कभी मामला चला है ?"

"पहले कभी नहीं चला, क्योंकि हम पहले जिस ढङ्ग से रहा करते थे ....।"

"तो पहले कभी नहीं चला ?"

"ईश्वर न करे !"

"तुम्हें अभियोग की नक़ल मिल गई है ?"

"जी हाँ।"

"बैठ जाओ।"

"यूफेमिया इवानोवा बचकोवा।"—प्रेसीडेण्ट ने उस वयस्क स्त्री कैदी की तरफ मुड़ कर कहा।

पर सायमन बचकोवा के सामने उसी प्रकार खड़ा रहा।

"सायमन कार्टिनकिन, बैठ जाओ !"

सायमन फिर भी उसी प्रकार खड़ा रहा।

"कार्टिनकिन, बैठ जाओ !"

पर कार्टिनकिन केवल उस समय बैठा, जब अर्दली दौड़ कर उसके पास पहुंचा और अस्वाभाविक रूप से नेत्र फाड़ कर रहस्य भरे स्वर में बोला—"बैठ जाओ, बैठ जाओ !" वह बैठ गया उतनी

ही जल्दी, जितनी जल्दी उठ कर खड़ा हुआ था। उसने अपना चोगा अपने चारों ओर लपेटा। उसके ओठ फिर धीरे-धीरे हिलने लगे।

प्रेसीडेण्ट ने स्त्री की ओर निगाह न उठाई और अपने सामने पड़े कागज़ की ओर दृष्टि जमाए, थके हुए निश्वास के साथ पूछा—"तुम्हारा क्या नाम है?" प्रेसीडेण्ट अपने कार्य में इतना अभ्यस्त हो गया था कि सारे मामले को झटपट खतम कर डालने के लिए वह एक ही समय में दो काम कर लिया करता था।

बचकोवा तैंतालीस बरस की थी और कोलमना की रहने वाली थी। वह भी होटल मारीटानिया में नौकर थी। "मेरे ऊपर पहले कभी कोई मामला नहीं चला और मुझे अभियोग की नक़ल मिल गई है"—उसने ऐसे निर्भीक स्वर में कहा, मानो वह प्रत्येक प्रश्न के उत्तर के साथ यह भी कहना चाहती हो—"हाँ, मुझे अभियोग की नकल मिल गई है। और मुझे इसकी रत्ती भर परवाह नहीं है कि इस बात को कौन-कौन जानता है। मैं किसी तरह की बेहूदगी न सहूँगी।"

उसने प्रेसीडेण्ट की आज्ञा की प्रतीक्षा न की और अन्तिम प्रश्न का उत्तर देकर वह खुद ही बैठ गई।

अब स्त्री-प्रेमी प्रेसीडेण्ट ने दूसरी स्त्री की ओर मुड़ कर विशेष विनम्रता के साथ पूछा—"तुम्हारा नाम?" जब उसने मसलोवा को उठते न देखा तो मृदुल धीमे स्वर में कहा—"तुम्हें उठना पड़ेगा।"

मसलोवा शीघ्रतापूर्वक उठ खड़ी हुई। वह अपना सीना फैला

कर खड़ी हो गई और प्रेसीडेण्ट की ओर अपने उन काले, सुस्मित नेत्रों से देखने लगी जिनसे तत्परता व्यक्त होती थी।

"तुम्हारा क्या नाम है?"

"लोव"—मसलोवा ने शीघ्रतापूर्वक कहा।

निखल्यूडोव ने अपना चश्मा पहन लिया था और वह कैदियों की ओर बराबर देखता आ रहा था। इस स्त्री की ओर एकटक देख कर उसने मन ही मन कहा—"नहीं, यह असम्भव है। लोव! यह किस तरह हो सकता है?" उसने उसका उत्तर सुन कर स्वगत कहा।

प्रेसीडेण्ट अपने प्रश्नों का तांता जारी रखना चाहता था, पर उसी समय चश्माधारी सदस्य ने क्रुद्ध स्वर में फुसफुसा कर कुछ कहा। प्रेसीडेण्ट ने सिर हिलाया और कैदी की ओर मुड़ कर पूछा—यह क्या बात है? तुम्हारा नाम यहाँ लोव दर्ज नहीं है।

स्त्री चुप रही।

"तुम्हारा असली नाम क्या है?"

क्रुद्ध सदस्य ने पूछा—तुम्हारा बपतिस्मा का नाम क्या है?

"पहले मुझे कैटेरीना के नाम से पुकारा करते थे।"

निखल्यूडोव ने मन ही मन कहा—"नहीं, ऐसा नहीं हो सकता।" यद्यपि अब उसे पूर्णतया निश्चय हो गया था कि यह वही है, वही लड़की—आधी दत्तक, आधी दासी—जिसके ऊपर किसी समय वह मोहित था, सचमुच मोहित था, और जिसे उसने मूर्छनामयी तीव्र वासना के क्षणिक उद्वेग में भ्रष्ट कर डाला था, फिर उसका परित्याग कर दिया था और उस घटना का

स्मरण तक नहीं किया था, क्योंकि वह स्मृति अत्यन्त व्यथाकारी होती, उसे अत्यन्त स्पष्ट रूप से अपराधी प्रमाणित करती और पूरी तरह साबित कर देती कि वह जो अपने नैतिक आचरण के घमण्ड में इतना फूला फिरता है, वह झूठा है, उसने इस स्त्री के साथ नितान्त गर्हित और जघन्य आचरण किया है।

हाँ, यह वही थी। अब निखल्यूडोव ने उसकी आकृति मे उस विलक्षण, अवर्णनीय छटा के स्पष्ट रूप ने दर्शन किए जो अन्य सारे व्यक्तियों से उसे पृथक् करती थी। उसकी आकृति मे आज भी एक प्रकार का ऐसा अनोखापन था जो और किसी में नही पाया जाता था। उसके फूले हुए चेहरे पर अस्वस्थता के कारण पीलापन होते हुए भी उसके ओठों पर, उसके नेत्रों के कुछ-कुछ तिछेंपन में, उसके कण्ठ-स्वर के लालित्य मे और विशेष रूप से उसकी सहज मुस्कराहट तथा आकृति और शरीर की तत्परता-व्यञ्जक मुद्रा मे आज भी उसका वह व्यक्तित्व विराजमान था, जिस पर निखल्यूडोव एक दिन मुग्ध हुआ था।

प्रेसीडेण्ट ने उसी मीठे स्वर में कहा—तुम्हे यह पहले ही कह देना था। तुम्हारा पैतृक नाम क्या है?

"मैं अवैध सन्तान हूँ।"

"पर क्या तुम अपने धर्म-पिता के नाम से नहीं पुकारी जाती थीं?"

"हाँ, मिखायलोटना।"

निखल्यूडोव का श्वास बन्द होने लगा। उसने मन ही मन पूछा—और इसने अपराध क्या किया है?

प्रेसीडेण्ट ने पूछा—तुम्हारा पारिवारिक नाम क्या है?

"मुझे सब मेरी माँ के नाम से पुकारते थे, मस्लोवा।"

"तुम्हारी क्या जात है?"

"मज़दूर।"

"धर्म—सनातन?"

"हाँ।"

"तुम्हारा पेशा? तुम्हारा पेशा क्या था?"

मस्लोवा चुप रही।

"तुम क्या काम करती थी?"

"मैं एक कोठीख़ाने में थी।"

चश्मे वाले सदस्य ने कठोर भाव से पूछा—किस तरह के कोठीख़ाने में?

मस्लोवा ने उत्तर दिया—"तुम्हें ख़ुद मालूम है" और वह मुस्कराई। इसके बाद उसने कमरे में चारों ओर आतुर भाव से देख कर फिर प्रेसीडेण्ट की ओर देखा।

उसकी आकृति की मुद्रा में कुछ ऐसी अस्वाभाविकता थी; उसने जो शब्द कहे थे उनके अर्थ में कुछ ऐसी भयङ्करता और सकरुणता भरी हुई थी, उसने जिन चुराई हुई निगाहों से कमरे में चारों ओर देखा था उसमें कुछ ऐसी कातरता निहित थी कि प्रेसीडेण्ट लजा गया और एक क्षण के लिए अदालत में सन्नाटा छा गया। जन-समुदाय में से किसी के हँसने और उसके बाद किसी के श-श-श करने से निस्तब्धता भङ्ग हुई। प्रेसी-डेण्ट ने ऊपर को दृष्टि उठा कर फिर पूछना शुरू किया—

"तुम्हारे ऊपर पहले भी कभी कोई मामला चला है ?"

मसलोवा ने धीमे स्वर में कहा—"कभी नहीं ।" और उसने लम्बी साँस ली ।

"तुम्हें अभियोग की नक़ल मिल गई है न ?"

"मिल गई है ।"

"बैठ जाओ ।"

मसलोवा ने पीछे की ओर झुक कर अपना लहँगा इस प्रकार उठाया, जिस प्रकार कोई महिला अपने साये को उठाती है, और इसके बाद वह अपने नन्हें-नन्हें सफ़ेद हाथ चोगे की आस्तीनों में डाल कर बैठ गई और प्रेसीडेण्ट की ओर उसी प्रकार देखने लगी ।

सेक्रेटरी उठ खड़ा हुआ और अभियोग पढ़ने लगा । वह स्पष्ट रूप से पढ़ रहा था (यद्यपि उसके 'ल' और 'र' का उच्चारण एक ही जैसा था)। उसकी आवाज़ काफी ऊँची थी, पर वह इतनी जल्दी-जल्दी बोल रहा था कि शब्द एक-दूसरे में मिल जाते थे और इस प्रकार उसकी पठन क्रिया एक अबाध, भ्रान्तकारी शृङ्खला की तरह गूँज रही थी ।

जज कभी कुर्सी के एक हत्थे पर झुकते, कभी दूसरे हत्थे पर ; कभी मेज़ पर झुकते, कभी फिर कुर्सी पर लुढ़क जाते; आँखें खोलते-मूँदते और एक-दूसरे से फुसफुसा कर बात करते । एक सिपाही ने कई बार जमुहाई रोकी ।

कैदी कार्टिनकिन के ओठ चलने का सिलसिला जारी था । बच-

कोवा बिल्कुल शान्त और तनी हुई बैठी थी तथा बीच-बीच में सिर से बँधे रूमाल में हाथ डाल कर खुजा लेती थी।

मसलोवा अचल भाव से बैठी हुई वाचक की ओर देख रही थी; बीच-बीच में वह चौंक पड़ती, मानो कुछ उत्तर देना चाहती हो। वह लजाती, गहरी साँस लेती, अपने हाथों को इधर से उधर करती, और इसके बाद फिर वाचक की ओर देखने लगती।

निखल्यूदोव अपनी ऊँची पीठ वाली कुर्सी पर आगे की पंक्ति में बैठा हुआ था। उसका चश्मा उसी तरह लगा हुआ था। उसकी दृष्टि बराबर मसलोवा की ओर लगी हुई थी, और उधर उसके हृदय में एक भयङ्कर अन्तर्द्वन्द्व जारी था।
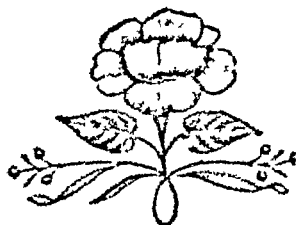
भियोग इस प्रकार था :—

"१८.....की १७ जनवरी को इस नगर के होटल मारीटानिया के स्वामी ने पुलिस को यह सूचना दी कि साइबेरिया के सैकिएड गिल्ड के व्यापारी थेरापोएट स्मेलकोव की मृत्यु अकस्मात हो गई है।

"स्थानीय पुलिस-डॉक्टर ने मृत्यु का कारण यह बताया कि मात्रा से अधिक मदिरा पी जाने के कारण हृदय की गति रुक गई है। इसके बाद स्मेलकोव के शव को दफना दिया गया। स्मेलकोव की मृत्यु के चौथे दिन पीटर्सबर्ग से उसका सहयोगी और उसी के शहर का रहने वाला साइबेरियन व्यापारी तिमोखियन आया और जब उसे अपने साथी की मृत्यु और उस मृत्यु से सम्बन्ध रखने वाली परिस्थिति का पता चला तो उसने अपना सन्देह प्रकट किया कि स्मेलकोव की मृत्यु स्वाभाविक कारणों से नहीं हुई, बल्कि निम्न-लिखित व्यक्तियों ने उसे विष देकर मार डाला और फिर उसकी सम्पत्ति, कुछ रुपया और हीरे की एक अँगूठी चुरा ली;

क्योंकि ये चीज़ें स्मेलकोव के पास पहले थीं, परन्तु जब मृत व्यक्ति की वस्तुओं की सूची बनाई गई तो उसमें उनका पता तक न था। फलतः मामले में जाँच की गई, जिससे निम्न-लिखित बातें मालूम हुईं :—

"१—स्मेलकोव के पास तीन हज़ार आठ सौ रूबल होने चाहिए थे, जो उसे बैंक से मिले थे। यह बात होटल मारीटानिया के स्वामी और व्यापारी स्टारीकोव के क्लर्क को भी ज्ञात थी, पर उस पोर्टमैण्टो में (जिस पर स्मेलकोव की मृत्यु के बाद मुहर लगा दी गई थी) और उसकी थैली में केवल तीन सौ बारह रूबल और सोलह कोपक पाए गए।

"२—उक्त स्मेलकोव ने अपनी मृत्यु से पहले का सारा दिन और सारी रात वेश्या लुब्का के साथ बिताई थी, जो होटल में उसके कमरे में दो बार आई थी।

"३—इस वेश्या ने अपनी मालकिन के हाथ हीरे की एक अँगूठी बेची।

"४—होटल की दासी यूफ़ेमिया बचकोवा ने स्मेलकोव की मृत्यु के दूसरे दिन बैंक में अपने नाम चालू हिसाब में एक हज़ार रूबल जमा कराए।

"५—वेश्या लुब्का के कथनानुसार होटल के नौकर सायमन कार्टिनकिन ने उक्त वेश्या लुब्का को कुछ पाउडर दिया था और उस पाउडर को ब्रांडी में घोल कर व्यापारी स्मेलकोव को पिलाने की सलाह दी थी। यह वेश्या स्वीकार करती है कि उसने यह पाउडर ब्रांडी में घोल कर उसे पिलाया था।

"जब वेश्या लुब्का से जिरह की गई तो उसने कहा कि जिस समय व्यापारी स्मेलकोव उस कोठीख़ाने में था, जहाँ—उक्त वेश्या के शब्दों में—वह 'काम' करती है, उस समय स्मेलकोव ने उस वेश्या को कुछ रुपया लाने के लिए होटल मारीटानिया में भेजा था। लुब्का ने व्यापारी की दी हुई ताली से उसके पोर्टमेण्टो को खोल उसमें से व्यापारी के आदेशानुसार चालीस रूबल निकाले थे, इससे अधिक कुछ नहीं। बचकोवा और कार्टिनकिन इसकी पुष्टि दे सकते हैं, क्योंकि उस अवसर पर वे दोनों वहाँ मौजूद थे।

"उसने अपने बयान में यह भी कहा कि जब वह होटल में दूसरी बार आई तो उसने सायमन कार्टिनकिन के फुसलाने पर कुछ पाउडर, जिसे वह कोई नशीला पदार्थ समझती थी, ब्राण्डी में घोल कर व्यापारी को इस आशा से पिला दिया कि वह सो जायगा और वह वहाँ से जा सकेगी; पर उसने रुपया-पैसा कुछ नहीं लिया और स्मेलकोव ने उसे मारा-पीटा और जब वह चीख़ी-चिल्लाई और वहाँ से चले जाने की धमकी देने लगी तो उसने ख़ुद ही उसे अपनी हीरे की अँगूठी दी।

"जब अभियुक्त यूफेमिया बचकोवा से जिरह की गई तो उसने कहा कि वह गुम हुए रुपए के विषय में कुछ नहीं जानती, क्योंकि वह स्मेलकोव के कमरे में झाँकी तक नहीं, केवल लुब्का ही उस कमरे में मौजूद रही थी; यदि कोई चीज़ चुराई गई होगी, तो वह लुब्का ने ही उस समय चुराई होगी, जब वह व्यापारी के पास से ताली लेकर रुपया लेने आई थी।"

इस अवसर पर मसलोवा चौंक पड़ी, उसने मुँह खोला और बचकोवा की ओर देखा।

सेक्रेटरी ने कहना जारी रक्खा—"जब बचकोवा को एक हजार आठ सौ रुबल की बैंक की रसीद दिखाई गई तो उसने कहा कि यह उसकी और कार्टिनकिन की अठारह बरस की सम्मिलित कमाई है, और वह कार्टिनकिन से ब्याह करने वाली है।

"अभियुक्त सायमन कार्टिनकिन का जब पहली बार बयान लिया गया तो उसने स्वीकार किया कि उसने और बचकोवा ने मसलोवा के, जो कोठीखाने से ताली लेकर आई थी, फुसलाने पर रुपया चुरा लिया था और उसे अपने और मसलोवा के बीच में बाँट लिया था। उसने यह भी स्वीकार किया कि पाउडर उसी ने दिया था, जिससे स्मेलकोव को नींद आ जाय। पर जब उसका बयान दूसरी बार लिया गया तो उसने रुपया चुराने या मसलोवा को पाउडर देने की बात से साफ इन्कार किया और इसका दोषी अकेली मसलोवा को ही ठहराया। उसने बैंक के रुपए के सम्बन्ध में वही बात कही जो बचकोवा ने कही थी—अर्थात्, पिछले अठारह बरस से उन दोनों को होटल के मुसाफिर जो इनाम देते रहे थे वही यह रुपया है।

"वास्तविक परिस्थितियों पर प्रकाश डालने के लिए व्यापारी स्मेलकोव के शव की परीक्षा करनी आवश्यक थी, फलतः शव को उखाड़ कर उसकी अँतड़ियों की परीक्षा करने का तथा यह देखने का आदेश दिया गया कि शव में क्या क्या परिवर्तन हुआ है

अँतड़ियों की परीक्षा करने से पता चला कि सचमुच स्मेलकोव की मृत्यु विष से हुई थी।"

इसके बाद कैदियों की एक दूसरे की मौजूदगी में जो कुछ परीक्षा ली गई थी, उसका विवरण दिया गया और साक्षियों के बयान सुनाए गए। अभियोग-पत्र का अन्त इस प्रकार था :—

"सैकिण्ड गिल्ड का व्यापारी स्मेलकोव सुरा-सेवी और व्यभिचारी था। उसने लुव्का के साथ सम्बन्ध किया और उसके ऊपर विशेष रूप से मोहित होकर उसे १७ जनवरी, १८८.....को किटीवा के कोठीखाने में से ताली देकर उसके पोर्टमेण्टो में से चालीस रुब्ल निकालने के लिए—जो उसे खाने-पीने की चीज़ों के मूल्य में अदा करने थे—होटल भेजा। होटल में पहुँच कर पोर्टमेण्टो में से रुपए निकालते समय वह बचकोवा और कार्टिनकिन के साथ चुराने और आपस में बाँटने को सहमत हो गई और इस प्रकार सबने रुपए चुरा लिए।"

यहाँ मसलोवा एक बार फिर चौंक पड़ी, और उठ कर खड़ी हुई, उसका चेहरा तमतमा उठा।

सेक्रेटरी ने कहना जारी रक्खा—"मसलोवा के हिस्से में एक हीरे की अँगूठी आई और शायद थोड़ा-बहुत रुपया भी, जो शायद या तो उसने कहीं छिपा दिया या खो दिया; क्योंकि उस रात को वह शराब के नशे के कारण होश-हवास में न थी। इस अपराध को छिपाने के लिए स्मेलकोव को बहका-फुसला कर होटल में वापस लाने और वहाँ उसे विष देने का—जो कार्टिनकिन के पास था—षड्यन्त्र रचा गया, और इस उद्देश से प्रेरित होकर मसलोवा

किटीवा के कोठीख़ाने में गई और वहाँ उसने किसी प्रकार कह-सुन कर व्यापारी को होटल में वापस चलने को राज़ी कर लिया। जब स्मेलकोव होटल मारीटानिया में वापस आ गया तो मसलोवा और कार्टिनकिन ने विष की पुड़िया लेकर ब्राण्डी में घोली और व्यापारी को पिला दी। इसके परिणाम-स्वरूप स्मेलकोव की मृत्यु हो गई।

"उपरिलिखित विवरण के फल-स्वरूप बोकी गाँव के सायमन कार्टिनकिन को (आयु तैंतीस वर्ष), दासी यूफ्रेमिया बचकोवा को (आयु तैतालीस वर्ष), और केटेरीना मसलोवा को (आयु अट्ठाइस वर्ष) १७ जनवरी, १८८ .....को स्मेलकोव के दो हज़ार छः सौ रूबल चुराने, स्मेलकोव के जीवन का अन्त करने और अप-राध छिपाने के उद्देश से उसे विष पिलाने और फल-स्वरूप उसकी हत्या करने का अभियुक्त ठहराया जाता है।

"इस अभियोग का विवरण पिनलकोड की १४५४ धारा में दिया गया है। फलतः पिनलकोड की उक्त धारा के अनुरूप देहाती साय-मन कार्टिनकिन, दासी यूफेमिया बचकोवा और केटेरीना मसलोवा पर प्रान्तीय अदालत में जूरी के द्वारा मुक़दमा चलाया जायगा।"

इस प्रकार सेक्रेटरी ने लम्बे-चौड़े अभियोग-पत्र को पढ़ कर काग़ज़ को मोड़ा और फिर वह बालों पर हाथ फेरते हुए अपने स्थान पर बैठ गया। सबने इस विचार के साथ दीर्घ निश्वास लिया कि अब अन्वेषण आरम्भ होगा और दूध का दूध और पानी का पानी मालूम हो जायगा, और न्याय की रक्षा होगी। एक निख-ल्यूडोव ही ऐसा था जिसके हृदय में इस प्रकार के भावों ने स्थान

नहीं लिया था। वह इस रोमाञ्चकारी विचार में पूर्णतया तल्लीन था कि मसलोवा जैसी स्त्री, जो अब से दस बरस पहले ऐसी निर्दोष और मनोहारिणी बालिका थी, ऐसा भयङ्कर अपराध किस प्रकार कर सकी होगी।

भियोग-पत्र पढ़े जाने के बाद प्रेसीडेण्ट ने सदस्यों से परामर्श करके कार्टिनकिन की ओर ऐसी मुद्रा के साथ मुँह फेरा, जिससे स्पष्ट व्यक्षित होता था कि अब वह सारी बात का राई-रत्ती पता लगा लेगा।

उसने बाईं ओर झुक कर कहा—देहाती सायमन कार्टिनकिन !

सायमन कार्टिनकिन उठ खड़ा हुआ और अपने हाथ नीचे डाल कर और आगे की ओर पूरी तरह झुक कर बिना कुछ कहे खड़ा रहा। उसके गाल बराबर हिल रहे थे।

"तुम पर अभियोग लगाया गया है कि तुमने १७ जनवरी १८८.. को यूफेमिया बचकोवा और केटेरीना मसलोवा के साथ मिल कर व्यापारी स्मेलकोव के पोर्टमेण्टो से रुपया चुराया और फिर कहीं से विष प्राप्त करके केटेरीना मसलोवा को उसे ब्राण्डी में घोल कर व्यापारी स्मेलकोव को पिलाने के लिए फुसलाया, जिसके फल-स्वरूप स्मेलकोव की मृत्यु हो गई। तुम अपराध स्वीकार करते हो?"—प्रेसीडेण्ट ने दाहिनी ओर को झुकते हुए पूछा।

"नहीं सरकार, हमारा काम तो यात्रियों की सेवा करना है, हम ..।"

"यह सब बाद को कह लेना, इस समय बोलो अपराध स्वीकार करते हो?"

"नही सरकार, मैं तो यही कह ....।"

"यह सब तुम बाद को कहना। पहले यह बताओ अपराध स्वीकार करते हो?"—प्रेसीडेण्ट ने शान्त और दृढ़ भाव से कहा।

"ऐसा काम कभी नहीं कर सकता, क्योंकि.. .।"

इतने में अर्दली उसके पास दौड़ा हुआ आया और उसने रहस्यपूर्ण फुसफुसाहट के द्वारा उसे रोक दिया।

प्रेसीडेण्ट के जिस हाथ में काग़ज़ था, उसे उसने घुमाया और अपनी कुहनी दूसरे ढङ्ग से रख कर और इस मुद्रा के साथ, जिसमे व्यञ्जित होता था 'यह तो निबटा,' वह यूफेमिया बचकोवा की ओर मुड़ा।

"यूफेमिया बचकोवा! तुम पर यह अभियोग लगाया गया है कि तुमने १७ जनवरी १८८...को होटल मारीटानिया में सायमन कार्टिनकिन और केटेरीना मसलोवा के साथ मिल कर स्मेलकोव के पोर्टमेण्टो से कुछ रुपया और एक हीरे की अँगूठी चुराई और आपस में रुपया बाँट कर स्मेलकोव को विष दिया, जिससे उसकी मृत्यु हो गई। तुम अपना अपराध स्वीकार करती हो?"

बचकोवा ने निर्भीकता और दृढ़ता के साथ उत्तर दिया—मैंने कोई अपराध नहीं किया। मै कमरे में झाँकी तक नहीं, यही कलमुँही वहाँ मौजूद थी, इसीने यह सब किया है।

प्रेसीडेण्ट ने उसी प्रकार शान्त और दृढ़ भाव से कहा—तुम यह सब बाद को कह लेना। तुम अपराध स्वीकार नहीं करती ?

"मैंने न रुपया लिया, न विष दिया, न कमरे में पैर रक्खा। मैं कमरे मे जाती तो इसे लात मार कर बाहर निकाल देती।"

"तो तुम अपराध स्वीकार नहीं करती ?"

"बिल्कुल नही।"

"अच्छी बात है।"

इसके बाद प्रेसीडेण्ट मसलोवा की तरफ़ झुक कर बोला—"केटेरीना मसलोवा, तुम्हारे विरुद्ध यह अभियोग है कि तुम कोठी-ख़ाने से स्मेलकोव के पोर्टमेण्टो की चाभी लेकर होटल में आई और उस पोर्टमेण्टो में से तुमने कुछ रुपया और एक अँगूठी चुरा ली।" उसने यह सब कण्ठस्थ पाठ की तरह कहा और साथ ही साथ अपने कान पर झुके हुए एक सदस्य की बात भी सुनता रहा, जो कह रहा था कि साक्ष्य पदार्थों में से एक बर्तन ग़ायब है। उसने दुहराया—"हाँ, पोर्टमेण्टो में से कुछ रुपया और अँगूठी चुराई और उसे आपस में बाँट लिया। इसके बाद होटल मारीटानिया में उसके साथ आकर तुमने उसे शराब में विष दे दिया और इस प्रकार तुम उसकी मृत्यु का कारण हुई। तुम अपराध स्वीकार करती हो ?"

मसलोवा ने जल्दी-जल्दी कहना आरम्भ किया—मैंने कोई अपराध नहीं किया। मैंने पहले जो कहा था वही मैं अब भी कहती हूँ, मैंने कुछ नहीं लिया—मैंने कुछ भी नहीं लिया—मैंने कोई चीज़ नहीं ली, और अँगूठी ? अँगूठी तो ख़ुद उसीने मुझे दी थी।

प्रेसीडेण्ट ने कहा—तो तुम यह कहती हो कि तुमने दो हज़ार छः सौ रूबल की चोरी नहीं की?

"मैंने कहा तो कि मैंने चालीस रूबल से अधिक और कुछ नहीं निकाला।"

"अच्छी बात, और क्या तुम स्मेलकोव को शराब में पाउडर मिला कर देने का अपराध स्वीकार करती हो?"

"हाँ, यह मैंने बेशक किया। मेरा इतना अपराध अवश्य था कि मैंने इस बात पर विश्वास कर लिया कि यह नींद की दवा है, और इससे कोई हानि न होगी। मैंने कभी सोचा तक नहीं, कभी इसकी इच्छा तक नहीं की—ईश्वर मेरा साक्षी है।"—मसलोवा ने बड़े दृढ़ भाव से कहा।

प्रेसीडेण्ट ने पूछा—तो तुम व्यापारी स्मेलकोव के पोर्टमेण्टो में से रुपए और अँगूठी चुराने का अपराध स्वीकार नहीं करती और यह स्वीकार करती हो कि तुमने उसे पाउडर दिया था?

"हाँ, मैं इसे लाखों में स्वीकार करती हूँ; पर मैंने यही समझा था कि यह नींद की दवा है। मैंने वह पाउडर उसे केवल इस-लिए दिया था कि वह सो जाय; मैंने कोई बुरा काम करने की इच्छा तक नहीं की, विचार तक नहीं किया।"

प्रेसीडेण्ट इस वक्तव्य से सन्तुष्ट सा होकर बोला—"ठीक, बस अब ठीक-ठीक बता दो, क्या बात थी?" और वह कुर्सी से पीठ टेक कर और मेज़ पर मुट्ठीबन्द हाथ रख कर बैठ गया। "सारी बातें कह डालो। साफ़-साफ़ और पूरी-पूरी बात बता देने से तुम्हारा ही लाभ होगा।"

मसलोवा चुपचाप प्रेसीडेण्ट की ओर देखती रही।

"बताओ, बताओ, यह सब कैसे हुआ?"

सहसा मसलोवा ने शीघ्रतापूर्वक कहना आरम्भ कर दिया—"यह सब कैसे हुआ? मै होटल में आई और उसके कमरे मे भेज दी गई। वह वहाँ मौजूद था और पहले से ही मतवाला हो रहा था।" उसने जिस समय 'वह' शब्द का उच्चारण किया उस समय उसके खुले हुए नेत्रों से भयङ्कर भीति व्यञ्जित होने लगी। "मैं वापस जाना चाहती थी, पर उसने मुझे रोक रक्खा।" यहाँ वह रुक गई, मानो वह कोई बात भूल गई हो और उसे स्मरण करने की चेष्टा कर रही हो।

"हाँ, तो फिर क्या हुआ?"

"फिर क्या होता? मैं वहाँ कुछ देर रही और उसके बाद घर चली गई।"

इस अवसर पर पब्लिक प्रॉसीक्यूटर तनिक उठा और अपनी कुहनी भद्दे ढङ्ग से टेक कर खड़ा हो गया।

प्रेसीडेण्ट ने कहा—"आप कुछ पूछना चाहते हैं?" उससे सह-मति-सूचक उत्तर पाकर उसने उसे बोलने की अनुमति दे दी।

पब्लिक प्रॉसीक्यूटर ने मसलोवा की ओर दृष्टिपात किए बिना कहा—"मैं पूछना चाहता हूँ कि क्या सायमन कार्टिनकिन के साथ अभियुक्ता का यह पहला परिचय था?" इतना कह कर उसने ओठ मींचे और तेवर बदल दिए।

प्रेसीडेण्ट ने प्रश्न को दुहराया। मसलोवा ने भीत मुद्रा के

साथ पब्लिक प्रॉसीक्यूटर की ओर देखा। वह बोली—सायमन के साथ ? हाँ।

"मैं यह जानना चाहता हूँ कि सायमन के साथ अभियुक्ता का परिचय किस प्रकार का था। क्या वे अक्सर मिलते रहते थे ?"

"परिचय किस प्रकार का था ? वह मुझे होटल के यात्रियों के लिए बुलाया करता था; और परिचय किस बात का ?"—मसलोवा ने चञ्चल भाव से प्रेसीडेण्ट की ओर से पब्लिक प्रॉसीक्यूटर की ओर, और फिर प्रेसीडेण्ट की ओर देखते हुए कहा।

पब्लिक प्रॉसीक्यूटर ने अर्धनिमीलित नेत्रों और पैशाचिक मुस्कराहट के साथ पूछा—मैं यह जानना चाहता हूँ कि कार्टिन-किन अकेली मसलोवा को ही यात्रियों के लिए क्यों बुलाया करता था, और लड़कियों में से किसी को क्यों नहीं ?

मसलोवा ने चारों ओर भीत दृष्टि से देखा और फिर निखल्यू-डोव की ओर दृष्टि जमा कर कहा—मैं यह नहीं जानती। मैं यह क्या जानूँ ? वह जिसे पसन्द करता था, बुलाता था।

निखल्यूडोव ने स्वगत कहा—"कहीं इसने पहचान तो नहीं लिया ?" यह विचार आते ही उसके मुँह पर सारे शरीर का रक्त दौड़ आया। पर मसलोवा उसे न पहचान सकी और उसकी ओर से दृष्टि उठा कर उसने फिर पब्लिक प्रॉसीक्यूटर की ओर देखा।

"अभियुक्त कार्टिनकिन के साथ किसी प्रकार के घनिष्ट सम्पर्क की बात अस्वीकार करती है। बस, मुझे और कुछ नहीं पूछना है।"

इतना कह कर पब्लिक प्रॉसीक्यूटर ने डेस्क से कुहनी हटाई

और कुछ लिखना शुरू कर दिया। वास्तव में वह लिख-लिखा कुछ नहीं रहा था, बल्कि पहले से ही पेन्सिल से लिखे नोटों पर स्याही फेर रहा था, क्योंकि उसने बहुत से पब्लिक प्रॉसीक्यूटरों और ऐडवोकेटों को इसी प्रकार अपने नोटों में कोई बात दर्ज करते देखा था, जिससे प्रतिद्वन्द्वी को भुलावा देना सम्भव था।

प्रेसीडेण्ट ने मसलोवा से तत्काल ही प्रश्न करना आरम्भ नहीं कर दिया, क्योंकि वह चश्मे वाले सदस्य से पूछ रहा था कि क्या वह प्रश्न-सूची से (जो पहले से ही तैयार कर ली गई थी) सहमत है।

उसने फिर पूछना शुरू किया—हाँ, तो फिर क्या हुआ ?

मसलोवा ने अब की बार कुछ अधिक निर्भीकता के साथ देखा—पर केवल प्रेसीडेण्ट की ओर—और कहा—"मैं घर आई, अपनी मालकिन को रुपया दिया और सोने चली गई। अभी मेरी आँख लगी ही थी कि हमारे यहाँ की एक लौंडी ने मुझे जगाया और कहा—'जा, तेरा आदमी फिर आ पहुँचा!' मैं तो न जाना चाहती थी, पर मेरी मालकिन ने मुझे जाने को विवश किया। वह (उसने इस शब्द का उच्चारण इस बार भी उसी भयङ्कर भीति के साथ किया) सभी लौंडियों को खूब पिलाता रहा। उसने और शराब मँगानी चाही, पर उसके पास-पल्ले का सब कुछ खर्च हो गया था और हमारी मालकिन उस पर विश्वास नहीं करना चाहती थीं, इसलिए उसने मुझे होटल भेजा और बताया कि रुपया कहाँ रक्खा है और उसमें से कितना निकालना है। मैं गई।"

प्रेसीडेण्ट अपनी बाईं ओर के सदस्य से कुछ फुसफुसा रहा

था। पर यह जताने के लिए कि उसने सारी बात सुन ली है, उसके अन्तिम शब्दों को दुहराया—हाँ, तो तुम गईं। फिर क्या हुआ ?

"मैं गई और मुझसे जो कुछ कहा गया था, वही मैंने किया। मैं उसके कमरे में गई। मैं अकेली नहीं गई थी, मैंने अपने साथ सायमन कार्टिनकिन को और इसे भी ले लिया था।"—उसने बचकोवा की ओर सङ्केत करके कहा।

"झूठी बात है; मैं भीतर झाँकी तक नहीं।"—बचकोवा कहने लगी, पर उसे रोक दिया गया।

मसलोवा ने भृकुटी चढ़ा कर बचकोवा की ओर बिना देखे कहना जारी रक्खा—इनके सामने मैंने चार नोट निकाले।

प्रॉसीक्यूटर ने पूछा—ठीक, पर जिस समय उसने चालीस रूबल निकाले थे, उस समय क्या अभियुक्त ने यह भी देखा कि उसमें और कितना रुपया है ?

जब पब्लिक प्रॉसीक्यूटर ने उसे सम्बोधित किया तो वह काँप उठी, वह स्वयं न जानती थी कि क्यों, पर उसे दृढ़ धारणा थी कि वह उसका अमङ्गल चाहता है।

"मैंने गिने नहीं, पर मैंने कुछ सौ-सौ रूबल के नोट रक्खे अवश्य देखे थे।"

"अहा! कुछ सौ-सौ रूबल के नोट रक्खे देखे थे। बस, इतनी ही बात थी।"

प्रेसीडेण्ट ने घड़ी की ओर देख कर कहा—हाँ, तो तुम रुपया ले आईं ?

"हाँ, ले आई।"

"फिर क्या हुआ ?"

"इसके बाद वह मुझे अपने साथ होटल में ले आया।"

"ठीक, और तुमने उसे पाउडर किस तरह दिया ? शराब में ?"

"मैंने किस तरह दिया ? मैंने मिलाया और उसे दे दिया।"

"तुमने उसे क्या दे दिया ?"

इस बार मसलोवा ने तत्काल ही उत्तर नहीं दे दिया, बल्कि उसने गहरी और भारी साँस ली। कुछ क्षण की निस्तब्धता के बाद उसने फिर कहना आरम्भ किया—"वह मुझे हिलने तक न देता था और मैं थक कर चकनाचूर हो गई थी। इसलिए मैंने कमरे से बाहर निकल कर सायमन से कहा—'मैं तो बिलकुल थक गई, यदि किसी तरह यह मुझे जाने दे!' इस पर सायमन ने कहा—'हम ख़ुद इससे तङ्ग आ गए हैं। हम इसे नींद की दवा पिलाने की बात सोच रहे हैं; यह सो जायगा, फिर तुम चली जाना।' मैंने कहा—'अच्छी बात है।' मैंने समझा इससे किसी तरह की हानि न होगी। सायमन ने मुझे पुड़िया पकड़ा दी। मैं भीतर गई। वह पर्दे के पीछे लेटा हुआ था। मेरे भीतर जाते ही उसने तत्काल ब्राण्डी माँगी। मैंने मेज़ पर से ब्राण्डी की बोतल उठाई, उसमें से दो गिलास उँडेले, एक उसके लिए और दूसरा अपने लिए, उसके गिलास में वह पुड़िया डाल दी और वह गिलास उसे दे दिया। जो मैं ऐसा जानती तो उसे कैसे दे देती ?"

प्रेसीडेण्ट ने पूछा—ठीक, और उसकी अँगूठी तुम्हारे पास कैसे आई ?

"यह उसने मुझे अपने आप दी थी।"

"कब दी थी?"

"जब मैं उसके साथ उसके होटल में आई थी। मैं घर वापस लौटना चाहती थी, पर उसने मेरे सिर पर चोट मारी और मेरी कङ्घी तोड दी। मुझे गुस्सा आ गया, मैंने कहा मैं चली जाऊँगी; इस पर उसने अपनी अँगुली से अँगूठी निकाली और मुझे दे दी जिससे मैं न जाऊँ।"

इस अवसर पर पब्लिक प्रॉसीक्यूटर फिर अपने स्थान से थोड़ा सा उठा और सरल सी मुद्रा बना कर एक और प्रश्न करने की अनुमति माँगने लगा। अनुमति मिलने पर उसने अपने कामदार कॉलर पर सिर झुका कर पूछा—मैं यह जानना चाहता हूँ कि अभियुक्त व्यापारी स्मेलकोव के कमरे में कितनी देर तक रही थी?

मसलोवा फिर भयभीत हो उठी—उसने पब्लिक प्रॉसीक्यूटर और प्रेसीडेण्ट की ओर फिर चकित नेत्रों से देखा और शीघ्रतापूर्वक कहा—मुझे याद नहीं, मैं कितनी देर तक रही थी।

"पर क्या अभियुक्त को कुछ स्मरण है कि स्मेलकोव के कमरे से जाने के बाद होटल में और कहीं भी गई थी?"

मसलोवा क्षण भर तक सोचती रही—हाँ, इसके बाद मैं एक ख़ाली कमरे में गई थी।

"ठीक, और तुम वहाँ गई क्यों?"—पब्लिक प्रॉसीक्यूटर ने कहा। वह अदालत का नियम भूल गया और उससे सीधे प्रश्न कर बैठा।

"मैं कुछ दम लेने और गाड़ी के आने तक उसकी बाट देखने के लिए गई थी।"

"और क्या अभियुक्त के साथ कार्टिनकिन भी था?"

"हाँ, वह भी आ गया था।"

"वह क्यों आया?"

"व्यापारी की ब्राण्डी में से कुछ बच रही थी और हम दोनों ने मिल कर उसे समाप्त किया।"

"अच्छा, दोनों ने मिल कर उसे समाप्त किया, ठीक! और क्या अभियुक्त ने कार्टिनकिन से कुछ बातचीत भी की? और यदि की, तो क्या?"

सहसा मसलोवा का चेहरा लाल हो गया, उसने तेवर बदले और शीघ्रतापूर्वक कहा—क्या बात की? मैंने कोई बात नहीं की; बस मैं इतना ही जानती हूँ। मेरा जो चाहो करो, मैंने कोई अपराध नहीं किया। मैं इससे अधिक और कुछ नहीं कह सकती।

पब्लिक प्रॉसीक्यूटर ने कहा—"मुझे और कुछ नहीं कहना है।" वह अपने कन्धे अस्वाभाविक ढङ्ग से उचका कर अपने नोटों में लिखने लगा कि स्वयं अभियुक्त के कथनानुसार वह कार्टिनकिन के साथ एक खाली कमरे में गई थी।

कुछ देर तक निस्तब्धता रही।

"तुम्हें और कुछ तो नहीं कहना है?"

"मैंने सब कुछ कह दिया।"—कह कर मसलोवा एक लम्बी साँस लेकर बैठ गई।

इसके बाद प्रेसीडेण्ट ने कुछ बात नोट की, फिर अपनी बाईं

ओर बैठे एक सदस्य की फुसफुसाहट सुन कर उसने दस मिनट के लिए अदालत स्थगित कर दी और ख़ुद शीघ्रतापूर्वक उठ कर बाहर चला गया। उसने लम्बे क़द और दाढ़ी और मृदुल नेत्रों वाले सदस्य से जो बात सुनी थी वह यह थी कि सदस्य के पेट में कुछ गड़बड़ हो गई थी, और वह उसे सिकवाना चाहता और दो-चार घूँट पीना चाहता था। इसीलिए कार्यवाही में व्याघात पड़ा था।

जजों के उठने के बाद जूरी, ऐडवोकेट और गवाह भी उठ खड़े हुए। वे इस हर्षपूर्ण भाव के साथ कि आधी कार्यवाही समाप्त हो गई, इधर-उधर घूमने-फिरने लगे।

निखल्यूडोव जूरी के कमरे में चला गया और खिड़की के पास बैठ गया।
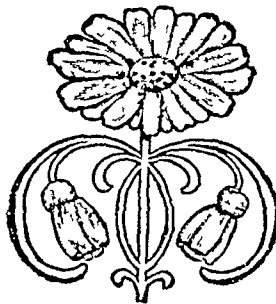
यह कटूशा ही थी !”

निखल्यूडोव और कटूशा का जो परस्पर सम्बन्ध था, वह उसे क्रमशः याद आने लगा।

जब निखल्यूडोव ने कटूशा को पहली बार देखा था, उस समय वह यूनीवर्सिटी के थर्ड-ईयर में था। गर्मियों की छुट्टियों में—जो उसने अपनी बुआओं के घर बिताई थीं—भूस्वामित्व के ऊपर वह एक निबन्ध तैयार कर रहा था। उस समय से पहले तक वह गर्मियों की छुट्टियाँ बराबर अपनी माँ और बहिन के पास मास्को के निकट अपनी माँ की बड़ी रियासत में बिताया करता था। पर उस वर्ष उसकी बहिन ने विवाह कर लिया था और उसकी माँ विदेश चली गई थी। उसे अपना निबन्ध समाप्त करना था, अतः उसने वह गर्मियाँ अपनी बुआओं के पास बिताने का निश्चय किया। उसकी बुआओं की तटस्थ रियासत में सर्वत्र शान्ति छाई रहती थी। वहाँ उसके अध्ययन में विघ्न डालने वाली कोई बात न थी।

उसकी बुआएँ अपने भान्जे और उत्तराधिकारी से बड़ा स्नेह रखती थीं, और वह भी उनसे और उनके सरल, सहज जीवन से बड़ा प्रेम रखता था।

जिस साल निखल्यूडोव अपनी बुआओं की रियासत में गर्मी की छुट्टी बिताने गया, उसी साल उसने स्पेन्सर की 'सामाजिक सङ्गठन' नाम की पुस्तक पढ़ी। स्वयं कई विशाल जायदादों का उत्तराधिकारी होने के कारण उसके ऊपर भूस्वामित्व सम्बन्धी स्पेन्सर के विचारों का विशेष रूप से प्रभाव पड़ा। उसका पिता धनवान न था, पर उसकी माता को अपने दहेज में दस हज़ार एकड़ भूमि मिली थी। उस समय वह भूस्वामित्व के अनौचित्य और असमानुपिकता को पूरी तरह समझता था, और वह स्वयं उन व्यक्तियों में से था, जिन्हें आन्तरिक आकांक्षा से प्रेरित होकर आत्म-बलिदान करने में उच्चतम आध्यात्मिक आह्लाद की अनुभूति होती है। उसने निश्चय किया कि वह भूस्वामित्व का अधिकार ग्रहण न करेगा, बल्कि अपने पिता की सारी ज़मीन देहातियों को दे डालेगा। इसी भू-समस्या पर वह निबन्ध लिख रहा था।

उसने अपनी बुआओं के घर अपनी दिनचर्या इस प्रकार रक्खी कि वह प्रात काल तड़के ही उठ बैठता—कभी-कभी तीन-तीन बजे—और सूर्य निकलने से पहले-पहले प्रातःकालीन कुहासे में पहाड़ी के नीचे नदी में स्नान करने चला जाता। जिस समय वह वापस लौटता, उसे फूलों पर ओस-कण छाए हुए मिलते। कभी-कभी वह कॉफ़ी पीकर पुस्तकें आदि लेकर निबन्ध लिखने बैठ जाता; पर अधिकतर कुछ पढ़ने-लिखने के बजाय, मैदान और जङ्गल में दुबारा

घूमने निकल जाता। भोजन के पहले वह बाग में किसी स्थान पर जा पड़ता और सो जाता। भोजन के समय वह अपनी सजीवता से अपनी बुआओं का मनोरञ्जन करता, फिर घोड़े पर सवार होकर निकल जाता या नदी में नाव खेने चला जाता और शाम को या तो बैठा-बैठा पढ़ता रहता, या अपनी बुआओं के साथ ताश खेलता।

अनेक रातों—और विशेष रूप से चाँदनी रातों में—वह पलक न झँपा सकता। ऐसे अवसरों पर जीवन के भावावेश-पूर्ण हर्षोल्लास से उसका हृदय आलोडित हो उठता और इस प्रकार वह सोने के बजाय अपने स्वप्नों और विचारों में तन्मय हुआ बाग में—कभी-कभी सुबह तक—टहलता रहता।

इस प्रकार उसने अपनी बुआओं के यहाँ शान्ति और आह्लाद के साथ अपनी छुट्टियों का पहला महीना काट दिया। इस काल में उसने उनकी अर्द्ध पोषिता और अर्द्ध सेविका, काली आँखों और चञ्चल पगों वाली कटूशा की ओर कोई विशेष ध्यान न दिया। उस समय तक—अर्थात् लगभग उन्नीस वर्ष की आयु तक—अपनी माता के अङ्क में पालित-पोषित होने के कारण निखलूदोव बिलकुल पवित्र था। यदि उसके स्वप्नों और कल्पनाओं में किसी स्त्री का चित्र कभी उदित होता भी, तो केवल पत्नी के रूप में। अन्य सारी स्त्रियाँ, जिन्हें वह अपने विचारों के अनुसार, ब्याह न सकता था, उसके निकट स्त्रियाँ न थीं—प्राणी मात्र थीं।

उन्हीं गर्मियों में स्वर्गारोहण के दिन उसकी बुआओं की एक पड़ोसिन अपने परिवार को—जिसमें दो युवती लड़कियाँ और एक

विद्यार्थी लड़का था—लेकर एक युवक चित्रकार के साथ—जो देहाती नस्ल का था और उन दिनों उसके पास ही ठहरा हुआ था—उनके यहाँ समय व्यतीत करने आई। चाय पीने के बाद वे सब मकान के सामने गोचर-भूमि में खेलने चले गए। यहाँ की घास उस समय काटी जा चुकी थी। वे आँखमिचौनी खेलने लगे। कटूशा भी उनके साथ आ मिली। इधर-उधर उछल-कूद करने और कई बार साथियों के बदलने के बाद निखल्यूडोव ने कटूशा को पकड़ लिया और वह उसकी साथिन हो गई। उस समय तक निखल्यू-डोव कटूशा के चेहरे-मुहरे की मन ही मन प्रशंसा करता था—पर केवल इतना ही, इससे अधिक किसी प्रकार के घनिष्ट सम्पर्क की बात उसके ध्यान में कभी न आई थी।

इस बार युवक चित्रकार की पकड़ने की बारी थी, उसने अपनी छोटी और झुकी हुई, पर साथ ही मजबूत देहाती टाँगों से भागते हुए उल्लासपूर्वक कहा—जब तक ये ठोकर न खा जायँ, इन्हें कोई न पकड़ सकेगा।

कटूशा ने कहा—तुम, और हमें न पकड़ सकोगे!

चित्रकार ने ताली बजा कर कहा—एक, दो, तीन।

कटूशा ने कठिनाई से हँसी रोकते हुए, चित्रकार की पीठ के पीछे, निखल्यूडोव के साथ स्थान परिवर्तन किया और उसका हाथ अपने नन्हें-नन्हें रूखे हाथों से दबा कर वह अपने स्टार्च लगे पेटी-कोट को खसखसाती हुई बाईं ओर को भाग निकली। निखल्यू-डोव चित्रकार से बचने के लिए दाहिनी ओर को भागा, पर कुछ क़दम भागने के बाद उसने पीठ फेर कर देखा कि चित्रकार कटूशा

के पीछे भाग रहा है। कट्टशा जल्दी जल्दी पैर बढ़ाती हुई बराबर भागी जा रही थी। उन दोनों के सामने एक झाड़ी थी। कट्टशा ने सङ्केत से निखल्यूदोव को उसके पीछे जा पहुँचने के लिए कहा, क्योंकि वहाँ पहुँच कर यदि वे दोनों एक बार फिर हाथ मिला लेते तो उन्हें अपने पीछा करने वाले का कोई भय न रहता—यही इस खेल का नियम है। निखल्यूदोव इशारा समझ गया और झाड़ी के पीछे की ओर भागा, पर वह यह न जानता था कि झाड़ी के पीछे एक छोटी सी खाई भी है, जिसमें काँटे उग आए हैं। ठोकर खाकर ओस से भीगे हुए काँटों में गिर पड़ा। उसके हाथों में चोट तो लगी, पर वह तत्काल उठ खड़ा हुआ और अपनी दुर्घटना पर स्वयं ही हँसने लगा।

भौंरों जैसी काली आँखों वाली कट्टशा हर्षातिरेक से तमतमाया हुआ चेहरा लिए उसकी ओर बराबर भागी आ रही थी। अन्त में दोनों ने एक-दूसरे का हाथ पकड़ लिया।

कट्टशा ने अपने खाली हाथ से अपने बालों की लट सँवारते हुए, जल्दी-जल्दी साँस लेते हुए और उल्लसित मुस्कराहट के साथ उसके नेत्रों से नेत्र मिलाते हुए कहा—क्यों, काँटे लग गए?

निखल्यूदोव ने उसका हाथ उसी प्रकार पकड़े हुए मुस्करा कर कहा—"मुझे क्या पता था कि यहाँ एक खाई भी है।" कट्टशा उसके और भी पास आ गई, वह भी बिना यह जाने कि क्या हो रहा है, उसकी ओर झुक गया। वह हटी नहीं। निखल्यूदोव ने उसका हाथ ज़ोर से दबाया और उसके ओठों को चूम लिया।

"हैं! तुमने यह क्या किया?"—वह बोली और शीघ्रतापूर्वक

अपना हाथ छुड़ा कर वहाँ से भाग गई। वह सफेद बकायन की दो टहनियाँ तोड़ कर, जिन पर से फूल गिरने शुरू भी हो गए थे, उनसे अपने झुलसे हुए चेहरे पर हवा करने लगी; इसके बाद अपना सिर पीछे मोड कर निखल्यूडोव की ओर देखती हुई वह अपने हाथ हिलाती-डुलाती उस ओर को चल दी जहाँ उसके और साथी थे।

इसके बाद से दोनों में वह विशेष प्रकार का सम्पर्क स्थापित हो गया, जो बहुधा उस पवित्र नवयुवक और नवयुवती के बीच में पाया जाता है जो एक-दूसरे की ओर आकृष्ट हो गए हों।

जब कभी कटूशा कमरे में आती या जब वह दूर से भी उसके सफेद घाघरे की झलक देख लेता, निखल्यूडोव के नेत्रों के आगे के सारे पदार्थ प्रकाश से उज्ज्वल हो उठते, ठीक जिस प्रकार सूर्य निकलने पर सारे पदार्थ अधिक मनोरञ्जक, अधिक आनन्ददायक और अधिक मर्मपूर्ण हो उठते हैं, उसे अपना सारा जीवन आह्लाद से पूर्ण प्रतीत होता। उधर कटूशा की भी यही अवस्था थी। पर कटूशा की उपस्थिति का ही निखल्यूडोव पर इतना प्रबल प्रभाव पड़ता हो, सो बात न थी। इस वस्तुस्थिति का विचार मात्र कि कटूशा नाम्नी लड़की भी इस संसार में है (और कटूशा के लिए यह कि निखल्यूडोव नाम का कोई व्यक्ति भी इस संसार मे है) उसके ऊपर इतना ही प्रभाव डालता।

चाहे उसे अपनी माँ के पास से कोई दुखद पत्र मिला हो, चाहे वह अपने निवन्ध में मन न लगा पाता हो, चाहे उसे उस अकारण औदासीन्य की अनुभूति होती हो जिसका अनुभव

युवाओं को बहुधा करना पड़ता है, पर जहाँ वह कट्यूशा का, और कट्यूशा के दर्शन करने की बात का स्मरण करता कि उसके यह सब दु:ख बात की बात में अदृश्य हो जाते।

कट्यूशा को घर में बहुत काम करना पड़ता था, फिर भी वह किसी न किसी तरह पढ़ने के लिए थोड़ा-बहुत समय निकाल ही लेती थी। निखल्यूडोव ने उसे डास्टायवस्की और टुर्जनीव के उपन्यास पढ़ने को दिए (उसने स्वयं टुर्जनीव का अध्ययन हाल ही में समाप्त किया था)। उसे टुर्जनीव का 'शान्त स्थल' विशेष रूप से पसन्द आया। निखल्यूडोव किसी प्रकार अवसर देख कर बरामदों में, या मार्ग में, या सहन में या अपनी बुआओं की वृद्धा दासी मट्रेना के कमरे में, जहाँ वह उसके साथ यदा-कदा चाय पीता, कट्यूशा से वार्तालाप कर लेता। मट्रेना की मौजूदगी में वे जो कुछ बातें करते वे बड़ी आनन्ददायिनी होतीं। जब वे एकान्त में होते तो मामला बिगड़ जाता। उनके नेत्र तत्काल ही उन बातों से बिल्कुल भिन्न और उनसे कहीं अधिक मर्मपूर्ण बातें करने लगते जो वे मुँह से करते। उनके ओंठ फूल उठते, उन्हें किसी अज्ञात भीति की अनुभूति होती और वे जल्दी ही अलग हो जाते।

बाकी सारी छुट्टियों में निखल्यूडोव और कट्यूशा का पारस्परिक सम्पर्क इसी प्रकार का रहा। उसकी बुआओं की निगाह से भी यह बात बची न रही और वे इतनी सशङ्कित हो गईं कि उन्होंने निख-ल्यूडोव की माँ प्रिन्सेस हेलेना इवानोवा को एक पत्र तक लिख भेजा। उसकी बुआ मेरी इवानोवा को आशङ्का थी कि कहीं वह कट्यूशा के साथ अवैध सम्बन्ध स्थापित न कर ले; पर उसकी आशङ्का

निराधार थी ; क्योंकि निखल्यूडोव कटूशा से प्रेम करता था, प्रेम की पवित्र प्रतिमा के रूप में उसकी आराधना करता था, (यद्यपि वह स्वयं इस बात से अवगत न था) और इसी में उनकी—कटूशा और निखल्यूडोव दोनों की—रक्षा थी। यदि उसके हृदय मे उस पर भौतिक रूप से अधिकार करने की आकांक्षा कभी उठती तो उसके विचार मात्र से वह भय-विह्वल हो उठता था। हाँ, उसकी अपेक्षाकृत अधिक आयु वाली बुआ सोफ़िया इवानोला की यह आशङ्का अवश्य कुछ साधार थी कि डिमिट्री किसी लड़की के प्रेम में पड़ने के वाद अपने दृढ़, अचल आचार से प्रेरित होकर, सम्भव है उसके कुल, मान, जन्म का विचार किए विना ही, उससे विवाह करने का निश्चय कर ले।

यदि उस समय निखल्यूडोव कटूशा विषयक अपनी अनुरक्ति की ओर से सचेत होता, और विशेष कर यदि उसे बता दिया जाता कि उसे अपना जीवन कटूशा जैसी स्थिति की लड़की के जीवन के साथ ग्रथित कदापि न करना चाहिए, तो पूरी सम्भावना थी कि वह अपनी सहज स्पष्टवादिता से प्रेरित होकर यह निष्कर्ष स्थिर कर डालता कि चाहे कोई लड़की हो, यदि वह उससे प्रेम करता है तो उसके साथ विवाह करने के प्रतिकूल किसी तर्क का उठना सम्भव ही नहीं है। पर उसकी बुआओं ने अपनी आशङ्का उसके सामने प्रकट न की, और जब वह वहाँ से विदा हुआ तब भी वह कटूशा विषयक अनुरक्ति की ओर से पूर्णतया अचेत था। उसे दृढ़ धारणा थी कि वह कटूशा के सम्बन्ध में जिन भावों की अनुभूति कर रहा है, वे वास्तव में उस जीवनोल्लास की एक विशिष्ट अभिव्यक्ति

मात्र हैं, जिससे उसका सारा अस्तित्व परिपूर्ण हो रहा है, और यह मृदुल, प्रफुल्लित बालिका भी उसके इस हर्षातिरेक में भाग लेती है। पर जब वह जाने लगा और उसकी बुआओं के साथ पोर्च में खड़ी कट्रशा अपनी काली-काली, कुछ सिकुड़ी हुई सी, आँखों में आँसू भरे उसकी ओर देखने लगी, तो उसे अनुभव हुआ कि कुछ भी सही, वह अपने पीछे एक बहुत ही सुन्दर और बहुमूल्य वस्तु छोड़े जा रहा है—वह वस्तु जो फिर कभी उसे दिखाई न देगी। यह सोच कर और वह विशेष रूप से खिन्न हो उठा।

उसने गाड़ी में सवार होते-होते सोफिया इवानोला की टोपी के ऊपर से देखते हुए कहा—अच्छा कट्रशा, बिदा, सारी बातों के लिए धन्यवाद !

कट्रशा ने अपनी आँखों में उमड़ते हुए आँसुओं को रोक कर सुन्दर मृदुल स्वर में कहा—"बिदा, डिमिट्री इवानिप।" यही कह कर वह हॉल में भाग गई, जहाँ वह शान्ति के साथ रोकर अपने जी को हलका कर सकती थी।
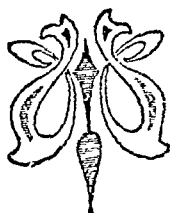
इसके बाद निखल्यूडोव ने कटूशा को दो वर्ष से भी कुछ अधिक समय तक न देखा। जब उसे उसने दुबारा देखा, तो वह सेना का अफसर नियुक्त हो चुका था और अपनी रेजीमेण्ट में जा रहा था। रेजीमेण्ट को जाते हुए रास्ते में वह अपनी बुआओं के घर कुछ दिनों के लिए ठहर गया, पर अब वह उस नवयुवक से बिल्कुल भिन्न प्रकार का नवयुवक था, जिसने उनके पास तीन वर्ष पहले गर्मियाँ बिताई थीं। तब वह एक ऐसा ईमानदार, स्वार्थरहित लड़का था जो किसी भी पुण्य कार्य के लिए अपना बलिदान करने को उद्यत रहता था। अब वह एक ऐसा भ्रष्ट, विलासी और आत्म-प्रशंसी जीव हो गया था, जिसे केवल अपने ही आमोद-प्रमोद की चिन्ता रहती थी। पहले परमात्मा का संसार उसे एक रहस्य व्यापार प्रतीत होता था, जिसे वह सोत्साह और सोल्लास देखने और समझने में तत्पर रहता था ; अब वह जिस ढङ्ग का जीवन व्यतीत कर रहा था

उससे तत्सम्बन्धी सारी बातें स्पष्ट और सहज हो गई थीं। पहले वह प्रकृति और उन लोगों के साथ तादात्म्य स्थापित करना महत्वपूर्ण और आवश्यक समझता था, जो उससे पहले हो चुके थे, विचार कर चुके थे, और अनुभूति कर चुके थे, अर्थात् प्राचीन दार्शनिक और कवि। अब वह जिस बात को आवश्यक समझता था, वह मानवी संस्थाओं और अपने सहवर्गियों के साथ सम्पर्क रखना था। पहले उसे स्त्री-जाति रहस्यमयी और मनोहारिणी प्रतीत होती थी—मनोहारिणी उस रहस्यपूर्णता के आवरण के कारण जिससे वह आच्छन्न रहा करती थी; अब स्त्री-जाति के अस्तित्व का उद्देश—अपने परिवार की स्त्रियों और अपने इष्ट-मित्रों की बहू-बेटियों को छोड़ कर और बाकी सारी स्त्री-जाति के अस्तित्व का उद्देश—एक निश्चित उद्देश था; स्त्री-जाति उस आनन्द-उपलब्धि की सर्वोत्तम साधन थी, जिसका वह अनुभव कर चुका था। तब धन की आवश्यकता न पड़ती थी, क्योंकि उसे अपनी माँ के दिए मासिक शुल्क के दसांश की भी ज़रूरत न पड़ती थी, और उसके लिए अपने पिता की सम्पत्ति देहातियों को दे डालना सम्भव था। पर अब पन्द्रह सौ रूबल मासिक वेतन से भी उसका गुज़ारा न होता था। इस सम्बन्ध में अपनी माँ के साथ उसकी दो-दो बातें भी हो चुकी थीं।

तब वह अपनी आत्मा को 'मैं' समझता था; अब वह अपनी दृढ, प्रबल पाशविकता को 'मैं' समझता था। और यह सारा भय, यह परिवर्त्तन उसमें इसलिए हुआ कि उसने अपने आप पर विश्वास रखना छोड़ दिया और दूसरों पर विश्वास रखना आरम्भ कर दिया।

ऐसा उसने इसलिए किया कि अपने ऊपर विश्वास रक्खे जाना बड़ा दुष्कर कार्य था। अपने आप पर विश्वास रखने पर सारे प्रश्नों का उत्तर उस 'पाशविक मैं' के अनुरूप जो अपनी सहज तुष्टि के लिए सदैव पिपासु रहता है—नहीं दिया जा सकता था, बल्कि लगभग सबका उत्तर उसके प्रतिकूल देना पड़ता था। दूसरों पर विश्वास रखने पर किसी प्रकार का निर्णय या निश्चय करने की आवश्यकता न पड़ती थी, सारी बातों का निश्चय पहले से ही हो चुका था, जो सदैव उस 'पाशविक मैं' के अनुरूप और आत्मा के प्रतिकूल था। बात केवल यहीं तक नहीं थी। अपने आप पर विश्वास रखने पर उसे सतत रूप से दूसरों की आलोचना का भाजन बनना पड़ता था, दूसरों पर विश्वास रखने पर उसे दूसरों की सहमति प्राप्त होती थी। फलतः जब निखल्यूडोव किसी गहन विषय पर—परमात्मा, सत्य, सम्पदा, निर्धनता आदि पर—विचार करता था या उसका प्रसङ्ग छेड़ता था तो उसके आस-पास के सारे व्यक्ति इसे अप्रासङ्गिक और उपहासास्पद तक समझते, उसकी माँ और बुआएँ तक सहृदय व्यङ्ग-विद्रूप के साथ उसे 'हमारा प्यारा दार्शनिक' कह कर पुकारतीं। पर अब, वह जब उपन्यास पढ़ता, गन्दी कहानियाँ सुनाता, फ्रेञ्च थिएटरों मे मनोरञ्जक अभिनय देखने जाता और उसकी चटपटी बातें सजीवता के साथ घर-घर सुनाता फिरता, तो सब उसकी प्रशंसा करते और सब उसे प्रोत्साहन देते। जब वह अपनी आवश्यकताओं को सीमित रखना उचित समझता, पुराना सा ओवरकोट पहने फिरता, और शराब को हाथ न लगाता, तो सब इसे एक विलक्षण बात समझते और इसे 'उड़ चलने' के नाम से

मानवी कर्त्तव्यों के बन्धन से विमुख कर देता है और उसका स्थान रेजीमेण्ट, पताका और वर्दी के सन्मान-विषयक कर्त्तव्य को दे देता है। इसके द्वारा मनुष्य दूसरों के ऊपर पूर्ण अधिकार प्राप्त कर लेता है और साथ ही जो उससे पद में बड़े होते हैं, उनके निकट उसे क्रीत आज्ञाकारी बना देता है।

पर जब रेजीमेण्ट, पताका और वर्दी के सम्मान और हत्याकाण्ड करने की वैध अनुमति वाले सैनिक जीवन के उत्पन्न हुए पतन के साथ ही वह पतन भी आ मिलता है, जो सुख-समृद्धि और राज-परिवार के सदस्यों के साथ घनिष्ट सम्पर्क का प्रत्यक्ष परिणाम है, (और गार्ड्स सेना मे सारे अफ़सर धनी और कुलीन परिवार के होते है) तो यह पतन स्वार्थमयी सोलह आने विक्षिप्तता का स्वरूप धारण कर लेता है। जिस घड़ी से निखल्यूडोव ने सेना में क़दम रक्खा, इस स्वार्थमयी विक्षिप्तता का प्रकोप उस पर होने लगा और वह अपने अन्य सहवर्गियों की तरह ही रहने लगा। उसे किसी प्रकार का काम न था। वह उस बढ़िया वर्दी को पहनता जिसे दूसरे बनाते और ब्रुश करते थे। वह उन हथियारों को लगाता जो दूसरों के बनाए और पॉलिश किए होते थे और जिन्हें उसके हाथ में दूसरे पकड़ाते थे। वह एक बढ़िया से घोड़े पर सवार होकर क़वा-यद मे जाता और यह घोड़ा भी दूसरों का पाला-पोसा, सधाया और तैयार किया था। क़वायद में जाकर और सबकी तरह वह भी तल-वार घुमाता, बन्दूक़ चलाता और दूसरों को इसकी शिक्षा देता। उसे और किसी प्रकार की संलग्नता न थी, और उच्च पदस्थ व्यक्ति, आबाल-वृद्ध—ज़ार और उसके आस-पास के लोग-बाग न केवल

इस असंलग्न-संलग्नता की स्वीकृति देते, बल्कि इसके लिए निखल्यू-डोव को धन्यवाद भी देते थे।

इसके अलावा जिस काम को अच्छा और महत्वपूर्ण समझा जाता था, वह था अफ़सरों के क्लबों और भोजनालय मे खाना-पीना और विशेष रूप से सुरापान करना और बड़ी-बड़ी रकमे पानी की तरह बहाना, जो किसी अदृश्य लोक से उसके पास आ पहुँचती थीं। फिर थिएटर की बारी आती, नाच-रङ्ग का सिलसिला छिड़ता, और औरतों के साथ सम्बन्ध स्थापित किया जाता; और फिर अश्वारोहण, फिर खड्ग सञ्चालन, फिर कूद-फाँद और फिर धन का अपव्यय—शराब, ताश और औरते।

इस प्रकार का जीवन सैनिक पुरुषों को विशेष रूप से पतित कर डालता है। क्योकि और कोई व्यक्ति इस प्रकार का जीवन व्यतीत करने पर हृदय में लज्जित और अनुतप्त अवश्य होता है, पर इसके विपरीत सैनिक पुरुष इस प्रकार के जीवन का विशेष रूप से गर्व करते हैं, और युद्ध-काल मे इस गर्व की मात्रा कहीं अधिक बढ़ जाती है। निखल्यूडोव ने जिस समय सेना मे पदार्पण किया था, उसके कुछ ही समय पहले तुर्कों के साथ युद्ध-घोषणा की गई थी। सैनिक समझते थे कि हम युद्ध में अपना जीवन बलिदान करने को कटिबद्ध है, इसलिए आमोद-प्रमोदपूर्ण उच्छृङ्खल जीवन हमारे लिए न केवल क्षम्य ही है, बल्कि नितान्त आवश्यक भी है, और इसीलिए हम इस प्रकार का जीवन व्यतीत करते हैं।

बस, अपने जीवन के इस काल में निखल्यूडोव के मन मे इसी प्रकार के अव्यवस्थित विचार उठा करते थे, और उसे उन

नैतिक बन्धनों से मुक्त होने का मन ही मन हर्ष होता था, जिनमें उसने उस समय के पहले तक अपने आपको स्वेच्छापूर्वक बाँध रक्खा था। यही उसकी स्वार्थमयी विक्षिप्तता थी।

जब वह तीन वर्ष की अनुपस्थिति के बाद अपनी बुआओं के पास रहने आया तो उसकी यही अवस्था थी।

खल्यूदोव अपनी बुआओं से भेंट करने गया, इसलिए कि उनकी जायदाद उस सड़क से लगी हुई थी जिस पर होकर उसे अपनी रेजीमेण्ट में (जो पहिले से ही आगे निकल गई थी) शामिल होने जाना था, और उसकी बुआओं ने उससे अपने पास आने का बहुत अनुरोध किया था। एक विशेष कारण यह भी था कि वह कटूशा के दर्शन करना चाहता था। सम्भवतः उसी समय उसके अन्तरस्थ हृदय में कटूशा के सम्बन्ध में अदम्य पाशविक प्रवृत्ति से प्रेरित होकर कलुषित योजनाएँ उत्पन्न होने लग गई थीं, पर वह स्वयं इस बात से अवगत न था। उसकी एकमात्र आकांक्षा थी उस स्थल को जाकर देखना जहाँ उसने इतने आनन्द के साथ समय व्यतीत किया था, अपनी कौतुकपूर्ण, पर प्यारी, सहृदय और वृद्ध बुआओं के दर्शन करना, जो बिना उसकी अवगति के, हमेशा उसे स्नेह और दुलार के आवरण से ढक देती थीं, और मृदुल कटूशा को देखना, जिसने उसके स्मृति-पटल पर ऐसी आनन्ददायिनी स्मृति छोड़ दी थी।

वह मार्च के अन्त मे गुडफ्राइडे के दिन आया। बर्फ पिघलना शुरू हो गया था। वर्षा हो रही थी और उसके शरीर पर एक धागा तक सूखा न बचा था। उसे बड़ा जाडा लग रहा था, पर साथ ही उसे उस सजीवता और स्फूर्ति की अनुभूति हो रही थी, जो ऐसे अवसरों पर सदैव उत्पन्न हो आया करती है। जिस समय उसकी गाडी पुराने ढङ्ग के सुपरिचित सहन के सामने—जो ईंट की एक नीची दीवार से घिरा हुआ था और जिस पर छत पर से बर्फ़ पिघल-पिघल कर गिर रही थी—जाकर लगी तो उसने मन ही मन कहा—वह यहीं किसी जगह पास में होगी !

उसे आशा थी कि गाडी की घण्टी की आवाज़ सुन कर वह बाहर निकल आएगी, पर वह दिखलाई न पड़ी। दो नङ्गे पॉव स्त्रियॉ, जो शायद फर्श पर झाड़ू लगा रही थीं, बग़ल के दरवाज़े से निकल कर बाहर आईं। वह मुख्य द्वार पर भी दिखाई न दी। वहाँ उसे तीखन नौकर दिखाई दिया, जो सफाई करने में लगा हुआ था। उसे मुलाकाती कमरे मे केवल अपनी बुआ सोफ़िया इवानोवा के दर्शन हुए, वह उस समय रेशमी पोशाक और टोपी पहने थी।

सोफ़िया इवानोवा ने उसका चुम्बन लेकर कहा—धन्य भाग जो तुम आ गए। मेरी का जी अच्छा नहीं है; हम दोनों आज गिर्जाघर गई थीं और उसे बडी थकावट मालूम पड रही है।

निखल्यूडोव ने सोफिया इवानोवा का हाथ चूम कर कहा—बुआ सोफ़िया, तुम्हे बधाई। अरे ! मुझे क्षमा करो, मैंने तुम्हारा हथ गीला कर दिया।

"जाओ, अपने कमरे में जाओ, तुम तो पानी मे बिल्कुल तर हो। हे भगवान, तुम्हारे तो मूँछे भी निकल आईं।......कटूशा! कटूशा! इन्हें चाय लाकर दे, जल्दी कर।"

बाहर से उल्लासपूर्ण कण्ठ-स्वर सुनाई दिया—"एक मिनट में लो।" निखल्यूडोव का हृदय पुकार उठा—"यहीं है!" और उसे ऐसा लगा मानो बादलों को फाड़ कर सूर्य निकल आया हो।

निखल्यूडोव प्रसन्न चित्त से तीखन के साथ अपने पुराने कमरे में जाकर कपड़े बदलने लगा। उसकी इच्छा हुई कि वह तीखन से कटूशा के सम्बन्ध में कुछ पूछ-ताछ करे। वह कैसे है, क्या कर रही है, क्या वह ब्याह न करेगी? पर तीखन ने इतने सम्मान का भाव दिखाया और उसके लिए बर्तन से पानी उँडेलने में इतनी सभ्यता दिखलाई कि निखल्यूडोव उससे कटूशा के सम्बन्ध मे किसी प्रकार का प्रश्न करने का सङ्कल्प न कर सका, बल्कि तीखन के पोतों का कुशल-मङ्गल, बुड्ढे 'भाई के घोडे' की बात, और पोल्कन कुत्ते का हाल पूछ कर ही रह गया। पोल्कन को छोड़ कर और सब सकुशल थे। पोल्कन पिछली गर्मियों में पागल हो गया था।

निखल्यूडोव ने अपने भीगे कपडे उतार कर सूखे कपडे पहनने शुरू किए ही थे कि उसके कानों में परिचित पग-ध्वनि, और साथ ही दरवाज़े पर खटके की आवाज़ आई। निखल्यूडोव पग-ध्वनि और खटके को पहचान गया। उसके सिवा और कौन इस ढङ्ग से चल सकता और दरवाजे पर खटका कर सकता था?

निखल्यूडोव ने कन्धो पर अपना गीला लबादा डाल लिया और दरवाज़ा खोल दिया।

यह कत्यूशा ही थी, हाँ पहले की अपेक्षा कुछ सलोनी अवश्य हो गई थी। उन तिरछे से काले-काले नेत्रों ने उसी परिचित ढङ्ग से देखा। वह इस समय भी पहले की तरह सफेद घाघरा पहन रही थी। वह उसकी बुआओं के पास से एक सुगन्धित साबुन, जिसका कागज अभी उतारा गया था, और दो तौलियाँ लाई थी, जिनमें से एक कढ़ी हुई लम्बी रूसी तौलिया थी, और दूसरी स्नान करने की तौलिया थी। अछूता साबुन—जिस पर मुहर अङ्कित थी—तौलिया, और वह खुद—सब एक समान स्वच्छ, ताज़ा, बेदाग़ और हर्षदायक थे। निखल्यूडोव के दर्शनों से उसके ओठों पर उल्लास की एक मुस्कराहट बलात् उत्पन्न हो गई और उससे उसके सुन्दर ओंठ पहले की तरह ही फूलने लगे।

उसका चेहरा गुलाबी कान्ति के साथ लज्जा से लाल हो उठा और उसने प्रयास करके पूछा—डिमिट्री इवानिय, कैसे हो?

निखल्यूडोव ने भी लजाते हुए कहा—हाँ, तुम कैसी हो?

"परमात्मा की दया है। लो, यह तुम्हारा मनचाहा साबुन है।" और इतना कह कर उसने साबुन मेज़ पर रख दिया और तौलियाँ कुर्सी की पीठ पर लटका दी।

तीखन ने अतिथि की तरफ़ से उसके खुले हुए ड्रेसिङ्ग-केस की ओर—जो ब्रुशों, सुगन्धियों, इत्रों, चाँदी के ढक्कनों वाली अनेक बोतलों और अन्य अनेक प्रकार के वेश-भूषा के पदार्थों से भरा हुआ था—सङ्केत करके कहा—यहाँ सारी चीज़ें मौजूद हैं।

निखल्यूडोव का हृदय पहले की तरह ही प्रकाश और मृदुलता

से परिपूर्ण हो उठा। उसने कहा—बुआओं से मेरा धन्यवाद कह देना। यहाँ आकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही है।

वह इन शब्दों के उत्तर में केवल मुस्कराई और बाहर चली गई।

बुआएँ निखल्यूडोव का हमेशा से ही दुलार करती आई थीं, पर इस बार उन्होंने उसकी विशेष रूप से आवभगत की। डिमिट्री युद्ध में जा रहा है, सम्भव है वहाँ घायल हो जाय या मारा ही जाय, इस विचार से वृद्धा महिलाओं का हृदय और पसीज उठता था।

निखल्यूडोव ने शुरू में बुआओं के घर एक दिन एक रात ठहरने का निश्चय किया था, पर कट्‌शा को देखने के बाद उसका निश्चय बदल गया और उसने ईस्टर तक ठहरने का सङ्कल्प किया। उसने अपने एक मित्र शोनवोक से ओडेसा पहुँच कर मिलने का वादा किया था, पर अब उसने उसे तार देकर अपनी बुआओं के यहाँ बुलाया।

जिस क्षण से उसने कट्‌शा को देखा, उसके प्रति उसके भाव पूर्ववत् उद्दीप्त हो उठे। पहले की तरह अब भी वह उसका सफ़ेद घाघरा भावाविष्ट हुए बिना न देख सकता था; उसकी पग-ध्वनि, उसका कण्ठ-स्वर, उसकी हँसी हर्षातिरेक पूर्ण हुए बिना न सुन सकता था; उसकी भौंरों जैसी काली-काली आँखों को और विशेषकर उस समय, जब वह मुस्कराती थी—प्रेमासक्ति बिना न देख सकता था। और जब वह उसे अपने सामने आने पर लजाते हुए देखता तो वह स्वयं भी क्षुब्ध हो उठता। वह अच्छी तरह समझ रहा था कि वह प्रेमाविष्ट है, पर अब से तीन साल पहले की तरह नहीं, जब वह प्रेम को एक प्रकार

का रहस्यमय व्यापार समझता था, और जब वह शायद अपने मन में भी स्वीकार न करता कि वह प्रेमाविष्ट है, और जब उसकी धारणा थी कि मनुष्य अपने जीवन में केवल एक बार प्रेम कर सकता है। अब वह अच्छी तरह जानता था कि वह प्रेमाविष्ट है, और इसकी उसे प्रसन्नता थी। वह अस्पष्ट रूप से यह भी जानता था—यद्यपि अपने आप से छिपाए रखने की चेष्टा करता था—कि यह प्रेम किस प्रकार का है और इसका अन्त कहाँ जाकर होगा। सारे प्राणियों की भाँति निखल्यूडोव के शरीर में दो जीव काम कर रहे थे, एक आध्यात्मिक जीव था, जो अपने लिए उस सुख की आकांक्षा कर रहा था, जिससे ससार के अवशिष्ट प्राणियों को भी सुख मिले; दूसरा—पाशविक जीव—केवल अपने ही सुख की आकांक्षा में निमग्न था और उस सुख की उपलब्धि में सारे संसार के सुख का बलिदान करने को सन्नद्ध रहता था। पर स्वार्थमयी विक्षिप्तता के कारण जिसे पीटर्सबर्ग और सैनिक जीवन ने जन्म दिया था, यह पाशविक जीव उस पर एक सत्तात्मक राज्य कर रहा था और इसने उसके आध्यात्मिक जीव को पूरी तरह कुचल डाला था।

पर जब उसने कटूशा को देखा और उसे उन्हीं भावों की अनुभूति होने लगी, जिनकी अब से तीन बरस पहले हुई थी, तो उसके आध्यात्मिक जीव ने भी सिर उठाया और वह भी अपना अधिकार प्रकट करने लगा। और इस प्रकार ईस्टर तक उसके हृदय में अन्तर्द्वन्द्व सतत रूप से चलता रहा, यद्यपि वह स्वयं इसे स्वीकार न करता था।

वह मन ही मन इस बात को अच्छी तरह जानता था कि उसे अब चला जाना चाहिए, क्योंकि अपनी बुआओं के घर और अधिक ठहरने का कोई वास्तविक कारण नहीं है। वह जानता था कि इसका फल कुछ अच्छा न होगा, पर इतने पर भी वहाँ का रहना इतना हर्षदायक और इतना आनन्ददायक था कि वह जान-बूझ कर अपने हृदय की आवाज की उपेक्षा करता रहा और वहाँ ठहरा रहा।

इसके बाद ईस्टर की रात आई। वृद्धा महिलाएँ, नौकर-चाकर, कटूशा और निखल्यूडोव सब गिर्जे में गए। कटूशा ने प्रार्थना के बाद भिक्षुकों को दान दिया और एक भिक्षुक के पास आकर उससे घृणा दिखाने के बदले उसका तीन बार चुम्बन किया। यह करते समय उसकी दृष्टि निखल्यूडोव पर पड़ी, मानो वह पूछ रही हो—"मैं ठीक कर रही हूँ न?" निखल्यूडोव ने भी दृष्टि-निपात से ही उत्तर दिया—"हाँ प्रिये, हाँ, यह ठीक है, सब कुछ ठीक है, सब कुछ सुन्दर है; मैं प्रेम करता हूँ!"

दोनों गिर्जे की सीढ़ियों से उतर कर नीचे आए और वह उसके पास पहुँचा। वह उसका ईस्टर का चुम्बन लेने के लिए न आया था, वह केवल उसके पास रहना चाहता था।

मट्रेना दासी ने अपना सिर झुकाया और मुस्करा कर कहा—"प्रभु ईसा उठ खड़े हुए!" और उसकी ध्वनि से व्यञ्जित होता था—"आज हम सब बराबर हैं!" उसने अपने गुड़ी-मुड़ी किए रूमाल से अपने ओंठ पोंछे और निखल्यूडोव की ओर अपना मुँह बढ़ा दिया।

निखल्यूडोव ने मुस्करा कर उसका चुम्बन लेते हुए कहा—

"हाँ, भगवान उठ खड़े हुए।" इसके बाद उसने कटूशा की ओर देखा, वह लजाई और उसके निकटतर हो रही। "डिमिट्री, प्रभु उठ खड़े हुए?" निखल्यूडोव ने उत्तर दिया—"हाँ, सचमुच भगवान उठ खड़े हुए।" और दोनों ने दो बार चुम्बन किया, और इसके बाद वे यह निश्चय करने के लिए रुक गए कि क्या तीसरा चुम्बन भी आवश्यक है, और फिर यह निश्चित करने के बाद कि आवश्यक है, उन्होंने तीसरी बार चुम्बन किया।

निखल्यूडोव ने पूछा—तुम पादरी के यहाँ न जाओगी?

"नहीं, डिमिट्री इवानिय, क्षण भर बैठ कर चलेंगे।"—कटूशा ने प्रयासपूर्वक कहा, मानो उसने कोई आनन्ददायक कार्य सम्पन्न किया हो। उसका सारा वक्षःस्थल एक दीर्घ निश्वास से प्रकम्पित हो उठा और उसने उसके नेत्रों से अपने वे तिरछे से नेत्र मिलाए जिनसे भक्ति, बालिका-सुलभ निष्कलुषता और प्रेम प्रकट होता था।

स्त्री-पुरुष के पारस्परिक प्रेम-व्यापार में हमेशा एक ऐसा अवसर आता है, जब यह प्रेम अपनी चरम सीमा तक पहुँच जाता है—एक ऐसा अवसर, जब उसमें चेतनता, विवेक और वासना का अभाव सा रहता है। निखल्यूडोव के लिए भी ईस्टर की रात को वैसा ही अवसर आया। अब कटूशा का स्मरण आते ही वह घटना और सारे पदार्थों पर आवरण डाल देती थी। उसका वह सुन्दर, सचिक्कण, शीशे जैसा चमकता हुआ सिर, उसके सुकुमार शरीर पर फबने वाली चुस्त सफेद पोशाक, उसका अर्द्ध-विकसित वक्षःस्थल, सलज्ज कपोल और उसका सारा व्यक्तित्व, जिस

पर निष्कलुषता और पवित्र प्रेम की मुहर लगी हुई थी—इन सबकी जहाँ उसे याद आती, उसी क्षण उसके हृदय में (अपने लिए नहीं, यह वह अच्छी तरह जानता था) सारे संसार के लिए और सारे प्राणियों तथा पदार्थों के लिए—केवल अच्छे प्राणियों और अच्छे पदार्थों के लिए नहीं, बल्कि सारे स्थावर-जङ्गम, चराचर पदार्थों के लिए—उस भिक्षुक तक के लिए, जिसका कटूशा ने चुम्बन किया था—समान भाव से प्रेम उद्दीप्त हो उठता।

वह जानता था कि कटूशा के हृदय में भी इसी प्रकार का प्रेम वास करता है, क्योंकि उसने स्वयं इसकी अनुभूति की थी और वह इस बात को समझता था कि एकमात्र इसी प्रेम के द्वारा दोनों में तादात्म्य स्थापित हो गया है। 'आह! जो कहीं यह सब उसी जगह समाप्त हो जाता और आगे न बढ़ता!'—उसने जूरी के कमरे में बैठे मन ही मन कहा।
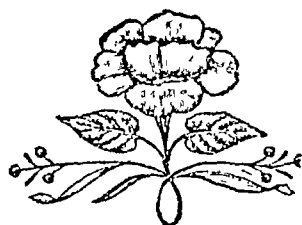
चौदहवाँ परिच्छेद

गिर्जे से वापस आकर निखल्यूडोव ने अपनी बुआओं के साथ व्रत तोड़ा और थोड़ी सी शराब पी, क्योंकि रेजीमेण्ट में रहते-रहते शराब पीने का उसे व्यसन पड़ गया था। इसके बाद वह कमरे में पहुँचा और कपड़े पहने ही पड़ कर सो गया। दरवाज़े की खटखटाहट से उसकी आँख खुली। वह जान गया कि यह उसी की खटखटाहट है, और वह आँखें मलता और अङ्गड़ाइयाँ लेता उठ खड़ा हुआ।

"कट्यूशा, तुम हो क्या? आओ, भीतर आ जाओ।"—उसने कहा।

कट्यूशा ने दरवाजा खोला।

"भोजन तैयार है" उसने कहा। वह इस समय भी वही पोशाक पहने थी, हाँ, बालों में फ़ीता इस समय न था। उसने निखल्यूडोव की ओर मुस्करा कर देखा, मानो उसने उसे कोई बड़ा मङ्गलसूचक समाचार सुना दिया हो।

निखल्यूडोव ने उठ कर बालों को कंघी से सँवारते हुए कहा—मैं अभी आया।

वह क्षण भर उसी प्रकार खड़ी रही। निखल्यूडोव ने यह देख कर कंघी फेंक दी और उसकी तरफ कदम बढ़ाया, पर उसी क्षण कटूशा ने पीठ फेर ली और वह शीघ्रतापूर्वक कमरे से बाहर बिछी चटाई तक जा पहुँची।

निखल्यूडोव ने सोचा—"मैं भी कैसा बौडम हूँ! मैंने उसे रोका क्यों नहीं?" वह उसे पकड़ने के लिए दौड़ा।

वह उसे किस लिए पकड़ना चाहता था, यह वह स्वयं न जानता था, पर उसे इतना अवश्य बोध हुआ कि जिस समय वह कमरे में आई थी, उस समय कुछ न कुछ अवश्य किया जाना चाहिए था—कुछ ऐसा काम, जो हमेशा ऐसे अवसरों पर किया जाता है और जो उसने नहीं किया।

उसने कहा—कटूशा, ठहरो।

कटूशा ने रुकते हुए कहा—क्यों, क्या बात है?

"कुछ नहीं—सिर्फ़—" और उसने प्रयासपूर्वक यह स्मरण करते हुए कि ऐसे अवसरों पर अन्य पुरुष क्या करते हैं, उसकी कमर में हाथ डाल दिया।

वह निश्चेष्ट खड़ी हो गई और उसके नेत्रों की तरफ देखने लगी।

"नहीं डिमिट्री, यह मत करो।" उसने लाज के मारे रोनी सी होकर उसके हाथ को अपने बलिष्ट एवं शुष्क हाथों से अलग करते हुए कहा। निखल्यूडोव ने उसे छोड़ दिया और क्षण भर के

लिए वह न केवल क्षुब्ध और लज्जित ही हो गया, बल्कि उसे स्वयं अपने ऊपर घृणा हो आई। अगर इस अवसर पर अपने आप पर विश्वास करता तो उसे तत्काल पता लग जाता कि यह क्षोभ और ग्लानि उसकी उस आत्मा के उच्चतम भाव हैं, जो स्वतन्त्र होने के लिए छटपटा रही है। पर उसने कल्पना कर ली कि यह सब उसकी मूर्खता है और उसे भी इस अवसर पर और पुरुषों की तरह आचरण करना चाहिए। उसने उसे दुबारा पकड़ लिया और उसकी गर्दन का चुम्बन लिया।

और यह चुम्बन उस प्रथम, सरल चुम्बन से जो अब से तीन वर्ष पहले बकायन की झाडी के पीछे किया गया था, और उस प्रात कालीन चुम्बन से जो गिर्जे के सहन में किया गया था, बिल्कुल भिन्न प्रकार का चुम्बन था। यह बडा भीषण, रोमाञ्चकारी चुम्बन था और कटूशा ने इसकी अनुभूति की।

"अजी तुम क्या कर रहे हो?"—वह ऐसे स्वर में चिल्ला उठी मानो निखल्यूडोव ने उसका कोई अमूल्य पदार्थ सदैव के लिए नष्ट कर दिया हो, और वह वहाँ से भाग गई।

इसके बाद वह भोजनालय में आया। तडक-भडक की पोशाके धारण किए उसकी बुआएँ, पारिवारिक डॉक्टर और एक पड़ोसी के साथ वहाँ पहले से ही मौजूद थी। वैसे यह सब कुछ साधारण सा प्रतीत होता था, पर स्वयं निखल्यूडोव के हृदय में एक प्रकार का तूफान उठ रहा था। जो कुछ वहाँ कहा जा रहा था वह उसकी समझ में बिलकुल न आता था, और यदि उसे उत्तर देने की आवश्यकता पडती थी तो अगट-शगट उत्तर दे देता था। उसका

ध्यान बराबर कटूशा की ओर था। वह बार-बार उस चुम्बन का स्मरण कर रहा था जो उसने उसे रास्ते में पकड़ कर ले लिया था, और दूसरी किसी ओर उसका चित्त न जाता था। जब वह कमरे में आई तो निखल्यूदोव बिना उसकी ओर देखे अपने रोम-रोम से उसकी उपस्थिति की अनुभूति करने लगा, और उसे उसकी ओर दृष्टि न उठाने के लिए प्रबल प्रयास करना पड़ा।

भोजन के बाद वह अपने कमरे में चला गया और वहाँ अत्यन्त उत्तेजित अवस्था में चेहल कदमी करता हुआ भवन में से आती हुई प्रत्येक आहट को कान खड़े करके सुनने और प्रति क्षण उसकी पग-ध्वनि की प्रतीक्षा करने लगा। उसके पाशविक जीव ने अब न केवल अपना सिर ही ऊँचा कर लिया था, बल्कि अब वह उसके तीन वर्ष पहले के और प्रातःकाल के आध्यात्मिक जीव को कुच-लने में भी पूर्णतया सफल हो गया था। उस समय उस भयङ्कर पाशविक जीव ने उस पर पूरा अधिकार जमा रक्खा था।

दिन भर उसकी ताक में लगे रहने पर भी वह उससे एकान्त में न मिल सका। सम्भवत. वह उसकी अवज्ञा करना चाहती थी। पर सन्ध्या समय उसे उसके कमरे के पास वाले कमरे में विवश होकर जाना पड़ा। डॉक्टर को उस रात को वहीं रहना था और उसे उसका बिछौना तैयार करना था। जब निखल्यूदोव ने उसे पास वाले कमरे में आते सुना तो वह भी साँस रोक कर काँपता हुआ वहाँ पहुँचा। मानो वह कोई अपराध करने जा रहा हो।

वह तकिए पर धुला हुआ गिलाफ चढ़ा रही थी और गिलाफ़ में दोनों बाँहें डाले उसके दोनों कोने पकड़े हुए थी। उसने मुँह

फेर कर देखा और मुस्कराई, पर इस मुस्कराहट में वह उल्लास न था, वह हर्षातिरेक न था; यह भयातुर, कातर मुस्कराहट थी। निखल्यूडोव को इस मुस्कराहट से ऐसा जान पड़ा कि वह जो कुछ कर रहा है, अनुचित है। वह क्षण भर के लिए ठिठका। अब भी अन्तर्द्वन्द्व की गुञ्जायश बाकी थी। क्षीण स्वर में ही सही, फिर भी कटूशा के प्रति उसका जो वास्तविक प्रेम था, वह अब भी उसकी, उसके भावों की और उसके जीवन की बात कह रहा था। पर साथ ही एक दूसरी आवाज़ भी आ रही थी—'ख़बरदार! अपने आनन्द, अपने सुख के अवसर को हाथ से मत निकाल देना!' और इस दूसरी आवाज़ ने पहली आवाज़ को पूरी तरह दबा दिया। वह निश्चयात्मक भाव से उसके पास पहुँचा, और उस पर एक भयङ्कर, अदम्य, पाशविक वासना ने अधिकार कर लिया।

उसने उसकी कमर में हाथ डाल कर उसे पलंग पर बिठा दिया, और यह जानते हुए कि अभी कुछ और भी करना है, वह स्वयं भी उसकी बगल में बैठ गया।

वह कातर स्वर में बोली—"प्यारे डिमिट्री इवानिय! मुझे जाने दो, अच्छा, मुझे जाने दो! मेट्रेना पैवलोटना आ रही हैं!"—उसने छुटक कर अलग खड़े होते हुए ज़ोर से कहा। और सचमुच कोई दरवाज़े के पास आ रहा था।

वह फुसफुसा कर बोला—अच्छी बात है, मैं तुम्हारे पास रात को आऊँगा। तुम अकेली मिलोगी न?

"तुम्हारा ध्यान किधर है? कभी नहीं! नहीं, नहीं।"—उसने

कहा, पर केवल अपने ओठों से। उसके शरीर के सारे अवयवों का प्रकम्पन कुछ दूसरी ही बात कह रहा था।

दरवाज़े पर सचमुच मेट्रेना पैवलोटना ही आई थी। वह बाँह पर एक कम्बल डाले कमरे में आई और निखल्यूडोव की ओर भर्त्सनापूर्ण नेत्रों से देख, कट्रशा को दूसरा कम्बल लेकर चले आने के लिए झिड़कने लगी।

निखल्यूडोव चुपचाप बाहर चला गया, पर इस समय उसे लज्जा तक न आ रही थी। वह मेट्रेना पैवलोटना के चेहरे से देख सकता था कि वह उसे दोष दे रही है, वह स्वयं भी जानता था कि उसका दोष देना न्यायसङ्गत है, और वह स्वयं भी अनुभूति कर रहा था कि वह अनुचित कार्य कर रहा है, पर इस नूतन पाशविक उत्तेजना ने कट्रशा के प्रति वास्तविक प्रेम के पहले के सारे बन्धनों को तोड़ कर, अब उस पर पूर्ण अधिकार कर लिया था और उसने किसी दूसरी बात के लिए गुञ्जायश न छोड़ी थी। वह जानता था कि इस पाशविक प्रवृत्ति की तृप्ति करने के लिए उसे क्या करना चाहिए, और वह इसके लिए उपयुक्त अवसर की ताक में था।

वह विक्षिप्तों की नाई कभी बुआओं के कमरे मे जाता, कभी अपने कमरे में, और कभी बाहर पोर्च में। वह बराबर इसी एक चिन्ता मे निमग्न था कि उससे एकान्त में किस प्रकार भेंट हो। पर वह उससे बची-बची फिरती रही और मेट्रेना पैवलोटना उसकी सतर्क भाव से चौकसी करने लगी।

इस प्रकार सन्ध्या बीती और रात आई। डॉक्टर सोने चला गया। निखल्यूडोव की बुआएं भी अपने कमरे में चली गईं थीं। निख-ल्यूडोव जानता था कि मेट्रेना पेवलोटना भी उनके शयनागार में ही होगी, अतः कटूशा दासियों की बैठक में अवश्य अकेली मिलेगी। वह फिर पोर्च में पहुँचा। दरवाज़े के बाहर अँधेरा फैला हुआ था और चारों ओर उस वसन्तकालीन शुभ्र कुहासे का आवरण छाया हुआ था, जो अवशिष्ट वर्फ को नष्ट कर डालता है या जो अवशिष्ट वर्फ़ के पिघलने से उत्पन्न हो जाता है। दरवाज़े से कोई सौ क़दम की दूरी पर पहाड़ी के नीचे नदी से विचित्र चीत्कार-ध्वनि आ रही थी। यह बर्फ़ गल रहा था। निखल्यूडोव दासियों के कमरे की खिड़की के पास पहुँचा और बर्फ़ के टुकड़ों पर उचक कर खड़ा हो गया। उसका हृदय बड़े ज़ोर से धड़क रहा था, ऐसा प्रतीत होता था कि वह उसकी ध्वनि तक सुन सकता है।

उसकी भारी साँस बड़ी तेज़ी के साथ चल रही थी। दासियों के कमरे में एक छोटा सा लम्प जल रहा था और कट्टशा मेज़ के सामने अकेली बैठी हुई विचार-मग्न मुद्रा ने सामने की ओर देख रही थी। निखल्यूडोव बिना हिले-डुले खड़ा रहा, इस आशा में कि देखें अपने आपको अकेली समझ कर वह क्या करती है। दो-एक मिनट तक वह उसी प्रकार निश्चेष्ट बैठी रही, इसके बाद उसने अपने नेत्र उठाए, मुस्कराई और इस प्रकार सिर हिलाया मानो वह अपने आपको झिड़क रही हो। इसके बाद उसने अपने बैठने का ढङ्ग बदल दिया, अपनी निश्चेष्ट बाँहें मेज़ पर रक्खीं, और फिर उसी प्रकार सामने की ओर देखने लगी। वह खड़ा-खड़ा उसकी ओर देखता और अचेत भाव से अपने हृदय की गति और नदी के निनाद को सुनता रहा। नदी में, उस श्वेत कुहासे के आवरण के तले निरन्तर हलचल जारी थी, और शीशे की तरह बर्फ़ के पतले-पतले टुकड़ों के परस्पर टकरा कर टूटने की मृदुल ध्वनि कानों में आ रही थी।

इस प्रकार वह खड़ा हुआ कट्टशा की उस गम्भीर, व्यथित आकृति को देख रहा था, जो उसके मानसिक कष्ट को व्यक्त करती थी। निखल्यूडोव को कट्टशा पर तरस आया; पर कैसी विचित्र बात थी कि इस तरस ने उसकी इच्छा को और भी बलवती कर दिया—आकाङ्क्षा ने उस पर पूरा अधिकार कर लिया था।

उसने खिड़की खटखटाई, और वह इस प्रकार चौंक पड़ी मानो उसके सारे शरीर में विद्युच्छक्ति का प्रवेश हो गया हो; उसका समस्त

शरीर काँप उठा और उसके मुखमण्डल पर भय का भाव प्रकट होने लगा। इसके बाद वह उछल कर खड़ी हो गई। वह खिड़की के पास पहुँची और शीशे के पास मुँह लगा कर खड़ी हो गई। जब उसने आँखों पर हाथ लगा कर शीशे में से झाँका और उसे पहचान लिया तब भी उसके चेहरे की भीत मुद्रा उसी प्रकार बनी रही। उसका चेहरा असाधारण तथा गम्भीर था; निखल्यूडोव ने उसे ऐसा पहले कभी न देखा था। कटूशा ने उसकी मुस्कराहट का उत्तर मुस्कराहट में दिया सही, पर आत्म-समर्पण के रूप में; उसकी आत्मा में उल्लास का चिन्ह तक न था, उसके स्थान पर था—भय। निखल्यूडोव ने उसे इशारे से अपने पास सहन में बुलाया; पर उसने सिर हिला दिया और वह उसी प्रकार खिड़की के पास खड़ी रही। निखल्यूडोव अपना चेहरा शीशे के और पास ले गया, और वह उसे आवाज़ देने की तैयारी कर ही रहा था कि उसी क्षण वह दरवाज़े की तरफ मुड़ी। यह स्पष्ट था कि भीतर से उसे किसी ने आवाज़ दी थी। निखल्यूडोव खिड़की के पास से हट आया। कुहासा इतना घना था कि घर से पाँच क़दम हटने पर वह खिड़की आँखों से ओझल हो गई। हाँ, उस घने अन्धकार में कमरे में जलते हुए लम्प का प्रकाश खिड़की के शीशों पर पड़ कर एक लाल और दीर्घ शिखा के सदृश प्रतिबिम्बित अवश्य हो रहा था। नदी की ओर से उसी रोने, तड़कने और टूटने की आवाज़ आ रही थी। कुहासे में से पास ही कहीं मुर्ग़े ने बाँग दी। दूसरे मुर्ग़े ने उसका उत्तर दिया, और इसके बाद गाँव के एक-एक करके और भी कई मुर्ग़े बोले। वैसे चारों ओर नदी के अथक

रोदन को छोड़ सर्वत्र निस्तब्धता छाई हुई थी। यह दूसरी बार मुर्गे ने उस रात को बाँग दी थी।

निखल्यूडोव घर की बगल में चेहल कदमी करता रहा। दो-एक बार उसका पाँव एक पानी से भरे गड्डे मे भी जा रहा। उसके बाद वह फिर खिडकी के पास आ पहुँचा। लम्प उसी प्रकार जल रहा था और वह उसी प्रकार मेज़ के पास अकेली बैठी थी, मानो वह इस उलझन में हो कि क्या करे। वह खिडकी के पास कठिनता से पहुँचा होगा कि उसने ऊपर मुँह उठा कर देखा। उसने खिडकी थपथपाई। वह बिना यह देखे कि कौन है, तत्काल कमरे में से भागी और दूसरे ही क्षण चरमराहट के साथ दरवाज़ा खुलने की आवाज़ आई। वह पास ही पोर्च मे खड़ा हुआ उसकी बाट जोह रहा था, उसने बिना कुछ कहे उसकी कमर में बाँहें डाल दीं। वह भी उससे लिपट गई, और उसने अपना मुँह ऊपर को उठाया और उसके चुम्बन को ठीक अपने ओठों पर लिया। वे पोर्च के कोने के पीछे खड़े थे, जहाँ की सारी बर्फ़ पिघल गई थी, और वह अतृप्त पिपासा से बेतरह व्यथित हो रहा था। इसके बाद दरवाज़ा फिर उसी तीव्र चरमराहट के साथ खुला और मेट्रेना पैवलोटना का क्रुद्ध स्वर सुनाई दिया—'कट्यूशा!'

वह उसके बाहु-पाश से छूटक कर दासियो के कमरे में भाग गई। निखल्यूडोव के कानों में चटख़नी चढ़ाने की आवाज़ आई। इसके बाद सर्वत्र निस्तब्धता छा गई। लाल प्रकाश अदृश्य हो गया और केवल घना कुहासा तथा नदी का रोदन पूर्ववत् जारी रहा। निखल्यूडोव खिडकी के पास पहुँचा, पर वहाँ कोई दिखाई

न दिया; उसने थपथपाया, पर किसी ने उत्तर न दिया। वह प्रवेश-द्वार से अपने कमरे में लौट गया, पर उसकी आँख न लग सकी। वह उठ बैठा और नङ्गे पैरों उसके कमरे के पास पहुँचा, जो मेट्रेना पैवलोटना के कमरे की बगल में था। उसके कान मे मेट्रेना के शान्त भाव से खुर्राटे लेने की आवाज़ आई, और वह वहाँ से जाने लगा, पर इसी समय मेट्रेना पैवलोटना ने खखारा और अपनी चरमराती हुई चारपाई पर करवट ली। निखल्यूडोव के हृदय की गति बन्द होगई और वह पाँच मिनट तक निर्जीव की भाँति खड़ा रहा। जब चारो ओर निस्तब्धता छा गई और मेट्रेना पैवलोटना दुबारा खुर्राटे लेने लगी तो वह वहाँ से आगे बढा और उन तख्तों पर पैर रख कर आगे बढने लगा जो चरमराते न थे। इस प्रकार वह कटूशा के दरवाज़े पर आया। किसी प्रकार की आवाज़ सुनाई न दे रही थी। सम्भवतः वह जाग रही थी, अन्यथा उसके कान में उसकी साँस लेने की आवाज़ आती। ज्योंही उसने फुसफुसा कर कहा—'कटूशा!' वह उछल कर खड़ी हो गई, और रोष भरे स्वर में उससे वहाँ से चले जाने का अनुरोध करने लगी।

"तुम यह सब क्या स्वाँग कर रहे हो? तुम्हारा मतलब क्या है? तुम्हारी बुआओं को ख़बर हो जायगी।" उसके शब्द तो ये थे, पर उसका रोम-रोम कह रहा था—'मैं तेरी ही हूँ।' और निखल्यूडोव की समझ में यही बात आई भी।

"खोलो तो! एक क्षण के लिए भीतर आ जाने दो! तुम्हारे हाथ जोड़ता हूँ!"—वह स्वयं न जानता था कि वह क्या कह रहा है।

वह चुप रही; इसके बाद निखल्यूडोव के कान में उसके हाथ से चटखनी खोलने की आवाज़ आई। चटखनी खुल गई और वह भीतर घुसा। वह जिस तरह थी—अपना मोटा, भद्दा घाघरा पहने और बाँहें नङ्गी किए—उसी तरह वह उसको गोद में उठा कर बाहर ले चला।

कटूशा ने फुसफुसा कर कहा—"ओह प्रिय, तुम क्या कर रहे हो?"—पर निखल्यूडोव ने उसके शब्दों की ओर कुछ ध्यान न दिया, और वह उसे अपने कमरे में ले गया।

कटूशा ने उससे अधिकाधिक चिपटते हुए कहा—अजी, तुम क्या कर रहे हो, यह मत करो! मुझे जाने दो!

* * *

जब वह चोटी से एड़ी तक काँपती हुई, उसकी किसी बात का उत्तर दिए बिना, उसके पास से अलग हुई तो वह फिर पोर्च में पहुँचा और खड़ा होकर इस घटना के मर्म को समझने की चेष्टा करने लगा।

धीरे-धीरे प्रकाश फैलता जा रहा था। नीचे नदी की ओर से पिघलते हुए बर्फ की आने वाली आवाज़ पहले से भी अधिक तीव्र हो गई थी, और अब उसमें गड़गड़ाने की आवाज़ भी आ मिली थी। कुहासा अदृश्य हो चला था और उसके ऊपर से चमकता हुआ चन्द्रमा अपने धुँधले प्रकाश से किसी कृष्ण वर्ण पदार्थ को प्रकाशित कर रहा था।

"इस सबका क्या अर्थ है? यह महानन्द है या महा-

विपत्ति, जो मुझ पर आ पड़ी है?"—उसने अपने मन में प्रश्न किया।

अन्त में उसने सोचा—"यह सब पर बीतती है—सब यही करते हैं।" और इस के बाद वह जाकर लेट रहा और सो गया।
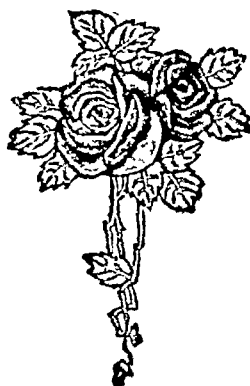
सरे ही दिन चञ्चल, सुन्दर और सजीला शोनबक निखल्यूडोव की बुआओं के यहाँ आ पहुँचा और अपनी ज़िन्दादिली, अपनी सहृदयता, अपनी उदारता और अपने परिष्कृत व्यवहार और डिमिट्री के प्रति अपने स्नेह के द्वारा उसने वृद्धा महिलाओं को पूर्णतया मुग्ध कर दिया।

पर उसकी उदारता की लाख प्रशंसा करने पर भी वृद्धा महिलाओं को उसमें कुछ अतिशयोक्ति की गन्ध आई और इससे वे किञ्चित् क्षुब्ध हुईं। उसने द्वार पर आए किसी अन्धे भिखारी को एक रूबल दे डाला, नौकरों को पुरस्कार-स्वरूप पन्द्रह रूबल दे दिए, और जब सोफ़िया इवानोला के दुलारे कुत्ते के पञ्जे में चोट आ गई तो उसने अपना बढ़िया कैम्ब्रिक का रूमाल फाड़ कर (सोफ़िया इवानोला जानती थी कि उसकी कीमत पन्द्रह रूबल दर्जन से कम न होगी) उसका पञ्जा बाँध दिया। वृद्धा महिलाओं

को इस प्रकार के व्यक्तियों से कभी पाला न पड़ा था, और वे यह न जानती थीं कि शोनबक पर दो लाख रुबल का उधार चढ़ा हुआ है, जिसका भुगतान वह इस जन्म में करने से रहा। और फलतः पचीस रुबल का उसकी दृष्टि में क्या मूल्य हो सकता है।

शोनबक केवल दिन भर ठहर सका, और रात को वह निख्ल्यूडोव के साथ रवाना हो गया। अब वे रेजीमेण्ट से और अधिक अनुपस्थित न रह सकते थे, क्योंकि उनकी छुट्टी पूरी हो गई थी।

आज अपनी बुआओं के घर टिकने के अन्तिम दिन निख्ल्यूडोव का हृदय दो प्रकार के भावों से चलायमान हो रहा था (उधर गत रात्रि का व्यापार उसकी स्मृति में अभी बिल्कुल ताजा बना हुआ था)। उनमें से एक था पाशविक प्रेम की आग्नेय वासनामय स्मृति (यद्यपि उससे उसकी अपेक्षित आकांक्षा की तुष्टि तनिक न हुई थी) जिसमें उद्वेग-सिद्धि विषयक आत्म तुष्टि भी आ मिली थी। और दूसरा भाव था उसकी वह सचेतनता, जिसके द्वारा वह मन ही मन समझ रहा था कि उसने कोई नितान्त गर्हित कार्य कर डाला है, और उसे ठीक करना आवश्यक है।

निख्ल्यूडोव का स्वार्थोन्माद जिस अवस्था पर पहुँच गया था उसमें वह अपने सिवा और किसी का ध्यान न कर सकता था। वह मन ही मन यह तो सोच रहा था कि यदि उसकी करतूत का पता लग गया तो लोग-बाग उसे दोष देंगे या न देंगे, पर यह उसने एक बार न सोचा कि कट्‌शा के हृदय में क्या बीत रही है और उसे किस विपत्ति का सामना करना पड़ेगा।

उसने देखा कि शोनबक ने कट्‌शा और उसके पारस्परिक

सम्पर्क को ताड़ लिया है, और इससे उसने मन ही मन अपनी श्लाघा समझी।

शोनबक ने कट्टूशा को देख कर कहा—अच्छा, अब पता चला कि तुम अपनी बुआओं पर एकाएक इतने कैसे रीझ गए जो एक हफ्ता हो गया और टलने का नाम ही नहीं लेते। नहीं भाई, इसमें आश्चर्य की बात कुछ नहीं है—तुम्हारी जगह यदि मै होता तो मैं भी यही करता। बड़ी सुन्दर है।

निखल्यूडोव सोच रहा था कि यद्यपि कट्टूशा विषयक अपनी प्रेम-लिप्सा की पूर्ण तुष्टि किए बिना इस प्रकार चले जाना दु:खद अवश्य है, पर इस प्रकार विलग होने मे भी कुछ मङ्गल है, और वह यह कि इस प्रकार उन दोनो के पारस्परिक सम्पर्क का आकस्मिक अन्त हो जायगा, अन्यथा उसे उसी प्रकार जारी रखने में बड़ी कठिनता होगी। इसके बाद उसने सोचा कि उसे कट्टूशा को कुछ रुपया देना चाहिए। उसके लिए नहीं, इसलिए नहीं कि उसे ज़रूरत पड़ेगी, बल्कि इसलिए कि यही करना उचित है और यदि इस प्रकार उसके शरीर का उपयोग करके वह उसे कुछ न देगा तो सम्मानहीन समझा जायगा।

फलतः उसने उसे एक ऐसी रक़म दी जो उसकी और अपनी अवस्था को देखते हुए उसने काफ़ी उदार समझी। इस अन्तिम दिन वह भोजन के बाद बग़ल वाले द्वार के कोने में खड़ा होकर उसकी प्रतीक्षा करने लगा। उसे देखते ही वह लाल हो उठी और दासियों के कमरे के खुले दरवाज़े की ओर सङ्केत करके उसने चुप-चाप पास से निकल जाने की चेष्टा की, पर उसने उसे रोक लिया।

उसने एक लिफ़ाफ़े में बन्द सौ रूबल के नोट को हाथ में मोड़ते हुए कहा—मैं तुमसे विदा लेने आया हूँ। यह—मैं......।

उसने अनुमान कर लिया कि उसका क्या अभिप्राय है, उसने भवें चढ़ाईं और सिर हिला कर उसका हाथ एक ओर को कर दिया।

निखल्यूडोव ने किसी प्रकार मुँह खोल कर कहा—"लो तो; नहीं, तुम्हें लेना पड़ेगा।" उसकी ऐप्रन के खोल में लिफ़ाफ़ा ठूँस कर वह भृकुटी चढ़ाए और कराहते हुए अपने कमरे में भाग आया। उसके कराहने को देख कर ऐसा प्रतीत होता था मानो उसके चोट लग गई हो। वह व्यथित भाव से कमरे में बहुत देर तक चहल कदमी करता रहा, मानो उसे कोई असह्य पीड़ा हो रही हो। बीच-बीच में इस अन्तिम दृश्य का स्मरण करके वह ज़ोर से कराह उठता और जमीन पर पैर पटकता। "पर मैं और कर ही क्या सकता था? और सब पर भी तो यही बीतती है। शोनबक पर भी तो यही बीती है; वह अध्यापिका की कहानी सुना रहा था। ग्रीशा चचा पर भी यही बीत चुकी है। मेरे पिता तक इससे न बच सके। जब वह देहात में रहते थे तो एक देहाती स्त्री से एक देहाती लड़का मिटिन्का उत्पन्न हो गया था, जो अब तक जीवित है। फिर जब और सब भी यही करते हैं तो. . और कोई गति ही नहीं है।" इस प्रकार उसने मानसिक शान्ति प्राप्त करने की चेष्टा की, पर व्यर्थ। इस सारे व्यापार के स्मरण मात्र से उसका अन्तस्तल जल उठता था।

वह अपनी आत्मा में—अपनी आत्मा के गूढ़तम प्रदेश में—अच्छी तरह समझता था कि उसने क्रूरता, निर्ममता और कायरता

का आचरण किया है और इस जघन्य कार्य की स्मृति के कारण वह अब न केवल किसी दूसरे का छिद्रान्वेषण ही कर सकेगा, बल्कि अब दूसरों से निगाह मिला कर बात तक न कर सकेगा—अपने आपको कुलीन, परिष्कृत और उच्च आदर्शयुक्त युवक समझने की तो बात ही क्या। पर निर्भीक आमोद-प्रमोदपूर्ण जीवन बिताने के लिए इस प्रकार की आत्म-प्रशंसा उसके लिए नितान्त आवश्यक थी। अब इस समस्या से उद्धार पाने का केवल एक मार्ग था कि इस घटना का कभी स्मरण ही न किया जाय; और ऐसा करने में वह सफल भी हुआ। वह जिस प्रकार के जीवन-क्षेत्र में प्रवेश कर रहा था—नवीन परिस्थितियाँ, नवीन मित्र और युद्ध—उसने उसे यह सब भुलाने में सहायता प्रदान की। ज्यों-ज्यों दिन बीतते गए, त्यों-त्यों वह भूलता गया और एक दिन बिलकुल भूल गया।

इसके बाद केवल एक बार ऐसा अवसर अवश्य आया। जब वह युद्ध के बाद कटूशा के दर्शनों की आशा से अपनी बुआओं से मिलने गया तो उसे बताया गया कि उसके अन्तिम आगमन के बाद वह वहाँ से चली गई और किसी स्थान पर उसने एक सन्तान को जन्म दिया और उसके बाद से वह बराबर गिरती चली जा रही है। यह सुन कर उसके हृदय में पीड़ा हुई। उसके सन्तान-जन्म के समय से निखल्यूडोव ने मन ही मन निर्णय किया कि सन्तान उसकी हो भी सकती है और नहीं भी हो सकती। बुआओं ने कटूशा को ही दोष दिया और कहा कि उसकी प्रकृति भी उसकी माँ जैसी ही दूषित निकली। निखल्यूडोव को यह सम्मति सुन

कर मन ही मन सन्तोष हुआ। उसने अपने आपको बरी समझा। प्रारम्भ में उसने उसकी और उसकी सन्तान की खोज-ख़बर लेने का विचार भी किया, पर चूँकि वह उसके स्मरण मात्र से व्यथित और लज्जित हो उठता था, इसलिए उसने उसे खोजने का कोई अधिक प्रयत्न न किया, बल्कि उसकी याद करना छोड़ कर अपने पाप की बात विस्मरण करने की चेष्टा की।

अब इस विलक्षण संयोग ने पिछली सारी घटनाओं को उसके स्मृति-प्रदेश में जाग्रत कर दिया, और उसने ऐसे जघन्य पाप की कालिमा से कलुषित होते हुए भी इस प्रकार जो दस वर्ष बिता दिए उससे उसको अपनी हृदयहीन, निष्ठुर कायरता को स्वीकार करने को बाध्य होना पड़ा। पर अभी प्रकट में वह इस प्रकार की स्वीकारोक्ति के लिए तैयार न था, और उसे एकमात्र आशङ्का इस बात की थी कि कहीं सारी बात खुल न जाय और वह या उसका वकील सारा भेद सबके सामने प्रकट न कर दे और इस प्रकार उसे मुँह दिखाने को भी जगह न रहे।
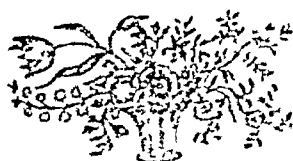
व म निखल्यूडोव जिस समय अदालत से जूरी के कमरे में आया तो उसकी यही मानसिक अवस्था थी। वह खिड़की के पास बैठा-बैठा चुपचाप सिगरेट पीता और अपने आस-पास के वार्तालाप को सुनता रहा।

आमोदी व्यापारी स्मेलकोव के समय बिताने के ढङ्ग मे हार्दिक सहानुभूति रखता प्रतीत होता था।

"वह बुड्ढा था तो क्या था, वह दिल रखता था। बिल्कुल साइबेरियन रङ्ग-ढङ्ग ! वह जानता था कि वह क्या करने चला है—निडर शेर ! और यह छोकरी तो मेरे ही लिए है।"

फ़ोरमैन अपनी धारणा प्रकट कर रहा था कि किसी न किसी रूप में विशेषज्ञ के निष्कर्ष अवश्य महत्वपूर्ण होंगे। पीटर जीरासिमोविच यहूदी क्लर्क के साथ हास-परिहास कर रहा था और दोनों बीच-बीच में खिलखिला उठते थे। निखल्यूडोव से यदि कोई प्रश्न

किया गया तो उसका उत्तर उसने एक-दो शब्दों में दे दिया। वह अलग शान्तिपूर्वक बैठा रहना चाहता था।

जब बाँकी-तिरछी चाल चलने वाले अर्दली ने आकर जूरी को अदालत में चलने को कहा तो निखल्यूडोव भयातुर हो उठा, मानो वह वहाँ फैसला करने नहीं, वरन् अपना फ़ैसला कराने जा रहा हो। वह हृदय में अपने आपको एक लम्पट समझता था, जिसे लोगों से निगाह मिला कर बातचीत करने में लज्जित होना चाहिए, पर तो भी अभ्यासवश वह उसी संयत भाव से मञ्च पर चढ़ा और एक टाँग पर दूसरी टाँग रख कर कुर्सी पर बैठ गया और अपने चश्मे से क्रीड़ा करने लगा।

कैदियों को भी बाहर ले जाया गया था और अब उन्हें फिर अन्दर लाया गया। इस दफ़ा अदालत में कुछ नई सूरतें भी थीं। ये गवाह थे, और निखल्यूडोव ने देखा कि मसलोवा एक बेहद मोटी स्त्री की ओर एकटक देख रही है। यह स्त्री बाड़े के सामने बैठी थी और बड़ी तड़क-भड़क की रेशमी और मखमली पोशाक पहने थी। उसके सिर पर बड़ा सा फीता लगा हुआ था और उसकी आधी नङ्गी बाँह पर एक बढ़िया नन्हा सा बटुआ टँगा हुआ था। निखल्यूडोव को बाद को पता लगा कि यह मसलोवा की मालकिन थी, जिसने कोठीख़ाना रक्खा था।

इसके बाद गवाहों को शपथ दिलाई गई और कोठीख़ाने की मालकिन किटीया के अतिरिक्त और सबको बाहर भेज दिया गया। उससे पूछा गया कि इस मामले के सम्बन्ध में वह क्या जानती है। किटीया ने अपना सिर हिलाया और उसका बड़ा सा टोप भी

हिला। उसने कृत्रिम भाव से मुस्करा कर जर्मन उच्चारण के साथ सारी घटना का सविस्तार वर्णन किया—"सबसे पहले होटल का नौकर सायमन, जिसे वह जानती थी, उसके कोठीख़ाने में आया और उसने उसके साथ लोव को एक धनिक साइबेरियन व्यापारी के लिए भेज दिया। कुछ देर बाद लोव उस व्यापारी के साथ वापस आ गई। व्यापारी पहले से ही झूम रहा था—उसने इस शब्द को विशेष रूप से मुस्करा कर कहा—और वह छोकरियों के साथ आमोद-प्रमोद करता रहा। उसका रुपया समाप्त हो गया और उसने लोव को अपने कमरे से रुपया लाने भेजा। वह लोव के ऊपर 'लट्टू' हो गया था।" इतना कहते हुए उसने मसलोवा की ओर देखा।

निखल्यूडोव को भास हुआ कि मसलोवा इस पर मुस्कराई और इससे उसे घोर अरुचि उत्पन्न हुई। उसके हृदय में लज्जा और आत्म-वेदना की विलक्षण मिश्रित भावना प्रबल हो उठी।

मसलोवा के ऐडवोकेट ने—जो जज के पद का प्रार्थी था—लजाते हुए अस्त-व्यस्त भाव से कहा—और मसलोवा के बारे में तुम्हारी क्या राय है?

किटीया ने उत्तर दिया—बड़ी अच्छी। यह जवान स्त्री पढ़ी-लिखी है और उठने-बैठने का क़रीना जानती है। यह बड़े अच्छे कुटुम्ब में पली थी और यह फ्रेञ्च भी पढ़ सकती है। कभी-कभी यह भी दो-चार बूँदें अधिक ढाल लेती थी, पर इसके होश-हवास कभी गुम नहीं हुए। बड़ी ही अच्छी छोकरी है।

कटूशा ने उस स्त्री की ओर देखा, इसके बाद उसने जूरी का

ओर दृष्टि फेरी और फिर निखल्यूडोव पर नेत्र जमाए। उसका चेहरा और कठोर हो उठा। उसका एक गम्भीर नेत्र तिर्छा हो उठा और वे दो विलक्षण नेत्र कुछ देर तक निखल्यूडोव की ओर ताकते रहे। निखल्यूडोव भयातुर होने पर भी उन स्वच्छ सफ़ेदी वाले तिर्छे नेत्रों की ओर से दृष्टि न हटा सका।

उसे उस भयावह रात्रि की याद आई, जब कुहासा छाया हुआ था और कुछ दूर पर नदी में बर्फ गल रहा था और प्रातःकालीन चन्द्रमा किसी काले और धुँधले पदार्थ को आलोकित कर रहा था। इन दो काले नेत्रों का उस काले से पदार्थ के साथ बहुत कुछ सादृश्य था।

निखल्यूडोव ने सोचा—इसने मुझे पहचान लिया। वह वज्रपात की आशङ्का करके काँप उठा। पर मसलोवा ने उसे न पहचाना था। वह शान्त भाव से लम्बी साँस लेकर प्रेसीडेण्ट की ओर देखने लगी। निखल्यूडोव ने भी लम्बी साँस ली। उसने मन ही मन कहा—यदि किसी प्रकार यह सब जल्दी समाप्त हो जाता!

इस समय उसे ठीक उसी प्रकार की वेदना, अस्त-व्यस्तता और दया की अनुभूति हो रही थी जिस प्रकार की अनुभूति उसे किसी पक्षी को मार कर हुआ करती थी। आहत पक्षी शिकारी की झोली में तड़पता है। शिकारी को अरुचि भी होती है और दया भी आती है और वह झटपट उसका प्राणान्त करके उसके सम्बन्ध में सारी बातें भूल जाता है।

बस, गवाहों के बयान सुनते हुए निखल्यूडोव के हृदय में इसी प्रकार के मिश्रित भाव कोलाहल कर रहे थे। पर

उसकी इच्छा के विपरीत मामला अधिकाधिक लम्बा होता गया। गवाहियाँ होने के बाद चीज़ों की परीक्षा की बारी आई। इनमें से एक बड़ी सी अँगूठी थी, जिसमें हीरे की छोटी-छोटी कनियाँ लगी हुई थीं। देखने से मालूम पड़ता था कि वह अँगूठे के पास की अँगुली में पहनी जाती रही होगी। दूसरी चीज़ एक ट्यूब था, जिसमें विश्लेषण किया गया विष था। इन दोनों पर मुहर और चप्पी लगी हुई थी।

प्रेसीडेण्ट ने कहा—"जूरर महोदय इन चीज़ों की परीक्षा कर सकते हैं।" फ़ोरमैन और अन्य कई जूरर उठ कर मेज़ के पास पहुँचे और यह निश्चय न कर सके कि वे अपने हाथों का क्या उपयोग करें। उन्होने एक-एक करके अँगूठी, शीशे के बर्तन और टेस्ट ट्यूब को देखा। प्रसन्न-चित्त व्यापारी ने अँगूठी को हाथ में डाल कर भी देखा।

उसने अपने स्थान पर वापस आते हुए कहा—"वाह! यह थी अँगुली! बिलकुल खीरा था।" यह स्पष्ट था कि मृत व्यापारी के विशाल शरीर की कल्पित मूर्ति से उसे मन ही मन कौतूहल हो रहा था।
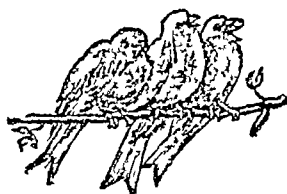
सब चीज़ों की परीक्षा समाप्त हो गई तो प्रेसीडेण्ट ने घोषणा की कि अब जाँच समाप्त हो गई है, और इसके बाद उसने तत्काल ही पब्लिक प्रॉसीक्यूटर को अपनी कार्यवाही आरम्भ करने की आज्ञा दी। उसे आशा थी कि पब्लिक प्रॉसीक्यूटर भी आख़िर आदमी ही है, और उसका भी जी सिगरेट पीने या भोजन करने को करता होगा, और वह अपने ऊपर और सब पर अवश्य दया दिखाएगा। पर पब्लिक प्रॉसीक्यूटर ने न अपने ऊपर दया की, न और किसी पर। वह बड़ी मूढ़ प्रकृति का था और साथ ही दुर्भाग्य से उसे अपने स्कूल के अध्ययन की समाप्ति पर सुवर्ण-पदक प्राप्त हुआ था। यूनिवर्सिटी में रोमन विधान का अध्ययन करते समय उसे 'दास्य-प्रथा' पर पुरस्कार मिला था, और इसलिए वह बेहद आत्माभिमानी और आत्म-तुष्ट था (और महिला-समाज में उसे जो सफलता प्राप्त हुई थी, उसका कारण भी यही था) और फलतः उसकी मूढ़ता असाधारण रूप में विकसित हो उठी।

जब उसे बोलने का आदेश हुआ तो वह धीरे-धीरे—अपनी सुनहरी वर्दी में अपनी सुन्दर आकृति की आभा छिटकाता हुआ—अपने स्थान से उठा। उसने अपने दोनों हाथ डेस्क पर टेक कर, सिर तनिक झुका कर और कैदियों की दृष्टि की अवज्ञा करके अपना भाषण आरम्भ किया, जो उसने उस समय तैयार कर लिया था जब कि रिपोर्ट पढ़ी जा रही थी।

"जूरर महोदय, आज आपके सामने जो मामला है, उसमें अनेक विशेषताएँ हैं।"

उसकी धारणा के अनुसार पब्लिक प्रॉसीक्यूटर के भाषण में कुछ न कुछ सार्वजनिक महत्व अवश्य होना चाहिए था। ठीक उसी प्रकार, जिस प्रकार कि उन प्रसिद्ध ऐडवोकेटों की स्पीचें महत्त्वपूर्ण हुआ करती थीं जो धीरे-धीरे ख्यातनामा हो गए थे। यह माना कि श्रोताओं में केवल तीन स्त्रियाँ—एक दर्जिन, एक बावर्चिन और सायमन की बहिन—और एक कोचवान मात्र थे ; पर इससे क्या हुआ? प्रसिद्ध-प्रसिद्ध व्यक्तियों ने भी इसी प्रकार आरम्भ किया था। पब्लिक प्रॉसीक्यूटर का कर्त्तव्य ठहरा अपनी अवस्था का सर्वोत्तम परिचय देना, अर्थात् किसी अपराध की मनोवैज्ञानिक महत्ता के गर्भ में प्रवेश करना और समाज की दुर्बलताओं को प्रकाश में लाना।

"जूरर महोदय, आपके विचारार्थ आज एक ऐसा अपराध उपस्थित है जो—यदि मुझे कहने की अनुमति दी जाय—इस शताब्दी के अन्तिम वर्षों की मनोवैज्ञानिक अवस्था को विशेष रूप से व्यक्त करता है। इस अपराध में उस नितान्त व्यथाकारी प्रदर्शन के अणु विद्यमान हैं, जिसे पतन के नाम से अभिहित किया जाता है और

जिसका शिकार हमारे वर्तमान समाज के उन वर्गों को बनना पड़ता है, जो इस कार्यवाही की अग्नि-ज्वालाओं के विशेष रूप से भाजन होते हैं।"

पब्लिक प्रॉसीक्यूटर विस्तार के साथ बोला। उसने अपने मस्तिष्क में बद्धमूल किसी धारणा को प्रकट किए बिना न छोड़ा, और साथ ही उसने यह भी ध्यान रक्खा कि उसकी वाग्धारा अबाध रूप से सवा घण्टे तक प्रवाहित होती रहे।

वह केवल एक बार रुका, और कुछ क्षण तक अपने मुँह की राल को पीता रहा, और इसके बाद दूसरे ही क्षण उसने—मानो पहली कमी पूरी करने के लिए—द्विगुणित ओजस्विता के साथ बोलना शुरू कर दिया। वह कभी मृदुल, दोषारोपणके लहजे में बोलता, और एक पैर से दूसरे पैर पर भार जमा कर जूरी की ओर देखता; कभी अपनी नोटबुक की ओर दृष्टिपात करते हुए शान्त व्यवसायात्मक लहजे में बोलता, कभी श्रोताओं और ऐडवोकेटों की ओर दृष्टिपात करते हुए उच्च, अभियोगपूर्ण लहजे में बोलता। पर वह कैदियों की ओर से, जो उसकी ओर एकटक देख रहे थे, भरसक निगाह बचाए रहा। उसकी वक्तृता में बहुत सी ऐसी बातें थीं जो वैज्ञानिक बुद्धिमत्ता की अन्तिम सूझ समझी जाती थीं, और बहुत सी ऐसी थीं जो अब भी समझी जाती हैं; जैसे वंशपरम्परा और स्त्री-पुरुष के पारस्परिक सम्पर्क से सम्बन्ध रखने वाले अपराध, लोम्ब्रोसो और टार्डो, विकासवाद और अस्तित्व का संघर्ष, मोहिनी प्रक्रिया और उसका प्रभाव।

उसकी परिभाषा के अनुसार व्यापारी स्मेलकोव एक वास्तविक

हृष्ट-पुष्ट रूसी था, जो अत्यन्त दूषित व्यक्तियों के पन्जे में पड़ कर अपनी उदार, विश्वासपूर्ण प्रकृति के फल स्वरूप अपने प्राणों को गँवा बैठा।

सायमन कार्टिनकिन रैयत-प्रथा का एक ऐसा दूषित, मूढ़, अपढ़, आचारहीन उद्भव था जिसका कोई धर्म न था। यूफ़ेमिया उसकी रखेली थी और वंश-परम्परागत दूषणों की शिकार थी, उसमें पतन के लक्षण विद्यमान थे। इस मामले की प्रधान षड्-यन्त्रकारिणी मसलोवा थी, जिसमें अत्यन्त निम्न प्रकार के परा-भव का प्रदर्शन दृष्टिगोचर होता था। उसने उसकी ओर देखते हुए कहा—"आज हम इसकी मालकिन के द्वारा जान ही चुके हैं कि यह स्त्री न केवल सुशिक्षित ही है, बल्कि फ़्रेन्च भी जानती है। यह अनाथ है और इसमें ही इसकी अपराधपूर्ण प्रवृत्ति के अणु छिपे हुए हैं। इसकी शिक्षा-दीक्षा एक कुलीन, सुशिक्षित परिवार में हुई थी और यह कोई पवित्र काम करके साधु-जीवन बिता सकती थी, पर इसने अपनी आश्रयदात्रियों को छोड़ कर अपनी कुवास-नाओं के आगे सिर झुका दिया और इससे सन्तुष्ट न होकर एक वेश्यालय में प्रवेश किया, जहाँ अपनी शिक्षा की बदौलत और उस रहस्यमयी विद्या की बदौलत, जिसका अनुसन्धान विज्ञान ने और विशेष कर मार-काट के अनुयायियों ने किया है, और जिसका प्रयोग यह अपने मुलाक़ातियों पर किया करती थी—मेरा मतलब मोहिनी विद्या से है—अपनी सङ्गिन छोकरियों की अपेक्षा इसका आदर-मान अधिक होने लगा। बस इन्हीं साधनों से इसने इस धनी रूसी अतिथि को—इस सरल व्यक्ति को—अपने पन्जे में कर लिया

और उसके विश्वास का दुरुपयोग करके पहले इसे लूटा और फिर निष्ठुरतापूर्वक उसकी हत्या कर डाली।"

प्रेसीडेण्ट ने गम्भीर सदस्य की ओर झुक कर मुस्कराते हुए कहा—यह तो बुरी तरह तार खींचता जा रहा है।

गम्भीर सदस्य ने कहा—भयङ्कर बौडम!

उधर पब्लिक प्रॉसीक्यूटर की वाग्धारा का प्रवाह जारी था। उसने अपने शरीर को शान के साथ हिला कर कहा—जूरर महोदय, आपके हाथ में न केवल इन अपराधियों के भाग्य ही का निर्णय है, बल्कि समाज के भाग्य का निर्णय भी है, क्योंकि आपके निर्णय का उस पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ेगा। इस अपराध के, इस ख़तरे के, जो मसलोवा जैसे जन्मज संक्रामक अपराधियों के द्वारा हमारे समाज में उत्पन्न हो गया है, पूरे मर्म को ग्रहण करिए। सतर्क रहिए कि कहीं इस रोग के अणु समाज में प्रविष्ट न हो जायँ, इस सक्रामक और विनाशकारी सङ्कट से समाज के निर्दोष और सबल अङ्गों की रक्षा कीजिए।

इसके बाद पब्लिक प्रॉसीक्यूटर कुर्सी पर इस प्रकार धमाके के साथ बैठ गया, मानो वह अपने अपेक्षित वक्तव्य की असाधारण महत्ता से स्वयं ही बेतरह प्रभावित हो उठा हो।

यदि उसकी वक्तृता से वक्ता की धारावाहिक ओजस्विता अलग कर दी जाती, तो उसका नग्न आशय यह था कि मसलोवा ने व्यापारी के हृदय मे विश्वास जमाने के बाद उस पर मोहिनी डाली और इसके बाद उसकी चाभी लेकर वह उसके निवास-स्थान पर रुपया चुराने गई। पर संयोगवश उसे रंगे हाथों सायमन

और यूफेमिया ने पकड लिया और उसे वाध्य होकर उन्हें भी उसमें शामिल करना पडा। इसके बाद अपने अपराध के चिन्हों को पूरी तरह छिपा डालने के उद्देश से वह व्यापारी के साथ आई और उसे विष दे दिया।

प्रॉसीक्यूटर की वक्तृता के बाद एक अधेड़ आदमी पूँछदार कोट और नीची वास्कट पहने—जिसमें से इस्तरी लगी कमीज़ का श्वेत अग्र भाग चमक रहा था—ऐडवोकेटों के बैठने के स्थान से उठ खड़ा हुआ और सायमन और बचकोवा के पक्ष में वक्तृता देने लगा। इस ऐडवोकेट को इन दोनों के लिए तीन सौ रुबल पर किया गया था। उसने उन दोनों को निर्दोष बताया और सारा दोष मसलोवा के माथे पर थोपा। उसने मसलोवा के इस वक्तव्य की सत्यता को अस्वीकार किया कि जिस समय वह रुपया निकाल रही थी, उस समय वे दोनो भी वहाँ मौजूद थे, और इस बात पर ज़ोर दिया कि वह विष देने की अपराधिनी है। अतः उसके कथन को साक्ष्य रूप में ग्रहण नहीं किया जा सकता। उसने कहा कि एक दिन में तीन से पाँच रुबल मुलाक़ातियों से पुरस्कार-स्वरूप पाकर दोनों एक हज़ार आठ सौ रुबल बड़ी आसानी से एकत्र कर सकते थे। वास्तव में व्यापारी का रुपया मसलोवा ने ही चुराया था; उसीने वह रुपया किसी को दे दिया होगा या कहीं खो दिया होगा, क्योंकि उस दिन वह अपने होश-हवास में न थी। विष देने का कार्य केवल मसलोवा ने ही किया था।

अतएव उसने जूरी से प्रार्थना की कि वह कार्टिनकिन और बचकोवा को चोरी के अभियोग से मुक्त करें, और यदि उस अप-

राध से मुक्त करना सम्भव न हो तो कम से कम उन्हें विष देने के अभियोग से अवश्य बरी कर दें।

ऐडवोकेट ने पब्लिक प्रॉसीक्यूटर पर चोट करते हुए अन्त में कहा कि उसके विद्वान मित्र के वंश-परम्परा विषयक कथन का वैज्ञानिक महत्त्व चाहे जितना हो, उसे इस मामले में लागू नहीं किया जा सकता, क्योंकि बचकोवा अज्ञात वंश की है। पब्लिक प्रॉसीक्यूटर ने क्रुद्ध भाव से कुछ बात नोट की और घृणा-व्यञ्जक आश्चर्य के साथ अपने कन्धे उचकाए।

इसके बाद मसलोवा का वकील उठा और उसके पक्ष में सङ्कोच और सलज्जता के साथ भाषण करने लगा। उसने यह बात तो अस्वीकार न की कि मसलोवा ने चोरी में भाग लिया था, पर साथ ही इस बात पर ज़ोर दिया कि उसका व्यापारी को विष देने का इरादा न था और उसने उसे पाउडर केवल सुलाने के उद्देश से दिया था। उसने यह वर्णन करके कि किस प्रकार मसलोवा को एक पुरुष ने भ्रष्ट जीवन व्यतीत करने को बाध्य कर दिया था, किस प्रकार वह अदण्डित रहा और अपने पतन का सारा भार अकेली मसलोवा को ही उठाना पड़ा, कुछ ओजस्विता का परिचय भी देना चाहा; पर मनोविज्ञान के क्षेत्र में उसका इस प्रकार प्रवेश करना इतना अप्रासङ्गिक सिद्ध हुआ कि सबको उसका कथन अस्त-व्यस्त जान पड़ने लगा। जब उसने पुरुषों की निष्ठुरता और स्त्री की असहायावस्था के सम्बन्ध में कुछ बड़बड़ा कर कहा तो प्रेसीडेण्ट ने उसे यह याद दिला कर कि उसे प्रसङ्ग से बाहर न जाना चाहिए, उसकी सहायता करने की चेष्टा की।

जब उसका कथन समाप्त हो गया तो पब्लिक प्रॉसीक्यूटर उत्तर देने के लिए उठा। उसने पहले ऐडवोकेट के आक्रमण से अपनी रक्षा यह कह कर की कि यदि यह भी मान लिया जाय कि वचकोवा अज्ञात वंश की है तो भी वंश-परम्परा का तथ्य किसी प्रकार खण्डित न हुआ, क्योंकि वंश-परम्परा के विधान को विज्ञान ने इस हद तक प्रमाणित कर दिया है कि हम न केवल वंश-परम्परा से ही अपराध का निर्णय कर सकते है, बल्कि अपराध से भी वंश-परम्परा का निर्णय कर सकते हैं। रहा मसलोवा सम्बन्धी वक्तव्य कि उसे एक कल्पित पुरुष ने भ्रष्ट कर डाला था, (उसने 'कल्पित' शब्द पर विशेष ज़ोर दिया) उसके सम्बन्ध में उसे केवल इतना ही कहना है कि अब तक पेश की गई गवाहियों से उल्टा यह प्रमाणित होता है कि वह अनेकानेक निरीह व्यक्तियों पर मोहिनी जाल डालती आ रही थी। इतना कह कर वह विजय-गर्व के साथ बैठ गया।

इसके बाद क़ैदियों को अपने पक्ष में बोलने की अनुमति दी गई।

यूफ़ेमिया वचकोवा ने एक बार फिर कहा कि वह इस सम्बन्ध में कुछ नहीं जानती और उसने इसमें किसी प्रकार का भाग नहीं लिया। उसने दृढतापूर्वक सारा अपराध मसलोवा के माथे थोपा। सायमन कार्टिनकिन ने केवल इतना दुहराया—'आप जानें, आपका काम जाने, पर मैं निर्दोष हूँ, यह अत्याचार है।' मसलोवा ने अपने पक्ष में कुछ न कहा। जब प्रेसीडेण्ट ने उससे कहा कि वह यदि चाहे तो कह सकती है तो उसने उसकी ओर केवल नेत्र उठा

कर देखा, खदेड़े गए पशु की तरह चारों ओर निगाह दौड़ाई और अपना सिर नीचा करके ज़ोर-ज़ोर से रोना शुरू कर दिया।

व्यापारी ने निखल्यूडोव के मुँह से विचित्र सी आवाज़ सुन कर उससे पूछा—"क्यों, क्या है? क्या हुआ?" यह एक बलात् दबी हुई सुबकी थी। निखल्यूडोव अपनी वर्तमान अवस्था के वास्तविक मर्म को अभी तक न समझ सका था और उसने बलात् आई हुई सुबकियों को और अपने नेत्रों में बार-बार आते हुए आँसुओं को अपनी दुर्बलता का लक्षण मात्र समझा। उसने अपने आँसू छिपाने के लिए चश्मा पहन लिया और इसके बाद रूमाल निकाल कर नाक साफ की।

उसकी आत्मा के आन्तरिक व्यापार को इस आशङ्का ने कि यदि सारी बात खुल गई तो उसे बुरी तरह लाञ्छित होना पड़ेगा, दबा दिया था। इस अवसर पर इस आशङ्का ने और सारे भावों की अपेक्षा अधिक प्रबल रूप धारण कर लिया था।
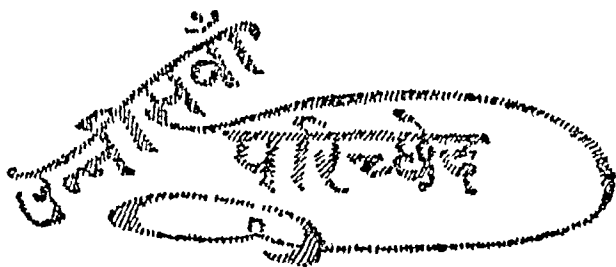
दियों की बात समाप्त हो जाने के बाद इस समस्या ने भी कुछ समय ले लिया कि जूरी के सामने प्रश्नावली किस रूप मे रक्खी जानी चाहिए। अन्त में प्रश्नावली बन गई और प्रेसीडेण्ट ने प्रश्नों को व्यवस्थित रूप से रखना आरम्भ किया।

जूरी के सामने मामला पेश करने से पहले वह अपने मृदुल, मनोहर ढङ्ग से समझाता रहा कि सेंध लगाना सेंध लगाना है, और चोरी चोरी, ताले-कुञ्जी में से चोरी करना ताले-कुञ्जी में से चोरी करना है और ताले-कुञ्जी में से चोरी नहीं करना ताले-कुञ्जी में से चोरी नही करना है। यह सब समझाते हुए उसने कई बार निखल्यूडोव की ओर देखा, मानो वह इन महत्वपूर्ण सत्यों का उस पर संस्कार बिठाना चाहता हो, इस आशा में कि उन्हें भली प्रकार समझने के बाद निखल्यूडोव अपने सहयोगियों को

भी समझा सकेगा। जब उसने समझ लिया कि इन महत्वपूर्ण सत्यों का जूरी पर पूरा संस्कार हो गया है, तो वह एक दूसरी आवश्यक बात समझाने लगा—कि हत्या एक ऐसा कार्य है जिसके साथ, उसके परिणाम-स्वरूप, एक मानव जीवन का प्राणान्त सन्निहित रहता है, और इसलिए विष देने को भी हत्या कहा जा सकता है। जब उसकी सम्मति में जूरी इस सत्य को भी भली प्रकार समझ गए तो उसने एक और भी आवश्यक बात बताई—कि यदि चोरी के साथ हत्या भी शामिल हो तो यह मिश्रित कार्य हत्या के साथ चोरी कहलाएगा।

यद्यपि वह इस मामले को भरसक जल्दी समाप्त करने के लिए स्वयं उत्कण्ठित हो रहा था, यद्यपि वह जानता था कि उसकी स्विस छोकरी उसकी बाट जोहती होगी, फिर भी उसे अपने कार्य का इतना अभ्यास पड़ गया था कि एक बार बोलना आरम्भ करने पर वह फिर न रुक सका, और सविस्तार रूप से जूरी को बताता रहा कि यदि वे कैदियों को अपराधी समझें तो उनके अपराधी होने का फ़ैसला दे सकते हैं, और यदि निर्दोष समझें तो निर्दोष होने का फ़ैसला दे सकते हैं; और यदि वे उन्हें एक अपराध का अपराधी पाएँ और दूसरे का न पाएँ तो एक अपराध का अपराधी होने और दूसरे अपराध से निर्दोष होने का फ़ैसला दे सकते हैं। इसके बाद उसने उन्हें समझाया कि यदि उन्हें यह अधिकार प्रदान किया गया है, तो वे इसका दुरुपयोग न करें। वह यह भी कहने जा रहा था कि यदि वे किसी प्रश्न का उत्तर सहमतिसूचक देंगे तो वे उन सारी बातों का सहमतिसूचक उत्तर देंगे जो उस प्रश्न में शामिल रहेंगी।

अत: यदि वे पूरे प्रश्न के सम्बन्ध में सहमति न देना चाहते हों तो उन्हें स्पष्ट रूप से लिख देना चाहिए कि वे प्रश्न के किस अङ्ग से सहमत होना नहीं चाहते ; पर घड़ी की ओर दृष्टिपात करके, और यह देख कर कि तीन बजने में पाँच मिनट रह गए हैं, उसने उनकी बुद्धिमत्ता पर भरोसा करने का निश्चय किया और स्थिर किया कि और किसी प्रकार की व्याख्या के बग़ैर भी वे सारी बातें समझ गए होंगे।

"इस मामले का सक्षेप इस प्रकार है"—प्रेसीडेण्ट ने कहना आरम्भ किया, और उसने उन सारी बातों को दुहराया, जिन्हें उस दिन ऐडवोकेट, पब्लिक प्रॉसीक्यूटर और गवाह पहले ही से कई बार कह चुके थे।

प्रेसीडेण्ट बोलता रहा, और सदस्य बड़े मनोयोग के साथ सुनते रहे, यद्यपि वे बार-बार घड़ी की ओर दृष्टिपात कर लेते थे, क्योंकि वे उसकी वक्तृता को भली होने पर भी आवश्यकता से अधिक लम्बी समझते थे। पब्लिक प्रॉसीक्यूटर, वकील और सक्षेप में अदालत के सारे व्यक्ति मन ही मन इसी प्रकार का विचार कर रहे थे। प्रेसीडेण्ट ने घटनाओं का वर्णन समाप्त कर दिया।

ऐसा प्रतीत होता था कि सारी बातें कही जा चुकी हैं ; पर नहीं, प्रेसीडेण्ट अपने बोलने के अधिकार को भला किस प्रकार छोड़ सकता था ? उसे अपने प्रभावशाली कण्ठ-स्वर को सुन कर स्वयं ही इतना आनन्द आ रहा था कि उसने जूरी को प्रदान किए गए अधिकारों के सम्बन्ध में दो-चार शब्द और कह देना अपना कर्तव्य समझा। किस प्रकार उन्हें उन अधिकारों का सावधानता-

पूर्वक उपयोग करना चाहिए और किस प्रकार उन्हें उनका दुरुपयोग न करना चाहिए, किस प्रकार वे शपथ खा चुके हैं, किस प्रकार वे समाज की आत्मा हैं, और किस प्रकार उन्हें तर्कशाला के भेद को पवित्र समझना चाहिए, इत्यादि-इत्यादि।

जिस क्षण से प्रेसीडेण्ट ने बोलना आरम्भ किया था, मसलोवा की दृष्टि उसकी ओर बराबर लगी हुई थी, मानो उसे आशङ्का थी कि कोई शब्द सुनने से रह न जाय; इसलिए अब निख्ल्यूडोव को उससे आँखें चार होने की आशङ्का न रही, और वह निर्निमेष नेत्रों से उसकी ओर देखता रहा। उसके मस्तिष्क ने उन अवस्थाओं को पार किया जिसमें कोई सूरत, जिसे हमने बहुत दिनों से न देखा हो, विछोह के समय में उत्पन्न हुए भौतिक परिवर्त्तनों के द्वारा हमारा ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करती है, और फिर शनैः-शनैः पुरानी सूरत जैसी होती जाती है, और समय द्वारा उत्पन्न हुए परिवर्त्तन अदृश्य होने लगते हैं और हमारे मानसिक नेत्रों के आगे उसका वही असाधारण, विलक्षण, आध्यात्मिक व्यक्तित्व आ खड़ा होता है।

हाँ, इस जेली चोगे के होते हुए भी, उसके विकसित आकार-प्रकार, चेहरे और वक्षःस्थल के पूरी तरह भर जाने और माथे पर कुछ रेखाओं के उत्पन्न हो जाने और नेत्रों के सूज-से जाने पर भी यह निश्चय ही वह कट्यूशा थी, जिसने उस ईस्टर की रात को उसकी ओर, जिसे वह प्यार करती थी, अपने चावभरे, सहास, उल्लासपूर्ण नेत्रों से निर्दोषतापूर्वक देखा था।

और कैसा विलक्षण संयोग है कि इन अनेक वर्षों के बाद—

जिनमें मैंने इसके एक बार भी दर्शन नहीं किए—यह मामला भी आज ही आने को रहा था, जब मैं जूरी में था, और मैंने इसे देखा भी तो कैदियों के कपड़े पहने ! और इन सबका अन्त किस प्रकार होगा ? जो कहीं यह सब जल्दी ही समाप्त हो जाता !

अब भी वह अपने हृदय में उठते हुए पश्चात्ताप के भावों को दबा रहा था। उसने इसे एक ऐसा संयोग मात्र समझा जो उसके रहन सहन के ढङ्ग पर बिना किसी प्रकार का प्रभाव डाले समाप्त हो जायगा। उसे उस समय एक ऐसे पिल्ले के समान अनुभूति हो रही थी, जिसका स्वामी उसकी गर्दन पकड कर उसकी नाक उसके किए पाखाने में रगड़ता हो। पिल्ला चीखता-चिल्लाता है और अपनी करतूत से भरसक पीछे को हटता है, पर उसका निर्दय स्वामी उसका पीछा नहीं छोडता।

और इस प्रकार निखल्यूडोव ने अपनी गर्हित करतूत की घृणा की अनुभूति करने के साथ ही साथ उसमें विश्वात्मा का हाथ देखा, पर अभी उसने अपने कृत्य के पूरे मर्म को न समझा था और अभी वह विश्वात्मा के हाथ को स्वीकार न करना चाहता था। वह यह विश्वास करना न चाहता था कि उसके नेत्रों के सामने उसी के कुकृत्य का परिणाम मौजूद है। पर विश्वात्मा का निर्मम हाथ उसे पकडे हुए था और उसे कुछ धारणा सी हो गई थी कि वह उससे बच कर न निकल सकेगा। वह इस समय भी निर्भीकता और साहस के साथ सामने की पंक्ति में कुर्सी पर बैठा हुआ एक टाँग पर दूसरी टाँग डाले अन्यमनस्क भाव से अपने चश्मे के साथ क्रीडा कर रहा था। पर वह अपनी अन्तरात्मा में अपनी निर्दयता,

कायरता और क्षुद्रता की अनुभूति कर रहा था। और वह न केवल उसी एक कुकृत्य की निर्दयता, कायरता और क्षुद्रता की अनुभूति कर रहा था, बल्कि अपने समस्त उच्छृङ्खल, भ्रष्ट, निर्दय, अकर्मण्य जीवन की भी। अब तक उसके इस भयावह कुकृत्य को और उसके बाद के दस वर्ष के रहन-सहन को जिस अति भयङ्कर आवरण ने ढक रक्खा था, अब वह अदृश्य होने लगा और उसे उस आवरण से ढकी रहने वाली वस्तु-स्थिति का आभास मिलना आरम्भ हो गया।

न्त में प्रेसीडेण्ट ने अपनी वक्तृता समाप्त कर दी, और अपने हाथ के सुन्दर हाव-भाव के साथ उसने वह प्रश्नावली जूरी के फ़ोरमैन को दे दी, जो उसे लेने को आगे बढ़ा। जूरर तर्कशाला में जाने का अवसर पाकर मन ही मन प्रसन्न हुए और एक-एक करके अदालत से जाने लगे। उन सबने जाते हुए अदालत की ओर इस प्रकार देखा मानो वे किसी बात के लिए लज्जित हो रहे हों। उन्हें अपने हाथों के उपयोग की समस्या ने फिर एक बार अस्त-व्यस्त कर दिया था। तर्कशाला का द्वार बन्द होते ही एक सिपाही अपनी तलवार म्यान से निकाल कर वहाँ खड़ा हो गया और जज उठ कर चले गए। कैदियों को भी बाहर ले जाया गया। जूररों ने कमरे में आकर पहला काम यह किया कि अपने-अपने सिगरेट-केसों में से पहले की तरह एक-एक सिगरेट निकाल कर पीना शुरू कर दिया। यहाँ आकर सिगरेट पीने से अपनी स्थिति की असत्यता और अस्वाभाविकता की वह भावना बिल्कुल नष्ट हो

गई, जिसकी अनुभूति वे अदालत में बैठे हुए कर रहे थे। वे सब निश्चिन्त भाव से बैठ गए और तत्काल ही मनोरञ्जक वार्तालाप का सिलसिला छिड़ गया।

सहृदय व्यापारी ने कहा—इसमें उस छोकरी का कोई क़सूर नहीं है। वह संयोग से इस मामले में फँस गई है। हमें उस पर दया दिखाने की सिफ़ारिश करनी चाहिए।

फ़ोरमैन ने कहा—हमें इसी बात पर तो विचार करना है। हमें अपने निजी विचारों पर ध्यान न देना चाहिए।

कर्नल ने कहा—प्रेसीडेण्ट का संक्षिप्त विवरण बड़ा सुन्दर रहा।

"सुन्दर रहा? मुझे तो नींद आने लगी थी!"

यहूदी नस्ल के क्लर्क ने कहा—प्रधान बात यह है कि यदि मसलोवा उन नौकरों के साथ मिल कर षड्यन्त्र न रचती तो उन्हें रुपए का कुछ पता न चलता।

एक जूरर ने पूछा—तो आपके कहने का यह मतलब है कि उसी ने रुपया चुराया?

सहृदय व्यापारी चिल्ला उठा—मैं तो इस पर कभी विश्वास न करूँगा। यह सब उसी लाल आँखों वाली चुड़ैल की कारस्तानी है।

कर्नल ने कहा—वे सब एक से एक बढ़ कर हैं।

"पर वह तो कहती है कि उसने उस कमरे में क़दम तक नहीं रक्खा।"

"हाँ, हाँ, उसकी बात पर विश्वास अवश्य करिए।"

"मैं तो उस पाजी औरत का कभी यक़ीन न करूँ।"

क्रर्क ने कहा—सिर्फ़ आपके यक़ीन करने न करने से ही तो मामला तय नहीं हो जाता।

कर्नल बोला—ताली छोकरी के पास थी।

व्यापारी ने मुँहतोड़ उत्तर दिया—थी भी तो हुआ क्या?

"और अँगूठी?"

व्यापारी आतुर भाव से चिल्ला उठा—पर उसने सारी बातें कह नहीं दी क्या? उस भले आदमी का गुस्सा हरदम तैयार रहता था और साथ ही उसने ज़रा ज्यादा ढाल भी ली थी, उसने छोकरी को पीट भी दिया; इससे अधिक साफ़ बात और क्या हो सकती है? फिर उसे अपने किए पर बड़ा पछतावा आया—स्वाभाविक बात है। उसने कहा—अच्छा-अच्छा, कोई बात नहीं; लो, यह लो। वे सब कह तो रहे थे कि वह छ फुट पाँच इन्च लम्बा था; फिर वह बीस स्टोन से कम क्या रहा होगा?

पीटर जीरासिमोविच ने कहा—हमारे मतलब की बात यह नहीं है, मतलब की बात यह है कि इस सारे मामले को ईजाद करने और अमल मे लाने वाली वह छोकरी है या नौकर।

"अकेले नौकरों के किए यह न हो सकता। चाभी छोकरी के पास थी।"

इस प्रकार का विशृङ्खल वार्तालाप बहुत देर तक होता रहा। अन्त में फ़ोरमैन ने कहा—"महोदय, क्षमा कीजिए, पर क्या मेज़ के आगे बैठ कर मामले पर विचार करना ठीक न होगा? आइए!" और उसने कुर्सी पर स्थान ग्रहण किया।

क्लर्क ने कहा—"अजी ये छोकरियाँ जो न करें सो ही थोड़ा

है।" और अपनी सम्मति की पुष्टि में उसने अपने एक सहकारी का वृत्तान्त सुनाया, जिसकी घड़ी भ्रमण-स्थान में एक आचार-भ्रष्ट स्त्री ने चुरा ली थी।

इसी के सिलसिले में कर्नल ने भी एक चाँदी के चायदान की चोरी की चर्चा की।

फ़ोरमैन ने पेन्सिल से मेज़ बजाते हुए कहा—सज्जनो, मैं आपसे अनुरोध करूँगा कि आप प्रश्नावली पर ध्यान दें।

सब शान्त हो गए।

प्रश्नावली निम्न-लिखित ढङ्ग से रक्खी गई थी :—

(१) क्या बोर्की गाँव और क्रापीवेन्स्की ज़िले का रहने वाला सायमन पैट्रोव कार्टिनकिन, जिसकी आयु तैंतीस साल की है, दूसरे व्यक्तियों के सहयोग से १७ जनवरी १८८...को व्यापारी स्मेलकोव को, उसका प्राणान्त करने और उसका रुपया चुराने (जो नक़द और हीरे की अँगूठी मिला कर दो हज़ार छः सौ रुबल था) के उद्देश से विष मिली ब्राण्डी पिलाने का अपराधी है?

(२) क्या यूफ़ेमिया बचकोवा, जिसकी आयु तैंतालीस साल की है, उपर्युक्त अपराधों की अपराधिनी है?

(३) क्या कैथेरीना मिखायलोव्ना मस्लोवा, जिसकी आयु अट्ठाईस साल की है, पहले प्रश्न के अपराधों की अपराधिनी है?

(४) यदि यूफ़ेमिया पहले प्रश्न के अपराध की अपराधिनी नहीं है, तो क्या वह १७ जनवरी १८८.. को होटल मारीटानिया में, जिसमें वह दासी का काम करती थी, उसी होटल के अस्थायी निवासी व्यापारी स्मेलकोव के पोर्टमैण्टो में से—जिसे खोलने के

लिए उसने एक दूसरी ताली बनाई—दो हज़ार छ: सौ रूबल चुराने की अपराधिनी है ?

फोरमैन ने पहला प्रश्न पढ़ा ।

"हाँ, तो सज्जनो, आपका क्या विचार है ?"

इस प्रश्न का झटपट निबटारा हो गया । सबने एक स्वर से 'अपराधी' कहा, मानो उन्हें दृढ़ विश्वास हो गया हो कि कार्टिन-किन ने विष देने और चोरी करने—दोनों में भाग लिया था । एक श्रमजीवियों के सङ्घ का वृद्ध सदस्य अवश्य ऐसा था जो उसको बरी करने के हक़ में था ।

फोरमैन ने समझा कि उसकी समझ में बात नहीं आई है, अतः वह उसे समझाने लगा कि सारी बातों से कार्टिनकिन का अपराध प्रमाणित होता है । इस पर वृद्ध पुरुप ने उत्तर दिया कि वह यह सब कुछ समझता है, पर फिर भी उस पर दया दिखाना अधिक उत्तम होगा । उसने कहा—"हम सब कौन से महात्मा हैं ।" और वह अपनी सम्मति पर अड़ा रहा ।

दूसरे प्रश्न का उत्तर, अनेक वाद-विवाद और उद्गार प्रस्फोटनों के बाद दिया गया 'निर्दोष' , क्योंकि विष देने के मामले में बच-कोवा के शामिल होने का कोई स्पष्ट प्रमाण न था, और इस बात पर उसके ऐडवोकेट ने विशेष रूप से ज़ोर दिया था । व्यापारी मसलोवा को मुक्त कराने के लिए बेतरह उत्कण्ठित हो रहा था । अतः उसने प्रतिपादन किया कि बचकोवा प्रधान षड्यन्त्रकारिणी है । अन्य कई जूररों की भी यही राय थी, पर फोरमैन क़ायदे-क़ानून का बड़ी कड़ाई के साथ पालन करना चाहता था, अतः

उसने कहा कि उनके पास यह निष्कर्ष निकालने का कोई प्रमाण नहीं है कि विष देने में बचकोवा का भी हाथ था। बहुत-कुछ वाद-विवाद के बाद फ़ोरमैन की बात ही सही रही।

चौथे प्रश्न के उत्तर में बचकोवा को अपराधिनी घोषित किया गया। पर श्रमजीवियों की संस्था के सदस्य के हठ करने पर उस पर दया दिखाने की प्रार्थना की गई।

अब तीसरे प्रश्न की बारी आई, जिसके द्वारा मसलोवा के भाग्य का निर्णय होना था, और इस पर जूररों में भयङ्कर वाद-विवाद उत्पन्न हो गया। फ़ोरमैन हठ पकड़े हुए था कि वह चोरी और हत्या दोनों की अपराधिनी है, और व्यापारी दोनों में से एक भी बात मानने को तैयार न था। कर्नल, क्लर्क और वृद्ध पुरुष ने व्यापारी का पक्ष ग्रहण किया, पर शेष सारे जूरर अनिश्चित से दिखाई दिए। वे अब थक गए थे और ऐसे किसी भी निष्कर्ष को मानने के लिए तैयार थे, जो सारे मामले का निपटारा झटपट कर डाले और उन्हें छुट्टी मिले।

अदालत में जो कुछ गुज़रा था और मसलोवा के सम्बन्ध में उसका जो कुछ व्यक्तिगत ज्ञान था, उससे निख्ल्यूदोव को दृढ़ निश्चय था कि वह चोरी और हत्या, दोनों में से किसी अपराध की अपराधिनी नहीं है, और उसे विश्वास था कि और सब भी उसी निष्कर्ष पर आ पहुँचेंगे। जब उसने देखा कि व्यापारी का मसलोवा का भोंडा पक्ष-समर्थन (जो उसके शारीरिक सौन्दर्य की प्रशंसा के ऊपर अवस्थित था और जिसे उसने छिपाने की भी कोई चेष्टा नहीं की) और फ़ोरमैन का इसका प्रतिपादन और विशेष कर

सबकी भ्रान्ति मसलोवा के प्रतिकूल जा रहे हैं तो वह अपनी सम्मति प्रकट करने के लिए उत्कण्ठित हो उठा ; पर साथ ही उसे आशङ्का थी कि कहीं उसके और मसलोवा के पारस्परिक सम्बन्ध का भेद न खुल जाय। साथ ही वह मामले का यह रङ्ग-ढङ्ग भी न देख सकता था, अत उसने लजाते हुए और विवर्ण होते हुए कुछ बोलने की तैयारी की ही थी कि फ़ोरमैन के अधिकारपूर्ण रङ्ग-ढङ्ग से चिढ़ कर जीरासिमोविच ने ठीक वही आपत्तियाँ खड़ी करनी शुरू कर दीं, जो स्वयं निखल्यूडोव करना चाहता था।

उसने कहा—कुछ मुझे भी कहने की अनुमति दीजिए। आपके रङ्ग-ढङ्ग से ऐसा दिखाई पड़ता है कि आप यह समझते हैं कि उसके पास ताली का होना ही उसका चोरी का अपराध प्रमाणित करने के लिए काफ़ी है, पर उसके जाने के बाद इन नौकरों के किसी नक़ली चाभी से पोर्टमेण्टो खोल कर रुपया निकाल लेने से अधिक और क्या सहज काम हो सकता है ?

व्यापारी ने कहा—बेशक, बेशक !

"वह रुपया ले ही नहीं सकती थी, क्योंकि अपनी अवस्था में वह उसका क्या करती?"

व्यापारी ने कहा—मैं भी तो यही कह रहा हूँ।

"और अधिक सम्भावना इस बात की है कि उसके आगमन से नौकरों को यह चाल सूझ पड़ी हो, और अवसर पाकर उन्होंने रुपया चुरा लिया हो और सारा दोष उसके माथे थोप दिया हो।"

जीरासिमोविच इतना चिढ़ कर बोल रहा था कि फ़ोरमैन भी चिढ़ गया और हठपूर्वक विपरीत पक्ष प्रतिपादन करने लगा, पर

जजों को पाँसा फेंकने की सलाह दी थी और कहा था कि यदि संख्या सम हो तो मुद्दालेह की जीत और विषम हो तो मुद्दई की।

इस मामले में भी लगभग यही हुआ। इस बात को जो काग़ज़ में दर्ज नहीं किया गया था वह इसलिए नहीं कि उस पर सब के सब सहमत हो गए थे, बल्कि इसलिए कि प्रेसीडेण्ट अपनी लम्बी-चौड़ी वक्तृता में वह बात कहना छोड़ गया था, जो उसे ऐसे अवसरों पर कहने की आदत सी पड़ी हुई थी (अन्यथा ऐसी अवस्था में उत्तर होता—हाँ, अपराधिनी तो है, पर उसने प्राण लेने के उद्देश से प्रेरित होकर पाउडर नहीं दिया था), इसलिए कि कर्नल ने अपनी सलहज की कहानी इतने लम्बे-चौड़े ढङ्ग से सुनाई थी; इसलिए कि निखल्यूडोव अत्यन्त उत्तेजित होने के कारण उत्तरमाला में 'प्राण लेने के उद्देश से प्रेरित होकर नहीं' वाक्यांश देखना भूल गया था और समझा था कि 'बिना उद्देश के' शब्द से दण्ड-योजना का मर्म ही नष्ट हो जाता है, इसलिए कि प्रश्न और उत्तर पढ़े जाते समय जीरासिमोविच कमरे से चला गया था, और विशेष रूप से इसलिए कि सब थक गए थे और किसी भी ऐसे निर्णय के साथ सहमत होने के लिए तैयार थे जिससे मामले का झटपट निबटारा हो जाय।

जूरों ने घण्टी बजाई। दरवाज़े के सामने खड़े सिपाही ने अपनी नङ्गी तलवार मियान में रख ली और वहाँ से हट गया। जजों ने अपना स्थान ग्रहण किया और जूरर एक-एक करके आने लगे।

फोरमैन ने गम्भीर भाव से आकर उत्तरमाला प्रेसीडेण्ट को पकड़ाई। प्रेसीडेण्ट ने उस पर दृष्टिपात किया और विस्मय व्यञ्जक

ढङ्ग से हाथ फैलाने के बाद अपने सहयोगियों के साथ परामर्श करना आरम्भ कर दिया। प्रेसीडेण्ट को आश्चर्य इस बात पर हो रहा था कि जूरी ने जब यह लिख दिया कि 'चोरी करने के उद्देश से नहीं' तो उसने यह क्यों नहीं लिखा कि 'प्राण लेने के उद्देश से नहीं।' जूरी के निर्णय का तो यह तथ्य निकलता था कि मस-लोवा ने न चोरी की, न डाका डाला, और इतने पर भी एक आदमी को, बिना किसी प्रत्यक्ष कारण के, विष दे दिया।

प्रेसीडेण्ट ने अपनी बाईं ओर के सदस्य से धीरे से कहा—ज़रा देखिए तो, इन्होंने कैसा मूर्खतापूर्ण निर्णय किया है। इसका अर्थ है आजन्म सपरिश्रम साइबेरिया वास, और वास्तव में है यह निर्दोष।

गम्भीर सदस्य ने कहा—तो क्या आपकी राय में यह निर्दोष है?

"हाँ, यह निश्चय ही निर्दोष है। मेरी समझ में यह एक ऐसा मामला है, जिसमें ८१७ धारा काम में लानी चाहिए।" (८१७ धारा के अनुसार अदालत जूरी के निर्णय को अनुचित समझने पर रद कर सकती है।)

प्रेसीडेण्ट ने एक दूसरे सदस्य की ओर घूम कर कहा—"आपकी क्या राय है?" सहृदय सदस्य ने इसका उत्तर तत्काल ही नहीं दे दिया। उसने एक कागज पर लिखी सख्या की ओर दृष्टिपात किया और उस पर कुछ और अङ्क लिख कर उसे तीन से भाग दिया, पर वह संख्या तीन से विभाजित न होती थी। उसने मन ही मन निश्चय कर लिया था कि यदि संख्या तीन से विभाजित हो जायगी

तो वह प्रेसीडेण्ट के साथ सहमत हो जायगा। पर संख्या के विभाजित न होने पर भी उसकी सहृदयता ने उसे प्रेसीडेण्ट के साथ सहमत होने को वाध्य कर दिया।

उसने कहा—जी हाँ, मेरी समझ में भी यही होना चाहिए।

प्रेसीडेण्ट ने गम्भीर सदस्य की ओर घूम कर पूछा—और आप?

गम्भीर सदस्य ने कहा—कदापि नहीं। आजकल तो वैसे ही समाचार-पत्र जूरी को अभियुक्तों को मुक्त करने का दोषी ठहराते रहते हैं, जब स्वयं जज भी यही करने लगेंगे तो फिर क्या ठीक रहेगी?

प्रेसीडेण्ट ने घड़ी की ओर निगाह उठाई—"है तो बड़े दु ख की बात, पर किया क्या जाय?" और उसने वह कागज़ फोरमैन को पढ़ने के लिए दे दिया। सब उठ खड़े हुए और फ़ोरमैन एक पाँव से दूसरे पाँव पर भार देकर और खाँस-खखार कर प्रश्न और उत्तर पढ़ने लगा। सारी अदालत—सेक्रेटरी, ऐडवोकेट और पब्लिक प्रॉसीक्यूटर तक—आश्चर्य-चकित रह गई। कैदी निश्चेष्ट भाव से बैठे रहे। यह स्पष्ट था कि वे उत्तर न समझ सके थे। इसके बाद सब अपने-अपने स्थान पर बैठ गए और प्रेसीडेण्ट ने प्रॉसीक्यूटर से पूछा कि कैदियों को क्या सज़ाएँ दी जानी चाहिए।

प्रॉसीक्यूटर मसलोवा को दण्डित कराने में सफलता प्राप्त करके फूला न समाया और उसने इसका एकमात्र कारण अपनी ओजस्विता समझा। उसने अपेक्षित सूचना पर दृष्टि डाली और खड़े होकर कहा —

"मैं सायमन कार्टिनकिन के मामले मे १४५२ और १४५३ का उपयोग करना ठीक समझूँगा ; यूफेमिया बचकोवा के मामले में १६५६ का और कैटेरीना मसलोवा के मामलों में १४५४ का।"

ये तीनों दण्ड कठोरतम दण्ड थे।

प्रेसीडेण्ट ने उठते हुए कहा—"अदालत दण्ड-व्यवस्था पर विचार करने के लिए उठेगी।" उसके बाद और सब भी उठ खड़े हुए और कार्य को भले प्रकार समाप्त होने की खुशी में इधर-उधर घूमने या बाहर जाने लगे।

फ़ोरमैन निखल्यूडोव से कुछ कह रहा था। जीरासिमोविच उसके पास पहुँचा और बोला— महोदय, आपको मालूम है, हमने कैसी लज्जाजनक भूल की है ? हमने उसे साइबेरिया भिजवा दिया।

निखल्यूडोव चिल्ला उठा—"क्या मतलब ?" इस बार उसे जीरासिमोविच की आत्मीयता से कोई अरुचि न हुई।

"मतलब क्या ! हमने अपने उत्तर में यह नहीं लिखा 'अपराधिनी, पर प्राणान्त करने के उद्देश से प्रेरित होकर नहीं।' मुझे अभी-अभी सेक्रेटरी ने बताया है कि प्रॉसीक्यूटर उसे पन्द्रह वर्ष का सपरिश्रम साइबेरिया-वास दण्ड देना चाहता है।"

फ़ोरमैन ने कहा—पर निर्णय भी तो इसी प्रकार का हुआ था।

पीटर जीरासिमोविच ने तर्क किया और कहा कि जब उसने कोई रुपया नहीं चुराया तो यह स्वाभाविक रूप से सिद्ध है कि उसका उस व्यापारी की हत्या करने का उद्देश भी कुछ न रहा होगा।

फ़ोरमैन ने अपनी सफ़ाई देते हुए कहा—पर मैंने बाहर जाने

से पहले एक बार पढ़ कर सुना दिया था और उस समय किसी ने आपत्ति नहीं की।

जीरासिमोविच ने निखल्यूडोव की तरफ़ मुड़ कर कहा—मैं ज़रा बाहर चला गया था और तुम्हारे विचार कहीं और चक्कर काट रहे होंगे, जो तुमने ध्यान नहीं दिया।

निखल्यूडोव ने कहा—मैंने तो कल्पना तक न की थी।

"अच्छा ! कल्पना तक न की थी ?"

"तो क्या अब ठीक नहीं हो सकता है !"—निखल्यूडोव ने पूछा।

"नहीं जी, अब क्या हो सकता है।"

निखल्यूडोव ने कैदियों की तरफ़ देखा। वे, जिनके भाग्य का निर्णय दो ही चार क्षणों में होने वाला था, अब भी उसी प्रकार लोहे के बाड़े में सिपाहियों के पीछे निश्चेष्ट बने बैठे थे। मसलोवा मुस्करा रही थी। निखल्यूडोव की आत्मा में एक दुर्विचार उत्पन्न हुआ। अब तक वह उसके बरी होने की आशा कर रहा था और सोच रहा था कि छूटने के बाद भी वह उसी नगर में रहेगी, और उस दशा में उसके साथ उसका क्या सम्पर्क रहेगा। उसके साथ किसी प्रकार सम्बन्ध उसके लिए दुष्कर होगा। पर साइबेरिया और सपरिश्रम दण्ड के द्वारा उसका सम्बन्ध उससे पूर्णतया विच्छिन्न हो जायगा और फिर उससे किसी प्रकार का सम्पर्क होने की सम्भावना न रहेगी। आहत पक्षी शिकारी के झोले में तड़पना बन्द कर देगा और अपने अस्तित्व की याद दिला कर फिर कभी उसे क्षुब्ध न करेगा।
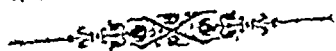
टर जीरासिमोविय की धारणा सत्य ही निकली। प्रेसीडेण्ट परामर्शशाला से हाथ में कागज़ लिए वापस आया और उसने निम्नलिखित दण्डाज्ञा पढ़ी :—

"२८ अप्रैल, १८८ । हिज़ इम्पीरियल मैजेस्टी के आदेशानुसार यह फौजदारी अदालत ७७१ की तीसरी और ७७६ और ७७७ की तीसरी धारा के अनुसार जूरी के निर्णय के आधार पर फैसला करती है कि देहाती सायमन कार्टिनकिन—उम्र तैंतीस साल—और केटेरीना मसलोवा—उम्र अट्टाईस साल—को सारे स्वामित्व के अधिकारों से वञ्चित कर दिया जाय, और कार्टिनकिन को आठ वर्ष के कठोर दण्ड और मसलोवा को विधान की २५ वीं धारा के अनुरूप चार वर्ष के कठोर दण्ड के लिए सायबेरिया निर्वासित कर दिया जायगा। वचकोवा—उम्र तैंतालीस साल—को सारे व्यक्तिगत और सम्पत्ति सम्बन्धी स्वामित्व के अधिकारों मे वञ्चित कर दिया जायगा और उसे तीन साल का कारावास-दण्ड दिया जाय। मुक़दमे का व्यय कैदियों

को बराबर-बराबर उठाना होगा, और यदि क़ैदियों के पास इतनी सम्पत्ति न हुई तो व्यय राजकोष से वसूल किया जायगा। साक्ष्य पदार्थों को बेच दिया जायगा, अँगूठी वापस कर दी जायगी, और शीशे के गिलास नष्ट कर दिए जायँगे।

कार्टिनकिन अपनी बग़लों में हाथ दबाए खड़ा धीरे-धीरे ओंठ चलाता रहा। बचकोवा बिलकुल शान्त दिखाई दी। जब मसलोवा ने दण्डाज्ञा सुनी तो उसका चेहरा लाल हो गया। वह चीत्कार कर उठी और उसकी वह ध्वनि सारे कमरे में गूँज गई—"मैं निर्दोष हूँ, मैं निर्दोष हूँ, मैं निर्दोष हूँ! यह पाप है! मैंने कोई अपराध नहीं किया। मैंने अपराध करने का विचार तक नहीं किया—इच्छा तक नहीं की! मैंने जो कुछ कहा था, सच कहा था—सच कहा था!" और वह बेञ्च पर गिर कर फूट-फूट कर रो पड़ी। कार्टिनकिन और बचकोवा वहाँ से ले जाए गए, पर वह वहाँ उसी प्रकार बैठी रही और एक सिपाही को उसकी आस्तीन छूनी पड़ी।

निखल्यूडोव अपने कुविचारों को बिलकुल भूल गया और मन ही मन कहने लगा—"न, इस तरह मामला छोड़ना असम्भव है!" वह जल्दी-जल्दी उसके पीछे-पीछे अदालत से बाहर गया। न जाने क्यों, वह एक बार उसके दर्शन और कर लेना चाहता था। दरवाज़े पर काफ़ी भीड़ थी। जूरर और ऐडवोकेट अपना-अपना कार्य समाप्त करके प्रसन्न-चित्त निकलने लगे, अतएव निखल्यूडोव को कुछ क्षण रुकना पड़ा, और जब निकलने का मार्ग साफ़ हुआ तो मसलोवा काफ़ी आगे जा पहुँची थी। वह अदालत के बरामदे में से होता हुआ, अपनी ओर आकृष्ट हुए दृष्टि-समूह की अवहेलना

करता हुआ, उसके पीछे-पीछे दौड़ा, उसके पास पहुँचा, आगे निकल गया, और फिर रुक गया। उसने अब रोना बन्द कर दिया था और अब वह सिसकियाँ ले रही थी और अपने रूमाल से अपने लाल, विवर्ण चेहरे को पोंछ रही थी। वह उसकी ओर बिना कुछ ध्यान दिए आगे बढ़ गई। अब वह झटपट प्रेसीडेण्ट के पास पहुँचा। प्रेसीडेण्ट अदालत से उठ बैठा था और निखल्यूडोव जब उसकी खोज में लॉबी में पहुँचा तो उसने अपना भूरे रङ्ग का कोट पहन लिया था और नौकर से चाँदी की मूठ की छड़ी ले ली थी।

निखल्यूडोव ने कहा—महोदय, क्या मैं आप से उस मामले के सम्बन्ध में दो-चार बातें कर सकता हूँ, जिसका निर्णय अभी-अभी सुनाया गया है? मैं जूरी में था।

प्रेसीडेण्ट ने तत्काल हर्षपूर्वक स्मरण किया कि किस प्रकार एक बार रात्रि में उसके साथ उसकी भेंट हुई थी और किस प्रकार उस अवसर पर वह (प्रेसीडेण्ट) प्रफुल्लता के साथ नाच-नाच कर युवा-समाज से भी बाज़ी मार ले गया था। उसने उसकी ओर हाथ बढ़ाते हुए कहा—अवश्य प्रिन्स निखल्यूडोव; मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी। शायद हमारी भेंट पहले भी हो चुकी है। बताइए, मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?

निखल्यूडोव ने खिन्न मुद्रा के साथ कहा—मसलोवा के सम्बन्ध में जो उत्तर लिखा गया था उसमें एक ग़लती रह गई है। वह विष देने की अपराधिनी नहीं है, पर तो भी उसे सपरिश्रम निर्वासन दण्ड दिया गया है।

प्रेसीडेण्ट ने प्रवेश-द्वार की ओर बढ़ते हुए कहा—"आप लोगों

ने जिस तरह उत्तर लिखे, उसीके अनुकूल अदालत ने अपना निर्णय दे दिया, यद्यपि वे उत्तर कुछ अधिक सङ्गत न थे।" उसे याद आया कि किस प्रकार वह अपनी वक्तृता में जूरी को समझाने जा रहा था कि जब तक 'प्राण लेने के उद्देश से प्रेरित होकर नहीं' न लिखा जाय तब तक 'अपराधी' का अभिप्राय 'उद्देश से प्रेरित' होकर अपराध करने का लिया जाता है, पर किस प्रकार झटपट कार्यवाही समाप्त करने के उद्देश से उसने वह बात छोड़ दी थी।

"पर क्या अब उसमें संशोधन नहीं हो सकता ?"

"अपील करने का कोई न कोई कारण अवश्य ही मिल जाता है। आप किसी ऐडवोकेट से सलाह लीजिएगा।" प्रेसीडेण्ट ने अपना टोप सिर पर तिर्छा करते हुए और दरवाज़े की ओर बढ़ते हुए कहा।

"पर बात बड़ी भयङ्कर है।"

"देखिए न, मसलोवा के लिए दोनों प्रकार की सम्भावनाएं थीं!"—प्रेसीडेण्ट ने निखल्यूडोव के साथ भरसक विनम्रता का व्यवहार करने की चेष्टा करते हुए कहा। इसके बाद उसने अपने गलमुच्छे कॉलर के कोट पर ठीक किए और निखल्यूडोव की कुहनी के नीचे हाथ लगा कर उसी प्रकार द्वार की ओर बढ़ते-बढ़ते कहा—"आप भी चल रहे हैं ?"

निखल्यूडोव ने कहा—"जी हाँ।" और वह झटपट कोट पहन कर उसके साथ हो लिया।

दोनों ने उज्ज्वल, उल्लासपूर्ण प्रकाश में प्रवेश किया और जन-पथ की गाड़ियों के कोलाहल के कारण अपनी आवाज़ ज़रा ऊँची कर दी।

प्रेसीडेण्ट ने कहा—आप देखते हैं न, मामला बड़ा विचित्र सा था। मसलोवा के लिए दो सम्भावनाएँ थीं, या तो वह लगभग बरी हो जाती और उसे नाम-मात्र को दण्ड मिल जाता या उसको हवालात के समय पर विचार करके शायद बिलकुल छोड़ दिया जाता, और या उसे साइबेरिया का निर्वासन मिलता। और कोई गति ही न थी। यदि आप केवल 'प्राण लेने के उद्देश से प्रेरित होकर नहीं' लिख देते तो वह साफ छूट जाती।

निखल्यूडोव ने कहा—जी हाँ, इस ओर ध्यान न देकर मैंने असभ्य अपराध किया।

प्रेसीडेण्ट ने मुस्करा कर कहा—"बस, यह मामला है।" और उसने अपनी घड़ी की ओर दृष्टिपात किया। अपनी क्लेरा से मिलने के नियत समय की अवधि में केवल पौन घण्टा शेष रह गया था। "अब, अगर आप चाहें तो ऐडवोकेटों से सलाह लीजिए। आपको अपील करने का कोई न कोई कारण ढूँढना पड़ेगा। पर यह बड़ी आसानी से हो सकता है।" उसके बाद वह एक गाड़ी वाले की ओर मुड़ कर चिल्लाया—"डोरियन्स्काया को, तीस कृपक, मैं इससे अधिक कभी नहीं देता।"

"बहुत अच्छा सरकार, मैं आपको इतने में ही ले चलूँगा।"

"अच्छा सलाम! अगर मेरे योग्य कोई सेवा हो तो मेरा मकान डोरियन्स्काया पर है, मकान का नाम है डोखीकोप भवन। बड़ी आसानी से याद रहेगा।" और मित्रतापूर्ण ढङ्ग से अभिवादन करके वह गाडी मे सवार होकर रवाना हो गया।

बाईसवाँ परिच्छेद
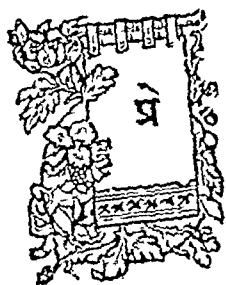
सीडेण्ट के साथ वार्तालाप करके और ताज़ी हवा लेकर निखल्यूडोव कुछ शान्त हुआ। अब उसने सोचा कि उसने अब तक जिन भावों की अनुभूति की है उन्हें वास्तव में उन अनभ्यस्त परिस्थितियों के द्वारा अति-रञ्जित रूप प्राप्त हो गया था, जिनमें रह कर उसने अपना प्रातःकाल व्यतीत किया था।

"निस्सन्देह बड़ा विलक्षण और आश्चर्यजनक संयोग है, और उसकी दुरवस्था को हल्का करना मेरे लिए नितान्त आवश्यक है, और मैं इसके लिए कुछ उठा न रक्खूँगा। बस, अभी लो! अब मुझे यह पता लगाना चाहिए कि यहाँ मिकीशिन और फनारिन कहाँ बैठते हैं।"—उसने दो प्रसिद्ध ऐडवोकेटों का नाम स्मरण करके कहा। वह अदालत में वापस आया और ओवरकोट उतार कर ऊपर पहुँचा। पहले ही बरामदे में उसकी भेंट फनारिन से हो गई। निखल्यूडोव ने उसे रोका और कहा कि वह कार्यवश उसी की खोज कर रहा था।

फनारिन निखल्यूडोव की सूरत-शक्ल और नाम से परिचित था, और उसने कहा कि वह उसकी सेवा करके बड़ा प्रसन्न होगा।

"वैसे मैं इस समय थक तो बहुत गया हूँ, पर यदि आपके काम में अधिक देर न लगे तो आप अभी बता दीजिए, क्या बात है। आप यहाँ आएँगे?" और वह निखल्यूडोव को एक कमरे मे ले गया, जो शायद किसी जज की केबीनेट थी। दोनो मेज के आगे बैठ गए।

"हाँ, अब काम की बात शुरू होनी चाहिए।"

"सबसे पहली बात तो यह है कि यह मामला बिलकुल गुप्त रहना चाहिए। मैं यह नहीं चाहता कि लोग-बाग यह जान जायँ कि मैं इस मामले मे दिलचस्पी लेता हूँ।"

"बेशक, बेशक। अच्छा?"

"आज मैं जूरी में था और हमने एक स्त्री को—एक निर्दोष स्त्री को साइबेरिया को निर्वासित किया है। इससे मुझे बड़ी मानसिक वेदना हो रही है।"—निखल्यूडोव को अपने आपको लजाते और अस्त-व्यस्त होते देख कर स्वयं ही आश्चर्य हुआ। फ़नारिन ने झट-पट उसकी ओर दृष्टिपात किया और इसके बाद वह फिर सिर नीचा करके सुनने लगा।

"हाँ, तो फिर?"

"हमने उसे दण्ड दिया है, और मै बडी अदालत में अपील करना चाहता हूँ।"

"सीनेट मे—?"—फनारिन ने उसकी बात को ठीक करके कहा।

"हाँ, और मैं चाहता हूँ कि आप इस मामले को अपने ही हाथ में ले लें।"—निखल्यूडोव वार्त्तालाप के सबसे अधिक क्षोभकारी अंश की समाप्ति करना चाहता था। "और इसका सारा खर्च जितना भी हो, मैं अपने ऊपर उठाऊँगा।"

ऐडवोकेट ने इन बातों में निखल्यूडोव की अनुभवहीनता पर कृपा-भाव से मुस्कराते हुए कहा—अजी, यह सब तय हो जायगा। क्या मामला है?

निखल्यूडोव ने बताया कि क्या घटना थी।

"अच्छी बात है। मैं काम में लग जाऊँगा और कल मामले की नज़रसानी करूँगा। आप परसों आइए—या नहीं, बृहस्पति के दिन ठीक रहेगा। छः बजे आइए और मैं आपको पक्का जवाब दे दूँगा। अच्छा अब आज्ञा दीजिए, मुझे अभी यहाँ कुछ पूछ-ताछ करनी है।"

निखल्यूडोव उससे विदा लेकर बाहर निकला।

ऐडवोकेट के साथ वार्तालाप करके और यह सोच कर कि उसने मसलोवा की पैरवी का प्रबन्ध कर दिया है, उसे बहुत शान्ति मिली। वह सड़क पर पहुँचा। ऋतु बड़ी सुन्दर थी और वह वसन्त की मनोरम वायु का गहरा साँस लेकर प्रफुल्लित हो उठा। उसे चारों ओर से गाड़ीवानों ने घेर लिया, पर वह पैदल ही चलता रहा। उसके स्मृति-पटल पर कट्ग्गा और उसके प्रति अपने आचरण के अनेकानेक चित्र उदित हो उठे और वह खिन्न हो गया और सारे पदार्थ उसे नीरस दिखाई देने लगे। उसने स्वगत कहा—नहीं, मैं इस पर बाद को विचार करूँगा।

उन्हे कोरश्चेगिन परिवार के साथ भोजन करने का स्मरण आया और उसने अपनी घड़ी की ओर दृष्टिपात किया। अभी इतनी देर न हुई थी कि वह वहाँ समय पर पहुँच ही न सकता हो। उसके कान में ट्रामकार की सीटी की आवाज़ आई, वह उसे पकड़ने दौड़ा और उस पर कूद कर सवार हो गया। बाज़ार में पहुँच कर वह उस पर से कूद पड़ा और एक गाड़ी लेकर दस मिनट के भीतर विशाल कोरश्चेगिन भवन में जा पहुँचा।

शाल कोरश्चेगिन भवन के मोटे-ताज़े मित्रता-पूर्ण आचरण करने वाले द्वार-रक्षक ने द्वार खोल कर कहा—"पधारिए, योर ऐक्सीलेन्सी आपकी बाट देख रहे हैं। भोजन करने बैठ गए हैं, पर हमें आपको आने देने का आदेश किया गया है।" द्वार-रक्षक सीढ़ियों तक गया और उसने घण्टी बजाई।

निख्ल्यूदोव ने अपना ओवरकोट उतारते हुए पूछा—क्या कोई और भी है?

"महाशय कोलोसोव और माइकेल मर्जीविच, और घर के आदमी।"

एक अत्यन्त सुन्दर अर्दली ने फूलदार कोट और सफ़ेद दस्ताने पहने, ऊपर से झाँक कर कहा—आइए, योर ऐक्सीलेन्सी आपकी बाट देख रहे हैं।

निख्ल्यूदोव ऊपर पहुँचा और सुन्दर से लम्बे-चौड़े नृत्य-भवन

में से होकर—जो उसका अच्छी तरह परिचित था—भोजनशाला में पहुँचा। यहाँ माता सोफिया वेसलीटना को छोड़ कर (वह अपना कमरा छोड़ कर कभी बाहर न निकलती थी) और सारा परिवार मेज़ के चारो ओर एकत्र था। मेज़ के प्रधान स्थान पर वृद्ध कोरश्चेगिन बैठा था; उसकी बाईं ओर डॉक्टर था, और दाहिनी ओर एक मुलाक़ाती—इवान इवानिच कोलोसोव (भूतपूर्व मार्शल ऑफ़ नोबिलिटी, वर्तमान बैङ्क डॉयरेक्टर) बैठा था। बाईं ओर डॉक्टर के पास ही मिस रेनर—मिसी की नन्हीं बहिन की अध्यापिका—बैठी थी और उसके पास ही वह चार वर्ष की बालिका भी बैठी हुई थी। उसके सामने मिसी का भाई और कोरश्चेगिन दम्पति का एकमात्र पुत्र बैठा था, जो एक सार्वजनिक स्कूल में छठी कक्षा में पढ़ता था। इसी की परीक्षा के कारण अभी तक सब नगर में रुके हुए थे। उसके पास ही एक यूनिवर्सिटी का विद्यार्थी बैठा हुआ था जो लड़के को पढ़ाया करता था, और उसके पास मिसी का मौसेरा भाई माइकेल सर्जीविच टेलेगिन बैठा था, जिसे साधारणतया मीशा के नाम से पुकारा जाता था, इसके ठीक सामने एक चालीस वर्ष की कुमारी स्लेवोफिल महिला बैठी हुई थी, और मेज के दूसरे कोने पर स्वयं मिसी बैठी थी और उसके बगल वाला स्थान ख़ाली था।

वृद्ध कोरश्चेगिन ने अपनी लाल आँखे (जिनमें कोई दृश्यमान पलक दिखाई न देता था) निखल्यूडोव की ओर उठा कर अपने नकली दाँतों से ग्रास चबाते हुए, प्रयासपूर्वक कहा—अच्छा! आ गए! ठीक! हमने अभी मछली ही आरम्भ की है।

इसके बाद उसने मोटे-ताज़े रोबदार बटलर को सङ्केत से रिक्त स्थान दिखाते हुए कहा—'स्टीफ़ेन !' वैसे निखल्यूडोव कोरश्चेगिन को बहुत अच्छी तरह जानता था और पहले भी उसे कई बार भोजन करते देख चुका था, पर आज इस लुब्ध, चटख़ोर लेते हुए ओठों वाले लाल-लाल चेहरे, वास्कट से गर्दन तक लपेटे हुए रूमाल के ऊपर से चमकती हुई लाल गर्दन और उसके सारे अतिपोषित सैनिक अवयवों को देख कर उसे जितनी अरुचि हुई, उतनी पहले कभी न हुई थी। निखल्यूडोव को स्मरण हो आया कि किस प्रकार यह निर्दय मनुष्य सैन्य-सञ्चालन के अवसर पर सिपाहियों को अकारण ही बेतों से पिटवाया और बहुतों को फाँसी पर टँगवा दिया करता था, और केवल इसलिए कि वह धनवान था और उसे किसी का दया-पात्र होने की आवश्यकता न थी।

स्टीफ़ेन ने कहा—"अभी लीजिए योर ऐक्सीलेन्सी।" और उसने दीवार में लगे तख़्ने पर से—जिस पर बहुत से चाँदी के बर्तन रक्खे शोभा दे रहे थे—शोरवे का बड़ा चम्मच निकाला। उसने उस सुन्दर अर्दली को सङ्केत किया और वह मिसी के पास वाले स्थान पर अछूते चाकू, काँटे और रूमाल सजाने लगा, जो बड़ी शान के साथ लपेटे हुए रक्खे थे और जिन पर अङ्कित पारिवारिक चिह्न ऊपर रक्खा गया था। निखल्यूडोव मेज़ के चारों ओर हर एक से हाथ मिलाता फिरा और वृद्ध कोरश्चेगिन और महिलाओं को छोड़ कर और सब अपने-अपने स्थान पर उठ कर खड़े हो गए। निख-ल्यूडोव को इस प्रकार मेज़ का चक्कर काटना और इन सबसे

हाथ मिलाते फिरना, जिनमें से बहुत से व्यक्तियों को वह जानता तक न था, बड़ा क्षोभकारी और विलक्षण व्यापार प्रतीत हुआ। उसने विलम्ब के लिए क्षमा-प्रार्थना की और वह मिसी और कैथेरीन ऐलेक्ससीला के बीच में स्थान ग्रहण करने ही वाला था कि कोरश्चेगिन ने हठ किया कि यदि वह एक गिलास शराब न भी पिए तो भी उसे कम से कम आलमारी पर सजे हुए कुछ स्वादिष्ट, क्षुधावर्द्धक पदार्थ अवश्य ग्रहण करने चाहिए। भोजन आरम्भ करने से पहले निखल्यूडोव न जानता था कि वह कितना भूखा है, और मक्खन और रोटी के आरम्भ करने के बाद वह बड़ी लालसापूर्वक भोजन करने लगा।

कोलोसोव ने एक सुधार-विरोधी समाचार-पत्र के जूरी के द्वारा मामले विचार होने के विषय में व्यंग्य-विद्रूप का उद्धरण देते हुए कहा—कहिए, आप समाज की नींव खोखली करने में सफल हुए? अपराधियों को मुक्त कर दिया और निर्दोषों को दण्ड दे दिया—क्यों न?

कोरश्चेगिन ने हँसते हुए दुहराया—"समाज की नींव खोखली करना—समाज की नींव खोखली करना।" कोरश्चेगिन को अपने चुने हुए मित्र और सङ्गी की विद्वत्ता और बुद्धिमत्ता में अगाध विश्वास था।

निखल्यूडोव ने कोलोसोव की बात का कोई उत्तर न दिया, चाहे वह बात कितनी ही उद्दण्डतापूर्ण समझी गई हो। वह गर्म-गर्म शोरवा पीता रहा।

मिसी ने मुस्करा कर कहा—"इन्हें खाने तो दीजिए।" उसने

इस उपसंज्ञा का उपयोग कोलोसोव को अपनी और निखल्यूडोव की पारस्परिक आत्मीयता की याद दिलाने के लिए किया था। कोलोसोव ऊँचे स्वर में और सजीवता के साथ उस लेख के उद्धरण पेश करता गया, जो जूरी द्वारा निर्णय के विरुद्ध लिखा गया था और जिसे पढ़ कर वह बेतरह क्रुद्ध हो उठा था। मिसी के मौसेरे भाई माइकेल सर्जीविच ने उसके कथन का समर्थन किया और उसने उसी समाचार-पत्र के एक दूसरे लेख का अवतरण देना आरम्भ कर दिया। मिसी सदैव की भाँति बड़ी अच्छी और असाधारण दिखाई दे रही थी और सुन्दर पोशाक पहने हुए थी।

उसने उस समय तक प्रतीक्षा की, जब तक निखल्यूडोव ने अपने मुँह का पदार्थ निगल न लिया, और फिर उससे कहा—तुम तो बड़ी बुरी तरह थक गए होगे और भूख के मारे बुरा हाल हो गया होगा?

निखल्यूडोव ने कहा—नहीं, कुछ विशेष नहीं। और तुम? तुम चित्र देखने गई थीं?

"नहीं, हमने वह विचार स्थगित कर दिया। हम सालामाटोव परिवार के साथ टेनिस खेलते रहे। क्या यह ठीक है कि मि० कुक टेनिस में सिद्धहस्त हैं?"

निखल्यूडोव यहाँ अपना मन बहलाने के लिए आया था। वह इस भवन में आना पसन्द करता था, इसलिए कि यहाँ की सुघरी विलासप्रियता का उस पर भला प्रभाव पड़ता था, और इसलिए भी कि यहाँ के मृदु चाटुकारितापूर्ण विक्षेप-रहित वातावरण में घिरे रहने में उसे एक ख़ास आनन्द आता था। पर आज

कितनी विलक्षण बात थी कि उसे एक-एक करके यहाँ की सारी चीज़ें—द्वार-रक्षक, सीढ़ियों, फूलों, अर्दलियों, मेज़ की सजावटों से लगा कर स्वयं मिसी तक, जो आज उसे रूपहीन, और कृत्रिम दिखाई दे रही थी—गर्हित लग रही थीं। क्या कोलोसोव का विरल आत्माश्वस्त गम्भीरता-शून्य लहजा, क्या कोरच्चेगिन का वासनापूर्ण, आत्मतुष्ट, बैलों जैसा आकार-प्रकार और क्या स्लेवोकिल कैथेरीन ऐलेक्सीटना के फ्रेञ्च वाक्य—एक सिरे से सब उसे क्षोभकारी प्रतीत हुए। अध्यापिका और यूनिवर्सिटी के विद्यार्थी के सङ्कुचित हाव-भाव से भी उसे क्षोभ हुआ तो, पर सबसे अधिक क्षोभ उसे मिसी की उम्र संज्ञा 'इन्हें' से हुआ। निखल्यूडोव अभी तक दुविधा में पड़ा था कि उसे मिसी को किस दृष्टि से देखना चाहिए, कभी वह उसे मानो चन्द्रमा के प्रकाश में देखता और उसे उसमें सौन्दर्य के सिवा और किसी चीज़ के दर्शन न होते; कभी वह उसे मानो सूर्य के प्रकाश में देखता और तब उसे उसमें अनेकानेक अवगुण दिखाई देते, जिनकी ओर से आँखें बन्द करने में वह असमर्थ होता। आज का दिन सूर्य के प्रकाश का था। आज उसे उसके चेहरे की झुर्रियाँ दिखाई दीं, उसके बालों में माँग निकालने के ढङ्ग की ओर उसका ध्यान गया, उसने उसकी नुकीली कुहनियों को देखा, और उसका ध्यान सबसे अधिक उसके अँगूठों के नाख़ूनों की ओर गया, जो अपने पिता के नाख़ूनों की नाईं ही लम्बे-लम्बे थे।

कोलोसोव ने कहा—टेनिस बड़ा नीरस खेल है। जब हम बच्चे थे तो 'लप्टा' खेला करते थे। उसमें इससे कहीं अधिक आनन्द आता था।

मिसी ने कहा—"अजी आप कभी खेल कर देखते तो कहते। बेहद रोचक होता है।" निखल्यूडोव को ऐसा भास हुआ कि उसने बेहद 'शब्द' पर ख़ास तौर से जोर दिया। इसके बाद एक वाद-विवाद छिड़ गया, जिसमें माइकेल सर्जीविच कैथेरीन ऐलेक्सीटना आदि सबने भाग लिया, अध्यापिका, विद्यार्थी और आन्त बालक चुपचाप बैठे रहे।

कोरश्चेगिन ने हँसते-हँसते कहा—"इस वाद-विवाद का कभी अन्त भी आता है?" और उसने अपनी वास्कट में से रूमाल निकाला, ज़ोर से कुर्सी खसकाई (जिसे नौकर ने तत्काल पीछे से पकड़ लिया) और इसके बाद वह मेज़ छोड़ कर चला गया।

उनके बाद और सब भी उठ खड़े हुए और एक दूसरी मेज़ के चारों ओर जा बैठे, जहाँ कटोरियों में गर्म, सुगन्धित जल भरा हुआ रक्खा था। उन्होंने कुल्ले किए, और इसके बाद वही वार्तालाप फिर छेड़ दिया, जिसमें किसी को रुचि न थी।

किसी ने कहा कि पुरुष का चरित्र जितनी अच्छी तरह खेल में व्यक्त होता है उतना और किसी तरह नहीं, और उसने अपने कथन की पुष्टि में निखल्यूडोव से पूछा—"क्यों जी, यही बात है न?" मिसी को उसके चेहरे पर वह संलग्न और किञ्चित असन्तुष्ट भाव दिखाई दिया जिससे वह सशङ्कित रहती थी, और वह इस भाव का मूल कारण जानना चाहती थी।

निखल्यूडोव ने कहा—मैंने तो कभी इस प्रश्न पर विचार नहीं किया।

मिसी ने पूछा—मामा के पास तक चलोगे?

"हाँ, चलूँगा।" उसने ऐसे स्वर मे कहा जिससे स्पष्ट व्यञ्जित होता था कि वह कहीं जाना नहीं चाहता। उसने सिगरेट निकाल कर सुलगाई।

किसी ने उसकी ओर चुपचाप प्रश्नात्मक नेत्रों से देखा और वह लज्जित हो गया। उसने स्वगत कहा—"किसी के घर जाना और वहाँ के आदमियों को क्षुब्ध करना!" और उसने सहृदयता प्रकट करने की चेष्टा करके कहा कि यदि प्रिन्सेज़ उसे आने देगी तो वह उनके पास सहर्ष चलेगा।

मिसी ने कहा—मामा को तो बडी प्रसन्नता होगी। वहीं सिगरेट भी पीते रहना। इवान इवानिच भी वहीं हैं।

गृह-स्वामिनी, प्रिन्सेज़ सोफ़िया वेसलीटना हर वक़्त लेटी रहने वाली महिला थी। यह आठवाँ साल था, जब सेइसने मुलाक़ातियो की उपस्थिति में लेस और रिबन से सज-धज कर मख़मल, हाथी-दाँत, पीतल, इत्र और पुष्पों के मध्य में लेटे रहने और केवल अन्तरङ्ग मित्रों को—या उसी के शब्दों में उन व्यक्तियों को, जिनका साधारण श्रेणी से कोई सम्पर्क न था, आने देने का आरम्भ किया था।

निखल्यूडोव को इन अन्तरङ्ग मित्रों की श्रेणी में परिगणित इसलिए किया गया कि वह चतुर पुरुष था, उसकी माता इस परिवार की घनिष्ट मित्र थी और वह मिसी के लिए अच्छा वर था।

सोफिया वेसलीटना का कमरा बड़े और छोटे ड्रॉइङ्गरूम के पीछे था। बडे ड्रॉइङ्गरूम मे मिसी, जो निखल्यूडोव के आगे-आगे जा रही थी, अकस्मात् खडी हो गई और एक छोटी सी सुनहरी कुर्सी पकड कर उसके नेत्रों की ओर देखने लगी।

मिसी विवाहित होने को बेतरह उत्कण्ठित हो रही थी, और चूँकि वह सुयोग्य वर था और वह भी उसे पसन्द करती थी, इसलिए उसने अपने आपको इस विचार की अभ्यस्त बना लिया था कि वह इसी का होगा (वह उसकी न होगी)। और अपनी लक्ष्य-सिद्धि के लिए वह उस हठ और कौशल के साथ काम करती रही थी जो मानसिक विकारयुक्त व्यक्तियों में अक्सर पाया जाता है। अब वह उससे बात करने लगी जिससे वह उसके हृदय की बात किसी प्रकार जान जाय।

उसने कहा—कुछ न कुछ बात है अवश्य। बताओ, क्या बात है?

निखल्यूडोव को अदालत की भेंट का स्मरण हो आया और उसने लजा कर भृकुटी चढ़ाई।

उसने सच-सच कहने की इच्छा से कहा—हाँ, एक घटना हो गई है—बड़ी अस्वाभाविक और गम्भीर घटना है।

"क्या घटना है? तुम मुझे इतनी सी बात भी न बताओगे?"

"अभी नहीं। अभी मुझसे इसका आग्रह मत करो। मैंने अभी इस पर पूरा विचार नहीं किया है।"—वह पहले से भी अधिक लजा उठा।

"तो तुम मुझे न बताओगे?" मिसी के चेहरे की एक नस खड़ी हो गई और उसने हाथ की कुर्सी को एक ओर ढकेल दिया।

उसने उत्तर दिया—"नहीं, मैं न बता सकूँगा।" और उसे अनुभूति हुई कि इस उत्तर के द्वारा उसने स्वगत भी स्वीकार कर लिया कि वास्तव में एक महत्त्वपूर्ण घटना घटित हो गई है।

"अच्छी बात है, तो आओ !" और इतना कह कर मिसी ने फुरहरी ली, मानो वह व्यर्थ के विचारों को मन से निकाल फेंकना चाहती हो। इसके बाद वह उसके आगे-आगे जल्दी से पग रखती हुई जाने लगी।

निखल्यूडोव को भास हुआ कि मिसी का मुँह आँसू रोकने की चेष्टा में असाधारण रूप से मिच गया है। वह उसका जी दुखाने के लिए दुःखित तो हुआ, पर साथ ही वह जानता था कि उसने ज़रा सी दुर्बलता दिखाई और वह उसके साथ हमेशा के लिए बँध जायगा। और आज इससे वह और भी डरता था, अतः वह उसके पीछे-पीछे चुपचाप प्रिन्सेज़ के कमरे को चला गया।
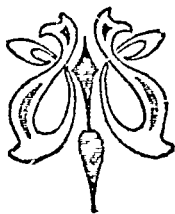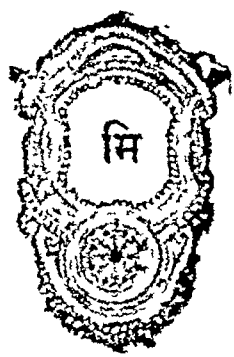
मिसी की माता प्रिन्सेज़ सोफ़िया वेसलीटना ने अपना बढ़िया और बलवर्द्धक भोजन समाप्त कर दिया था (वह भोजन हमेशा एकान्त में ही खाया करती थी, जिसमें कोई उसके इस कवित्व-शून्य कार्य को देख न पाए)। उसके कोच के पास एक छोटी सी मेज़ पर उसकी चाय रक्खी हुई थी और वह सिगरेट पी रही थी। प्रिन्सेज़ सोफ़िया वेसली-टना एक लम्बे कद की पतली-दुबली स्त्री थी, जिसके बाल काले, नेत्र बड़े-बड़े और कृष्ण वर्ण के थे और दाँत लम्बे-लम्बे थे, और वह अभी तक युवती बनी रहने का दावा करती थी।

डॉक्टर के साथ उसकी घनिष्ठता के सम्बन्ध में चारों ओर चर्चा होने लगी थी। निख्लूदोव को इस सम्बन्ध में कुछ दिन पहले से ही मालूम था; पर आज जब उसने उसके कोच के पास डॉक्टर को बैठे देखा, जिसकी तेल से तर दाढ़ी बीच में से बँटी हुई थी, तो

उसे न केवल उन किम्वदन्तियों का ही स्मरण हो आया, बल्कि उसे तीव्र घृणा उत्पन्न हो गई। मेज़ के पास एक नीची, मुलायम आराम-कुर्सी पर प्रिन्सेज़ की बगल में कोलोसोव बैठा हुआ चाय चला रहा था। मेज़ पर शराब का एक गिलास रक्खा था। मिसी निखल्यूडोव के साथ आई, पर ठहरी नहीं।

"जब मामा तुमसे उकता जायें और तुम्हें [illegible] तो मेरे पास आ जाना।"—उसने कोलोसोव और निखल्यूडोव की ओर मुड़ कर इस प्रकार मुस्कराते हुए कहा मानो कोई बात ही न हुई हो। और इसके बाद वह प्रफुल्लित भाव से मुस्कराती हुई और मोटे ग़लीचे पर दबा-दबा कर पैर रखती हुई बाहर निकल गई।

प्रिन्सेज़ सोफिया वेसलीटना ने अपनी कृत्रिम और नीरस, पर साथ ही अत्यन्त स्वाभाविक मुस्कराहट के द्वारा अपने स्वच्छ, लम्बे दाँत दिखाते हुए, और किसी समय की वास्तविक सोफ़िया वेस-लीटना की सुन्दर प्रतिमूर्ति सी प्रदर्शित करते हुए कहा—कहो, कैसे हो? बैठ जाओ और बातें करो। मैंने सुना है कि आज तुम अदालत से बड़े उदास होकर लौटे हो। किसी सहृदय व्यक्ति के लिए यह निश्चय ही बड़ा सन्तापदायक व्यापार होता होगा।

निखल्यूडोव ने कहा—जी हाँ, यही बात है। आदमी को अपने आप ....। आदमी समझता है कि उसे किसी प्रकार का निर्णय करने का कोई अधिकार नहीं है।

प्रिन्सेज़ सोफ़िया वेसलीटना चिल्ला उठी—मानो वह इस कथन की सत्यता से असाधारण रूप से प्रभावित हो उठी हो—"तुमने भी क्या सोलह आने बात कही है!" उसे अपने साथ वार्तालाप॰

करने वालों की कौशलपूर्ण चाटुकारिता करने का अभ्यास सा था। "ख़ैर, और तुम्हारे चित्र का क्या रहा? मुझे तो उसमें बड़ी रुचि है। यदि मैं दिन-रात की रोगिनी न होती तो उसे देखने बहुत पहले पहुँच गई होती।"

निखल्यूडोव ने शुष्क स्वर में कहा—"मैंने उसे छोड़ दिया।" उसे उसकी चाटुकारिता की असत्यता इतनी स्पष्टता के साथ प्रतीत होने लगी जितनी स्पष्टता के साथ उसकी आयु, जिसे वह छिपाए रखने की चेष्टा कर रही थी, और वह प्रयत्न करने पर भी उसके साथ विनम्रता का आचरण न कर सका।

प्रिन्सेज ने कोलोसोव की ओर मुड़ कर कहा—यह तो बड़े ही दुःख की बात है।...इनमें कला की प्रतिभा है, यह मैंने स्वयं रैपिन के मुँह से सुना था।

निखल्यूडोव ने मन ही मन कहा—इसे झूठ बोलते हुए लज्जा क्यों नहीं आती? और उसने तेवर चढ़ाए।

जब प्रिन्सेज़ को दृढ विश्वास हो गया कि निखल्यूडोव का चित्त ठीक नहीं है और उसे रोचक वार्तालाप करने की ओर किसी प्रकार प्रवृत्त न किया जा सकेगा, तो वह कोलोसोव से एक नए नाटक के सम्बन्ध में सम्मति पूछने लगी। उसने उसकी सम्मति ऐसे स्वर में पूछी मानो उसी से सारे संशयों का अन्त हो जायगा और मानो उसकी सम्मति का एक-एक शब्द अमर बनाए रखने योग्य होगा। कोलोसोव ने नाटक और उसके रचयिता दोनों में दोष निकाले और इस प्रकार वह कला के सम्बन्ध में विचार प्रकट करने को भी बाध्य हो गया। प्रिन्सेज़ सोफ़िया वेसलीटना के रङ्ग-ढङ्ग से

प्रकट हो रहा था कि वह नाटक का पक्ष भी लेना चाहती है और साथ ही कोलोसोव के तथ्य की सत्यता को भी वह अस्वीकार नहीं कर सकती, और यदि पूर्ण आत्म-समर्पण के लिए नहीं तो कम से कम अपनी सम्मति में कुछ परिवर्त्तन करने के लिए अवश्य उद्यत है। निखल्यूडोव देखता और सुनता रहा, पर वह इस बात का कुछ अर्थ न समझ सका।

उसने कभी सोफ़िया वेसलीटना और कभी कोलोसोव की बातें सुनते हुए यह सार निकाला कि वास्तव में उस नाटक से दोनों में से किसी को कुछ लेना-देना नहीं है, और यदि वे इस प्रकार बात-चीत कर रहे हैं तो यह केवल भोजन करने के बाद गले और ज़ुबान की नसों को सञ्चालित करने की भौतिक इच्छा से प्रेरित होकर; और यह कि कोलोसोव वोडका और शराब पीकर अब ज़रा मत-वाला सा हो चला है—देहातियों की तरह नहीं, जो कभी-कभी पी लिया करते हैं, बल्कि उन लोगों की तरह जिन्हें पीते रहने की आदत पड़ जाती है, वह न इधर-उधर लुढ़कता फिरता था, न अन-र्गल प्रलाप कर रहा था, पर इतना अवश्य था कि वह स्वाभाविक अवस्था मे न था; वह उत्तेजित और आत्म-सन्तुष्ट दशा में था। निखल्यूडोव ने यह भी देखा कि प्रिन्सेज़ सोफ़िया वेसलीटना बीच-बीच में खिड़की की ओर आतुर-भाव से देख लेती है, और यह कि उसमें से आती हुई सूर्य की तिर्छी रेखा—जो उसके वयस्क चेहरे को स्पष्ट रूप से प्रकाशित कर देती थी—उसकी ओर शनैः-शनैः बढ़ रही है।

उसने कोलोसोव की बात के उत्तर में कहा—"कैसी सच्ची

बात है !" और उसने अपने कोच की बगल में लगे बिजली के बटन को दबाया। डॉक्टर उठा और घर के आदमी की तरह कमरे से बिना कुछ कहे-सुने बाहर चला गया। सोफिया वेसलीटना उसे नेत्रों से देखती रही और साथ ही साथ वार्तालाप भी करती रही।

जब वह सुन्दर अर्दली अन्दर आया तो उसने आज्ञा दी—फ़िलिप, पर्दा डाल दे।

"नहीं, आप चाहे जो कुछ कहें, उसमें कुछ न कुछ रहस्यवाद है अवश्य; रहस्यवाद के बिना कविता हो ही नहीं सकती।" और साथ ही साथ प्रिन्सेज़ अपनी एक काली क्रुद्ध आँख से अर्दली की गति-विधि देखती रही।

उसने अर्दली की गति-विधि को उसी प्रकार देखते-देखते खिन्न मुस्कराहट के साथ कहना जारी रक्खा—"कविता के बिना रहस्य-वाद भ्रान्तिवाद है; बिना रहस्यवाद के कविता गद्य है। अरे फिलिप, यह पर्दा नहीं, वह, बड़ी खिडकी वाला।" उसने पीड़ित स्वर में कहा। सोफिया वेसलीटना को इन शब्दों को कहने का प्रयास करने के लिए अपने आप पर करुणा आ रही थी; और उसने अपने भावों को सान्त्वना देने के लिए अपनी हीरों से ढकी अँगुलियों से सुगन्धित सिगरेट उठा कर ओठों से लगाया और पीना शुरू कर दिया।

चौड़े सीने वाले, बलिष्ट, सुन्दर फिलिप ने, मानो क्षमा-प्रार्थना करते हुए अभिवादन किया; और अपनी मांसल पिण्डली वाली मज़बूत टाँगो से कालीन पर दबे पाँव बड़ी खिडकी की ओर बढ़ कर प्रिन्सेज़ की ओर देखते हुए, जिससे उसके चेहरे पर कहीं कोई

रश्मि न आ पड़े, पर्दा ठीक करने लगा। पर वह फिर प्रिन्सेज़ को सन्तुष्ट न कर सका और फिर उसे रहस्यवाद विषयक वार्तालाप में व्याघात उत्पन्न करके धर्म पर बलिदान होने वाले व्यक्ति के स्वर मे उस भूखे फ़िलिप को, जो उसे इस निर्दयता के साथ व्यथित कर रहा था, हिदायत देनी पड़ी। क्षण भर के लिए फ़िलिप के नेत्र चमक उठे।

निखल्यूडोव सारे दृश्य को देख रहा था, उसने कल्पना की कि फिलिप मन ही मन कहता होगा—"तुझे शैतान उठा कर ले जाय! तू क्या चाहती है!" पर बलिष्ट सुन्दर फिलिप ने तत्काल अपने असन्तोष को छिपा डाला और वह शान्त भाव से भ्रान्त, कृत्रिम और दुर्बल सोफ़िया वेसलीटना का आदेश पूरा करता रहा।

कोलोसोव ने आरामकुर्सी में लुढ़कते हुए और उदास आँखों से प्रिन्सेज़ की ओर देखते हुए कहा—निस्सन्देह, डार्विन की शिक्षा में बहुत-कुछ तथ्य है। पर वह सीमा से बहुत आगे बढ़ गया है।

निखल्यूडोव के मौनावलम्बन से प्रिन्सेज़ चिन्तित सी हो रही थी। अन्त में उसने उसकी ओर घूम कर पूछा—और तुम? तुम वंश-परम्परा में विश्वास रखते हो?

निखल्यूडोव ने कहा—"वंश-परम्परा में? नहीं, मैं विश्वास नहीं रखता।" इस समय उसके कल्पना-क्षेत्र में न जाने क्यों अनेकानेक मूर्तियाँ उदित हो रही थीं। वह इस समय बलिष्ट और सुन्दर फ़िलिप के साथ ही साथ एक मूर्तिकार के मॉडल के लिए

तरबूज़ जैसे पेट, चँदुले सिर और मासहीन बाँहों वाले कोलो-सोव की नग्न आकृति रखता प्रतीत हुआ। इसी ढङ्ग से उसके कल्पना-नेत्रों के आगे सोफ़िया वेसलीटना के वे नग्न अङ्ग-प्रत्यङ्ग आ खड़े हुए जो इस समय रेशम और मख़मल से ढके हुए थे, पर यह काल्पनिक चित्र नितान्त वीभत्स था और उसने उसे निकाल बाहर करने की चेष्टा की।

प्रिन्सेज़ सोफिया वेसलीटना ने उसे अपने नेत्रों से सिर से पैर तक ध्यानपूर्वक देखा।

उसने कहा—और हाँ, तुम भूल गए, मिसी तुम्हारी बाट देख रही है। जाकर उसे खोजो। वह तुम्हें ग्रीग प्रणीत सुन्दर सा गाना सुनाना चाहती है; बड़ा ही रोचक है।

निखल्यूडोव उठते हुए और प्रिन्सेज़ सोफिया वेसलीटना का अँगूठियों से ढका हुआ अस्थिचर्मविशिष्ट सफ़ेद हाथ दबाते हुए मन ही मन कहने लगा—वह तो भला गाना सुनाना क्या चाहती होगी, यह स्त्री योंही किसी न किसी कारण से झूठ बोल रही है।

ड्रॉइङ्ग रूम में उसकी भेंट कैथेरीन ऐलेक्सीटना से हुई, जिसने उसे देखते ही यथास्वभाव फ्रेञ्च में बोलना आरम्भ कर दिया—आपको जूरी का काम बड़ा उदास कर देता है।

निखल्यूडोव ने उत्तर दिया—जी हाँ, क्षमा करिए, आज मेरी तबीयत ठीक नहीं है और अपनी उपस्थिति से दूसरों को उदास करने का मुझे कोई अधिकार नहीं है।

"क्यों, आपका जी क्यों अच्छा नहीं है?"

निखल्यूडोव ने अपने टोप के लिए चारों ओर निगाह दौड़ाते हुए कहा—क्षमा करिए, इसका कारण न बता सकूँगा।

"क्या आप भूल गए कि आप कहा करते थे कि हमें सदा सत्य बोलना चाहिए? और आप हम सबको कैसे-कैसे निष्ठुर सत्य सुनाया करते थे! अब आप क्यों नहीं बताना चाहते? क्यों मिसी, तुम्हें याद है न?"—उसने मिसी से कहा, जो इसी क्षण कमरे में आई थी।

निखल्यूडोव ने गम्भीरतापूर्वक कहा—तब हम खिलवाड़ कर रहे थे। खेल-खेल में सच बात कह देना आसान है, पर वास्तविकता में हम इतने बुरे निकलते हैं कि . मेरे कहने का मतलब है कि मैं इतना बुरा हूँ कि कम से कम मैं सच बात नहीं बता सकता।

"आप अपने वाक्य का संशोधन क्यों करते हैं?—बता न दीजिए कि हम इतने बुरे क्यों हैं?"—कैथेरीन ऐलेक्सीव्ना ने शब्दों के साथ क्रीड़ा करते हुए और निखल्यूडोव की गम्भीरता की ओर जान-बूझ कर ध्यान न देते हुए कहा।

मिसी ने कहा—उदास रहने से अधिक बुरी बात और क्या हो सकती है? मैं कभी उदास नहीं रहती और इसलिए मैं हर-दम खिली रहती हूँ। तो चलो न? हम तुम्हारी उदासी दूर करने की चेष्टा करेंगी।

निखल्यूडोव को एक ऐसे घोड़े के समान अनुभूति हो रही थी जिसे मुँह में लगाम लेने को तैयार करने के लिए चुमकारा-पुचकारा जा रहा हो, और आज वह लगाम लेने को और सारे दिनों की अपेक्षा तैयार न था।

उसने क्षमा-प्रार्थना की, कहा कि उसे घर पहुँचना ज़रूरी है, और बिदा माँगी। मिसी ने उसका हाथ अपने हाथ में अधिक देर तक पकड़े रक्खा।

वह बोली—यह मत भूल जाओ कि जो बात तुम्हारे लिए आवश्यक है, वही तुम्हारे हितैषियों के लिए भी आवश्यक है। तो कल आओगे न?

निखल्यूडोव ने कहा—"शायद नहीं।" और—यह निश्चित किए बिना कि अपने आप से या मिसी की बात से—वह लज्जित हो गया और वहाँ से चला गया।

कैथेरीन ऐलेक्सीटना ने कहा—बात क्या है? मुझे तो बड़ा कौतूहल हो गया। मुझे सारी बात का पता लगाना चाहिए। जहाँ तक मेरा ध्यान जाता है, कोई आहत आत्म-प्रेम व्यापार दिखाई देता है, हमारा प्यारा मीटिया, आज तो वह बेतरह चिढ़ा हुआ था।

मिसी कहने वाली थी—"नहीं, कोई दूषित व्यापार।" पर वह रुक गई और नीचे की ओर निगाह करके ऐसे चेहरे के साथ देखा, जिससे सारी ज्योति चली गई थी और जो उस चेहरे से बिलकुल भिन्न था, जिसके साथ उसने निखल्यूडोव की ओर देखा था। वह कैथेरीन ऐलेक्सीटना तक से इस प्रकार का श्लेष-व्यंग्य न कर सकी और केवल इतना ही कह कर सन्तुष्ट हो गई—"हम सबको अच्छे-बुरे दिन देखने पड़ते हैं।"

मिसी ने मन ही मन सोचा—क्या यह भी धोखा दे जायँगे? इतना सब होने के बाद भी यदि यह सम्बन्ध त्याग देंगे तो बड़ा बुरा करेंगे।

यदि मिसी मे समझाने को कहा जाता कि 'इतना सब होने पर भी' से उसका क्या अभिप्राय है, तो शायद वह कोई निश्चित उत्तर न दे सकती, पर उसका हृदय जानता ही था कि निखल्यूडोव ने न केवल उसे आशा ही दिला दी थी, बल्कि लगभग वचन तक दे दिया था। वैसे यह बात किसी प्रकार के निर्णयात्मक शब्दों द्वारा प्रकट न की गई थी, केवल दृष्टि-विनिमय था, मुस्कराहट थी और सङ्केत-निर्देश थे ; पर तो भी वह उसे अपना समझने लगी थी और उसे छोड़ना उसके लिए बड़ा कष्टकर होता।

खल्यूडोव ने परिचित सड़कों पर से होते हुए अपने मकान को जाते-जाते बार-बार कहा—"लज्जाजनक और गर्हित, गर्हित और लज्जाजनक!" मिसी के साथ वार्तालाप करते समय उसे जिस खिन्नता की अनुभूति हो रही थी, वह अभी तक बदस्तूर थी। वह समझता था कि बाह्य-रूप से देख कर यह नहीं कहा जा सकता कि उसका (निखल्यूडोव का) आचरण ठीक नहीं है, क्योंकि उसने कभी कोई ऐसी बात नहीं कही जो उसके लिए बाँधने वाली समझी जाती, उसने कभी विवाह प्रस्ताव नहीं किया, पर साथ ही साथ वह जानता था कि वास्तव में वह उसके साथ बँध गया है, उसने उसका होने का वचन दे दिया है, और तिस पर भी आज उसका रोम-रोम पुकार कर कह रहा था कि वह उसके साथ विवाह न कर सकेगा।

"लज्जाजनक और गर्हित, गर्हित और लज्जाजनक!"—उसने दुहराया, और न केवल अपने और मिसी के पारस्परिक सम्बन्ध के

ही विषय में, वल्कि सारी चीज़ों के विषय में। उसने अपने भवन के पोर्च में दाखिल होते हुए बड़बड़ा कर कहा—"सब कुछ गर्हित और लज्जाजनक है!" उसका नौकर कोर्नी जब उसके पीछे-पीछे भोजनशाला में पहुँचा, जहाँ मेज़ पर तश्तरी ढकी तैयार रक्खी थी, तो उससे निखल्यूडोव ने कहा—"मैं भोजन न करूँगा, तुम जाओ।"

कोर्नी ने कहा—"बहुत अच्छा।" पर वह वहाँ से गया नहीं और मेज पर से भोजन उठाने लगा। निखल्यूडोव ने उसकी ओर कुत्सापूर्ण नेत्रों से देखा। वह एकान्त चाहता था, और उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि उसकी अवज्ञा करने के लिए सब उसे दिक़ कर रहे हैं। जब भोजन की सामग्री लेकर कोर्नी चला गया तो निख-ल्यूडोव चायदान के पास पहुँच कर अपने हाथ से चाय बनाने की तैयारी करने लगा। पर इसी समय उसके कानों में अग्रुफ़ेना मिखायलोटना की पग-ध्वनि आई और वह उसकी दृष्टि से बचने के लिए झटपट ड्रॉइङ्ग-रूम में चला गया और उसने वहाँ का दरवाज़ा बन्द कर लिया। अब से तीन महीने पहले उसकी माँ की मृत्यु इसी कमरे में हुई थी। कमरे में प्रवेश करने पर उसकी निगाह अपने माता-पिता के चित्रों पर पड़ी, जिन्हें दो लैम्पों का प्रकाश आलो-कित कर रहा था। उसे स्मरण आया कि अपनी माँ के साथ उसका सम्पर्क किस प्रकार का था और उसे वह सम्पर्क भी गर्हित और अस्वाभाविक प्रतीत हुआ। उसे याद आया कि किस प्रकार उसकी रुग्णावस्था के अन्तिम काल में वह उसकी मृत्यु की कामना करता था। वह स्वगत कहा करता था कि उसकी मृत्यु स्वयं

रोगिणी के ही मङ्गल के लिए है, जिससे इन यन्त्रणाओं से उसे छुटकारा मिल जाय, पर वास्तव में वह उसकी मृत्यु की कामना केवल इसलिए करता था कि वह उसकी यन्त्रणा के दृश्य से छुटकारा पाना चाहता था।

वह अपनी माता की कोई मृदुल स्मृति जाग्रत करने के उद्देश से चित्र के पास पहुँचा और उसकी ओर एकटक देखने लगा। यह चित्र एक प्रसिद्ध चित्रकार ने पाँच हजार रूबल पर बनाया था। उसे किञ्चित लम्बी काली मख़मली पोशाक में चित्रित किया गया था, और यह स्पष्ट था कि चित्रकार ने उसके वक्षःस्थल के उभार को, उनके बीच के स्थान को, और कन्धों और गर्दन के अनुपम लावण्य को विशेष सतर्कता के साथ बनाया था। निख-ल्यूडोव को यह सब बड़ा क्षोभकारी और गर्हित प्रतीत हुआ। अपनी माता के प्रदर्शन को अर्द्धनग्न लावण्यमयी स्त्री के रूप में चित्रित देख कर उसका हृदय बेतरह क्षुब्ध हो उठा। यह अब से तीन महीने पहले और भी गर्हित हो उठा था; क्योंकि इसी कमरे में यही स्त्री मृत्यु-शय्या पर पड़ी-पड़ी सूख कर ठठरी जैसी हो गई थी और उसके शरीर से इतनी तीव्र दुर्गन्धि निकलती थी कि उसे किसी प्रकार न दबाया जा सकता था। निखल्यूडोव को ऐसा प्रतीत हुआ मानो वह उस दुर्गन्ध को इस समय भी सूँघ रहा हो। उसे याद आया कि किस प्रकार अपनी मृत्यु से कुछ दिन पहले उसकी माँ ने अपने अस्थिचर्मावशिष्ट हाथ की विवर्ण अँगुलियों में उसका हाथ लेकर उसकेनेत्रों में देखते हुए कहा था—

"मीटिया, यदि मैंने ऐसा कोई काम न किया हो, जो मुझे करना

चाहिए था, तो मुझे बुरा-भला मत कहना।" और किस प्रकार उसकी कष्ट से पीली पड़ी आँखों में आँसू भर आए थे।

उसने उस चित्र की सङ्गमरमर जैसे सुन्दर सुडौल कन्धों और बाँहों वाली, अर्द्धनग्न स्त्री की ओर एक बार फिर देखा और स्वगत कहा—"आह! कितना गर्हित है!" चित्र के अर्द्धनग्न वक्षःस्थल को देख कर उसे एक और अर्द्धनग्न स्त्री-वक्षःस्थल की याद आ गई, जो उसने कुछ दिनों पहले देखा था। यह मिसी थी, जिसने उसे अपने कमरे में एक बहाने से बुला कर, अपनी बाल्कड्रेस से ढके हुए नग्न शरीर के दर्शन कराए थे। उसने मिसी के सुडौल कन्धों और बाँहों का स्मरण किया और उसका हृदय ग्लानि से भर गया। और उसका वह भद्दा, पशुवत् पिता, जिसका अतीत अन्धकारमय है और जिसने न जाने कितनी निष्ठुरताएँ की होंगी! और उसकी वह वाक्पटु माता, जिसके सन्दिग्ध आचरण के सम्बन्ध में भाँति-भाँति की किम्वदन्तियाँ प्रचलित हैं। यह सब उसे नितान्त गर्हित लगा और साथ ही साथ लज्जाजनक भी। "लज्जाजनक और गर्हित, गर्हित और लज्जाजनक!"

उसने मन ही मन सोचा—"नहीं-नहीं, मुझे स्वतन्त्रता चाहिए, स्वतन्त्रता। मैं कोरश्चेगिन परिवार से, मेरी वेसलीटना से और उत्तराधिकार से, और इन सारे झगड़े-झञ्झटों से स्वतन्त्र होना चाहता हूँ। आह, जो कहीं मै स्वच्छन्दतापूर्वक साँस ले सकता! विदेश जाता, रोम जाता, और अपने चित्र-कार्य में लगता!" उसे चित्रकला-विषयक अपनी योग्यता के सम्बन्ध में अपने सन्देह की बात याद आई—"ख़ैर, और कुछ न सही, स्वच्छन्दतापूर्वक साँस

लेने के ही लिए सही। पहले कुस्तुनतुनिया और फिर रोम। बस ज़रा यह जूरी का झगड़ा समाप्त कर दूँ और ऐडवोकेट के साथ मामला निबटा लूँ।"

इसी समय सहसा उसके मस्तिष्क में उन काले नेत्रों और तिर्छी चितवन वाली स्त्री की प्रतिमा स्पष्ट रूप से अङ्कित हो गई और उसे याद आया कि किस प्रकार क़ैदियों का कथन समाप्त हो जाने के बाद वह रोने-चिल्लाने लगी थी। उसने झटपट राख-दानी में सिगरेट कुचल दिया, दूसरा जलाया और कमरे मे चहल-क़दमी शुरू कर दी। उसने उसके साथ जो समय व्यतीत किया था, उसके विभिन्न चित्र एक-एक करके उसके स्मृति-पटल पर अङ्कित होने लगे। उसे दोनों के अन्तिम मिलन की याद आई, और याद आया कि किस प्रकार उस पर पाशविक प्रवृत्ति का भूत सवार हो गया था, और किस प्रकार उसकी तुष्टि के बाद उसे हताश होना पड़ा था। उसे सफेद पोशाक, नीला शिरोवस्त्र और गिर्जे की प्रार्थना याद आई। "मै उसे प्रेम करता था, सचमुच प्रेम करता था, और उस प्रार्थना वाली रात को मैंने उसे पवित्र, शुद्ध प्रेम के साथ प्यार किया था। मैं उसे इससे पहले भी प्यार करता था; हाँ, मैं उसे उस समय भी प्यार करता था, जब अपनी बुआओं के पास जाकर पहली बार ठहरा था और अपना निबन्ध तैयार कर रहा था।" उसे स्मरण आया कि उस समय वह कैसा था। उस ताज़गी, उस युवावस्था और उस जीवन के उभार की निश्वास ने उसे आलोड़ित कर दिया और वह अत्यन्त खिन्न हो उठा।

उस समय के निखल्यूदोव में और इस समय के निख़ल्यूदोव

में महान अन्तर था; यदि अधिक नहीं तो इतना अवश्य जितना गिर्जे की रात वाली कट्टूशा में और उस वेश्या मे, जिसने व्यापारी के साथ प्रेम-व्यापार किया था और जिसे उस दिन उन सबने मिल कर दण्ड दिया था। उस समय वह स्वच्छन्द और निर्भीक था, और उसके आगे अनेकानेक सम्भावित उज्ज्वल क्षेत्र खुले हुए थे; अब वह अपने आपको उस मूर्खतापूर्ण, सारहीन, नीरस, उच्छृङ्खल जीवन के जाल में बँधा हुआ पाता था, जिससे निकल पाने का—उपाय करने पर भी (और जो वह कभी न करता था)—उसे कोई उपाय दिखाई न देता था। उसे याद आया कि किस प्रकार वह किसी समय अपनी स्पष्टवादिता पर गर्व करता था, किस प्रकार उसने सदैव सत्य भाषण करने का नियम बना लिया था और किस प्रकार वह उस नियम का पालन किया करता था; और अब वह असत्य के पङ्क में कितना गहरा धँस गया है—उस असत्य-पङ्क में, जिसे उसके इष्ट-मित्र सब सत्य समझते हैं। और जहाँ तक उसकी बुद्धि काम करती है, उसे इस पङ्क से निकलने का कोई उपाय दिखाई नहीं देता था। वह दलदल में फँस गया है, उसका अभ्यस्त हो गया है, और उसी में क्रीडा करता रहता है।

वह मेरी वेसलीटना और उसके पति से अपना सम्बन्ध किस तरह इस प्रकार विच्छेद करे जिससे वह उनकी और उनकी सन्तान की निगाह से निगाह मिला सके? मिसी के जाल से किस तरह निकले? अपने स्वीकृत सिद्धान्त के—जिसके अनुसार भूस्वामित्व अवैध है—प्रकृत विरोध का किस प्रकार अन्त करे और अपनी माता द्वारा प्राप्त हुए उत्तराधिकार का किस प्रकार परित्याग करे? कट्टूशा

के सम्बन्ध में उसने जो पाप किया है, उसका प्रायश्चित्त किस प्रक
करे ? कम से कम यह अन्तिम समस्या इस तरह नहीं छोड़ी
सकती। वह ऐसी स्त्री को, जिसे उसने किसी समय प्यार किया
इस तरह परित्याग नहीं कर सकता, और उसे साइबेरिया से बच
का प्रयत्न करने के लिए किसी ऐडवोकेट को कुछ देने मात्र
सन्तुष्ट नहीं हो सकता। वह सपरिश्रम दण्ड की अधिकारिणी
तो नहीं थी। पाप का प्रायश्चित्त रुपए से किया जाय ? जिस सम
उसने कट्टशा को रुपया दिया था, उस समय क्या नहीं सोचा
कि वह पाप का प्रायश्चित्त कर रहा है ?

और उसे स्पष्ट रूप से उस अवसर की याद आई, जब वह उ
रास्ते में रोक कर उसके ऐप्रन के खोल में नोट सरका कर वह
से भाग गया था। उसने जिस ग्लानि और रोमाञ्च की अनुभू
उस अवसर पर की थी, उसी की इस समय करते हुए कहा—
"ओह, वह रुपया ! हे भगवान ! हे भगवान ! कितना गर्हित !"
वह ज़ोर से चिल्ला उठा, जिस प्रकार उस अवसर पर चिल्ला उठ
था। "कोई लम्पट, कोई धूर्त ही ऐसा काम कर सकता था!" उसने
ज़ोर से कहा। "पर क्या सचमुच ?"—वह निश्चेष्ट भाव से खड़
हो गया—"क्या सचमुच मैं लम्पट हूँ ?—अगर मैं नहीं हूँ तो
और कौन है ?" उसने स्वगत उत्तर दिया। "और अकेली यही कर
तूत थोड़े ही है !" उसने अपने आपको अपराधी सिद्ध करते हुए
कहा—क्या मेरी वेसलीटना और उसके पति के प्रति मेरा आचरण
गर्हित और क्षुद्रतापूर्ण नहीं है ? और धन के प्रति मेरा आचरण ?
क्यों, यह आचरण कैसा है—सम्पत्ति का उपभोग इस बहाने से

किया जाना कि वह मुझे अपनी माँ के द्वारा प्राप्त हुई है, और साथ ही साथ उसे अवैध समझते रहना? और मेरा यह अकर्मण्य, तिरस्करणीय जीवन? और सबसे अधिक कटूशा के प्रति मेरा आचरण? दुरात्मा और धूर्त? वे सब मेरे सम्बन्ध में चाहे जो ख्याल करते हों, मैं उनकी आँखों में धूल झोंक सका होऊँगा, अपनी आँखों में न झोंक सकूँगा।

और सहसा उसकी समझ में आ गया कि वह जिस घृणा की अनुभूति आज सबके—प्रिन्स सोफिया वेसलीटना, कोर्नी, और मिसी के—प्रति कर रहा था वह वास्तव में आत्म-घृणा थी। और—कैसी विलक्षण बात थी!—अपनी क्षुद्रता की इस स्वीकारोक्ति में कुछ ऐसी बात थी, जो व्यथाकारी होते हुए भी हर्षदायिनी और शान्ति प्रदान करने वाली थी।

निखल्यूडोव के जीवन में 'आत्म-परिष्कार' कहलाने वाला व्यापार एक से अधिक वार घटित हो चुका था। आत्म-परिष्कार से उसका अभिप्राय उस मानसिक अवस्था से था, जो बहुत दिनों के लगातार शुद्ध जीवन के बाद, कार्यशीलता के पूर्ण अभाव के अनन्तर, आत्मा में एकत्र हुए कूडे-करकट को, जिससे वास्तविक जीवन का अन्त सा हो जाता है, निकाल कर बाहर फेंक देने के बाद प्राप्त होती है। इस प्रकार की जाग्रति के बाद निखल्यूडोव अपने लिए अनेक विधि-विधानों का निर्माण अवश्य करता और निश्चय करता कि वह आजीवन उन्हीं के अनुरूप आचरण करेगा। वह आत्म-कथा लिखता और आशा करता कि बस, इस प्रकार के जीवन में अब किसी प्रकार का अन्तर न होगा। वह इसे अङ्गरेज़ी में

'नया पृष्ठ पलटना' कहता। पर प्रत्येक बार सांसारिक प्रलोभन उसे फिर अपने जाल में फाँस लेते और वह फिर गिरता—और अक्सर पहले से भी नीचा।

इस प्रकार उसने आत्मोत्थान और आत्म-परिष्कार व्यापार कई बार किया था। पहली बार यह उस समय घटित हुआ था, जब वह सर्व-प्रथम गर्मियों में अपनी बुआओं के पास जाकर ठहरा था; और यह जाग्रति अत्यन्त प्रबल और हर्षातिरेकपूर्ण थी और इसका प्रभाव कुछ दिनों तक स्थायी रहा। दूसरी जाग्रति उस समय हुई जब उसने सिविल सर्विस छोड़ कर सैनिक क्षेत्र में प्रवेश किया और युद्ध के द्वारा अपने देश के लिए प्राण न्यौछावर करने का सङ्कल्प किया। पर यह हर्षातिरेक विगलन-व्यापार शीघ्र ही समाप्त हो गया। इसके बाद वह जाग्रति आई, जिससे प्रेरित होकर वह सैनिक जीवन छोड़ कर कला की सेवा करने के लिए विदेश चला गया।

उस समय के बाद से आत्म-परिष्कार किए बिना काफी समय व्यतीत हो गया था और फलतः आत्मा के निर्देशों और वर्तमान जीवन के रङ्ग-ढङ्ग में परस्पर घोर वैषम्य उत्पन्न हो गया था। उसके आन्तरिक और बाह्य जीवन में इतना वैषम्य पहले कभी न हुआ था। जब उसने देखा कि दोनों में कितना विशाल अन्तर है तो वह भय से चकित रह गया। खाई इतनी गहरी थी और अपवित्रता का सिलसिला इस हद तक पहुँच गया था कि उसे आत्म-परिष्कार करने की सम्भावना तक में सन्देह होने लगा। प्रलोभनकारिणी माया भीतर से आवाज़ देती—"क्या तुमने

पूर्णता प्राप्त करने और अच्छे होने की चेष्टा पहले नहीं की? और क्या उस सबका कोई फल निकला? अब और प्रयास करने में क्या रक्खा है? क्या तुम्हीं अकेले आदमी हो? तुम्हारे जैसे न मालूम कितने और होंगे—यही जीवन का चक्र है।" पर वह स्वच्छन्द आध्यात्मिक जीव—केवल शक्तिमान और केवल अमर जीव—अब उसके अन्तराल में जाग्रत हो उठा था और अब उसमें आस्था रखने के सिवा उसके लिए कोई गति न थी। यद्यपि वह जो कुछ था और जो कुछ होना चाहता था, उन दोनों मे महान् अन्तर था, फिर भी उस नवीन जाग्रत आध्यात्मिक जीव को कुछ अगम्य अतीत न होता था।

उसने दृढ़ स्वर में ज़ोर से कहा—कुछ भी हो, मैं इस असत्यता के जाल को तोड़ कर फेंक दूँगा और सबको सच-सच बता दूँगा तथा सत्य ही का आचरण करूँगा। मैं मिसी से सच्ची बात कह दूँगा; उसे बता दूँगा कि मै भ्रष्ट जीव हूँ और उससे विवाह नहीं कर सकता, और उसे मैंने व्यर्थ ही इतना चञ्चल कर दिया था। मैं मेरी वेसलीटना से कह दूँगा—पर उससे क्या कहना है?—उसके पति से कहूँगा, कहूँगा कि मैं लम्पट हूँ और मैं उसे अब तक धोखा देता आ रहा था। मै अपनी सम्पति को इस ढङ्ग से लगा दूँगा कि मुझे सत्य की प्राप्ति हो सके। मै उसे—कट्यूशा को—बता दूँगा कि मै धूर्त हूँ और मैंने उसके विरुद्ध पापाचरण किया है, और मै उसका विपत्ति-भार हलका करने के लिए सब कुछ करने को तैयार हूँ। हाँ, मैं उससे मिलूँगा और उससे क्षमा-याचना करूँगा। ....।

"हाँ, मैं उससे क्षमा-प्रार्थना करूँगा—ठीक जिस तरह बालक करते हैं . . . .।" वह रुका—"और यदि आवश्यकता पड़ी तो उससे विवाह तक कर लूँगा।" वह फिर रुका, और अपने वक्षःस्थल के आगे अपने बाल्यकाल की भाँति हाथ जोड़कर और ऊपर को नेत्र उठा कर किसी अदृश्य पुरुष को सम्बोधित करके बोला—"भगवन्, मेरी सहायता करो, मुझे ज्ञान दो, आओ, मेरी आत्मा में वास करो और मेरे इन सारे कलङ्कों को धोकर मुझे पवित्र कर दो।"

और इस प्रकार वह भगवान से सहायता करने की, अपनी आत्मा में वास करने और उसका परिष्कार करने की, प्रार्थना करता रहा; और वह जिस बात की प्रार्थना कर रहा था वह उसके अन्तराल में घटित हो भी चुकी थी, उसकी आत्मा में वास करने वाले भगवान ने आँखें खोल दी थीं और वह स्वयं भी इस ओर से सचेत था। उसने भगवान के साथ अपने तादात्म्य की अनुभूति की और फलतः न केवल अपने आपको स्वच्छन्द और जीवनोल्लास से परिपूर्ण पाया, बल्कि अपने भीतर न्याय-शक्ति की भी अनुभूति की। कोई आदमी जो कुछ सर्वोत्तम कार्य कर सकता है, उसने वह सब करने में अपने आपको समर्थ समझा। जिस समय वह यह स्वगत कह रहा था तो उसके नेत्रों में आँसू भर आए; अच्छे आँसुओं से और बुरे आँसुओं से; अच्छे आँसुओं से इसलिए कि वे उसके आध्यात्मिक जीव की जागृति पर, जो इधर कई साल से घोर निद्रा में अचेत पड़ा था, वे हर्षोल्लास के आँसू थे; बुरे आँसुओं से इसलिए कि वे अपने अच्छेपन पर के करुणा के आँसू थे।

उसे गर्मी लगने लगी और खिड़की के पास जाकर उसने उसका दरवाज़ा खोला। खिडकी बाग में पडती थी। रात्रि शान्त, ताज़ी और प्रकाशोज्ज्वल थी; कोई चीज़ गडगडाती हुई निकल गई और इसके बाद फिर सर्वत्र शान्ति छा गई। लम्बे-चौडे वृक्ष की छाया ठीक खिडकी के सामने फैली हुई थी, और स्वच्छ पृथ्वी पर उसकी नङ्गी शाखाएँ स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थीं। बाँई ओर अस्तबल की छत चाँदनी में श्वेत दिखाई दे रही थी, सामने की ओर वृक्षों की उलझी हुई शाखाओं में से होकर बाग की दीवार दृष्टिगोचर हो रही थी। निखल्यूडोव छत की ओर, प्रकाशोज्ज्वल उद्यान की ओर, और उस विशाल वृक्ष की छाया की ओर देखता हुआ ताज़ी, स्फूर्तिकारी पवन के घूंट भरने लगा।

"आह,! कैसा हर्षदायक है, कैसा हर्षदायक है, हे भगवन्, कैसा हर्षदायक है!"—उसने अपने अन्तराल के उद्वेलन व्यापार की ओर निर्देश करते हुए कहा।
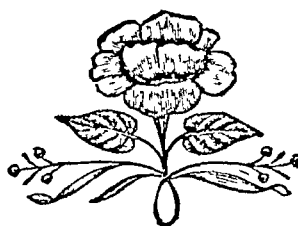
सलोवा जेल में छः बजे से पहले न पहुँच सकी; वह बेतरह थक गई थी और उसके पैरों में छाले पड़ गए थे। उसे पैदल चलने का अभ्यास न था, और उस दिन उसे दस मील पथरीली सड़क पर तय करने पड़े थे। वह अनपेक्षित कठोर दण्ड से बिलकुल कुचल गई थी और भूख के मारे उसका बुरा हाल था। मामला आरम्भ होने के बाद कुछ देर के लिए अदालत के उठ जाने पर उसने सिपाहियों को रोटी और उबले हुए अण्डे खाते देखा था और तब उसके मुँह में भी पानी भर आया था और उसे बोध हुआ था कि वह भूखी है, पर उसने उनसे याचना करना अपनी शान के खिलाफ़ समझा। तीन घण्टे बीतने पर कुछ खाने की इच्छा जाती रही थी, और उसे केवल दुर्बलता होने लगी थी। इसी समय उसे वह अनपेक्षित दण्ड मिला। आरम्भ में उसने समझा कि उसके समझने में गलती हुई है; वह कल्पना ही न कर सकी

कि वह साइबेरिया में जाकर बन्दी-जीवन व्यतीत कर सकेगी, और उसे अपने कानों पर विश्वास न हुआ। पर जब उसने जजों और जूरी के शान्त और व्यवसायात्मक चेहरे देखे—मानो इस प्रकार के दण्ड की बातें उनके लिए बिल्कुल स्वाभाविक और साधारण सी हैं—तो वह क्रुद्ध हो उठी और उसने अदालत में ज़ोर से कहा कि वह निर्दोष है। जब उसने देखा कि उसके चीत्कार को भी इस प्रकार ग्रहण किया गया मानो वह स्वाभाविक और साधारण सी बात हो और उससे वस्तु-स्थिति में किसी प्रकार का परिवर्तन न हो सकता हो, तो वह हताश विह्वल भाव से फूट-फूट कर रो पड़ी और समझ गई कि उसे इस निर्मम और विलक्षण अत्याचार के आगे सिर झुकाने को बाध्य होना पड़ेगा। उसे सबसे अधिक आश्चर्यजनक बात यह दिखाई दी कि उसे युवा पुरुषों ने—या कम से कम वृद्ध पुरुषों ने नहीं, उन्हीं पुरुषों ने जो उसकी ओर सदैव से इतनी मुग्ध दृष्टि से देखते आए थे, और उनमें से एक स्वयम् पब्लिक प्रॉसीक्यूटर था, जिसकी मनोवृत्ति उस समय बिल्कुल दूसरे ही ढङ्ग की थी—दण्ड दिया है। जब वह मुक़दमा आरम्भ होने से पहले और अदालत के अवकाश ग्रहण करने के अवसरों पर कैदियों के कमरे में बैठी थी तो यही पुरुष उस ओर से इस प्रकार बार-बार निकलते, मानो उन्हें वहाँ कोई आवश्यक कार्य हो। वे उस कमरे में घुसते और उसकी ओर मुग्ध दृष्टि से देखते। और फिर इन्हीं युवा पुरुषों ने उसे बिना किसी ज्ञात कारण के सपरिश्रम दण्ड दे दिया, यद्यपि वह अपने ऊपर लगाए गए अभियोग से पूर्णतया निर्दोष थी।

पहले वह रोई-चिल्लाई, पर फिर वह अवसन्न सी होकर कैदियों के कमरे में चुपचाप बैठी हुई वहाँ से ले जाए जाने की प्रतीक्षा करने लगी। इस समय वह केवल एक बात चाहती थी—सिगरेट पीना। उसकी यही अवस्था थी। इसी समय बचकोवा और सायमन भी उस कमरे में लाए गए। बचकोवा उसे देखते ही बुरा-भला कहने लगी और उसने उसे 'कैदी' के नाम से पुकारा।

"क्यों? क्या मिला? अपनी सफाई देने चली थी? छोकरी कुतिया कहीं की! बस, तू इसी के योग्य थी, और यही तुझे मिल गया। वहाँ साइबेरिया में जाकर यह तड़क-भड़क न रहेगी!"

मसलोवा अपनी आस्तीनों में हाथ डाले, सिर झुकाए, गन्दे फ़र्श की ओर एकटक देखती हुई निश्चेष्ट भाव से चुपचाप बैठी रही। उसने केवल इतना ही कहा—"मैं तुमसे कुछ नहीं कहती, तुम भी मुझसे कुछ मत कहो.... मैं तुमसे कुछ नहीं कहती, तुम भी मुझसे कुछ मत कहो; मैं तुमसे कुछ कह रही हूँ?" उसने कई बार दुहराया और इसके बाद वह चुप हो गई। जब बचकोवा और कार्टिनकिन कमरे से ले जाए गए और उसके पास एक प्यादा तीन रूबल लेकर आया तो उसका मुख कुछ खिल उठा।

उसने पूछा—"मसलोवा तुम्हारा ही नाम है? यह लो, एक महिला ने भेजे हैं।" उसने उसे रूबल देते हुए कहा।

"महिला ने—कौन सी महिला?"

"तुम इसे पकड़ो तो, मैं तुमसे बातचीत नहीं करना चाहता।"

यह रुपया वेश्यालय की मालकिन किटोवा ने भिजवाया था। वह अदालत से जाते-जाते अर्दली की ओर घूम कर पूछने लगी

कि वह मसलोवा को कुछ रुपया दे सकती है या नहीं ? अर्दली ने कहा हाँ दे सकती है। अनुमति प्राप्त करने पर उसने अपने दस्ताने के तीन बटन खोल कर अपना मांसल सफेद हाथ निकाला और उससे अपनी काली रेशमी पोशाक के पर्त में से बढ़िया सा बटुआ निकाला और तीन रुबल के नोट निकाल कर अर्दली को पकड़ाए। अर्दली ने एक प्यादे को बुलवाया और दात्री की उपस्थिति में उसे वह रुपया सौंप दिया।

कैरोलीन ऐल्वर्टीन किटीवा ने कहा—ठीक ठीक दे देना।

प्यादा किटीवा के इस अविश्वास से मन ही मन क्षुब्ध हुआ और इसीलिए उसने मसलोवा के साथ ऐसा शुष्क व्यवहार किया था।

मसलोवा रुपया पाकर बड़ी प्रसन्न हुई, क्योंकि अब वह अपना इच्छित पदार्थ प्राप्त कर सकती थी। "बस, अब मुझे कहीं से सिगरेट मिल जाता तो उसमें एक दम लगा लेती।"—उसने स्वगत कहा, और उसकी सारी आकांक्षाएँ अब सिगरेट पीने में केन्द्रित हो गईं। वह उसकी इतनी इच्छुक हो रही थी कि बरामदे के खुले दरवाज़े में से जब किसी तरह का धुआँ उड़ कर आता, वह उसे साँस द्वारा पीने की चेष्टा करती। पर उसे बहुत देर तक रुकना पड़ा। क्योंकि सेक्रेटरी कैदियों की बात बिल्कुल भूल गया था और एक ऐडवोकेट से सेन्सर द्वारा निषिद्ध लेख के विषय में ज़ोर शोर के साथ वाद-विवाद करने में तल्लीन हो गया था।

अन्त में पाँच बजे उसे जाने की अनुमति दी गई और उसे पिछले दरवाज़े से उसके सुबह के सिपाही ले चले। अभी वह

अदालत के प्रवेश-द्वार में ही थी कि उसने सिपाहियों को बीस कृपक दिए और उनसे कुछ रोटियाँ और कुछ सिगरेट लाने की प्रार्थना की। एक युवा सिपाही ने हँस कर कहा—"अच्छी बात है, लाए देता हूँ।" और सचमुच उसने रोटियाँ और सिगरेट ला दिए और बाकी पैसे ईमानदारी के साथ वापस कर दिए। पर उसे मार्ग में सिगरेट पीने की अनुमति नहीं दी गई और उसे अपनी अतृप्त लिप्सा के साथ जेल का मार्ग तय करना पड़ा। जब उसे जेल के दरवाज़े पर लाया गया तो उस समय सौ दण्डित क़ैदी, जिन्हें रेलगाड़ी से लाया गया था, भीतर भेजे जा रहे थे। क़ैदियों ने—जिनमें से दाढ़ी वाले, दाढ़ी-मूछ विहीन, वृद्ध, युवक, रूसी, विदेशी, सिर मुड़ाए और ज़ञ्जीर खटकाते हुए, सब तरह के आदमी थे—धूल, कोलाहल और पसीने की तीव्र गन्ध से बाहरी कमरा भर दिया था। मसलोवा के पास से निकलते हुए सारे क़ैदियों ने रुक कर उसकी ओर देखा और उनमें से कुछ रुक कर उसके पास आए और उससे अपना शरीर रगड़ते हुए आगे बढ़ गए।

एक बोला—देखो यह छोकरी! क्या बढ़िया माल है!

दूसरे ने उसकी ओर आँख मार कर कहा—अजी, हमारा भी सलाम ले लो।

उनमें से एक क़ैदी—गहरे रङ्ग का आदमी, जिसकी मूँछें थीं, सिर मुड़ा हुआ था और जो पैरों की बेड़ियों से खड़खड़ाता हुआ आगे बढ़ रहा था—उछला और मसलोवा से लिपट गया। मसलोवा ने उसे एक ओर को झोंक दिया।

"क्या अपने यार को भी भूल गई? बस, शाबाश, अब ज़्यादा

नख़रे मत करो"—उसने दाँत चमकाते हुए, उज्ज्वल नेत्रों के साथ कहा।

इन्सपेक्टर के सहकारी ने पीछे से आकर कहा—"हरामज़ादा कहीं का! तू कर क्या रहा है?" क़ैदी सहम कर पीछे हटा और उछल कर एक ओर खड़ा हो गया। सहकारी मसलोवा की ओर मुड़ा।

"तुम यहाँ कैसे खड़ी हो?"

मसलोवा कहने जा रही थी कि उसे अदालत से लाया गया है, पर वह इतनी थक गई थी कि बातचीत करने को उसका जी न चाहा।

एक सिपाही ने अपनी टोपी पर अँगुलियाँ छुआते हुए कहा—हम इसे अदालत से लाए हैं।

"अच्छी बात है, इसे चीफ वार्डर को सौंप दो। मैं यह तमाशा नहीं चाहता।"

"बहुत अच्छा।"

सहकारी ने आवाज़ दी—सोकोलोव, इसे ले जा!

चीफ वार्डर आया, मसलोवा के कन्धे को क्रुद्ध भाव से टटोला, और अपने सिर से उसे पीछे-पीछे आने का सङ्केत करके उसे स्त्रियों के वार्ड में ले चला। यहाँ उसकी तलाशी हुई और जब कोई निषिद्ध पदार्थ न पाया गया (उसने सिगरेट रोटियों में छिपा लिए थे) तो उसे उसी बारक में ले जाया गया, जिसमें वह सुबह तक थी।

स बारक में मसलोवा को क़ैद रखा गया था वह इक्कीस फ़ीट लम्बा और सोलह फ़ीट चौड़ा था ; उसमें दो खिड़कियाँ थीं और एक लम्बा सा टूटा हुआ चूल्हा था। कमरे का दो तिहाई स्थान चारपाइयों ने ले लिया था। इन चारपाइयों का बान पुराना था और ढीला पड़ गया था। द्वार के सामने एक मूर्ति लटकी हुई थी। बाईं ओर फ़र्श पर, काली सी जगह पर एक टब रक्खा हुआ था। निरीक्षण हो चुका था और स्त्रियों को रात भर के लिए बन्द कर दिया गया।

कमरे में पन्द्रह स्त्रियों को रखा गया था, जिनमें तीन बच्चे भी थे। अभी काफ़ी प्रकाश था। केवल दो स्त्रियाँ लेटी हुई थीं—एक क्षय-रोग-ग्रस्त स्त्री, जिसे चोरी के अभियोग में पकड़ा गया था और दूसरी बौरली सी स्त्री, जिसके पास पासपोर्ट न था और जो अपना समय अधिकतर सोकर बिताया करती थी। क्षय-रोग-ग्रस्त स्त्री सोई नहीं थी, वह आँखें खोले, अपने चोगे की गठरी बना कर उस पर सिर रक्खे लेटी थी और अपने गले में उठते हुए बलगम को रोके रहने की चेष्टा कर रही थी।

कुछ स्त्रियाँ—जिनमें से अधिकतर हॉलैण्ड के मोटे ख़ाकी बनियान के सिवा और कुछ न पहने थीं—खिड़की के पास खड़ी-खड़ी उसमें से झाँक कर बाहर सहन में एकत्र हुए क़ैदियों को देख रही थीं, और उनमें से तीन स्त्रियाँ बैठी हुई कुछ सी रही थीं। सीने वाली स्त्रियों में से एक वह स्त्री भी थी, जिसने सुबह मसलोवा के जाते समय भीतर से झाँक कर देखा था। इसका नाम था कोराब्लेवा। लम्बा क़द, बलिष्ठ देह, रोबदार चेहरा, माथे में बल पड़े हुए, ठोडी चौड़ी और गोरी, सुन्दर बालों की पट्टी जो माथे पर से सफ़ेद हो चली थी, और गालों पर बाल उगे हुए। इसे सपरिश्रम साइबेरिया निर्वासन दण्ड दिया गया था, क्योंकि इसने अपने पति को इसलिए कुल्हाडी से मार डाला था कि उसने इसकी कन्या से अनुचित सम्पर्क कर लिया था। वह अपनी बारक की स्त्रियों की सरदार थी और उनके हाथों किसी न किसी प्रकार चुरा-छिपा कर शराब बेचा करती थी। उसके पास ही एक और स्त्री बैठी हुई एक टाट का बोरा सी रही थी। यह एक रेलवे चौकीदार की स्त्री थी, जिसे तीन महीने का कारावास हुआ था, क्योंकि वह झण्डी लेकर नहीं निकली थी, जिसके फल-स्वरूप एक दुर्घटना हो गई थी। यह ठिगने क़द और चपटी नाक वाली स्त्री थी, जिसके नेत्र काले थे और जो बातें करने में विशेष रुचि रखती थी। तीसरी का नाम थियोडेसिया था। यह अभी निरी लडकी थी, उज्ज्वल वर्ण, नेत्र बालकों के नेत्रों जैसे स्वच्छ, और सिर पर बडी सुन्दर बालों की पाटी, जिन्हें उसने अपने सिर के पीछे बाँध रक्खा था। उसे अपने पति को विष देने के अपराध में जेल में रक्खा गया था।

उसने यह चेष्टा अपना विवाह होते ही की थी (क्योंकि उसका विवाह सोलह वर्ष की आयु में, उसकी सहमति के बिना कर दिया गया था)। पर आठ महीने की ज़मानत के काल में उसने अपने पति के साथ मैत्री ही नहीं, प्रेम तक कर लिया था, और जब उसका मामला आरम्भ हुआ तो वे एक प्राण दो शरीर हो गए थे। उसके पति, ससुर और सास के—जो उसे विशेष स्नेह की दृष्टि से देखने लगे थे—अनवरत प्रयास करने पर भी उसे सपरिश्रम साइबेरिया निर्वासन दण्ड दिया गया था। सदया, प्रफुल्लित, सदैव मुस्कराती रहने वाली थियोडेसिया की चारपाई मसलोवा की चारपाई के पास ही थी और वह मसलोवा से इतना गहरा स्नेह करने लग गई थी कि उसकी सेवा करना उसने अपना कर्तव्य समझ लिया था। दो स्त्रियाँ चारपाइयों पर खाली हाथ बैठी थीं। उनमें से एक की आयु कोई चालीस साल की थी, उसका चेहरा पीला और कृश था और देखने से जान पड़ता था कि किसी समय वह बड़ी सुन्दर रही होगी। वह अपने बच्चे को छाती से लगाए दूध पिला रही थी। उसका अपराध यह था कि जिस समय उसके गाँव से सेना के लिए बलात् रंगरूट भरती किए जाने लगे और उनमें से एक युवक को भी पकड़ लिया गया तो गाँव वालों ने मिल कर पुलिस-अफ़सर को रोक लिया और इस स्त्री ने उस घोड़े की लगाम सबसे पहले पकड़ी जिस पर वह लड़का बैठा था (वह लड़का उसका भानजा था)। उसके पास एक दूसरी स्त्री बैठी थी, अत्यन्त वृद्ध, सिर के बाल सफ़ेद, कमर झुकी और स्वभाव मृदुल। वह चूल्हे के पीछे बैठी हुई थी और उद्‌गित भाव से हँसते हुए

एक चार वर्ष के बालक को, जो पकड़ाई न देता था, पकड़ने की क्रीडा कर रही थी। यह बालक केवल छोटी सी क़मीज़ पहने था और इसके बाल बिलकुल कटे हुए थे। वह वृद्धा स्त्री के पास से भाग कर निकल जाता और बार-बार कहता—"क्यों, पकड न लिया!"

इस वृद्धा और उसके पुत्र को आग लगाने का अभियुक्त ठहराया गया था। वह अपने कारावास को प्रफुल्लतापूर्वक सह रही थी, पर उसे अपने पुत्र की, और विशेषकर अपने 'बुढ़ऊ' की चिन्ता थी और वह कहती थी कि उसके पति को नहलाने-धुलाने वाला तो कोई है नहीं, उसके दिन बड़े कष्ट में कटते होंगे।

इन सात स्त्रियों के अतिरिक्त चार स्त्रियाँ खुली खिडकी के पास उसकी छड़ें पकडे खडी थीं। वे कैदियों को देख देख कर सङ्केत कर रही थी और आवाज़े दे रही थीं। ये वही कैदी थे, जो सहन में मसलोवा को मिले थे। इनमें से एक स्त्री लम्बी-चौड़ी और मोटी-ताज़ी थी। उसका मांसल शरीर और लाल बाल थे और उसके पीले चेहरे, हाथों और मोटी गर्दन पर—जो उसके खुले कॉलर में से निकली हुई दिखाई देती थी—धब्बे पड़े हुए थे। उसने ज़ोर से चिल्ला कर कोई अश्लील बात कही और इसके बाद वह भर्राए हुए स्वर में ठहाका मार कर हँस पडी। यह चोरी करने के अपराध में दण्डित की गई थी। उसके पास ही एक भोंडी, साँवले रङ्ग की स्त्री खडी थी, जो आकार-प्रकार में दस वर्ष के बालक से अधिक लम्बी दिखाई न देती थी। उसकी कमर बेहद लम्बी थी और टाँगें बेहद छोटी, मुँह लाल सा, और आँखें एक-दूसरी से बहुत दूर; उसके मोटे ओठ उसके दाँतों को ढक न पाते थे। बाहर सहन में

जो कुछ हो रहा था उसे देख-देख कर वह बीच-बीच में तीव्र भाव से हँस पड़ती थी। उस पर आग लगाने का मामला चलने वाला था। उसे होरोशाव्का के नाम से पुकारते थे, क्योंकि वह बनाव-सिंगार को बहुत पसन्द करती थी। उसके पीछे एक दुबली-पतली, अभागी सी गर्भिणी स्त्री खड़ी थी, जिस पर चोरी छिपाने का अभि-योग चलने वाला था। यह स्त्री चुपचाप खड़ी थी, पर बाहर जो कुछ हो रहा था उसे देख-देख कर प्रसन्नता और सहमति के साथ मुस्करा रही थी। इन स्त्रियों के साथ ही एक ठिगने क़द और मोटी गाँठ वाली देहाती स्त्री खड़ी थी, जिसका चेहरा सहृदयतापूर्ण था। यह उस लड़के की माँ थी, जो उस वृद्धा स्त्री के साथ खेल रहा था। इसकी एक सात वर्ष की कन्या भी थी। वह इन बच्चों को जेल में इसलिए ले आई थी कि उनकी देख-भाल करने वाला और कोई न था। उस पर अवैध रूप से मदिरा बेचने का मामला चलाया गया था। वह खिड़की से कुछ दूर पर खड़ी हुई एक मोज़ा बुन रही थी और अन्य स्त्रियों की बातें सुन-सुन कर असन्तोष के साथ सिर हिलाती और आँखें बन्द कर लेती थी। पर उसकी सात वर्ष की कन्या, नन्हा सा बनियान पहने और बाल बिखेरे, अपने नीले नेत्रों से देखती हुई, उस लाल बालों वाली स्त्री का लहँगा पकड़े खड़ी थी और उसके और क़ैदियों के बीच में चलती हुई गाली-गलौज को ध्यानपूर्वक सुन रही थी और साथ ही साथ धीरे-धीरे दुहराती भी जाती थी, मानो कोई पाठ याद कर रही हो। बारहवीं स्त्री एक पादरी की लड़की थी—बेहद लम्बी और रोबदार,

गया था। उसके पैर नङ्गे थे और शरीर पर बनियान के सिवा और कुछ न था। उसके बालों की घनी अस्वच्छ लटें खुली हुई झूल रही थीं। इस व्यापार की ओर वह कोई ध्यान न दे रही थी और कमरे में रिक्त स्थान पर चहलक़दमी करती हुई दीवार के पास आकर चट से घूम जाती थी।

ब ताला खड़खड़ाया और मसलोवा को भीतर करने के लिए दरवाज़ा खुला तो सबके नेत्र उसकी ओर घूम गए। पादरी की लड़की भी क्षण भर के लिए रुकी और अपनी भवें उठा कर मसलोवा की ओर देखने लगी; पर दूसरे ही क्षण उसने बिना कुछ कहे-सुने, उसी प्रकार सजीवता के साथ चहल-कदमी करना शुरू कर दिया।

कोराबलेवा ने बोरी में अपनी सुई घुसा दी और अपने चश्मे में से मसलोवा की ओर प्रश्नात्मक भाव से देखा। उसने भारी-पुरुषोचित स्वर में कहा—"हे भगवान! फिर आ गई! और मुझे विश्वास था कि तुझे अवश्य छोड़ देंगे। तो तुझे भी मिल ही गई?" उसने अपना चश्मा उतार डाला और अपना क़सीदा अपने पास ही चारपाई पर रख लिया।

चौकीदार की स्त्री ने कहना आरम्भ किया—"और यहाँ मैं

और बुड्ढी चाची कह रही थीं, बस जाने की देर है, और छूटी रक्खी है।" ऐसा भी कभी-कभी हो जाता है। कुछ को तो ढेर का ढेर रुपया मिल जाता है; भाग्य की बात है। उसने अपने शब्दों को गाते हुए कहा—"और देखो, क्या से क्या हो गया। हमारा सारा अनुमान झूठा निकला। बच्ची, भगवान की यही इच्छा थी।" उसने मीठे स्वर में कहा।

थियोडेसिया ने मसलोवा की ओर अपने नील वर्ण, शिशु सुलभ नेत्रों से देखते हुए द्रवित हृदय से कहा—"क्या सचमुच तुम्हें दण्ड दे दिया?" और उसका उज्ज्वल, नवीन मुख-मण्डल इस प्रकार परिवर्तित हो उठा मानो वह अभी रो देगी।

मसलोवा ने कोई उत्तर न दिया; वह अपने स्थान पर गई और कोराबलेवा के पास जाकर बैठ गई।

थियोडेसिया उठ कर मसलोवा के पास आई और बोली—कुछ खाया-पिया भी?

मसलोवा ने कोई उत्तर न दिया, बल्कि वह रोटियों को चारपाई पर रख कर अपने घुँघराले बालों से रूमाल खोलने और धूल से भरा चोगा उतारने में लग गई। वृद्धा स्त्री—वही जो लड़के के साथ खेल रही थी—आई और मसलोवा के सामने खड़ी हो गई। उसने अपना सिर करुण भाव से हिलाते हुए अपनी जीभ से 'टच-टच' किया। लड़का भी उसके साथ ही आ गया और अपना ऊपर का ओठ बाहर निकाल कर आँखे फाड़-फाड़ कर रोटियों की ओर देखने लगा। उस दिन जो कुछ गुजरी थी उसके बाद यहाँ आकर मसलोवा ने जब अपने चारों ओर इन समवेदनापूर्ण आकृतियों

को देखा तो वह रुँआसी हो गई, पर इस स्त्री और बालक के आने तक किसी प्रकार आँसुओं को पिए रही। जब उसने वृद्धा स्त्री की जीभ की करुणा-व्यञ्जक 'टच-टच' सुनी और रोटियों से हट कर अपने चेहरे पर लगे हुए बालक के गम्भीर नेत्रों को देखा तो वह और अधिक सहन न कर सकी; उसका चेहरा काँप उठा, और वह फूट-फूट कर रो पड़ी।

कोराबलेवा ने कहा—और देख, मैंने तुझसे पहले ही कह दिया था कि कोई नामी वकील करना। तो क्या मिला? देश-निकाला?

मसलोवा कोई उत्तर न दे सकी। उसने चुपचाप रोटी में से सिगरेट का बक्स निकाला, जिस पर एक गुलाबी चेहरे वाली स्त्री की सूरत बनी हुई थी, जिसके बाल चोटीदार कढ़े हुए थे और जिसकी पोशाक का अग्र-भाग बहुत नीचा कटा हुआ था। मसलोवा ने बक्स कोराबलेवा को पकड़ा दिया। कोराबलेवा ने यह देख कर असन्तोषपूर्वक सिर हिलाया, जिसका प्रधान कारण यह था कि उसे मसलोवा का अपना रुपया-पैसा इन बुरे कामों में लगाना पसन्द न था। पर तो भी उसने बक्स ले लिया, एक सिगरेट निकाला, लैम्प से जलाया और मसलोवा के हाथ में बलात् ठूँस दिया। मसलोवा ने उसी प्रकार रोते-रोते लुब्ध भाव से सिगरेट का धुआँ पीना शुरू कर दिया। उसने धुआँ निकालते और सिसकियाँ लेते हुए कहा—सपरिश्रम साइबेरिया वास।

कोराबलेवा ने बड़बड़ा कर कहा—"इन हत्यारों को भगवान का डर नहीं है? बच्ची को बिना अपराध दण्ड दे दिया।" इसी क्षण खिड़की के सामने खड़ी हुई स्त्री की उच्च अश्लील हास्य-

ध्वनि सुनाई दी। नन्हीं लड़की भी हँसी और उसकी शिशु-सुलभ मृदुल हास्य-ध्वनि दूसरों की तीव्र हास्य-ध्वनि में मिल कर विलीन हो गई। बाहर एक क़ैदी ने कुछ ऐसा काम किया था, जिसका दर्शकों पर ऐसा मनोरञ्जनपूर्ण प्रभाव पड़ा था।

उस लाल बालों वाली स्त्री का मांसल शरीर हँसी के मारे उछल रहा था। वह बोली—"लावस! देख तो, यह सिरमुँडा, कलमुँहा क्या कर रहा है!" और वह झरोखों में मुँह लगा कर अर्थहीन अश्लील शब्दों का उच्चारण करने लगी।

कोराबलेवा ने कहा—"ऊँह, मोटी क्या है, बवाल है! यह इतना हँस क्यों रही है?" और वह फिर मसलोवा की ओर मुड़ गई—"कितने साल?"

मसलोवा ने कहा—"चार!" और उसकी आँखों से आँसू इतनी तेज़ी के साथ बहने लगे कि एक उसके सिगरेट पर भी जा पड़ा। उसने उसे क्रुद्ध भाव से कुचल कर फेंक दिया और दूसरा निकाला।

चौकीदार की स्त्री वैसे सिगरेट न पीती थी, पर उसने मसलोवा का तोड़ा-मरोड़ा सिगरेट उठा लिया और उसे सीधा करना शुरू कर दिया। साथ ही साथ उसका बातचीत का सिलसिला भी जारी था।

उसने कहा—"तो बच्ची, यह बात हुई! सच का तो नाम ही उठ गया; जो जी में आता है, कर देते हैं। और हम यहाँ कह रही थीं कि तू छूट जायगी। कोराबलेवा कहने लगी कि वह साफ़ छूट जायगी, पर मैंने कहा कि नहीं बहिन, मेरा मन कहता है कि

वे उसे देकर रहेंगे। और यही हुआ भी।" वह अपने कण्ठ-स्वर को प्रसन्नतापूर्वक सुनती हुई कहती रही।

अब खिड़की के सामने खड़ी हुई स्त्रियाँ भी मसलोवा के पास आ पहुँचीं। सबसे पहले वह देहाती स्त्री आई, जिसे अवैध रूप से मदिरा बेचने के अभियोग में कैद किया गया था। उसके साथ ही उसकी नन्हीं लड़की भी आ पहुँची। उस स्त्री ने मसलोवा के पास बैठते हुए और जल्दी-जल्दी बुनते हुए कहा—इतना कड़ा दण्ड क्यों दिया गया?

कोराबलेवा ने कहा—इतना कड़ा दण्ड क्यों? क्योंकि इसके पास चाँदी नहीं थी। बस, इसलिए और क्यों? धन बहाने को होता और अच्छा सा वकील कर लिया जाता, जो उनकी रग-रग को जानता होता, तो वे इसे साफ छोड़ देते, फिर क्या बाक़ी रह जाता? वह—उसका क्या नाम है—अच्छे से बालों और लम्बी नाक वाला—वह वकील हो जाता तो बच्ची, तुझे साफ निकाल ले जाता। हाय, जो हमें वह वकील मिल जाता!

होरोशाव्का ने दाँत निकालते हुए और उनके पास आकर बैठते-बैठते कहा—हाँ, वह ज़रूर मिल जाता! वह तो एक हज़ार रूबल से कम पर तुम्हारे ऊपर थूकता तक नहीं।

अब वह वृद्धा स्त्री बोली, जिसे आग लगाने के अपराध में क़ैद किया गया था—"ले दुलारी, तेरे ऊपर भी भगवान रूठा दिखाई देता है। सोचो तो सही, एक तो मेरे बच्चे की घर वाली को फुसलाया और फिर उसे आग लगाने के अपराध में जेल में चक्की पीसने को डाल दिया—और मुझे भी बुढ़ापे में ये दिन देखने पड़े।" उसने

अपनी कहानी सौवीं बार कहनी आरम्भ की।—"हाँ, भिखारी का डण्डा हुआ या जेल हुई, ये किसी की रिआयत थोड़े ही करते हैं।"

शराब बेचने वाली ने कहा—"अजी क्या पूछती हो, इन सबका एक ही जैसा ढङ्ग है।" और इसके बाद अपनी नन्ही लड़की के सिर की ओर देख कर उसने अपना कसीदा रख दिया और लड़की को अपने घुटनों में दबा कर अपनी फुर्तीली अँगुलियों से उसका सिर टटोलना शुरू कर दिया। उसने कहा—मुझसे पूछा कि तू दारू क्यों बेचती है? पर उन्हें यह नहीं दिखाई देता कि दारू न बेचूँ तो बच्चों का पेट कहाँ से भरूँ।

इन शब्दों ने मसलोवा के हृदय मे शराब पीने की इच्छा उत्पन्न कर दी। उसने आस्तीन से अपने आँसू पोंछते हुए और पहले की अपेक्षा कम सिसकियाँ लेते हुए कोराबलेवा से थोड़ी सी शराब माँगी।

कोराबलेवा ने कहा—अच्छी बात है, निकाल फिर!
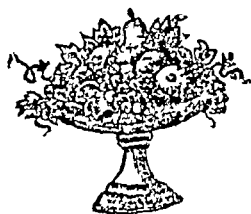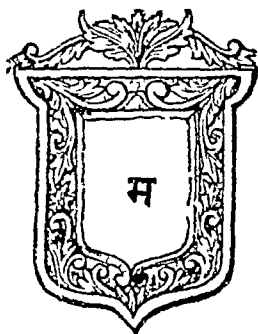
सलोवा ने रोटियों में से नोट निकाला और कोराबलेवा ने स्वय पढ़ी-लिखी न होने पर भी सर्वज्ञ होरोशाव्का की इस बात पर विश्वास करके कि नोट दो रूबल पचास कृपक का है, हवादान पर चढ़ कर वहाँ से वोडका की छोटी सी बोतल निकाली। यह देख कर वे स्त्रियाँ वहाँ से चली गईं, जिनका स्थान वहाँ से कुछ दूरी पर था। मसलोवा ने अपना चोग़ा और रूमाल झाड़ा और अपनी चारपाई पर बैठ कर रोटी खाना शुरू कर दिया।

थियोडेसिया ने अलमारी में से एक चीथड़े में लिपटा हुआ टीन का बर्तन निकालते हुए कहा—"और मैंने तुम्हारे लिए चाय रख छोड़ी थी। पर अब यह बिल्कुल पानी हो गई है।" चाय बिल्कुल ठण्डी थी और उसमें चाय की अपेक्षा टीन का स्वाद अधिक था; पर मसलोवा ने अपना प्याला भरा और उसे रोटी के ग्रास के साथ पीना शुरू कर दिया। उसने अपनी रोटी का एक

टुकडा तोड़ कर अपनी ओर एकटक देखते हुए लड़के को देकर कहा—ले, फिनाश्का !

इधर कोरावलेवा ने मसलोवा को वोडका की बोतल और एक प्याला दिया और मसलोवा ने उसमें से थोड़ी-थोड़ी शराब कोरावलेवा और होरोशाव्का को दी। ये क़ैदी सारे कमरे में धनी समझे जाते थे, क्योंकि इनके पास रुपया-पैसा रहता था और ये अपनी चीज़ दूसरों को बाँट कर खाते थे। कुछ ही मिनटों में मसलोवा में नई जान आ गई और वह विशद रूप से सुनाने लगी कि अदालत में क्या-क्या हुआ था। उसने पब्लिक प्रॉसीक्यूटर की नक़ल विशेष रूप से बनाई और बताया कि किस प्रकार उसे यह देख कर अत्यन्त कौतूहल हुआ था कि सारे पुरुष उसके पीछे लगे फिरते थे। उसने कहा कि अदालत में सारे आदमी उसकी ओर एकटक देखते और कैदियों के कमरे के चारों ओर चक्कर काटते रहे। एक सिपाही तो कह भी उठा—"ये सब तुम्हारी झाँकी करने आ रहे हैं।" एक आता और पूछता—"अमुक काग़ज़ कहाँ है?" दूसरा भी आता कुछ और कहने लगता। पर मैं ताड़ गई कि वह कागज़ माँगने नहीं आया था, मुझे घूर-घूर कर देखने के लिए आया था! उसने सिर हिलाते हुए कहा—बड़े चलते हुये हैं।

चौकीदार की स्त्री का गानयुक्त कण्ठ-स्वर प्रवाहित होने लगा—हाँ, यह तो होता ही है। बस, जैसे गुड़ के पीछे चींटे दौड़ते हैं। वे सब और किसी भक्ति के बिना काम भी चला सकते हैं, पर इससे तो उन्हें रोटी मिलती है !

मसलोवा ने उसकी बात काट कर कहा—और यहाँ भी तो

यही हुआ। मेरे यहाँ आने की देर नहीं हुई थी कि रेलवे से एक कैदियों का झुण्ड आ पहुँचा। उन्होंने तो मुझे पीस डाला और मैं यह न सोच सकी कि इनसे कैसे पीछा छुड़ाऊँ। भला हो उस सहकारी का—उसने उन सबको खदेड़ दिया। एक ने तो इतना तङ्ग कर दिया कि पीछा छुड़ाना दूभर हो गया।

होरोशाव्का ने कहा—वह कैसा है?

"साँवले रङ्ग का, मूँछे!"

"तो फिर वही होगा।"

"वही कौन?"

"अजी श्चेगलोव, वह अभी तो इधर से गया ही है।"

"श्चेगलोव कौन?"

"अरे! श्चेगलोव को नहीं जानती। साइबेरिया से दो बार भाग आया। अब पकड़ा गया है, फिर भाग आएगा। उससे वार्डर तक काँपते हैं।" होरोशाव्का ने कहा। वह पुरुष कैदियों के साथ पत्र-व्यवहार करती रहती थी और उसे मालूम रहता था कि जेल में क्या हो रहा है। "वह फिर भाग जायगा—यह मानी हुई बात है।"

कोराबलेवा ने मसलोवा की तरफ़ मुख़ातिब होते हुए कहा—भाग जायगा तो अपने लिए, कोई हमें अपने साथ थोड़े ही ले जायगा। अच्छा, अब तू यह बता कि अपील करने के सम्बन्ध में ऐडवोकेट क्या कहते हैं? अपील करने का यही समय है।

मसलोवा ने उत्तर दिया कि वह इस सम्बन्ध में कुछ नहीं जानती।

इसी समय वह लाल बालों वाली स्त्री अपने धब्बेदार हाथों के नाखूनों से खाल नोचती हुई इस 'कुलीन' समाज के पास आ पहुँची और बोली—देखो केटेरीना, मैं बताऊँ तुम्हें। सबसे पहले तुम्हें यह लिखना होगा कि तुम इस दण्ड से असन्तुष्ट हो, और फिर तुम्हें प्रॉसीक्यूटर को नोटिस देना होगा।

कोराबलेवा ने क्रुद्ध स्वर में कहा—क्यों, तुम्हारा यहाँ क्या काम है? वोटका की गन्ध सूँघने की जी में होगी। तुम्हारी बक-बक की यहाँ ज़रूरत नहीं है। तुम्हारी सलाह के बिना ही काम चल जायगा।

"अरी, तुझसे कौन बात करता है? तू अपनी थूथडी क्यों घुसेडे देती है?"

"तू वोडका की भूखी है, तभी इतनी बिखरी-बिखरी फिर रही है।"

मसलोवा अपने पास की चीज़ बाँटने को हमेशा उद्यत रहती थी। बोली—तो फिर दे दो न!

लाल बालों वाली ने कोराबलेवा की तरफ़ बढ़ते हुए कहा—आ जा फिर; तू यह समझती होगी कि मैं तुझसे डर जाऊँगी।

"चुडैल कहीं की!"

"तू ही होगी।"

"भुतनियाँ!"

"मैं? भुतनिया? हत्यारी कहीं की!"—लाल बालों वाली चिल्ला उठी।

कोराबलेवा ने विपरण्ण भाव से कहा—"चली जा, इसी में

तेरी खैर है।" पर लाल बालों वाली उसके और भी पास आ गई और कोराबलेवा ने उसकी छाती में घूँसा मारा। शायद लाल बालों वाली इसी की राह देख रही थी; और उसने फुर्ती के साथ एक हाथ से कोराबलेवा के बाल पकड़ लिए और दूसरे से उसके मुँह पर आघात किया। कोराबलेवा ने उसका यह हाथ पकड़ लिया, और मसलोवा और होरोशाव्का ने लाल बालों वाली की बाँहें पकड़ कर उसे अलग करने की चेष्टा की, पर उसने क्षण भर के लिए वृद्धा के बाल छोड़ कर उन्हें दूसरी बार अच्छी तरह कलाई से लपेट लिया। कोराबलेवा अपना सिर एक ओर को झुकाए एक हाथ से उसके घूँसे लगा रहा थी और साथ ही उसके हाथ को दाँतों से पकड़ने की चेष्टा कर रही थी। बाक़ी सारी स्त्रियाँ चीख़ती-चिल्लाती इन दोनों प्रतिद्वन्द्विनियों को अलग करने की चेष्टा कर रही थीं। क्षय-रोग-ग्रस्त स्त्री तक आकर खड़ी हो गई थी और चुपचाप तमाशा देख रही थी। बच्चे एक जगह एकत्र होकर रो रहे थे। इस गुल-गपाड़े को सुन कर एक स्त्री-वार्डर और एक जेलर आ पहुँचे। लड़ने वाली अलग-अलग हो गईं और कोराबलेवा ने अपने खसोटे हुए बाल और लाल बालों वाली ने अपना फटा हुआ बनियान दिखा-दिखा कर ऊंचे स्वर में अपनी-अपनी शिकायत पेश की।

स्त्री-वार्डर ने कहा—मैं जानती हूँ, यह सब वोदका का फितूर है। मुझे क्या गन्ध नहीं आती? ठहरो, कल को मैं इन्सपेक्टर से कहूँगी तो वह तुम्हारा इलाज करेंगे। ख़बरदार, यह सब दूर कर दो, नहीं तो तुम्हारे दिन अच्छे नहीं हैं। तुम्हारे दिन-रात के लड़ाई-

झगड़ों का निवटारा करने का समय हमारे पास नहीं है। अपनी-अपनी जगह जाओ और ख़ामोश रहो।

पर शान्ति तत्काल ही स्थापित नहीं हो गई। स्त्रियाँ बहुत समय तक आपस में वाद-विवाद करती और एक-दूसरी को समझाती रहीं कि वास्तव में किसका अपराध था। अन्त में वार्डर और जेलर कमरे से चले गए, स्त्रियाँ शान्त हो चलीं, और सोने की तैयारियाँ करने लगीं, और वृद्धा स्त्री मूर्ति के पास जाकर प्रार्थना करने लगी।

सहसा लाल बालों वाली स्त्री ने कमरे के दूसरे सिरे से चारपाई पर पड़े-पड़े भारी स्वर में चिल्ला कर घोर अश्लील अपशब्दों के साथ कहा—दोनों जेली चिड़ियाँ एक से एक बढ़ कर हैं।

कोरावलेवा ने भी गाली देकर कहा—"याद रखना, मुँह सम्हाल दूँगी।" और इसके बाद दोनों शान्त हो गईं।

कुछ क्षण बाद लाल बालों वाली ने फिर कहना आरम्भ किया—"मुझे सब पकड़ न लेते तो तेरे ये दोनों चमकते हुए दीदे फोड़ देती।" और कोरावलेवा की ओर से भी इसी प्रकार का उत्तर आए बिना न रहा। इसके बाद फिर शान्ति और फिर अपशब्द प्रहार। पर धीरे-धीरे शान्ति की अवधि अधिकाधिक बढ़ती गई, ठीक जिस तरह बादलों की कड़क शनैः-शनैः शान्त होती जाती है।

और सब स्त्रियाँ अपनी-अपनी चारपाइयों पर जा लेटीं और कुछ ने ख़र्राटे भी भरना शुरू कर दिया; पर वृद्धा स्त्री, नित्यप्रति देर तक प्रार्थना करती रहती थी। वह उसी प्रकार मूर्ति के आगे

दण्डवत किए गई। पादरी की लड़की अपनी चारपाई से उठ कर फिर चहलक़दमी करने लगी। मसलोवा बराबर सोचती रही कि अब वह दण्डित बन्दी है, जिसे कठोर निर्वासन दण्ड मिला है, और आज पहले ही दिन उसे इसकी दो बार याद दिलाई गई है; पहले बचकोवा ने याद दिलाई और फिर लाल बालों वाली स्त्री ने, और इसके विचार मात्र से वह चञ्चल हो उठती थी। उसके बगल ही में कोराबलेवा लेटी हुई थी, उसने करवट ली।

मसलोवा ने धीमे स्वर में कहा—देखो न, यह किसने सोचा था? ऐसे भी हैं जो सब कुछ करते हैं और साफ़ बचे रहते हैं।

कोराबलेवा ने उसे सान्त्वना देते हुए कहा—बेटी, घबराने की बात नहीं है। साइबेरिया में भी तो आदमी ही रहते हैं। तू वहाँ कोई खो थोड़े ही जायगी।

"मैं जानती हूँ कि मैं खो न जाऊँगी; पर फिर भी बड़ा कठोर दण्ड है। मैंने अब तक सुख-चैन से दिन बिताए, अब क्या मेरे भाग्य में यही बदा था?"

कोराबलेवा ने साँस लेकर कहा—भगवान की यही इच्छा थी, बच्ची, उसके विरुद्ध किसका चारा है?

"दादी, मैं जानती हूँ, फिर भी बड़ा कष्ट होता है।"

कुछ क्षण के लिए निस्तब्धता छाई रही। इसके बाद कोराबलेवा ने कमरे के दूसरे सिरे से आती हुई विचित्र सी ध्वनि की ओर मसलोवा का ध्यान दिला कर कहा—सुनती है न, यह कलमुँही क्या कर रही है?

वह लाल बालों वाली स्त्री की दबी हुई सिसकियाँ थीं। लाल

बालों वाली स्त्री रो रही थी, इसलिए कि उसे गालियाँ दी गई थीं और इतने पर भी उसे वोडका न मिली थी जिसके लिए उसके प्राण निकल रहे थे ; इसलिए भी कि उसे स्मरण हो आया था कि किस प्रकार उम्र भर उसके हिस्से में पिटने, गालियाँ खाने, नक़लें उतरवाने और क्षुब्ध होने के सिवा और कुछ न आया था। उसने अपने आपको तसल्ली देने के लिए फेड्का मोलोडेन्कोव नामक एक मज़दूर के साथ अपनी प्रेम-लीला का स्मरण किया ; यह उसका प्रथम प्रेम-व्यापार था, पर उसे यह भी स्मरण आया कि उस प्रेम-सम्बन्ध का अन्त किस प्रकार हुआ था। इस मोलो-डेन्कोव ने एक दिन शराब पीकर तमाशा देखने के लिए उसके कोमल स्थान पर गन्धक का तेज़ाब लगा दिया था और जब वह पीड़ा से व्यथित हो रही थी उस समय वह अपने सङ्गी-साथियों के साथ अट्टहास कर रहा था। यह स्मरण करके उसे अपने आप पर करुणा हो आई, और यह समझ कर कि सब सो गए हैं, उसने बच्चों की भाँति सिसक-सिसक कर रोना, नाक का साँस ऊपर चढ़ाना, और नमकीन आँसू पीना शुरू कर दिया।

मसलोवा ने कहा—मुझे तो तरस आता है।

कोराबलेवा ने कहा—तरस तो आता है ; पर उसे इस तरह आकर तङ्ग न करना चाहिए।

सरे दिन जब निखल्यूडोव की आँख खुली तो वह इस ओर से सचेत था कि उसके अन्तराल में कुछ असाधारण व्यापार घटित हुआ है, और यह स्मरण करने से पहले ही कि वह असाधारण व्यापार क्या है, उसे बोध हुआ कि वह व्यापार निश्चय ही महत्वपूर्ण और कल्याणकारी है।

"कटूशा—मुक़दमा!" हाँ, उसे अब लोगों की आँखों में धूल झोंकना छोड़ देना चाहिए और खुले आम सच्ची-सच्ची बात कह देना चाहिए।

और कितने विलक्षण संयोग की बात थी कि उसी सुबह को उसके पास मार्शल-पत्नी मेरी वेसलीटना का दीर्घ प्रतीक्षित पत्र आ पहुँचा—वही पत्र, जिसकी उसे इस अवसर पर विशेष रूप से आवश्यकता थी। उसने निखल्यूडोव को पूर्ण तथा स्वच्छन्द रूप

दिया था और उसके आसन्न विवाह के लिए मङ्गल-कामना की थी।

निख़ल्यूडोव ने तीव्र व्यंग्य के साथ कहा—विवाह! इस समय मैं इस प्रश्न से कितनी दूर हूँ!

और उसे याद आया कि उसने पिछली रात क्या सङ्कल्प किया था; उसने सङ्कल्प किया था कि वह उसके पति को सारी बात बता देगा। उसके सामने हृदय खोल कर रख देगा—और उसके सन्तोष के लिए सब कुछ करने को तैयार हो जायगा। पर आज उसे यह सब उतना सुगम दिखाई न दिया जितना पिछली रात को दिखाई दिया था। और इसके अलावा पति को वे सब बातें बता कर, जिन्हें वह अब तक नहीं जानता, व्यर्थ ही दु:खी बनाने की क्या आवश्यकता है? हाँ, यदि वह स्वयं आए और उससे पूछे तो वह उससे सब कुछ कह डालेगा, पर ख़ुद जाकर ये सारी बातें कहना नितान्त अनावश्यक है।

और मिसी से सारी सच्ची-सच्ची बातें कहना भी उसे उतना ही कठिन कार्य प्रतीत हुआ। वह उसे क्षुब्ध किए बिना इन बातों का ज़िक्र न कर सकता था। जिस प्रकार अन्य अनेक सांसारिक मामलों में हुआ करता है, उसी प्रकार इस मामले में भी कुछ ऐसी बातें थीं जिन्हें प्रकट न किया जा सकता था। पर एक बात पर वह अड़ा हुआ था; वह उसके यहाँ कभी न जायगा और पूछे जाने पर सारी सच्ची बात कह डालेगा।

पर कटूशा का जहाँ तक सम्बन्ध है, वहाँ तक कोई बात गुप्त न रहनी चाहिए। उसने सोचा—मैं जेल जाऊँगा और उससे सारी

बातें कह डालूँगा और उससे क्षमा-याचना करूँगा। और यदि आवश्यकता पड़ी तो—हाँ, यदि आवश्यकता पड़ी तो, उससे विवाह भी कर लूँगा।

इस बात के विचार मात्र से कि वह नैतिक दृष्टि से सब कुछ बलिदान करके उसके साथ विवाह करने को कटिबद्ध है, वह एक बार फिर अपने प्रति सहृदयता और कोमलता की अनुभूति करने लगा। जहाँ तक आर्थिक अवस्था का सम्बन्ध है, वहाँ तक वह उसकी व्यवस्था अपने उसी सिद्धान्त के अनुरूप करेगा कि भू-स्वामित्व अवैध है। यदि वह अपना सर्वस्व परित्याग करने योग्य आत्मबल सञ्चय न भी कर सका तो भी जितना कर सकेगा, करेगा, और न अपने आपको धोखा देगा, न दूसरों को।

उसने प्रातःकाल के समय दिन भर की तैयारी में सजीवता और स्फूर्ति की अनुभूति, जितनी उस दिन की उतनी इधर बहुत समय से नहीं की थी। जब उसके कमरे में ऐग्राफ़ेना पैट्रोला आई तो उसने उसे बता दिया कि उसे अब उस घर की तथा स्वयम् उसकी और अधिक आवश्यकता न पड़ेगी—और इतनी दृढ़ता के साथ जितनी का उसे स्वयम् अनुमान न था। अब तक एक अकथित सी धारणा फैली हुई थी कि वह नौकरों का इतना बड़ा और व्ययपूर्ण अमला केवल इसलिए रक्खे हुए है कि वह विवाह करने का विचार कर रहा है। अतः घर-द्वार का इस प्रकार परित्याग करने में एक विशेष मर्म की बात थी। ऐग्राफ़ेना पैट्रोला ने उसकी ओर आश्चर्य-चकित नेत्रों से देखा।

"ऐग्राफ़ेना पैट्रोला, तुमने मेरे सुख का इतना ध्यान रक्खा,

इसके लिए मैं तुम्हें किन शब्दों में धन्यवाद दूँ। पर सचमुच अब मुझे इतने नौकर-चाकरों और इतने बड़े मकान की ज़रूरत न पड़ेगी। यदि तुम मेरी सहायता करना चाहती हो तो कृपा करके सारी चीज़ों की देख-भाल करो और उन्हें उसी तरह रखवा दो, जिस तरह वे मेरी माँ के जीवन-काल में थीं, और जब नटाशा आएँगी तो सारा प्रबन्ध अपने आप कर लेगी।" नटाशा निखल्यूडोव की बहिन थी।

ऐग्राफ़ेना पैट्रोला ने अपना सिर हिलाया और कहा—चीज़ों की देख-भाल करूँ? और उनकी फिर जो ज़रूरत पड़ेगी?

निखल्यूडोव ने उसके सिर हिलाने के अभिप्राय के उत्तर में कहा—नहीं, उनकी फिर ज़रूरत न पड़ेगी। तुम निश्चिन्त रहो, उनकी फिर ज़रूरत न पड़ेगी। और कृपा करके कोरनी से भी कह दो कि मैं उसे दो महीने का वेतन दे दूँगा, और अब मुझे उसकी ज़रूरत न पड़ेगी।

वह बोली—डिमिट्री इवानिच, कितने दुःख की बात है कि तुम यह सब बखेड़ा करने का विचार कर रहे हो। यह भी माना कि तुम विदेश जाओगे, तो भी वापस आकर तो रहने के स्थान की आवश्यकता पड़ेगी ही।

"ऐग्राफ़ेना पैट्रोला, तुम भूल कर रही हो। मैं विदेश नहीं जा रहा हूँ। यदि मुझे जाने की ज़रूरत ही पड़ी तो मैं बिलकुल दूसरी ही दिशा में जाऊँगा।" और अकस्मात् उसका चेहरा लाल हो उठा। उसने मन ही मन कहा—"हाँ, मुझे इनसे भी कह देना चाहिए। छिपाने की क्या बात है? सबको बताना चाहिए।"

"कल एक बड़ी विलक्षण घटना हो गई थी। तुम्हें मेरी बुआ मेरी इवानोला की कट्यूशा की याद है न ?"

"हाँ, हाँ, याद कैसे न होगी ? मैंने तो उसे सीना-पिरोना सिखाया था।"

"ख़ैर, तो कल वही कट्यूशा अदालत में पेश की गई और मैं जूरी में था।"

ऐग्राफ़ेना पैट्रोला चिल्ला उठी—हे भगवान ! कैसे दुःख की बात है ! क्या अपराध था ?

"हत्या ; और यह सब मेरी ही करतूत है।"

ऐग्राफेना पैट्रोला के वृद्ध नेत्रों में प्रकाश चमक उठा। बोली— कैसी विलक्षण बात है ! तुम्हारी करतूत कैसे हो सकती है ?

वह कट्यूशा और निखल्यूडोव के पारस्परिक सम्बन्ध की बात जानती थी।

"हाँ, इस सबका मूल कारण मैं ही हूँ ; और इसीने मेरी सारी योजनाओं को बदल दिया है।"

ऐग्राफेना पैट्रोला ने हँसी दबाते हुए कहा—तो इससे तुम्हारा क्या सरोकार ?

"सरोकार यह है कि जब उसे इस मार्ग पर लाने का मूल कारण मैं ही हूँ तो मुझे उसकी सहायता करने के लिए भी कुछ उठा न रखना चाहिए।"

ऐग्राफ़ेना पैट्रोला ने गम्भीर और कठोर भाव से कहा—वैसे तुम करोगे तो वही जो तुम्हारे मन में होगी, पर इसमें तुम्हारा कोई विशेष अपराध नहीं है। यह सब पर बीतती है और बुद्धि-

विवेक वाला आदमी सब कुछ ठीक-ठाक कर लेता है और पिछली बातों को भूल तक जाता है। तुम इसका सारा ज़िम्मा अपने ऊपर क्यों लेते हो? इसकी ज़रूरत ही क्या है? मैंने तो सुना था कि वह ख़ुद ही बुरे मार्ग पर चली गई थी। फिर इसमें किसका अप-राध है?

"मेरा! और इसीलिए मैं इसे ठीक करना चाहता हूँ।"

"अब ठीक करना कठिन है।"

"यह मेरा काम है। पर यदि तुम्हें अपनी चिन्ता हो तो मैं तुमसे कहे देता हूँ कि अपनी माता की अन्तिम अभिलाषा के अनुसार × × ×"

"मै अपनी बात नहीं सोच रही हूँ। मेरे साथ उस प्यारी स्वर्गीय स्वामिनी ने इतना उदारता का व्यवहार किया है कि मुझे अब और किसी वस्तु की अभिलाषा नहीं है। लिसेन्का (उसकी विवाहिता भतीजी) मुझे बार-बार बुला रही है और जब मेरी यहाँ ज़रूरत न रहेगी तो मैं वहाँ चली जाऊँगी। दु:ख केवल इतना ही है कि तुम्हारे हृदय पर इस बात ने इतना गहरा प्रभाव डाल दिया; सब पर यही बीतती है।"

"परन्तु मेरा विचार कुछ और तरह का है। मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि तुम इस घर को उठाने में मेरी सहायता करोगी और सारी चीज़ों को सम्हाल कर रख दोगी। और देखो, मुझसे गुस्सा मत होना। तुमने मेरे साथ जो-जो उपकार किए है उनके लिए मैं तुम्हारा बड़ा कृतज्ञ हूँ।"

और कितनी विचित्र बात थी कि जिस क्षण से निखल्यूडोव

को आत्मबोध होने लगा कि वह स्वयं ही इतना बुरा और गर्हित है, उस क्षण से उसे दूसरे गर्हित दिखाई न दिए। इसके विपरीत उसके हृदय में ऐग्राफेना पैट्रोला और कोरनी के प्रति आदर-भाव का उदय हो आया। वह कोरनी के पास जाकर भी अपराध स्वीकार कर लेता, पर कोरनी का व्यवहार इतना सम्मानपूर्ण था कि वह इसका निश्चय न कर सका।

वह अदालत को रवाना हुआ, उन्हीं कल की गाड़ियों से घिरी हुई कल की सड़कों पर से होकर—और वह अपने आपको बिल्कुल दूसरा ही जीव पाकर स्वयं ही चकित रह गया। कल तक मिसी के साथ विवाह की बात उसे इतनी सम्भावित दिखाई देती थी, पर अब वही पूर्णतया असम्भव दिखाई देने लगी। गत दिवस तक वह समझता था कि उसकी सहमति का विलम्ब है और इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि वह उसके साथ सहर्ष विवाह कर लेगी; पर आज उसे अनुभूति हो रही थी कि उसके साथ विवाह करने की तो कौन चलावे, वह उसके (मिसी के) साथ घनिष्ट सम्पर्क तक रखने के अयोग्य है। जो वह कहीं जान जावे कि मैं वास्तव में क्या हूँ, तो मुझे अपने घर में घुसने देने को कभी तैयार न होगी। और कल ही की बात है कि मैं उसके कोलोसोव के साथ प्रेमालाप करने तक को दोषपूर्ण समझ रहा था। पर नहीं, यदि वह मुझसे विवाह करने को तत्पर हो भी जावे तो भी मुझे मानसिक शान्ति किस तरह मिल सकेगी—सुख की तो बात ही क्या! क्या मैं यह भूल जाऊँगा कि एक दूसरी स्त्री जेल में पड़ी है और आज-कल में साइबेरिया को निर्वासित होने वाली है। जिस स्त्री का मैंने सर्व-

नाश कर दिया वह तो सपरिश्रम दण्ड भोगने के लिए साइबेरिया को जा रही होगी, और इधर मैं अपनी युवती स्त्री के साथ बधाइयाँ ग्रहण करूँगा और मिलने-जुलने जाऊँगा; या मार्शल ऑफ़ नोबीलिटी के साथ—जिसके साथ मैंने इतना कुत्सित विश्वासघात किया है—मीटिंगों में बैठ कर स्थानीय स्कूल-निरीक्षणों के सम्बन्ध में अनुकूल और प्रतिकूल वोट गिनूँगा; या अपने अपूर्ण चित्रों को पूरा करता होऊँगा—यद्यपि मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि मैं उन्हें कभी पूरा न कर सकूँगा, क्योंकि ऐसी बातों में व्यर्थ समय खोकर मैं कुछ लाभ न उठा सकूँगा। मैं इस प्रकार का कोई कार्य न कर सकूँगा। उसने अपने मानसिक परिवर्त्तन की उल्लासपूर्ण अनुभूति करते-करते कहा—पहला काम है ऐडवोकेट से मिल कर उसका निर्णय जानना और फिर × × × फिर जाकर उस कल की दण्डित स्त्री से मिलना और उससे सारी बातें साफ़-साफ़ कह डालना।

और जब उसने मन ही मन कल्पना की कि किस प्रकार वह उससे मिलेगा और उससे सारी बातें कहेगा, अपना पाप स्वीकार करेगा, और उसे बताएगा कि वह उसका प्रायश्चित्त करने के लिए तैयार है और उससे विवाह करना चाहता है तो भावोत्कर्ष की प्रबल अनुभूति से उसका हृदय आलोड़ित हो उठा और उसके नेत्रों में आँसू भर आए।

इकत्तीसवाँ परिच्छेद

दालत में आकर निखल्यूडोव कल के अर्दली से मिला और उससे उसने पूछा कि कल के दण्डित कैदी कहाँ रक्खे गए हैं और उनसे मिलने के लिए किससे अनुमति माँगनी चाहिए। अर्दली ने उत्तर दिया कि दण्डित कैदियों को विभिन्न स्थानों में रक्खा जाता है, और जब तक उनके दण्ड का अन्तिम निर्णय न हो जाय, तब तक उनसे भेंट करने की अनुमति देना एकमात्र प्राक्यूरर के हाथ में है।

इसके बाद निखल्यूडोव ने प्राक्यूरर के केबीनेट का पता पूछा और उसका पता मालूम होने पर वह सीधा वहाँ पहुँचा। वहाँ के अर्दली ने उसे भीतर न जाने दिया और कहा कि प्राक्यूरर काम में लगा हुआ है, पर निखल्यूडोव उसकी बात पर ध्यान न देकर सीधा दरवाज़े पर पहुँचा, जहाँ उसकी भेंट एक अफ़सर से हुई। उसने अफसर से अपनी सूचना देने का अनुरोध किया और कहा कि वह जूरी में है और उसे बहुत ज़रूरी बात करनी है।

उसकी उपाधि और अच्छे कपड़ों ने उसकी सहायता की। अफसर ने उसकी सूचना प्राक्यूरर को दे दी और निखल्यूडोव

भीतर ले जाया गया। प्राक्यूरर उससे खड़े-खड़े मिला, और यह स्पष्ट था कि वह भेट करने के लिए निखल्यूडोव के हठ से असन्तुष्ट सा था।

प्राक्यूरर ने कठोर भाव से पूछा—आप क्या चाहते हैं ?

"मैं जूरी में हूँ, मेरा नाम निखल्यूडोव है, और मेरे लिए मसलोवा नाम की एक स्त्री कैदी से मिलना नितान्त आवश्यक है।"—निखल्यूडोव ने लजाते हुए और यह समझते हुए कि वह अब वह कदम रखने वाला है, जिसका उसके जीवन पर स्थायी, निश्चयात्मक प्रभाव पड़ेगा, दृढ स्वर में जल्दी-जल्दी कहा।

प्राक्यूरर ठिगने क़द और साँवले रङ्ग का आदमी था, बाल छोटे और भूरे, नेत्र तीक्ष्ण और चमकते हुए, और आगे को निकले निचले जबडे पर फैली हुई ख़सख़सी दाढी।

प्राक्यूरर ने शान्त-भाव से कहा—"मसलोवा ? हाँ, मैं उसे जानता हूँ।' वही जिस पर विष देने का अभियोग है। पर आप उससे क्यों मिलना चाहते हैं ?" और फिर मानो अपने प्रश्न की रूक्षता को कम करने के लिए उसने कहा—"जब तक मै यह न जान जाऊँ कि आप क्यों मिलना चाहते हैं, तब तक मैं आपको अनुमति देने में असमर्थ हूँ।"

निखल्यूडोव ने उत्तेजित होते हुए कहा—मै उससे अत्यन्त आवश्यक कारण से मिलना चाहता हूँ।

प्राक्यूरर ने अपनी भवे उठा कर उसकी ओर मनोयोगपूर्वक देखते हुए कहा—हाँ, उसका मुकदमा सुन लिया गया या नहीं ?

"उसका फ़ैसला कल हो गया और उसे चार साल का कठोर दण्ड दिया गया है, वह निर्दोष है।"

प्राक्यूरर ने मसलोवा की निर्दोषिता की बात की ओर कोई ध्यान न दिया और कहा—हाँ; यदि उसका फ़ैसला कल ही हुआ है तो अभी वह अस्थायी बन्दीगृह में होगी और जब तक दण्ड का अन्तिम निर्णय न हो जायगा तब तक वहीं रहेगी। वहाँ जाने की अनुमति ख़ास-ख़ास दिन मिलती है; आप वहीं जाकर पूछिए।"

"पर मुझे उससे जितनी जल्दी हो सके उतनी जल्दी मिलना है।" और यह अनुभूति करके कि अब निर्णयात्मक अवसर आ पहुँचा है, उसका निचला जबड़ा काँपने लगा।

प्राक्यूरर ने अपनी भवें कुछ असन्तोष के साथ उठा कर कहा—पर क्यों?

"क्योंकि उसे सपरिश्रम कारावास दण्ड मिला है, और इसका अपराधी मैं हूँ, और वह निर्दोष है।"—निग्ल्यूडोव ने यह अनुभूति करते हुए कि वह जो कुछ कह रहा है उसके कहने की आवश्यकता न थी, कहा।

प्राक्यूरर ने कहा—यह कैसे?

"क्योंकि मैंने उसे भ्रष्ट किया और इस प्रकार उसकी वर्तमान अवस्था का कारण मैं ही हुआ। यदि वह मेरी सहायता से इस कुपथ पर न पहुँच जाती तो इस अभियोग में यहाँ कभी न लाई जाती।"

"फिर भी मुझे यह दिखाई नहीं पड़ता कि इसका उससे भेंट करने से क्या सम्बन्ध है।"

"यह कि मैं उसका अनुसरण करना चाहता हूँ और × × × उससे विवाह करना चाहता हूँ।"—निखल्यूडाव ने टूटे-फूटे शब्दों में कहा और अपने आचरण पर उसके नेत्रों में आँसू आ गए।

प्राक्यूरर ने कहा—"सचमुच? यह तो बिल्कुल निराले ही ढङ्ग का मामला है। मेरा जहाँ तक ख़्याल पड़ता है, आप शायद क्राम्वोपर्स्क ग्राम्य शासन-व्यवस्था के सदस्य है?" उसने कहा, मानो उसे अभी-अभी याद आया हो कि उसने इस निखल्यूडोव के सम्बन्ध में—जो इस समय उससे ऐसी विलक्षण बात कह रहा है—पहले भी कभी सुना है।

निखल्यूडोव ने क्रुद्ध भाव से उत्तेजित होते हुए कहा—क्षमा करिए, पर शायद मेरे अनुरोध से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है।"

पर प्राक्यूरर तनिक भी हतप्रभ न हुआ, उसने अलक्षित सी मुस्कराहट के साथ कहा—निश्चय ही कोई सम्बन्ध नहीं है। बात केवल इतनी ही है कि आपकी अभिलाषा इतनी असाधारण और इतनी विलक्षण है।

"ख़ैर, पर मुझे अनुमति-पत्र मिलेगा?"

"अनुमति-पत्र? हाँ, मैं आपको अभी लिखे देता हूँ। आप बैठ जाइए।"

पर निखल्यूडोव खड़ा रहा। प्राक्यूरर ने उसे अनुमति-पत्र देकर उसकी ओर कौतूहलपूर्ण दृष्टि से देखा।

निखल्यूडोव ने कहा—मुझे यह भी कहना है कि मै अब सेशन में भाग न ले सकूँगा।

"इसके लिए आपको अदालत में वैध कारण पेश करने पड़ेंगे ; और यह बात आप ख़ुद जानते होंगे।"

"मेरे पास कारण यह है कि मैं इस न्याय-निर्णय को व्यर्थ ही नहीं, अनैतिक भी समझता हूँ।"

प्राक्यूरर उसी अविचलित भाव से मुस्कराया, मानो यह दिखाने के लिए कि इस प्रकार के उद्गार उसके लिए नई बात नहीं हैं और वह उन्हें मनोरञ्जक मात्र समझता है। उसने कहा—जी हाँ, पर आप अच्छी तरह समझते होंगे कि मैं प्राक्यूरर कि हैसियत से आपके साथ इस विषय में सहमत नहीं हो सकता। इसलिए मैं आपको सलाह दूँगा कि आप अपना वक्तव्य अदालत में पेश करें और वह इसका निर्णय करेगी कि वह बुद्धिसङ्गत है या नहीं ; और यदि उसे बुद्धिसङ्गत न समझेगी तो जुर्माना करेगी।

निखल्यूडोव ने क्रुद्ध भाव से कहा—मुझे जो कुछ कहना था कह दिया ; अब मैं कहीं कुछ न कहूँगा।

"अच्छा फिर सलाम !"—प्राक्यूरर ने अपना सिर झुकाते हुए, इस विचित्र आगन्तुक से पीछा छुड़ाने के लिए उत्सुक होकर कहा।

निखल्यूडोव के जाते ही कोर्ट के एक सदस्य ने आकर प्राक्यूरर से पूछा—यह कौन था ?

"निखल्यूडोव। आप तो जानते ही होंगे, वही जिसने क्रास्नो-पर्क की बैठकों में तरह-तरह की विचित्र-विचित्र स्पीचें दी थीं। ज़रा सोचिए तो कितने मज़े की बात है ! आप जूरी में हैं और क़ैदियों में एक औरत या लड़की है, जिसे कठोर निर्वासन दण्ड मिला है,

और आप कहते हैं कि आपने उसके साथ बलात्कार किया था और अब आप उसके साथ विवाह करना चाहते हैं।"

"उसके कहने का यह मतलब शायद नहीं है ?"

"मुझसे तो उसने यही कहा है। और उत्तेजना के मारे बुरा हाल था।"

"आजकल के छोकरों में यह क्षुद्रता न जाने कहाँ से आ घुसती है।"

"पर यह छोकरा भी तो नहीं है।"

"नहीं, पर आपका वह प्रसिद्ध इवाशेन्को कितना परेशान कर देता था। जब तक किसी को थका न डालता था उसे चैन न आता था। बस, लगातार बातें करता रहता था।"

"बस, ऐसे आदमियों को रोकना चाहिए, नहीं तो यही आगे चल कर सरकार के विरोधी बन जाते हैं।"

क्यूरर के यहाँ से निखल्यूडोव सीधा अस्थायी बन्दीगृह की ओर रवाना हो गया। पर वहाँ मसलोवा नाम की किसी स्त्री का पता न लगा और इन्सपेक्टर ने कहा कि सम्भवतः वह पुराने जेलख़ाने में होगी।

दोनों जेलों की दूरी में बड़ा अन्तर था और निखल्यूडोव को वहाँ पहुँचते-पहुँचते सन्ध्या हो गई। वह उस बड़ी मनहूस सी इमारत की ओर बढ़ा चला जा रहा था, पर सन्तरी ने उसे रोक लिया और घण्टी बजाई, एक जेलर आया, निखल्यूडोव ने उसे अनुमति-पत्र दिखाया और भीतर जाने की अनुमति चाही, पर जेलर ने कहा कि वह इन्सपेक्टर की अनुमति बिना उसे भीतर न जाने देगा। निखल्यूडोव इन्सपेक्टर से मिलने

चला। उसने सीढ़ियों पर चढ़ते-चढ़ते पियानो की कोई जटिल सी गत सुनी। जब एक खिन्न सी बालिका-दासी ने, जिसके सिर पर पट्टी बँधी थी, आकर दरवाज़ा खोला तो ये गतें उस कमरे में से आती सुनाई दीं। यह लिग्ज्ज की गत थी जिससे सब ऊब गए थे। गत अच्छी तरह निकाली जा रही थी, पर किसी खास हद तक, और उस हद पर पहुँच कर उसकी पुनरावृत्ति कर दी जाती थी। निखल्यूडोव ने उस पट्टी बँधी बालिका से पूछा कि क्या इन्सपेक्टर हैं? उत्तर मिला—नहीं।

"क्या जल्दी ही आ जायँगे?"

गत फिर रुक गई, पर फिर सुर निकला और फिर उस ख़ास मनोहारी हद तक अत्यन्त परिष्कृत ढङ्ग से पहुँचाया गया।

दासी ने कहा—"मैं जाकर पूछे आती हूँ।" और वह चली गई।

स्वर का आरोह हुआ ही था कि उस मनोहारी हद तक पहुँचने से पहले ही सहसा भङ्ग हो गया और उसके स्थान पर भीतर से आवाज आई—"उनसे कह दे कि वह घर में नहीं हैं और आज वापस न आएँगे। मिलने-जुलने गए है। ये सब तङ्ग करने के लिए क्यों आ पहुँचते हैं?" एक स्त्री-कण्ठ ने कहा, और इसके बाद ही फिर सुर निकला और भङ्ग हुआ तथा कुर्सी खिसकाने की आवाज़ आई। यह स्पष्ट था कि चिढ़ी हुई पियानो बजाने वाली तङ्ग करने वाले आगन्तुक को उसके इस अनुपयुक्त समय पर आने के लिए झिड़कना चाहती थी।

एक पीले रङ्ग की रुग्ण सी दिखाई देने वाली लड़की ने, जिसके

बाल यन्त्र द्वारा दबाए हुए थे और जिसकी आँखों के चारों ओर धारियाँ पड़ी हुई थीं, कमरे में से निकलते हुए, क्षुब्ध स्वर में कहा—"पापा घर में नहीं है।" पर एक युवक को बढ़िया कपड़े पहने देख कर वह नर्म पड़ गई।

"आप भीतर आइए, क्या काम है?"

"मैं इस जेल के एक कैदी से मिलना चाहता हूँ।"

"कोई राजनीतिक कैदी है?"

"नहीं, राजनीतिक नहीं है। मेरे पास प्राक्यूरर का अनुमति-पत्र है।"

"मुझे तो कुछ पता नहीं, और पापा घर में नहीं हैं; पर आप भीतर तो आइए"—उसने फिर कहा—"या सहकारी से बात कर लीजिए। वह अभी अपने दफ्तर में ही हैं। आपका नाम क्या है?"

"धन्यवाद!"—निखल्यूडोव उसके प्रश्न का उत्तर दिए बिना वहाँ से चल खड़ा हुआ।

अभी दरवाज़ा बन्द न हुआ था कि फिर वही सङ्गीत की तान आरम्भ हो गई, जो स्थान और पीली और रुग्ण लड़की को देखते हुए—जो इस प्रकार हठपूर्वक अभ्यास कर रही थी—नितान्त अप्रासङ्गिक दिखाई देती थी। सहन में निखल्यूडोव को एक अफसर मिला, जिसकी मूँछें छोटी-छोटी थीं। उससे उसने पूछा कि सहकारी इन्सपेक्टर कहाँ है? वह स्वयं ही सहकारी था। उसने अनुमति-पत्र की तरफ निगाह डाली और कहा—मैं आपको अस्थायी वन्दी-गृह के लिए दिए गए अनुमति-पत्र के ऊपर जेल में प्रविष्ट नहीं कर सकता। और इसके अलावा अब देर भी बहुत हो गई है। आप

कृपा करके कल आइए। कल दस बजे सबको अनुमति है। और उस समय इन्सपेक्टर भी मौजूद रहेंगे। उस समय आप चाहें तो आम कमरे में मिल सकेंगे और नहीं तो, इन्सपेक्टर की अनुमति पर, ऑफ़िस में।

और इस प्रकार निखल्यूदोव उस दिन भेंट न कर सका और घर वापस लौटा। वह मसलोवा से भेंट करने के विचार से उत्तेजित होता हुआ सड़कों पर से गुज़रने लगा। इस समय उसका ध्यान अदालत की ओर न था, वह इस समय प्राक्यूरर और सहकारी इन्सपेक्टर के साथ हुई बातचीत को सोच रहा था। इस बात ने कि वह उससे भेंट करने की चेष्टा कर रहा है, और इस सम्बन्ध में उसने प्राक्यूरर से भी कह डाला है, और वह उससे भेंट करने के लिए दो जेलों तक भी हो आया है, उसे इतना उद्विग्न कर दिया था कि वह बहुत देर तक अपने आपको शान्त न कर सका। जब घर पहुँचा तो उसने अपनी डायरी निकाली, जिसे उसने बहुत दिनों से हाथ न लगाया था, और उसमें से दो-चार पंक्तियाँ पढ़ने के बाद लिखा :—

"मैंने पिछले दो साल से अपनी डायरी में कुछ नहीं लिखा और मैं समझता रहा कि इस लड़कपन को फिर कभी न दुहराऊँगा। पर यह लड़कपन नहीं है, यह अपने व्यक्तित्व से—अपने उस नैसर्गिक व्यक्तित्व से वार्तालाप करना है जो सारे प्राणियों में वास करता है। यह व्यक्तित्व अब तक सो रहा था और अब तक मैं किसी से वार्तालाप न कर सकता था। २८ अप्रैल की एक असाधारण घटना ने, जब मैं जूरी में था, मेरी आँखें खोल दीं। मैंने

उसे—कटूशा को, जिसके साथ मैंने बलात्कार किया था, कैदियों के कपडे पहने देखा। उसे एक विलक्षण भूल और मेरे अपराध के कारण सपरिश्रम निर्वासन दण्ड दिया गया। मैं अभी-अभी प्रासयूरर के पास से और जेलों से होकर आ रहा हूँ, पर जेल में मुझे नहीं जाने दिया गया। पर मैंने निश्चय कर लिया है कि मैं उससे भेंट करूँगा, उसके आगे अपना अपराध स्वीकार करूँगा और उसके प्रायश्चित्त के लिए यदि मुझे विवाह भी करना पड़ेगा तो वह भी करूँगा। भगवन्, मेरी सहायता करो! मेरी आत्मा शान्त है, और मेरे हर्ष की सीमा नहीं है।"
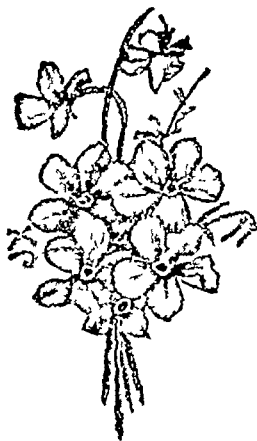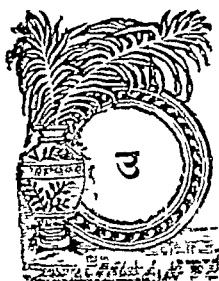
स रात को मसलोवा बहुत देर तक पड़ी-पड़ी उस दरवाज़े की ओर ताकती रही, जिसके आगे पादरी की लड़की चहलक़दमी कर रही थी। वह चिन्ता-मग्न थी। वह सोच रही थी कि वह साखालिन में किसी क़ैदी के साथ विवाह करने को किसी प्रकार उद्यत न हो सकेगी। हाँ, किसी जेली अफ़सर के साथ, किसी क्लर्क के साथ, किसी वार्डर के साथ या किसी वार्डर के सहकारी तक के साथ वह किसी न किसी तरह मामला ठीक कर लेगी। "क्या और सबने इसी तरह विवाह नहीं कर लिया? बस, मुझे दुबली न होना चाहिए, नहीं तो मैं कहीं की न रहूँगी।"

उसे याद आया कि किस प्रकार उसके ऐडवोकेट ने उसकी ओर देखा था, और ख़ुद प्रेसीडेण्ट ने भी, और उन लोगों ने जो उसे रास्ते में मिले थे, और उन सबने जो जान-बूझ कर कचहरी तक चले आए थे। उसे याद आया कि किस प्रकार एक दिन जेल

में उसकी सहेली वर्था उससे मिलने आई थी और उसने कहा था कि वह विद्यार्थी, जिसे वह किटीवा के कोठीख़ाने में रहते समय 'चाहती' थी, आया था और उसकी ख़बर सुन कर बड़ा दुःखी हुआ था। उसे लाल बालों वाली स्त्री की लड़ाई की याद आई और उसे उस पर तरस आया। उसे रोटी वाले की याद आई, जिसने उसे एक रोटी अधिक भेज दी थी। उसे और बहुत से आदमियों की याद आई, पर निखल्यूडोव की याद एक बार न आई। वह अपने शैशव और यौवन-काल तथा निखल्यूडोव के साथ अपने प्रेम-व्यापार की बात कभी स्मरण न करती थी। यह सब इतना व्यथा-कारी था कि वह उसे सहन न कर सकती थी। उसने इन सारी स्मृतियों को अपनी आत्मा के किसी गम्भीर गह्वर में छिपा डाला था; वह उन्हें भूल गई थी और उनका स्मरण करना तो क्या, कभी स्वप्न तक न देखती थी। आज अदालत में वह उसे पहचान न सकी, कुछ इसलिए नहीं कि जब उसने उसे अन्तिम वार देखा था तो वह वर्दी पहने था, उसके दाढ़ी न थी, छोटी-छोटी मूँछें थीं, और छोटे-छोटे घुँघराले बाल थे, और अब वह चँदुला था और उसके दाढ़ी थी, पर इसलिए कि वह उसके सम्बन्ध में कभी कुछ न सोचती थी। उसने उससे सम्बन्ध रखने वाली स्मृतियों को उस गम्भीर, भीषण रात्रि के गर्भ में दफ़ना दिया था, जब वह सेना से वापस आते हुए, बुआओं के यहाँ रुके बिना रेल में आगे को चला गया था; उस समय कटूशा जानती थी कि वह गर्भिणी है। जब तक उसे आशा रही कि वह आएगा, तब तक उसे अपने हृदय के नीचे के उस नन्हें से पदार्थ का कोई भार नहीं मालूम

होता था, और बहुधा वह अपने पेट में उसकी मृदुल गति की अनुभूति करके विस्मित और उद्वेलित हो उठती थी। पर उस रात को सब कुछ बदल गया और वह बच्चा केवल भार-स्वरूप रह गया।

निखल्यूडोव की बुआओं को उसके आने की आशा थी। उन्होंने उससे जाते समय अपने पास हो जाने का पत्र लिख कर अनुरोध किया था ; पर उसने तार द्वारा उन्हें सूचित कर दिया था कि वह न आ सकेगा, क्योंकि उसे नियत समय पर पीटर्सबर्ग पहुँचना है। जब कटूशा को यह मालूम हुआ तो उसने स्वयं स्टेशन पर जाकर उससे मिलने का निश्चय किया। गाडी रात के दो बजे आती थी। कटूशा ने वृद्धा महिलाओं को सुला कर बावर्चिन की नन्हीं लड़की माश्का को अपने साथ चलने को राज़ी किया और इसके बाद अपने सिर पर शाल डाल कर और पुराने जूते पहन कर, अपनी पोशाक हाथ में पकडे, स्टेशन को भागी।

हेमन्त की गर्म रात थी, पानी बरस रहा था। कभी मूसलाधार बरसने लगता, कभी बिल्कुल बन्द हो जाता। कटूशा को खेतों में से मार्ग दिखाई न देता, और जङ्गल में से होकर जाना बहुत ही कठिन था, क्योंकि वहाँ घना अँधेरा छाया हुआ था, अतः वह आगे भूल गई और उस छोटे स्टेशन पर—जहाँ गाड़ी केवल तीन मिनट रुकती थी, केवल उस समय पहुँची जब दूसरी घण्टी हो चुकी थी। कटूशा दौडती हुई प्लेटफ़ार्म पर पहुँची और वहाँ उसे फर्स्ट क्लास की खिड़की पर सबसे पहले वही दिखाई पडा। इस डिब्बे मे ख़ूब प्रकाश हो रहा था। दो अफ़सर मख़मल की सीटों पर बैठे हुए ताश खेल रहे थे और उनके बीच में मेज़ पर

मोटी, झडती हुई मोमबत्तियों के दो कण्डील रक्खे हुए थे। वह तङ्ग बिजिस और सफेद कमीज़ पहने सीट के हत्थे पर पीछे की ओर झुका हुआ बैठा था और किसी बात पर हँस रहा था। उसे पहचानते ही कट्ूशा ने अपने निर्जीव हाथ से उसकी गाड़ी को थपथपाया। पर ठीक उसी क्षण आख़िरी घण्टी भी बजी और पीछे की ओर धक्का खाकर डिब्बे एक-एक करके खिसकने लगे। एक खिलाड़ी उठा और उसने ताश के पत्ते हाथ में पकडे हुए बाहर की ओर झाँका। कट्ूशा ने फिर थपथपाया और अपना चेहरा खिड़की से सटा दिया, पर गाड़ी बराबर बढ़ती गई। और उसके साथ ही साथ वह भी भीतर की ओर झाँकती हुई आगे बढ़ती रही। अफसर ने खिड़की गिराने की चेष्टा की, पर वह असफल रहा। निखल्यूडोव ने उसे एक ओर को ढकेल दिया और स्वयं खिड़की खोलने लगा। गाड़ी की गति क्षण प्रति क्षण बढ़ रही थी, अतः कट्ूशा को भी अपनी गति तेज़ करनी पडी। गाडी और भी तेज़ हो गई और खिड़की गिर गई। पर इसी क्षण उसे गार्ड ने एक ओर को हटा दिया और स्वयं सवार हो गया। कट्ूशा प्लेटफ़ार्म के भीगे हुए तख़्तों पर भागती गई और जब वह प्लेटफार्म की समाप्ति पर पहुंची तो सीढियों पर से फिसलते-फिसलते बच गई। अब वह गाडी के बग़ल में भागने लगी, यद्यपि फ़र्स्ट क्लास के डिब्बे बहुत पहले ही बीत चुके थे, और अब सेकण्ड क्लास के डिब्बे आ गए, और इसके बाद थर्ड क्लास के—और उत्तरोत्तर शीघ्रता के साथ। पर वह बराबर भागती गई, और जब अन्तिम गाड़ी भी निकल गई तो कट्ूशा उस टैङ्क के पास जा पहुँची, जहाँ एञ्जिनों को पानी पिलाया जाता

था। हवा ज़ोर से चल रही थी जिससे उसका शाल उड़ रहा था और लँहगा टाँगों में लिपट रहा था। अन्त में उसका शाल उड गया, पर वह बराबर भागती गई।

वह नन्हीं लड़की बराबर उसके पीछे लगी आ रही थी; उसने चिल्ला कर कहा—कैटेरीना मिखायलोटना, तुम्हारा शाल उड गया!

कटूशा रुकी, अपना सिर पीछे की ओर किया और उसे पकड़ कर वह ज़ोर-ज़ोर से सिसक कर रोने लगी।

वह चीत्कार कर उठी—चले गए!

उसने स्वगत कहा—"वह जगमगाती हुई गाड़ी में मख़मल की आरामकुर्सी में लेटे हुए हँस-खेल रहे हैं और शराब पी रहे हैं, और मैं यहाँ आँधी-पानी में, कीचड़ में, अन्धकार में खड़ी-खड़ी रो रही हूँ।" वह बैठ गई और इतने ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी कि नन्हीं बालिका भयभीत हो उठी और भीगी होने पर भी उसकी गर्दन में बाँहें डाल कर उससे चिपट गई।

"चलो जीजी, घर चलें।"—नन्हीं लडकी ने कहा।

पर कटूशा का ध्यान उसकी बात की ओर न था; वह मन ही मन कह रही थी—कोई गाडी आवे और मैं एक डिब्बे के नीचे हो रहूँ, और बस फिर सब समाप्त हो जायगा। और उसने यह करने का सङ्कल्प कर लिया, पर इसी समय—जैसा कि उस समय हमेशा होता है, जब किसी तीव्र योजना के बाद शान्ति प्राप्त होने लगती है—वह, उसके गर्भ का बालक—उसी निखल्यूडोव का बालक—सहसा काँपा, धीरे-धीरे अँगडाया और किसी कोमल,

तीक्ष्ण और पतले से पदार्थ के साथ टकराया। और अब से क्षण भर पहले जो कुछ उसे इतना व्यथाकारी प्रतीत हो रहा था कि उसे जीवन तक भारवत् लगने लगा था, निख्ल्यूडोव के प्रति उसकी सारी तिक्तता और प्राण तक देकर उससे बदला लेने की इच्छा—सब बात की बात मे अदृश्य हो गया। वह सयत हो चली; उठी, शाल ओढ़ा और घर की ओर रवाना हो गई।

वह थकी, निर्जीव, कीचड़ से लथपथ और पानी से सराबोर घर लौटी, और बस, उसी दिन से उसकी आत्मा मे वह परिवर्त्तन होने लगा जिसने उसे उसकी वर्तमान अवस्था में ला डाला था। उस भयङ्कर रात्रि के बाद से ईश्वर और साधुता में उसकी आस्था नष्ट हो गई। वह अब तक स्वयम् ईश्वर में आस्था रखती आ रही थी और समझती थी कि दूसरे जीव भी इसी प्रकार आस्था रखते होंगे; पर उस दिन के बाद से उसे दृढ़ विश्वास हो गया कि ईश्वर में किसी की आस्था नहीं है और ईश्वर और उसके विधानों के सम्बन्ध मे जो कुछ कहा जाता है वह सब असत्य और प्रवञ्चना है। जिसे वह प्यार करती थी और जो उसे प्यार करता था—हाँ, वह उसे प्यार करता था, यह वह जानती थी—उसीने उसके साथ विलास करने के बाद उसका परित्याग कर दिया—उसके प्रेम का दुरुपयोग किया। पर तारीफ की बात यह थी कि वह जितने व्यक्तियों को जानती थी उन सब में वही सबसे अच्छा था। और बाक़ी मनुष्य उससे भी गए बीते थे। जब उसकी बुआओं ने—उन धर्म-भीरु पवित्र महिलाओं ने—देखा कि वह अब पहले की तरह मन लगा कर उनकी सेवा नहीं करती है,

तो उन्होने उसे निकाल दिया। और जिस-जिस से उसकी भेंट हुई उनमें से स्त्रियो ने उसका उपयोग आर्थिक सिद्धि के लिए किया, और पुरुषों ने—उस वृद्ध पुलिस-अफ़सर से लगा कर इस जेल के वार्डरों तक ने—उसे आमोद-प्रमोद का साधन मात्र समझा। इस संसार में सारे मनुष्य आमोद-प्रमोद के सिवा और किसी बात की चिन्ता ही नहीं करते। उसकी इस धारणा को उस वृद्ध लेखक ने पूर्णतया दृढ कर दिया था, जिसके साथ वह अपने स्वच्छन्द जीवन के दूसरे वर्ष में रही थी। उसने उसे स्पष्ट रूप से बतला दिया था कि एक मात्र इसी में जीवन का आनन्द निहित है, और वह इसे कवित्वमय और सुन्दर के नाम से पुकारता था।

उसकी धारणा के अनुसार संसार के सारे प्राणी केवल अपने लिए, अपने आमोद-प्रमोद के लिए ही जीते हैं, और ईश्वर तथा सदाचार की बाते प्रवञ्चना मात्र हैं। और यदि कभी उसके चित्त मे सशय उत्पन्न हो उठता और वह आश्चर्य करने लगती कि इस संसार में सारे पदार्थों की व्यवस्था इतनी बुरी तरह क्यों की गई है जिसमे सब पीडित और कष्ट मे रहते हैं, तो वह इस सम्बन्ध में चिन्ता न करना ही अच्छा समझती, और यदि वह विपण्णता की अनुभूति करती तो सिगरेट पी लेती, या शराब के घूँट निगल लेती, या—सबसे अच्छी बात—किसी आदमी के साथ प्रेम-सम्बन्ध कर लेती, और वह विपण्णता नष्ट हो जाती।

खल्यूडोव घर से तड़के ही रवाना हो गया। एक देहाती अपने गाँव से गाड़ी में दूध लाया था और अपने व्यवसाय से सम्बन्ध रखने वाले लहजे में चिल्ला कर कहता जा रहा था—'दूध ले लो!'

वसन्तकालीन वर्षा का आरम्भ कल हो चुका था और अब जहाँ-जहाँ पृथ्वी भरी हुई न थी, वहाँ-वहाँ घास अपना सिर चमका रही थी। उद्यानों में वृक्ष एक नई हरियाली से लसे दिखाई दे रहे थे, और उनकी नन्हीं-नन्हीं कोंपलें खुल रही थीं। दूकानों और घरों की खिड़कियों के दुहरे चौखटे निकाले जा रहे थे और शीशे साफ किए जा रहे थे।

निखल्यूडोव के मार्ग में तेल का भी मार्केट पड़ा। यहाँ एक विशाल जन-समूह दूकानों के आगे फिर रहा था और फटे-पुराने कपड़े पहने आदमी अपने हाथों में फुल बूट लटकाए या कन्धों पर मरम्मत किए पाजामे और वास्कट डाले किसी ग्राहक की खोज में

फिर रहे थे। फैक्टरियों से छुट्टी पाए हुए आदमी साफ कोट और चमकदार बूट पहने, और स्त्रियाँ अपने सिरों से रेशमी रूमाल और कलाबत्तू टँकी जॉकेटे पहने दूकानों के दरवाज़े पर एकत्र होनी शुरू हो गई थीं। पुलिसमैन अपनी वर्दियों मे पीली डोरियाँ लगाए और अपनी पेटियों मे पिस्तौल खोंसे अपनी-अपनी ड्यूटियों पर तैनात थे और अपनी निर्जीवता से छुटकारा पाने के लिए किसी प्रकार की अशान्ति की गन्ध पाने को तैयार खडे थे। भ्रमण-स्थानों के फुटपाथों पर और पुनरुज्जीवित घास में कुत्ते और बच्चे कूद-फाँद मचा रहे थे और धायें बेञ्चों पर बैठी हुई उल्लसित भाव से हँस-बोल रही थीं। सड़कों पर—जो अगल-बगल से अभी तक गीली थीं, पर बीच में सूख चुकी थीं—भारी-भारी गाडियाँ गड-गडाती हुई निकल रही थीं, सवारी गाडियाँ खड़खडाती जा रही थीं, और ट्राम गाड़ियाँ घण्टी बजाती हुई गुज़र रही थीं। गिर्जों के घण्टों से वायु प्रतिध्वनित हो रही थी, और लोग-बाग अपनी रवि-वार की अच्छी पोशाके पहने विभिन्न गिर्जों को जा रहे थे।

गाड़ीवान निखल्यूडोव को जेल तक न ले गया। उसने उसे उस सडक के मोड पर उतार दिया। यह मोड़ जेल से कोई सौ क़दम की दूरी पर था और यहाँ बहुत से आदमी—स्त्री और पुरुष जिनमें से अधिकांश के हाथों में किसी न किसी तरह की पोटरी थी, खड़े थे। दाहिनी ओर कुछ काठ की छोटी इमारतें थी ; बाईं ओर एक दुमञ्जिला मकान था जिस पर एक साइनबोर्ड लगा हुआ था। ईंटों की विशाल इमारत ठीक मध्य में थी, यही जेलखाना था, पर अभी इसके पास किसी को जाने की आज्ञा न थी। एक सन्तरी

इधर-उधर चहलकदमी कर रहा था और जो कोई गुज़रने की चेष्टा करता था उसे डपट कर रोक देता था।

काठ की इमारत के दरवाज़े पर, एक बेञ्च पर एक जेलर सुनहरी टोरियों वाली वर्दी पहने हाथ में नोटबुक और पेन्सिल लिए बैठा था। मुलाकाती आते, जिससे मिलना चाहते उसका नाम बताते, और वह उस नोटबुक में दर्ज कर लेता। निखल्यूडोव ने भी जाकर कैटेरीना मसलोवा का नाम लिखा दिया।

निखल्यूडोव ने पूछा—पर अभी जाने क्यों नहीं देते?

"जेल में प्रार्थना हो रही है। समाप्त होने पर जाने दिया जायगा।"

निखल्यूडोव जन-समुदाय से हट कर एक ओर को हो रहा। एक नङ्गे पाँव वाला आदमी, जिसके कपड़े फटे हुए थे, टोप मसला हुआ था और चेहरे पर लाल धारियाँ पड़ी हुई थीं, भीड़ में से निकल कर जेल की ओर बढ़ने लगा।

सन्तरी ने ज़ोर से कहा—कहाँ जाता है?

पर वह शोहदा सन्तरी की डाँट से ज़रा न सहमा और वापस मुड़ते हुए कहने लगा—क्यों गला फाड़ रहा है! मुझे न जाने देगा तो रुक जाऊँगा। पर इतना चीखना-चिल्लाना क्यों? पट्टा खिलाए बिना मानेगा ही नहीं; मानो कहीं के लाट साहब का बच्चा हो!

जन-समुदाय प्रशंसा-व्यञ्जक ढङ्ग से हँस पड़ा। भीड़ में अधिक-तर फटे-पुराने कपड़े पहने आदमी थे, और उनमें से कुछ तो बिलकुल चीथड़े लादे हुए थे; पर कुछ ऐसे भी थे जो भलेमानुस

दिखाई देते थे। निखल्यूडोव के पास ही एक घुटी चाँद वाला मोटा-ताज़ा, ललमुँहा आदमी हाथ में एक पोटरी लिए खड़ा था, जिसमें सम्भवत बनियान वगैरा थे। निखल्यूडोव ने पूछा कि क्या वह पहली ही दफ़ा आया है। उसने उत्तर दिया कि वह वहाँ हर रविवार को आता है। वह बैंक का द्वार-रक्षक था और अपने भाई से मिलने आता था, जिसे जालसाज़ी में सज़ा हो गई थी। इस मृदुल स्वभाव व्यक्ति ने अपने जीवन की सारी कहानी सुना डाली, और बदले में वह निखल्यूडोव से प्रश्न करने ही जा रहा था कि उनका ध्यान एक विद्यार्थी और एक नक़ाबपोश महिला की ओर आकृष्ट हुआ, जो एक बढ़िया घोड़े वाली रबड़-टायर गाड़ी मे सवार थे। विद्यार्थी के हाथ मे एक बड़ा सा बण्डल था। उसने निखल्यूडोव के पास आकर उससे पूछा कि क्या वह कैदियों को ये रोटियाँ दे सकता है। उसकी भावी पत्नी (उसकी सङ्गिनी) की यही इच्छा है और उसकी भावी पत्नी के माता-पिता ने उन्हें ये रोटियाँ स्वयं ले जाकर क़ैदियों को बाँट आने की सलाह दी है।

निखल्यूडोव ने कहा—"मैं तो यहाँ पहली ही दफा आया हूँ, मुझे कुछ पता नहीं। अच्छा तो यह हो कि आप उस आदमी से जाकर पूछें।" उसने दाहिनी ओर बैठे उस सुनहरी डोरी वाले जेलर की ओर सङ्केत करके कहा।

वे अभी बातचीत कर ही रहे थे कि जेल का विशाल लोह-द्वार खुला और एक अफ़सर एक दूसरे जेलर के साथ बाहर निकला। नोटबुक वाले जेलर ने कहा कि अब मुलाकाती अन्दर जा सकते हैं। सन्तरी एक ओर को हट गया और सारे मुलाक़ाती

दरवाज़े की ओर दौड़ पड़े, मानो उन्हें विलम्ब की आशङ्का हो। जेल के दरवाज़े पर एक जेलर खड़ा-खड़ा भीतर जाने वाले मुलाक़ातियों को उच्च स्वर में गिनने लगा—सोलह, सत्रह, और आदि इत्यादि। एक जेलर द्वार के भीतर खड़ा था और वह भी गिनता जा रहा था। जब वे दूसरे द्वार में प्रवेश करते तो वह जेलर हरेक को अपने हाथ से छू-छू कर गिनता जाता, जिससे न कोई बाहर का आदमी भीतर रह जाय और न भीतर का बाहर निकल जाय। जेलर ने, बिना देखे-भाले कि वह किसे छू रहा है, निख्ल्यूडोव के कन्धे पर हाथ मारा। निख्ल्यूडोव जेलर के हाथ के स्पर्श से क्षुब्ध हो उठा; पर तत्काल ही उसे स्मरण आया कि वह किस लिए वहाँ आया है और वह अपनी उद्विग्नता और असन्तोष पर लज्जित हुआ।

प्रवेश-द्वार के बाद का पहला कमरा काफी बड़ा था, जिसकी छोटी-छोटी खिड़कियों में लोहे की छड़ें लगी हुई थीं। इसे मिलने का कमरा कहा जाता था और इसमें ईसा के प्राणदण्ड का बड़ा सा चित्र देख कर निख्ल्यूडोव स्तम्भ सा रह गया।

उसने मन ही मन कहा—"इसे यहाँ क्यों लटकाया गया?" उसने अनिश्चित भाव से अपने मन में इस चित्र का सम्बन्ध बन्धन से नहीं, मुक्ति से जोड़ा।

वह जल्दबाज़ मुलाक़ातियों के लिए मार्ग छोड़-छोड़ कर धीमी गति से आगे बढ़ने लगा। उसे इस जेल में बन्द दुरात्माओं के प्रति भीति की, कटूशा जैसे निर्दोष व्यक्तियों के प्रति करुणा की और आसन्न भेंट के विचार से उत्पन्न हुई लज्जा और भावावेश

के मिश्रित भावों की अनुभूति हो रही थी। मिलने के कमरे के दूसरे सिरे पर खड़े हुए जेलर ने उधर से गुज़रते हुए आदमियों से कुछ कहा, पर निखल्यूडोव अपने विचारों में इतना तन्मय था कि उसने उसकी बात की ओर कुछ ध्यान न दिया और मुलाकातियों के पीछे-पीछे जेल के स्त्री-विभाग में जाने के स्थान पर पुरुष-विभाग में जा पहुँचा।

निखल्यूडोव ने अधिक उत्सुक व्यक्तियों को पहले जाने दिया और स्वय मिलने के कमरे में सबके पीछे पहुँचा। दरवाज़ा खोलते ही निखल्यूडोव के कानों में सैकड़ों मनुष्यों की कण्ठ-ध्वनि आई और वह इसका कारण तत्काल ही न समझ सका। पर जब वह निकटतर आया तो उसने देखा कि ठीक जिस प्रकार गुड पर मक्खियाँ एकत्र हो जाती हैं—आदमी उस कमरे को दो भागों में विभाजित करने वाली जाली से मुँह अडाए खड़े हैं और एक-दूसरे की ओर देख-देख कर चिल्ला रहे हैं, और इसका कारण अब वह समझ सका। कमरे को दो भागों में विभाजित करने वाली जाली की खिडकियाँ ठीक उस दरवाज़े के सामने पड़ती थीं जिससे निखल्यूडोव ने प्रवेश किया था, और उसने पास आकर देखा कि कमरा एक जाली से नहीं, दो जालियों से विभाजित किया गया है। इन दोनों जालियों के बीच में सात कदम का फ़ासला था और उसमें सिपाही चहलक़दमी कर रहा था। परले सिरे पर कैदी थे, इधर के सिरे पर मुलाक़ाती। इनके बीच में जालियों की दुहरी क़तार थी और सात क़दम का फ़ासला था, अतः कैदियों को कोई चीज़ पकडा सकने की तो बात ही क्या, कोई धुँधले नेत्रों वाला व्यक्ति

दूसरे सिरे के आदमी को पहचान तक न सकता था। बातचीत करना भी बड़ा कठिन था, और एक-दूसरे के पास आवाज़ पहुँचाने के लिए चिल्लाना पड़ता था।

जालियों के दोनों सिरे पर चेहरे ही चेहरे दिखाई देते थे— पति, पत्नी, पिता, माता और सन्तानों के चेहरे—जो एक-दूसरे की आकृति देखने और जो कुछ कहना था उसे इस ढङ्ग से कहने की चेष्टा कर रहे थे कि सुनने वाले की समझ में आ जाय।

पर जिस प्रकार एक व्यक्ति सुनने वाले को अपनी बात सुनाना चाहता था, इसी प्रकार उसका पड़ोसी भी अपने आदमी को कुछ सुनाना चाहता था, और अपनी-अपनी बात सुनाने की चेष्टा में वे एक-दूसरे की आवाज़ को अपनी ऊँची आवाज़ से दबाने का प्रयत्न कर रहे थे, और इसके फल-स्वरूप वह कोलाहल उत्पन्न हो रहा था, जिसे सुन कर निखल्यूडोव शुरू-शुरू में चकित रह गया था। एक-दूसरे की बात सुनना बिलकुल असम्भव था, और यदि एक-दूसरे की बात और उनके आपस के रिश्ते को जानने का कोई उपाय था तो केवल उनकी आकृति की भाव-भङ्गी। निख-ल्यूडोव के पास ही सिर पर रूमाल बाँधे एक बुढ़िया जाली में मुँह गड़ाए काँपती हुई ठोड़ी के साथ परले सिरे पर खड़े हुए एक पीले से युवक से कुछ चिल्ला कर कह रही थी और वह भवें उठाए उसकी बात सुनने की चेष्टा कर रहा था। उस बुढ़िया के पास ही देहाती कोट पहने एक युवक असन्तोष के साथ दूसरे सिरे पर खड़े हुए अपने ही जैसे लड़के की बात सुनने का प्रयत्न कर रहा था। उसकी बगल में चीथड़े लादे एक आदमी हाथ-पाँव हिला-हिला कर चिल्ला और

हँस रहा था। उसके पास सुन्दर ऊनी शाल कन्धे पर डाले, एक बच्चा गोद में लिए एक स्त्री फ़र्श पर बैठी थी और फूट-फूट कर रो रही थी। यह स्पष्ट था कि उसने दूसरे सिरे पर खड़े हुए भूरे बालों वाले आदमी को जेल के कपड़े पहने और सिर मुँड़ाए पहली ही बार देखा था। उसके परली ओर वह बैंक का द्वार-रक्षक था जिसने बाहर निखल्यूडोव से बातचीत की थी। वह भरसक ज़ोर लगा कर परले सिरे पर खड़े हुए भूरे सिर वाले क़ैदी से कुछ कह रहा था।

जब निखल्यूडोव ने सोचा कि उसे भी इसी प्रकार बोलना पड़ेगा तो उसके हृदय में उन सबके प्रति क्रोध का उद्रेक हो उठा जो इस प्रकार के नियम बना सकते थे और अमल में ला सकते थे; उसे यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि ऐसी भयानक परिस्थिति में पड़ने पर इनमें से कोई आदमी मानवी भावों के बलात्कार पर क्रुद्ध दिखाई न देता था। सिपाही, इन्सपेक्टर और क़ैदी—एक सिरे से सब ऐसा भाव दिखा रहे मानों वे स्वीकार करते हों कि यह नितान्त आवश्यक है।

निखल्यूडोव इस कमरे में कोई पाँच मिनट तक खड़ा रहा उसे बड़ी विषण्णता की अनुभूति हो रही थी और उसे बोध हो रहा था कि वह स्वयं कितना अशक्त है और संसार के अन्य जीवों से वह कितनी दूर जा पड़ा है। उसको एक कौतूहलजनक नैतिक ग्लानि की अनुभूति होने लगी, जिसकी समता समुद्र-रोग के भौतिक सवेदन के साथ की जा सकती थी।
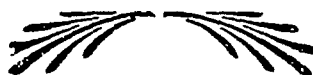
न्त में उसने साहस संचय करके कहा—"अच्छा, तो अब मैं जिस लिए आया हूँ वह करना चाहिए।" उसने चारों ओर निगाह दौड़ा कर किसी अफ़सर की खोज की, और जन-समुदाय के पीछे एक पतले-दुबले नन्हें से आदमी को अफ़सरों की वर्दी पहने टहलते देख कर वह उसके पास पहुँचा।

उसने अत्यन्त विनीत भाव से कहा—महोदय, क्या आप दया करके बताएंगे कि स्त्रियाँ कहाँ रक्खी जाती हैं, और उनके भेंट करने का स्थान कौन सा है?

"आप स्त्रियों की तरफ़ जाना चाहते हैं।"

निखल्यूदोव ने उसी प्रकार संयत विनीत भाव से कहा—जी हाँ, मुझे एक स्त्री क़ैदी से मिलना है।

"तो यह आपको तभी कह देना चाहिए था जब आप हॉल में थे। आप किससे मिलना चाहते हैं?"

"मैं कैटेरीना मसलोवा नाम की क़ैदी से मिलना चाहता हूँ।"

"वह राजनीतिक कैदी है ?"

"जी नहीं, यही साधारण × × ×"

"ठीक, और उसे दण्ड मिल गया है ?"

"जी हाँ, परसों।" निखल्यूडोव ने उसी प्रकार विनीत भाव से कहा। उसे आशङ्का थी कि कहीं उक्त अफसर की अनुकूल प्रकृति नष्ट न हो जाय, अतः वह उसके सारे प्रश्नों का उत्तर देता गया।

अफसर ने उसके रङ्ग-ढङ्ग से निर्णय किया कि वह उसकी कृपा का अधिकारी है, और उसने कहा—"अगर आप स्त्रियों की ओर जाना चाहते हैं तो इस ओर को आइए। सिडेरोव, आपको स्त्रियों की ओर ले जाओ।" उसने एक मूँछों वाले कारपोरल से कहा, जिसकी छाती पर एक तमगा लटका हुआ था।

कारपोरल निखल्यूडोव को आदमियों वाले कमरे में से बरामदे में ले गया, और वहाँ से बिलकुल दूसरी ओर एक दरवाज़े मे से ले जाकर स्त्रियों वाले कमरे में पहुँचा आया।

यह कमरा भी आदमियों के कमरे की तरह ही दो भागों में विभाजित किया गया था, पर यह उसकी अपेक्षा छोटा था। इसमें मुलाकाती भी अपेक्षाकृत थोड़े थे और कैदी भी, पर शोर-गुल का वही हाल था। इसमे भी सरकारी व्यक्ति जालियों के मध्य स्थान में उसी प्रकार चहलक़दमी कर रहा था, पर यहाँ पुरुष न था, एक स्त्री वार्डर थी, जिसकी वर्दी के किनारे नीले थे और जिसकी आस्तीनों पर सुनहरी डोरियाँ लगी हुई थी। आदमियों वाले कमरे की तरह यहाँ भी दोनों ओर से आदमी जालियों से मुँह अड़ाए

खड़े थे। इस ओर तरह-तरह की पोशाकें पहने शहरी स्त्री-पुरुष, उस ओर क़ैदी स्त्रियाँ, कुछ जेल के कपड़े पहने, कुछ अपने रङ्ग-बिरङ्गे कपड़े धारण किए। जितनी दूरी में जाली लगी हुई थी उसके छोर से छोर तक आदमी फैले हुए थे। कुछ बाकी लोगों के ऊपर से झाँकने के लिए पञ्जों के बल खड़े हो रहे थे और कुछ फर्श पर बैठ कर बातें कर रहे थे।

क़ैदियों में सब से अधिक उल्लेखनीय क़ैदी, अपने तीक्ष्ण चीत्कार और अपने रङ्ग-ढङ्ग दोनों की दृष्टि से, एक बिखरे बालों वाली पतली-दुबली नटनी थी। उसके घुँघराले बालों पर से उसका रूमाल खिसक गया था और वह क़ैदियों वाले भाग में खड़ी हुई मुलाक़ातियों वाले भाग में खड़े एक नीले कपड़े पहने नट की ओर जल्दी-जल्दी इशारे करके कुछ चिल्ला रही थी। इस नट के पास ही एक सिपाही बैठा एक स्त्री क़ैदी से बातें कर रहा था, सिपाही के पास ही सुन्दर सी दाढ़ी वाला एक देहाती युवक उत्तेजित चेहरा किए खड़ा था और अपने आँसू रोकने का प्रयास कर रहा था। उज्ज्वल नीले नेत्रों और सुन्दर बालों वाली एक सुन्दरी क़ैदी उससे बातें कर रही थी। ये दोनों थियोडोसिया और उसके पति थे। उनके बाद एक शोहदा खड़ा हुआ एक चौड़े चेहरे वाली स्त्री से बातें कर रहा था। उसके बाद दो स्त्रियाँ थीं, फिर एक पुरुष, फिर एक स्त्री, और सबके आगे एक-एक क़ैदी स्त्री। मस्लोवा उनमें न थी, पर खिड़की के पास कोई स्त्री खड़ी थी और निख्ल्यूदोव ने जान लिया कि यह वही है। उसका हृदय ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा और उसके श्वास की गति अवरुद्ध होने लगी और...

उसे अनुभूति हुई कि अब निर्णयात्मक अवसर आ पहुँचा है। वह जाली के पास पहुँचा और उसे पहचान लिया। वह नीले नेत्रों वाली थियोडेसिया के पीछे खड़ी-खड़ी उसकी बात सुन कर मुस्करा रही थी। इस समय वह क़ैदियों का चोग़ा न पहने थी, बल्कि एक सफ़ेद पोशाक पहने हुए थी जिसकी कमर में पेटी कसी हुई थी। उसकी छातियाँ पूरी तरह उभरी हुई थीं। सिर के रूमाल में से, अदालत ही की तरह, दो-एक काले गुच्छे निकले हुए थे।

निखल्यूडोव ने मन ही मन कहा—बस, क्षण भर में सब कुछ तय हो जायगा। मैं आवाज़ दूँ या ख़ुद आ जायगी?

मसलोवा अपनी सहेली बर्था की बाट देख रही थी, उसकी कल्पना तक में यह बात न आई थी कि यह आदमी उससे मिलने आया है।

जालियों के बीच में चहलकदमी करती हुई स्त्री वार्डर ने निखल्यूडोव के पास आकर पूछा—किससे मिलना है।

निखल्यूडोव ने प्रयास कर कहा—कैटेरीना मसलोवा से।

स्त्री वार्डर चिल्लाई—कैटेरीना मसलोवा, तुमसे कोई मिलने आया है।

मसलोवा ने चारों ओर दृष्टि दौडाई और इसके बाद वह अपना सिर पीछे की ओर करके और सीना फुला कर जाली के पास उस तत्परता के साथ आ पहुँची जिससे निखल्यूडोव भली प्रकार परिचित था। उसने दो स्त्री कैदियो के बीच मे धँस कर निखल्यूडोव की ओर विस्मित और प्रश्नात्मक दृष्टि से देखा। पर उसके कपड़ों से अनुमान करके कि वह कोई धनी आदमी है, वह मुस्कराई।

उसने अपनी बाँकी चितवन वाले नेत्रों को जाली के पास लाकर मुस्काते हुए कहा—क्यों, मुझे बुलाते थे ?

"मैं...मैं . मैं तुमसे मिलना चाहता था . ...मैं तुम से. . मैं ।" वह स्वाभाविक स्वर से अधिक ज़ोर से न बोल रहा था ।

उसके पास खड़े शोहदे ने चिल्ला कर कहा—मुझे भी चकमा देने चली है । बता, तूने की थी या नहीं ?

दूसरी ओर से कोई चिल्ला रही थी—वह कमज़ोर है, मर रही है ।

मसलोवा निखल्यूदोव की बात तो न सुन सकी, पर उसकी बोलते समय की मुद्रा ने मसलोवा को किसी ऐसी चीज़ का स्मरण करा दिया जिसे वह याद करना न चाहती थी । उसके चेहरे से मुस्कराहट गायब हो गई और उसके माथे पर व्यथा-वेदना की एक गहरी रेखा खिच गई ।

उसने भृकुटी चढ़ाते हुए और अधिकाधिक तेवर बदलते हुए चिल्ला कर कहा—मुझे तुम्हारी बात सुनाई नहीं देती ।

निखल्यूदोव ने कहा—मैं इसलिए आया हूँ × × × ।

वह मन ही मन कहने लगा—"हाँ, मैं अपना कर्तव्य-पालन कर रहा हूँ—अपराध स्वीकार कर रहा हूँ ।" और इस विचार मात्र से उसके नेत्रों में आँसू आ गए और उसका कण्ठ अवरुद्ध सा होने लगा । उसने जाली को दोनों हाथों से पकड़ कर अपने आपको फूट फूट कर रो पड़ने से रोका ।

उसके पास से किसी ने चिल्ला कर कहा—वह यहाँ होती तो मैं न आता ।

दूसरी ओर से एक कैदी स्त्री चिल्लाई—ईश्वर गवाह है, मैं कुछ नहीं जानती।

मसलोवा ने उसकी उत्तेजना देखी और अब वह उसे पहचान गई।

"तुम तो × × × पर नहीं, मुझे याद नहीं पड़ता!"—उसने नीची निगाह करके चिल्ला कर कहा; और उसका उत्तेजित चेहरा और भी विषएण हो उठा।

निखल्यूडोव ने कण्ठस्थ पाठ की तरह, विषएणतापूर्ण स्वर में जोर से कहा—"मै तुमसे क्षमा-प्रार्थना करने आया हूँ"—पर ये शब्द कहते-कहते वह अस्त-व्यस्त हो उठा और उसने चारो ओर निगाह दौड़ाई; पर तत्काल ही उसके मन में विचार उत्पन्न हुआ कि यदि लज्जा की अनुभूति होती है तो और भी अच्छा—उसे इस लाञ्छना को सहन करना पडेगा और उसने ज़ोर से कहा— 'मुझे क्षमा करो, मैंने तुम्हारे साथ घोर अन्याय किया है।"

वह उसकी ओर एकटक देखती हुई निश्चेष्ट भाव से खडी रही।

निखल्यूडोव और अधिक न बोल सका और जाली के पास से हट कर उसने अपने कण्ठ में प्रबल वेग से उठती हुई सिसकियों को दबाने की चेष्टा की।

जिस इन्सपेक्टर ने निखल्यूडोव को यहाँ भेजा था और जिसे उसमें कुछ दिलचस्पी सी पैदा हो गई दिखाई देती थी, वह भी इस समय यहाँ आ पहुँचा और निखल्यूडोव को अलग खडा देख कर पूछने लगा कि वह जिस स्त्री से बातचीत करना चाहता था

उससे अब क्यों नहीं करता। निखल्यूडोव ने नाक साफ़ की, और फुरहरी लेकर शान्त भाव दिखाने की चेष्टा करते हुए कहा—इन जालियों में से तो बड़ी असुविधा होती है; कुछ सुनाई नहीं पड़ता।

इन्सपेक्टर ने क्षणभर विचार किया और कहा—"उसे कुछ देर के लिए यहाँ लाया जा सकता है।" उसके बाद उसने स्त्री वार्डर की तरफ़ मुख़ातिब होकर कहा—मेरी कारलोटना, मसलोवा को यहाँ ले आ।

क मिनट बाद मसलोवा बगल के दरवाज़े से वहाँ आ पहुँची। वह धीमी गति से चलती हुई निखल्यूडोव के पास आई, रुकी और अपनी भवों के नीचे से उसकी ओर देखने लगी। उसके काले बाल इस समय भी माथे पर गुच्छों के रूप में उसी प्रकार बँधे हुए थे जिस प्रकार अब से दो दिन पहले बँधे थे; उसका चेहरा अस्वस्थ और फूला हुआ होने पर भी मनोहारी और पूर्ण शान्त दिखाई दे रहा था, पर उसके उज्ज्वल काले नेत्र अपने फूले पलकों में से उसकी ओर विलक्षण दृष्टि से देख रहे थे।

इन्सपेक्टर ने कहा—आप यहाँ बातें कर सकते हैं। और इसके बाद वह वहाँ से हट गया। निखल्यूडोव दीवार के सहारे रक्खी हुई बेन्च की ओर बढ़ा।

मसलोवा ने इन्सपेक्टर की ओर प्रश्नात्मक दृष्टि से देखा, और फिर वह आश्चर्य के साथ अपने कन्धे उचका कर निखल्यू-डोव के पीछे-पीछे बेञ्च तक गई और अपना लँहगा समेट कर उसके पास बैठ गई।

साथ सम्बद्ध किया जिसे वह प्यार करती थी ; पर जब उसे अनुभूति हुई कि इससे उसके हृदय को व्यथा हो रही है तो उसने दोनों व्यक्तियों को अलग-अलग कर दिया । अब यह बढ़िया कपड़े पहने, दाढ़ी में सुगन्धि लगाए कुलीन निखल्यूडोव वह निखल्यूडोव न था जिसे वह प्यार करती थी, बल्कि उन अगणित पुरुषों में से एक था जो आवश्यकता पडने पर उसके जैसे जीवों का उपयोग करते हैं, और जिन्हे उसके जैसे जीव भी अपनी बारी में यथासम्भव लाभकारी ढङ्ग से उपयोग में लाते हैं, और यही कारण था जो वह उसकी ओर इतने वशीकरण ढङ्ग से मुस्कराई थी। वह चुपचाप बैठी-बैठी सोचने लगी कि उसे किस प्रकार अच्छे से अच्छे ढङ्ग से उपयोग में ला सकेगी।

अन्त में वह बोली—"अब सब समाप्त हो गया। मुझे साइबेरिया का दण्ड दिया गया है।" और ये भयङ्कर शब्द कहते-कहते उसके ओंठ काँप उठे।

निखल्यूडोव ने कहा—मैं जानता था, मुझे दृढ विश्वास था कि तुम निर्दोष थीं।

"निर्दोष नहीं तो क्या! मानो मैं चोर या डाकू बनती। यहाँ कहते हैं कि अपील करनी चाहिए। सारी बातें ऐडवोकेट के हाथ में हैं ; पर ख़र्च बहुत पड़ेगा।"

निखल्यूडोव ने कहा—मैंने एक ऐडवोकेट से पहले से ही कह रक्खा है।

वह बोली—रुपए-पैसे का मोह न करना चाहिए, अच्छा वकील हो।

"मै कुछ उठा न रक्खूँगा।"

दोनों चुप हो गए और वह फिर उसी ढङ्ग से मुस्कराई।

सहसा वह कह उठी—और मुझे तुमसे कुछ और भी कहना है × × हो सके तो कुछ रुपया दे दो × × अधिक नही, दस रुबल।

"हाँ, लो।"—निखल्यूडोव ने किञ्चित अस्त-व्यस्त होकर जेबें टटोलते हुए कहा।

मसलोवा ने आतुर भाव से इन्सपेक्टर की ओर देखा, जो चहलक़दमी कर रहा था।

"इसके सामने मत दो, नही तो छीन लेगा।"

"निखल्यूडोव ने इन्सपेक्टर के पीठ फेरते ही अपनी पॉकेट-बुक निकाल ली, पर अभी उसे उसमें से नोट निकाल कर मसलोवा को देने का अवसर न मिला था कि इन्सपेक्टर फिर इधर हो गया और उसने नोट अपने हाथ ही में दबा रक्खा।

निखल्यूडोव ने उसके चेहरे की ओर देखा, जो इस समय हतश्री हो गया था और फूल सा गया था। उसके उन तिरछे काले नेत्रों में दूषित ज्योति चमक रही थी जो कभी उसके हाथ की ओर देखते थे और कभी इन्सपेक्टर की गति-विधि लक्ष्य कर रहे थे। उसने मन ही मन कहा—"यह स्त्री मर गई।" और वह क्षण भर के लिए सङ्कोच में पड़ गया। जो प्रलोभक पिछली रात में उसकी अन्तर्ध्वनि के विरुद्ध बोल रहा था, उसने एक बार फिर बल प्राप्त कर लिया और वह एक बार फिर उसे उसके आन्तरिक जीवन से निकाल कर बाह्य जीवन के क्षेत्र में लाने की चेष्टा करने लगा, जिसमें यह चिन्ता न करनी पड़ेगी कि उसे क्या करना चाहिए, और उसका एकमात्र

सम्पर्क इस बात से रह जायगा कि इस कार्य का परिणाम क्या होगा और यह कार्य व्यवहार्य भी है या नहीं।

इस प्रलोभक ने कहा —तुम इस स्त्री का कुछ उपकार नहीं कर सकते। तुम अपने गले में पत्थर लटका रहे हो, जो तुम्हें भी ले डूबेगा। क्या यह अच्छा न रहेगा कि इस समय तुम्हारे पास जो कुछ रुपया है इसे दे डालो, सलाम करो, और फिर इधर आने का नाम तक न लो?

पर साथ ही उसे अनुभूति हुई कि इसी क्षण उसके अन्तराल में एक महत्वपूर्ण घटना घटित हो रही है—उसका आन्तरिक जीवन इस समय दो पलड़ों की तराज़ू में रक्खा है और तनिक सा भी प्रयास पलड़ा को किसी ओर को झुका देगा। उसने इस प्रयत्न में उस परमात्मा की सहायता की याचना की, जिसकी उपस्थिति की अनुभूति कल वह अपनी आत्मा में कर रहा था, और परमात्मा ने तत्काल उसकी याचना स्वीकार की। उसने निश्चय किया कि वह उससे सारी बातें कह डालेगा—और अभी।

उसने कहा—कटूशा, मैं तुमसे क्षमा-याचना करने आया हूँ और तुमने मुझे कोई उत्तर नहीं दिया। बोलो, तुमने मुझे क्षमा कर दिया या नहीं? तुम मुझे कभी क्षमा कर सकोगी भी या नहीं?

पर मसलोवा का ध्यान उसकी बातों की ओर न था। वह इन्सपेक्टर की ओर देख रही थी, और ज्योंही उसने पीठ फेरी कि उसने अपना हाथ फैला दिया और नोट लेकर झटपट अपनी पेटी में खोंस लिया।

उसने घृणा-व्यञ्जक—कम से कम निखल्यूडोव को यही प्रतीत हुआ—मुस्कराहट के साथ कहा—कैसी अजीव बात है; तुम कह क्या रहे हो ?

निखल्यूडोव को बोध हुआ कि इस समय मसलोवा की आत्मा में एक ऐसी शक्ति छिपी हुई है जो उसकी (निखल्यूडोव की) विरोधिनी है, और जो उसे (मसलोवा को) उसकी वर्तमान अवस्था में सहायता प्रदान कर रही है और उसे (निखल्यूडोव को) उसके (मसलोवा के) हृदय तक पहुँचने से रोक रही है। पर कितनी विलक्षण बात थी कि इससे उसे किसी प्रकार की अरुचि नहीं हुई, बल्कि वह उसकी ओर एक नवीन, विलक्षण शक्ति के द्वारा खिचा चला गया। वह जानता था कि उसे अपनी आत्मा को जागृत करना चाहिए, कि यह नितान्त कष्टसाध्य कार्य है, पर उसकी कष्टसाध्यता की ओर वह और भी अधिक आकृष्ट होता गया। इस समय उसके हृदय में उसके प्रति ऐसी अनुभूति हो रही थी जैसी पहले कभी उसके या और किसी के प्रति न हुई थी। उसके भावों में व्यक्तित्व से सम्बन्ध रखने वाली कोई बात न थी, वह केवल इतना ही चाहता था कि मसलोवा वह न रहे जो अब है, बल्कि एक बार फिर वही हो जाय जो पहले थी।

"कटूशा, तुम किस तरह की बातें कर रही हो? मैं तुम्हें जानता हूँ—मुझे तुम्हारी याद है—और मैं पनोवो के बीते दिनों को अभी भूला नहीं हूँ।"

मसलोवा ने शुष्क भाव से उत्तर दिया—पिछली बातें याद करने में रक्खा ही क्या है ?

"मैं उन बातों को इसलिए याद कर रहा हूँ कि जिससे मैं अपने पाप का प्रायश्चित्त कर सकूँ, कट्टशा!"—वह कहनेवाला था कि वह उसके साथ विवाह करेगा, पर जब उसने उसके नेत्रो मे झाँका तो उनमे कुछ ऐसी भयङ्कर, ऐसी अपरिष्कृत और ऐसी गर्हित बात पढी कि वह और कुछ न कह सका।

इसी समय मुलाकाती जाने शुरू हो गए। इन्सपेक्टर निखल्यूडोव के पास आया और बोला कि समय समाप्त हो चुका।

निखल्यूडोव ने मसलोवा की ओर अपना हाथ बढाते हुए कहा—अच्छा सलाम, मुझे तुमसे बहुत कुछ कहना है, पर तुम देख ही रही हो कि इस समय यह कितना असम्भव है। फिर कभी आऊँगा।

मसलोवा विनम्र भाव से उठ खड़ी हुई और छुट्टी मिलने की बाट देखने लगी।

"मैंने तो समझा था कि तुम सारी बाते कह चुके।"—उसने निखल्यूडोव का हाथ पकड तो लिया, पर दबाया नहीं।

निखल्यूडोव ने कहा—न, मैं तुमसे फिर मिलने की चेष्टा करूँगा और किसी ऐसी जगह जहाँ हमारी-तुम्हारी बातें हो सकें, और तब मै तुमसे अपने मन की कुछ बात कहूँगा—कुछ बहुत जरूरी बात।

"अच्छी बात है, आइएगा; क्यों नहीं?"—उसने उत्तर दिया, और वह इस मुस्कराहट के साथ मुस्कराई जिसे वह उन पुरुषों को प्रदान किया करती थी जिन्हें वह प्रसन्न करना चाहती थी।

निखल्यूडोव ने कहा—तुम मेरे लिए बहिन से ज्यादा हो।

उसने सिर हिला कर कहा—"यह तो बडी विचित्र बात है।" और वह जाली के पीछे चली गई।

स भेंट से पहले तक निखल्यूडोव की धारणा थी कि जब कट्टशा उसे देखेगी और जानेगी कि वह उसकी सेवा करना चाहता है तो वह हर्षित और उद्वेलित हो उठेगी और एक बार फिर पहले जैसी कट्टशा हो जायगी, पर यह देख कर उसके हृदय की बुरी अवस्था हुई कि अब कट्टशा का कहीं नाम-निशान नहीं है और अब उसका स्थान मसलोवा ने ले लिया है। इससे वह चकित भी हुआ और भय-विह्वल भी।

उसे सबसे अधिक आश्चर्य इस बात ने हुआ कि कट्टशा अपनी अवस्था पर तनिक भी लज्जित नहीं है (कैदी की अवस्था नहीं, वह उस पर लज्जित है), बल्कि अपनी वेश्यावृत्ति की अवस्था पर—उलटे वह सन्तुष्ट और गर्वित दिखाई देती है। पर इसका अन्यथा होना सम्भव ही न था। हर एक आदमी, भली प्रकार आचरण करने के लिए, अपनी संलग्नता को महत्वपूर्ण और उत्तम

समझने को बाध्य हो जाता है। फलतः आदमी चाहे जिस अवस्था में हो, वह मानव जाति के जीवन के सम्बन्ध में हमेशा ऐसी धारणा क़ायम करेगा, जिससे उसकी संलग्नता महत्वपूर्ण और उत्तम दिखाई दे।

साधारणतया यह समझा जाता है कि चोर, हत्यारा, जासूस या रण्डी अपने व्यवसाय को दूषित समझ कर उस पर लज्जित भी होते होंगे। पर बात इससे बिलकुल विपरीत है। जिन लोगों को उनका भाग्य या उनका पापाचरण एक ख़ास स्थिति में ला डालता है वे जीवन-सम्बन्धी कुछ ऐसी धारणा बना लेते हैं जो उनकी स्थिति को उनकी दृष्टि में अच्छा और औचित्यपूर्ण स्वरूप दे देती है। और इस प्रकार की धारणा अक्षुण्ण रखने के लिए ये लोग उन्ही वर्गों में सम्मिलित होते हैं जिनकी धारणाएँ उन्हीं जैसी होती हैं और जिनकी सामाजिक स्थिति का उनकी सामाजिक स्थिति के साथ कुछ सामञ्जस्य होता है। जब हम चोरों को अपने हाथ की सफाई की डींग हाँकते, रण्डियों को अपनी भ्रष्टता का मिथ्या गर्व करते और हत्यारों को अपनी निर्ममता की शेख़ी बघारते देखते हैं तो हमारे आश्चर्य का वारापार नहीं रहता। पर वास्तव में हमें आश्चर्य इसलिए होता है कि जिस वर्ग और जिस वातावरण में ये लोग रहते हैं वह सीमित होता है, और विशेष रूप से इसलिए कि हम उसके बाहर होते हैं। जब हम धनिकों को अपनी वसुधा—दस्यु वृत्ति—की डींग हाँकते देखते है, सेनापतियों को अपनी विजयो—हत्या-काण्डों—पर गर्व करते पाते हैं; और उच्च पदस्थ व्यक्तियों को

अपने अधिकारों की—अत्याचारों और अनाचारों की—शेख़ी मारते देखते हैं तो क्या हमें ठीक इसी प्रकार के प्रदर्शन के दर्शन नहीं होते ? हम जो इन व्यक्तियों की जीवन-सम्बन्धी धारणाओं में विकृति की गन्ध नहीं पाते, इसका मुख्य कारण यह है कि इनका वर्ग बड़ा है और हम ख़ुद उसमें शामिल हैं।

बस, मसलोवा ने जीवन और अपनी अवस्था के सम्बन्ध में इसी प्रकार की धारणा निर्णीत कर रक्खी थी। वह रण्डी थी और उसे निर्वासन दण्ड दिया गया था। पर इतने पर भी जीवन के सम्बन्ध में उसने ऐसी धारणा निश्चित कर रक्खी थी, जिसके द्वारा उसके लिए न केवल अपनी अवस्था पर सन्तुष्ट होना ही सम्भव हो सका था, बल्कि गर्व करना भी।

और इस धारणा के अनुसार सारे पुरुषों—वृद्धों, युवकों, स्कूल के विद्यार्थियों, जनरलों, शिक्षितों और अशिक्षितों—के लिए केवल एक ही कल्याणकारी कार्य हो सकता था, सुन्दर स्त्रियों के साथ काम-वासना चरितार्थ करना। अतएव सारे पुरुष दिखावट में चाहे किसी और ही कार्य में संलग्न रहें, उनकी एकमात्र मनोभिलाषा यही रहती है। वह सुन्दर स्त्री थी और इस अभिलाषा की तुष्टि करना या न करना उसके हाथ में था, अत. वह एक आवश्यक और महत्त्वपूर्ण व्यक्ति थी। और उसका पहले का और अब का सारा जीवन इस धारणा का समर्थन करता था।

अपने जीवन के पिछले दस वर्षों में वह जहाँ कहीं गई, उसने देखा कि पुरुष मात्र—निखल्यूडोव और वृद्ध पुलिस-अफ़सर से लगा कर जेल के जेलरों तक—उसकी कामना करते हैं, क्योंकि

उसने न उन लोगो को देखा था और न उनकी ओर कोई ध्यान ही दिया था जो उसकी कामना न करते थे। अतएव उसे सारा संसार ऐसे पुरुषों से और केवल ऐसे ही पुरुषों से भरा दिखाई देता था जो कामाग्नि से व्याकुल हो रहे थे, जो प्रवञ्चना, पाशविक प्रयोग, अनुसरण या धूर्तता—सारे सम्भव साधनो के द्वारा उस पर अधिकार करना चाहते थे। जीवन के सम्बन्ध में मसलोवा ने यही धारणा स्थिर की थी, और उस धारणा की दृष्टि से वह निम्नतम व्यक्ति न थी, एक अत्यन्त महत्वपूर्ण व्यक्ति थी। और मसलोवा इस धारणा का मूल्य संसार की अन्य सारी वस्तुओं से अधिक समझती थी, मूल्य समझने के सिवा और कोई गति ही नहीं थी, क्योंकि जहाँ एक बार जीवन सम्बन्धी यह धारणा नष्ट हुई कि इससे प्राप्त होने वाली महत्ता से वह वञ्चित हो जाती। और जीवन की इस व्याख्या से वञ्चित न होने के लिए वह स्वत. ही उस वर्ग से लिपटे रहना पसन्द करती थी, जो जीवन को इसी दृष्टि-कोण से देखता था। जब उसे बोध हुआ कि निखल्यूडोव उसे उस पङ्क से निकाल कर दूसरे ही ससार में ले जाना चाहता है तो उसने इसका विरोध किया, क्योकि वह समझ गई कि उसे जीवन में अपने स्थान, और उससे प्राप्त होने वाले आत्म-संयम और आत्म-सम्मान से वञ्चित होना पड़ेगा। इसी कारण से उसने अपने स्मृति-क्षेत्र से अपने नवयौवन-काल को और निखल्यूडोव के साथ अपने प्रारम्भिक सम्पर्क को खदेड़ दिया। उसकी ससार-सम्बन्धी धारणाएँ उसकी उन स्मृतियों से टक्कर न खाती थीं, और इसीलिए उसने उन स्मृतियो को अपने स्मृति-पटल से निकाल कर फेंक दिया था, या कहना चाहिए कि

उन्हें किसी अगम्य स्थान पर दफ़ना दिया था और उस पर प्रास्तर कर दिया था, जिससे वे किसी प्रकार वहाँ से निकल न सके, ठीक जिस प्रकार शहद की मक्खियाँ अपने परिश्रम के फल की रक्षा के लिए उसके ऊपर मोमजामा चढ़ा देती हैं। अतएव निखल्यूडोव अब वह निखल्यूडोव न था जिसे वह किसी समय प्यार करती थी, बल्कि वह एक धनी पुरुष था जिसका उसे उपयोग करना चाहिए था और जिसके साथ वह केवल वही सम्पर्क रख सकती थी जो साधारणतया अन्य पुरुषों के साथ रखती थी।

निखल्यूडोव ने अन्य मुलाक़ातियो के साथ प्रवेश-द्वार की ओर बढते-बढ़ते मन ही मन कहा—नहीं, मैंने अभी उससे खास बात तो कही ही नहीं! मैंने उससे अभी यह तो कहा ही नहीं कि मैं उससे विवाह करना चाहता हूँ, मैंने उससे कहा नहीं है, पर मैं कहूँगा।

प्रधान द्वार पर दो जेलर खडे मुलाकातियो को उसी प्रकार गिनते जा रहे थे, जिससे भीतर का आदमी बाहर न चला जाय और बाहर का भीतर न रह जाय। अब की बार कन्धे की थपकी से निखल्यूडोव नाराज़ न हुआ। उसने उस ओर ध्यान तक न दिया।

निखल्यूदोव अपने वाह्य जीवन की पुनर्व्यवस्था करना चाहता था, वह नौकरों को बर्खास्त कर देना चाहता था, अपने विशाल भवन को किराए पर उठा देना चाहता था, और स्वयं किसी छोटे से मकान में जा रहना चाहता था, पर ऐग्राफेना पैट्रोला ने उसे बता दिया कि शरद-ऋतु के पहले किसी प्रकार की उखाड़-पछाड़ करना निरर्थक होगा। शहरी मकान गर्मियों में कोई लेने न आएगा, और इसके अलावा उसे अपनी चीज़ें भी तो कहीं न कहीं रखनी ही होंगी। और इस प्रकार उसकी अपने रहन-सहन के ढङ्ग में परिवर्तन करने की सारी चेष्टाएँ निष्फल सिद्ध हुईं। (वह विद्यार्थियों की नाईं सरल जीवन व्यतीत करना चाहता था) उसका पहले जैसा रहन-सहन तो उसी प्रकार अपरिवर्तित

रहा ही, साथ ही सारा भवन एक नई स्फूर्ति से भर गया। जितनी ऊनी चीज़ें थीं और जितने फ़र्श-क़ालीन थे, उन सबको धूप दिखाने, झाडने और दवा देने के लिए बाहर निकाल दिया गया। द्वार-रक्षक, नौकर, बावर्चिन और कोरनी तक इस कार्यशीलता में जुट पडे। बालों के ग़लीचे, जिन्हें कभी किसी ने इस्तेमाल न किया था, तरह-तरह की वर्दियाँ और दुनिया भर के कपडे निकाल-निकाल कर बाहर एक पंक्ति में फैला दिए गए; इसके बाद कालीन और साज़-सामान बाहर निकाला गया और द्वार-रक्षक तथा नौकर अपनी मज़बूत बाँहों से आस्तीनें चढ़ाए, ताल-सुर-बद्ध गति से उन्हें पीटने लगे और सारे कमरे दुर्गन्ध से भर गए।

जब कभी निखल्यूडोव सहन पार करता या खिड़की में से झाँकता तो इतनी सारी चीजों को अब तक व्यर्थ पडे देख कर आश्चर्य-चकित रह जाता। उनका एकमात्र उपयोग निखल्यूडोव की राय में ऐग्राफ़ेना, कोरनी, द्वार-रक्षक और नौकर के लिए व्यायाम करने का अवसर प्रदान करना था।

उसने सोचा—पर जब तक मस्लोवा के भाग्य का निर्णय नहीं होता, तब तक ये व्यर्थ की चीज़ें मेरी योजनाओं को नष्ट न कर सकेंगी। वे योजनाएँ स्वतः ही बदल जाएँगी, जब उसे छोड़ दिया जायगा या निर्वासन दण्ड भोगने भेज दिया जायगा और मैं उसका अनुसरण करूँगा।

निखल्यूडोव नियत दिन ऐड्वोकेट के विशाल भव्य भवन के सामने जा पहुँचा। भवन सुन्दर गमलों और बहुमूल्य पदार्थों से सजाया गया था। संक्षेप में भवन में वे समस्त विलासपूर्ण बहुमूल्य

सामग्रियाँ जुटाई गई थीं, जिनसे निरर्थक धन के स्वामित्व का प्रद-र्शन होता था। (ऐसे धन का, जो बिना किसी प्रकार का परिश्रम किए ही प्राप्त हो गया हो) और जिन्हें केवल वही जुटाते हैं जो अकस्मात् धनवान हो उठते हैं। वेटिङ्ग रूम में उसने डॉक्टर के वेटिङ्ग रूम की तरह अनेक खिन्न, हताश-मुद्रा वाले व्यक्तियों को उन मेजों के आगे बैठे देखा जिन पर उनके मनोरञ्जन के लिए सचित्र मेगज़ीनें पड़ी हुई थीं। ये सब भीतर बुलाए जाने की प्रतीक्षा कर रहे थे। ऐडवोकेट का सहकारी कमरे में एक ऊँची मेज़ पर बैठा था, और वह निखल्यूडोव के पास आकर उससे बोला कि वह उसके आगमन की सूचना अभी किए देता है। सहकारी अभी द्वार तक कठिनता से पहुँचा होगा कि वह खुल गया और सजीव वार्त्तालाप ध्वनि सुनाई पड़ने लगी। इनमें से एक कण्ठ-ध्वनि एक अधेड़, हृष्ट-पुष्ट, ललमुँहे मोटी मूँछों वाले व्यापारी की थी, जो बिलकुल नए कपड़े पहने था, और एक स्वयम् फनारिन की थी। उन दोनों के चेहरों पर ठीक वैसी ही मुद्राएँ विराज रही थीं जो उनके चेहरों पर देखी जाती हैं, जिन्होंने हाल ही में कोई लाभदायक—पर उतना ईमानदार नहीं—सौदा निबटाया हो।

फ़नारिन ने मुस्करा कर कहा—महोदय, आपमें भी तो अनेक दुर्बलताएँ होंगी।

"यदि हम कोई पाप न करते तो सब स्वर्ग पहुँच जाते।"

"जी हाँ, जी हाँ, यह तो मानी हुई बात है।"—और दोनों अस्वाभाविक ढङ्ग से हँसने लगे।

फनारिन ने निखल्यूडोव को देख कर कहा—"अहा, प्रिन्स निखल्यूडोव ! आइए !" और वह उस व्यापारी के आगे एक बार फिर सिर झुका कर निखल्यूडोव को अपनी परामर्शशाला में ले गया, जो बिलकुल नपे-तुले ढङ्ग से सजाई गई थी।

ऐडवोकेट व्यापारी के साथ तय हुए सौदे पर सन्तुष्ट भाव से मुस्कराता हुआ निखल्यूडोव के सामने बैठ गया और पूछने लगा—आप सिगरेट पिएँगे ?

"धन्यवाद ! मैं मसलोवा के मामले के सम्बन्ध में आया हूँ।"

"अभी लीजिए, अभी लीजिए ! पर ये मक्खीचूस भी क्या बुरी बला होते हैं ! आपने इसे तो यहाँ देखा ही था। यह आदमी कोई डेढ़ करोड़ रुबल का स्वामी है, और इतने पर भी स्वर्ग को 'श्वर्ग' कहता है। और अगर यह आपसे एक पचीसी ऐंठने का मौक़ा पा जाय, तो चाहे इसे अपने दाँतों से ही करना पड़ेगा, करेगा ज़रूर।"

"यदि वह 'श्वर्ग' कहता है तो तुम 'पचीसी ऐंठना' कहते हो"—निखल्यूडोव ने मन ही मन कहा और उसे इस आदमी के प्रति, जो अपने सङ्कोचहीन और सहज व्यवहार द्वारा दिखाना चाहता था कि वे दोनों एक ही वर्ग से सम्बन्ध रखते हैं और बाक़ी सारे मुवक्किल किसी दूसरे वर्ग से, अदम्य घृणा उत्पन्न हो आई।

ऐडवोकेट ने फिर कहना आरम्भ किया—मानो अब की बार वह ऐसी बात का ज़िक्र करने के लिए क्षमा चाहता हो, जिसका मसलोवा वाले मामले से कोई सम्बन्ध न था—इसने तो मुझे

परेशान कर डाला—भयङ्कर धूर्त कहीं का। मैं अपने उद्गारों को किसी न किसी तरह प्रकट करना चाहता था। अच्छा, अब आपका मामला शुरू हो ; मैंने उसे पढ़ा था, और टुर्जनीव के शब्दों में मैं तद्‌निहित सामग्री को नापसन्द करता हूँ। मेरे कहने का मतलब यह है कि उस नौसिखुए ऐडवोकेट ने अपील करने की कोई वाजिब गुञ्जायश नहीं छोड़ी।

"फिर बताइए, क्या किया जाय?"

"ज़रा ठहरिए।"—और उसने कमरे में आते हुए सहकारी की ओर घूम कर कहा—"उससे कह दो कि मैंने जो कुछ कह दिया है, मैं उसी पर डटा हुआ हूँ। अगर वह राज़ी हो तो अच्छी बात है, नहीं तो जाने दो।"

"पर वह राज़ी न होगा।"

"अच्छी बात है, जाने दो।"—और उसका उल्लसित और शान्त चेहरा बात की बात में क्रुद्ध और क्षुब्ध हो उठा।

उसने कुछ क्षण बाद पहले जैसी सौहार्दपूर्ण मुद्रा धारण करते हुए कहा—देखिए न! और इतने पर भी कहा जाता है कि ऐडवोकेट मुफ्त में रुपया ऐंठ लेते हैं। मैंने एक दीवालिए की जान झूठे अभियोगों से छुड़ाई थी कि अब उन्होंने मुझे चारों ओर से घेर लिया। और ऐसे मामलों में बड़ा परिश्रम करना पड़ता है। पर क्या हम 'हवा खाकर थोड़े ही गुज़ारा करते हैं?' जैसा कि एक लेखक ने कहा है।

"अच्छा, अब आपके मामले के सम्बन्ध में, या कहना चाहिए, उस मामले के सम्बन्ध में जिसमें आप दिलचस्पी ले रहे हैं, विचार

करना चाहिए। मामले की पैरवी बड़ी बुरी तरह की गई है। अब अपील करने का कोई वैध कारण शेष नहीं रह गया है। पर तो भी हम दण्ड बदलाने का प्रयत्न कर सकते हैं। देखिए, मैंने यह नोट किया है"—और उसने कुछ लिखे हुए काग़ज़ के टुकड़े निकाले और अरोचक क़ानूनी हवालों पर झटपट निगाह डालते हुए और अनेक वाक्यों पर विशेष ज़ोर डालते हुए पढ़ना शुरू किया—"अपील कोर्ट, महकमा फौजदारी; वगैरा। निर्णय के अनुसार मसलोवा को विष के द्वारा व्यापारी स्मेलकोव की हत्या करने का दोषी ठहराया गया और उसे पिनलकोड की १४५४ धारा के अनुसार सपरिश्रम साइबेरिया वास का दण्ड दिया गया।" यहाँ ऐडवोकेट, दिन-रात का काम होने पर भी, अपनी रचना का अपने कानों से आनन्द लेने के लिए रुका। इसके बाद उसने फिर प्रभावोत्पादक ढङ्ग से कहना आरम्भ किया—"यह दण्ड न्याय-व्यवस्था की अत्यन्त स्पष्ट भूलों और अधिकार-दलन का परिणाम है और इसके खण्डन करने के कारण मौजूद हैं। सबसे पहला कारण यह है कि स्मेलकोव की अँतड़ियों की परीक्षा की रिपोर्ट को प्रेसीडेण्ट ने पढ़े जाने से रोक दिया। यह पहली बात हुई।"

निखल्यूडोव ने साश्चर्य कहा—पर इसके पढ़े जाने की माँग तो सरकार की तरफ़ से पेश की गई थी।

"इससे कोई वास्ता नहीं। अपराधी-पक्ष में भी इस माँग को पेश करने के कारण हो सकते थे।"

"भला इसके कारण क्या हो सकते थे?"

"फिर भी यह अपील के लिए काफ़ी है। अच्छा, फिर—

दूसरा कारण यह है कि जब मसलोवा के ऐडवोकेट ने अपने मुवक्किल के पक्ष में बोलते हुए मसलोवा के व्यक्तित्व का चित्रण करने की इच्छा से उसके पतन के कारणों का निर्देश किया, तो प्रेसीडेण्ट ने उसे प्रत्यक्ष प्रसङ्ग से भ्रष्ट होने से रोक दिया। पर यह सीनेट ने अनेकानेक वार निर्देश किया है कि अपराधी के वास्तविक चरित्र और उसके नैतिक आचरण का पता लगाने के लिए—चाहे इसका प्रस्तुत विषय में इससे अधिक कुछ सम्पर्क न हो कि वह उक्त उत्तरदायित्वपूर्ण समस्या को हल करने में पथ-प्रदर्शन कर सकेगा—इस प्रकार का विश्लेषण नितान्त आवश्यक है। यह दूसरी बात हुई"—उसने निखल्यूडोव की ओर देखते हुए कहा।

निखल्यूडोव ने पहले से भी अधिक आश्चर्य-चकित होकर कहा—पर वह इतनी बुरी तरह बोल रहा था कि उसकी कोई बात समझ ही में न आती थी।

फ़नारिन ने हँस कर कहा—वह तो पेट भर कर गया है, उससे किसी समझदारी की बात की आशा थोड़े ही की जा सकती थी? पर तो भी यह अपील का एक कारण हो ही गया। तीसरा कारण यह है कि प्रेसीडेण्ट ने जूरी को मामला समझाते हुए फ़ौजदारी के प्रथम विभाग की ८०१ धारा के स्पष्ट प्रतिकूल जूरी को यह बताना छोड़ दिया कि क़ानून की दृष्टि से किन-किन बातों से अपराध सिद्ध हो जाता है, और उसने यह न बताया कि मसलोवा के व्यापारी को विष देने पर भी जूरी को अधिकार है कि वह उसे हत्या की अपराधिनी न ठहराए, क्योंकि स्मेलकोव के प्राण लेने के उद्देश्य के प्रमाणों का इस मामले में बिलकुल अभाव है, और इसलिए जूरी

उसे केवल असावधानता की अपराधिनी भी ठहरा सकता है, जिसके फल-स्वरूप उसकी मृत्यु हो गई और जो मसलोवा का उद्देश्य न था। यह ख़ास बात है।

"जी हाँ; पर इस बात को हमें भी जानना चाहिए था। वह हमारी ही भूल थी।"

ऐडवोकेट ने कहना जारी रक्खा—और चौथा कारण यह है कि जूरी ने जो उत्तर दिया है, वह स्वतः ही परस्पर विरुद्ध है। मसलोवा को लोभ से प्रेरित होकर हत्या करने की अपराधिनी ठहराया गया है; यही एकमात्र ऐसा उद्देश्य हो सकता है जिसकी वह अपराधिनी ठहराई जा सकती थी। जूरी ने अपने फ़ैसले में उसे चोरी करने या चोरी करने में सहायता देने के अभियोग से मुक्त किया है, और इससे स्वभावतः ही यह निष्कर्ष निकलता है कि वे उसे हत्या के उद्देश्य के अभियोग से भी मुक्त करना चाहते थे, पर प्रेसीडेण्ट के अपूर्ण वक्तव्य के फल-स्वरूप वे उसे ठीक तरह व्यक्त न कर सके। फलतः जूरी के इस प्रकार के निर्णय को ८१७ धारा के अनुसार हटा देना चाहिए था और उसे एक बार फिर समझा कर अपना फ़ैसला दुबारा देने का अनुरोध करना चाहिए था।

"तो फिर प्रेसीडेण्ट ने यह क्यों नहीं किया?"

फ़नारिन ने हँसते-हँसते कहा—मैं ख़ुद जानना चाहता हूँ कि क्यों नहीं किया।

"तब तो सीनेट इस भूल को निश्चय ही ठीक कर देगी।"

"यह तो इसीके ऊपर निर्भर रहेगा कि सीनेट का सभापति उस दिन कैसा आदमी होगा। हाँ, तो मैंने अन्त में लिखा है"—

उसने जल्दी-जल्दी पढ़ना आरम्भ किया—"इस प्रकार का निर्णय अदालत को मसलोवा को पिनलकोड की ७७१ धारा के अनुसार दण्ड देने का कोई अधिकार प्रदान नहीं करता। यह फौजदारी विधान के आधारभूत सिद्धान्तों का स्पष्ट खण्डन है। उपर्युक्त कारणों से मैं आप से अपील करता हूँ कि आप ६०६,६१०,६१२ और ६२८ धारा के अनुसार इस निर्णय को रद कर दें और मामला इसी अदालत से किसी दूसरे विभाग के सिपुर्द कर दें।"—यह लीजिए, जो कुछ किया जा सकता था कर दिया गया, पर यदि आप साफ़-साफ़ कहलाना चाहते हैं तो सफलता की आशा बहुत कम है। यद्यपि इसका निर्णय बहुत-कुछ इस बात पर भी निर्भर रहेगा कि उस दिन सीनेट में कौन-कौन सदस्य उपस्थित रहेंगे। अगर वहाँ आपका कुछ प्रभाव हो तो प्रयत्न कर दीजिए।

"हाँ, मैं उनमें से कई सदस्यों को जानता तो हूँ।"

"तो ठीक; पर जल्दी करने का काम है, नही तो सब अपनी-अपनी बवासीर का इलाज कराने विदेश चले जाएँगे और आपको तीन महीने तक रुकना पडेगा। और यदि यहाँ से असफल रहे तो हम हिज़ मेजेस्टी के दरबार मे भी प्रार्थना कर सकते हैं। यह भी पर्दे के पीछे हथकण्डे दिखाने पर निर्भर है। और मैं इस मामले में भी आपकी सहायता कर सकूँगा—जहाँ तक प्रार्थना-पत्र लिखने का सम्बन्ध है; पर्दे के पीछे नही।"

"अच्छा, अब अपनी फ़ीस की बात कहिए।"

"मेरा सहकारी आपको अपील भी दे देगा औ फ़ीस भी बता देगा।"

"सिर्फ़ एक बात और है। मुझे प्राक्यूरर ने इस क़ैदी से जेल में भेंट करने का अनुमति-पत्र दे दिया था, पर मुझसे कहा गया है कि उससे किसी अन्य समय और अन्य स्थान पर भेंट करने के लिए गवर्नर की अनुमति दरकार है। क्या यह आवश्यक है?"

"जी हाँ, मेरा यही ख्याल है। पर इस समय गवर्नर कहीं बाहर गया है और उसकी जगह वाइस-गवर्नर काम कर रहा है। वह इतना मूर्ख है कि शायद आप उस से कुछ काम न ले सकेंगे।"

"वह मैसलेनीकोव है न?"

"जी हाँ।"

"मैं उसे जानता हूँ"—और निखल्यूडोव जाने को उठा। इसी समय एक निहायत ही बदसूरत, चपटी नाक, चौड़े चेहरे वाली पीली स्त्री कमरे में उड़ आई। यह ऐडवोकेट की स्त्री थी और अपनी कुरूपता से तनिक भी चिन्तित दिखाई नहीं देती थी। वह बिलकुल निराले ही ढङ्ग की पोशाक पहने हुए थी। वह किसी मख़मली और रेशमी सी पीली-पीली और हरी-हरी चीज़ में ढकी दिखाई देती थी, और उसके पतले बालों में लहरियाँ पड़ी हुई थीं। उसने विजय-भाव के साथ कमरे में पदार्पण किया और उसके पीछे-पीछे एक लम्बे क़द और हरे रङ्ग का आदमी मुस्कराता हुआ आया। यह रेशमी गोट वाला कोट पहने था और सफ़ेद टाई लगाए था। यह एक लेखक था। निखल्यूडोव उसकी सूरत से परिचित था।

स्त्री ने एक दूसरे कमरे का द्वार खोलते हुए कहा—अनातोले, तुम्हें मेरे साथ आना पड़ेगा। सायमन इवानिच अपनी कविता

सुनाएँगे। बड़ी सुन्दर कविता है। और फिर गार्शिन के सम्बन्ध में बातें होंगी।

निखल्यूडोव ने देखा कि वह अपने पति से कान में कुछ कह रही है, और यह समझ कर कि वह बात उससे सम्बन्ध रखती है, वह जाने लगा, पर उस स्त्री ने उसे रोक लिया और कहा—प्रिन्स, क्षमा कीजिए, मैं आपको जानती हूँ, और शायद अब दुबारा जान-पहचान करने की आवश्यकता नहीं है, और मैं आपसे प्रार्थना करती हूँ कि आप ठहर कर हमारी साहित्य-चर्चा में भाग लेंगे। बड़ा मनोरञ्जक सत्सङ्ग रहेगा। अनातोले ख़ूब बोलते हैं।

"तुम देख रही हो, मुझे कितना काम करना है।"—फ़नारिन ने अपने हाथ फैला कर मुस्कराते हुए अपनी पत्नी की ओर निर्देश करके कहा, मानो वह यह दिखाना चाहता हो कि ऐसी मनोहारिणी स्त्री का अनुरोध न मानना कितना असम्भव है।

निखल्यूडोव ने गम्भीर और विषण्ण मुद्रा के साथ ऐडवोकेट की स्त्री को अत्यन्त विनम्र भाव से उसकी कृपा के लिए धन्यवाद दिया, पर निमन्त्रण अस्वीकार कर दिया और कमरे से बाहर आ गया।

ऐडवोकेट की स्त्री ने उसके पीठ फेरते ही कहा—कैसा बनता है!

वेटिङ्ग रूम में सहकारी ने उसे लिखित अपील दी और कहा कि फ़ीस एक हज़ार रूबल के लगभग होगी और समझाया कि मि० फ़नारिन इस ढङ्ग के मामले अपने हाथ में नहीं लिया करते, और यह मामला केवल उन्होंने निखल्यूडोव की ख़ातिर ले लिया है।

"और यह अपील ? इस पर कौन हस्ताक्षर करेगा ?"

"क़ैदी कर सकता है, और यदि यह असुविधाजनक हो तो पॉवर ऑफ़ अटर्नी मिलने पर मि० फ़नारिन ख़ुद कर देंगे।"

"नहीं जी, मैं जाकर उससे हस्ताक्षर कराए लाता हूँ।" नेख़्ल्यूडोव ने कहा और वह मन ही मन ख़ुश हुआ कि नियत समय से पहले ही भेंट करने का बहाना मिल गया।
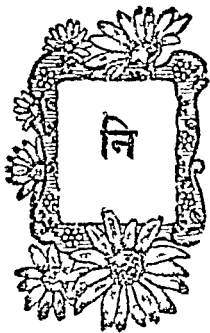
यत समय पर जेल के बरामदों मे जेलर की सीटी गूँजी, बारकों के लोह-द्वार खनखनाए, नङ्गे पाँव थपथपाए, जूतों की एड़ियाँ झनझनाईं और भङ्गियों का काम करने वाले कैदी बरामदों में से वायु को दूषित करते हुए गुज़रे। कैदी नहाए-धोए और कपड़े पहन कर मुआयने के लिए बाहर निकले और इसके बाद चाय बनाने के लिए गर्म पानी लेने चले गए।

उस दिन बारकों मे कलेवे के समय का वार्तालाप बड़ा स्फूर्ति-पूर्ण रहा। उस दिन दो क़ैदियों को कोडे लगाए जाने वाले थे। उनमें से एक का नाम था वैसीलीव—एक क्लर्क युवक, जिसने द्वेष के उद्रेक में अपनी रखेली को मार डाला था। उसके सङ्गी क़ैदी उसे बड़ा पसन्द करते थे, क्योंकि वह बड़ा प्रफुल्लित और उदार था और इसलिए भी कि वह जेल के अधिकारियों के साथ बड़ी

दृढ़ता से पेश आया करता था। वह क़ायदे-क़ानून जानता था और उनके पालन करने में हठ से काम लेता था; इसलिए वह जेल-अधिकारियों को बिलकुल न भाता था।

तीन सप्ताह पहले एक जेलर ने एक भङ्गी को मारा-पीटा था, क्योंकि उसने उसकी नई वर्दी पर शोरबा गिरा दिया था। वैसीलीव ने भङ्गी का पक्ष लिया और कहा कि क़ैदी को मारना क़ानून के ख़िलाफ़ है।

जेलर ने क्रुद्ध होकर उसे गाली दी और कहा—"मैं तुझे क़ायदा-क़ानून अभी बताए देता हूँ।" वैसीलीव ने भी इसी ढङ्ग का जवाब दिया और जेलर उसे मारने चला, पर वैसीलवी ने उसके दोनों हाथ पकड़ लिए और दो-एक क्षण तक इसी प्रकार रख कर उन्हें मोड़ दिया और उसे कमरे से बाहर निकाल दिया। जेलर ने इसकी शिकायत इन्सपेक्टर से की और उसने उसे काल-कोठरी का दण्ड दिया।

काल-कोठरिया क्या थीं, छोटी-छोटी गुफाएँ थीं, जिनमें न मेज़-कुर्सी थी, न चारपाई और दण्डित व्यक्ति को गन्दे फ़र्श पर लेटना पड़ता था। उनमें चूहे इतनी बहुतायत से थे और इतने ढीठ कि वे लेटे हुए कैदियों के ऊपर चक्कर लगाते, उनकी रोटियाँ चुरा लेते और जब वे हिलना-डुलना बन्द कर देते तो उन पर आक्रमण भी करते। वैसीलीव ने कहा कि वह काल-कोठरी में कभी न जायगा, क्योंकि वह निरपराध है। जेलरों ने उसे बलात् उठा ले जाना चाहा, उसने हाथ-पैर मारे, और दो और क़ैदियों ने आकर उसे जेलरों से मुक्त होने में सहायता दी। सारे जेलर इकट्ठे हुए। उनमें पैट्रोव

नाम का भी एक जेलर था, जो अपने शारीरिक बल के लिए प्रसिद्ध था। क़ैदियों को परास्त किया गया और उन्हें काल-कोठरियों में ठूँस दिया गया। गवर्नर को सूचना दी गई कि जेल में ग़दर सा हो गया, और उसने आज्ञा लिख भेजी कि वैसीलीव और शोहदे नैपोम्नियाश्ची नामक दोनों प्रधान अपराधियों को शीशम की छड़ी से तीस-तीस कोड़े लगाए जायँ। बेत स्त्रियों के मुलाक़ाती कमरे में लगाए जाने वाले थे।

पिछली शाम से ही यह बात सबको मालूम हो गई थी, और सब अपनी-अपनी बारकों में सजीवतापूर्वक इसकी चर्चा कर रहे थे। कोराबलेवा, होरोशाव्का, थियोडेसिया और मसलोवा अपनी बारक के कोने में बैठी हुई चाय पी रही थीं। सबके चेहरे उत्तेजित थे, क्योंकि अब मसलोवा के पास पैसों की कमी न थी और वह सबका वोडका से सत्कार किया करती थी।

कोराबलेवा अपने मज़बूत दाँतों से गुड़ का टुकड़ा कुतरते-कुतरते बोली—वह दङ्गा-उङ्गा तो कुछ नहीं कर रहा था, अपने यार को पिटते न देख सका, क्योंकि आजकल क़ैदियों को मार-पीट कोई नहीं सकता।

थियोडेसिया, जो अपना बड़ी-बड़ी पट्टियों वाला सिर नङ्गा किए काठ के गट्ठे पर चाय वाली चारपाई के सामने बैठी थी, बोली—और मैंने सुना है, वह बड़ा अच्छा आदमी है।

चौकीदार की स्त्री ने मसलोवा से कहा—अरी तू अपने उससे तो कहना ('उससे' से उसका अभिप्राय निखल्यूडोव से था)।

मसलोवा ने अपना सिर तान कर कुछ मुस्कराते हुए कहा—मैं

उनसे कहूँगी। वह मेरे लिए सब कुछ करने को तैयार हो जायँगे।

थियोडेसिया ने कहा—"पर वह आएँगे कब? और ये उन्हें लाने को चले भी गए। कलेजा काँप उठता है।" उसने लम्बी साँस लेकर कहा।

"मैंने × × × गाँव में देखा था कि वह कैसे पीटते हैं। उन्होंने एक गाँव वाले को मारा था। मुझे उस गाँव के मुखिया के पास मेरे ससुर ने भेजा था। तो मैं वहाँ गई × × ×।"—चौकीदार-पत्नी ने अपनी लम्बी रामकहानी आरम्भ की, पर उसमें बरामदे में से आती हुई कण्ठ और पग-ध्वनि से व्याघात पड़ गया।

स्त्रियाँ चुप हो गईं और कान लगा कर सुनने लगीं।

होरोशाव्का ने कहा—वही हैं कलमुँहे, उसे घसीटते हुए ला रहे हैं। वे उसकी जान निकाल कर छोड़ेंगे। लेकर उससे पहले ही से जले हुए हैं, क्योंकि वह किसी की दाब-डाँट में न आता था।

ऊपर फिर शान्ति छा गई, और चौकीदार-पत्नी ने अपनी लम्बी कहानी समाप्त की कि किस तरह जब वह गाँव में गई और उसने खलिहान में एक गाँव वाले को पिटते देखा तो वह डर के मारे अधमरी हो गई थी और उसका कलेजा थर-थर काँपने लगा था, इत्यादि। इसके बाद होरोशाव्का ने सुनाया कि किस प्रकार गैगलोव को कोड़ों से मारा गया था और उसने चूँ तक न की थी। इसके बाद थियोडेसिया ने चाय का सामान उठा कर एक ओर रक्खा और कोरादलेवा तथा चौकीदार पत्नी सीने-पिरोने में लग गईं। मसलोवा अपने घुटनों के चारों ओर बाँहें

डाले चारपाई पर खिन्न और विषण्ण भाव से बैठी रही। वह लेट कर सो जाने का विचार कर ही रही थी कि स्त्री-वार्डर ने आकर कहा कि उससे ऑफिस मे कोई मिलना चाहता है।

मसलोवा उठ कर एक धुँधले से शीशे के सामने खड़ी होकर अपने सिर के रूमाल को ठीक करने लगी और वृद्धा स्त्री मैनशोवा ने कहा—घबराने की कोई बात नहीं है, और हमारी बात कहना मत भूलना। "हमने घर में आग नहीं लगाई थी, उसी कलमुँहे ने लगाई थी; उसके नौकर ने उसे अपनी आँखों से आग लगाते देखा था और वह असत्य बोल कर पाप मोल न लेगा। तू उससे कहना कि वह मेरे मित्री से मिल ले। मित्री उसे सारी बातें साफ़-साफ़ बता देगा। सोचो तो सही, हम तो यहाँ तालों में पड़े सड़ रहे हैं और हमने कभी किसी की बुराई करने की बात तक नहीं सोची, और वह कलमुँहा दूसरे की लुगाई को हथियाए गुलछर्रे उड़ा रहा है।

कोराबलेवा ने कहा—यह कोई क़ानून है?

मसलोवा ने उत्तर दिया—"मैं उनसे कहूँगी, ज़रूर कहूँगी। पर जो कहीं मुझे एक बूंद और मिल जाती, जिससे मेरा हौसला बना रहता"—उसने आँख मार कर कहा, और कोराबलेवा ने आधा गिलास वोडका भर कर उसे पकड़ा दी और उसने पी ली। इसके बाद उसने अपना मुँह पोंछा और "हौसला बना रहेगा" कहती हुई वार्डर के पीछे-पीछे, सिर तान कर उल्लसित भाव से मुस्कराती हुई चल दी।

खल्यूडोव हॉल में बहुत देर से प्रतीक्षा कर रहा था।

जेल में आकर उसने प्रवेश-द्वार में जाकर वहाँ खड़े एक जेलर को मास्लूरर का अनुमति-पत्र दिया।

"आप किससे मिलना चाहते हैं ?"

"कैदी मसलोवा से।"

"आप इस वक़्त नहीं मिल सकते, इन्सपेक्टर घिरे हुए हैं।"

निखल्यूडोव ने पूछा—क्या वह ऑफ़िस में हैं ?

जेलर घबरा सा गया। उसने कहा—नहीं, वह यहीं मुलाक़ाती कमरे में हैं।

"क्यों ? आज मुलाक़ाती दिन है क्या ?"

"नहीं, कुछ खास काम है ?"

"मैं उनसे मिलना चाहता हूँ। मुझे क्या करना चाहिए ?"—निखल्यूडोव ने कहा।

जेलर ने उत्तर दिया—जब इन्सपेक्टर बाहर निकलें तो आप उनसे कह दीजिएगा। अभी ठहरिए।

इसी समय एक चमकते हुए चेहरे वाला सर्जेण्ट मेजर—जिसकी मूँछों से तम्बाकू की गन्ध आ रही थी और जिसकी वर्दी की सुनहरी डोरियाँ चमक रही थीं—बगल के दरवाज़े से आया और डोवर से कठोर स्वर में बोला—तुमने इन्हें यहाँ अन्दर क्यों आने दिया ? ऑफ़िस × × ×।

निखल्यूडोव सर्जेण्ट मेजर की उत्तेजना को देख कर चकित रह गया और बोला—मुझे पता चला था कि इन्सपेक्टर यहीं हैं।

इसी समय भीतरी दरवाज़ा खुला और जेलर पैट्रोव उत्तेजित और पसीने से तर बाहर निकला।

उसने सर्जेण्ट मेजर की तरफ़ मुड़ते हुए बड़बड़ा कर कहा—"अब उसे याद रहेगा।" सर्जेण्ट मेजर ने आँख के इशारे से निख-ल्यूडोव की ओर सङ्केत किया और पैट्रोव भवें चढ़ा कर पिछले दर-वाज़े से बाहर निकल गया।

निखल्यूडोव ने मन ही मन कहा—किसे याद रहेगा ? ये सब इतने घबराए हुए क्यो दिखाई देते हैं ? सर्जेण्ट मेजर ने उसकी तरफ इशारा क्यों किया था ?

सर्जेण्ट मेजर ने निखल्यूडोव को सम्बोधित करके कहा—आप यहाँ नहीं मिल सकते, मेहरबानी करके ऑफिस मे जाइए।

निखल्यूडोव उसकी आज्ञापालन करने ही वाला था कि स्वयम् इन्सपेक्टर भी पिछले द्वार से निकल आया। वह अपने मातहतों से भी अधिक घबराया हुआ था और बार-बार लम्बी साँस ले रहा था। उसने निखल्यूडोव को देख कर जेलर की तरफ़ मुड़ कर कहा—"फ़ेडोरोव, स्त्रियों के पाँच नम्बर के वार्ड

की मसलोवा को ऑफ़िस में बुलवाओ।" इसके बाद उसने निखल्यूडोव से कहा—"आप इस ओर को आइए।" दोनों सीढ़ियों पर चढ़ कर एक छोटे से खिड़की वाले कमरे में पहुँचे। इन्सपेक्टर बैठ गया।

उसने सिगरेट निकालते-निकालते निखल्यूडोव से कहा—मेरी नौकरी भी बड़ी बुरी है।

निखल्यूडोव ने कहा—आप तो बेतरह थके हुए हैं।

"मैं इस नौकरी से ही थक गया हूँ—इस नौकरी ने तो परेशान कर दिया। कोई इनके दुःखों के भार को हल्का करने की कोशिश करता है और उनका भार और भी बढ़ जाता है, न जाने इससे किस तरह छुटकारा मिलेगा। कैसी बुरी नौकरी है!"

निखल्यूडोव यह तो न जानता था कि इन्सपेक्टर को किस बात का कष्ट है, पर उसने यह अवश्य जान लिया कि आज वह विशेष रूप से हताश और खिन्न दिखाई दे रहा है और उसे देख कर बलात् दया का उद्रेक हो आता है।

उसने कहा—जी हाँ, आपको बड़ा काम करना पड़ता है। आप इस पद पर क्यों काम कर रहे हैं?

"बाल-बच्चे हैं, और पेट भरने का और कोई ज़रिया नहीं।"

"पर यदि आप इसे इतना बुरा × × ×।"

"पर तो भी किसी न किसी प्रकार कुछ हित कर ही सकता हूँ; मुझसे जहाँ तक हो सकता है, कड़ाई नहीं होने देता। मेरी जगह कोई और होता तो बिलकुल दूसरे ढङ्ग से काम लेता। यहाँ दो हज़ार आदमी हैं। और आदमी भी कैसे! इनका इन्तज़ाम करना

हँसी-खेल नहीं है। कहना जितना आसान है उतना करना नहीं। फिर भी वे आदमी है और उन पर दया आ ही जाती है।"—और इन्सपेक्टर निखल्यूडोव को एक ऐसी लड़ाई की कहानी बताने लगा, जिसमें एक कैदी के प्राण निकल गए थे।

इस कहानी के सिलसिले में मसलोवा के आगमन ने व्याघात डाल दिया।

मसलोवा की निगाह इन्सपेक्टर पर जाने से पहले ही निखल्यूडोव ने उसे दरवाज़े में से देख लिया था। उसका चेहरा उत्तेजित था और वह वार्डर के पीछे-पीछे सिर ताने हुए फुर्ती के साथ मुस्कराती हुई आ रही थी। इन्सपेक्टर को देखते ही उसकी मुद्रा में आकस्मिक परिवर्त्तन हो गया और उसने उसकी ओर भीत-दृष्टि से देखा; पर तत्काल ही संयत होकर वह निखल्यूडोव से निर्भीक, उल्लसित भाव से बोली—"अच्छे हो?" और इन शब्दों को उसने एक खास ढङ्ग से आरोह-अवरोह के साथ कहा, और इसके बाद मुस्कराते हुए उसका हाथ पकड़ कर ज़ोर से हिलाया, उस तरह नहीं जिस तरह पहले हिलाया था।

निखल्यूडोव उसकी इस धृष्टता पर चकित रह गया। उसने कहा—मैं तुम्हारे हस्ताक्षरों के लिए यह अपील लाया हूँ। यह ऐडवोकेट ने लिखा है, जिस पर तुम्हें हस्ताक्षर करने होंगे और फिर इसे पीटर्सबर्ग भेजा जायगा।

मसलोवा ने मुस्करा कर आँख मारते हुए कहा—अच्छी बात है! अभी हो जायगा। जो तुम कहो वही होगा।

निखल्यूडोव ने अपनी जेब से तह किया काग़ज़ निकाला और

मेज़ के पास पहुँचा। इसके बाद उसने इन्सपेक्टर से पूछा—यह यहाँ हस्ताक्षर कर सकती है ?

इन्सपेक्टर ने कहा—हाँ; बैठ जाओ। यह कलम है; तुम लिखना-पढना जानती हो ?

उसने उत्तर दिया—"हाँ, कभी जानती तो थी।" और इसके बाद वह अपना लहँगा और जाकट की आस्तीनें सँभाल कर कुर्सी पर बैठ गई और फिर मुस्कराते हुए अपने फुर्तीले हाथ में क़लम पकड़ा, निखल्यूडोव की ओर देखा और वह हँस पड़ी।

निखल्यूडोव ने उसे बताया कि क्या लिखना है, और सङ्केत किया कि कहाँ लिखना है।

उसने लम्बी साँस लेकर कलम दावात में डुबाया और स्याही की कुछ बूँदें झाड़ कर अपना नाम लिखा। उसने कभी निखल्यूडोव और कभी इन्सपेक्टर की ओर देखते हुए कहा—"बस इतनी ही बात थी ?" और वह कलम को कभी कलमदान पर और कभी काग़ज़ पर रखने लगी।

निखल्यूडोव ने उसके हाथ से कलम लेकर कहा—मुझे तुमसे कुछ कहना है।

वह बोली—"अच्छी बात है; बताओ।" और वह सहसा गम्भीर हो गई, मानो उसे किसी बात की याद हो आई हो या वह उदासी हो रही हो।

इन्सपेक्टर उठा और उसे निखल्यूडोव के पास अकेली छोड़ कर बाहर चला गया।

इकतालीसवाँ परिच्छेद

जो जेलर मसलोवा को वहाँ लाया था, वह कुछ दूरी पर खिडकी के ऊपर बैठ गया।

अब निखल्यूडोव के लिए निर्णयात्मक अवसर आ पहुँचा था। वह पहली भेंट के अवसर पर उसे मुख्य बात न बताने के लिए अपने आपको मन ही मन दोष देता रहा था, और अब उसने उसे बताने का दृढ सङ्कल्प कर लिया था कि वह उससे विवाह करेगा। वह मेज़ के दूसरे छोर पर बैठी थी। निखल्यूटोव उसके सामने बैठा था। कमरे में प्रकाश था, और निखल्यूडोव ने उसका चेहरा आज पहली बार अपने इतने निकट देखा था। उसे स्पष्ट रूप से उसके नेत्रों के चारों ओर कौओं के पञ्जे, मुँह के चारों ओर रेखाएँ और उसके सूजे पलक देखे। उसे उस पर पहले से भी अधिक करुणा हो आई। निखल्यूडोव ने मेज़ पर झुक कर—जिससे जेलर के कान में बात न पहुँच जाय (जेलर यहूदी चेहरे-मुहरे का था और

उसकी गलमुँछें खसखसी थीं)—कहा—यदि इस अपील का कुछ फल न हुआ तो हम सम्राट के पास प्रार्थना करेंगे। कुछ उठा न रक्खा जायगा।

मसलोवा ने बाधा दी—"जो कहीं पहले से ही अच्छा ऐडवोकेट होता! मेरा ऐडवोकेट बिलकुल बौड़म था। उसने कुछ करा कराया नहीं, बस मेरी प्रशंसा करता रहा।" वह हँसी—"यदि उसी समय सबको मालूम होता कि तुम्हारे साथ मेरी मेल-मुलाक़ात है तो बात ही कुछ और होती। वह तो सबको चोर समझते हैं।"

निखल्यूडोव ने मन ही मन कहा—"आज इसकी क्या विचित्र अवस्था है।"—पर तत्काल ही उसे अपने सङ्कल्प की बात याद आई। इसी समय मसलोवा ने कहना आरम्भ किया :—

"मुझे तुमसे एक बात कहनी है। हमारे साथ एक बुढ़िया रहती है; बड़ी अच्छी है; सबको अचरज में डाले रखती है। उसे बिना किसी अपराध के जेल में डाल रक्खा है, और उसके बेटे को भी, यद्यपि सब जानते हैं कि वह निर्दोष है, किन्तु उस पर और उसके बेटे पर घर में आग लगाने का दोष रक्खा गया है। जब उसे तुम्हारे साथ मेरी मेल-मुलाक़ात की बात मालूम हुई तो वह कहने लगी—"देख तो, उनसे कहना कि वह मेरे बेटे से मिल लें; वह उनसे सारी बातें कह देगा।" मसलोवा इस प्रकार बोलती हुई अपना सिर इधर-उधर घुमाने और निखल्यूडोव की ओर देखने लगी—"तो फिर तुम उससे कब मिलोगे? उसका नाम है मैनशोव। उसकी बुड्ढी माँ इतनी अच्छी है कि मैं तुमसे क्या कहूँ; तुम्हें फ़ौरन पता लग जायगा कि वह निर्दोष है। करोगे न,

मेरे प्यारे !" और वह उसकी ओर देख कर मुस्कराई, पर तत्काल ही उसने अपने नेत्र नीचे कर लिए।

निखल्यूडोव उसके इस निस्सङ्कोच और सहज आचरण को देख-देख कर अधिकाधिक विस्मित हो रहा था। उसने कहा—अच्छी बात है ; मैं उनके मामले का पता लगाऊँगा। अब मैं तुमसे अपने सम्बन्ध में कुछ कहना चाहता हूँ। तुम्हें याद है, पिछली दफ़ा मैंने तुमसे क्या कहा था ?

मसलोवा ने उसी प्रकार मुस्करा-मुस्करा कर अपना सिर इधर से उधर फेरते-फेरते कहा—तुमने कोई एक बात कही थी ?—तुमने लाखों-करोड़ों बातें कही थीं। हाँ, तो तुमने मुझसे क्या कहा था ?

निखल्यूडोव ने कहना आरम्भ किया—मैंने कहा था कि मैं तुमसे क्षमा माँगने आया हूँ .....।

"इन बातों में क्या रक्खा है ? क्षमा करो, क्षमा-करो, इन बातों में क्या रक्खा है ? . अच्छा तो यही हो कि तुम .... ।"

"कि मैं अपने पाप का प्रायश्चित्त करूँ—और केवल शब्दों के द्वारा ही नहीं, कार्य के द्वारा। मैंने तुमसे विवाह का सङ्कल्प किया है।"

सहसा उसके चेहरे पर भय की मुद्रा आ विराजी। उसकी तिर्छी आँखे उसकी ओर जमी रहीं, पर तो भी वे उसकी ओर देखती प्रतीत न होती थीं।

उसने क्रुद्ध भाव से भृकुटी चढ़ा कर कहा—यह किस लिए ?

"मैं समझता हूँ कि यह ईश्वर के प्रति मेरा कर्त्तव्य है।"

"तुम्हें अब कौन सा नया ईश्वर मिल गया ? तुम्हारे होश-हवास दुरुस्त नहीं हैं। ईश्वर—बेशक ! कैसा ईश्वर ? उस समय तुम्हें

ईश्वर याद न आया ?"—उसने कहा और इसके बाद वह चुप हो गई और उसका मुँह खुला रह गया। अब कहीं निखल्यूडोव को पता चला कि उसकी साँस से शराब की दुर्गन्ध आ रही है और अब उसकी समझ में उसकी उत्तेजना का कारण भी आ गया।

उसने कहा—शान्त होने की चेष्टा करो।

उसका चेहरा लाल सुर्ख हो उठा और उसने जल्दी-जल्दी कहना आरम्भ किया—मैं शान्त होने की चेष्टा क्यों करूँ? तुम समझते होगे कि मैं नशे में मतवाली हो रही हूँ? हाँ, मैं मतवाली हूँ; पर मैं जानती हूँ कि मैं क्या कह रही हूँ। मैं कैदी हूँ, क़सब कमाती हूँ और तुम बड़े आदमी हो, प्रिन्स हो। तुम मुझे छूकर खुद क्यों अपवित्र बनते हो? तुम अपनी प्रिन्सेज़ों की बग़लों में जाकर घुसो, मेरा मूल्य दस रुबल है।

निखल्यूडोव ने चोटी से एड़ी तक काँपते-काँपते कहा—तुम चाहे जितनी कडवी बातें कहो, फिर भी तुम मेरे हृदय की अवस्था को प्रकट न कर सकोगी। तुम कल्पना तक नहीं कर सकतीं कि मैं अपने आपको तुम्हारे प्रति कितना बड़ा अपराधी समझता हूँ।

उसने क्रुद्ध भाव से उसकी नक़ल उतारते हुए कहा—अपने आपको अपराधी समझता हूँ! उस समय तुमने क्यों न समझा था? तब तो सौ रुबल का नोट फेंक कर चले गए थे। यही .. . यही तुम्हारा मूल्य है!

निखल्यूडोव ने कहा—मैं जानता हूँ, अच्छी तरह जानता हूँ; पर अब क्या किया जा सकता है? मैंने निश्चय किया है कि तुम्हारा पीछा न छोड़ूँगा और मैं इस पर दृढ़ रहूँगा।

"और मैं कहती हूँ कि तुम नहीं रहोगे।"—उसने ज़ोर से अट्टहास करके कहा।

निखल्यूडोव ने उसका हाथ छूकर कहा—कटूशा!

"तुम चले जाओ यहाँ से। मैं कैदी हूँ और तुम ठहरे प्रिन्स, तुम्हारा यहाँ क्या काम है?"—वह चिल्ला उठी और उसका सारा चेहरा क्रोध से तमतमा उठा। उसने अपना हाथ खींच लिया।

उसके हृदय में उस समय जो भाव उठ रहे थे, उन्हें उसने झटपट व्यक्त कर डाला—"तुम मेरे द्वारा अपना उद्धार करना चाहते हो। इस जीवन में तुमने मेरे शरीर का आनन्द लिया, और अब दूसरे जीवन मे तुम मेरे द्वारा अपना उद्धार करना चाहते हो। मुझे तुम्हारी सूरत नहीं भाती, तुम्हारी यह ऐनक और यह गन्दी थूथड़ी देख-देख कर मुझे घृणा होती है। जाओ, जाओ!" वह चिल्लाती हुई अपने पाँवों पर उछल कर खड़ी हो गई।

उनके पास जेलर आया। बोला—यह गुलगपाड़ा क्यों मचा रक्खा है? यह नहीं .....।

निखल्यूडोव ने कहा—इसे छोड़ दो, जो करती है, करने दो।

जेलर ने कहा—इसे अपने आपको भूलना न चाहिए।

निखल्यूडोव ने कहा—"तुम अलग जाकर ठहरो!" और जेलर खिड़की के पास चला गया।

मसलोवा बैठ गई, नीची निगाह किए, और दृढ़ता के साथ अपने छोटे-छोटे हाथ जोड़े। निखल्यूडोव उसके ऊपर झुका और यह न जान सका कि उसे क्या करना चाहिए।

उसने कहा—तुम्हें मेरी बात पर विश्वास नहीं आता?

"इसी बात पर न कि तुम मेरे साथ ब्याह करने चले हो? और यह कभी होने का नहीं। फाँसी लगा कर दम निकाल देना मन्ज़ूर, यह मन्ज़ूर नहीं ; समझ गए !"

"ख़ैर, तो भी मैं तुम्हारी सेवा करता रहूँगा।"

"यह तुम्हारा काम है ; मैं तुमसे कुछ नहीं चाहती। साफ़-साफ़ बात है !"—वह बोली।

वह कातर भाव से रोदन करती हुई कहने लगी—हाय, मेरा दम तभी क्यों न निकल गया !

निखल्यूडोव बोल न सका। मसलोवा के आँसुओं ने उसे भी उद्वेलित कर दिया था। मसलोवा ने अपने नेत्र उठा कर उसकी ओर साश्चर्य देखा, और वह अपने रूमाल से अपने आँसू पोंछने लगी। इसी समय जेलर आ पहुँचा और बोला कि समय हो चुका।

निखल्यूडोव ने कहा—तुम आज उत्तेजित हो रही हो। अगर हो सका तो मैं कल आऊँगा। तुम इस बात पर अच्छी तरह विचार करना।

उसने इसका कोई उत्तर न दिया और वह बिना निगाह ऊँची किए, जेलर के पीछे-पीछे कमरे से बाहर निकल गई।

जब वह अपनी बारक में पहुँची तो कोराबलेवा ने कहा—तो बच्ची, अब तुम्हारे क्या कहने हैं ! वह तो तेरे ऊपर जी-जान से लट्टू हो रहा है ; जब तक तेरे पीछे लगा है, ख़ूब लाभ उठा। वह तुझे यहाँ से अवश्य निकाल ले जायगा। इन अमीरों के हाथ में सब कुछ होता है।

चोकीदार की स्त्री ने अपने सङ्गीतमय स्वर में कहा—हाँ, यही

बात है। जब कोई निर्धन आदमी विवाह करने का विचार करता है तो आस के मुँह तक पहुँचने में बहुत सी रुकावटें आ मौजूद होती हैं; पर पैसे वाले आदमी ने व्याह करने का विचार किया और व्याह हुआ रक्खा है। मेरी दुलारी, मैं भी ऐसे एक आदमी को जानती थी। तुझे मालूम है, उसने क्या किया?

वृद्धा स्त्री बोली—और मेरी बात कही?

पर मसलोवा ने अपनी सङ्गिनियों को कुछ उत्तर न दिया; वह चारपाई पर जा लेटी, अपनी तिरछी आँखों से कोने में देखती रही, और इसी प्रकार सन्ध्या हो गई।

उसकी आत्मा में एक व्यथाकारी सङ्घर्ष जारी था। निखल्यूडोव ने उससे जो कुछ कहा था उससे उसके स्मृति-पटल पर उस संसार का चित्र मुद्रित हो उठा था, जिसमें उसने कष्ट उठाए थे और जिसे उसने—उसका मर्म समझे बिना—घृणा के साथ छोड़ दिया था। वह अब तक जिस मोह-निद्रा में अचेत पड़ी थी उससे अब उसे जगा दिया गया था; पर पिछली बातों की स्पष्ट स्मृति के साथ जीवन धारण करना असम्भव था, यह नितान्त असह्य वेदना होती। अतः शाम को उसने कुछ वोडका ख़रीदी और अपनी सङ्गिनियों के साथ मिल कर पी।
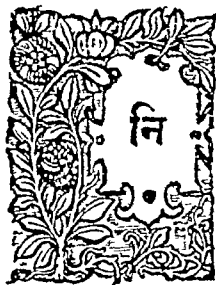
खल्यूडोव जब जेल से बाहर निकला तो मन ही मन कहने लगा—"तो उस सबका यह अर्थ था—यह !" अब कहीं जाकर वह अपने अपराध की गुरुता भली प्रकार समझ सका था। यदि वह अपने पाप का प्रायश्चित्त करने की चेष्टा न करता तो उसे कभी पता न चलता कि उसका अपराध कितना असह्य है। और साथ ही मसलोवा भी कभी न समझ पाती कि उसके साथ कैसा वीभत्स अत्याचार किया गया है। अब कहीं जाकर वह समझा कि उसने इस स्त्री की आत्मा के साथ कैसा अपकार किया है। अब कहीं जाकर मसलोवा देख और समझ सकी कि उसके साथ क्या कुछ किया गया है। अब तक निखल्यूडोव आत्म-श्लाघा की संवेदना के साथ क्रीडा करता आ रहा था, अब तक वह स्वयं ही अपनी पश्चात्ताप-भावना पर मुग्ध था, अब उसका हृदय तीव्र-भीति से परिपूर्ण था। वह जानता था कि वह अब उसका परित्याग न कर सकेगा, पर साथ ही वह यह भी न सोच सका कि उनके पारस्परिक सम्पर्क का क्या परिणाम होगा।

अभी वह बाहर जा ही रहा था कि एक अरोचक सी आकृति वाला जेलर क्रॉस और पदक लटकाए, उसके पास भेद-भरे ढङ्ग के साथ आ पहुँचा और उसके हाथ में एक लिफ़ाफ़ा देते हुए बोला—'योर ऐक्सीलेन्सी, यह किसी ने आपके पास भेजा है।

"किसी ने किसने ?"

"आप पढ़िएगा तो पता लग जायगा। एक राजनीतिक कैदी है, मैं उसी वार्ड में हूँ। वह मुझसे अनुरोध करने लगी। वैसे यह काम जेल के क़ायदे-कानून के ख़िलाफ़ है, पर दया-ममता भी तो कुछ .....!" वह अस्वाभाविक ढङ्ग से बातचीत कर रहा था।

निखल्यूटोव को आश्चर्य हुआ कि राजनीतिक क़ैदियों वाले वार्ड का जेलर इस प्रकार जेल की दीवारों के भीतर ही और सबकी निगाह के सामने पत्र पहुँचाता है, इस अवसर पर वह यह न जानता था कि वह आदमी जेलर भी था और जासूस भी। उसने पत्र ले लिया और जेल से बाहर आकर पढ़ा।

पत्र सहज लिपि में लिखा गया था और इस प्रकार था :—

"यह जान कर कि आप जेल में आते-जाते हैं और एक अपराधिनी में रुचि दिखाते हैं, आपसे भेंट करने को मैं भी उत्सुक हो गई। आप मुझसे मिलने की अनुमति माँगिए, आपको मिल जायगी और तब मै आपको आपकी रक्षिता के सम्बन्ध में और साथ ही अपनी गोष्ठी के सम्बन्ध में बहुत सारी बातें बताऊँगी। वीरा दुखोवा।"

वीरा दुखोवा नोवगोरोड गवर्नमेण्ट के एक छोटे से गाँव में स्कूल-मास्टरनी थी। निखल्यूडोव यहाँ एक बार रीछ का शिकार

करते समय अपने मित्रों के साथ आकर ठहरा था। उसने निखल्यूडोव से कुछ रुपए की याचना की थी जिससे वह अपने पढ़ने की पुस्तकें ख़रीद सके। निखल्यूडोव ने उसे रुपया दे दिया था और फिर इस सम्बन्ध में कभी कुछ स्मरण न किया था। पर अब उसे पता चला कि यह महिला एक राजनीतिक कैदी है और इसी जेल में है (जहाँ उसने सम्भवतः उसकी और मसलोवा की कहानी सुनी होगी) और उसकी सेवा करने में तत्परता प्रकट कर रही है।

किसी ज़माने में यह सब कुछ कितना सरल और सहज था और अब कितना कठिन और जटिल हो उठा था! निखल्यूडोव ने सहर्ष और स्पष्टतापूर्वक उन दिनों का और दुखोवा के साथ अपने परिचय का स्मरण किया। यह गाँव स्टेशन से चालीस मील की दूरी पर था। ,शिकार सफल हुआ था—दो रीछ मारे गए थे—और सारा मित्र-समुदाय वापस जाने से पहले भोजन की तैयारी कर रहा था कि इसी समय उस झोपड़ी की मालकिन निखल्यूडोव के पास आई और बोली कि पादरी-कन्या उससे कुछ बातें करना चाहती है।

किसी ने कहा—कुछ अच्छी भी है?

निखल्यूडोव ने कहा—"नहीं भाई, ऐसी बातें नहीं।" और वह गम्भीर चेहरा बना कर उठ बैठा। वह अपना मुँह पोंछता हुआ और इस बात पर आश्चर्य करता हुआ कि पादरी की कन्या उससे ऐसी क्या बात कहना चाहती है, उस झोपड़ी के भीतर पहुँचा। वहाँ आकर उसने एक पतली-दुबली, कुरूप कन्या को देखा; उसके नेत्र और तिरछी भवें अवश्य सुन्दर थीं।

"लो मिस, इनसे बातें कर लो, यही प्रिन्स हैं। मै इतने बाहर जाती हूँ।"

निखल्यूडोव ने पूछा—मैं तुम्हारी क्या सेवा कर सकता हूँ?

लडकी ने अस्त-व्यस्त भाव से कहा—"मै, मैं, मै देखती हूँ कि आप धनवान हैं और अपना पैसा इन व्यर्थ बातों में—शिकार में—बहाते हैं। मैं जानती हूँ .....मैं केवल एक बात चाहती हूँ कि मैं सबका कुछ उपकार कर सकूँ, पर मैं कोई उपकार नहीं कर सकती; क्योंकि मैं कुछ नहीं जानती।" उसके नेत्र इतने विश्वास-पूर्ण, इतने मृदुल और इतने सहृदय थे, और उसकी सुदृढ़ पर सलज्ज मुद्रा इतनी भावोत्पादिनी थी कि निखल्यूडोव को सहसा अनुभूति हुई कि वह स्वयं उसकी अवस्था में है (उसे अक्सर ऐसा अवसर आ पडता था) और वह उसके मर्म को समझ गया तथा उससे संवेदना करने लगा।

"मैं तुम्हारे किस काम आ सकता हूँ?"

"मैं यहाँ पढाती हूँ, पर मैं यूनीवर्सिटी कोर्स लेना चाहती हूँ, और मुझे इसकी अनुमति नहीं है। अर्थात् यह बात नहीं कि वे मुझे अनुमति नहीं देते, वे मुझे अनुमति दे देंगे, पर मेरे पास इसका साधन नहीं है। आप मुझे कुछ आर्थिक सहायता दीजिए, और कोर्स समाप्त होने के बाद मैं आपको भुगता दूँगी। मै यही सोच रही थी कि पैसे वाले आदमी रीछों की हत्या करते हैं और गाँव वालों को शराब पिलाते हैं, और यह बुरी बात है। उनसे कुछ अच्छा काम क्यों नही होता? मैं केवल अस्सी रूबल चाहती

हूँ .. ..पर यदि आप न देना चाहें तो मत दीजिए, कुछ परवाह नहीं !"—उसने खिन्न भाव से कहा।

"इसके विपरीत, मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि तुमने मुझे ऐसा अवसर दिया। मैं अभी रुपया लाए देता हूँ।"

वह बाहर पहुँचा और यहाँ उसके सङ्गी-साथी उसकी दिल्लगी उड़ाने लगे। वे उन दोनों की बातें सुन रहे थे। निखल्यूडोव ने उनकी चुटकियों पर कोई ध्यान न देकर बटुए में से रुपया निकाल कर उक्त महिला को दे दिया।

वह बोला—मुझे धन्यवाद मत दो ; उल्टे मुझे तुम्हारा धन्यवाद देना चाहिए।

उसे यह सब स्मरण करके बड़ा हर्ष हुआ, उसे यह स्मरण करके हर्ष हुआ कि किस प्रकार उसके एक सङ्गी अफ़सर ने आक्षेप योग्य परिहास किया था और उसके साथ उसकी लड़ाई हो पड़ी थी; और किस प्रकार एक दूसरे साथी ने उसका (निखल्यूडोव का) पक्ष लिया था और उसके साथ उसकी घनिष्ट मैत्री हो गई थी। वह शिकार कितना सफल रहा, और जब वह उस दिन रात को स्टेशन वापस लौटा तो... ....।

निखल्यूडोव को यह सब एक-एक करके स्मरण हो आया; पर सबसे अधिक उसे अपने स्वास्थ्य-जन्य उल्लास, शक्ति और चिन्ताओं से मुक्ति की अनुभूति हो रही थी। उसके फेफड़े बर्फ़ीली हवा के इतने गहरे-गहरे घूँट ले रहे थे कि उसका खालोंदार कोट सीने पर से तन गया था; वृक्षों पर से सुन्दर बर्फ़ झड़-झड़ कर उसके चेहरे पर गिर रहा था, उसका शरीर गर्म, उसका चेहरा ताज़ा

और उसकी आत्मा—चिन्ता, आत्म-भर्त्सना, भीति या आकांक्षा से स्वच्छन्द......यह सब कितना सुन्दर था! और अब, हे भगवान्! कितनी व्यथा है, कितना कष्ट है!

यह साफ़ ज़ाहिर था कि वीरा दुखोवा विप्लववादिनी थी और इसलिए उसे कैद किया गया था। उसे उससे अवश्य भेंट करना चाहिए, और इसलिए और भी कि उसने उसे मसलोवा के सम्बन्ध में कुछ सलाह देने का वचन दिया था।

तैंतालीसवाँ परिच्छेद
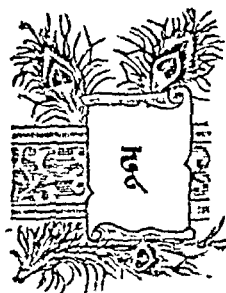
सरे दिन प्रातःकाल उठते ही निखल्यूडोव को स्मरण हुआ कि पिछले दिन उसने क्या किया था, और वह भयभीत हो उठा।

पर इस भय के होते हुए भी वह आरम्भ किए कार्य को उसी प्रकार जारी रखने के लिए पहले से भी अधिक कटिबद्ध हो गया।

वह कर्त्तव्य का बोध करता हुआ घर से रवाना हुआ और मसलोवा और साथ ही मेनशोव—माता-पुत्र मेनशोव, जिनके सम्बन्ध में उससे मसलोवा ने कहा था—से जेल में भेंट करने की अनुमति प्राप्त करने के लिए वाइस गवर्नर मैसलेनीकोव के पास पहुँचा। साथ ही वह दुखोवा से भेंट करने की अनुमति भी प्राप्त करना चाहता था और उसे आशा थी कि सम्भव है दुखोवा मसलोवा के किसी काम आए।

निखल्यूडोव इस मैसलेनीकोव को बहुत दिनों से जानता था; दोनों रेजीमेण्ट में रहे थे। इस समय मैसलेनीकोव रेजीमेण्ट का कोषाध्यक्ष था। वह कोमल हृदय और उत्साही अफ़सर था और रेजीमेण्ट तथा सम्राट के परिवार के अतिरिक्त और कुछ न जानता

था। अब निखल्यूडोव उसे एक ऐसे अधिकारी के रूप में पा रहा था जिसने सेना के पद को शासन-प्रबन्ध सम्बन्धी पद से बदल लिया था। उसने एक धनी और प्रबल स्त्री से विवाह किया था, जिसने उससे यह परिवर्त्तन कराया था। वह उसकी दिल्लगी उड़ाती या उसका आलिङ्गन करती, मानो वह उसका कोई पालू जानवर हो। निखल्यूडोव उनसे केवल शरद ऋतु में एक बार मिलने गया था, पर यह दम्पति उसे इतनी अरोचक सी लगी कि वह फिर कभी उधर न गया।

निखल्यूडोव को देखते ही मैसलेनीकोव का चेहरा खिल उठा। उसका वही मोटा लाल मुँह था और वह अब भी सेना की भाँति ही बढ़िया पोशाक पहनता था। उस समय वह सैनिक वर्दी पहनता, ब्रुश की हुई, तङ्ग और ताज़े से ताज़े फ़ैशन के काट की सिली हुई। अब वह सिविलियन कपड़े पहनता, जो उसी प्रकार तङ्ग होते और उनमें उसका सीना उभरा रहता तथा उनका काट ताज़े फ़ैशन के अनुरूप होता। दोनों की आयु में अन्तर होते हुए भी (मैसलेनीकोव चालीस वर्ष का था) वे एक-दूसरे से ख़ूब हिले-मिले थे।

"हलो दोस्त! तुमने आकर कितना अच्छा काम किया! चलो, मेरी स्त्री के पास चलो। अभी मीटिङ्ग में दस मिनट की देर है। मेरा अफ़सर आजकल यहाँ नहीं है, इसलिए आजकल मैं ही प्रधान अधिकारी हूँ"—उसने कहा, जिससे प्रकट हुआ कि वह इस बात से कितना सन्तुष्ट था।

"मैं काम के लिए आया हूँ।"

मैसलेनीकोव फ़ौरन चौकन्ना हो गया और आतुर तथा कठोर स्वर में बोला—क्यों, क्या काम है ?

"जेल में एक ऐसा क़ैदी है जिसमें मुझे बड़ी दिलचस्पी है, (जेल का नाम आते ही मैसलेनीकोव की मुद्रा कठोर हो उठी) और मैं उससे आज भेंट करना चाहता हूँ। आज मुलाक़ाती कमरे में नहीं, ऑफ़िस में, और नियत समय पर नहीं, किसी भी समय। मुझे बताया गया है कि यह तुम्हारे हाथ में है।"

"सो तो है, पर दोस्त इस बात को न भूल जाओ कि मैं केवल एक घण्टे का राजा हूँ।"—उसने निखल्यूडोव के घुटनों पर हाथ रखते हुए, मानो अपनी आन-बान के प्रभाव को मृदुल बनाने के लिए, कहा।

"तो तुम मुझे वह अनुमति पत्र लिख दोगे, जिसके द्वारा मैं उससे भेंट कर सकूँगा ?"

"वह कोई स्त्री है क्या ?"

"हाँ।"

"जेल में कैसे आई ?"

"विष देने के अपराध में दण्ड दे दिया गया है; वैसे निर्दोष है।"

"यह देखो ! तुम्हारी जूरी-व्यवस्था की यह दशा है। इसका अन्यथा उनके लिए सम्भव ही नहीं है। मैं जानता हूँ कि तुम मेरे साथ सहमत न होगे, पर मेरी सम्मति पूर्णतया. निर्धारित है—उसने एक ऐसे अनुदार प्रतिक्रिया-प्रिय पत्र की सम्मति को

व्यक्त करते हुए कहा, जिसे वह पिछले बारह महीने से पढ़ता आ रहा था—"मैं जानता हूँ, तुम लिबरल हो।"

निखल्यूडोव ने मुस्कराते हुए कहा—"मैं ख़ुद नहीं जानता कि मैं लिबरल हूँ या नहीं।" उसे इस बात पर हमेशा से आश्चर्य रहा कि केवल इसी कारण उसे एक विशिष्ट राजनीतिक दल में क्यों सम्मिलित कर लिया जाता है, और इसी कारण से उसे लिबरल क्यों पुकारना शुरू कर दिया जाता है कि निर्णय करने से पहले अभियुक्त को सफ़ाई देने का अवसर देना चाहिए कि दण्ड मिलने से पहले सब मनुष्य एक समान हैं, कि किसी के साथ मार-पीट या दुर्व्यवहार नहीं करना चाहिए; पर विशेषकर उन लोगों के साथ जिन पर अभी अदालत में मामला नहीं चला है। "मैं ख़ुद नहीं जानता कि मैं लिबरल हूँ या नहीं, पर मैं इतना अवश्य जानता हूँ कि वर्तमान व्यवस्था चाहे जितनी बुरी हो, कम से कम पुरानी न्याय-प्रणाली से अच्छी है।"

"और तुमने वकील किसे किया है?"

"मैंने फ़नारिन से मशविरा लिया है।"

मैसलेनीकोव ने मुँह बना कर कहा—"हे भगवान, फ़नारिन को!" और उसे याद आया कि किस प्रकार पिछले ही साल एक मामले में वह गवाही देने के लिए पेश हुआ था और किस प्रकार उक्त ऐडवोकेट अत्यन्त विनम्र-भाव से घण्टे भर तक उसका उपहास करता रहा था।

उसने कहा—मैं तुम्हें सलाह दूँगा कि उस फ़नारिन से बात तक मत करो। वह बुरा आदमी है।

निखल्यूडोव ने उसकी बात का उत्तर दिए बिना कहा—मुझे तुमसे एक अनुरोध और भी करना है। एक और स्त्री है—एक अध्यापिका, जिसे मैं बहुत दिनों से जानता था—बेचारी नन्हीं सी चीज़। उसे भी कैद किया गया है और वह मुझसे मिलना चाहती है। तुम उससे मिलने का अनुमति-पत्र दे दोगे?

मैसलेनीकोव ने अपना सिर एक ओर को झुकाया और सोचा।

"वह राजनीतिक क़ैदी है न?"

"हाँ, मुझे यही बताया गया है।"

"देखो न, राजनीतिक क़ैदियों से केवल उनके रिश्तेदारों को ही मिलने दिया जाता है। पर मैं तुम्हें एक खुला अनुमति-पत्र दिए देता हूँ, और आशा है तुम उसका दुरुपयोग न करोगे। तुम्हारी रक्षिता का नाम क्या है? दुखोवा? कुछ सुन्दर भी है?"

"बदसूरत!"—निखल्यूडोव ने उत्तर दिया।

मैसलेनीकोव ने असन्तोषपूर्वक सिर हिलाया और मेज़ के पास जाकर उसने छपे हुए शीर्षक वाले कागज़ पर लिखा—

"पत्र-वाहक प्रिन्स डिमिट्री इवानिच निखल्यूडोव को जेल के ऑफ़िस में क़ैदी मस्लोवा से और साथ ही मेडिकल असिस्टेंट दुखोवा से भेंट करने की अनुमति दी जाती है!"—और उसने एक खास ढङ्ग से हाथ घुमा कर नोट समाप्त कर दिया।

"अब तुम देख सकोगे कि वहाँ कैसी व्यवस्था रक्खी जाती है। और व्यवस्था कायम रखना बड़ा कठिन हो जाता है, विशेषकर निर्वासितों में बड़ा जमघट रहता है। पर मैं बड़ी कड़ाई के साथ

देख-भाल रखता हूँ और काम को रुचि के साथ करता हूँ। तुम उन्हें सुख और आराम में पाओगे। पर तुम्हें यह भी जानना चाहिए कि उनके साथ किस तरह से पेश आया जाता है। कुछ ही दिन पहले की बात है कुछ अशान्ति सी हो गई थी—हुक्म-अदूली कर दी थी; और कोई होता तो उसे ग़दर के नाम से पुकारता और बहुतों का सर्वनाश कर डालता; पर हमने सब कुछ ठीक-ठाक कर दिया। हमें एक ओर हितचिन्ता का ध्यान रखना चाहिए और दूसरी ओर दृढ़ता और अधिकार का।" उसने अपनी अँगूठी वाली मुट्ठी बन्द की—"बस हितचिन्ता और अधिकार।"

निखल्यूडोव ने कहा—भई, मैं यह सब तो कुछ नहीं जानता, पर मैं वहाँ दो दफ़ा गया था और बेहद उदास होकर लौटा।

अब मैसलेनीकोव ने एक सजीव वार्तालाप आरम्भ करते हुए कहा—तुम्हें काउण्टेस पैसेक से जान-पहचान करनी चाहिए। उसने तो बस अब इसी काम को अपने हाथ में ले लिया है। उससे बहुतों का भला होता है। उसकी बदौलत—और यदि मिथ्या सङ्कोच को उठा कर एक ओर रख दिया जाय तो किसी हद तक मेरी बदौलत भी—जेल की सारी बातों में परिवर्तन हो गया है, और इस ढङ्ग का परिवर्तन हो गया है कि अब वहाँ पहले जैसी रोमाञ्चकारिणी बाते नहीं होतीं, और अब वे लोग बडे सुख में हैं। ख़ैर, तुम ख़ुद देख लोगे। रहा फ़नारिन, सो मैं उसे व्यक्तिगत रूप से तो जानता नहीं—साथ ही हमारी सामाजिक अवस्था ही एक-दूसरे से बिलकुल भिन्न है—पर इसमें सन्देह नहीं कि वह दुष्ट

आदमी है ; और इसके अलावा वह कचहरी में ऐसी-ऐसी बातें कह डालता है—ऐसी बातें × × ×।

निखल्यूडोव ने काग़ज़ लेकर और अपने भूतपूर्व सहयोगी अफ़सर की बात पूरी सुने बिना विदा लेते हुए कहा—अच्छा, धन्यवाद !

"पर तुम मेरी स्त्री से मिलने नहीं चलोगे ?"

"क्षमा करो ; मेरे पास अब समय नहीं है।"

"पर यार, वह तो मेरा बुरा हाल कर डालेगी।"—मैसलेनीकोव ने अपने पुराने मित्र के साथ-साथ उतरते हुए कहा। वह इस प्रकार का सम्मान उन सारे व्यक्तियों को प्रदान किया करता था जो यदि उच्चतम नहीं, तो दूसरी श्रेणी के उच्चतम अवश्य होते थे, और इस परिधि में उसने निखल्यूडोव को भी परिगणित किया था। "चलो, खड़े-खड़े होते चलो।"

पर निखल्यूडोव दृढ़ रहा, और जिस समय अर्दली और द्वार-रक्षक उसकी छड़ी और ओवर कोट पकड़ाने और दरवाज़ा खोलने को (जिसके बाहर एक पुलिसमैन खड़ा था) झपटे, निखल्यूडोव ने फिर दुहराया कि वह सचमुच न ठहर सकेगा।

मैसलेनीकोव ने सीढ़ियों पर से चिल्ला कर कहा—अच्छा फिर बृहस्पति के दिन। उस दिन एक दावत है। मैं उससे कह दूँगा कि तुम आओगे।

खल्यूडोव मैसलेनीकोव के यहाँ से सीधा जेल में पहुँचा और इन्सपेक्टर के घर गया, जिसे वह अब जानता ही था। उसके कानों में फिर वही घटिया पियानो के बजने की आवाज़ आई, पर इस बार पहले का सङ्गीत न था, क्लीमेण्टी का अभ्यास था। इस समय भी पियानो की गति में वही पहले जैसी स्फूर्ति, स्पष्टता और द्रुत-भाव था। वही काली दासी लड़की ने निखल्यूडोव से कहा कि इन्सपेक्टर घर ही पर हैं, और वह उसे एक छोटे से ड्राइङ्ग-रूम में ले गई, जहाँ एक सोफ़ा रक्खा था और उसके आगे एक मेज़ रक्खी हुई थी। इस मेज़ पर छोटे से कसीदे के कपड़े पर लैम्प रक्खा हुआ था जिसके शेड के लिए गुलाबी कागज़ लगाया गया था। इन्सपेक्टर उसी प्रकार खिन्न और श्रान्त मुद्रा बनाए आया।

उसने अपनी वर्दी के बटन लगाते हुए कहा—आइए, बैठिए; बताइए क्या आज्ञा है?

"मैं वाइस-गवर्नर के पास से चला आ रहा हूँ और मुझे यह अनुमति-पत्र मिला है। मैं क़ैदी मसलोवा से मिलना चाहता हूँ।"

"मसलोवा से ?"—इन्सपेक्टर पियानो की ध्वनि के कारण स्पष्ट रूप से न सुन सका।

"जी नहीं, मसलोवा से।"

"अच्छा, ठीक !"—और इन्सपेक्टर उस द्वार की ओर गया जहाँ से सङ्गीत-ध्वनि आ रही थी।

उसने, इस स्वर में जिससे स्पष्ट विदित होता था कि इस सङ्गीत ने उसके जीवन को विपाक्त बना रक्खा है, कहा—मेरी, तुम एक मिनट के लिए भी नहीं रुक सकतीं। कुछ सुनाई नहीं देता।

पियानो बजना बन्द हो गया; पर उसके स्थान पर अनिच्छा-पूर्ण पग-ध्वनि सुनाई पड़ने लगी, और किसी ने दरवाज़े में से झाँक कर देखा भी।

इन्सपेक्टर की जान में जान आती दिखाई दी, उसने धीरे से एक सिगरेट सुलगाया और एक निखल्यूडोव के आगे पेश किया। निखल्यूडोव ने अस्वीकार कर दिया।

"मैं मसलोवा से मिलना चाहता हूँ।"

"मसलोवा से ? आज मसलोवा से मिलना कुछ सुविधाजनक न रहेगा।"—इन्सपेक्टर बोला।

"यह कैसे ?"

इन्सपेक्टर ने क्षीण मुस्कराहट के साथ कहा—यह सारा आप ही का दोष है। प्रिन्स, उसे आप एक पैसा मत दीजिए। आप देना

ही चाहते हैं तो मेरे हाथ में दीजिए, मैं उसके लिए रख छोड़ूँगा। आपने उसे कल कुछ दे दिया होगा, उसने शराब ले ली (यह एक ऐसी बुराई है जिसे हम जड़ से उखाड़ कर फेंक ही नहीं सकते), और आज वह नशे में मतवाली बनी हुई है, कुछ होश-हवास नहीं।

"सच?"

"जी हाँ। मुझे विवश होकर कुछ कठोर उपायों से काम लेना पड़ा है और मैंने उसे काल-कोठरी में बन्द करवा दिया है। वैसे वह बड़ी शान्त सी स्त्री है। पर आप उसे अब एक पैसा न दीजिए। ये लोग इतने × × ×।"

पिछले दिन जो कुछ हुआ था, निखल्यूडोव के नेत्रों के आगे उसका स्पष्ट चित्र खिंच गया और वह एक बार फिर भयभीत हो उठा।

"और राजनीतिक कैदी दुखोवा; मैं उससे मिल सकता हूँ?"

"हाँ, आप चाहें तो मिल सकते हैं—क्यों, क्या चाहिए?" इन्सपेक्टर ने एक चार-पाँच साल की लड़की से कहा जो निखल्यूडोव की ओर देखती हुई अपने पिता के पास आ पहुँची थी। लड़की यह न देख सकी कि वह किस तरफ़ को बढ़ रही है, और अपने पिता की ओर बढ़ते-बढ़ते उसका पाँव क़ालीन में उलझ गया। इन्सपेक्टर ने हँस कर कहा—अब गिरी मुँह के बल।

निखल्यूडोव ने कहा—तो यदि मैं उससे मिल सकता हूँ तो मिला दीजिए।

इन्सपेक्टर ने लड़की को, जो अभी तक उसी प्रकार निखल्यूडोव

की ओर देख रही थी, उठा कर गले मे लगाया, और सस्नेह सङ्केत से बालक को एक ओर ले जाकर वह बाहरी कमरे में पहुँचा। उसने अभी दासी की सहायता से ओवरकोट कठिनता से पहना होगा कि उसके दरवाज़े के पास पहुँचते-पहुँचते डीमेण्टी का गाना फिर आरम्भ हो गया।

इन्सपेक्टर ने निखल्यूडोव के साथ नीचे उतरते-उतरते कहा—यह सङ्गीत विद्यालय में थी, पर वहाँ आजकल बड़ी अव्यवस्था फैली हुई है। वैसे सङ्गीत में बड़ी चतुर है, कन्सर्टों में खेलना चाहती है।

इन्सपेक्टर और निखल्यूडोव के पहुँचते ही जेल के दरवाज़े खोल दिए गए और जेलरों ने अपनी टोपियों से अँगुलियाँ लगाए हुए इन्सपेक्टर का नेत्रों द्वारा अनुसरण किया। चार आदमी किसी चीज़ से भरा हुआ टब ला रहे थे; इन्सपेक्टर को देख कर वह एक ओर को मुड़ गए। उनमें से एक ने क्रुद्ध भाव से भृकुटी चढ़ाई और उसके काले नेत्र चमक उठे।

इन्सपेक्टर ने इन क़ैदियों की ओर कोई ध्यान न दिया; वह श्रान्त भाव से टाँगें घसीटता हुआ निखल्यूडोव के साथ हॉल की ओर बढ़ा चला गया। साथ ही उसकी बातचीत का सिलसिला भी जारी था—इसमें सन्देह नहीं कि इस योग्यता को विकसित करना चाहिए, इसे बन्द रखने से काम न चलेगा, पर आप जानते ही हैं छोटे घर में यह कितना बुरा लगता है।

हॉल में पहुँच कर उसने निखल्यूडोव से पूछा—आप किससे मिलना चाहते हैं?

"दुखोवा से।"

"वह तो इमारत में है, अभी कुछ देर तक आपको ठहरना पड़ेगा।"

"इस बीच में मैनशोव माँ-बेटे से न मिल लूँ? वही जिन पर आग लगाने का अभियोग है।"

"हाँ, ज़रूर। बारक नं० २१। उन्हें अभी बुलवा दिया जायगा।"

"पर क्या मैं पुत्र मैनशोव से उसकी बारक ही में नहीं मिल सकता?"

"पर मुलाक़ाती कमरा आपके लिए अच्छा रहता।"

"नहीं, मेरे लिए बारक अच्छी रहेगी। मुझे वहीं रुचि है।"

"आपकी रुचि भी किसी न किसी चीज में उत्पन्न हो ही जाती है!"—इसी समय बगल के दरवाज़े से साफ़-सुथरी पोशाक पहने सहकारी इन्सपेक्टर भी आ पहुँचा।

इन्सपेक्टर ने अपने सहकारी से कहा—प्रिन्स को नं० २१ की बारक में मैनशोव से मिला लाओ; और फिर आपको ऑफ़िस में ले जाना। इधर मैं उसके पास जाता हूँ। क्या नाम है उसका?

"वीरा दुखोवा।"

इन्सपेक्टर का सहकारी सुन्दर युवक था, उसकी मूँछें रँगी हुई थीं और उनमें से यू० डी० कोलन की सुगन्ध आ रही थी। उसने प्रफुल्लित मुस्कराहट के साथ निखल्यूडोव से कहा—इधर तशरीफ लाइए! तो आपकी तबीयत यहाँ लगती है?

था। पैरों की आहट सुन कर उसने अपना सिर उठाया और दरवाज़े की ओर देखा। उसके चेहरे पर और विशेष कर उसकी आँखों में हताश निर्जीविता की मुद्रा छाई हुई थी। यह स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था कि उसे इस बात तक से कोई प्रयोजन प्रतीत न होता था कि उसकी बारक का मुआयना कौन कर रहा है। चाहे कोई क्यों न हो, उस कैदी को किसी से अपने भले की आशा न थी। निखल्यूदोव को रोमाञ्च हो आया और वह बाकी छेदों में झाँके बिना मैनशोव की न० २१ बारक के पास पहुँच गया। जेलर ने दरवाज़ा खोला। एक लम्बी गर्दन, छोटे सिर, हृष्ट-पुष्ट मांस-पेशियों और सहृदयतापूर्ण गोल आँखों वाला युवक अपनी चारपाई के पास खड़ा हुआ जल्दी-जल्दी अपना चोग़ा डाल रहा था। उसने आगन्तुकों की ओर भीत दृष्टि से देखा। निखल्यूदोव उसकी उन सहृदय गोल आँखों की ओर विशेष रूप से आकृष्ट हुआ, जो बारी-बारी से निखल्यूदोव, सहकारी और जेलर की ओर भीत, प्रश्नात्मक भाव से ताक रही थीं।

"आप तुम्हारे मामले की पूछ-ताँछ करने आए हैं।"

"आपका धन्यवाद !"

निखल्यूदोव गन्दे झरोखों वाली खिड़की के पास जाता-जाता बोला—हाँ, मुझे तुम्हारे बारे में बताया गया है, और मैं तुम्हारे मामले की सारी कहानी शुरू से आख़िर तक तुम्हारे ही मुँह से सुनना चाहता हूँ।

मैनशोव भी खिड़की के पास आ गया और आरम्भ में इन्सपेक्टर के सहकारी की ओर सङ्कोचपूर्वक देखते हुए, और फिर शनैः-शनैः निर्भीकता धारण करते हुए, अपनी कहानी सुनाने

लगा। जब सहकारी बारक से बाहर कोई आदेश देने चला गया तो कैदी पूर्णतया निर्भीक हो गया। उसने कहानी इस लहजे और इस ढङ्ग के साथ सुनाई जो उसके जैसे सीधे-सादे देहाती लड़के के लिए स्वाभाविक थी। निखल्यूडोव को यह कहानी एक जेल में पड़े, कैदियों के पतनकारी कपड़े पहने व्यक्ति के मुँह से बड़ी विलक्षण सी लगी। निखल्यूडोव सुनता रहा, और साथ ही साथ अपने चारों ओर—नीची खाट, उस पर पड़ी चटाई, मोटी छड़ों वाली खिड़की, गन्दी, सीली हुई दीवार और जेली चोगे तथा जूते से विकृत हुई इस अभागे देहाती की आकृति की ओर—देखता गया और वह अधिकाधिक खिन्न होता गया। यदि कोई उपाय होता तो वह इस मृदुल स्वभाव लड़के की कहानी पर विश्वास न करना पसन्द करता। उसे इस बात की कल्पना तक बड़ी भयावह प्रतीत हुई कि लोग-बाग किसी आदमी को, केवल इस कारण से कि स्वयं उसी पर अत्याचार किया गया है, पकड़ कर और जेल के कपड़े पहना कर ऐसी भयङ्कर घृणित जगह में डाल देने का जघन्य कार्य कर सकते हैं। और यह विचार कि यह सत्य प्रतीत होने वाली कहानी, जो इतनी मृदुलता के साथ कही गई है, सम्भव है, सोलह आने गढ़ी हुई हो, उसे और भी भयङ्कर प्रतीत हुआ। कहानी इस प्रकार थी—इस युवक के विवाह के बाद ही उसके गाँव का सरायवाला उसकी स्त्री को फुसला ले गया। युवक ने हर जगह फ़रियाद की। पर सरायवाला हर जगह किसी न किसी तरह रिश्वत दे-देकर बेलाग बचा रहा। एक दफ़ा यह युवक अपनी स्त्री को ज़बर्दस्ती पकड़ लाया, पर वह

दूसरे दिन फिर भाग गई। इस पर इसने सराय वाले के पास पहुँच कर अपनी स्त्री माँगी और उसे अपनी आँखों से वहाँ देखा भी; पर सराय वाले ने साफ मुकर कर कह दिया कि वह यहाँ नहीं है और उसे वहाँ से जाने की आज्ञा दी। यह युवक वहाँ धरना देकर बैठ गया और सराय वाले और उसके नौकर ने इसे इतना मारा कि वह खून से लथपथ हो गया। दूसरे दिन सराय में आग लग गई और इस युवक और इसकी माँ को आग लगाने के अभियोग में पकड़ लिया गया। इसने आग लगाई न थी, बल्कि उस समय यह किसी मित्र से मिलने जा रहा था।

"तो यह ठीक है कि तुमने आग नहीं लगाई?"

"सरकार, मैंने तो कभी इसकी नीयत भी नहीं की। यह मेरे किसी वैरी का काम है। मैंने सुना था कि उसने कुछ दिन पहले ही उसका बीमा करा लिया था। सब कहते हैं कि यह माँ-बेटे ने मिल कर किया है, और हमने उसे धमकी दी थी। सरकार, झूठ न बोलूँगा, मैं एक बार उसकी खोज में गया अवश्य था, जी को और अधिक न रोक सका—पर रहा आग लगाना, सो यह मेरा काम नहीं है। उसने खुद आग लगाई और हमारे सिर थोप दिया। आग लगने की बेला में वहाँ था तक नहीं, पर उसने पहले से ही ऐसा इन्तज़ाम कर रक्खा था कि वह उसी घड़ी हो जब हम माँ-बेटे वहाँ मौजूद हों।"

"क्या यह सच्ची बात है?"

"ईश्वर मेरा गवाह है, बिलकुल सच्ची है। सरकार, तुम्हीं मालिक हो × × ×!" और निख्ल्यूडोव ने उसे अपने पैरों पर गिरने से बड़ी

कठिनता से रोका। "सरकार, रहम खाओ × × × देखो, मैं बिना किसी क़सूर के यहाँ पड़ा सड़ रहा हूँ।" और सहसा उसका चेहरा काँप उठा और वह अपने चोग़े की आस्तीन उलटता हुआ रोने लगा और अपनी मैली क़मीज से आँसू पोंछने लगा।

सहकारी ने कहा—चलिएगा?

"हाँ × × × अच्छा, घबराने की बात कोई नहीं है। जो कुछ हो सकेगा, किया जायगा।"—और इतना कह कर निखल्यूदोव बाहर चला गया। मैनशोव दरवाज़े के पास आ खड़ा हुआ, अतः जेलर ने दरवाज़ा बन्द किया तो वह उसके जा लगा। जिस समय जेलर उसमें ताला लगा रहा था, वह भीतर से सूराख़ में से बाहर झाँक रहा था।
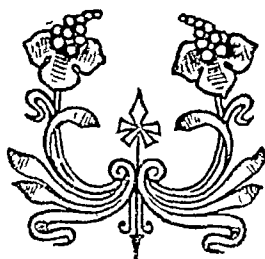
ब निखल्यूडोव उस चौड़े बरामदे मे से होता हुआ वसन्ती रङ्ग के चोगे, छोटे-छोटे और चौडे-चौड़े पाजामे, और जेली जूते पहने तथा उनकी ओर सोत्सुक नेत्रों से ताकते हुए आदमियों के पास से गुज़रा (भोजन का समय था और सारी बारकों के द्वार खोल दिए गए थे) तो उसे उनके प्रति समवेदना, और उन आदमियों के आचरण के प्रति, जिन्होंने इन सबको यहाँ डाल रक्खा था, ग्लानि और क्षोभ के भावों के विलक्षण सम्मिश्रण की अनुभूति हुई, और साथ ही—यद्यपि वह स्वयं न जानता था कि क्यों—इस प्रकार शान्त भाव से उनका निरीक्षण करते फिरने पर उसके हृदय में आत्मग्लानि का भाव भी उदित हुआ।

एक बरामदे में कोई आदमी अपने जूते फ़र्श पर बजाता हुआ चारक के दरवाज़े पर दौड़ा आया। और भी कई आदमी निकल आए और निखल्यूडोव का मार्ग रोक कर उसे बार-बार सलाम करने लगे।

"सरकार—तुम्हें हम किस नाम से पुकारें—हमारा मामला ठीक करा दो।"

"मैं अफ़सर नहीं हूँ। मैं कुछ नहीं जानता।"

एक क्रुद्ध स्वर सुनाई दिया—"फिर भी, बाहर से तो आए हो; किसी से—किसी अफ़सर से ही—इतना तो कह दो कि हमारे ऊपर रहम खाओ, हम भी आदमी हैं। बिना किसी बात के हम यहाँ दो महीने से पड़े-पडे सड रहे हैं।"

निखल्यूडोव ने पूछा—क्या मतलब? क्यों?

"क्यों? हम खुद नहीं जानते क्यों, पर यहाँ पडे-पटे हमें यह दूसरा महीना लग गया।"

सहकारी ने कहा—जी हाँ, बात ठीक है और इसका कारण एक आकस्मिक दुर्घटना है। इन लोगों को इसलिए पकड़ रक्खा है कि इनके पास पासपोर्ट नहीं है, और इन्हें इनके देश में भेजा जाना चाहिए था; पर वहाँ की जेल में आग लग गई है, और स्थानिक अधिकारियों ने लिख भेजा है कि हम इन्हें यहीं रोक रक्खे। इसलिए हमने और बाकी सारे बिना पासपोर्ट वाले आदमियों को उनके देशों को भेज दिया है, केवल यही यहाँ रह गए हैं।

निखल्यूडोव दरवाज़े पर रुकता हुआ कह उठा—क्या! सिर्फ इसी कारण से?

कोई चालीस आदमी, जेल के कपडे पहने हुए निखल्यूडोव और सहकारी को चारों ओर से घेर कर खड़े हो गए और उनमें से कई एक साथ बोलने लगे। सहकारी ने रोका।

"तुममें से कोई एक आदमी बोले।"

एक अच्छी ख़ासी सूरत-शक्ल और लम्बे कद वाला पचास वर्ष का मिस्त्री आगे बढ़ा और बोला कि उन सबको अपने देश वापस जाने की आज्ञा दे दी गई है, पर उन्हें पासपोर्ट के कारण जेल में रोक रक्खा गया है, यद्यपि उनके पासपोर्ट की अवधि बीते केवल दो सप्ताह हुए हैं। ऐसा हर साल होता आया है—वे न मालूम कितनी बार पासपोर्ट पर नई सही कराना भूल गए थे और न मालूम कितनी बार उनकी अवधि बीती, और आज तक कभी किसी ने टोका तक नहीं—पर इस साल उन्हें रोक रक्खा गया है और जेल में डाल दिया गया है, मानो उन्होंने किसी के यहाँ डाका मारा हो।

"हम सब मिस्त्री हैं और एक ही जगह के हैं। हमें बताया गया है कि हमारे देश की जेल में आग लग गई है, पर इसमें हमारा क्या दोष है? हमारी सहायता करो।"

निखल्यूडोव सुनता तो रहा, पर उसकी समझ में कुछ न आया। उसका सारा ध्यान उस मृदुल स्वभाव वृद्ध के गाल पर चलते हुए कई पैरों वाले कीड़े की ओर आकृष्ट था।

उसने सहकारी की तरफ़ मुख़ातिब होकर पूछा—यह क्या? क्या सिर्फ़ इतनी बात के लिए?

सहकारी ने शान्त भाव से कहा—जी हाँ, अब तक इन्हें भिजवा देना चाहिए था, सब अपने-अपने घर पहुँच जाते; पर ऐसा मालूम पड़ता है कि ऊपर वाले इनकी बात ही भूल गए हैं।

पर अभी सहकारी की बात समाप्त न हुई थी कि एक उद्वेग-शील नन्हा सा आदमी जेली कपड़े पहने आगे बढ़ा और अपने मुँह

को बुरी तरह बिगाड़ कर कहने लगा कि अकारण ही उनके साथ ऐसा बुरा व्यवहार किया जा रहा है।

वह कह रहा था—कुत्तों से भी गया बीता।

"देखो-देखो, जुबान को लगाम दो, ज़्यादा बढ़ कर बात नहीं करते हैं, नहीं तो.... ।"

"नहीं तो क्या? हमारा अपराध क्या है?"—नन्हें आदमी ने उद्विग्नतापूर्वक चिल्ला कर कहा।

सहकारी ने डपट कर कहा—"ख़ामोश रहो।" और नन्हा सा आदमी ख़ामोश हो गया।

"पर इस सबका मतलब क्या है?"—निखल्यूडोव ने बारक से बाहर निकलते हुए मन ही मन कहा। उसकी ओर, बारकों के दरवाज़ों में खड़े हुए और मार्ग में मिलने वाले कैदियों की सैकड़ों आँखें लगी हुई थीं और निखल्यूडोव को अनुभूति सी हुई कि मानो वह इस दृष्टि-समूह को पार कर रहा हो।

बरामदा पार करने के बाद निखल्यूडोव कह उठा—क्या सचमुच यहाँ बिलकुल निरपराध व्यक्तियों को डाल रक्खा जाता है?

इन्सपेक्टर के सहकारी ने कहा—आप हमसे क्या कराना चाहते हैं? ये झूठ बोलते हैं। इनकी बातों पर जाइए तो ये सब दूध के धोए हैं। पर कभी-कभी ऐसा भी होता है कि सचमुच निरपराध आदमियों को यहाँ अकारण डाले रक्खा जाता है।

"पर इन्होंने तो कुछ नहीं किया।"

"जी हाँ, यह तो मानना ही पड़ेगा। फिर भी ये लोग बड़े बिगड़े हुए होते हैं। कुछ आदमी ऐसे बिगड़े-दिल होते हैं कि उनकी

कड़ी देख-रेख किए बिना काम नहीं बनता। कल इसी ढङ्ग के दो आदमियों को सज़ा दी गई थी।"

"सज़ा दी गई थी? कैसे?"

"शीशम की टहनी से कोड़े लगाए गए।"

"पर शारीरिक दण्ड तो अब उठा दिया गया है।"

"उन लोगो के लिए नहीं, जो अपने अधिकारों से वञ्चित हो जाते हैं। वे इसके अधिकारी हैं।"

निख्ल्यूडोव को स्मरण आया कि कल हॉल में प्रतीक्षा करते हुए उसने क्या देखा था; और अब उसकी समझ में आ गया कि उस समय दण्ड दिया जा रहा था। और कौतूहल, विषण्णता, अस्त-व्यस्तता और नैतिक मिचलाहट—जो शीघ्र ही शारीरिक मिचलाहट के रूप में परिवर्त्तित हो गई—के मिश्रित भावोद्रेक ने उस पर पहले से कहीं अधिक प्रबल रूप से अधिकार कर लिया।

वह सहकारी की बात पर बिना कुछ ध्यान दिए, और बिना इधर-उधर देखे, सीधा ऑफ़िस में पहुँचा, जहाँ इन्सपेक्टर बैठा हुआ किसी और कार्य में संलग्न था और दुखोवा को बुलवाने की बात भूल गया था। जब निख्ल्यूडोव ने कमरे में प्रवेश किया तब कहीं उसे दुखावा को बुलाने की बात याद आई।

उसने कहा—आप बैठिए, अभी बुलाए देता हूँ।
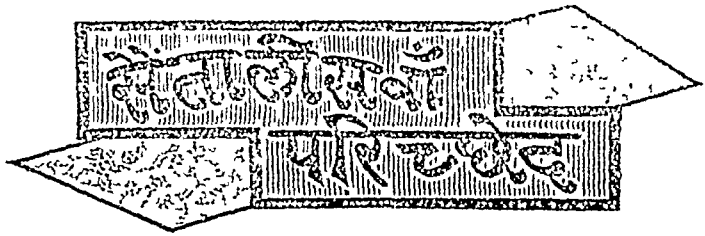
ऑफ़िस में दो कमरे थे। एक कमरे में बड़ा सा टूटा-फूटा चूल्हा और दो गन्दी खिड़कियाँ थीं, और एक कोने में कैदियों को नापने का काला सा स्टैण्ड रक्खा था; दूसरे कमरे में ईसा की बड़ी सी मूर्ति लटकी हुई थी, जो उन स्थानों में सर्वत्र पाई जाती है, जहाँ मनुष्यों को यन्त्रणाएँ दी जाती हैं। इस कमरे में कई जेलर खड़े हुए थे; दूसरे कमरे में कोई बीस पुरुष और स्त्रियाँ, दो-तीन मिल कर बैठे हुए धीमे स्वर में बातचीत कर रहे थे। खिड़की के पास लिखने की मेज़ लगी हुई थी।

इन्सपेक्टर मेज़ के आगे बैठ गया और उसने अपनी बग़ल की कुर्सी निखल्यूडोव को प्रदान की। निखल्यूडोव बैठ गया और उस कमरे के स्त्री-पुरुषों पर दृष्टि दौड़ाने लगा।

उसकी दृष्टि सबसे पहले जिसकी ओर आकृष्ट हुई वह एक सुरूप युवक था, जो छोटी जाकट पहने काली भवों वाली एक अधेड़ स्त्री के सामने खड़ा हुआ उससे उत्सुक भाव से कुछ कह

रहा था और साथ ही साथ हाथ से कुछ सङ्केत भी करता जाता था। उसके पास ही एक वृद्ध नीला चश्मा लगाए बैठा था और जेल के कपडे पहने एक युवती स्त्री का हाथ पकडे हुए था, जो उससे कुछ कह रही थी। एक स्कूल का विद्यार्थी भीत मुद्रा के साथ वृद्ध की ओर देख रहा था। एक कोने में एक प्रेमी-प्रेमिका बैठे थे। लड़की अभी नादान सी ही थी, बड़ी सुन्दर थी, उसके बाल छोटे और लुभावने थे, और चेहरा सजीवतापूर्ण था; वह बढ़िया पोशाक पहने हुए थी। युवक की सूरत-शक्ल अच्छी थी और वह रबड़ की जाकट पहने बैठा था। दोनों कोने में बैठे हुए एक-दूसरे के कान में कुछ फुसफुसा रहे थे और प्रेम-समुद्र में निमग्न प्रतीत होते थे। मेज़ के बिलकुल पास ही एक सफ़ेद बालों वाली स्त्री काले कपड़े पहने बैठी थी; यह स्पष्ट था कि वह उस क्षय रोग ग्रस्त युवक की माँ थी, जो उसके पास ही रबड़ की जाकट पहने बैठा था। उसका सिर अपने पुत्र के कन्धे पर रक्खा था और वह कुछ कहने की बार-बार चेष्टा करने पर भी सिसकियों के कारण कुछ कह न सकती थी। युवक के हाथ में एक कागज़ था और यह निश्चय न कर सकने के कारण कि वह उसका क्या करे, उसे क्रुद्ध भाव से बार-बार तोड़-मरोड़ रहा था। उनके पास एक मोटी सी छोटे बालों वाली, ललमुँही लड़की बैठी थी, जिसके नेत्र बहुत बड़े-बड़े थे और जो भूरे रङ्ग की पोशाक पहने बैठी थी। वह रोती हुई, माँ के पास बैठी हुई, उसे धीरे-धीरे थपथपा रही थी। इस लड़की के सारे अवयव साँचे में ढले हुए थे; उसके नन्हें-नन्हें सफेद हाथ, उसके लहरदार छोटे-छोटे बाल, उसकी सुदृढ़ नासिका और ओंठ; पर

उसके मुख-मण्डल का मुख्य सौन्दर्य उसके सहृदय, विश्वासपूर्ण विशाल नेत्रों में निहित था। वे सुन्दर नेत्र माँ की ओर से हट कर कमरे में आते हुए निखल्यूडोव की ओर उठे और उसके नेत्रों से मिले। पर तत्काल ही उसने अपनी निगाह चुरा ली और अपनी माँ से कुछ कहा। कोने में बैठे प्रेमी-द्वय से कुछ ही दूरी पर एक साँवले रङ्ग का विषण्ण सा आदमी बाल बिखेरे बैठा था और एक दाढ़ी-विहीन मुलाक़ाती से—जो स्फोप्टस्की दल का अनुयायी दिखाई देता था—क्रुद्ध भाव से बातचीत कर रहा था।

निखल्यूडोव इन्सपेक्टर के पास बैठा-बैठा इन सबकी ओर सङ्कुचित कौतूहल के साथ देखता रहा। एक नन्हा सा लड़का—जिसके बाल कटे हुए थे—उसके पास आया और उसे तीक्ष्ण स्वर में सम्बोधन करके बोला—और आप किसकी राह देख रहे हैं?

निखल्यूडोव इस प्रश्न से विस्मित हो उठा, पर जब उसने लड़के की ओर दृष्टिपात किया और उसके नन्हे से गम्भीर चेहरे को देखा और उसके उज्ज्वल नेत्रों को अपनी ओर मनोयोगपूर्वक देखते पाया तो उसने गम्भीर भाव से उत्तर दिया कि वह अपनी जान-पहचान की एक स्त्री से भेंट करने की प्रतीक्षा कर रहा है।

लड़के ने पूछा—वह आपकी बहिन हैं क्या?

निखल्यूडोव ने साश्चर्य कहा—नहीं, वह मेरी बहिन तो नहीं है। और तुम, तुम किसके साथ आए हो? उसने पूछा।

"मैं?—मामा के साथ; वह राजनीतिक हैं।"—उसने उत्तर दिया।

पर इन्सपेक्टर ने निखल्यूडोव के लड़के के साथ बातचीत करने

को नियम-विरुद्ध समझा और कहा—मेरी पैवलोटना, कोलसा को ले जाओ।

मेरी पैवलोटना—वही सुन्दर बालिका, जिसकी ओर निखल्यूडोव का ध्यान आकृष्ट हुआ था—सीधी तन कर खड़ी हो गई, और दृढ़, लगभग पुरुषोचित, गति के साथ चल कर निखल्यूडोव के पास आ पहुँची।

उसने अपने विशाल, सहृदय, विश्वासपूर्ण नेत्रों से सीधे निखल्यूडोव के नेत्रों में झाँकते हुए, कुछ मुस्करा कर कहा—"यह आपसे क्या पूछ रहा है—आप कौन हैं?" और यह सब उसने इतने सहज भाव से किया, मानो इस बात में किसी प्रकार के सन्देह की गुञ्जायश नहीं हो सकती कि सबके साथ उसका भाई-बहिन का सम्बन्ध है।

"इसे सारी बातें जानने की पड़ी रहती है"—उसने लड़के की ओर इतनी मृदुल और स्निग्ध मुस्कराहट के साथ देखते हुए कहा कि लड़के और निखल्यूडोव—दोनों को इसके उत्तर में मुस्कराना पड़ा।

निखल्यूडोव ने कहा—यह मुझसे पूछ रहे थे कि मैं किससे मिलने आया हूँ।

इन्सपेक्टर ने कहा—मेरी पेवलोटना, अपरिचित आदमियों से बातचीत करना नियम-विरुद्ध है; तुम स्वयं जानती हो कि यह नियम-विरुद्ध है।

"अच्छी बात है, अच्छी बात है।"—और इतना कह कर वह उस क्षय-रोग-ग्रस्त युवक की माता के पास चली गई, और कोलसा

का नन्हा सा हाथ अपने बड़े से सफ़ेद हाथ में पकड़ कर बैठ गई और वह उसके चेहरे की ओर निर्निमेष दृष्टि से देखता रहा।

निखल्यूडोव ने इन्सपेक्टर से पूछा—यह छोटा लड़का कौन है?

"इसकी माँ राजनीतिक क़ैदी है और इस लड़के का जन्म जेल ही में हुआ था।"—इन्सपेक्टर ने हर्षित स्वर में कहा, मानो उसे यह बताने में प्रसन्नता हो रही हो कि उसकी जेल-संस्था कैसी अजूबा है।

"क्या यह सम्भव है?"

"जी हाँ, और अब यह अपनी माँ के साथ साइबेरिया जा रहा है।"

"और वह युवती लड़की?"

इन्सपेक्टर ने कन्धे उचका कर कहा—मैं आपके सारे प्रश्नों का उत्तर नहीं दे सकता। और लीजिए, दुखोवा भी आ पहुँची।

पिछले द्वार से लड़खड़ा कर चलती हुई बड़े-बड़े सहृदय नेत्रों वाली, कृश वीरा दुखोवा भी आ पहुँची। उसने निखल्यूदोव का हाथ दबाते हुए कहा—आपके आने के लिए धन्यवाद। आप मुझे भूले तो नहीं हैं? आइए, बैठ जायँ।

"मैंने तुम्हें इस अवस्था में देखने की आशा स्वप्न में भी न की थी।"

"मैं ख़ूब प्रसन्न हूँ। यह सब कुछ इतना हर्षदायक है कि मैं इससे अधिक कुछ नहीं चाहती हूँ।"—वीरा दुखोवा ने निखल्यूदोव की ओर अपने स्वाभाविक, अति विशाल, गोल और सहृदय नेत्रों से देखते हुए और अपनी बेहद पतली नसदार गर्दन को—जिसके चारों ओर उसकी बोडिस का मैला, मसला कॉलर था—उमेठते हुए कहा।

निखल्यूदोव ने उससे पूछा कि वह जेल में कैसे आई।

इसके उत्तर में उसने अपनी सारी कहानी अत्यन्त सजीवता के साथ कहनी आरम्भ की। उसके भाषण में प्रचार, अव्यवस्था,

सामाजिक वर्ग, श्रेणियाँ, उपश्रेणियाँ आदि विशेष शब्दों का बहुत प्रयोग था और वह समझती दिखाई देती थी कि इन शब्दों के अर्थ सब कोई जानते होंगे। पर निखल्यूडोव ने इन शब्दों को आज तक न सुना था। उसने उसे नारो डोवोल्सोव (जन-स्वातन्त्र्य) सम्बन्धी सारी गुप्त बातें बताईं, और इस दृढ़-विश्वास के साथ कि वह उन्हें सुन कर प्रसन्न हो रहा होगा। निखल्यूडोव ने उसकी बेहद पतली गर्दन, उसके कृश, बिखरे बालों को देखा, और मन ही मन आश्चर्य किया कि वह ये सारे विलक्षण व्यापार क्यों करती रही थी, और अब वह ये सारी बातें उसे क्यों सुना रही है। उसे उस पर दया आई, पर यह दया उस दया से बिलकुल भिन्न थी, जो उसके हृदय में मैनशोव को दुर्गन्धिपूर्ण बारक में देख कर उत्पन्न हुई थी। यह दयनीय इसलिए थी कि उसके मस्तिष्क में अव्यवस्था और अस्तव्यस्तता का राज्य था। यह स्पष्ट था कि वह अपने आपको ऐसी राष्ट्रीय देवी समझती थी जो अपने महत कार्य की सफलता के लिए अपने प्राण न्योछावर करने को तत्पर हो ; पर यदि उससे पूछा जाता तो शायद वह समझा न पाती कि वह महत्कार्य क्या है, और उसकी सफलता किस रूप में हो सकती है।

वीरा दुखोवा निखल्यूडोव से जिस सम्बन्ध में मिलना चाहती थी, वह इस प्रकार था—अब से पाँच महीने पहले उसकी एक सहेली शुस्टीवा को, जो उनकी उपश्रेणी से सम्बन्ध तक न रखती थी, गिरफ़्तार करके पैट्रोपैवलोवस्की स्त्री-दुर्ग में कैद कर दिया गया था, क्योंकि उसके पास से कुछ निषिद्ध पुस्तकें (जिन्हें उसने

किसी दूसरे व्यक्ति को देने के लिए रख छोड़ा था) निकली थी। वीरा दुखोवा अपनी सहेली की गिरफ्तारी की दोषी किसी हद तक अपने आपको समझती थी। उसने निखल्यूडोव से अनुनय की कि उसका सम्बन्ध अनेक प्रभावशाली व्यक्तियों के साथ है ही, अत. वह उसकी सहेली को मुक्त कराने का भरसक प्रयत्न करे।

इसके अतिरिक्त दुखोवा ने उससे यह भी अनुरोध किया कि वह उसके एक मित्र गुर्केविच से (जो उसी पैट्रोपैवलोवस्की दुर्ग में कैद था) भेंट करने के लिए उसकी माँ को एक अनुमति-पत्र दिलाने की चेष्टा करे और साथ ही उसके अध्ययन के लिए कुछ वैज्ञानिक पुस्तकें दिलाने की भी चेष्टा करे।

निखल्यूडोव ने वचन दिया कि पीटर्सबर्ग जाने पर वह जो कुछ हो सकेगा, करेगा। दुखोवा ने अपने सम्बन्ध में जो कुछ कहा था वह इस प्रकार था—वह मिडवाइफरी का कोर्स समाप्त करने के बाद जन-स्वातन्त्र्य आन्दोलन के अनुयायियों के साथ सम्बद्ध हो गई। शुरू-शुरू में सब कुछ निष्कण्टक रूप से चलता रहा। उन्होंने घोषणा-पत्र लिखे और फैक्टरियों में जा-जाकर प्रचार किया, इसके बाद उनके दल का एक प्रभावशाली सदस्य गिर-फ़्तार हो गया और उनके कागज़-पत्र पकड़ लिए गए और फिर उनके दल के सारे सदस्यों को गिरफ्तार कर लिया गया। "मैं भी पकड़ी गई और मुझे निर्वासित कर दिया जायगा। पर क्या हुआ ? मैं बड़े आनन्द में हूँ।" और उसने कातर मुस्कराहट के साथ अपनी कहानी समाप्त की।

निखल्यूडोव ने उस विशाल नैनों वाली सुन्दर लड़की के

सम्बन्ध में पूछा और उसे दुखोवा से पता चला कि यह लडकी एक जनरल की कन्या है, बहुत दिनों से विप्लवकारी दल में है, और उसे इसलिए कैद किया गया है कि उसने स्वयं स्वीकार किया था कि उसने एक सिपाही को अपने हाथ से गोली से मारा था। वह विप्लवकारियो के साथ एक घर मे रहा करती थी, जहाँ उन्होंने गुप्त छापाख़ाना खोल रक्खा था। एक दिन रात को पुलिस ने उस मकान पर धावा किया और विप्लवकारियों ने आत्मरक्षा करने का निश्चय किया। उन्होंने रोशनी बुझा दी और वे सब चीज़ें तोड़नी-फोड़नी शुरू कर दीं, जिनमे उनके फँसने की आशङ्का थी। पुलिस दरवाजा तोड़ कर भीतर घुस गई और एक षडयन्त्रकारी ने पिस्तौल दागी, जिससे एक सिपाही मर कर गिर पडा। जब जाँच शुरू हुई तो इस लडकी ने कह दिया कि उसीने गोली मारी थी, यद्यपि उसने पिस्तौल कभी अपने हाथ तक मे न ली थी और यद्यपि वह किसी मक्खी तक को चोट न पहुँचा सकती थी। पर वह अपने बयान पर अड़ी रही और अब उसे सपरिश्रम साइबेरिया निर्वासन दण्ड मिला है।

वीरा दुखोवा ने अन्त में प्रशसात्मक लहजे में कहा—दूसरों के लिए ख़ुद अड जाने वाली लडकी है।

वीरा दुखोवा तीसरी बात मसलोवा के सम्बन्ध में कहना चाहती थी। वह मसलोवा की जीवनी और उसके साथ निखल्यूडोव के सम्बन्ध की बात जानती थी—जेलों में इस प्रकार की बाते सब जान जाते हैं, और उसने निखल्यूडोव को सलाह दी कि वह उसे या तो राजनीतिक वार्ड मे बदलवाने की चेष्टा करे या

अस्पताल में भिजवा दे, जहाँ वह धाय की हैसियत से रोगियों की सेवा-शुश्रूषा कर सके। उसने यह भी कहा कि आजकल अस्पताल में वैसे भी बहुत सारे रोगी हैं।

निखल्यूडोव ने उसकी सलाह के लिए धन्यवाद दिया और कहा कि वह उस पर अमल करने की चेष्टा करेगा।
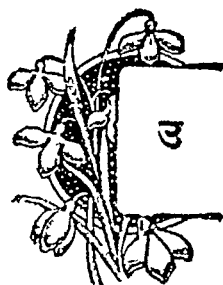
नके वार्तालाप मे इन्सपेक्टर ने व्याघात डाला और उठते हुए कहा कि समय पूरा हो गया है और अब क़ैदियों और उनके मित्रों को विदा होना चाहिए। निख़ल्यूडोव दुखोवा से विदा लेकर दरवाज़े तक गया और वहाँ जाकर रुक गया और कमरे में जो कुछ हो रहा था उसे देखने लगा।

इन्सपेक्टर ने कभी उठते और कभी बैठते हुए कहा—सज्जनो, समय पूरा हो गया।

इन्सपेक्टर के आदेश के परिणाम-स्वरूप क़ैदियों के वार्तालाप ने और भी सजीव रूप धारण कर लिया; कुछ खड़े होकर बातें करते रहे, कुछ उसी प्रकार बैठे-बैठे। कमरे से कोई न गया। कुछ रोने-झींकने और विदा लेने लगे। माता और उसके क्षय-रोग-ग्रस्त पुत्र की विदा का दृश्य विशेष रूप से हृदय-विदारक था। पुत्र अपनी माता के भावावेश से प्रभावित न होने के प्रबल प्रयत्न में क्रुद्ध भाव से बराबर काग़ज़ मरोड़ता जा रहा था। माता ने, यह

जान कर कि विदा होने का समय आ गया, पुत्र के कन्धे पर सिर रख दिया और बिसूर-बिसूर कर रोना शुरू कर दिया। वह विशाल, सहृदय नेत्रों वाली लड़की—निखल्यूदोव की दृष्टि बलात् उसकी ओर आकृष्ट हो जाती थी—रोती हुई माँ के सामने खड़ी-खड़ी कुछ सान्त्वनादायक शब्द कह रही थी। नीले चश्मे वाला वृद्ध अपनी लड़की का हाथ पकड़े खड़ा था और जो कुछ वह कह रही थी उस पर सिर हिलाता जाता था। युवा प्रेमी-द्वय उठे और एक-दूसरे का हाथ पकड़े परस्पर नेत्रों में झाँकने लगे।

एक युवक छोटा कोट पहने निखल्यूदोव के पास खड़ा-खड़ा सारा विदाई का दृश्य देख रहा था। उसने दोनों प्रेमियों की ओर सङ्केत करके कहा—इस सारे कमरे में यही दो जने सुखी हैं।

निखल्यूदोव और उस युवक की दृष्टि अपनी ओर लगी देख दोनों प्रेमियों ने—रबड़ के कोट वाले युवक और सुन्दर कन्या ने—अपने हाथ फैलाए और एक दूसरे के हाथ में हाथ डाल कर दोनों उस कमरे में बार-बार नाचने लगे।

युवक ने कहा—आज रात को इन दोनों का इस जेल में ही विवाह होगा, और यह इसके साथ ही साइबेरिया जाएगी।

"यह है कौन?"

"एक क़ैदी; सपरिश्रम साइबेरिया निर्वासन दण्ड प्राप्त। कम से कम इन दोनों को तो कुछ सुखी होने दीजिए; अन्यथा यहाँ का दृश्य बड़ा हृदय-विदारक है।"—उसने क्षय-रोग-ग्रस्त नवयुवक की माता की सिसकियाँ सुनते-सुनते कहा।

इन्सपेक्टर ने वही ऑर्डर अब फिर दुहरा कर कहा—"अब भले

आदमियो ! मुझे आशा है कि आप मुझे कड़ाई करने को मजबूर न करेंगे।" उसने दुर्बल सङ्कोचपूर्ण वेग से कहा—"अब बहुत वक्त हो गया। आपका मतलब क्या है? यह बात तो बड़ी बुरी है। मैं यह आपसे अब अन्तिम बार कह रहा हूँ।"—उसने श्रान्त-भाव से सिगरेट बुझा कर दूसरा सिगरेट जलाते-जलाते कहा।

यह स्पष्ट था कि अपने आपको उत्तरदायी समझे बिना दूसरों पर अत्याचार करने के ढङ्ग चाहे कितने ही कौशलपूर्ण, पुराने और प्रचलित हों, इन्सपेक्टर मन ही मन अनुभूति कर रहा था कि दूसरों को दु:ख पहुँचाने के अपराधियों में से एक वह भी है और उस दु:ख का प्रत्यक्षीकरण,इस कमरे में हो रहा है। और यह प्रत्यक्ष था कि वह इस बात से मन ही मन व्यथित हो रहा था।

अन्त में क़ैदी और मुलाक़ाती एक-एक करके विदा होने लगे—क़ैदी भीतरी दरवाज़े से और मुलाक़ाती बाहरी दरवाज़े से। रबड़ की जाकट वाला आदमी चला गया, और क्षय-रोग-ग्रस्त युवक और बिखरे बालों वाला आदमी भी। मेरी पैवलोव्ना अपने जेल में उत्पन्न हुए लड़के के साथ बाहर चली गई। मुला-क़ाती भी चले गए; नीले चश्मे वाला वृद्ध भारी क़दम रखता हुआ बाहर निकल गया और उसके पीछे-पीछे निखल्यूडोव भी हो लिया।

बातूनी युवक ने निखल्यूडोव के साथ सीढ़ियों पर से उतरते-उतरते कहा—मानो वह किसी अधूरे वार्तालाप का सिलसिला छेड़ना चाहता हो—हाँ, यह सब कुछ बड़ी विलक्षण बात है। हमें इस इन्सपेक्टर का कृतज्ञ होना चाहिए, दयालु आदमी है, नियमों

जान कर कि विदा होने का समय आ गया, पुत्र के कन्धे पर सिर रख दिया और बिसूर-बिसूर कर रोना शुरू कर दिया। वह विशाल, सहृदय नेत्रों वाली लड़की—निखल्यूडोव की दृष्टि बलात् उसकी ओर आकृष्ट हो जाती थी—रोती हुई माँ के सामने खड़ी-खड़ी कुछ सान्त्वनादायक शब्द कह रही थी। नीले चश्मे वाला वृद्ध अपनी लड़की का हाथ पकड़े खड़ा था और जो कुछ वह कह रही थी उस पर सिर हिलाता जाता था। युवा प्रेमी-द्वय उठे और एक-दूसरे का हाथ पकड़े परस्पर नेत्रों में झाँकने लगे।

एक युवक छोटा कोट पहने निखल्यूडोव के पास खड़ा-खड़ा सारा विदाई का दृश्य देख रहा था। उसने दोनों प्रेमियों की ओर सकेत करके कहा—इस सारे कमरे में यही दो जने सुखी हैं।

निखल्यूडोव और उस युवक की दृष्टि अपनी ओर लगी देख दोनों प्रेमियों ने—रबड़ के कोट वाले युवक और सुन्दर कन्या ने—अपने हाथ फैलाए और एक दूसरे के हाथ में हाथ डाल कर दोनों उस कमरे में बार-बार नाचने लगे।

युवक ने कहा—आज रात को उन दोनों का इस जेल में ही विवाह होगा, और यह इसके साथ ही साइबेरिया जाएगी।

"यह है कौन?"

"एक क़ैदी, सपरिश्रम साइबेरिया निर्वासन दण्ड प्राप्त। कम से कम इन दोनों को तो कुछ सुखी होने दीजिए; अन्यथा यहाँ का दृश्य बड़ा हृदय-विदारक है।"—उसने पुत्र-शोक-ग्रस्त नवयुवक की माता की सिसकियाँ सुनते-सुनते कहा।

इन्सपेक्टर ने यही ऑर्डर अब फिर दुहरा कर कहा—"अब भले

आदमियो ! मुझे आशा है कि आप मुझे कठाई करने को मजबूर न करेंगे।" उसने दुर्बल सङ्कोचपूर्ण वेग से कहा—"अब बहुत वक़्त हो गया। आपका मतलब क्या है? यह बात तो बड़ी बुरी है। मैं यह आपसे अब अन्तिम बार कह रहा हूँ।"—उसने श्रान्त-भाव से सिगरेट बुझा कर दूसरा सिगरेट जलाते-जलाते कहा।

यह स्पष्ट था कि अपने आपको उत्तरदायी समझे बिना दूसरों पर अत्याचार करने के ढङ्ग चाहे कितने ही कौशलपूर्ण, पुराने और प्रचलित हों, इन्सपेक्टर मन ही मन अनुभूति कर रहा था कि दूसरों को दु ख पहुँचाने के अपराधियो में से एक वह भी है और उस दु.ख का प्रत्यक्षीकरण इस कमरे में हो रहा है। और यह प्रत्यक्ष था कि वह इस बात से मन ही मन व्यथित हो रहा था।

अन्त में क़ैदी और मुलाकाती एक-एक करके विदा होने लगे—क़ैदी भीतरी दरवाज़े से और मुलाक़ाती बाहरी दरवाज़े से। रबड की जाकट वाला आदमी चला गया, और क्षय-रोग-ग्रस्त युवक और बिखरे वालों वाला आदमी भी। मेरी पैवलोटना अपने जेल मे उत्पन्न हुए लड़के के साथ बाहर चली गई। मुला-क़ाती भी चले गए; नीले चश्मे वाला वृद्ध भारी क़दम रखता हुआ बाहर निकल गया और उसके पीछे-पीछे निखल्यूडोव भी हो लिया।

बातूनी युवक ने निखल्यूडोव के साथ सीढ़ियों पर से उतरते-उतरते कहा—मानो वह किसी अधूरे वार्तालाप का सिलसिला छेड़ना चाहता हो—हाँ, यह सब कुछ बड़ी विलक्षण बात है। हमें इस इन्सपेक्टर का कृतज्ञ होना चाहिए, दयालु आदमी है, नियमों

का पालन कड़ाई के साथ नहीं करता। दो बातें करके बेचारों के हृदय का भार बहुत कुछ हल्का हो जाता है।

युवक ने उसे अपना नाम मेदिण्टसेव बताया। इसके बाद निखल्यूदोव हॉल में पहुँचा, जहाँ इन्सपेक्टर शान्त-भाव के साथ उसके पास आया और विनम्र होने की इच्छा दिखाते हुए बोला—आप मसलोवा से मिलना चाहें तो कल आइए।

निखल्यूडोव ने कहा—"बहुत अच्छा।"—और वह वहाँ से झटपट चला गया।

मैनशोव के कष्ट निश्चय ही बड़े दारुण दिखाई देते थे; पर उसके भौतिक कष्ट उतने दारुण न थे, जितनी उसकी अस्तव्यस्तता तथा सदाचरण और भगवान में उसकी अविश्वास-भावना, जो निष्ठुर लोगों को उसे अकारण ही यन्त्रणाएँ पहुँचाते देख कर उसके हृदय में अकस्मात् उत्पन्न हो जाती थी।

इन बीसियों निरपराध व्यक्तियों के भाग में आई हुई व्यथाएँ और लाञ्छनाएँ—और वे भी केवल इस कारण कि कागज़ पर वह बात न लिखी हुई थी जो लिखी रहनी चाहिए थी—कितनी भयङ्कर थीं! वे नृशंस जेलर कितने भयङ्कर थे, जो अपने भाइयों पर अत्याचार करते थे और समझते थे कि वह कोई अत्यन्त महत्वपूर्ण और उपयोगी कर्तव्य पालन कर रहे हैं। पर सबसे अधिक भयङ्कर वह वयस्क, रुग्ण, सहृदय इन्सपेक्टर था, जो माँ को पुत्र से और पिता को पुत्री से—जो सब उसी और उसकी सन्तान जैसे मनुष्य थे—विलग करने को बाध्य हो गया था।

निखल्यूडोव ने स्वगत प्रश्न किया—"यह स ा कुछ किस लिए है ?" पर वह नैतिक मिचलाहट, जो भौतिक मिचलाहट के रूप में परिवर्तित हो जाया करती थी और जिसका उद्रेक जेल में जाने पर अवश्य हो उठता है, अब असाधारण रूप से प्रबल हो उठी और वह अपने प्रश्न का कोई उत्तर न पा सका।
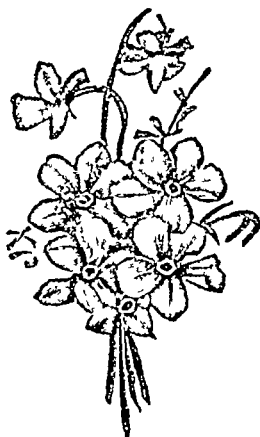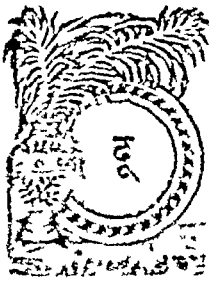
सरे दिन निखल्यूदोव ऐडवोकेट से मिलने गया और उससे मैनशोव वाले मामले का जिक्र करके उसने उससे यह मामला अपने हाथ में लेने की प्रार्थना की। ऐडवोकेट ने मामले को देखने का वचन दिया और कहा कि यदि बात उसके कथनानुसार ही निकली तो वह मामले को बिना कुछ चार्ज किए हाथ में ले लेगा। इसके बाद निखल्यूदोव ने एक सौ तीस आदमियों का विवरण सुनाया, जिन्हें सिर्फ एक ग़लती के कारण जेल में डाल रक्खा था। "यह किसके हाथ में था? इसमें किसका दोष है?"

ऐडवोकेट क्षण भर सोचता रहा, सम्भवतः ठीक-ठीक उत्तर देने के लिए।

अन्त में उसने निश्चयात्मक स्वर में कहा—किसका दोष है? किसी का भी नहीं। आप प्रासीक्यूटर से पूछिए, वह कहेगा कि गवर्नर

का दोष है और गवर्नर से पूछिए तो वह सारा दोष प्राक्यूरर का बताएगा। दोष किसी का नहीं है।

"मैं अभी वाइस गवर्नर के पास जाता हूँ। उससे सारी बातें कहूँगा।"

ऐडवोकेट ने मुस्करा कर कहा—अजी, बिलकुल बेकार। वह इतना—वह आपका कोई रिश्तेदार या दोस्त तो नहीं है?—इतना मूर्ख है कि क्या बयान करूँ; और तारीफ़ यह है कि अपने मतलब के लिए बड़ा कुशल जानवर है।

निखल्यूडोव को याद आया कि मैसलेनीकोव ने इस ऐडवोकेट के सम्बन्ध में क्या कहा था, और उसने कुछ उत्तर न दिया। वह उससे विदा लेकर सीधा मैसलेनीकोव के पास पहुँचा। उसे उससे दो काम थे; मसलोवा को जेल से अस्पताल में तब्दीली कराने का अनुरोध करना और एक सौ तीस निर्दोष व्यक्तियों के जेल में डाले जाने का कारण पूछना। किसी ऐसे आदमी का एहसान लेने में उसे बड़ी मनोव्यथा होती थी जिसका वह आदर न करता हो, पर अपनी उद्देश-सिद्धि का यही एक साधन था और उसे उसी साधन का उपयोग करना था।

जब निखल्यूडोव मैसलेनीकोव के घर के सामने पहुँचा तो उसे प्रवेश-द्वार के सामने कई गाड़ियाँ खड़ी दिखाई दीं और उसे याद आया कि आज मैसलेनीकोव की पत्नी की ओर से दावत है, जिसमें उसे भी आमन्त्रित किया गया था। जिस समय निखल्यूडोव की गाड़ी रुकी तो उसने ठीक द्वार के आगे एक गाड़ी खड़ी देखी और एक वर्दी पहने अर्दली को उसमें से उतरती हुई महिला को

सहारा देते देखा। महिला अपनी पोशाक सँभाले हुए थी और उसमें से उसके पतले-दुबले टखने, काले मोज़े और स्लीपर-मण्डित पाँव चमक रहे थे। गाड़ियों में एक बन्द लैण्डो भी थी, जिसे निखल्यूदोव पहचानता था। यह कोरच्चेगिन की गाड़ी थी। इस गाड़ी के सफ़ेद बालों वाले लालमुँहे कोचवान ने निखल्यूदोव को देख कर आदरपूर्वक अपना टोप उतारा और इस प्रकार मित्रतापूर्वक मुस्कराते हुए अभिवादन किया जिससे पता चले कि वह उससे परिचित है। निखल्यूदोव को अभी मैसलेनीकोव के सम्बन्ध में पूछ-ताछ करने का अवसर न मिला था कि इसी समय वह स्वयम् एक अत्यन्त महत्वपूर्ण अतिथि को बाहर पहुँचाने निकला, और उसे उसने क़ालीन मण्डित सीढ़ियों के ऊपर से ही नहीं छोड़ दिया, बल्कि वह स्वयम् नीचे तक उतर कर आया। यह अत्यन्त महत्वपूर्ण अतिथि कोई सैनिक अफ़सर था, जो उसमें फ्रेंच में एक लॉटरी का ज़िक्र कर रहा था जो नगर में स्थापित होने वाली शिशुशाला के लिए खोली गई थी; और उसने कहा कि इससे महिलाओं का मन भी बहलता रहेगा। उन्हें आमोद-प्रमोद करने देना चाहिए; भगवान उन पर कृपा रक्खें।

इस महत्वपूर्ण अतिथि ने निखल्यूदोव को देखते ही कहा—"अहा, निखल्यूदोव! कहो, कैसे हो? आजकल तो तुम दिखाई तक नहीं पड़ते। जाओ, महोदया का अभिवादन करो। और यहाँ कोरच्चेगिन और नैदिन गुलेवइन भी हैं। शहर की सारी सुन्दरी स्त्रियाँ मौजूद हैं।" और उसने अपने पदों से हर कन्धे उभारा कर सैनिक कोट पहनने के लिए अपने तड़क-भड़क की पोशाक वाले

नौकर के आगे अपनी बाँहें कीं।—"अच्छा, प्रिय मित्र, विदा।"—और उसने मैसलेनीकोव का हाथ दवाया।

मैसलेनीकोव ने उत्तेजित भाव से निखल्यूडोव का हाथ पकड़ कर दवाया और कहा—"चलो ऊपर चलें। कितनी प्रसन्नता की बात है।" और मैसलेनीकोव अपनी मुटाई की अवज्ञा करके निखल्यूडोव को ऊपर खींच ले चला। इस महत्वपूर्ण व्यक्ति ने उस पर जो कृपा-वर्षा की थी, उससे वह आज विशेष रूप से उल्लसित था। जब कभी उस पर इस प्रकार की वर्षा की जाती, उसे उसी प्रकार के हर्ष की अनुभूति होती, जो किसी ऐसे स्नेही कुत्ते को उस समय होती है जब उसका स्वामी उसे थपथपाता है, सुहलाता है या उसके कान खुजाता है। कुत्ता अपनी दुम हिलाता है, लिपटता है, क्याऊँ-क्याऊँ करता है, अपने कान नीचे की ओर करता है, और उन्मत्त भाव से चारों ओर नाचता है। मैसलेनीकोव भी यही करने को तैयार था। उसने निखल्यूडोव की गम्भीर मुद्रा की ओर कोई ध्यान न दिया, उसके शब्दों की ओर कोई ध्यान न दिया, बस, उसे बलपूर्वक ड्राइङ्ग-रूम की ओर खींचता गया, और निखल्यूडोव को उसके पीछे-पीछे जाने के सिवा और कोई गति न रह गई।

मैसलेनीकोव उसे खींचता हुआ नृत्यशाला में ले गया और बोला—"काम की बातें बाद को होंगी। जो कुछ कहोगे वही करूँगा। अरे, प्रिन्स निखल्यूडोव की सूचना दे।"—उसने बिना रुके अर्दली से कहा। अर्दली झपट कर उनके आगे निकल गया।

"तुम्हारे आज्ञा करने की देर होगी। पर पहले मेरी स्त्री से

मिल लो। देखो, उस दिन तुम उससे बिना मिले चले गए थे, और मेरे ऊपर वेभाव की पड़ी।"

अब वे ड्राइङ्ग-रूम तक जा पहुँचे थे और अर्दली ने उनकी सूचना पहले ही दे दी थी। टोपों और सिरों के समूह में से वाइस गवर्नर की पत्नी का चेहरा निखल्यूडोव को देखते ही खिल उठा। ड्राइङ्ग-रूम के दूसरे छोर पर चाय की मेज़ के आगे अनेक महिलाएँ एकत्र थीं और उन्हें चारों ओर से सैनिक और सिविलियन घेरे खड़े थे। स्त्री-पुरुषों की मिश्रित कण्ठ-स्वर-ध्वनि अथक रूप से गूँज रही थी।

वाइस गवर्नर की पत्नी अन्नाइआटीवना ने निखल्यूडोव को देख कर कहा—"हमने तो समझा था कि तुम हमें बिलकुल भूल ही गए। हमने क्या अपराध किया है?" और इन शब्दों से उसने निखल्यूडोव के साथ अपनी उस घनिष्टता का परिचय देना चाहा जिसका अस्तित्व तक न था।

"इनके साथ तुम्हारा परिचय है?—मेडम टिलियावस्काया, नोशिया चरनोव, आओ, मेरे पास आकर बैठो। मिसी, हमारे पास आ जाओ; तुम्हारी चाय यहीं आ जायगी। और आप!"—उसने एक अफ़सर की ओर फिर कर कहा, जो मिसी से बात कर रहा था। (यह स्पष्ट था कि वह इस अफ़सर का नाम भूल गई थी) "आप भी यहीं आ जाइए; .....क्यों प्रिन्स एक प्याला चाय?"

एक स्त्री-कण्ठ कहता सुनाई पड़ा—मैं तुमसे कभी सहमत नहीं हो सकती। सीधी-सादी बात है, वह प्रेम नहीं करती थी।

"पर वह चाट से तो प्रेम करती है।"

रेशम, सोने और हीरे-मोतियों से जगमगाती हुई एक स्त्री ने हँस कर कहा—तुम्हें तो हरदम हँसी ही सूझती रहती है !

"ये बिस्कुट तो बड़े स्वादिष्ट हैं, और इतने हलके। मैं एक और लूँगी।"

"तो तुम शहर से जा रही हो ?"

"आज हमारा अन्तिम दिन है। तभी तो हम यहाँ आ गए।"

"हाँ, गाँव में तो बड़ा आनन्द रहता होगा; क्या सुन्दर बसन्त है।"

मिसी टोप पहने और काली बूटियों की पोशाक धारण किए, जो उसके शरीर पर खाल की भाँति ठीक बैठती थी, बड़ी सुन्दर दिखाई दे रही थी। निखल्यूडोव को देख कर वह लजा उठी।

वह उससे बोली—मैंने तो समझा था कि तुम चले गए।

"बस, अब जाने ही वाला हूँ। कार्यवश मास्को में रुका हुआ हूँ, और यहाँ भी कार्यवश ही आया हूँ।"

"तुम मामा को देखने न आओगे। वह तुमसे मिल कर प्रसन्न होंगी।"—उसने कहा, और यह जान कर कि वह जो कुछ कह रही है, ठीक नहीं है, और इस बात को वह भी जानता है, वह और भी अधिक लजा गई।

निखल्यूडोव ने ऐसा भाव जताया मानो उसने उसका लजाना देखा ही नहीं। उसने खिन्न भाव से कहा—शायद मैं न आ सकूँगा।

मिसी ने क्रुद्ध भाव से भृकुटी चढ़ाई, कन्धे उचकाए और एक सजीले अफ़सर की तरफ़ मुँह फेरा। अफसर ने उसके हाथ

मिल लो। देखो, उस दिन तुम उससे बिना मिले चले गए थे, और मेरे ऊपर बेभाव की पड़ीं।"

अब वे ड्राइङ्ग-रूम तक जा पहुँचे थे और अर्दली ने उनकी सूचना पहले ही दे दी थी। टोपों और सिरों के समूह में से वाइस गवर्नर की पत्नी का चेहरा निखल्यूडोव को देखते ही खिल उठा। ड्राइङ्ग-रूम के दूसरे छोर पर चाय की मेज़ के आगे अनेक महिलाएँ एकत्र थीं और उन्हें चारों ओर से सैनिक और सिविलियन घेरे खड़े थे। स्त्री-पुरुषों की मिश्रित कण्ठ-स्वर-ध्वनि पृथक रूप से गूँज रही थी।

वाइस गवर्नर की पत्नी अन्नाइग्नाटीवना ने निखल्यूडोव को देख कर कहा—"हमने तो समझा था कि तुम हमें बिलकुल भूल ही गए। हमने क्या अपराध किया है?" और इन शब्दों से उसने निखल्यूडोव के साथ अपनी उस घनिष्टता का परिचय देना चाहा जिसका अस्तित्व तक न था।

"इनके साथ तुम्हारा परिचय है?—मेडम टिलियावस्काया, गोशिया चरनोव, आओ, मेरे पास आकर बैठो। मिसी, हमारे पास आ जाओ; तुम्हारी चाय यहीं आ जायगी। और आप!"—उसने एक अफ़सर की ओर फिर कर कहा, जो मिसी से बात कर रहा था। (यह स्पष्ट था कि वह इस अफ़सर का नाम भूल गई थी) "आप भी यहीं आ जाइए; .. ..क्यों प्रिन्स एक प्याला चाय?"

एक स्त्री-कण्ठ कहता सुनाई पड़ा—मैं तुमसे कभी सहमत नहीं हो सकती। सीधी-सादी बात है, वह प्रेम नहीं करती थी।

"पर वह चाट से तो प्रेम करती है।"

रेशम, सोने और हीरे-मोतियों से जगमगाती हुई एक स्त्री ने हँस कर कहा—तुम्हें तो हरदम हँसी ही सूझती रहती है !

"ये बिस्कुट तो बड़े स्वादिष्ट हैं, और इतने हलके। मैं एक और लूँगी।"

"तो तुम शहर से जा रही हो ?"

"आज हमारा अन्तिम दिन है। तभी तो हम यहाँ आ गए।"

"हाँ, गाँव में तो बड़ा आनन्द रहता होगा; क्या सुन्दर वसन्त है।"

मिसी टोप पहने और काली बूटियों की पोशाक धारण किए, जो उसके शरीर पर खाल की भाँति ठीक बैठती थी, बड़ी सुन्दर दिखाई दे रही थी। निखल्यूडोव को देख कर वह लजा उठी।

वह उससे बोली—मैंने तो समझा था कि तुम चले गए।

"बस, अब जाने ही वाला हूँ। कार्यवश मास्को में रुका हुआ हूँ, और यहाँ भी कार्यवश ही आया हूँ।"

"तुम मामा को देखने न जाओगे। वह तुमसे मिल कर प्रसन्न होंगी।"—उसने कहा, और यह जान कर कि वह जो कुछ कह रही है, ठीक नहीं है, और इस बात को वह भी जानता है, वह और भी अधिक लजा गई।

निखल्यूडोव ने ऐसा भाव जताया मानो उसने उसका लजाना देखा ही नहीं। उसने खिन्न भाव से कहा—शायद मैं न आ सकूँगा।

मिसी ने क्रुद्ध भाव से भृकुटी चढ़ाई, कन्धे उचकाए और एक सजीले अफ़सर की तरफ मुँह फेरा। अफ़सर ने उसके हाथ

से खाली गिलास ले लिया, और अपनी तलवार कुर्सियों से खन-खनाता हुआ उसे पुरुषोचित वीरता के साथ दूसरी मेज़ पर ले गया।

"तुम्हें गृहदान में कुछ न कुछ अवश्य देना चाहिए।"

"मैं देने से मुकरती थोड़े ही हूँ, पर मैं जो कुछ दूँगी, लॉटरी में, वहाँ मेरा पूरा ठाट देखना।"

एक आवाज़ आई—"अपने लिए खोज लेना"—यह कह कर कोई कृत्रिम भाव से हँसा।

अलाइग्नाटीअवना के हर्षातिरेक का क्या पूछना था, उसकी दावत पूर्ण सफल रही।

उसने निखल्यूडोव से कहा—"मिकी कहते हैं कि आजकल तुम जेल के काम में लगे हुए हो। मैं तुम्हारे जी की बात ख़ूब समझती हूँ। मिकी (यह उसके मोटे पति मैसलेनीकोव का उपनाम था) में चाहे और जितनी बुराइयाँ हों, पर तुम जानते ही हो कि यह कितने कोमल हृदय हैं। ये सारे अभागे क़ैदी इनके बाल-बच्चे हैं। यह उन्हें इसके सिवा और किसी रूप में नहीं देखते।" पर शायद वह यह न जानती थी कि उसके पति की कोमल हृदयता का यह हाल है कि वह क़ैदियों को कोड़ों से पिटवाता था। और वह मुस्कराते हुए एक गतश्री वृद्धा स्त्री की ओर मुड़ी, जो लाल रिबनों से सजी-बजी अभी आ कर पहुँची थी।

निखल्यूडोव, जितना कम बोलने से काम चल सकता था उतना कम बोल कर, और जितना धर्य शिष्टता के विधान के अनुकूल हो सकता था, उतने धैर्य से काम लेकर, अन्त में उठा और मैसलेनीकोव के पास पहुँचा।

"कुछ मिनट दे सकोगे ?"

"हाँ, हाँ, ज़रूर। हाँ, क्या बात है ? लो, यहाँ आओ।"

दोनों एक छोटी सी जापानी ढङ्ग से सजी बैठक में गए और खिडकी के पास बैठ गए।

इक्यावनवाँ परिच्छेद
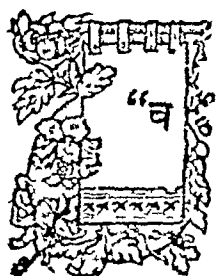
"बस अब ठीक है। सिगरेट पियोगे? पर ज़रा ठहरो; ज़रा सावधानी से काम लेना चाहिए, जिससे फिर गड़बड़ न हो।"—और मैसलेनीकोव ने उठ कर एक राख-दानी निकाली। अच्छा?

"मुझे तुमसे दो मामलों के बारे में बातचीत करनी है।"

"हे भगवान, रक्षा करो।"

मैसलेनीकोव के चेहरे पर उदासी और निर्जीवता की मुद्रा आ बिराजी और उस कुत्ते जैसी उत्तेजना बिलकुल नष्ट हो गई, जिसे उसका स्वामी सुहलाता है। ड्राइङ्ग-रूम से आवाज़ें आ रही थीं और एक स्त्री-कण्ठ बोलता सुनाई पड़ रहा था। दूसरी ओर से पुरुषों का कण्ठ-स्वर सुनाई पड़ रहा था और उनके वार्त्तालाप में काउ-ण्टेस वोरोनट्सोव और विक्टर अपराक्सिन का नाम बार-बार आ रहा था। एक दूसरी दिशा से अट्टहास-मिश्रित जनरव-ध्वनि आ रही थी। मैसलेनीकोव ने एक ही समय में ड्राइङ्ग-रूम की

बातें सुनते रहने की भी इच्छा की और निखल्यूडोव की बात की ओर भी, ध्यान रखना चाहा।

निखल्यूडोव ने कहा—मैं फिर उसी स्त्री के सम्बन्ध में आया हूँ।

"ठीक-ठीक मैं जानता हूँ। वही जिसे निरपराध दण्ड दिया गया है।"

"मैं तुमसे अनुरोध करूँगा कि उसे जेल-अस्पताल में काम करने को भिजवा दो। मैंने सुना है कि यह आसानी से हो सकता है।"

मैसलेनीकोव ने अपने ओठ बन्द किए और कुछ सोचा।

अन्त में उसने कहा—शायद यह सम्भव न हो सकेगा। फिर भी मैं देखूँगा कि क्या कुछ किया जा सकता है, और इसका उत्तर तुम्हारे पास तार द्वारा भेज दूँगा।

"मैंने सुना है कि बहुत से बीमार हैं, और उनकी शुश्रूषा के लिए किसी की आवश्यकता पड़ती है।"

"अच्छी बात है, अच्छी बात है; जो कुछ होगा, तुम्हें सूचना दे दूँगा।"

"हाँ, मेरी ख़ातिर।"

ड्राइङ्ग-रूम से सबके हँसने की आवाज़ आई। उस मिश्रित हास्य-ध्वनि में कई कृत्रिम कण्ठ-स्वर भी थे।

मैसलेनीकोव ने कहा—यह विक्टर है। जब ज़रा होश-हवास में होता है तो जादू की छड़ी फेर देता है।

निखल्यूडोव ने कहा—"दूसरी बात मैं यह कहना चाहता था

कि जेल में एक सौ तीस आदमी सिर्फ़ इसलिए पड़े सड़ रहे हैं कि उनके पासपोर्ट की मियाद बीत गई है। उन्हें यहाँ एक महीना हो गया है। और उसने सारी बात कह सुनाई।

मैसलेनीकोव ने क्षुब्ध और असन्तुष्ट भाव से कहा—तुम्हें यह कैसे पता चला?

"मैं एक क़ैदी को देखने गया था, और इन आदमियों ने आकर मुझे चारों ओर से घेर लिया और कहा......।"

"तुम किस क़ैदी को देखने गए थे?"

"एक देहाती को, जिसे निर्दोष होने पर भी जेल में डाल रक्खा गया है। मैंने उसका मामला ऐडवोकेट को सिपुर्द कर दिया है; पर इसका हमारी बात से कोई सरोकार नहीं है। पर क्या सचमुच यह सम्भव है कि लोगों को बिना किसी अपराध के, सिर्फ़ इस कारण से कि उनके पासपोर्टों की मियाद बीत गई है, जेल में डाले रक्खा जाता है? और......।"

मैसलेनीकोव ने क्रुद्ध भाव से कहा—यह प्राक्यूरर का महकमा है। देखते हो, तुम्हारे इस न्याय-विचार में क्या तमाशा होता है, जिसे तुम संस्कृत और दोषरहित कहते हो? यह प्राक्यूरेटरों का काम है कि वे जेलों में जा-जाकर देखें कि कोई वहाँ निर्दोष तो नहीं पड़ा है। पर उन्हें ताशबाज़ी से कब फ़ुर्सत है। बस।

निखल्यूदोव को स्मरण आया कि ऐडवोकेट ने कहा था कि प्राइम गवर्नर सारा दोष प्राक्यूरर के मत्थे थोप देगा, और उसने हताश-विपण्ण भाव से कहा—तो तुम इसमें कुछ नहीं कर सकते?

"मैं ज़रूर कर सकता हूँ। मैं मामले की देख-भाल अभी करूँगा।"

ड्रायङ्ग-रूम से एक स्त्री की आवाज़ आ रही थी—"यह उसके लिए और भी बुरा हुआ; वह तो अपनी हँसी स्वयं कराती है।" यह स्पष्ट था कि उस स्त्री का ध्यान अपनी बात की ओर तनिक भी न था।

दूसरी ओर से एक पुरुष का कण्ठ-स्वर सुनाई दिया—"अच्छा हुआ। मैं यह भी ले लूँगा।"—और इसके बाद ही एक स्त्री के हँसने की आवाज़ आई। यह स्त्री शायद उस पुरुष को अपने पास से कोई चीज़ लेने से रोक रही थी।

स्त्री ने कहा—नहीं जी, देखें तो, कैसे लोगे।

"अच्छी बात है। मै यह काम कर दूँगा। चलो अब महिलाओं के पास चलें।"—मैसलेनीकोव ने अपने अँगूठी वाले हाथ की सिगरेट बुझाते हुए कहा।

निखल्यूडोव ने ड्राइङ्ग रूम के दरवाज़े पर रुक कर कहा—सिर्फ़ एक बात और है। क्या यह ठीक है कि जेल में कुछ आदमियों को कोड़े लगाए गए थे?

मैसलेनीकोव लजा उठा—"अच्छा, तो तुम इसी फ़िराक़ में फिरते रहते हो? नहीं भाई, तुम्हें वहाँ जाने देने से काम न चलेगा! तुम तो हर एक बात पर अड़ जाना चाहते हो। चलो-चलो, अन्ना बुला रही हैं।"—उसने निखल्यूडोव की बाँह पकड़ते हुए और उसी प्रकार उत्तेजित होते हुए कहा, जिस प्रकार वह महत्वपूर्ण व्यक्ति की

कृपा-वर्षा के बाद हो उठा था ; अन्तर इतना था कि वह उत्तेजना उल्लासपूर्ण थी, यह आतुरतापूर्ण।

निखल्यूडोव ने अपनी बाँह झटक ली, और किसी से बिना कुछ कहे-सुने या विदा माँगे, वह विपण्ण भाव से ड्राइङ्ग-रूम में से गुज़र गया, हॉल में पहुँचा, अर्दली के पास से गुज़रा—जो उसे देखते ही उसकी ओर झपटा—और सड़क वाले दरवाज़े से निकल गया।

अन्ना ने अपने पति से पूछा—इन्हें क्या हो गया ? कुछ तुमने तो नहीं कह दिया था ?

एक दूसरी स्त्री ने कहा—नहीं जी।

किसी ने कहा—"अजी वह हमेशा से ऐसे ही रहे हैं।"—और कोई उठा, कोई और भीतर आया, और वाग्धारा अबाध रूप से प्रवाहित होती रही। इस समुदाय ने अपनी दावत के बाक़ी समय को निखल्यूडोव की इस घटना की चर्चा में बिताया।

दूसरे दिन निखल्यूडोव को मुहर और पारिवारिक चिन्हयुक्त मोटे, चिकने कागज़ पर मैसलेनीकोव का पत्र मिला, जिसमें उसने लिखा था कि उसने मसलोवा के अस्पताल में बदले जाने की बाबत डॉक्टर को लिख दिया है, और आशा है कि निखल्यूडोव की अभिलाषा पर ध्यान दिया जायगा। पत्र के अन्त में लिखा था, 'तुम्हारा पुराना स्नेही बड़ा कॉमरेड' और इन हस्ताक्षरों को कुछ घुमाव-फिराव के साथ समाप्त किया गया था। निखल्यूडोव के मुँह से अनायास ही निकल गया—'मूर्ख !' उसे मैसलेनीकोव के 'कॉमरेड' शब्द में अपने प्रति उसके घृणा-भाव की गन्ध आई अर्थात् उसे अनुभूति

हुई कि मैसलेनीकोव इस नैतिक आचार-भ्रष्ट और लज्जाजनक पद पर काम करते हुए भी अपने आपको बड़ा आदमी समझता है और इस शब्द के द्वारा यदि निखल्यूडोव की खुशामद करना नहीं, तो कम से कम उसे यह अवश्य जताना चाहता है कि उसे 'कॉमरेड' (साथी) के नाम से पुकारने में वह किसी विशेष गर्व की अनुभूति नहीं करता।

कोव के साथ निखल्यूडोव के वार्त्तालाप के फल-स्वरूप इन्सपेक्टर को अधिक सावधानता से काम लेने का आदेश भेजा गया था। इन्सपेक्टर ने कहा—"आप उससे मिल तो सकते हैं, पर मैंने रुपए-पैसे के बारे में आपसे जो कुछ कहा है उसे न भूल जाइएगा। रहा उसे अस्पताल भेजना, जिसके सम्बन्ध में हिज़ एक्सीलेन्सी ने मुझे लिखा था, सो यह हो सकता था, डॉक्टर राज़ी था। पर वह खुद ही वहाँ नहीं जाना चाहती। उसने कहा—"इन दो कौडी के भिख-मङ्गो को थाली परोस कर ले जाने की ज़रूरत मुझे क्या पड़ी है?" प्रिन्स, आप इन लोगो को नहीं जानते?

निखल्यूडोव ने कुछ उत्तर न दिया और मसलोवा से मिलने की इच्छा प्रकट की। इन्सपेक्टर ने जेलर को आवाज़ दी और निखल्यूडोव उसके पीछे-पीछे स्त्रियों के मुलाक़ाती कमरे मे पहुँचा। यहाँ मसलोवा के सिवा और कोई न था। वह शान्त और सङ्कोच-पूर्ण मुद्रा के साथ जाली के पीछे से निकली, उसके पास पहुँची, और उससे निगाह मिलाए बिना ही बोली—डिमिट्री इवानिच, मुझे क्षमा करो। परसो मैंने बहुत सी बुरी बातें कह डाली थीं।

निखल्यूडोव ने कहा—क्षमा मैं करूँ?

"पर तो भी, मुझे तुम छोड दो।"—और निखल्यूडोव ने उसके भयङ्कर तिरछे नेत्रों में उसका वही उस दिन जैसा क्षुब्ध, क्रुद्ध भाव निहित देखा।

"क्यों, छोड़ क्यो दूँ?"

"तुम्हें छोड़ना पड़ेगा।"

"पर क्यों?"

मसलोवा ने उसकी ओर उसी क्रुद्ध दिखाई देने वाली दृष्टि से देखा।

वह बोली—"देखो, सारी बात यह है कि तुम्हें मुझे छोड़ना पड़ेगा! मैं जो कुछ कह रही हूँ, ठीक-ठीक कह रही हूँ—यह कभी नहीं हो सकता। तुम्हें मेरा पीछा बिलकुल छोड़ना पड़ेगा।"—उसके ओठ कापने लगे और वह क्षण भर के लिए चुप रही। "यह बिलकुल ठीक बात है। मुझे फाँसी खाना मन्ज़ूर है।"

निखल्यूडोव को बोध हुआ कि उसकी इस अस्वीकारोक्ति में अदम्य घृणा और तीव्र क्रोध निहित था, पर साथ ही उस में कुछ अच्छी बात भी छिपी हुई थी। निखल्यूडोव ने उसे अपनी पहली स्वीकारोक्ति का इस प्रकार शान्त-भाव से समर्थन करते देखा तो उसके हृदय के सारे संशय नष्ट हो गए, और उस मे वह गम्भीर विजयपूर्ण भावावेश उद्दीप्त हो उठा जिसकी अनुभूति वह कट्रशा के सम्बन्ध में किया करता था।

वह अत्यन्त गम्भीर भाव से बोला—कट्रशा, मैंने जो कुछ कहा है वह मैं हमेशा कहता रहूँगा। मै तुमसे विवाह करने की याचना करता हूँ। यदि तुम मुझसे विवाह करना नही चाहती या जब तक विवाह करना नहीं चाहतीं, तब तक मैं तुम्हारे साथ छाया की तरह लगा रहूँगा और जहाँ कही भी तुम्हें ले जाया जायगा, जाऊँगा।

"यह तुम्हारा काम है। मैं और कुछ नहीं कहूँगी।"—और उसके ओठ फिर काँप उठे।

वह भी चुप रहा; उस समय कुछ कहना उसके लिए असम्भव सा हो गया था।

उसने कुछ स्वस्थ होकर कहा—मैं अब गाँव जा रहा हूँ और वहाँ से पीटर्सबर्ग जाऊँगा। मैं भरसक चेष्टा करूँगा कि तुम्हारे—हमारे मामले पर फिर विचार किया जाय और यदि ईश्वर ने चाहा तो तुम्हारा दण्ड उठा लिया जायगा।

"और यदि न भी उठा लिया जाय तो भी कुछ परवाह नहीं। मैं इसी के योग्य थी, इसमें न सही और बहुत सी बातों में।"—और निखल्यूडोव ने देखा कि उसके लिए अपना अश्रु-प्रवाह रोकना कितना कठिन हो रहा है।

सहसा वह अपना भावावेश छिपाने के लिए बोल उठी—तुम मैनशोव से मिले थे? ठीक है न, वे निर्दोष ही हैं न?

"ख़याल तो ऐसा ही पडता है।"

"कैसी अच्छी बुढ़िया है"—वह बोली।

और निखल्यूडोव ने उसे बताया कि उसने मैनशोव के लिए क्या कुछ किया है, और फिर उसने पूछा कि वह कुछ चीज तो नहीं चाहती।

उसने उत्तर दिया कि वह कुछ नहीं चाहती। इसके बाद दोनों फिर चुप हो गए।

सहसा वह अपने तिरछे नेत्रों से उसकी ओर देखती हुई बोली—अच्छा, अस्पताल की बात यह है कि यदि तुम कहते हो तो मैं वहाँ चली जाऊँगी, और अब पीऊँगी भी नहीं।

निखल्यूडोव ने उसके नेत्रो में झाँका, वे मुस्करा रहे थे।

"यह बड़ी अच्छी बात है।"—वह केवल इतना ही कह सका और इसके बाद उसने मसलोवा से विदा ली।

निखल्यूडोव ने मन ही मन कहा—हाँ, अब यह बिलकुल बदल गई है। अब उसके पहले के संशय तो नष्ट हो ही गए थे, अब उसे एक नई अनुभूति हो रही थी, और वह यह कि प्रेम निश्चय ही अजेय है।

जब मसलोवा इस भेंट के बाद अपनी दुर्गन्धपूर्ण बारक में लौटी तो उसने अपना चोग़ा उतार दिया और अपनी चारपाई पर गोद में हाथ रक्खे चुपचाप बैठ गई। बारक में क्षयरोग ग्रस्त स्त्री, लाडीमर स्त्री और उसके बच्चे, मेनशोव की वृद्धा माता और चौकीदार की पत्नी के सिवा अन्य कोई न था। पादरी की लड़की को पिछले दिन पागल बता दिया गया था और अब उसे अस्पताल भेज दिया गया था। वृद्धा स्त्री सो रही थी, बारक का दरवाज़ा खुला हुआ था, और चौकीदार के बाल-बच्चे बाहर बरामदे में थे। सारी स्त्रियाँ कपड़े धोने चली गई थीं। जिस समय मसलोवा ने प्रवेश किया, लाडीमर स्त्री अपनी गोद में बालक लिए बैठी थी और चौकीदार की पत्नी अपने फुर्तीले हाथों से मोज़ा बुन रही थी।

उन्होंने कहा—कहो बातें हुईं?

मसलोवा ऊँची चारपाई पर बैठ गई और अपने पैर हिलाने लगी, जो ज़मीन तक न पहुँचते थे।

चौकीदार-पत्नी ने कहा—गोत में जी डालने में क्या रक्खा है? उदास नहीं रहना चाहिए। कटूशा, हँस, बोल!

पर मसलोवा ने कुछ उत्तर न दिया।

लाडीमर स्त्री ने कहा—और यहाँ की लुगाइयाँ कपड़े धोने

चली गईं। कह रही थीं कि आज बडा दान दिया गया है। बडा सामान आया है।

चौकीदार-पत्नी ने आवाज दी—अरी फिनारका! वह निगोडी कहाँ गई!

उसने बुनने की सुई धागे की गुल्ली में लगा दी और क़सीदा रख कर बरामदे में गई।

इसी समय बरामदे से स्त्रियों के बोलने की आवाज़ आई और सारी स्त्रियाँ जेल के जूते पहने, मोज़े उतारे और हाथ मे एक-एक, दो-दो रोटियाँ लिए आ पहुँची। थियोडेसिया सीधी मसलोवा के पास पहुँची और उसकी ओर अपने स्नेह-स्निग्ध नीलवर्ण नेत्रों से देखती हुई बोली—"क्या बात है? कुछ हुआ तो नहीं? देखो, हमारी चाय का सामान आ गया।"—इतना कह कर उसने रोटियाँ अल्मारी में रख दी।

कोराबलेवा ने पूछा—तो वह अपनी व्याह की बात पर अब भी अड़ा हुआ है?

मसलोवा ने कहा—हाँ, उसी तरह; पर मैं नहीं करना चाहती, और मैंने कह भी दिया है?

कोराबलेवा ने गूँजती हुई आवाज़ में कहा—फिर तेरे जैसी पागल और कौन होगी?

थियोडेसिया ने कहा—जो साथ ही रहना न हुआ तो व्याह करने से क्या लाभ?

चौकीदार-पत्नी ने कहा—तेरा मालिक तो तेरे साथ जा ही रहा है।

थियोडेसिया बोली—हमारा ब्याह तो पहले ही हो चुका था; पर यह ब्याह का नाम क्यों करना चाहते हैं जब उन्हें इसके साथ ही रहना नहीं है?

कोरावलेवा ने कहा—'क्यों' की एक ही रही! तू तो बावली है! तुझे मालूम है, उसने इससे ब्याह कर लिया तो यह रानी हो जायगी।

मसलोवा ने कहा—वह कहते हैं 'तू जहाँ भी ले जाई जायगी वहीं मैं भी जाऊँगा।' पर वह जायँ तो अच्छा, न जायँ तो अच्छा। मैं उनसे जाने को कब कहती हूँ? अब वह मामले की पैरवी करने पीटर्सबर्ग जा रहे हैं; सारे हाकिमों से नाता-रिश्ता है। पर मुझसे उनका कोई सरोकार नहीं है।

"हाँ, सरोकार ही कैसा!"—कोरावलेवा ने कहा। शायद वह अपने बेग की चीज़ों की परीक्षा करते-करते किसी और ही बात के ध्यान में थी।

इसके बाद कोरावलेवा ने कहा—तो अब दो-चार बूँदें पीने-पाने की ठहरेगी?

मसलोवा ने उत्तर दिया—तुम पिओ। मैं न पीऊँगी।

दूसरा
भाग

सलोवा का मामला सीनेट की पेशी में दस-पक्ष में ग्राने वाला था, और निखल्यूडोव उस अवसर पर पीटर्सबर्ग में ही मौजूद रहना चाहता था जिससे अपील रद् किए जाने पर वह सम्राट के दरबार में प्रार्थना भेज सके (और ऐडवोकेट ने भी उसे यही सलाह दी थी)। अपील रद होने की हालत में—और ऐडवोकेट ने उसे पहले से ही जता दिया था कि चूँकि अपील करने के कारण इतने साधारण हैं कि उसे उसके रद् किए जाने पर तैयार रहना चाहिए—क़ैदियों की वह टोली, जिसमें मसलोवा शामिल थी, जून के आरम्भ में रवाना होने वाली थी। और चूँकि निखल्यूडोव ने उसके साथ हर हालत में साइबेरिया जाने का निश्चय कर लिया था, अतः उसने उस समय से पहले-पहले अपनी जायदाद का निवटारा करना ठीक समझा।

निखल्यूडोव अपनी रियासत में अपने शैशव और युवाकाल में रह चुका था और उसके बाद भी वहाँ दो बार जा चुका था,

एक बार, अपनी माँ के अनुरोध से वह एक जर्मन मुनीम को वहाँ ले गया था और वहाँ उसने उसके साथ हिसाब-किताब समझा था। वहाँ की वास्तविक स्थिति और जमींदारी के (अर्थात् भूस्वामियों के) साथ उनके सम्बन्ध की बात वह बहुत पहले से जानता था। किसानों का ज़मींदार के साथ दास और स्वामी का सम्बन्ध था। निखल्यूडोव इन सारी बातों को उस समय से जानता था जब यूनीवर्सिटी मे शिक्षा पाते हुए, और हैनरी जॉर्ज के सिद्धान्तों का अनुशीलन करते हुए, अपने पिता से प्राप्त हुई थोड़ी सी भूमि किसानों को दे डाली थी। इसमें सन्देह नहीं कि सेना में काम करने के बाद मे—जहाँ वह बीस हज़ार रूबल बात की बात में उड़ा दिया करता था—वह अपने इन पुराने विचारों को बन्धकारी न समझता था और उन्हें भूल गया था। उसने अपने आपसे न केवल यह प्रश्न करना ही छोड़ दिया था कि उसकी माँ के पास से आने वाला रुपया वास्तव में कहाँ से आता है, बल्कि वह जान-बूझ कर इस सम्बन्ध में विचार करने से बचता था। पर उसकी माँ की मृत्यु ने और रियासत का प्रबन्ध करने की आवश्यकता ने उसके हृदय में एक बार फिर वही भूस्वामित्व सम्बन्धी प्रश्न उत्पन्न कर दिए। अब से कुछ महीने पहले निखल्यूडोव उत्तर दे देता कि वर्तमान वस्तु-स्थिति में किसी प्रकार का परिवर्तन करने का साहस उसमें नहीं है; रियासत का प्रबन्ध वह स्वयं नहीं कर रहा है। इस प्रकार वह किसी न किसी तरह अपनी आत्मा को शान्त कर लेता और रियासत से दूर रह कर वहाँ से रुपया मँगाता रहता। पर अब उसने निर्णय कर लिया कि वह मामले को इसी तरह

रहने देगा, वल्कि उन्हें ऐसा रूप देगा जो स्वयं उसके लिए आर्थिक दृष्टि से हानिकारक सिद्ध होगा। यद्यपि उस वन्दिनी के साथ उसका जटिल और अबोध्य सम्पर्क स्थापित हो चुका था—यद्यपि उसके लिए सामाजिक स्थिति और विशेषरूप के रुपए-पैसे की आवश्यकता थी और साथ ही उसके सिर पर साइवेरिया की सम्भावित यात्रा भी सवार थी। अत: उसने निर्णय किया कि वह स्वयं जमीन न जुतवाएगा, वल्कि नाम मात्र के लगान पर किसानों के नाम मौरूसी कर देगा।

वह अपनी कुस्मिन्स्की रियासत में पहुँचा और वहा के किसानों को नाम मात्र के लगान पर ज़मीन देकर अपनी मौसियो द्वारा प्राप्त हुई रियासत में गया—वहीं जहाँ कटूशा के साथ उसकी पहली भेंट हुई थी। वह यहाँ की जमीन का वन्दोवस्त भी कुस्मिन्स्की की ज़मीन की भाँति ही करना चाहता था। पर इसके अतिरिक्त वह कटूशा और उसके पुत्र के सम्वन्ध में सारी बातें मालूम करना चाहता था, क्या वह सचमुच मर गया था? और यदि मर गया तो किस तरह?

वह पनोवो में प्रात:काल के समय पहुँचा। वह सारी इमारत और विशेपतया रहने के घर की जीर्ण-शीर्ण अवस्था देख कर विशेष रूप से चकित हुआ। अव वहाँ एक वेतिफ़ सपत्नीक रहा करता था। यह एक विद्यार्थी था जिसने धार्मिक अध्ययन अधूरा छोड़ कर नौकरी कर ली थी। वह निखल्यूडोव को देख कर मुस्कराया और उससे ऑफ़िस मे आने का अनुरोध करने लगा—और इस ढङ्ग से मानो वह अपनी मुस्कराहट द्वारा उसके किसी असाधारण

मङ्गल अभिवचन दे रहा हो। वह गाड़ी से उतर कर ऑफ़िस में चला गया।

निखल्यूडोव एक छोटी सी खिड़की के पास बैठ कर बाहर बाग में झाँकने लगा। ताज़ी खोदी ज़मीन की सुगन्ध से युक्त वसन्त-कालीन वायु खिड़की में से आ-आकर उसके माथे पर लटके बालों और खिड़की की सिल पर रक्खे कागज़ों के साथ अठखेलियाँ करने लगी। नदी के किनारे एक स्त्री बैठी लकड़ी की मोगरी से कपड़े धो रही थी—नपे-तुले ताल-सुर बद्ध गीत के साथ ; और वहाँ से आवाज़ आ रही थी, 'ट्रा-पा-ट्राप, ट्रा-पा-ट्राप।' यह आवाज़ पन-चक्की के उज्ज्वल ताल पर फैल रही थी और पनचक्की से प्रवाहित होते हुए जल की स्वरयुक्त ध्वनि कानों में पहुँच रही थी। इसी समय सहसा उसके कान के पास से एक मक्खी ज़ोर से भनभनाती हुई निकल गई।

उसे तत्काल स्मरण आया कि किस प्रकार बहुत दिन पहले अपनी निर्दोष नवयुवावस्था में उसने इसी तरह पनचक्की के स्वर-युक्त शब्द को दबा कर आते हुए स्त्रियों के कपड़े धोने के व्यव-स्थित शब्द को सुना था, किस प्रकार बाग से आती हुई वसन्त-कालीन सुवासित वायु ने इसी तरह उसके बालों और खिड़की की सिल पर रक्खे कागज़ों के साथ अठखेलियाँ की थीं, और किस प्रकार इसी तरह उसके कानों के पास से एक मक्खी भनभनाती हुई निकल गई थी। यह तो नहीं कहा जा सकता कि वह ठीक उसी तरह उन्नीस साल के लड़के जैसी अनुभूति कर रहा था ; पर यह अवश्य प्रतीत हो रहा था कि वह उसी अवस्था की पवित्रता

और ताज़गी की अनुभूति कर रहा था, जब उसका हृदय भावी महती और असीम सम्भावनाओं से परिपूरित रहा करता था, और साथ ही, जैसा कि स्वप्न में होता है, वह जानता था कि ये सब अतीत की बातें हैं, और वह अत्यन्त उदास हो उठा।

चेलिफ ने मुस्करा कर पूछा—आप जलपान किस समय करेंगे ?

"जब तुम कहो। मुझे भूख नहीं है। मैं एक बार गाँव का चक्कर लगाऊँगा।"

"आप ज़रा इस घर में पधारिएगा। भीतर बिलकुल ठीक ठाक है। कृपा करके भीतर चल कर निगाह डालिए, बाहर इतना...।"

"अभी नहीं, बाद को। अच्छा, मुझे यह बताओ कि इस गाँव में मैट्रेना हरीना नाम की भी कोई स्त्री है ?" (यह मसलोवा की मौसी थी।)

"जी हाँ, इस गाँव में उसने एक गुप्त शराबख़ाना खोल रक्खा है—मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि उसने खोल रक्खा है। मैं उसे बुरा-भला भी कहता हूँ और डाट-डपट भी करता हूँ। पर उस पर मामला चलाना ठीक न होगा। बुढ्ढी औरत ठहरी, नाती-पोते आगे हैं।"—चेलिफ ने उसी प्रकार मुस्कराते-मुस्कराते कहा जिससे उसकी अपने 'मालिक' को खुश करने की अभिलाषा भी प्रकट होती थी, और यह धारणा भी कि इन मामलो के सम्बन्ध में उसके मालिक के भी वही विचार होंगे जो स्वयं उसके हैं।

"वह कहाँ रहती है ? मैं उससे जाकर मिलना चाहता हूँ।"

"गाँव के अन्त में, उधर परली ओर अन्त के घरों में तीसरा

घर। एक ईंटों की झोंपड़ी है और उसके पीछे ही उसकी झोपड़ी है, चलिए, मैं आपके साथ चलता हूँ।"—उसने सुन्दर मुस्कराहट के साथ कहा।

"नहीं, धन्यवाद, मैं पता लगा लूंगा। और तुम गाँव वालों को खबर भेज दो कि वे यहाँ इकट्ठे हो जायँ, मुझे उनसे बड़ी ज़रूरी बात कहनी है।"—निखल्यूडोव ने कहा। वह कुसिमन्स्की की भाँति यहाँ के देहातियों के साथ भी झटपट निबटारा कर डालना चाहता था—और यदि हो सके तो उस दिन शाम को ही।
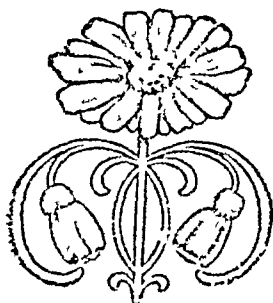
दूसरा परिच्छेद

दरवाज़े बाहर निकलने पर उसे दो लडके नङ्गे पैरों जाते दिखाई दिए—बडा किसी समय की सफ़ेद क़मीज़ पहने था, और छोटा फटी-पुरानी गुलाबी कमीज़ पहने था।

सफेद कमीज़ वाले लडके ने पूछा—तुम कहाँ जा रहे हो जी?

निखल्यूडोव ने उत्तर दिया—मैट्रेना हरीना के पास, तुम उसे जानते हो?

गुलाबी क़मीज़ वाला लडका किसी बात पर हँस पडा। पर वडे लड़के ने गम्भीर भाव से पूछा—कौन सी मैट्रेना? बुड्ढी सी है न?

"हाँ, वह बुड्ढी है।"

"अच्छा—हाँ"—उसने शब्द चबाते हुए कहा—"वह गाँव के दूसरे सिरे पर रहती है। चलो, हम तुम्हे दिखा देते हैं।"

निखल्यूडोव उस वेलिफ़ की अपेक्षा इन बालकों के साथ

अधिक निश्चिन्त हो गया और तीनों चलते-चलते बातें करने लगे। गुलाबी कमीज़ वाले छोटे लड़के ने अब हँसना बन्द कर दिया था और वह भी बड़े लड़के की भाँति बुद्धिमानी के साथ बात करने लगा था।

निखल्यूडोव ने पूछा—तुम यह तो बताओ, इस गाँव में सबसे ग़रीब कौन-कौन हैं?

"सब से गरीब? माइकेल गरीब है, साइमन मकारोव और मार्था—मार्था बहुत ग़रीब है।

छोटे लड़के ने कहा—और अन्यासा तो और भी गरीब है; उसके पास तो गाय तक नहीं है। वह तो भीख माँगती है।

बड़े लड़के ने आपत्ति की—उसके पास गाय न सही, पर वे तीन ही आदमी हैं, मार्था के घर तो पाँच जने हैं।

छोटे ने अन्यासा का पक्ष लेकर कहा—पर उसका तो मालिक भी नहीं है।

बड़े लड़के ने कहा—अन्यासा का मालिक नहीं है तो मार्था का मालिक भी हुआ न हुआ एक सा ही है—एक सा ही है।

निखल्यूडोव ने पूछा—क्यों, उसके मालिक को क्या हुआ?

बड़े लड़के ने देहातियों का मुहावरा इस्तेमाल करते हुए कहा—जेल की चक्की पीस रहा है।

छोटे ने झटपट बताना शुरू कर दिया—साल भर पहले उसने ज़मींदार के दो शीशम के पेड़ काट डाले थे। अब वह छः महीने से जेल में पड़ा है और उसकी घर वाली भीख माँगती फिरती है। तीन बच्चे हैं और एक बुढ़िया सास है।

निखल्यूडोव ने पूछा—और वह रहती कहाँ है?

लडके ने उस सड़क के किनारे की एक झोपड़ी की ओर संकेत किया जिसके आगे एक सूखा हुआ बच्चा अपनी सूखी-सूखी टाँगो पर अपना भार रोकने का प्रयत्न कर रहा था और कहा—यही घर तो है।

एक स्त्री मैला-कुचेला बनियान पहने बाहर दौड़ती हुई आई और चिल्ला कर बोली—"वास्का! निगोडा न जाने कहाँ चला गया।" वह भीत दृष्टि से दौड़ती हुई अपने बच्चे के पास पहुँची और उसे निखल्यूडोव के आगे से इस प्रकार उठा कर ले गई मानो उसे आशङ्का हो कि कहीं वह उसे किसी प्रकार की क्षति न पहुँचावे।

इसी स्त्री का पति निखल्यूडोव के पेड काटने के अपराध में जेल में पडा सड रहा था।

जब निखल्यूडोव मैट्रेना के घर के पास पहुँचा तो बोला—और इस मैट्रेना का क्या हाल है? क्या वह भी गरीब है?

"वह और गरीब! नहीं जी। वह शराब बेचती है।"—छोटे लडके ने निश्चयपूर्वक कहा।

घर आने पर निखल्यूडोव लडकों को बाहर ही छोड गया और ख़ुद झोंपडी में जाने लगा। झोंपडी चौदह फ़िट लम्बी थी। बड़े से चूल्हे के पीछे एक चारपाई पडी थी जो कठिनता से इतनी लम्बी होगी कि उस पर कोई लम्बा आदमी अपनी टाँग सीधी कर सके। निखल्यूडोव ने मन ही मन कहा—"और इसी चारपाई पर कटूशा के बच्चा हुआ होगा और इसी पर वह बीमार

पड़ी होगी।" झोपड़ी का अधिकतर भाग करघे में घिरा हुआ था जिस-पर वृद्धा स्त्री अपनी सब से बड़ी पोती के साथ बैठी हुई धागे निकाल रही थी। निखल्यूडोव झोंपड़ी में घुसने लगा तो निचले द्वार से उसका सिर टकरा गया। दो पोते दौड़ते हुए द्वार पर आए और द्वार की कीलियों को पकड़ कर खड़े हो गए।

वृद्धा स्त्री ने विषण्ण भाव से कहा—"क्यों क्या है?" आज वह बिगड़ी हुई थी, क्योंकि धागे न निकल पाते थे। और साथ ही चुरा-छिपा कर शराब बेचने के कारण वह किसी अजनबी को देखते ही सशङ्कित हो जाती थी।

निग्लल्यूडोव ने कहा—मैं यहाँ के गाँवों का मालिक हूँ, और तुमसे कुछ बातचीत करना चाहता हूँ।

वृद्धा स्त्री चुपचाप खड़ी-खड़ी उसकी ओर ध्यानपूर्वक देखती रही और उसके चेहरे का भाव सहसा बदल गया। उसने अपने स्वर में कोमलता उत्पन्न करते हुए कहा—अरे! मैं भी कैसी अन्धी हूँ, यह तो मेरी आँखों का तारा है, मैंने समझा कि कोई चलता-फिरता होगा। मेरी आँखों पर भी कैसा पर्दा पड़ गया। बेटे, कुछ बुरा मत मानना।

निखल्यूडोव ने द्वार की ओर दृष्टिपात किया और देखा कि बच्चों के पीछे एक स्त्री मेगतों की टोपी पहने गोद में रुग्ण से पीले मुस्कराते बच्चे को लिए खड़ी है। उसने वृद्धा से कहा—मुझे तुमसे कुछ अकेले में कहना है।

वृद्धा ने द्वार की ओर देखा और चिल्ला कर कहा—अरे तुम

यहाँ खड़े-खडे क्या ताक रहे हो? मार खाओगे? डण्डा तो लाना। किवाड बन्द करो, सुना!

बच्चे भाग गए और बच्चे वाली स्त्री ने दरवाज़ा बन्द कर दिया।

वृद्धा ने कहा—अरे मैं मन ही मन कहने लगी—यह कौन घुसा आ रहा है? और लो निकले मेरे मालिक, मेरे मोती, मेरे जवाहिर! तो, भला मेरे घर आए हैं! आओ मेरे मालिक, यहाँ बैठो।

उसने अपने दुपट्टे से पीढ़ा पोंछते हुए कहा। और मैं मन मे कहने लगी—यह कौन कलमुँहा घुसा आ रहा है! और थे मेरे मालिक, मेरे अन्नदाता, मेरे परमात्मा! बुरा मत मानना, मै तो ठहरी बावली, मेरी आँखों में पानी आ चला है।

निखल्यूडोव बैठ गया, और वृद्धा अपने दाहिने हाथ पर गाल टेक कर खडी रही और उसका बाँया हाथ दाहिने की नुकीली कुहनी पकड़े रहा।

उसने सङ्गीतमय स्वर मे कहा—हे मेरे राम! तुम तो बुड्ढे हो चले! कभी गुलाब की तरह खिले रहते थे। और चिन्ताएँ क्या थोडी होंगी?

"मै इसीलिए तुम्हारे पास आया हूँ। तुम्हें कट्टूशा मसलोवा की याद है?"

"कैटेरीना की?—क्यों, याद क्यों न रहेगी? मेरी तो भाजी ठहरी! याद न रहेगी तो क्या होगा? और उसके लिए जो मैंने मनो आँसू बहा दिए हैं सो? मेरे अन्नदाता, भगवान के विरुद्ध

पाप किसने नहीं किया ? ज़ार के विरुद्ध अपराध किसने नहीं किया ! जवानी क्या होती है, यह हमसे कोई पूछे ! तुम चाय और कॉफ़ी के सिवा और किसी चीज़ को हाथ तक न लगाते थे और तुम पर भी काम का भूत सवार हो गया। कभी-कभी वह बड़ा बलवान हो जाता है। उसके आगे किसकी चलती है ? और जो तुमने उसे फांस भी लिया तो क्या हुआ ? उसे इनाम क्या थोड़ा दिया ?—पूरे सौ रूबल ! और वह ? वह किसकी सुनती थी ! जो कहीं वह मेरी बात पर कान देती तो मौज से दिन बिताए जाती। सच्ची बात कहने में हर्ज ही क्या—चाहे वह मेरी भाञ्जी ही सही, लौंडिया अच्छी नहीं है। मैंने उसे कैसी अच्छी जगह दिला दी थी ! पर उसने मालिक की बात न मानी, गालियाँ दीं। क्या हमारा काम बड़े आदमियों को गाली देने का है ? उसे वहाँ से निकाल दिया गया। फिर वह फ़ारेस्टर के यहाँ जा रही। वहीं मौज के साथ रह जाती, पर नहीं, वहाँ भी न टिकी।

"मैं उसके बच्चे की बात जानना चाहता हूँ। बच्चा तुम्हारे ही यहाँ तो हुआ था ? वह अब कहाँ है ?"

"बच्चे की बात यह रही कि पहले-पहले तो मैंने समझा कि सब कुछ ठीक है। वह तो इतनी बीमार पड़ी थी कि हमने उसके जीने की आशा छोड़ दी थी। मैंने बच्चे को बपतिस्मा दिलाया और फिर शिशु-औषधालय में भेज दिया। जब माँ की जान निकल रही हो तो बच्चे को घोट कर क्यों मारा जाय ? और लोग क्या करते हैं ?—बच्चे की कुछ सुध नहीं लेते, और वह मुर्झा-मुर्झा कर चल बसता है। पर मैंने सोचा, यह ठीक नहीं है, कुछ कुछ

कष्ट सहना मन्ज़ूर, बच्चे को मारना मन्ज़ूर नही। पैसे भी काफ़ी थे, सो मैंने उसे शिशु-औषधालय में भेज दिया।

"तुम्हे वहाँ से बच्चे का नम्बर मिल गया था?"

"हाँ नम्बर तो मिला था, पर बच्चा वहाँ जाते ही मर गया। वह उसे लेकर पहुँची ही थी कि उसका दम निकल गया।"

"वह कौन?"

"एक लुगाई थी जो स्कोरोवनो में रहती थी। वह तो इसका रोज़गार करती थी। उसका नाम था मल्याना। अब वह मर गई। बडी चतुर था। वह कैसे करती थी? लोग उसके पास बच्चे लाते, और वह उन्हें उस समय तक खिलाती-पिलाती रहती जब तक तीन-चार बच्चे इकट्ठे न हो जाते। इसके बाद वह उन्हें एक झूलने में रखती—बड़ा सा झूलना होता; एक हैण्डिल लगा रहता। वह चार-चार बच्चों को पाँव से पॉव लगा कर सुला देती जिससे उनके सिर न टकराएँ। और इस प्रकार वह चारो को ले जाती। वह उन्हें दूध की बत्ती दे देती जिससे वे चुप रहते।"

"अच्छा, फिर?"

"तो वह एक पखवारे के बाद कैटेरीना के बच्चे को भी इसी भॉति ले गई। वह तो घर से ही बीमार चला था।"

निखल्यूडोव ने पूछा—और बच्चा सुन्दर था?

"ऐसा सुन्दर कि उससे अच्छा ढूँढे न मिलता। बिलकुल तुम्हारी सूरत का।"—वृद्धा ने आँख मार कर कहा।

"क्यों, वह बीमार क्यो पडा था? क्या कुछ खाना अच्छा न था?"

"खाना कैसा—खाने का बहाना था। और जब अपना बच्चा न हो तो ऐसा तो होता ही है? बस, ऐसा खाना था कि किसी तरह जीता जा पहुँचा। उसने कहा कि वह उसे किसी न किसी तरह मास्को तक तो ले गई थी, पर वहाँ उसकी जान निकल गई। वह वहाँ की सनद भी लाई थी—बड़ी चतुर स्त्री थी; सब काम क़ायदे से करती थी।"

बस, निखल्यूडोव को अपने बच्चे के सम्बन्ध में केवल इतना ही पता चल सका।

निखल्यूडोव झोंपड़ी से बाहर निकला तो उसका सिर फिर उसी प्रकार टकरा गया। वह सड़क पर पहुँचा और वहाँ उसे दोनों लड़के उसकी बाट जोहते मिले। कुछ दर्शक भी आ खड़े हुए थे। इनमें जो स्त्रियाँ खड़ी थीं उनके साथ वह मँगतों की टोपी वाले सूखे बच्चे की माँ भी बच्चे को गोद में लिए खड़ी थी। रक्तहीन बालक गोद में भारहीन रूप से बैठा हुआ, अपने सूखे, कान्तिहीन चेहरे पर विचित्र भाव से फैली हुई मुस्कराहट से मुस्करा रहा था और अपना सूखा अँगूठा बार-बार ऊपर-नीचे कर रहा था।

निखल्यूडोव ने देखा और जाना कि मुस्कराहट पीड़ा की मुस्कराहट है। उसने पूछा कि वह कौन स्त्री है?

बड़े लड़के ने कहा—यह वही अन्यासा है जिसकी बात मैंने तुम्हें कही थी।

निखल्यूडोव अन्यासा की तरफ़ मुख़ातिब हुआ और बोला—तुम कहाँ रहती हो? अपना गुज़ारा किस तरह करती हो?

"गुज़ारा किस तरह करती हूँ ?—भीख माँगती हूँ।"—और वह रोने लगी।

निखल्यूडोव ने अपनी पॉकेट-बुक से दस रुबल का नोट निकाल कर उसे दिया। अभी वह दो कदम आगे बढ़ा होगा कि एक दूसरी स्त्री ने गोद में बच्चा लिए उसे आकर पकड़ लिया, फिर, एक वृद्धा स्त्री आई, फिर एक युवती। सब अपनी निर्धनता की दुहाई देने और सहायता की याचना करने लगीं। निखल्यूडोव ने उन्हें साठ रुबल—दस-दस, पाँच-पाँच के नोटों में दिए, और अत्यन्त खिन्न भाव से बेलिफ के घर लौट आया।

इसके बाद निखल्यूडोव वहाँ कई दिन रहा, और आख़िरी दिन उसने अपनी मौसियों की चीजें देखीं, और महागनी की आलमारी की दराज़ में दृष्टि डालते हुए उसे बहुत से पत्र और एक चित्र दिखाई दिया। इस चित्र में उसकी मौसियाँ सोफ़िया इवानोला, मेरी इवानोला और विद्यार्थी-जीवन में वह स्वयं और जीवनोल्लास उल्लसित पवित्र निर्दोष कटूशा थे। घर की सारी चीज़ों मे से वह केवल ये पत्र और चित्र अपने साथ ले चला। बाकी सारा सामान उसने चक्की वाले को दे डाला जिसने सुस्मित बेलिफ़ की सिफारिश से वह सामान और घर असली से दस गुनी कम कीमत पर ख़रीद लिया।

निखल्यूडोव ने कुस्मिन्स्की की सारी जायदाद, देहातियो को बिना किसी लगान के, दे डाली थी और उस समय सम्पत्ति की हानि से उत्पन्न हुए पछतावे की बात सोच कर अब उसे आश्चर्य हो रहा था कि कभी उसके हृदय में इस प्रकार के भाव भी उत्पन्न

हो सकते थे। अब उसे मुक्ति और नूतनता की एक संवेदना मिश्रित उल्लासपूर्ण अनुभूति हो रही थी, ऐसी अनुभूति जो किसी ऐसे यात्री को होती हो जिसने किसी नवीन प्रदेश का पता लगा पाया हो।
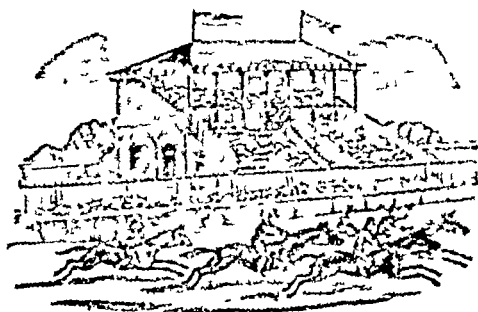
पस आने पर निखल्यूडोव ने मास्को के दर्शन एक नवीन और विलक्षण ही प्रकाश में किए। वह शाम के वक्त आया था ; लेम्पों का प्रकाश हो चुका था। वह रेलवे स्टेशन से सीधा घर पहुँचा, जहाँ असबाब अभी तक उसी प्रकार तितर-बितर पड़ा था। ग्रामीणों ने निखल्यूडोव के मन पर जो गहरा संस्कार बिठा दिया था उसके बाद उसे यह सारा व्यापार नितान्त सारहीन और मूर्खतापूर्ण प्रतीत हुआ और उसने घर का सामान ठीक-ठाक करने का भार ऐग्राफेना पैंट्रोला पर छोड़ कर दूसरे ही दिन एक दूसरा मकान लेने का निश्चय किया

वह तड़के ही घर से निकल गया और उसने जेल के पास एक अस्वच्छ सी मामूली इमारत में दो कमरे भाड़े पर ले लिए. और कुछ सामान मँगा भेजने के बाद वह ऐडवोकेट से मिलने चला गया।

ऐडवोकेट ने उसे बारी से पहले ही अपने कमरे में बुला लिया

और तत्काल उससे मैनशोव के मामले की बातें करनी शुरू कीं। ऐडवोकेट को मामला पढ़ कर उसके असङ्गत अभियोग पर बड़ा रोप आया था।

उसने कहा—यह मामला तो बेहद बुरा है। बहुत सम्भव है कि खुद मालिक मकान ने ही अपने हाथों से घर में आग लगा ली हो, जिससे उसे बीमे का रुपया मिल जाय; पर खास बात तो यह है कि मैनशोव का अपराध बिलकुल प्रमाणित ही नहीं हुआ। कोई गवाह पेश नहीं किया गया है। यह सारा बखेड़ा इसलिए उठ खड़ा हुआ है कि नीची अदालत के मैजिस्ट्रेट ने लापरवाही से काम लिया है और पब्लिक प्रॉसीक्यूटर ने मामले में बड़ा उत्साह दिखाया है। यदि इनका मुक़द्दमा यहीं चला, प्रान्तीय अदालत में न गया, तो मैं गारण्टी देता हूँ कि वे बेदाग छूट जायँगे, और मैं एक पैसा न लूँगा। रहा दूसरा मामला—थियोडेस्यिया बीरनकोवा वाला, सो सम्राट के नाम प्रार्थना-पत्र तैयार कर दिया गया है; आप पीटर्सबर्ग तो जायँगे ही, खुद ही अपने साथ लेते जाइए, और अपनी तरफ से भी कुछ अनुरोध कर दीजिए, वरना वे लोग दो-एक जाँच-पड़ताल करेंगे और बस नतीजा कुछ न निकलेगा। आप कोशिश करके अपील-कमेटी के कुछ प्रभावशाली सदस्यों के पास पहुँचिए। बस, या और कुछ?

"जी नहीं, मेरे पास एक पत्र..... ।"

"आप तो पूरे नल हो गए जिसमें से होकर कैदियों की सारी शिकायतें आती हैं।"—ऐडवोकेट ने मुस्करा कर कहा—"मामला बहुत बढ़ गया और आप सबका इन्तज़ाम न कर सकेंगे।"

निखल्यूडोव ने कहा—"नहीं, यह एक असाधारण मामला है।" और उसने संक्षेप में एक ऐसे देहाती का मामला सुनाया जिसने एक गाँव में अपने एक मित्र से धार्मिक वाद-विवाद किया था। पादरी ने इसे अपराध समझा और अधिकारियों को सूचना दे दी। मैजिस्ट्रेट ने उसके साथ जिरह की, पब्लिक प्रॉसीक्यूटर ने अपराध के अभियोग लगाए और जस्टिसों ने मामला विचारार्थ भेज दिया।

निखल्यूडोव ने कहा—कितनी भयङ्कर बात है! क्या यह बात ठीक हो सकती है?

"आपको आश्चर्य किस बात पर हो रहा है?"

"सारी बातों पर। पुलिस-अफ़सर की बात तो समझ में आ सकती है; वह तो आज्ञापालन करता है और बस। पर पब्लिक-प्रॉसीक्यूटर का अपराध-पत्र तैयार करना—वह तो पढ़ा-लिखा आदमी है।"

"बस, इसी में तो आप भूल कर रहे हैं। हम पब्लिक प्रॉसीक्यूटरों और जजों को उदार समझने के आदी हैं। और कोई ज़माना था कि वे ऐसे थे भी। पर अब बात बिलकुल बदल गई है। वे भी सरकारी कर्मचारी मात्र हैं जिन्हें केवल अपने वेतन के दिन की चिन्ता लगी रहती है। उन्हें वेतन मिलता है और वे उससे भी अधिक चाहते हैं और यहीं उनके सिद्धान्त का अन्त हो जाता है। आप जिसे चाहें उसी का वे विचार करेंगे, अभियोग लगाएँगे, और दण्ड दे देंगे।"

"यह माना, पर क्या ऐसा भी कोई विधान है जिसके अनु-

सार किसी आदमी को केवल इसीलिए साइबेरिया भेज दिया जाय कि उसने अपने मित्रों के साथ बाइबिल की चर्चा की थी।"

"जी हाँ, यदि आप सिर्फ़ यह प्रमाणित कर दें कि बाइबिल पढ़ने में उसने उसका निर्दिष्ट आशय न समझ कर चर्च द्वारा निर्धारित व्याख्या को भ्रान्त सिद्ध किया था तो आप किसी भी आदमी को निर्वासित करा सकते हैं। साधारण जन-समुदाय के सामने ग्रीक सनातनी-धर्म की आलोचना करने का अर्थ है १९६ धारा के अनुसार साइबेरिया निर्वासन!"

"असम्भव!"

"मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि बात यही है। मैं इन महोदयों, इन विचाराधीशों से हमेशा कहा करता हूँ कि मैं उनका कृतज्ञ हुए बिना नहीं रह सकता; क्योंकि यदि मैं, और आप और हम सब के सब आज दिन जेल में बन्द नहीं हैं तो यह केवल उन्हीं की दया का फल है। हमें अपनी स्वतन्त्रता से वञ्चित करना और साइबेरिया से अपेक्षाकृत कम दूर स्थानों को निर्वासित करना इनके बाएँ हाथ का खेल है।"

"तो यदि ये सारी बातें प्रॉक्यूररों और उनके जैसे अन्य अधिकारियों के अधिकार में हैं, जो मनमाना क़ानून बना सकते हैं, तो यह न्याय-विचार का ढोंग क्यों?"

प्रेज़ीडेंट अट्टहास कर उठा। बोला—आप भी अजीब सवाल करते हैं। अजी हज़रत, यह फ़िलॉसफ़ी है। ख़ैर, हम इस प्रसङ्ग पर भी बातचीत करेंगे। आप सनीचर के दिन आ सकेंगे? आपको उस दिन मेरे घर पर वैज्ञानिक, साहित्यिक और कलाविद् मिलेंगे, और

फिर हम इन शून्य समस्याओं पर विचार कर सकेंगे"—ऐडवोकेट ने शून्य-समस्या का उच्चारण व्यंग्यनिहित वाक्य-विन्यास के साथ करते हुए कहा।

निखल्यूडोव ने उत्तर दिया—"आपको धन्यवाद, मैं चेष्टा करूंगा"—पर उसे बोध हुआ कि वह झूठ बोल रहा है, क्योंकि वह जानता था कि यदि वह किसी बात की चेष्टा करेगा तो वह ऐड-वोकेट के साहित्यिक सन्ध्याकाल और उसकी वैज्ञानिक गोष्ठी, और उसके कलाविदों और साहित्यज्ञों से अलग रहने की होगी।

जिस हास्य के साथ ऐडवोकेट ने निखल्यूडोव के इस कथन को ग्रहण किया था कि यदि जज मनचाहा कानून चला सकते हैं, तो इस न्याय-विचार के ढोंग की क्या आवश्यकता है, और जिस लहजे के साथ उसने 'फ़िलॉसफी' और 'शून्य-समस्या' का उच्चारण किया था, उस हास्य ने और उस लहजे ने निखल्यूडोव के निकट यह स्पष्ट रूप से प्रमाणित कर दिया था कि उसके और ऐडवोकेट—और सम्भवत ऐडवोकेट के मित्रों के दृष्टिकोण में कितना बड़ा अन्तर है। उसे अनुभूति हुई कि उसमें और उसके पुराने सङ्गी-साथियों में चाहे जितना बड़ा अन्तर हो, उसमें और ऐडवोकेट तथा उसकी मित्र-गोष्ठी में उससे भी बड़ा अन्तर है।
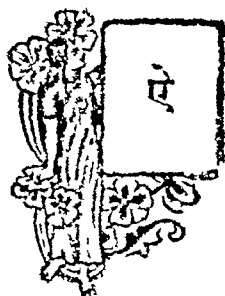
डवोकेट के यहाँ से निखल्यूदोव एक गाड़ी लेकर सीधा जेल पहुँचा। जिस समय उसने प्रवेश-द्वार की घण्टी बजाई, इस बात के विचार मात्र से कि मस्लोवा की अब क्या अवस्था होगी, वह तथा जेल में बन्द अन्य सारे कैदी किस विलक्षण रहस्यमय आवरण में आच्छन्न रहते हैं, उसके हृदय की गति बन्द हो चली। उसने द्वार खोलने वाले जेलर से मस्लोवा के सम्बन्ध में पूछा। जेलर ने पूछ ताछ करके कहा कि वह अस्पताल में है। अस्पताल में जाने पर एक सहृदय आदमी ने उसे द्वार में प्रविष्ट कर लिया और यह पूछ कर कि वह किससे मिलना चाहता है, उसे बच्चों के वार्ड की ओर भेज दिया।

एक युवक डॉक्टर कारबोलिक ऐसिड से तर हुआ बाहर निकला और उसने निखल्यूदोव से कठोर भाव से पूछा कि वह क्या चाहता है। यह डॉक्टर कैदियों के कष्टों को दूर करने में हमेशा मग्न रहता था, और इसके लिए आए दिन वह जेल-अधिकारियों से और अपने हेड-डॉक्टर तक से झगड़ा कर बैठता था। उसे आशंका हुई कि निखल्यूदोव कहीं कोई अवैध अनुरोध न कर बैठे,

अत. उसने यह दिखाने के लिए रुत्त भाव धारण कर लिया कि वह किसी के साथ रू-रिआयत नहीं करता। उसने कहा—यह बच्चों का वार्ड है। यहाँ कोई स्त्री नहीं है।

"जी हाँ, मुझे मालूम है, मगर यहाँ एक कैदी को सहकारी धाय का काम दिया गया है।"

"यहाँ दो ऐसी स्त्रियाँ हैं। आप किसे चाहते हैं?"

निखल्यूडोव ने उत्तर दिया—"उनमें से एक का नाम मसलोवा है, और उसके साथ मेरा घनिष्ट सम्बन्ध है। मै उससे कुछ बात-चीत करना चाहता हूँ। मै पीटर्सबर्ग जा रहा हूँ—उसके मामले की सीनेट में अपील करने, और मुझे उसे यह भी देना है। यह सिर्फ एक फोटोग्राफ है।"—निखल्यूडोव ने अपनी जेब से लिफाफ़ा निकाल कर दिखाते हुए कहा।

अब डॉक्टर पसीज गया और बोला—"अच्छी बात है, आप उससे मिल लीजिए।"—इतना कह कर उसने एक सफ़ेद ऐप्रन वाली वृद्धा स्त्री को मसलोवा को बुलाने की आज्ञा दी। "आप यहीं बैठिएगा या वेटिङ्ग-रूम में?"

निखल्यूडोव ने कहा—"धन्यवाद।" उसने डॉक्टर के व्यव-हार को अपने अनुकूल देख कर उससे पूछा कि वे मसलोवा के काम से सन्तुष्ट हैं या नहीं?

"ठीक ही है। यदि उसकी पहली जीवनी को ध्यान में रक्खा जाय तो वह अच्छा ख़ासा काम कर रही है। और लीजिए, वह आ भी पहुँची।"

वृद्धा नर्स मसलोवा के साथ-साथ एक दरवाज़े से आ पहुँची।

मसलोवा नीली छींट की पोशाक और सफेद ऐप्रन पहने थी और उसके सिर के वाल सफेद रूमाल से पूरी तरह ढके हुए थे। जब उसने निखल्यूडोव को देखा तो उसका चेहरा लाल हो उठा। वह रुक गई मानो वह द्विविधा में पड़ी हो, इसके बाद उसने भ्रुकुटी चढ़ाई और नीची निगाह किए बरामदे में बिछे टाट पर शीघ्रता-पूर्वक पैर रखती हुई वह निखल्यूडोव के पास आ पहुँची। उसके पास आकर उसने निखल्यूडोव को अपना हाथ इच्छा न रहते हुए भी दे दिया तथा उसका चेहरा और भी लाल हो उठा।

निखल्यूडोव ने उसे उस दिन से न देखा था जब उसने अपने आवेश के लिए उससे क्षमा-प्रार्थना की थी। उसे आशा थी कि वह इस समय भी उसी अवस्था में होगी। पर आज वह विलकुल बदली हुई थी। आज उसके चेहरे में कुछ नवीनता थी, कुछ सङ्कोच, सलज्जता और—निखल्यूडोव को प्रतीत हुआ—उसके प्रति अमित्रता। निखल्यूडोव ने उससे भी वही बात कही जो उसने डॉक्टर से कही थी कि वह उसकी अपील लेकर पीटर्सबर्ग जा रहा है—और उसने पनोवो से लाए फोटोग्राफ़ का लिफाफ़ा उसे पकड़ा दिया।

"यह मुझे पनोवो में मिला था—एक पुराना फ़ोटो है, शायद यह तुमको पसन्द आएगा; इसे अपने पास रक्खो।"

उसने अपनी काली भवें उठा कर तिरछे नेत्रों से उसकी ओर साश्चर्य देखते हुए वह फ़ोटो ले लिया, मानो वह पूछ रही हो—'यह किस लिए?' और उसने फ़ोटो को अपने ऐप्रन की जेब में रख लिया।

निखल्यूटोव ने कहा—मैं वहाँ तुम्हारी मौसी से मिला था।

उसने अन्यमनस्क भाव से कहा—अच्छा?

निखल्यूडोव ने कहा—तुम यहाँ आराम से हो?

"हाँ, आराम से हूँ।"—उसने उत्तर दिया।

"कुछ मुश्किल काम तो नहीं है?"

"नहीं जी, पर मुझे अभी इसकी आदत नहीं है।"

"मुझे प्रसन्नता हुई। कम से कम वहाँ से तो अच्छा ही है।"

"वहाँ से—कहाँ से?" और उसका चेहरा फिर लाल हो उठा।

"जेल से।"—निखल्यूडोव ने झटपट उत्तर दिया।

"यहाँ आदमी तो अच्छे होंगे। यहाँ पर वहाँ जैसे आदमी नहीं हैं।"—निखल्यूडोव बोला।

"वहाँ भी कई अच्छे आदमी हैं।"—उसने उत्तर दिया।

निखल्यूटोव ने कहा—मैं मैनशोव के मामले की देख-भाल कर रहा हूँ, और आशा है कि वे छूट जायँगे।

"भगवान करे यही हो। बड़ी भली बुढ़िया है।"—उसने वृद्धा के सम्बन्ध में अपनी सम्मति दुहराते हुए कहा और साथ ही वह किञ्चित मुस्कराई भी।

"आज मैं पीटर्सबर्ग जा रहा हूँ। तुम्हारा मामला इस पक्ष में पेश हो जायगा, और मुझे आशा है कि तुम्हारा दण्ड हटा दिया जायगा।"

"हटा दिया जाय या न हटा दिया जाय—मेरे लिए अब एक सा ही है।"

"अब क्यों?"

"अब क्यों ?"—और उसने निखल्यूडोव के नेत्रों की तरफ तीव्र, प्रश्नात्मक दृष्टि से देखा।

निखल्यूडोव समझ गया कि इस शब्द और इस दृष्टि का अभिप्राय यह है कि वह यह जानना चाहती है कि क्या वह अभी तक अपने निश्चय पर दृढ है या उसने उसकी अस्वीकारोक्ति को मान लिया है।

निखल्यूडोव ने कहा—"मैं यह तो नहीं जानता कि तुम इसे एक जैसा क्यों समझती हो। जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, मेरे लिए यह अवश्य एक जैसा है, चाहे तुम्हारा दण्ड हटाया जाय या न हटाया जाय। मैं तुमसे जो कुछ कह चुका हूँ, हर हालत में वही करूँगा।" उसने दृढ निश्चयात्मक भाव से कहा।

मसलोवा ने अपना सिर उठाया और उसके तिरछे काले नेत्र उसके चेहरे पर जमे रहे। उसका मुख-मण्डल हर्षातिरेक से खिल उठा। पर उसके नेत्र जो कुछ कह रहे थे उसके ओठों ने उससे बिलकुल ही दूसरी बात कही।

वह बोली—यह न कहते तभी अच्छा था।

"मैं यह इसलिए कह रहा हूँ कि तुम जान जाओ।"

"इस सम्बन्ध में जो कुछ कहना था, कहा जा चुका; और अब कहने-सुनने को कुछ शेष नहीं रहा।"—उसने प्रयासपूर्वक अपनी मुस्कराहट दबाते हुए कहा।

अकस्मात् अस्पताल की ओर से शोर-गुल और एक बच्चे के रोने की आवाज़ आई।

मसलोवा ने आतुरतापूर्वक सिर घुमा कर देखते हुए कहा—मुझे बुला रहे हैं।

निखल्यूडोव ने कहा—अच्छा, विदा।

मसलोवा ने अपनी ओर बढ़े हुए हाथ को न देखने का भाव बताया और उसे बिना लिए ही वह अपने हृदय को उद्वेलित करते हुए, भावावेश को छिपाने की चेष्टा में, जल्दी-जल्दी टाट पर पैर रखती हुई वहाँ से चली गई।

निखल्यूडोव ने स्वगत प्रश्न किया—"इसके हृदय में क्या हो रहा है? यह क्या सोच रही है? यह क्या अनुभूति कर रही है? क्या यह मुझे परखना चाहती है या क्या सचमुच ही यह मुझे क्षमा न कर सकेगी? क्या यह बात है कि यह अपने भावों और विचारों को प्रकट ही नहीं कर सकती, या करना ही नहीं चाहती? यह पिघली है या और कठोर हो गई है?" पर वह इन सबका कोई उत्तर न पा सका। वह केवल इतना ही जान सका कि वह बदल गई है, और उसकी आत्मा में एक महत्वपूर्ण परिवर्त्तन-व्यापार जारी है, और इस परिवर्त्तन ने उसे (निखल्यू-डोव को) न केवल उसी के साथ सम्बद्ध कर दिया है, बल्कि उस मङ्गलमय के साथ भी, जिसके लिए यह सारा परिवर्त्तन किया जा रहा था। और इस सम्बन्ध ने उसे उद्वेलित और हर्षोल्लसित कर दिया।

मसलोवा वार्ड में आकर—जहाँ आठ छोटे-छोटे बिछौने लगे हुए थे—नर्स की आज्ञानुसार एक बिछौना तैयार करने लगी; और वह चादर की सिलवट निकालने के लिए बिछौने के दूसरी ओर

इतना झुक गई कि उसका पैर फ़िसल गया और वह गिरते-गिरते बच गई।

एक आरोग्यशील नन्हा सा लड़का—जिसकी गर्दन में पट्टी बँधी हुई थी—उसकी ओर देख कर हँस पड़ा। मसलोवा अब अपने आप पर क़ाबू न कर सकी और खिलखिला कर हँस पड़ी। यह हास्य इतना संक्रामक था कि कुछ और बच्चे भी खिलखिला पड़े, और एक धाय ने क्रुद्ध होकर मसलोवा को डपटा।

"तू ठट्ठे क्यों मार रही है? क्या तूने यह जगह भी वही समझ रक्खी है, जहाँ तू अब तक रहती आई है? जा—जाकर खाना ला।"

मसलोवा चुप हो गई और खाने का पात्र लेकर आदेशानुसार जाने लगी, पर उस गर्दन बँधे लड़के की तरफ़—जिसे हँसने की मुमानियत थी—देख कर वह फिर दबी हँसी के साथ हँस पड़ी।

मसलोवा को, जब-जब अवकाश मिलता, वह लिफ़ाफ़े में से फोटो का कुछ अंश निकाल कर उसकी ओर मुग्ध दृष्टि से देख लेती; पर जब वह शाम को ड्यूटी से मुक्त हो गई और अपने शयनागार में पहुँची, जहाँ दूसरी धाय भी सोती थी, तब कहीं उसे वह चित्र लिफ़ाफ़े में से पूरी तरह निकाल कर देखने का अवसर मिला। उसने वह पीला, उड़ा हुआ चित्र निकाल लिया और निश्चेष्ट भाव से चेहरों-मुहरों, कपड़ों लत्तों, बरामदे की सीढ़ियों और अपने, उसके और उसकी बुआओं के चेहरों की पश्चात्भूमि का काम देने वाली झाड़ियों का निर्निमेष नेत्रों से आलिङ्गन किया, और अपने घुँघराले बालों से ढके हुए ललाट तथा यौवन-विक-सित मुखमण्डल पर वह विशेष रूप से मुग्ध हुए बिना न रह

सकी। वह उसमें इस प्रकार तल्लीन हो गई कि जब उसकी साथिन नर्स आई तो उसने उसकी पग-ध्वनि तक न सुनी।

मृदुल स्वभावा मोटी नर्स ने फ़ोटो पर झुकते हुए कहा—वह तुझे क्या दे गए हैं? यह कौन है?—तू है?

मसलोवा ने अपनी साथिन के चेहरे की तरफ़ देख कर मुस्कराते हुए कहा—और कौन?

"और यह वह ख़ुद हैं?—और यह उनकी माँ?"

"नहीं, उनकी बुआएँ। तुम मुझे पहचान नहीं पातीं?"

"बिलकुल नहीं। चेहरा-मुहरा बिलकुल ही बदल गया। दस बरस पहले से क्या कम होगा।"

मसलोवा ने कहा—"दस बरस नहीं, पूरा जीवन।" और सहसा उसकी सारी सजीवता नष्ट हो गई, उसका चेहरा विपण्ण हो उठा और उसके माथे पर एक गहरी रेखा अङ्कित हो गई।

"सो कैसे? तुम्हारा रहन-सहन तो बड़ा सहज होगा।"

मसलोवा ने अपने नेत्र बन्द करके सिर हिलाते हुए कहा—सहज रक्खा है! नरक से भी गया-बीता।

"नरक से गया-बीता कैसे?"

"कैसे? आठ से लगा कर सुबह के चार बजे तक, और रोज़ रात को फिर यही!"

"तो फिर ये सब इसे छोड क्यों नहीं देतीं?"

"छोड़ना चाहें तो भी नहीं छोड़ सकतीं। पर इन बातों में क्या रक्खा है?"—मसलोवा चिल्ला उठी और उछल पड़ी। उसने अपना फ़ोटो दराज़ में फेंक दिया। बड़ी कठिनता से अपने क्रुद्ध

आँसू रोकती हुई वह धड़ाके के साथ दरवाज़ा बन्द करके बरामदे में भाग गई।

चित्र के रूप को देखते हुए उसने ऐसी कल्पना कर ली थी मानो वह उसी समय की कट्टशा हो। उसने अपने उस समय के सुख का स्वप्न देखा और उसके साथ एक बार फिर सुखी होने की सम्भावना का स्वप्न देखा। पर अपनी साथिन के शब्दों से उसे स्मरण हो आया कि वह तब क्या थी और अब क्या है, और उसे अपने वर्तमान कुत्सित जीवन का सारा रोमाञ्चकारी विवरण याद आ गया, अन्यथा वह अपनी वीभत्स अवस्था की बड़ी अस्पष्ट सी अनुभूति किया करती थी और उसकी वास्तविक गुरुता का बोध करने से भरसक बचे रहने की चेष्टा करती थी।

आज पहली बार उसके मानसिक नेत्रों के सामने वे रोमाञ्च-कारिणी रात्रियाँ अपनी सम्पूर्ण वीभत्सता के साथ नृत्य कर उठीं—और उनमें से भी विशेष रूप से वह कार्निवल वाली रात, जब वह एक विद्यार्थी की प्रतीक्षा कर रही थी, जिसने उसे खरीद लेने का वचन दिया था। उसे स्मरण आया कि किस प्रकार वह—अर्द्ध-नग्न शराब से भीगी रेशमी पोशाक पहने और अपने अस्तव्यस्त बालों में लाल फीता लगाए, हारी-थकी, मदोन्मत्त अपने मुलाक़ा-तियों को विदा करके—सुबह के दो बजे के समय नृत्य से कुछ देर के लिए अवकाश पाकर पियानो के आगे लाल चेहरे वाली अस्थिचर्मावशिष्ट पियानो वाली के पास—जो सारङ्गी के साथ गत मिला रही थी—आ बैठी थी और उससे अपने भाग्य का रोना रोने लगी थी; और किस प्रकार इस पियानो वाली ने

भी कहा था कि वह स्वयं भी अपनी अवस्था से ऊब गई है और उसे बदलना चाहती है, और किस प्रकार इसी अवसर पर उनके पास वर्था आ पहुँची थी और उन तीनों ने अपने जीवन का रहन-सहन बदल डालने का सङ्कल्प किया था। उन्होंने समझा था कि रात समाप्त हो गई, और वे सोने को जाने की तैयारी कर रही थीं, पर किस प्रकार इसी समय बाहरी कमरे में मदोन्मत्त कण्ठ-स्वरों का मिश्रित कोलाहल सुनाई पड़ा था। सारङ्गी वाली ने तान निकाली और पियानो वाली ने एक अत्यन्त आमोदपूर्ण रूसी गान की गत मिलाई। एक नन्हा सा आदमी, पसीने से तर, और शराब की दुर्गन्ध फैलाता हुआ, सफ़ेद टाई और पूछदार कोट पहने—जिसे उसने पहले फेरे के बाद उतार कर फेंक दिया—खाँसता, खखारता उसके पास आया और उससे लिपट गया। एक दाढ़ी वाले मोटे से आदमी ने—जो उस नन्हें से आदमी की भाँति ही ड्रेस कोट पहने हुए था (वे सीधे बाल-नृत्य से चले आ रहे थे) आकर वर्था को दबोच लिया, और दोनों ने बहुत देर तक फेरे लगाए, नाच-रङ्ग किया, शोर-गुल मचाया, शराब पी और .....। और यह सिलसिला इसी प्रकार एक वर्ष तक जारी रहा, फिर दूसरे वर्ष भी यही, और तीसरे वर्ष भी यही। वह इसमें परिवर्त्तन कर ही किस प्रकार सकती थी? इन सबका मूल कारण था—निखल्यूडोव!

और सहसा उसके प्रति उसके हृदय की सारी तिक्तता फिर उद्दीप्त हो उठी, वह उसकी भर्त्सना करना चाहती थी, उसे कटु-वचन कहना चाहती थी। उसे परिताप होने लगा कि उसने उससे

आज फिर यह बात दुहराने का अवसर हाथ से निकाल दिया कि वह उसे अच्छी तरह जानती है, और वह उसके आगे कभी आत्म-समर्पण न करेगी—जिस प्रकार उसने एक बार उसका भौतिक उपयोग किया था, उसी प्रकार अब वह उसे अपना आध्यात्मिक उपयोग न करने देगी। वह अपने प्रति उत्पन्न होती हुई करुणा और उसके विरुद्ध उद्दीप्त होती हुई अर्थहीन भर्त्सना को दबाने के लिए शराब की कामना करने लगी। यदि वह जेल में होती तो अपना वचन भङ्ग कर देती; पर यहाँ मेडिकल असिस्टएट से याचना किए बिना किसी प्रकार शराब मिल ही न सकती थी। यद्यपि मेडिकल असिस्टेएट की उस पर आँख थी, पर पुरुषों के साथ अन्तरङ्ग सम्बन्ध स्थापित करने से उसे अब घृणा उत्पन्न हो गई थी। वह बरामदे में कुछ देर पृथ्वी पर बैठ कर कमरे में वापस आ गई और अपनी साथिन के शब्दों की ओर बिना कुछ ध्यान दिए बहुत देर तक अपने ध्वस्त जीवन पर बिसूर-बिसूर कर रोती रही।
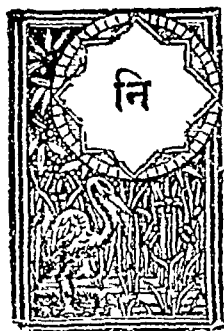
खल्यूडोव को पीटर्सबर्ग में चार काम करने थे—सीनेट में मसलोवा की अपील; अपील-कमेटी में थियोडेसिया बीरुकोवा का मामला—और वीरा दुखोवा के दो अनुरोध—जेल से उसकी सहेली शुस्टोवा को मुक्त कराने की चेष्टा करना और माता को पुत्र से मिलने की अनुमति दिलाने का प्रयत्न करना। उसने इन दोनों अनुरोधों को—जिनके सम्बन्ध में दुखोवा ने उसके पास पत्र भी भेजा था—एक ही काम समझ कर एक स्थान पर नोट कर लिया था।

चौथा मामला जिसकी वह पैरवी करना चाहता था, उन सम्प्रदायवादियों का था जिन्हे केवल इस कारण अपने बाल-बच्चों से अलग करके काकेशस में निर्वासित कर दिया गया था कि उन्होंने पवित्र धर्म-पुस्तक पर वादविवाद किया था। उसने इस मामले का निबटारा करने के लिए भरसक प्रयत्न करने का जो वचन दिया था वह उतना उनके उपकार के लिए नहीं, जितना स्वयं अपने उपकार के लिए था।

जिस समय वह मैसलेनीकोव के यहाँ अन्तिम बार गया था और जब से वह देहात से वापस आया था तब से उसके हृदय में (यद्यपि उसने निर्णयात्मक शब्दों में इस विषय पर अभी कुछ निश्चय न किया था) उस सोसाइटी के प्रति अदम्य क्रोध भर गया था, जिसमें वह अब तक रहता आया था, जो अत्यन्त अल्प-संख्यक व्यक्तियों के आमोद-प्रमोद को स्थायी रखने के लिए असंख्य मनुष्यों के कष्टों और पीड़ाओं को इस कौशल से छिपाए रखती है कि उसके वे अल्पसंख्यक व्यक्ति उन असंख्य मनुष्यों के कष्टों और पीड़ाओं, और अपनी निर्ममताओं और दुर्बलताओं को न देखते हैं, न देख सकते हैं। अब इस सोसाइटी में निखल्यूदोव आत्म-भर्त्सना और विपण्णता की अनुभूति किए बिना न रह सकता था। और इधर उसके नाते-रिश्ते, इष्ट-मित्र, और अपने निजी स्वभाव के बन्धन उसे बराबर इसी सोसाइटी की ओर खींचे रखते थे। इसके अलावा अब उसके जीवन का जो एकमात्र लक्ष्य हो गया था—अर्थात् मसलोवा और अन्य पीड़ितों की सहायता करना—उसकी सिद्धि के लिए इस सोसाइटी से सम्बन्ध रखने वाले व्यक्तियों से—ऐसे-ऐसे व्यक्तियों से, जिन्हें आदर की दृष्टि से देखना तो एक ओर, देखने मात्र से उसके हृदय में क्रोध और घृणा के भाव उदीस हो उठते थे—सहायता की याचना करना उसके लिए अनिवार्य हो गया था।

जब वह पीटर्सबर्ग आया और अपनी मौसी काउण्टेस चार-स्काया (एक भूतपूर्व मन्त्री की पत्नी) के पास आकर ठहरा तो उसने अपने आपको एक बार फिर उस कुलीन वर्ग में पाया, जिससे

उसका जी इतना ऊब चुका था। उसके लिए यह बड़ा क्षोभकारी सिद्ध हुआ, पर उससे निस्तार पाने का कोई उपाय ही न था। यदि वह किसी होटल में ठहरता तो उसकी मौसी नाराज़ हो जाती, और इसके अलावा उसका मेल-जोल पीटर्सबर्ग के अत्यन्त प्रभावशाली व्यक्तियों के साथ था और यह मेल-जोल निख़ल्यूडोव की लक्ष्य-सिद्धि में अत्यन्त उपयोगी था।

उसके आते ही काउण्टेस कैथेरीन इवानोला चारस्काया ने उसे कॉफ़ी देते हुए कहा—यह सब मैं क्या सुन रही हूँ? क्या हावर्ड बनने का शौक चर्राया है? तूने तो अपराधियों की सहायता करने, जेलों में चक्कर लगाने और उनके मामले का निबटारा कराने का बीड़ा उठा लिया है।

"नहीं तो, ज़रा भी नहीं।"

"नहीं तो क्या? वैसे यह सब करना बड़ी अच्छी बात है, पर इसके साथ ही एक प्रेम-लीला भी जुड़ी हुई है। मुझे सुना तो, क्या लीला है?"

निख़ल्यूडोव ने उसे अपने और मसलोवा के पारस्परिक सम्बन्ध की सारी सच्ची-सच्ची बातें सुना दीं।

"हाँ, हाँ, मुझे याद है, तेरी निरीह माँ ने यह कहानी मुझे सुनाई थी। जब तू उन बुढ़ियों के घर ठहरा हुआ था, यह तभी की है। मुझे तो विश्वास था कि वे अपनी पोषित कन्या के साथ तेरा विवाह करना चाहती थीं (काउण्टेस कैथेरीन इवानोला निख़ल्यूडोव की बुआओं को हमेशा से तिरस्कार की दृष्टि से देखती आई थीं), तो यह वही है। अब भी सलोनी है?

हमेशा से चला आया है, और सब मेरी बात समझ लेंगे, बस वही ऐसे हैं जो न समझ पाएंगे।"

उसी समय एक अर्दली चाँदी की तश्तरी में पत्र रख कर आया।

"और लो, ऐलाइन का पत्र भी आ पहुँचा। अब तुझे कीज़वेटर की बातचीत भी सुनने को मिलेगी।"

"कीज़वेटर कौन?"

"कीज़वेटर कौन? आज सन्ध्या को कहीं मत जा और तुझे पता लग जायगा कि वह कौन है। वह इस ढङ्ग से बोलता है कि पुराने से पुराना पापी भी अपने घुटनों के बल गिर कर रोने और पश्चात्ताप करने लगता है।"

वैसे चाहे यह बात कितनी ही विचित्र और उनके रहन-सहन के ढङ्ग की दृष्टि से कितनी ही असामञ्जस्य दिखाई देती हो, पर काउण्टेस कैथेरीन इवानोना उस शिक्षण की कट्टर अनुयायिनी थीं जिसके अनुरूप ईसाई-धर्म का मूल तत्व उद्धार-सम्बन्धी आस्था में समझा जाता है। वह ऐसी मीटिङ्गों में सम्मिलित होतीं जहाँ उस समय फैशन में आई हुई यह धार्मिक शिक्षा दी जाती और वह धर्मभीरुओं का अपने घर में स्वागत करतीं। यद्यपि इस प्रकार का धार्मिक शिक्षण दुनिया भर के धार्मिक संस्कारों, मूर्तियों और धार्मिक सम्मेलनों का निरसन करता था, तथापि कैथेरीन इवानोना के सारे कमरों में और उनके शयनागार में पलंग के सिरहाने तक, मूर्तियाँ लटकी रहती थीं, और वह चर्च द्वारा प्रचारित सारे धर्म-संस्कारों को, बिना किसी प्रकार का परस्पर विरोध देखे, मानती थीं।

काउण्टेस ने कहा—जो कहीं तेरी उसने उसका उपदेश सुन लिया तो वह बात की बात में बदल जायगी। आज घर से कहीं मत जा; उसका उपदेश सुन। बड़ा आश्चर्यजनक आदमी है।

"मौसी, ऐसी बातों में मेरा जी नहीं लगता।"

"जी क्यों न लगेगा? ज़रूर लगेगा, आज घर ही रहना। अब जा। हाँ, बता और मुझे क्या करने को कहता है। अपनी झोली खोल कर रख दो।"

"दूसरा काम है दुर्ग का।"

"दुर्ग का? मैं तुझे बैरन क्रीग्समथ के नाम एक पत्र लिखे देती हूँ। बड़ा भला आदमी है। पर तू तो उसे जानता होगा, वह तेरे बाप का कॉमरेड रहा है। वह अध्यात्म-विद्या में बड़ी रुचि दिखाता है। पर इससे हमारा कोई सरोकार नहीं; वह भला आदमी है। क्यों, वहाँ क्या काम है?"

"मैं पुत्र से माता को भेंट करने देने की अनुमति प्राप्त करना चाहता हूँ, पर मुझे बताया गया है कि यह क्रीग्समथ के हाथ में नहीं है, चैरव्यान्स्की के हाथ में है।"

"मुझे चैरव्यान्स्की तो नहीं भाता, पर वह मेरियट का पति है, हम उसी से कहलवा देंगे। वह मेरी ख़ातिर यह काम करेगी। बड़ी अच्छी सी लौंडिया है।"

"मुझे एक ऐसी स्त्री के लिए भी प्रार्थना-पत्र देना है, जिसे दुर्ग में किसी अज्ञात से अपराध में कैद कर दिया गया है।"

"अजी, वह सब कुछ जानती-बूझती होगी। ये छोटे बालों

वाली छोकरियाँ आजकल जो न करें, थोड़ा है ; सब जानती हैं, और उनका यही इलाज है।"

"यह तो मैं नहीं जानता कि उनका यही इलाज है या और कुछ। पर इन सबको कष्ट बहुत सहने पड़ते हैं। मौसी, तुम तो ईसाई हो और धर्म-पुस्तक में आस्था रखती हो और इतने पर भी तुम इतनी ममताहीन हो।"

"धर्म से इन बातों का कोई सम्बन्ध नहीं है। धर्म, धर्म है, और जो बातें कुत्सित हैं वे हमेशा कुत्सित रहेंगी। यदि मैं ढोंग रचने लगूँ कि मैं निहिलिस्टों को—और विशेषकर इन छोटे-छोटे बालों वाली निहिलिस्टों को—प्रेम की दृष्टि से देखती हूँ तो यह और भी बुरा होगा, क्योंकि मैं उनकी सूरत तक की रवादार नहीं।"

"क्यों, उनकी सूरत की रवादार क्यों नहीं ?"

"पहली मार्च* के बाद भी तू मुझसे ऐसी बात पूछता है ?"

"वे सभी तो उस पहली मार्च वाले मामले में शामिल न थीं।"

"फिर भी, उन्हें ऐसे कामों में टाँग अड़ाने की ही क्या पड़ी है, जिनसे उनका कोई सरोकार नहीं। स्त्री जाति का यह काम नहीं है।"

"पर तुम मेरियट का ऐसे कामों में भाग लेना बुरा नहीं समझतीं ?"

* १ मार्च १८८१ को सम्राट एलेक्जेण्डर द्वितीय की हत्या की गई थी।

"मेरियट ? मेरियट, मेरियट है, और ये तो बला हैं। ये सबको शिक्षा देना चाहती हैं।"

"शिक्षा नहीं देना चाहतीं, जनता की सहायता करना चाहती हैं।"

"उनके बिना भी सब अच्छी तरह जानते हैं कि किसकी सहायता करनी चाहिए और किसकी नहीं ?"

"पर किसानों के पास कुछ नहीं है। मैं अभी-अभी गाँव से वापस आ रहा हूँ। क्या यह ज़रूरी है कि किसान चोटी से एड़ी तक पसीना बहाने पर भी पेट भर कर भोजन न पा सकें और हम सुख और चैन के गुलछर्रे उड़ाएँ ?"—निखल्यूडोव ने कहा। वह अपनी मौसी के मृदुल स्वभाव के द्वारा प्रेरित होकर अन्त में अपने मन की बात प्रकट कर ही बैठा।

"तो तू क्या चाहता है ? यही कि मैं काम करती रहूँ और खाऊँ-पिऊँ कुछ नहीं ?"

निखल्यूडोव ने अनायास भाव से मुस्कराते हुए कहा—नहीं, मैं यह नहीं चाहता कि तुम खाओ-पियो कुछ नहीं, मैं केवल इतना ही चाहता हूँ कि हम सब काम करें और सब खाएँ-पिएँ।

"बेटे, तू तो बुरी ठोकर खायगा।"

"वह कैसे ?"

इसी समय काउण्टेस के पति—जनरल और भूलपूर्व मन्त्री; लम्बे कद और चौड़े कन्धे के आदमी—कमरे में आ गए।

"अहा ! डिमिट्री ! कहो, अच्छे हो न ?"—और उन्होंने अपना ताज़ा साफ़ किया गाल चुम्बन के लिए निखल्यूडोव के आगे कर

दिया। इसके बाद उन्होंने चुपचाप अपनी पत्नी के ललाट का चुम्बन किया—"तुम कब आए?"

काउण्टेस ने अपने पति की ओर फिरते हुए कहा—"इसकी बातें भी सुनीं? नया शगूफा लेकर आया है! यह चाहता है कि मैं कपड़े धोऊँ और आलुओं पर गुजारा करूँ। पूरा बावला है, पर तो भी जो कुछ यह कहे, कर दो। पूरा पगला लौंडा है।" उन्होंने कहा—"और हाँ, तुमने कुछ और भी सुना? कमेन्स्की की माँ का तो इतना बुरा हाल है कि बावली बनी जा रही है, उसके प्राणों की चिन्ता है। उसके घर हो आना।" उन्होंने अपने पति से कहा।

उनके पति ने कहा—हाँ, बड़ी शोचनीय बात है।

"अच्छा, अब जाकर इससे बातें कर लो। मुझे भी कुछ पत्र लिखने हैं।"

निखल्यूडोव ने ड्राइङ्ग-रूम के पास वाले कमरे में कठिनता से पैर रक्खा होगा कि उन्होंने पीछे से आवाज दी—तो मेरियट को लिख दूँ?

"हाँ, मौसी।"

"तू अपनी उन छोटे बालों वालियों के सम्बन्ध में उससे जो कुछ कहना चाहता है, उसका स्थान मैं अपने पत्र में रिक्त छोड़ दूँगी, और वह अपने पति को आदेश देगी, और वह सब कुछ करेगा। यह मत समझना कि मैं निर्दय हूँ; बल्कि वया, ये तेरी सारी रक्षित बलाएँ मुझे इतनी बुरी लगती हैं कि मैं क्या बताऊँ; पर मैं उनका बुरा नहीं मानती, वे जैसा करेंगी, भुगतेंगी। अच्छा अब जा, और सन्ध्या को यहाँ से कहीं मत जाना। कीजवेटर के उपदेश सुनने

को मिलेंगे प्रार्थना होगी। और यदि तू जान-बूझ कर न बचा रहा तो मै तेरा बहुत कुछ मङ्गल करूँगी। मै जानती हूँ कि तेरी निरीह माँ और तेरे कुटुम्ब के और सब इन बातों में बड़े पीछे पड़े रहते थे। अच्छा जा, आशीर्वाद।"

काउण्ट इवान मिखायलिच कभी मन्त्री रह चुके थे और अपने सिद्धान्तों के बड़े कट्टर थे। उनका सिद्धान्त इस धारणा में सन्नि-हित था कि ठीक जिस प्रकार किसी पक्षी के लिए कीड़ों का आहार करना, पङ्खों से ढके रहना और वायु में उड़ना प्राकृतिक है, उसी प्रकार उनके लिए भी बड़े-बड़े वेतनों पर रक्खे हुए बाव-र्चियों द्वारा तैयार किया गया अत्यन्त स्वादिष्ट और मूल्यवान भोजन करना, और अत्यन्त मूल्यवान और सुख-रूप वस्त्र धारण करना, उत्तम से उत्तम और शीघ्रगामी से शीघ्रगामी घोड़ों पर सवारी करना प्राकृतिक है, और इसलिए ये सारी चीज़ें उन्हें बिलकुल तैयार मिलनी चाहिए। इसके अतिरिक्त काउण्ट इवान मिखायलिच की यह भी धारणा थी कि वह हर तरह के उपायों से राज-कोष से जितना अधिक रुपया खींच सकें, जितने अधिक पदक और उपाधि-चिन्ह प्राप्त कर सकें (जिसमें हीरे वाला सर्वोच्च उपाधि-चिन्ह भी सम्मिलित था) और उच्च पदस्थ स्त्री-पुरुषों से

जितनी अधिक बातचीत कर सकें, उनके लिए यह सब उतना ही अधिक कल्याणकारी है।

अपने इन सिद्धान्तों की समता में काउण्ट इवान मिखायलिच को और सारी बातें तुच्छ और नगण्य प्रतीत होतीं थीं। और बाक़ी सारी चीज़ें जैसी थीं वैसी ही रहतीं या उसके विपरीत होतीं—स्वयं काउण्ट को उनसे कुछ लेना-देना न था। वह अपने इन सिद्धान्तो को पिछले चालीस वर्ष से अमल में लाते आ रहे थे, और इस दीर्घ काल के अन्त में उन्हें राजकीय मन्त्री बनने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ था।

वह इस उच्च पद पर जिन गुणों के द्वारा पहुँच सके उनमें से एक प्रमुख गुण यह था कि वह सरकारी काग़ज़-पत्रों और विधानों का आशय समझ सकते थे, और—चाहे बेढङ्ग ही सही—सरकारी कागज तैयार कर सकते थे, और शब्दों का उच्चारण शुद्धतापूर्वक कर सकते थे। दूसरा प्रमुख गुण यह था कि उनकी सूरत-शक्ल, चेहरा-मुहरा, आकार-प्रकार, बड़े रोब-दाब का था, जिसके द्वारा वह आवश्यकता पडने पर न केवल नितान्त गर्वीले ही दीख पड़ने मे समर्थ हो जाते थे, बल्कि अगम्य और वैभवशाली दीख पड़ने में भी; और आवश्यकता पड़ने पर वह अत्यन्त विनीत और दास्य-भाव धारण करने में भी समर्थ थे। तीसरी प्रमुख बात यह थी कि उनमें व्यक्तिगत या राज्य-शासन सम्बन्धी किसी निश्चित नैतिक या साधारण सिद्धान्त का अभाव था और इससे उनके लिए किसी भी व्यक्ति से किसी भी बात पर—आवश्यकतानुसार—सहमत या असहमत होना सम्भव हो जाता था। इस ढङ्ग का आचरण

करते समय उनका एकमात्र ध्यान इस बात पर रहता था कि वह अपना कुलीन, संस्कृत रङ्ग-ढङ्ग अक्षुण्ण बनाए रक्खे और आवश्यकता से अधिक असङ्गति का परिचय न दें। उनके इस प्रकार के आचरण नैतिक थे अथवा अन्यथा, या उनसे सारे रूसी साम्राज्य या सारे विश्व के अन्यतम मङ्गल की सम्भावना थी या घोरतम अमङ्गल की, इससे उनको कोई प्रयोजन न था।

जब उन्हें मन्त्रिपद मिला तो केवल उनके आश्रितवर्ग को ही नहीं (और इस वर्ग के सदस्यों की संख्या काफ़ी बड़ी थी), उनके साथ किसी भी प्रकार का सम्बन्ध रखने वाले व्यक्तियों को और अपरिचितों तक को—और ख़ुद उन्हें अपने आपको—यह विश्वास हो गया कि वह बड़े पटु राजनीतिज्ञ हैं। पर जब कुछ समय बीत गया और उन्होंने कोई मार्के का काम करके न दिखाया, और अपनी योग्यता का कोई परिचय न दिया तथा जब जीवन के सङ्घर्ष के सर्वव्यापी सिद्धान्त के अनुरूप उन्हीं के जैसे अन्य सिद्धान्तविहीन, रोबदार चेहरे वाले अधिकारियों ने सरकारी काग़ज़-पत्र और क़ानूनी विधान पढ़ना-लिखना और समझना सीख कर उनके स्थान पर अधिकार कर लिया, तो सबको स्पष्ट-रूपेण भासित हो गया कि पटु और चतुर होना तो दरकिनार, काउण्ट वास्तव में उथले, अर्द्ध-शिक्षित और आत्म-आश्वासनपूर्ण व्यक्ति-मात्र हैं, जिनकी समझ अनुदार दल के पत्रों के अग्र-लेखों की तह तक भी कठिनता से पहुँच पाती है। यह पूर्णतया स्पष्ट हो गया कि उनमें उन दूसरे अर्द्ध-शिक्षित और आत्म-आश्वासनपूर्ण अधिकारियों की अपेक्षा कोई विलक्षण योग्यता नहीं है, जिन्होंने उन्हें कुहनियों

दे-देकर निकाल दिया है; और यह बात वह ख़ुद भी समझ गए। पर इससे उनके इस दृढ़ विश्वास में कोई अन्तर न आया कि उन्हें हर साल राजकोष से ढेर की ढेर रक़म मिलनी चाहिए और उनके नए कपड़ों के लिए भाँति-भाँति के उपाधि-चिन्ह। उनकी यह धारणा इतनी अचल थी कि किसी को उन्हें इन चीज़ों से वञ्चित करने का साहस न होता था, और वह प्रति वर्ष कभी पेन्शन के रूप में, कभी असंख्य कमेटियों और कौन्सिलों में से किसी के चेयरमैन के रूप में, और कभी सरकारी संस्था के सदस्य बनने के एवज़ में कई हज़ार रूबल पा जाते थे। साथ ही उनका अपने कोटों और पाजामों में भाँति-भाँति की डोरियाँ सीने, और ड्रेस कोटों पर लगाने के लिए भाँति-भाँति के रिबन और स्टार प्राप्त करते रहने का अधिकार अक्षुण्ण रहता—और इस अधिकार की रक्षा का वह बहुत मूल्य समझते थे। फलत इन काउण्ट इवान मिखायलिच का हर जगह प्रवेश था।

काउण्ट इवान मिखायलिच ने निखल्यूडोव की बात ध्यानपूर्वक सुनी, ठीक जिस प्रकार वह अपने विभाग के स्थायी सेक्रेटरी की रिपोर्ट सुनने के अभ्यस्त थे, और इसके बाद उन्होंने कहा कि वह उसे दो पत्र देंगे और उनमें से एक पत्र अपील विभाग के सीनेटर वूल्फ़ के नाम होगा।

उन्होंने कहा—वैसे उसके बारे मे बहुत सारी बातें सुनने में आती हैं; पर कुछ भी हो, वह सज्जन है। वह मेरा आभारी है, और जो कुछ कर सकता है, करेगा।

दूसरा पत्र उन्होंने अपील कमेटी के एक प्रभावशाली सदस्य

के नाम लिखा। थियोडेसिया की कहानी उन्हें बड़ी रोचक प्रतीत हुई, और जब निख्ल्यूडोव ने कहा कि उसका विचार सम्राज्ञी को पत्र लिखने का हो रहा है, तो उन्होंने कहा कि कहानी वास्तव में बड़ी मर्मस्पर्शी है। और यदि अवसर उपस्थित हुआ तो वह सम्राज्ञी से अवश्य कहेंगे, पर वह वचन न दे सके। उन्होंने कहा कि वैसे सारा काम बाक़ायदा होना चाहिए, अपील उसी प्रकार होनी चाहिए, विचार भी हस्ब मामूल होना चाहिए। हाँ, यदि आगामी राजदर्शन बृहस्पति के दिन हुआ तो शायद वह सम्राज्ञी को यह कहानी भी सुना देंगे। उनसे ये दो पत्र और अपनी मौसी से मेरियट के नाम तीसरा पत्र मिलते ही निख्ल्यूडोव विभिन्न स्थानों को रवाना हो गया।

सबसे पहले वह मेरियट से मिलने गया। उसने मेरियट को उस समय देखा था, जब उसकी अवस्था बीस वर्ष की भी न हुई थी। वह एक कुलीन, पर निर्धन परिवार की कन्या थी और उसने एक ऐसे व्यक्ति से विवाह किया था जिसकी चर्चा कुछ प्रशंसा के साथ न की जाती थी, पर जो वास्तव में धीरे-धीरे उन्नति कर रहा था; और निख्ल्यूडोव को स्वभावतया ही एक ऐसे आदमी से कृपा-भिक्षा माँगने में कष्ट हुआ, जिसका वह तनिक भी सम्मान न करता था। ऐसे अवसरों पर उसे सदैव आन्तरिक असन्तोष और विग्रह की अनुभूति हुआ करती थी और वह इस द्विविधा में पड़ जाया करता था कि उसे कृपा-भिक्षा माँगनी चाहिए या नहीं, और सदैव माँगने के हक़ में फ़ैसला दिया करता था। वह इस वर्ग में पहुँच कर, जिसे वह अब अपने आपसे बिलकुल भिन्न वस्तु समझता था

(यद्यपि स्वयं उस वर्ग के सदस्य उसे अभी तक अपना परिवार-बन्धु समझते थे), वह अपनी मिथ्या अवस्था की अनुभूति तो करता था, पर अब एक बार इस पुरानी अभ्यस्त परिधि में आ पड़ने पर वह धीरे-धीरे बोध करता जाता था कि उसके पाँवों के नीचे की मिट्टी निकली जा रही है। और वह इस वर्ग के विवेकहीन, नीतिभ्रष्ट वातावरण के आगे धीरे-धीरे आत्म-समर्पण करता जा रहा है। उसने इसकी अनुभूति अपनी मौसी के यहाँ भी की थी और अत्यन्त गम्भीर प्रसङ्गों की बात चलाते-चलाते व्यंग्यपूर्ण लहजा अख्तियार कर लिया था।

वह पीटर्सबर्ग बहुत दिनों से न आया था, और अब उसने उस पर अपना स्वाभाविक, भौतिक रूप से सजीवकारी और नैतिक रूप से निर्जीवकारी प्रभाव डाला। सारी चीज़ें इतनी स्वच्छ, सुखदायक और सुव्यवस्थित थीं और नैतिक मामलों में आदमी इतनी ढिलाई से काम लेते थे कि जीवन धारण करना अत्यन्त सहज सा हो गया था।

एक सुन्दर-स्वच्छ गाड़ी उसे सवार करा कर, सुन्दर-स्वच्छ पुलिसमैन, सुन्दर-स्वच्छ छिड़की हुई सड़कों और सुन्दर-स्वच्छ भवनों के पास से ले गई और अन्त में उसने उसे उस स्थान पर ले जाकर उतार दिया जहाँ मेरियट रहती थी।

प्रवेश-द्वार के सामने अङ्गरेज़ी घोड़ों की जोड़ी अङ्गरेज़ी ज़ीन से जुती खड़ी थी और उस पर अङ्गरेज़ी चेहरे-मुहरे का कोचवान हाथ में चाबुक लिए सगर्व बैठा हुआ था।

सुन्दर-स्वच्छ सी वर्दी वाले द्वार-रक्षक ने हॉल का द्वार खोला

और हॉल में उससे भी अधिक साफ़-सुथरी, सुनहरी डोरी वाली वर्दी पहने और अपने गलमुच्छे काढ़े अर्दली खड़ा था, और बिल्कुल नई वर्दी पहने एक प्यादा।

"जनरल आज न मिलेंगे। और हर ऐक्सीलेन्सी भी न मिल सकेंगी। वह अभी कहीं बाहर जा रही हैं।"

निखल्यूडोव ने अपनी जेब से केथेरीन इवानोला का पत्र निकाला और मेज़ के पास जाकर विज़ीटर्स बुक में लिखना आरम्भ किया कि उसे खेद है कि वह उनमें से किसी से भेंट न कर सका। उसके बाद अर्दली सीढ़ियों के पास पहुँचा। द्वार-रक्षक ने बाहर जाकर कोचवान को आवाज़ दी, और प्यादा क़ायदे के साथ हाथ नीचे किए तन कर खड़ा हो गया और अपने नेत्रों से सीढ़ियों पर से जल्दी-जल्दी क़दम रख कर उतरती हुई एक दुबली-पतली, नन्हीं सी महिला की गति का—जो उसकी शान-शौकत को देखते हुए नितान्त अनुपयुक्त दिखाई देती थी—अनुसरण करता रहा।

मेरियट लम्बे-लम्बे परों वाला बड़ा सा टोप, काली पोशाक, और नए काले दस्ताने पहने हुए थी। उसका चेहरा नक़ाब से ढका हुआ था। जब उसने निखल्यूडोव को देखा तो अपने अत्यन्त मनोहारी और प्रोज्ज्वल चेहरे पर से नक़ाब अलग कर लिया और उसकी ओर प्रश्नात्मक दृष्टि से देखा।

अन्त में वह मृदुल, मधुर स्वर में बोली—अहा, प्रिन्स डिमिट्री इवानिच निखल्यूडोव! मैं आपको पहचान ही न सकी थी!

"अच्छा! आप तो मेरा नाम तक जानती हैं!"

उसने फ्रेन्च में कहा—"और नहीं तो क्या? कभी मैं और मेरी

बहिन तो आप पर मुग्ध तक हो गई थी। पर आप तो बिलकुल ही बदल गए . . । दुःख इतना ही है कि मैं जा रही हूँ, चलिए, ऊपर चलिए।"—इसके बाद वह द्विविधा भाव से रुक गई और दीवार पर लगी घडी की ओर देखने लगी। "नहीं ऊपर जाना न हो सकेगा। मैं मृत-प्रार्थना में सम्मिलित होने कमेन्स्की के यहाँ जा रही हूँ। बेचारी माँ तो शोक के मारे पागल हो गई है।"

"कमेन्स्की कौन ?"

"आपने नहीं सुना ? बेटा द्वन्द्व-युद्ध मे मारा गया। पोसन से लड़ बैठा था। इकलौता पुत्र था। माँ के शोक की कोई सीमा नहीं है।"

"हाँ, मैंने भी योंही उड़ती सी ख़बर सुनी है।"

"अच्छा, अब मुझे चल देना चाहिए, और आपको आज रात को या कल सुबह को आना चाहिए।"—उसने अपने हल्के-हल्के पगों से दरवाज़े की ओर बढ़ते हुए कहा।

निखल्यूडोव ने उसके पीछे-पीछे जाते हुए कहा—"मैं आज रात को न आ सकूँगा, पर मुझे आपसे कुछ अनुरोध करना है"—उसने सीढियों के पास लगते हुए घोड़ों की जोडी की ओर देखते हुए कहा।

"क्या है ?"

निखल्यूडोव ने उसे बड़े से पारिवारिक चिन्ह वाला लिफ़ाफ़ा पकड़ाते हुए कहा—मेरी मौसी का पत्र है। आपको पढ़ कर सब पता लग जायगा।

"मैं जानती हूँ कि काउण्टेस केथेरीन इवानोवा समझती हैं कि काम-काज मे अपने पति के ऊपर मेरा भी कुछ प्रभाव है; पर यह उनकी भूल है। मैं कुछ नहीं कर सकती, और हस्तक्षेप करना भी नहीं चाहती। पर काउण्टेस के और आपके लिए मैं अपने इस नियम को भङ्ग भी कर दूंगी। मामला क्या है?"—उसने अपने काले दस्तानों से मढ़े हाथ से अपनी पोशाक में व्यर्थ ही जेब को तलाश करते हुए कहा।

"दुर्ग में एक लड़की कैद है, बीमार है और निर्दोष है।"

"उसका नाम क्या है?"

"शुस्टीवा—लीडिया शुस्टीवा। पत्र में लिखा हुआ है।"

"अच्छी बात है, जो कुछ मुझसे हो सकेगा, करूंगी"—उसने कहा और इसके बाद वह अपनी छोटी, नर्म-नर्म, खुली हुई गाड़ी में कूद गई और अपना नन्हा सा छाता खोल कर बैठ गई। अर्दली बॉक्स पर बैठ गया और उसने कोचवान को गाड़ी रवाना करने का इशारा किया। गाड़ी चल दी, पर इसी समय मेरियट ने अपने छाते से कोचवान को छुआ और वे सुन्दर सी घोड़ियाँ अपनी सुन्दर गर्दनें मोड़े एक टाप से दूसरे टाप पर भार डालती हुई खड़ी हो गई।

"पर आप आइए अवश्य; किन्तु किसी स्वार्थ-बुद्धि से प्रेरित होकर नहीं।"—और उसने निखल्यूदोव की ओर उस मुस्कराहट के साथ देखा जिसकी शक्ति को वह अच्छी तरह जानती थी; और इसके बाद—मानो अभिनय समाप्त होने, पर पर्दा डाला जा रहा

हो—उसने अपने मुँह पर नक़ाब डाल लिया। "चलो"—और उसने अपने छाते से कोचवान को फिर छुआ।

निखल्यूडोव ने अपना टोप उठाया और सुपोषित घोड़ियाँ सजीवता का भाव प्रकट करती रवाना हो गईं।
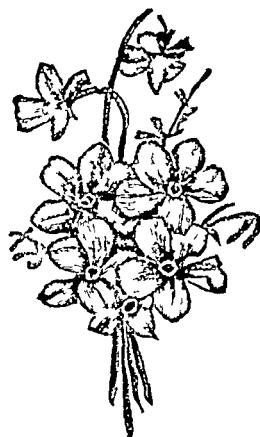
निख्ल्यूडोव ने अपने और मेरियट के मुस्कान-विनिमय का स्मरण किया और अपना सिर हिला कर कहा—अभी तुम्हें इस रहन-सहन से पीठ फेरते देर नहीं हुई कि तुम फिर इसी की ओर खिंच गए। और उसके हृदय में एक बार फिर वही असन्तोष और विग्रह के भाव उद्दीप्त हो उठे, जिनकी अनुभूति वह उस समय अवश्य करता था जब उसे किसी ऐसे आदमी से कृपा-भिक्षा माँगनी पड़ती थी, जिसे वह आदर की दृष्टि से न देखता हो।

उसने क्षण भर विचार किया कि अब उसे कहाँ जाना है, जिससे उसे वापस न लौटना पड़े, और इसके बाद वह सीनेट को रवाना हो गया। उसे ऑफिस में पहुँचाया गया, जहाँ एक सुन्दर सुसज्जित कमरे में बहुत से साफ़-सुथरे अफ़सर एकत्र थे। निख्ल्यूडोव को बताया गया कि मस्लोवा की अपील उनके पास आ गई है और उसी सीनेटर वूल्फ़ के पास विचारार्थ पहुँचा दी गई है, जिसके लिए उसने अपने मौसा से पत्र लिया था।

एक अधिकारी ने निखल्यूडोव से कहा—इस हफ्ते में सीनेट की मीटिङ्ग होगी, पर यदि कोई ख़ास आग्रह न किया गया तो इस मीटिङ्ग में मसलोवा के मामले की पेशी शायद ही हो सके। यदि पेशी हुई तो बुध के दिन होगी।

जब तक मसलोवा की अपील पढ़ी जाती रही, निखल्यूडोव ऑफ़िस में बैठा हुआ प्रतीक्षा करता रहा; और सीनेट-ऑफ़िस में युवक कमेन्स्की के द्वन्द्व युद्ध की बातचीत चलती रही। उसे विशद रूप से मालूम हुआ कि उक्त युवक किस प्रकार मारा गया था। यह पहला अवसर था, जब निखल्यूडोव को इस कहानी का वृत्तान्त पूरी तौर पर मालूम हुआ, जो पीटर्सबर्ग के बच्चे-बच्चे की ज़ुबान पर थी। कहानी इस प्रकार थी। कुछ सैनिक अफ़सर झींगे खा रहे थे और सदैव के अनुसार बेहद शराब पी रहे थे, और उनमे से एक ने एक रेजीमेण्ट के सम्बन्ध में कुछ कुख्याति-जनक बात कह दी, जिस पर कमेन्स्की ने उसे झूठा कहा। दूसरे अफ़सर ने कमेन्स्की को थप्पड़ मारा। दूसरे दिन दोनों का द्वन्द्व युद्ध हुआ। कमेन्स्की के पेट में गोली लगी और वह दो घण्टे के भीतर मर गया। हत्यारा और उसका साथी गिरफ्तार कर लिए गए। पर यह कहा जा रहा था कि यद्यपि उन्हें पहरे-चौकी मे रक्खा गया है, पर दो-एक सप्ताह में उन्हें छोड़ दिया जायगा।

सीनेट से निखल्यूडोव अपील कमेटी के प्रभावशाली सदस्य बैरन वोरोबेव से मिलने गया, जो सरकारी आलीशान इमारत में रहा करता था। द्वार-रक्षक ने कठोर स्वर में कहा कि बैरन मिलने के दिनों के अलावा और किसी दिन नहीं मिला करते,। आज वह

'हिज़ मैजेस्टी के पास गए हैं, और दूसरे दिन भी उन्हें एक रिपोर्ट सुनानी है। निखल्यूडोव ने द्वार-रक्षक के पास अपने मौसा का पत्र छोड़ दिया और सीनेटर वूल्फ़ के पास रवाना हो गया।

वूल्फ़ भोजन कर ही चुका था कि निखल्यूडोव ने प्रवेश किया। वह अभ्यासवश अपनी पाचनशक्ति को सिगार से उत्तेजित करता हुआ कमरे में चहलकदमी कर रहा था। वाडिमिर वैसिलिव वूल्फ़ निश्चय ही रोब-दाब वाला था और अपने इस गुण का बड़ा मूल्य समझता था और दूसरों को इसी ऊँचाई से देखा करता था। वह अपने इस गुण को अत्यन्त ऊँची दृष्टि से न देखता तो क्या करता? उसका उन्नतिपथ ही इस गुण ने खोला था—वही उन्नति-पथ जिसका वह स्वयं आकांक्षी था। अर्थात् उसने विवाह के द्वारा अठारह हज़ार रूबल वार्षिक की आय का स्थायी प्रबन्ध कर लिया था और अपने प्रयत्नों के द्वारा सीनेटर का पद प्राप्त कर लिया था। वह अपने आपको न केवल रोब-दाब वाला ही समझता था, बल्कि सम्मानशील व्यक्ति भी। सम्मान से उसका अभिप्राय था कि वह किसी आदमी से रिश्वत नहीं लेता। पर वह सरकार से तरह-तरह के वेतनों, पुलाउन्सों और राह-ख़र्च के रुपए वसूल करने को सम्मान रहित न समझता था; वह सरकार से भरपेट रकम वसूल करता था और इसके एवज़ में उससे जो कुछ कराया जाता, करने को तैयार रहता था। सैकड़ों-हज़ारों निर्दोष व्यक्तियों का सर्वनाश करना, उन्हें जेल में ठूँसना और उन्हें निर्वासन दण्ड देना (और यह केवल इस कारण कि वे अपने पूर्वजों के धर्म को प्यार करते थे और अपने देशवासियों के साथ सहानुभूति रखते थे) उसकी दृष्टि

में सम्मानहीन होना तो एक ओर, उलटा सम्मानप्रद, पुरुषोचित और देशभक्तिमय था। और जब वह पोलैण्ड का गवर्नर था तो उसने वहाँ यही किया भी। न वह अपनी पत्नी की (जो उस पर प्राण देती थी) और अपनी साली की सम्पत्ति हज़म करना सम्मानहीनता समझता था, इसके विपरीत वह इसे पारिवारिक आर्थिक समस्या का सहज निबटारा करने का सबसे उत्तम ढङ्ग समझता था। उसके परिवार में उसकी साधारण सी स्त्री थी, उसकी साली थी, जिसकी जायदाद बेच-बाच कर उसने अपने हिसाब में लगा ली थी। उसकी एक भीरु, पीली, आज्ञाकारिणी कन्या थी, जो अपने निर्जीव एकान्त जीवन से उकता कर अब अपने उद्धार के लिए धर्म-चर्चा में रत हो गई थी और ऐलाइन और काउण्टेस केथेरीन इवानोवा की मीटिङ्गों में भाग लेने लगी थी। वृफ का पुत्र मौजी लड़का था, जिसने सोलह साल की आयु में दाढ़ी रख ली थी और जो जी खोल कर शराब पीता था और उच्छृङ्खल जीवन व्यतीत करता था (और इस उच्छृङ्खल जीवन का सिल-सिला उस समय तक जारी रहा, जब तक अन्त में पिता ने उसे अध्ययन समाप्त न करने पर घर से निकाल न दिया)। वह निम्नस्थ श्रेणियों में घूमता-फिरता और आए दिन रुपया उधार लेकर अपने पिता की बदनामी करता। उसके पिता ने एक बार उसका दो सौ तीस रूबल का क़र्ज़ चुका दिया, दूसरी बार छः सौ रूबल का कर्ज़ भी चुका दिया, पर साथ ही अपने पुत्र को चेता-वनी दे दी कि वह यह क़र्ज़ अन्तिम बार चुका रहा है, और यदि उसने और कोई क़र्ज़ लिया तो उसे घर से निकाल दिया जायगा

और उससे और उसके परिवार से फिर कुछ सम्बन्ध न रहेगा। पर पुत्र ने अपना सुधार करना तो एक ओर, अबकी बार एक हज़ार का क़र्ज़ लिया और अपने पिता को यह सूचना तक देने का साहस किया कि घर रहना उसके लिए कुछ अधिक सुखदायक नहीं है। इस पर उसने पुत्र को निकाल दिया और कहा कि जहाँ उसका मिज़ाज चाहे अपनी सूरत लेकर वहाँ से चला जाय—अब न वह उसका बेटा है, न वह उसका बाप। उस दिन से वृल्फ़ ऐसा रङ्ग-ढङ्ग दिखाता था कि उसका कोई पुत्र ही नहीं है, और घर में कोई उसका नाम लेने का साहस न करता, और वादिमिर वैसिलिय वृल्फ़ का दृढ़ विश्वास था कि उसके परिवार की व्यवस्था इससे अधिक अच्छे ढङ्ग में नहीं हो सकती।

जब निखल्यूडोव ने कमरे में प्रवेश किया तो वृल्फ़ ने चहल-कदमी करना बन्द कर दिया और उसकी ओर मित्रतापूर्ण, पर साथ ही व्यंग्यनिहित मुस्कराहट के साथ देखा, जिसके द्वारा वह अनायास भाव से प्रदर्शित किया करता था कि वह कितना रोब-दाब वाला है और अधिकांश जन-समुदाय से कितना ऊँचा। उसने निखल्यूडोव के दिए पत्र पर दृष्टि डाली।

उसने कहा—"आप तशरीफ़ रखिए, और यदि मैं आपकी अनुमति से चहलक़दमी करता रहूँ तो क्षमा करिए।"—उसने अपने कोट की जेब में हाथ डाल कर अपनी घड़ी ली, और बड़े नियम के साथ सजी हुई अध्ययनशाला में टहलना फिर शुरू कर दिया।

उसने अपने मुँह से धुआँ उड़ाते हुए और सावधानतापूर्वक मुँह से सिगार निकालते हुए—जिसमें उसकी राख नीचे न गिर पड़े—

कहा—आपसे परिचय प्राप्त करके बड़ी प्रसन्नता हुई। काउण्ट इवान मिखायलिच जो आज्ञा देंगे उसे करने में मुझे बड़ा हर्ष होगा।

निखल्यूडोव ने कहा—मैं यह अनुरोध करना चाहता हूँ कि मामले की पेशी जल्दी ही हो जाय, जिससे यदि क़ैदी को साइबे-रिया जाना हो तो वह जल्दी ही रवाना हो जाय।

"जी हाँ, जी हाँ, निझनी से रवाना होने वाले पहले स्टीमर से। मैं जानता हूँ"—वूल्फ ने कृपाभाव से मुस्कराते हुए पूछा—यह दिखाने के लिए कि वह जो कुछ कहना चाहता है उसे वह पहले से ही जानता है—"क़ैदी का नाम क्या है?"

"मसलोवा।"

वूल्फ़ मेज़ के पास पहुँचा और वहाँ उसने फ़ायल में लगे अन्य कागज़-पत्रों में से एक काग़ज़ को देखते-देखते कहा—हाँ, ठीक। मसलोवा। अच्छी बात है। मैं दूसरो से अनुरोध करूँगा। हम इस मामले को बुध के दिन सुनेंगे।

"तो मैं ऐडवोकेट को तार दे दूँ?"

"ऐडवोकेट को? किस लिए? पर यदि आप चाहते हैं तो क्या हर्ज है?"

निखल्यूडोव ने कहा—अपील के कारण चाहे साधारण से हों, पर मामला देखने पर पता लगेगा कि दण्ड वास्तव में एक भ्रान्ति के कारण दे दिया गया था।

वूल्फ़ ने कठोर भाव से अपने सिगार की ओर देखते हुए कहा—ठीक-ठीक, सम्भव है, ऐसा ही हो, पर सीनेट किसी

मानले पर उस मामले की विशेषता की दृष्टि से विचार नहीं कर सकती। सीनेट केवल विधान की धाराओं के उचित उपयोग और उचित व्याख्या पर विचार करती है।

"पर यह मामला और मामलों जैसा नहीं है।"

"मैं जानता हूँ, मैं जानता हूँ! सारे मामले एक-दूसरे जैसे नहीं होते। हम अपना कर्त्तव्य पालन करेंगे। बस, इतनी सी बात है।"—वुल्फ ने सिगार को इस प्रकार पकड़े हुए कहा। जिससे उसकी राख न गिर पड़े। राख अभी तक लगी हुई थी, पर वह तड़क गई थी और उसके गिरने की आशङ्का थी—"आप पीटर्सबर्ग अक्सर आया करते हैं?" इसके बाद उसने सिगार की राख राखदानी में ले जाकर गिरा दी।

वह बोला—"यह कमेन्स्की वाला मामला भी बुरा हुआ। बड़ा अच्छा होनहार युवक था। इकलौता लड़का. ....और माँ की अवस्था तो विशेष रूप से शोचनीय है"—उसने लगभग वही शब्द दुहराते हुए कहा, जो पीटर्सबर्ग में बच्चा-बच्चा दुहरा रहा था। इसके बाद वुल्फ ने काउन्टेस केथेरीन इवानोवा की कुछ चर्चा की और उनके नवीन धर्म चर्चा विषयक उत्साह का ज़िक्र किया (वुल्फ इस नवीन धार्मिक शिक्षण को न अच्छा समझता था न बुरा, क्योंकि ऐसा शिक्षण उसके जैसे व्यावहारिक आदमी के लिए अनावश्यक था) और इसके बाद उसने घण्टी बजाई और निख्ल्यू-दोव ने झुक कर अभिवादन किया।

वुल्फ ने उसकी ओर अपना हाथ बढ़ा कर कहा—अगर आपको

सुविधाजनक हो तो बुध के दिन भोजन करने आइए, उसी दिन मैं आपको निश्चयात्मक उत्तर दूँगा।

काफ़ी देर हो गई थी और निखल्यूदोव अपनी मौसी के घर वापस आ गया।
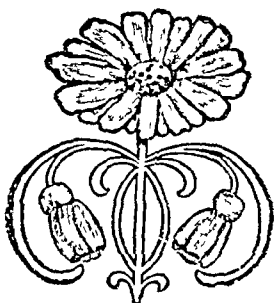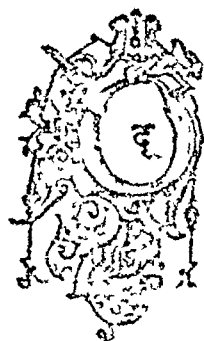
दूसरे दिन उठ कर निख्ल्यूदोव ने अपने कपड़े पहन कर बाहर जाने का विचार किया ही था कि उसके पास मास्को के ऐडवोकेट का कार्ड आ पहुँचा। ऐडवोकेट पीटर्सबर्ग अपने किसी काम से आया था, और साथ ही उसका विचार था कि यदि मस्लोवा के मामले की पेशी जल्दी हो गई तो सीनेट में वह भी उपस्थित रहेगा। निख्ल्यूदोव का तार उसे मार्ग में मिला था। जब उसे मालूम हुआ कि मामला कब पेश होगा, और कौन-कौन सीनेटर मौजूद होंगे, तो वह मुस्कराया।

उसने कहा—तीनों तीन ढङ्ग के सीनेटर हैं। वुल्फ पीटर्सबर्ग का सरकारी अफसर है; स्कोवोरोदनिकोव सैद्धान्तिक क़ानूनदाँ है और 'बे' व्यावहारिक क़ानूनदाँ—और फलत: इन सब में सबसे अधिक सजीव। सब से अधिक आशा इसी से की जा सकती है। अच्छा, और अपील-कमेटी का क्या रहा?

"मैं बैरन वोरोबेव से मिलने जा रहा हूँ, कल उनसे न मिल सका।"

ऐडवोकेट ने निख़ल्यूडोव को इस रूसी नाम की विदेशी उपाधि पर व्यंग्य भाव से विशेष ज़ोर देते देख कर कहा—आपको मालूम है कि यह बैरन बोरोवेव क्यों है ? बात यह है कि सम्राट पॉल ने इसके बाबा को—जो शायद दरबार का अर्दली रहा होगा—इस उपाधि से पुरस्कृत किया था। उसने उन्हें किसी प्रकार प्रसन्न कर लिया होगा, इसलिए उसे उन्होंने बैरन बना दिया। और लीजिए, इस तरह बैरन बोरोवेव बन गया और अब वह ज़मीन पर पैर नहीं रखता। वह बुड्ढा सोलह आने काठ का उल्लू है।

निख़ल्यूडोव ने कहा—तो मैं उससे मिलने जा रहा हूँ।

वे रवाना हो ही रहे थे कि बाहरी कमरे में निख़ल्यूडोव को अर्दली ने एक पत्र दिया, जो फ़्रेञ्च में लिखा था और जिसे मेरियट ने भेजा था। उसमें लिखा था :—

"आपका मन रखने के लिए मैंने अपने सिद्धान्त के विरुद्ध काम किया और आपकी रक्षिता के सम्बन्ध में अपने पति को कह-सुन कर राज़ी कर लिया। अब पता चला है कि इस व्यक्ति को तत्काल ही मुक्त किया जा सकता है। मेरे पति ने कमाण्डर को लिख दिया है। आप अब निःस्वार्थ भाव से आइए। मैं आपकी बाट देखूँगी।—मेरियट।"

निख़ल्यूडोव ने ऐडवोकेट से कहा—ज़रा तमाशा तो देखिए! कितनी भयङ्कर बात है। ये लोग एक स्त्री को सात महीने तक एकान्त कारावास में रक्खे रहे, और अब पता चलता है कि वह बिलकुल निर्दोष है और उसे मुक्त कराने के लिए केवल एक शब्द पर्याप्त था।

करूँगा।"—वैरन ने अपने उल्लसित चेहरे पर करुणा की मुद्रा धारण करने का निष्फल प्रयत्न करते हुए कहा—"बड़ी मर्मस्पर्शी है! साफ जाहिर है कि वह अभी निरी बच्ची थी; पति ने उसके साथ रूखा बर्ताव किया होगा और इससे उसे उससे घृणा हो गई होगी; पर समय बीतने पर दोनों एक-दूसरे पर मुग्ध हो गए। हाँ, मैं इसकी रिपोर्ट खुद करूँगा।"

"काउण्ट इवान मिखायलिच भी इस सम्बन्ध में सम्राज्ञी से कुछ कहने वाले हैं"—निख्ल्यूदोव ने कहा।

पर अभी उसके मुँह से ये शब्द भली प्रकार निकले भी न थे कि वैरन के मुख का भाव सहसा बदल गया।

उन्होंने कहा—इस अपील को आप ऑफिस में दे दीजिए और मुझसे जो कुछ हो सकेगा, करूँगा।

इसी समय वह युवक अफसर कमरे में आ पहुँचा, और यह स्पष्ट था कि वह अपनी ललित गति को वैरन और निख्ल्यूदोव को दिखाना चाहता है।

वह बोला—महिला कह रही है कि उन्हें आपसे कुछ और कहने की आज्ञा मिले।

"अच्छी बात है, उन्हें बुला लो . . . आह भाई, हमें न जाने कितने आँसू देखने पड़ते हैं! जो कहीं हम उन सब आँसुओं को पोंछ सकते! जो कुछ हो सकता है, किया जाता है।"

महिला ने प्रवेश किया।

वह बोली—मैं आपसे यह अनुरोध करना भूल गई थी कि उसे अपनी पुत्री को छोड़ने की अनुमति न दी जाय, क्योंकि वह . . .

"मैंने आपसे पहले ही कह दिया है कि जो कुछ मुझसे हो सकेगा, करूँगा।"

"वैरन, ईश्वर के नाम पर! आप एक माँ की रक्षा कर रहे हैं।"—और उसने वैरन का हाथ चूमा।

"जो कुछ हो सकेगा, ज़रूर किया जायगा।"

महिला के जाने के बाद निखल्यूडोव ने भी विदा ली।

वैरन बोले—जो कुछ हो सकेगा, किया जायगा। मैं इसका ज़िक्र मिनिस्ट्री ऑफ़ जस्टिस में करूँगा और वहाँ से उत्तर आने पर हमारे लिए जो कुछ हो सकेगा, किया जायगा।

निखल्यूडोव अध्ययनशाला से निकल कर ऑफ़िस मे पहुँचा। सीनेट ऑफ़िस की भाँति यहाँ भी साफ़-सुथरी, बढ़िया चमकदार पोशाक धारण किए अनेक अफ़सर एकत्र थे, जो स्वच्छ, विनम्र और नपा-तुला आचरण करने में पारङ्गत थे।

निखल्यूडोव के मस्तिष्क में अनिच्छित भाव से विचार-धारा प्रवाहित होने लगी—ये सब कितने हैं, कितने अधिक हैं, और सब कितने सुपोषित दिखाई देते हैं। इनकी कमीज़ें और हाथ कैसे स्वच्छ हैं और इनके बूट कैसे चमक रहे हैं। यह सब इनके लिए कौन करता है? कैदियों का और इनका तो मुकाबला ही क्या, किसानों तक के मुकाबले में ये कितने अधिक सुख से रहते हैं!

कर्त्तव्य के प्रतिकूल समझता था। उसकी धारणा थी कि इन बातों पर ध्यान देने से उसका हृदय दुर्बल हो जायगा और फिर वह अपने कर्त्तव्य का पालन न कर सकेगा। वह सप्ताह में एक बार इन कोठरियों में चक्कर लगा आता और कैदियों से पूछ लेता कि उन्हें किसी चीज़ की ज़रूरत तो नहीं है (यह उसके पद की एक ड्यूटी थी)। कैदियों को भाँति-भाँति की शिकायतें होतीं; वृद्ध जनरल उन्हें अभेद्य मूक-भाव से सुनता और उन शिकायतों को कभी दूर न करता क्योंकि यह उन 'ऊपर से' आए विधानों के अनुरूप न होता।

जिस समय निखल्यूडोव की गाड़ी वृद्ध जनरल के भवन के सामने पहुँची, उसी समय गिरजाघर की घण्टी बज उठी—'ईश्वर महान है' और इसके बाद उसने दो बजाए। इस निनाद से निख-ल्यूडोव के मस्तिष्क में उन कैदियों के आत्म-चरित में पढ़ी हुई वे सारी बातें उद्दीप्त हो उठीं, जिनके द्वारा उसने जाना था कि किस प्रकार यह प्रति घण्टे दुहराया जाता निनाद आजन्म कारारुद्ध व्यक्तियों के हृदयों में प्रतिध्वनित हो उठता था।

उस समय वृद्ध जनरल अपने अँधेरे कमरे में मेज़ के आगे एक युवक चित्रकार के साथ बैठा हुआ एक कागज़ पर भूतात्मा आवा-हनकारी प्लैन्चेट को लिए बैठा था। कलाविद की पतली, पसीने से तर अंगुलियाँ जनरल की मोटी और कठोर अंगुलियों के साथ कागज़ पर फैले हुए अक्षरों पर प्लैन्चेट को फिरा रही थीं। प्लैन्चेट जनरल के इस प्रश्न का उत्तर दे रहा था कि मृत्यु के बाद आत्माएँ एक दूसरी को किस प्रकार पहचान सकेंगी।

जिस समय निखल्यूडोव ने एक नौकर के हाथ अपना कार्ड भिजवाया तो प्लैन्चेट में जोन ऑफ आर्क का आह्वान हो चुका था। जोन ऑफ़ आर्क की आत्मा ने अक्षर-अक्षर करके 'वे एक दूसरी को'—तक लिख दिया था, पर जिस समय नौकर कार्ड लेकर आया तो प्लैन्चेट 'प' और 'उ' पर आकर लड़खड़ाने लगा। इस लड़खड़ाने का कारण यह था कि जनरल की सम्मति में प्लैचेट को लिखना चाहिए था कि—"वे एक दूसरी को परिष्कार द्वारा जान सकेंगी।" और कलाविद की सम्मति में उसे लिखना चाहिए था कि—"वे एक दूसरी को उस ज्योति के द्वारा जान सकेंगी जो उनके नैसर्गिक शरीर से प्रस्फुटित होगी।" जनरल अपनी घनी सफ़ेद भवों में बल डाले प्लैञ्चेट के पञ्जे को ध्यानपूर्वक देखता और यह कल्पना करके कि यह स्वत ही सञ्चालित हो रहा है, उसे 'प' की ओर खींचता जा रहा था। पीले चेहरे और कानों के पीछे पड़े हुए पतले बालों वाला युवक कलाविद अपने नीले नेत्रों से ड्राइङ्ग-रूम के अँधियारे कमरे में उद्विग्न भाव से देख रहा था और ओंठ चलाता हुआ प्लैञ्चेट को 'उ' की ओर खींचने की चेष्टा कर रहा था।

जनरल ने इस व्याघात पर मुँह बनाया, पर फिर क्षण भर बाद उसने कार्ड ले लिया, चश्मा लगा लिया और जोड़ों में दर्द होने पर भी वह तन कर अपनी हाथ की निर्जीव अँगुलियाँ मलता हुआ खड़ा हो गया।

उसने कहा—अध्ययनशाला में ले आओ।

कलाविद ने उठते हुए कहा—यदि आप अनुमति दें तो मैं इसे स्वयं ही समाप्त कर दूँ। आत्मा उपस्थित है।

"अच्छी बात है, आप अकेले ही समाप्त कर दीजिए।"—जनरल ने कठोर, निश्चयात्मक स्वर में कहा और इसके बाद वह लम्बी, दृढ़ और नपी-तुली चाल से शीघ्रतापूर्वक अध्ययनशाला में चला गया। वहाँ पहुँच कर उसने भारी स्वर में मित्रता-सूचक शब्दों का उच्चारण करते हुए निखल्यूडोव से कहा—"आपसे मिल कर बड़ी प्रसन्नता हुई।" और इसके बाद उसने लिखने की मेज़ के पास रखी हुई आरामकुर्सी की ओर सङ्केत किया।

"आपको पीटर्सबर्ग में आए बहुत दिन हुए?"

निखल्यूडोव ने उत्तर दिया कि वह अभी आया है।

"क्या आपकी माता प्रिन्सेज़ सकुशल हैं?"

"मेरी माता का देहान्त हो गया।"

"क्षमा करिए; बड़ा दुःख हुआ। मेरा पुत्र कहता है कि वह आपसे मिला था।"

जनरल का पुत्र भी अपनी उन्नति उसी प्रकार कर रहा था, जिस प्रकार उसके पिता ने आरम्भ की थी, और सैनिक विद्यालय से उत्तीर्ण होने के बाद अब वह जाँच-विभाग में काम कर रहा था और अपने पद पर बड़ा गर्व करता था। उसे राजकीय गुप्तचरों के प्रबन्ध का काम सौंपा गया था।

मैंने आपके पिता के साथ ही सेना में काम किया था। हम दोनों मित्र थे—मित्र क्या कॉमरेड थे। और आप, आप भी सेना में हैं?

"जी नहीं।"

जनरल ने इस प्रकार सिर झुका लिया मानो यह बात उन्हें पसन्द न आई हो।

निखल्यूडोव ने कहा—जनरल, मुझे आपसे एक अनुरोध करना है।

"बड़ी प्रसन्नता की बात है। बताइए, मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?"

"यदि मेरा अनुरोध अनुचित हो तो क्षमा कीजिएगा। पर मैं कहने को बाध्य हूँ।"

"बताइए, बताइए।"

"दुर्ग में गुर्केविच नामक एक राजनीतिक क़ैदी है; उसकी माँ चाहती है कि उसे उससे मिलने की अनुमति दी जाय, और यदि अधिक नहीं तो उसके पास पुस्तकें भेजने की ही अनुमति दी जाय।"

जनरल ने निखल्यूडोव के अनुरोध पर न असन्तोष ही प्रकट किया और न सन्तोष ही; पर एक हाथ पर सिर रख कर आँखें बन्द किए बैठा रहा- मानो वह कुछ सोच रहा हो। पर वस्तुतः वह सोच-विचार कुछ न रहा था; वह निखल्यूडोव के अनुरोध में अनुरक्त तक न था, क्योंकि वह अच्छी तरह जानता था कि चाहे कोई भी अनुरोध हो, उसका उत्तर वह 'ऊपर से' आए विधानों के अनुरूप देगा। वह वास्तव में मानसिक विश्राम कर रहा था।

अन्त में उसने कहा—देखिए, यह बात मेरे हाथ में नहीं है। भेंट करने के सम्बन्ध में एक विधान है—सम्राट द्वारा समर्थित किया हुआ। रही पुस्तकों की बात, सो हमारे पास एक अच्छी सी लाइब्रेरी है, और क़ैदियों को वे पुस्तकें पढ़ने को दी जाती हैं।

"जी हाँ, पर वह वैज्ञानिक पुस्तकें चाहता है। वह अध्ययन करना चाहता है।"

जनरल ने गुर्रा कर कहा—"आप भूल कर भी विश्वास न करिए।" और वह कुछ क्षण के लिए चुप हो गया—"वह अध्ययन करना-कराना कुछ नहीं चाहता, सिर्फ़ बेचैनी है।"

निखल्यूडोव ने कहा—पर क्या किया जाय? आख़िर अपना कष्टदायक समय भी तो किसी न किसी तरह व्यतीत करें।

जनरल बोला—"ये लोग हमेशा शिकायत करते रहते हैं। हम इनकी रग-रग को पहचानते हैं।"—उसने उनका ज़िक्र इस तरह व्यापक भाव से किया मानो वह किसी विशेष रूप से बुरी नस्ल का ज़िक्र कर रहा हो।

जनरल ने कहा—"यहाँ उन्हें ऐसी सुविधाएँ दी गई हैं जो शायद ही किसी कारावास में दी जाती हों।"—और इसके बाद जनरल ने, मानो अपनी बात की सत्यता प्रतिपादित करने के लिए, उन सुविधाओं के नाम गिनाने शुरू किए, मानो जिस कारागार में वे क़ैदी अवरुद्ध थे उसका एक मात्र लक्ष्य उन्हें घर-जैसा सुख प्रदान करना हो।

उसने कहा—इसमें शक नहीं कि कभी उन्हें कष्ट भी उठाना पड़ता था, पर अब वैसी कोई बात नहीं है। उन्हें तीन प्रकार का भोजन दिया जाता है—और उनमें से एक तश्तरी मांसादि की होती है। रविवार के दिन उन्हें एक चौथी तश्तरी मिलती है—मीठी तश्तरी। ईश्वर करे सारे रूसियों को इसी प्रकार का सुख नसीब हो।

अन्य सारे वृद्ध पुरुषों की नाई जनरल भी, एक बार जाना-पूछा प्रसङ्ग छिड़ने पर कैदियों की माँगों के अनौचित्य और उनकी कृतघ्नता के प्रमाण पर प्रमाण देने में लग गया—

"उन्हें धार्मिक पुस्तकें मिलती हैं और पुराने मासिक पत्र मिलते हैं। एक पुस्तकालय है, पर वे शायद ही कभी पढ़ते हों। शुरू-शुरू में वे कुछ रुचि दिखाते हैं, पर बाद को नई पुस्तकों के आधे पन्ने भी नहीं फटे मिलते और पुरानी पुस्तकों के पन्ने तो बिलकुल उलटाए हुए मिलते ही नहीं। हमने उनकी परीक्षा तक करके देख ली"—जनरल ने कुछ मुस्कराहट से ममता रखने वाली धुँधली रेखा के साथ कहा—"हमने उनकी जाँच करने के लिए पुस्तकों में कागज़ के टुकड़े रक्खे, और वे वैसे ही रक्खे मिले। लिखने की भी कोई रोक-टोक नहीं है। हमने उन्हें स्लेट और पेन्सिल दी है। वे मिटा सकते हैं और फिर लिख सकते हैं। पर वे लिखते-लिखाते भी नहीं। अजी वे बहुत जल्दी शान्त हो जाते हैं। शुरू-शुरू में वे बेचैनी दिखाते हैं, पर बाद को मोटे हो चलते हैं और सब हाथ-पाँव मारना बन्द कर देते हैं।"—और उसे अपने इन शब्दों की भयङ्करता पर स्वयं सन्देह तक न हुआ।

निखल्यूडोव ने इस भर्राए स्वर को सुना, उसके कड़े जोड़ों को देखा, सफ़ेद भवों से ढके प्रकाशहीन नेत्रों को देखा, सैनिक वर्दी से ढके कॉलर पर रुके हुए, हिलते हुए साफ जबड़े को देखा और उस सफ़ेद क्रॉस को देखा, जिसका उसे केवल इस कारण इतना गर्व था कि उसने वह असाधारणतया नृशंस और वृहद मानव-संहार द्वारा प्राप्त किया था—और जान लिया कि

इस वृद्ध की बात का उत्तर देना या इसे इसके शब्दों का अर्थ समझाना व्यर्थ है। उसने एक बार और भी प्रयत्न किया और शुस्टोवा के सम्बन्ध में पूछ-ताछ की, यद्यपि वह जानता था कि उस दिन सुबह ही उसकी मुक्ति का आदेश दे दिया गया है।

"शुस्टोवा—शुस्टोवा ? मुझे उन सबके नाम याद नहीं रह सकते, वे इतने सारे हैं"—जनरल ने कहा, मानो वह इतने सारे होने के कारण उनकी भर्त्सना कर रहा हो। उसने घण्टी बजाई और सेक्रेटरी को बुलाया। सेक्रेटरी की प्रतीक्षा करते-करते उसने निखल्यूडोव को समझाना-बुझाना शुरू किया कि उसे सेना में फिर भरती हो जाना चाहिए। आजकल ईमानदार, कुलीन पुरुषों की ज़ार को—और देश को बड़ी आवश्यकता है! उसने अन्तिम शब्द अपने वाक्य को सुव्यवस्थित रूप देने के लिए कहा (और इन ईमानदार कुलीन पुरुषों में उसने अपनी गणना भी कर ली थी)—"देखिए, मैं बुड्ढा हो चला, पर जितनी शक्ति है उसके अनुसार अब तक बराबर सेवा कर रहा हूँ।"

सेक्रेटरी—जो लम्बे चेहरे का दुबला-पतला आदमी था—अपने चञ्चल, सूक्ष्मवेधी नेत्रों को इधर-उधर करता हुआ भीतर आया और बोला कि शुस्टोवा किसी विचित्र से दुर्ग में कैद है और उसके पास उसके सम्बन्ध में कोई ऑर्डर नहीं आया।

जनरल ने एक बार फिर मुस्कराहट जैसी रेखा अपने ओठों पर उत्पन्न करने की चेष्टा करते हुए—जिससे वह उसका चेहरा और विरूप हो उठा, कहा—जिस दिन हमें आज्ञा मिली, हम उसे उसी

दिन छोड़ देंगे। हम खुद उन्हें रोकना नहीं चाहते; हम उनके आगमन का इतना अधिक मूल्य नहीं समझते।

निखल्यूडोव उठा और इस भयङ्कर वृद्ध के प्रति उसके हृदय में घृणा और करुणा के जो मिश्रित भाव उठ रहे थे, उन्हें उसने प्रकट करने से अपने आपको प्रयासपूर्वक रोका। इस वृद्ध ने सोचा कि उसे अपने पुराने कॉमरेड के विवेकहीन और पथ-भ्रष्ट पुत्र के साथ इतना अधिक कठोर व्यवहार नहीं करना चाहिए—उसे कुछ उपदेश दिए बिना वहाँ से न जाने देना चाहिए। और चूँकि वह उपदेश देने चला था, इसलिए उसने उपदेशक के महत्वपूर्ण पद का भी उपयोग किया।

"अच्छा भाई, सलाम! मेरी बात को योंही न टाल देना। मैं तुमसे स्नेह करता हूँ, इसीलिए मैंने तुमसे यह बात कही है। इनके जैसे जीवों के साथ कभी भूल कर मत रहना। इनमें कोई निर्दोष नहीं है। ये सब एक सिरे से आचार-भ्रष्ट हैं। हम इन्हें अच्छी तरह जानते हैं।" यह उसने ऐसे स्वर में कहा जिसमें किसी प्रकार के सन्देह की गुञ्जायश हो ही नहीं सकती थी।

और सचमुच वह किसी प्रकार का सन्देह नहीं करता था; इसलिए नहीं कि वस्तुस्थिति ऐसी थी, बल्कि इसलिए कि यदि वस्तुस्थिति ऐसी न होती तो उसे स्वीकार करना पड़ता कि वह एक ऐसे कुलीन वीर के स्थान पर, जो अपने उज्ज्वल जीवन के अन्तिम दिन व्यतीत कर रहा है, एक ऐसा दुरात्मा है जिसने अपनी आत्मा को बेच दिया है और जो अब इस वृद्धावस्था में भी अपनी जर्जर आत्मा का व्यापार कर रहा है।

उसने कहा—तुम्हारे लिए सबसे अच्छी बात है कि जाकर सेना में काम करो ; ज़ार और देश को ईमानदार आदमियों की ज़रूरत है। फ़र्ज़ करो अगर मैं और तुम सब मिल कर सम्राट की सेवा करने से इन्कार कर दें—और तुम यही कर रहे हो—तो रह कौन जायगा ? और हम सरकार की सहायता करने के स्थान पर उसमे नुक़्ताचीनी करते हैं।

निखल्यूदोव ने गहरी साँस ली, झुक कर अभिवादन किया, और अपनी ओर कृपा-भाव से फैलाए बढ़े से हाथ को हिला कर वह झटपट बाहर चला गया।

जनरल ने असन्तोषपूर्वक सिर हिलाया और इसके बाद वह अपने घुटने मलता हुआ ड्राइङ्ग रूम में चला गया, जहाँ युवक कलाविद् उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। जोन ऑफ़ आर्क की आत्मा द्वारा दिया गया उत्तर लिखा हुआ तैयार था—"वे एक दूसरी को उस ज्योति से जान सकेंगी, जो उनके नैसर्गिक शरीर से प्रस्फुटित होगी।"

जनरल ने सहमति-सूचक ढङ्ग से कहा—'आह !' और उसने अपने नेत्रों को बन्द कर लिया। पर यदि आत्माओं से प्रस्फुटित होती हुई ज्योति का स्वरूप एक जैसा हुआ तो उन्हें पहचाना किस तरह जाएगा। और वह कलाविद् के साथ बैठ कर फिर ऐंच्छे गुमाने लगा।

गाड़ी निखल्यूदोव को घर के बाहर ले गई। गाड़ीवान ने उससे कहा—सरकार, यहाँ तो बड़ी उदासी लगती है। मेरे मी जी में आई कि आपको लिए बिना ही चल दूँ।

निखल्यूदोव ने भी कहा—"हाँ, यहाँ बड़ी उदासी लगती है।" और उसने गहरी साँस लेकर नीलवर्ण आकाश के ऊपर भ्रमण करते हुए श्वेत मेघों और नेवा के जल में नौकाओं द्वारा उठती हुई उज्ज्वल लहरों की ओर देखा।

दसवाँ परिच्छेद
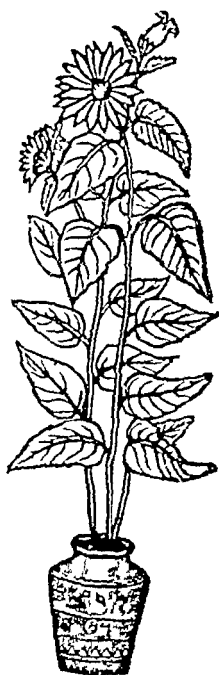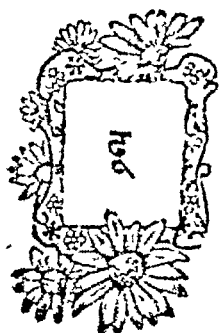
दूसरे दिन मसलोवा के मामले की पेशी थी और सीनेट के प्रवेश-द्वार पर, जहाँ कुछ गाड़ियाँ खड़ी थीं, निख्ल्यूदोव का ऐड-वोकेट भी मिल गया। फनारिन यहाँ की रत्ती-रत्ती जगह जानता था। वह विशाल सीढ़ियों पर चढ़ कर बाईं तरफ़ मुड़ा और एक ऐसे द्वार में घुसा जिस पर विधान के अमल में आने की तिथि अङ्कित थी।

सीनेटर पहले से ही मौजूद थे। थोड़ी ही देर में अर्दली ने गम्भीर भाव से घोषणा की—'अदालत आ रही है।' और सब नियमानुकूल उठ खड़े हुए। सीनेटर अपनी वर्दियाँ पहने मञ्च पर रक्खी ऊँची कुर्सियों पर बैठ गए और अपने सामने रक्खी मेज़ पर कुछ कर ठीक उसी प्रकार स्वाभाविक रङ्ग-ढङ्ग धारण करने की चेष्टा करने लगे जिस प्रकार फ़ौजदारी अदालत के जजों ने किया था। चार सीनेटर थे—निकटिन (जो उस दिन प्रधान था), जिसका पतला चेहरा और स्याह नेत्र थे; वुल्फ़, जो मार्मिक ढङ्ग से अपने ओंठ दबाए हुए अपने सफ़ेद हाथों से काम-काजी कागज़

उलट-पलट रहा था ; स्कोवोरोडनिकोव, जो भारी क़द का मोटा-ताज़ा आदमी था, जिसके चेहरे पर चेचक के दाग थे (यह वही विद्वान् जूरी था, जिसकी प्रशंसा फनारिन ने की थी) ; और 'वे', जिसका चेहरा-मुहरा पादरियों जैसा था और जो सबके अन्त में आप थे ।

सीनेटरों के साथ ही सेक्रेटरी और पब्लिक प्रॉसीक्यूटर आए । पब्लिक प्रॉसीक्यूटर गहरे साँवले रङ्ग और खिन्न, काले नेत्रों वाला मझोले क़द का युवक था । निखल्यूडोव ने उसे तत्काल पहचान लिया, यद्यपि वह इस समय विचित्र सी वर्दी धारण किए था, और यद्यपि उसे उसने इधर छः वर्षों से बिल्कुल न देखा था । विद्यार्थी जीवन में वह निखल्यूडोव का घनिष्ट मित्र था ।

निखल्यूडोव ने ऐडवोकेट की ओर घूम कर पूछा—पब्लिक प्रॉसीक्यूटर सैलेनिन ?

"जी हाँ । क्यों ?"

"मैं इसे अच्छी तरह जानता हूँ । बड़ा अच्छा आदमी है ।"

"और बड़ा अच्छा पब्लिक प्रॉसीक्यूटर भी, काम काजी आदमी । आप यदि इसकी सहानुभूति प्राप्त कर सकते तो अच्छा होता ।"

"कुछ भी हो, यह अपनी आत्मा के अनुरूप ही आचरण करेगा ।"—और निखल्यूडोव को अपनी घनिष्ट मैत्री और उसके आकर्षक गुण—पवित्रता, स्पष्टवादिता और बेहद कुलीनता— का स्मरण हो आया ।

ऐडवोकेट ने कहा—जी हाँ, और अब इसके लिए देर भी हो गई है ।

मसलोवा का मामला पेश हो गया। वूल्फ अत्यन्त सजीवता के साथ दण्ड-खण्डन के पक्ष में सारे तर्क पेश करने लगा। उस दिन प्रेसीडेण्ट—जो वैसे ही बड़ी बुरी आदत का आदमी था—विशेष रूप में बिगड़ा हुआ था। उसकी सारी विचार-शक्ति उन शब्दों में केन्द्रीभूत थी, जो उसने अपनी डायरी में उस अवसर पर नोट किए थे, जब उसकी बजाय विगलानोव को उस पद पर नियुक्त कर दिया था, जिसकी वह बहुत दिनों से कामना कर रहा था। प्रेसीडेण्ट निकटिन की दृढ़ धारणा थी कि वह दिन दो उच्चतर श्रेणियों के अधिकारियों के साथ सम्बन्धित है और उनके सम्बन्ध में उसकी सम्मति भावी इतिहासकारों के लिए एक अमूल्य सामग्री प्रमाणित होगी। पिछले दिन उसने अपनी डायरी में एक पूरा परिच्छेद लिख मारा था कि किस प्रकार उक्त दो उच्चतर श्रेणियों के अधिकारियों ने उसे रूस को सर्वनाश से बचाने की—जिसकी ओर वर्तमान शासक देश को लिए जा रहे थे—चेष्टा करने से रोक दिया था, जिसका एक मात्र आशय यह था कि उन्होंने उसे उच्चतर वेतन प्राप्त करने से रोक दिया था। और अब वह सोच रहा था कि हमारी भावी सन्तानों के लिए यह परिच्छेद ऐतिहासिक घटनाओं पर कैसा विलक्षण प्रकाश डालेगा।

उसने वूल्फ़ की बात सुने बिना ही उत्तर में कहा—'बेशक।'

'बे' खिन्न मुद्रा बनाए वूल्फ की बात सुन रहा था और साथ ही एक काग़ज़ पर पेन्सिल से हार बना रहा था। 'बे' कट्टर लिबरल था। वह इस शताब्दी के इधर के चालीस वर्ष से चलन में आए लिबरल रिवाज को घोर आस्था की दृष्टि से देखता था और यदि

वह घोर तटस्था की परिधि का कभी उल्लङ्घन भी करता, तो सदैव लिबरलिज्म की दिशा मे।

वूल्फ ने अपने महीन स्वर में मसलोवा की अपील विशद रूप से पेश की, पर उसके लहने से साबित होता था कि वह पक्षपात से काम ले रहा है और स्पष्ट रूप से चाहता है कि दण्ड उठा दिया जाय।

प्रेसीडेण्ट निकटिन ने फनारिन की ओर घूम कर पूछा—आपको भी कुछ कहना है।?

फ़नारिन उठा और उसने अपना सीना फैला कर आश्चर्य-जनक नियति और प्रभावोत्पादकता के साथ एक-एक अङ्ग करके प्रमाणित कर दिया कि किस प्रकार फौजदारी अदालत-विधान के वास्तविक अर्थों के छः स्थानों पर भटक गई है; और इसके अतिरिक्त उसने संक्षेप में मामले की विशेषता और दण्ड के न्याय-अन्याय पर भी कहा। उसकी संक्षिप्त, पर प्रबल वक्तृता का लहजा यह व्यक्त कर रहा था कि वह सीनेटरों से क्षमा-याचना कर रहा है, अन्यथा सीनेटर अपनी सूक्ष्मवेधी दृष्टि और विलक्षण मति के द्वारा उससे कहीं अधिक समझ और देख सकते हैं, और उसका कार्य केवल आवश्यक बातों की ओर निर्देश करना मात्र है।

फनारिन की वक्तृता के बाद यह कोई भी कल्पना कर सकता था कि अब सीनेट के निम्न अदालत के निर्णय को रद करने मे किसी प्रकार का सन्देह नहीं किया जा सकता। जब फ़नारिन ने अपनी वक्तृता समाप्त की और विजय-गर्व की मुस्कराहट के साथ चारों ओर देखा, तो निखल्यूडोव को दृढ़ विश्वास हो गया कि

उसकी जीत होगी। पर जब निखल्यूडोव ने सीनेटरों और पब्लिक प्रॉसीक्यूटर की ओर देखा तो उसे दिखाई दिया कि फनारिन की विजय-गर्व की मुस्कराहट में दूसरा कोई योग देने वाला नहीं है। पब्लिक प्रॉसीक्यूटर और सीनेटर न मुस्करा रहे थे, न विजय-गर्व की अनुभूति कर रहे थे। उनके चेहरे-मुहरे से दिखाई देता था मानो वे शान्त भाव से मन ही मन कह रहे हों—हमने तुम्हारे जैसे बहुतेरों की बातें सुनी हैं—यह सब व्यर्थ हैं। जब उसने अपना वक्तव्य समाप्त किया तो वे प्रसन्न दिखाई दिए मानो वे इस व्यर्थ के व्याघात से निस्तार पा गए हों। ऐडवोकेट की वक्तृता समाप्त होते ही प्रेसीडेण्ट पब्लिक प्रॉसीक्यूटर की तरफ़ घूमा और सैब्रेनिन ने संक्षेप में और स्पष्टता के साथ अपनी सम्मति निम्न अदालत के निर्णय के पक्ष में दी और दण्ड उठाने के लिए पेश किए गए सारे तर्कों को अपर्याप्त सिद्ध किया। इसके बाद सीनेटर विवाद-गृह में चले गए। उनमें आपस में मतभेद हो गया। वूल्फ़ अपील स्वीकार करने के पक्ष में था। जब 'बे' ने मामला समझा तो वह भी उसके पक्ष में हो गया और उसने अपने सह-योगियों के समक्ष निम्नस्थ अदालत का वह सारा दृश्य उपस्थित किया, जिसकी वह कल्पना कर रहा था। निकटिन कठोरता और नियम के पक्ष में था। उसने दूसरा पक्ष ग्रहण किया। अब सारी बात स्कोवोरोडनिकोव के वोट पर निर्भर थी और उसने अपील रद्द करने के पक्ष में वोट दिया, जिसका मुख्य कारण यह था कि केवल नैतिक कारणों से उस स्त्री के साथ निखल्यूडोव का विवाह करने का सङ्कल्प उसे नितान्त गर्हित प्रतीत हुआ था।

स्कोवोरोडनिकोव प्रकृतिवादी और डारवीनियन था और—और भी बुरी बात—धर्म-शून्य नीतिवाद के समस्त प्रदर्शनों को न केवल तिरस्करणीय मूर्खता ही समझता था, बल्कि स्वयं अपने लिए खुला चैलेञ्ज तक समझता था। एक साधारण सी वेश्या के लिए इतनी माथापच्ची और सीनेट में निखल्यूडोव और प्रसिद्ध ऐडवोकेट की उपस्थिति उसे नितान्त गर्हित प्रतीत हुई। फलतः उसने दाढ़ी मुँह में दी, मुँह बनाया और ऐसा भाव जताया कि वह मामले के सम्बन्ध में इससे अधिक कुछ नहीं जानता कि उसकी अपील के पक्ष में दिए गए तर्क अपर्याप्त है, और इस प्रकार उसने प्रेसीडेण्ट के हक़ में राय दी कि फ़ौजदारी अदालत का फ़ैसला बदस्तूर रहे। अतएव दण्ड अखण्डित रहा।
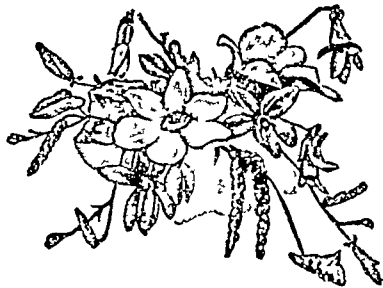
खल्यूडोव ने अपने हाथ-बक्स के कागज़-पत्र दुरुस्त करते हुए, ऐडवोकेट के साथ बाहर निकलते हुए, कहा—कितनी भयङ्कर बात है!

"देखिये न, मामला कितना साफ़ है, पर ये लोग केवल उसके बाह्य रूप को महत्व देते हैं और किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं करना चाहते! कितनी भयङ्कर बात है!"

ऐडवोकेट ने कहा—मामले का सत्यानाश तो फ़ौजदारी अदालत में ही कर दिया गया था।

"और सैलेनिन तक अपील रद करने के पक्ष में था। कितनी भयङ्कर बात है! कितनी भयङ्कर! अब क्या किया जाय?"—निखल्यूडोव ने कहा।

"हम हिज़ इम्पीरियल मैजेस्टी के पास अपील करेंगे और प्रार्थना-पत्र आप ख़ुद अपने हाथ से देने जाइए! मैं ख़ुद तैयार कर दूँगा।"

इसी समय नन्हा वूल्फ़ अपने तमग़े और वर्दी धारण किए

वेटिङ्ग रूम में पहुँचा और निखल्यूडोव के पास आया। उसने अपने तङ्ग कन्धे उचकाते हुए और आँखें बन्द करते हुए कहा—"प्रिय प्रिन्स, कुछ हो ही नहीं सकता था, अपील के पक्ष में तर्क बहुत दुर्बल थे।" और इसके बाद वह चला गया।

वूल्फ़ के बाद सैलेनिन भी आया। उसे सीनेटरों से मालूम हुआ था कि उसका पुराना अन्तरङ्ग मित्र यहाँ मौजूद है।

उसने निखल्यूडोव की ओर आते हुए और केवल ओठों से मुस्कराते हुए (उसके नेत्र उसी प्रकार खिन्न थे) कहा—मुझे तुमसे यहाँ मिलने की स्वप्न में भी आशा न थी। मुझे क्या मालूम था कि तुम पहिले वर्ग में ही हो।

"अरे, मुझे क्या मालूम था कि तुम पब्लिक प्रॉसीक्यूटर बन बैठे हो।"

सैलेनिन ने सशोधन करके कहा—सहकारी। पर तुम यहाँ सीनेट में कैसे आ मौजूद हुए? मैंने योंही सुना तो था कि तुम पहिले वर्ग में हो। पर तुम यहाँ कर क्या रहे हो?

"मैं यहाँ? मैं एक निर्दोष स्त्री को निर्वासन दण्ड से बचाने के लिए न्याय की आशा में आया था।"

"कौन सी स्त्री?"

"वही, जिसके मामले का फैसला अभी-अभी किया गया है।"

सहसा सैलेनिन को याद आया—अच्छा, मसलोवा का मामला! पर अपील के पक्ष में कोई तर्क ही नहीं था।

"बात अपील की नहीं है—बात है उस स्त्री की, जिसे निरपराध दण्ड दे दिया गया है।"

सैलेनिन ने लम्बी साँस ली—हो सकता है, पर...।

"हो सकता है नहीं, है।"

"तुमने कैसे जाना?"

"क्योंकि मैं जूरी में था। मैं जानता हूँ कि हमने किस तरह ग़लती की थी।"

सैलेनिन विचारमग्न हो गया। उसने कहा—तो फिर तुम्हें उसी समय अपना वक्तव्य देना चाहिए था?

"मैंने कोई वक्तव्य नहीं दिया।"

"उसे सरकारी रिपोर्ट में दर्ज कर लिया जाता। यदि अपील में वह वक्तव्य भी दर्ज कर लिया जाता तो ..।"

"पर तो भी फैसला तो बिल्कुल वाहियात ही रहा।"

"सीनेट को यह कहने का कोई अधिकार नहीं है। यदि सीनेट अदालतों के निर्णयों को, अपने इस दृष्टिकोण के अनुसार दुहराने लगे कि अमुक निर्णय न्याय्य है या नहीं, तो जूरी के फैसले का फिर कोई अर्थ ही न रहेगा, और साथ ही सीनेट के लिए किसी प्रकार का आधार न रहेगा और उस दशा में अर्थ के बजाय अनर्थ की अधिक आशङ्का रहेगी।" सैलेनिन ने एक मामले का स्मरण करते हुए कहा।

"मैं तो केवल इतना जानता हूँ कि स्त्री बिल्कुल निर्दोष है, और फिर उसे इस निराधार दण्ड से बचाने की अन्तिम आशा नष्ट हो गई। घोरतम अन्याय का प्रतिपादन उच्चतम न्यायालय ने किया।"

सैलेनिन ने अपने नेत्र टिमटिमाते हुए कहा—"उसने प्रतिपादन

कहाँ किया ? सीनेट किसी मामले की विशेषता पर न विचार कर सकती है और न उसने किया।" सैलेनिन हर दम संलग्न रहता था और सोसायटी में बहुत कम आता था, अत: उसने निखल्यूडोव के प्रेम-व्यापार की कथा बिल्कुल न सुनी थी। निखल्यूडोव ने इस बात को लक्ष्य किया और निश्चय किया कि उसके और मसलोवा के पारस्परिक सम्पर्क के विषय में कुछ न कहना ही अच्छा है।

सैलेनिन ने विषय बदलने की इच्छा से कहा—तो तुम अपनी मौसी के यहाँ ही ठहरे हो न ? उन्होंने मुझे कल बताया था कि तुम यहीं हो। उन्होंने मुझे आने का निमन्त्रण भी दिया था और कहा था कि तुमसे भेंट भी हो जायगी और एक विदेशी उपदेशक का उपदेश सुनने को भी मिल जायगा। और सैलेनिन फिर ओठों से मुस्कराया।

निखल्यूडोव सैलेनिन के इस प्रसङ्ग-परिवर्तन पर क्षुब्ध हो उठा। उसने विषण्णतापूर्वक कहा—हाँ, मै वहीं था, पर मैंने उसका उपदेश नहीं सुना; मुझे बडी घृणा सी हुई।

सैलेनिन ने कहा—क्यों ? घृणा सी क्यों ? माना कि यह साम्प्रदायिक है, पर है तो धार्मिक भावों का प्रत्यक्षीकरण।

"धार्मिक भावों का प्रत्यक्षीकरण !—विक्षिप्ततापूर्ण मूर्खता क्यों नहीं कहते ?"

"नहीं भाई। विलक्षण बात यह है कि हम अपने धर्म की शिक्षाओं के सम्बन्ध में इतना कम जानते हैं कि जो कुछ हमारे निजी आधारभूत धार्मिक सिद्धान्त होते हैं, उनमें हमें नित्य नवीन उद्‌घाटन दिखाई देता है !" सैलेनिन ने कहा, मानो वह अपना

वर्तमान धार्मिक दृष्टिकोण अपने पुराने मित्र को बताने को आतुर हो रहा हो।

निखल्यूडोव ने अपने मित्र की ओर विस्मय-चकित और अनुसन्धानात्मक दृष्टि से देखा और सैलेनिन ने अपने नेत्र नीचे कर लिए, जिनमें निखल्यूडोव को खिन्नता के नहीं, वैपरीत्य भाव के दर्शन हुए।

निखल्यूडोव ने कहा—तो तुम चर्च की शिक्षा में विश्वास रखते हो?

सैलेनिन ने निर्जीव दृष्टि से अपने मित्र के नेत्रों में झाँकते हुए कहा—निस्सन्देह।

निखल्यूडोव ने लम्बी साँस लेकर कहा—यह तो बड़ी विचित्र बात है।

सैलेनिन ने कहा—ख़ैर, फिर किसी दिन हमारी बातें होंगी। इसी समय उसके पास अदालत का अर्दली सम्मानपूर्वक आकर खड़ा हो गया। उसने उसकी ओर देख कर कहा—"मैं अभी आया।" इसके बाद उसने लम्बी साँस लेकर कहा—तो हमारी फिर भेंट होगी। पर मैं तुमको कहाँ खोजता फिरूँगा; तुम्हीं सात बजे भोजन के समय आ जाना। मेरा पता है 'नेड्ज़ डिन्सकाया' और उसने नम्बर दिया। वह केवल ओठों से मुस्कराता हुआ जाने को मुड़ा।

निखल्यूडोव ने कहा—"अगर आ सका तो आऊँगा।"—और उसे अनुभूति होने लगी कि उसका किसी समय का निकटस्थ और अन्तरङ्ग सहपाठी इस क्षणिक वार्तालाप की बदौलत अकस्मात्—यदि विपरीत नहीं तो—अपरिचित, दूरस्थ और अबोध्य हो गया।

डवोकेट ने गाड़ीवान को गाड़ी अपने पीछे-पीछे लाने की आज्ञा दी और ख़ुद निखल्यूडोव के साथ पैदल चल पड़ा। ऐडवोकेट ने निखल्यूडोव को एक कहानी सुनाई (उसने यह कहानी सीनेटरों की ज़ुबानी सुनी थी) कि किस प्रकार एक प्रधान सरकारी अधिकारी भेद खुलने पर क़ानून के अनुसार साइबेरिया भेजे जाने के बजाय साइबेरिया के एक नगर का गवर्नर बना दिया गया था। उसने इस कहानी का पूरा कुत्सित वर्णन करने के बाद विशेष प्रसन्नता के साथ सुनाना शुरू किया कि किस प्रकार कुछ प्रभावशाली व्यक्तियों ने प्रातःकाल के समय उनके रास्ते में पड़ते हुए एक सदैव अपूर्ण स्मृति-स्तम्भ के लिए एकत्र किया गया रुपया चुरा लिया था; किस प्रकार अमुक की रखेली सट्टे में लाखों रुपया जीत गई है; और किस प्रकार अमुक व्यक्ति अमुक के हाथ अपनी स्त्री बेचने को तैयार हो गया है। इसके बाद ऐडवोकेट ने उन उच्च पदस्थ व्यक्तियों के ग़बन की कहानी सुनाना शुरू किया,

जो जेलों मे बन्द होने के बजाय विभिन्न सरकारी सस्थाओं के सभापति पद की शोभा बढ़ा रहे थे। इन कहानियों का ऐडवोकेट के पास असम्य भण्डार था और उन्हें सुनाने में उसे विशेष आनन्द आता था और साथ ही उनसे यह भी नितान्त स्पष्टतापूर्वक प्रकट, हो जाता था कि पीटर्सबर्ग के उच्च पदस्थ कर्मचारी रुपया प्राप्त करने में जिन साधनों का उपयोग करते हैं, उनकी समता में स्वयं उसका अपने मुवक्किलो से रुपया लेने का ढङ्ग नितान्त न्याय और निर्दोष है। अतः जिस समय निखल्यूडोव ने मार्ग ही में एक गाड़ी ले ली और उसकी कहानी पूरी सुने बिना ही उससे रुख़सत ली, उस समय वह बड़ा चकित हुआ।

निखल्यूडोव बड़ा उदास हो रहा था। उसकी उदासी का प्रधान कारण यह था कि निर्दोष मसलोवा जिन असह्य यन्त्रणाओं को नित्यप्रति सह रही है, उन्हें सीनेट ने भी स्वीकृत कर दिया, और साथ ही यह भी कि इस निर्णय ने मसलोवा के जीवन के साथ उसके जीवन को ग्रन्थित करना और भी कठिनतर बना दिया। ऐडवोकेट जिन वर्तमान दुराचारों की गाथा इतने चाव से सुना रहा था, उन्होंने उसकी उदासी को और भी बढ़ा दिया था, और साथ ही उस शुष्क, निर्मम दृष्टि ने भी, जो किसी समय के स्पष्ट-वादी, मृदुल स्वभाव, कुलीन सैलेनिन ने उसे प्रदान की थी, उसके मन पर बहुत दुःखजनक प्रभाव डाला था।

घर पहुँचने पर द्वार-रक्षक ने उसे एक पत्र दिया और कुछ नाक-भौं चढ़ा कर कहा कि किसी स्त्री ने वह हॉल में बैठ कर लिखा था। यह शुस्टोवा की माँ का पत्र था। उसने लिखा था कि वह अपनी

पुत्री के उद्धारकर्ता और मुक्तिदाता को धन्यवाद देने और उससे वैसीलीवस्की स्थित पाँचवीं पंक्ति के—न० के मकान पर आने का अनुरोध करने आई थी। यह वीरा दुखोवा के कारण नितान्त आवश्यक है। उसे इसके लिए सशङ्कित होने की आवश्यकता नहीं है कि वे कृतज्ञता के उद्गारों से उसे तङ्ग कर देंगी। वे अपनी कृतज्ञता का ज़िक्र न करेंगी, बस उसे देख कर प्रसन्न होंगी। यदि सम्भव हो, तो क्या वह दूसरे दिन सुबह आने का कष्ट न उठायेगा?

एक पत्र उसके पुराने सहकारी अफसर और वर्तमान सम्राट के एडीकाङ्ग, जिससे निख्ल्यूडोव ने सम्प्रदायवादियों का प्रार्थना-पत्र सम्राट के हाथ में देने का अनुरोध किया था—बोगाटीरेव के पास से भी आया था, जिसमें उसने लम्बी-चौड़ी लिपि में लिखा था कि वह अपने वचन के अनुसार प्रार्थना-पत्र ख़ुद सम्राट के हाथ में दे तो देगा, पर उसे अभी-अभी सूझा है कि यदि निख्ल्यूडोव पहले उसी व्यक्ति से जाकर मिले, जिस पर सारी बात निर्भर करती हैं, तो और भी अच्छा रहेगा।

निख्ल्यूडोव ने पिछले कई दिनों में जो कुछ संस्कार ग्रहण किए थे, उनको देखते हुए वह किसी प्रकार की कार्य-सिद्धि से पूर्ण-तया हताश हो गया था। उसने मास्को में जो-जो योजनाएँ स्थिर की थीं, वे उन युवावस्था के स्वप्नों से बहुत-कुछ सादृश्य रखती थीं, जो प्रकृत जीवन में भ्रामक मोह मात्र सिद्ध होते है। पर तो भी उसने पीटर्सबर्ग में रहते हुए जो कुछ हो सकता था, उसे करना अपना कर्त्तव्य समझा। अतः उसने निश्चय किया कि वह दूसरे दिन बोगाटीरेव के पास जायगा और उससे परामर्श लेने के बाद

उस व्यक्ति से जाकर मिलेगा, जिसके ऊपर सम्प्रदायवादियों का मामला निर्भर करता है।

उसने अपने पोर्टफ़ालियो से सम्प्रदायवादियों का प्रार्थना-पत्र निकाला और उसे पढ़ना शुरू किया ही था कि दरवाज़े पर थप-थपाहट हुई और अर्दली ने सूचित किया कि काउन्टेस कैथेरीन इवानोवा उससे एक प्याला चाय पीने को आने का अनुरोध कर रही हैं।

निखल्यूडोव ने कहा कि वह अभी आता है और अपने पोर्ट-फ़ालियो में कागज़ रखने के बाद वह अपनी मौसी की बैठक में गया। रास्ते में उसने एक खिड़की में से झाँका तो उसे प्रवेश-द्वार के सामने मेरियट की घोड़ियों की जोड़ी खड़ी दिखाई दी, और सहसा उसका चेहरा उज्ज्वल हो उठा और वह मुस्कराने लगा।

मेरियट टोप पहने और—काली पोशाक नहीं—कई हल्के रङ्गों के कपड़े की पोशाक धारण किए और हाथ में प्याला पकड़े काउ-ण्टेस की कुर्सी के पास बैठी हुई किसी बात पर चहक रही थी और उसके सुन्दर हास्यपूर्ण नेत्र चमक रहे थे। जिस समय निखल्यू-डोव ने प्रवेश किया, उसी क्षण मेरियट ने कोई ऐसी मज़ेदार—और अश्लीलतापूर्ण मजेदार (जैसा कि निखल्यूडोव ने हँसने के ढङ्ग से अनुमान किया)—बात कही थी कि मृदुल स्वभावा, मोटी-ताज़ी कैथेरीन इवानोवा का स्थूल शरीर हँसी के मारे काँप रहा था। मेरियट अपने सुस्मित मुख को तनिक एक ओर को किए, अपना सिर तनिक झुकाए और अपने उल्लसित, सजीव मुख-

मण्डल पर एक विशेष शरारत भरी मुद्रा धारण किए, चुपचाप अपनी साथिन की ओर देख रही थी।

निखल्यूडोव ने जो दो-चार शब्द सुन पाए थे, उनसे उसने अनुमान कर लिया कि वे उस साइबेरियन गवर्नर वाले वृत्तान्त का ज़िक्र कर रही थीं और उसी के सिलसिले में मेरियट ने कोई ऐसी चटपटी बात कह दी थी कि काउण्टेस अपने आप पर बहुत देर तक क़ाबू न रख सकीं।

उसने खाँसते-खखारते हुए कहा—तू तो मुझे मार डालेगी।

निखल्यूडोव ने कहा—"कहिए, सकुशल ?"—और वह बैठ गया। वह मेरियट की उच्छृङ्खल प्रफुल्लता पर मन ही मन नुक़्ता-चीनी करने ही वाला था कि मेरियट ने उसके नेत्रों से व्यञ्जित होती हुई गम्भीरता और तनिक असन्तोष के दर्शन करते ही न केवल अपने चेहरे की मुद्रा ही, बल्कि अपनी मानसिक अवस्था तक बात की बात में बदल डाली ; क्योंकि उसकी ओर दृष्टिपात करते ही उसके मन में उसे प्रसन्न करने की मनोवृत्ति जाग उठी थी। वह भी सहसा गम्भीर और अपने जीवन से असन्तुष्ट हो उठी, मानो वह किसी चीज़ की खोज में प्रयत्नशील हो। कोई यह बात न थी कि वह पवित्रता का स्वाँग रच रही हो, उसने सचमुच अपनी वैसी ही मानसिक अवस्था बना ली थी कि जो स्वयं निखल्यूडोव की थी। पर यदि उससे पूछा जाता कि निखल्यूडोव की मानसिक अवस्था क्या है, तो वह इसका उत्तर देने में असमर्थ हो जाती।

उसने निखल्यूडोव से पूछा कि उसके काम-काज का क्या

हाल है। निखल्यूडोव ने उत्तर दिया कि सीनेट में अपील रद हो गई, और वहाँ उसे सैलेनिन मिला था।

"आह, क्या पवित्र आत्मा है! वह सचमुच ऐसा जीव है, जिसे न किसी प्रकार का भय है, न किसी प्रकार का पश्चात्ताप।"

'पवित्र आत्मा!' दोनों महिलाएँ कह उठीं। पीटर्सबर्ग के समाज में सैलेनिन के सम्बन्ध में यही प्रशंसा-सूचक शब्द व्यक्त होता था।

निखल्यूडोव ने पूछा—और उसकी स्त्री कैसी है?

"उसकी स्त्री? वैसे मैं नुक़्ताचीनी तो नहीं करना चाहती, पर वास्तव में वह उसे समझ ही नहीं पाई है।"

मेरियट ने वास्तविक समवेदना के साथ कहा—क्या यह सम्भव है कि वह भी अपील रद करने के ही पक्ष में थे? कितनी भयङ्कर बात है! मुझे बेचारी पर कितनी दया आ रही है!

निखल्यूडोव ने माथे में बल डाले और प्रसङ्ग बदलने की इच्छा से शुस्टोवा का ज़िक्र करना शुरू कर दिया, जो दुर्ग में क़ैद थी और जो मेरियट के हस्तक्षेप की बदौलत छोड़ दी गई थी। निखल्यूडोव ने मेरियट को उसके कष्ट के लिए धन्यवाद दिया, और इसके बाद वह कहने ही वाला था कि यह कितनी भयङ्कर बात दिखाई देती है कि यह स्त्री और इसका सारा परिवार केवल इसीलिए पीड़ित व कष्टित होता रहा कि किसी ने अधिकारियों को उसका स्मरण नहीं कराया कि मेरियट ने उसके कथन में बाधा दी और स्वयं अपना दोष व्यक्त किया।

उसने कहा—"अजी, तुम उसकी बात ही मत चलाओ। जिस दम मुझे अपने पति से मालूम हुआ कि उसे छोड़ा जा

सकता है, तब से मेरे मन में यही प्रश्न उठा कि यदि वह निर्दोष थी तो उसे क़ैद ही क्यों किया गया?" मेरियट ने निखल्यूडोव के हृदय की बात को व्यक्त करते हुए कहा—"कितनी कुत्सित बात है! कितनी गर्हित!"

काउन्टेस कैथेरीन इवानोवा ने देखा कि मेरियट उनके भान्जे पर मोहिनी मन्त्र फूंक रही है, और इससे उनका मनोरञ्जन हुआ। जब दोनों चुप हो गए तो वह बोलीं—"अच्छा देखो, एक नई बात। कल रात को ऐलाइन के यहाँ आओ तो कैसा? वहाँ कीज़वेटर मौजूद रहेंगे। और तू भी आएगी न?" उन्होंने मेरियट की ओर घूम कर पूछा। इसके बाद उन्होंने मौज से कहना शुरू किया—उन्होंने तुझे देखा था। तूने मुझसे जो कुछ कहा था वह मैंने उनसे भी कह दिया। उन्होंने कहा है कि तू जैसा कहता है वह बहुत अच्छा लक्षण है, और तू अवश्य ईसा के चरणों तक जा पहुँचेगा। कल तू अवश्य आना। मेरियट, इससे कह तो दे, और ख़ुद भी आ।"

"काउन्टेस, पहली बात तो यह है कि मुझे प्रिन्स को किसी प्रकार की सलाह देने का कुछ भी अधिकार नहीं है"—मेरियट ने कहा और निखल्यूडोव की ओर ऐसी दृष्टि से देखा जिससे स्पष्ट व्यञ्जित होता था कि काउन्टेस के शब्दों के प्रति मुख्यतया और रहस्यवाद के प्रति साधारणतया उन दोनों की जो मनोवृत्ति है उसे वह भली प्रकार समझती है—"और दूसरी बात यह है कि तुम्हें मालूम ही है, मैं इससे कुछ विशेष रुचि . ... ।"

"हाँ, मैं जानती हूँ—मैं जानती हूँ कि तू हमेशा किसी

बात का ग़लत रास्ता पकड़ती है और हमेशा अपनी मनमानी करती है।

मेरियट ने मुस्करा कर कहा—अपनी मनमानी करती हूँ? मैं तो धर्म में वैसी ही आस्था रखती हूँ, जैसी कोई साधारण सी गाँव वाली रखती होगी। और तीसरी बात यह है कि कल रात को मैं फ्रेञ्च थिएटर में जा रही हूँ।

काउन्टेस ने निखल्यूडोव से पूछा—"और तूने उस अभिनेत्री को भी देखा है—उसका क्या नाम है?" मेरियट ने प्रसिद्ध फ्रेञ्च ऐक्ट्रेस का नाम बताया—"तू उसे देखने ज़रूर जाना, बड़ी आश्चर्यजनक है!"

निखल्यूडोव ने मुस्करा कर कहा—मौसी, पहले मैं किसे देखने जाऊँ?—ऐक्ट्रेस के पास या उपदेशक के पास?

"बावलेपन की बातें मत कर।"

निखल्यूडोव ने कहा—शायद उपदेशक के पास पहले जाना ठीक होगा, बाद को ऐक्ट्रेस के पास; नहीं तो उपदेश-पिपासा शान्त हो जायगी।

"नहीं, फ्रेञ्च ऐक्ट्रेस से आरम्भ करो और बाद को प्रायश्चित्त कर लो।"—मेरियट बोली।

काउन्टेस ने कहा—अब तुम तो दोनों मिल कर मेरी हँसी उड़ाने लगे। उपदेशक उपदेशक हैं, और थिएटर थिएटर। अपने उद्धार के लिए रोनी सूरत बना कर मेकड़ा पूरने की क्या पड़ी है? आस्था रखनी चाहिए, और फिर आनन्द ही आनन्द है।

"मौसी, तुमसे अच्छा उपदेशक और कौन मिलेगा?"

मेरियट ने कहा—तुम्हें मैं बताऊँगी। कल रात को मेरे बॉक्स में आना।

"मुझे भय है कि मैं न ....."

अर्दली ने एक आगन्तुक के आगमन की सूचना देकर उनके वार्तालाप में विघ्न डाला। यह एक परोपकारिणी संस्था का सेक्रेटरी था, जिसकी सभापति काउण्टेस थीं।

काउण्टेस बोलीं—उसके जैसा नीरस आदमी ही मैंने नहीं देखा। अच्छा तो यही हो कि उससे बाहर ही मिल आऊँ। मेरियट, इसके लिए थोड़ी सी चाय तो तैयार कर। और यह झूमती-झामती बाहर चली गई।

मेरियट ने अपने सुदृढ़, यह कहना चाहिए, चौड़े हाथ का दस्ताना उतारा, जिसकी चौथी अँगुली अँगूठियों से भरी हुई थी। उसने चाँदी का चायदान—जिसके नीचे स्प्रिट लेम्प जल रहा था—पकड़ते हुए और कनी अँगुली विलक्षण रूप से बाहर निकालते हुए कहा—दूँ थोडी सी?

और इस समय मेरियट का चेहरा विषादपूर्ण और गम्भीर बना हुआ था।

वह बोली—मुझे यह देख कर बड़ा कष्ट होता है कि जिनकी सम्मति का मैं आदर करती हूँ, वे उस अवस्था से मुझे चक्कर में डाल देते हैं, जिसमें मैं पड़ी हूँ।

और जिस समय वह ये शब्द कह रही थी, उस समय ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो वह अभी रो देगी। और यद्यपि इन शब्दों का—यदि उनका विश्लेषण किया जाता तो—कोई अर्थ न निक-

लता, या यदि निकलता भी तो अनिश्चत सा, तथापि वे निखल्यू-डोव को असाधारणतया महत्वपूर्ण, साधु और गम्भीर दिखाई दिए—वह इस युवती मनोहारिणी और सुसज्जित स्त्री के उज्ज्वल नेत्रों की दृष्टि से इतना अधिक आकृष्ट हो गया था।

निखल्यूडोव उसकी ओर चुपचाप देखता रहा और अपनी दृष्टि न हटा सका।

वह बोली—क्या तुम यह समझ रहे हो कि मैं तुम्हारी आत्मा में जो कुछ हो रहा है उसे नहीं जानती। मैं क्या, सारा जगत जानता है कि तुम क्या कर रहे हो। यह एक प्रकट भेद है। और मैं तुम्हारे कार्य से सहमत हूँ। मुझे बड़ा हर्ष होता है।

"हर्षित होने की तो कोई बात नहीं है, मैंने अभी किया ही क्या है?"

"नहीं-नहीं; मैं तुम्हारे भावों को समझती हूँ, और मैं तुम्हारी उसको भी समझती हूँ। अच्छी बात है, मैं इसकी चर्चा न चला-ऊँगी।" उसने निखल्यूडोव के मुख पर असन्तोष के चिन्ह देख कर कहा। पर मेरियट स्त्री-सुलभ आत्म-प्रेरणा की सहायता से उस बात का अनुमान लगा कर, जो निखल्यूडोव को प्रिय थी, आकृष्ट करना चाहती थी। बोली—"पर मैं यह भी अच्छी तरह समझती हूँ कि तुम जेल में मनुष्यों को इस प्रकार पीड़ित होते देख कर उन सबकी सहायता करना चाहते हो, जिन्हें नित्य-प्रति दूसरों की निर्दयता और उदासीनता का भाजन बनना पड़ रहा है। मैं समझती हूँ कि अपना जीवन इस तरह हँसते-हँसते न्यौछावर

करने का क्या अर्थ है, और मैं इस कार्य में अपना जीवन भी न्यौछावर कर डालती, पर हम सबका अलग-अलग भाग्य है।"

"तो तुम अपने भाग्य से असन्तुष्ट हो क्या ?"

"मैं ?" उसने इस प्रकार पूछा मानो वह चकित हो उठी हो कि इस प्रकार का प्रश्न उससे भी किया जा सकता है। "मुझे सन्तुष्ट होने के सिवा और चारा ही क्या है, इसलिए मैं सन्तुष्ट हूँ। पर कलेजे का जो घुन है.... ।"

"और घुन को कभी शान्ति से न बैठने देना चाहिए। यह एक ऐसी अन्तर्ध्वनि है, जिसका पालन करना चाहिए।"—निखल्यूडोव ने जाल में फँसते हुए कहा।

बाद को अनेक बार निखल्यूडोव ने आज के वार्तालाप का स्मरण किया और प्रत्येक बार लज्जा से उसका सिर नीचा होगया। उसे उसके शब्दों का स्मरण आया, जो मिथ्या भाषण की अपेक्षा स्वयं उसी के शब्दों की प्रतिलिपि अधिक थे, और उसे उसके मुखमण्डल का स्मरण आया, जो जिस समय वह जेल के रोमाञ्चकारी जीवन और ग्राम्य जीवन का वर्णन कर रहा था उस समय उसकी ओर सहानुभूतिपूर्ण मनोयोग के साथ उसकी ओर देखते प्रतीत होते थे।

जिस समय काउण्टेस वापस आई तो उन्होंने देखा कि वे दोनों न केवल पुराने मित्रों की भाँति ही बातें कर रहे हैं, बल्कि उन दो अन्तरङ्ग मित्रों की भाँति जो उदासीन जन-समुदाय में एक दूसरे के हृदय की अवस्था को समझते हैं।

वैसे तो वे शक्ति के अन्याय, अभागों के पीडन, और जनता

के दारिद्रय का ज़िक्र कर रहे थे, पर उस वार्तालाप-ध्वनि को बीच में दोनों के नेत्र एक दूसरे की ओर निर्निमेष भाव से झांक रहे थे, और उनमें से एक के नेत्र बार-बार पूछ रहे थे—"क्या तुम मुझे प्यार करोगे?" और दूसरे के नेत्र उत्तर देते जा रहे थे—"हाँ, करूँगा।" और इस प्रकार स्त्री-पुरुष सम्बन्धी मनोवृत्ति ने अनपेक्षित और आकर्षक रूप धारण कर लिया था और वे प्रति क्षण एक दूसरे के निकटतर होते जा रहे थे।

मेरियट ने जाते-जाते कहा कि वह उसकी हर प्रकार सेवा करने को तैयार है, और उससे अनुरोध किया कि वह दूसरे दिन रात को थिएटर में अवश्य आवे—चाहे खडे-खडे ही सही, क्योंकि उसे इससे अत्यन्त आवश्यक बात कहनी है।

उसने अपने हीरों से जगमगाते हाथ पर दस्ताना चढ़ाते हुए लम्बी साँस लेकर कहा—नहीं तो फिर न जाने तुम्हें कब देख पाऊँगी? अच्छा बोलो, आओगे न?

निखल्यूडोव ने वचन दे दिया।

उस दिन रात को जब निखल्यूडोव अपने कमरे में अकेला हुआ और कण्डील बुझा कर पलङ्ग पर लेटा तो बहुत देर तक उसकी आँख न लग सकी। जिस समय वह मसलोवा की सीनेट के निर्णय की, हर हालत में उसके साथ रहने के अपने सङ्कल्प की और भूमि-परित्याग की बात सोच रहा था, उसी समय सहसा मेरियट का चेहरा और यह कहते समय कि 'अब न जाने तुम्हें कब देखूँगी?' उसका दीर्घ निश्वास और उसका दृष्टिनिपात प्रकट हुआ, और उसकी मुस्कराहट इतनी स्पष्ट थी कि वह स्वयं भी मुस्करा उठा,

मानो वह उसे सचमुच देख रहा हो। उसने स्वगत पूछा—"क्या मेरा साइबेरिया जाना वास्तव में ठीक होगा? और क्या मैंने सम्पत्ति परित्याग करके वास्तव में ठीक काम किया?"

और आज पीटर्सबर्ग की रात को—जब खिड़की के परदे से छन-छन कर आता हुआ प्रकाश कमरे में फैल रहा था—इन प्रश्नो के उत्तर नितान्त अनिश्चित रहे। सब कुछ विशृङ्खल और अव्यवस्थित हो गया था। उसने अपनी पहली मनोवृति और अपने विचारों की पहली सुव्यवस्था और सुशृङ्खलता का स्मरण किया, पर उनमें पहले जैसी वैधता और शक्ति का पता तक न था।

उसने सोचा—"और यदि यह सब आविष्कार करने के बाद इसके अनुरूप जीवन व्यतीत करने में असमर्थ होवे—यदि ठीक आचरण करना पश्चात्ताप हो रहा हो?" और इसका उत्तर पाने में असमर्थ होने पर उसके हृदय में इतनी प्रबल हताशा, विह्वलता और और व्यथा हो उठी जितनी इधर बहुत दिनों से उत्पन्न नहीं हुई थी, और वह इस प्रकार घोर निद्रा में अचेत हो गया, जिस प्रकार वह किसी समय ताशबाज़ी में बड़ी सी रक़म हार जाने पर हो जाया करता था।

निख्लूडोव दूसरे दिन सुबह को जागा तो उसे ऐसी अनुभूति हुई मानो पिछले दिन उसने कोई अनुचित कार्य किया हो। वह विचार करने लगा। उसे कोई अनुचित बात स्मरण न आ सकी, क्योंकि उसने कोई बुरा काम नहीं किया था। पर उसने बुरे विचारों से को प्रश्रय अवश्य दिया था, उसने सोचा था कि कटूशा से विवाह करने और अपनी सम्पत्ति का परित्याग करने के उसके सारे विचार अलभ्य स्वप्न-मात्र हैं; वह यह सब सहन करने में असमर्थ रहेगा कि यह सब कृत्रिम और अस्वाभाविक है, और फिर उसे पहले की भाँति ही रहना होगा।

उसने बुरा काम कोई नहीं किया था, पर उससे भी अधिक बुरी बात की थी; उसने बुरे विचारों को प्रश्रय दिया था, जहाँ से बुरे कार्यों का उद्भव होता है।

किसी बुरे काम की पुनरावृत्ति न करना भी सम्भव हो सकता है, और उसका पश्चात्ताप करना भी सम्भव हो सकता है; पर सारे बुरे कामों के मूल कारण बुरे विचार हैं।

कोई बुरा काम दूसरे बुरे कामों के लिए केवल मार्ग साफ़ कर देता है, पर बुरे विचार मनुष्य को अशासित रूप से उस मार्ग पर खदेड़ कर ले जाते हैं।

जिस समय निखल्यूडोव ने मन ही मन अपने पिछले दिन के विचारों को दुहराया तो वह आश्चर्य-चकित रह गया कि वह उनमें क्षण भर के लिए भी किस प्रकार विश्वास कर सका। उसने जो कुछ करने का निश्चय कर लिया है, वह चाहे कितना ही नवीन और कठिन क्यों न हो, वह जानता था कि वही उसके जीवन का एक मात्र सम्भव मार्ग हो सकता है, और अपने पुराने अभ्यस्त जीवन को फिर से अपनाना चाहे कितना ही सहज और स्वाभाविक हो, वह जानता था कि वह अवस्था उसकी मृत्यु की अवस्था होगी। गत दिवस के प्रलोभन उन भावों की अनुभूति से सादृश्य रखते थे, जिनकी अनुभूति कोई मनुष्य उस समय करता है जब वह घोर निद्रा से जाग कर उठा हो और पलँग पर थोड़ी देर और आराम से पड़ा रहना चाहता हो, यद्यपि वह अच्छी तरह जानता हो कि अब उठने का और उस उल्लासकारी कार्य को आरम्भ करने का वेला है, जो उसे दिन में करना होगा।

वह दिन उसका पीटर्सबर्ग-वास का अन्तिम दिन था, और वह उस दिन सुबह को शुस्टोवा से मिलने वैसलीवस्काय ओस्ट्रोवस्को गया।

शुस्टोवा दूसरी मञ्जिल पर रहती थी, और निखल्यूडोव पिछले रास्ते से होकर सीधा महकते हुए बावर्चीखाने में जा पहुँचा। एक वयस्क स्त्री अपनी आस्तीनें उलटे, ऐप्रन और चश्मा धारण किए

आग के पास खड़ी, दहकती हुई पतीली में कोई चीज़ चला रही थी।

उसने निखल्यूडोव की ओर अपने चश्मों के ऊपर से झाँकते हुए कहा—तुम्हें किससे मिलना है?

निखल्यूडोव को अभी उत्तर देने का अवसर कठिनता से मिला होगा कि स्त्री के चेहरे पर भीति और हर्ष के भाव उदित हो आए।

उसने अपने हाथ ऐप्रन पर पोंछते हुए कहा—"अहा, मित्र! पर बेटे तुम पिछले मार्ग से क्यों आए? हमारे मुक्तिदाता। मैं उसकी माँ हूँ। मेरी नन्हीं बच्ची को तो उन्होंने मार डाला। तुमने उसकी रक्षा कर ली।"—उसने निखल्यूडोव का हाथ पकड़ कर उसे चूमने की चेष्टा करते हुए कहा—"मैं कल तुम्हारे दर्शन करने गई थी। मेरी बहिन ने मुझसे कहा था—वह भी यहीं है। इधर से आओ बेटे।" शुस्टोवा की माँ ने निखल्यूडोव को एक तङ्ग रास्ते से ले जाते हुए, अपने बालों पर हाथ फेरते और कंघा ऊपर को खिसकाते हुए कहा—"मेरी बहिन का नाम कोर्नीलोवा है। तुमने उसका नाम तो सुना ही होगा"—उसने एक बन्द द्वार के आगे पहुँचते हुए फुसफुसा कर कहा—वह राजनीतिक मामलों में लग गई थी। बड़ी ही चतुर स्त्री है!

शुस्टोवा की माँ ने दरवाज़ा खोला और निखल्यूडोव ने एक छोटे से कमरे में पदार्पण किया, जहाँ एक सोफा पर मांसल शरीर की नन्हीं सी लड़की बैठी हुई थी। उसके बाल सुन्दर थे और अपनी माँ से मिलते-जुलते पीले चेहरे के पीछे घुँघराले लच्छों के रूप में पड़े हुए थे। वह सूती छींट का ब्लाउज़ पहने थी।

उसके सामने ही एक आरामकुर्सी पर एक युवक झुका हुआ—इतना झुका हुआ कि उसका पेट उसकी जङ्घाओं से जा लगा था—बैठा था। उसके दाढ़ी और मूँछें निकल आई थीं और वह फटी हुई सूती कमीज़ पहने था। वे दोनों वार्तालाप में इतने तल्लीन थे कि जब निखल्यूडोव कमरे में चला आया तब कहीं उन्होंने मुँह फेर कर देखा।

माँ ने कहा—लीडिया, प्रिन्स निखल्यूडोव! वही... .. ..।

पीली लड़की उछल खड़ी हुई और उद्विग्न भाव से अपने बालों की लट कान के पीछे डालते हुए, अपने बड़े-बड़े भूरे सशङ्कित नेत्रों से आगन्तुक की ओर देखने लगी।

निखल्यूडोव ने मुस्करा कर कहा—तो तुम वही भयङ्कर लड़की हो, जिसकी दुखोवा ने मुझसे सिफ़ारिश की थी?

लीडिया शुस्टोवा ने अपनी मृदुल, स्पष्ट, शिशु-सुलभ मुस्कराहट के द्वारा अपनी उज्ज्वल दन्त-पंक्ति दिखाते हुए कहा—"जी हाँ, वही। बुआ आपसे मिलने को बड़ी तरस रही थी—बुआ!" उसने दरवाज़े में से मृदुल, प्रफुल्लित स्वर में पुकार कर कहा।

निखल्यूडोव ने कहा—तुम्हारे पकड़े जाने से वीरा दुखोवा को बड़ा दु:ख हो रहा था।

लड़की ने टूटी हुई आरामकुर्सी की ओर, जिस पर से युवक उठ खड़ा हुआ था, सङ्केत करके कहा—आप यहाँ बैठिए।

उसने निखल्यूडोव को युवक की ओर ताकते देख कर कहा—मेरे चचेरे भाई ज़खारोव।

युवक ने निखल्यूडोव का लीडिया की तरह ही मृदुल भाव से

मुस्करा कर अभिवादन किया और जब निखल्यूदोव बैठ गया तो वह एक दूसरी कुर्सी लाकर उसके पास ही बैठ गया। एक सोलह वर्ष का स्वच्छ बालों का विद्यार्थी भी आया और चुपचाप खिड़की की सिल पर बैठ गया।

शुस्टोवा ने कहा—वीरा दुखोवा मेरी मौसी की बड़ी मिलने वाली है, पर मैं तो उन्हें जानती तक नहीं।

इसके बाद ही एक प्रफुल्लित चेहरे वाली स्त्री सफ़ेद ब्लाउज़ पहने और चमड़े की पेटी लगाए दूसरे कमरे से आ पहुँची।

उसने कहा—"सकुशल? आने के लिए धन्यवाद!"—और वह सोफा पर लीडिया के पास बैठ गई।

"अच्छा, और वीरा कैसी है? तुमने उसे देखा था? अपने भाग्य को किस प्रकार सहन करती है?"

निखल्यूदोव ने कहा—उन्हें कोई शिकायत नहीं है। वह कहती हैं कि उनके हृदय में स्वर्गीय भाव उठते हैं।

शुस्टोवा की मौसी ने मुस्करा कर सिर हिलाते हुए कहा—वीरा है ही ऐसी, उसे यही फबता है। उसे पहले समझना चाहिए। वह बड़ी सुशीला है। दूसरों के लिए सब कुछ, अपने लिए कुछ नहीं।

"नहीं, उन्होंने अपने लिए कुछ नहीं माँगा, उन्हें केवल आपकी भाञी की चिन्ता थी। उन्हें सब से अधिक दुःख इसी बात का था कि आपकी भाञी निरपराध ही पकड़ ली गई।"

मौसी ने कहा—बात सच्ची है। बड़ा भयङ्कर काम है। इस बेचारी को मेरे कारण इतने कष्ट झेलने पड़े।

लड़की ने कहा—ज़रा भी नहीं मौसी; तुम न होतीं तो भी मैं कागज़ लेकर रख लेती।

मौसी ने कहा—"मैं तुमसे कुछ अधिक जानती हूँ।"—फिर उसने निखल्यूडोव की ओर मुड़ कर कहा—देखो जी, यह ऐसे हुआ—एक व्यक्ति ने मुझे कुछ कागज़ रखने को दिए, मेरा कोई अपना घर तो था नहीं, इसलिए मैं उन्हे यहाँ ले आई। और उसी रात को पुलिस ने छापा मारा और वह कागज़ों के साथ बच्ची को भी पकड़ ले गई और अब तक बन्द किए रही और पूछती रही कि उसे बताना पड़ेगा कि उसे कागज़ कहाँ से मिले।

लीडिया शुस्टोवा ने बालों की लट, जो यथास्थान थी, उद्विग्न भाव से सँवारते हुए कहा—और मैने उन्हें बताया कब?

मौसी ने कहा—मैं कब कहती हूँ कि तूने बताया?

"यदि उन्होंने मिटिन को पकड़ लिया तो इसमें मेरा कोई दोष न था।"

माँ ने कहा—लीडिया बेटी, उस बात की चर्चा मत कर।

"क्यों न करूँ? मैं सारी बात बताऊँगी।"—और अब लीडिया लट को सँवार न रही थी, बल्कि अपनी अँगुली से लपेट कर खींच रही थी और उसका चेहरा लाल हो उठा था।

"तू भूल गई, कल यह कहते-कहते तेरी क्या दशा हो गई थी?"

"नहीं जी—मामा तुम मुझे अकेली छोड दो।......मैंने कुछ न बताया—मै चुप रही। जब उसने मुझे मिटिन और मौसी की बात पूछी तो मैं चुप रही; मैंने कह दिया कि मैं न बताऊँगी।"

"फिर यह..... पैट्रोव—।"

मौसी ने शुस्टोवा के वाक्य का अर्थ निखल्यूडोव को समझाने के लिए कहा—"पैट्रोव जासूस है, सिपाही, धोखेबाज़ है।"

लीडिया ने उत्तेजित भाव से शीघ्रतापूर्वक कहना शुरू किया—वह मुझे बहलाने-फुसलाने लगा। कहने लगा—"तुम मुझे जो कुछ बताओगी—उससे किसी का बाल तक बाँका न होगा। और इससे लाभ यह होगा कि बहुत से निरपराध आदमी, जिन्हें हम व्यर्थ ही कष्ट दे रहे हैं—बच जायँगे।" पर मैं बराबर कहे गई कि मैं न बताऊँगी। इस पर उसने कहा—"अच्छा, तुम खुद मत बताओ; पर मै किसी का नाम लूँ तो तुम मुकरना मत।" उसने मिटिन का नाम लिया।

बुआ ने कहा—इसका ज़िक्र छोड़ बच्ची।

"ओह, मौसी तुम बात मत काटो......"—और वह उद्विग्न-भाव से लट खींचती और चारो ओर देखती रही—और दूसरे ही दिन मैं क्या सुनती हूँ—मेरी दीवार पर हाथ मार कर मुझे बताया गया कि मिटिन पकड़े गए। मैं समझने लगी कि मैंने ही उनका भेद खोला, मैंने ही उन्हें पकड़वाया, और इससे मुझे इतना कष्ट हुआ कि मैं पगली सी हो गई।

"और फिर पता चल गया कि मिटिन केवल तेरे ही कारण न पकड़ा गया था।"

"पर मैं इस बात को न जानती थी। मैं सोचने लगी—"यह देखो, मैंने ही उन्हें पकड़वा दिया।" और मैं रात-दिन कमरे में चहलक़दमी करती और यही बात सोचती रहती—"यह देखो, मैंने

उन्हें पकड़वा दिया।" मैं लेट जाती और कपड़ा ओढ़ लेती। मेरे कानों में कोई कह उठता—"विश्वासघात! विश्वासघात! मिटिन के साथ विश्वासघात! मिटिन के साथ विश्वासघात!" मैं जानती हूँ कि यह सब भ्रम है, पर मेरे कानों में अब भी यही आवाज़ आती रहती है। मैं चाहती हूँ कि सो जाऊँ, पर नहीं सो सकती। कितना भयङ्कर बात है!" और यह कहते-कहते लीडिया अधिकाधिक उत्तेजित हो-होकर अधिकाधिक ज़ोर से बालों की लट खींचने और बार-बार चारों ओर देखने लगी।

माँ ने उसका कन्धा छूकर कहा—लीडिया बेटी, शान्त होओ।

पर शुस्टोवा अपने आप पर क़ाबू न कर सकी।

पर इसलिए और भी भयङ्कर हो उठा था कि—उसने बोलना आरम्भ किया, पर वह वाक्य पूरा न कर सकी, और उछल कर चीख़ मारती हुई कमरे से भाग गई।

उसकी माँ उसके पीछे जाने लगी।

खिड़की की सिल पर बैठे विद्यार्थी ने कहा—इन हरामज़ादों को फाँसी पर लटका देना चाहिए।

माँ ने कहा—क्यों, क्या हुआ?

"कुछ नहीं, मैं योंही कह उठा था.....।"—विद्यार्थी ने उत्तर दिया, और वह मेज़ पर पड़ा सिगरेट उठा कर पीने लगा।

चौदहवाँ परिच्छेद

मौसी ने सिगरेट सुलगाया और सिर हिला कर कहा—हाँ, एकान्त कारावास युवाओं को बड़ी हानि पहुँचाता है।

निखल्यूडोव ने कहा—युवाओं को क्या, सबको ही।

मौसी ने कहा—नहीं, सबके लिए नहीं। वास्तविक क्रान्तिकारियों के लिए तो मुझे बताया जाता है कि—यह शान्ति और निश्चिन्तता का वास है। जब तक आदमी के पीछे पुलिस लगी रहती है, तब तक वह हरदम अपने और अपने सहकारियों के लिए सशङ्कित रहता है और उसे खाने-पीने और कपड़े-लत्ते की आवश्यकता पड़ती रहती है, और जब वह पकड़ लिया जाता है तो उसके कन्धों से सारा उत्तरदायित्व दूर हो जाता है, और वह निश्चिन्त भाव से बैठ सकता है। मुझे तो यहाँ तक बताया गया है कि उन्हें गिरफ़्तार होने पर सचमुच शान्ति और हर्ष की सी अनुभूति होती है। पर हमारी लीडिया जैसे निर्दोष बच्चों के लिए—और वे हमेशा पहले निर्दोषों पर ही हाथ डालते हैं—यह आघात बड़ा

भयङ्कर होता है। वे स्वच्छन्दता के वञ्चित होने और बुरा भोजन तथा बुरी हवा मिलने से दुखी हों, सो बात नहीं—यह सब कुछ नहीं है। पहली बार पकड़े जाने पर जो नैतिक आघात होता है, यदि उसकी आशङ्का न हो तो इससे तीन गुने कष्ट सहन किए जा सकते हैं।

"आपको इसका अनुभव है?"

उसने खिन्न मृदुल मुस्कराहट के साथ कहा—मैं? मैं दो बार जेल में रह आई हूँ। जब मैं पहली बार पकडी गई थी तो मैंने कुछ न किया था। मैं बाईस बरस की थी, एक बच्चे की माँ थी, दूसरे की होने वाली थी। यद्यपि पति और पुत्री का विछोह और स्वतन्त्रता से वञ्चित होने से मुझे कष्ट तो बहुत हुआ, पर जिस समय मुझे मालूम हुआ कि अब मैं मनुष्य न रही हूँ, एक असबाव मात्र रह गई हूँ तो उससे मुझे जो वेदना हुई उसके मुक़ाबले में यह कुछ न थी। मैं अपनी नन्हीं पुत्री से विदा लेना चाहती थी, पर मुझे बताया गया कि मैं झटपट गाड़ी में सवार हो जाऊँ। मैंने पूछा कि—कहाँ ले जाई जा रही हूँ? जवाब मिला कि—जब मैं वहाँ पहुँचूंगी तो ख़ुद ही जान जाऊँगी। मैंने पूछा कि—मैंने क्या अपराध किया है—पर कोई उत्तर न मिला। जब मेरा बयान ले लिया गया तो मेरे कपडे उतार लिए गए और चिन्हित जेली कपडे पहना दिए गए और इसके बाद एक कोठरी खोल कर मुझे ढकेल दिया गया। दरवाज़ा बन्द था। बाहर रायफ़ल लिए सन्तरी पहरा दे रहा था और बार-बार भीतर झाँक लेता था—बस, उस समय मैं बड़ी घबराई। मुझे सबसे अधिक आश्चर्य यह देख कर हुआ कि सिपा-

हियों के अफ़सर ने मुझे एक सिगरेट दिया। वह जानता था कि आदमी सिगरेट पिया करते हैं; पर उसे यह भी जानना चाहिए था कि उन्हें स्वतन्त्रता और प्रकाश अच्छा लगता है, और माताएँ अपने बच्चों से और बच्चे अपनी माताओं से स्नेह करते हैं। फिर उन्होंने इतनी निर्दयता से मुझे प्रिय जनो से छीन कर किसी जङ्गली पशु की तरह जेल में क्यो बन्द कर दिया? और इन यन्त्रणाओं का प्रभाव भी बड़ा बुरा पड़ता है। जो कोई भगवान और मनुष्य में आस्था रखता है और समझता है कि मनुष्य परस्पर एक दूसरे से प्रेम करते हैं, उसे एक बार जेल में हो आने दो और उसकी सारी आस्था और सारा विश्वास नष्ट हो जायगा। बस, उसी समय से मेरा मानव जाति पर से विश्वास उठ गया है और मैं इतनी विषादमयी होगई हूँ!

लीडिया की माँ उस दरवाज़े पर आई, जिस पर से लीडिया शुस्टोवा गई थी और बोली कि वह बुरी तरह उद्विग्न हो रही है, और अब वापस न आ सकेगी।

मौसी ने कहा—और इस फूल जैसी बच्ची का सर्वनाश किस लिए किया गया? और मुझे यह सोच कर बड़ा कष्ट होता है कि इसकी एक मात्र कारण मैं ही हूँ।

माँ ने कहा—ईश्वर ने चाहा तो गाँव में पनप जायगी। हम उसे उसके बाप के पास भेज देंगे।

मौसी ने कहा—"बेटे, तुम सहायता न करते तो वहीं मर जाती। धन्यवाद! पर मैं तुमसे जिस लिए मिलना चाहती थी वह यह है कि मैं तुमसे यह अनुरोध करना चाहती थी कि वीरा दुखोवा

के पास मेरा एक पत्र पहुँचा दो।"—और उसने अपनी जेब से एक पत्र निकाला—लिफाफ़ा बन्द नहीं है, इसे पढ़ कर देख लो, यदि जी गवाही दे तो दे देना, न दे तो फाड़ कर फेंक देना। कोई ऐसी फसाने वाली बात लिखी हुई नहीं है।

निखल्यूदोव ने पत्र ले लिया और उसे वीरा दुखोवा को देने का वायदा करके वह विदा लेकर वहाँ से रवाना हो गया। उसने बिना पढ़े ही लिफ़ाफ़ा बन्द कर दिया और वह जैसा था वैसा ही दुखोवा के हवाले करने का इरादा किया।
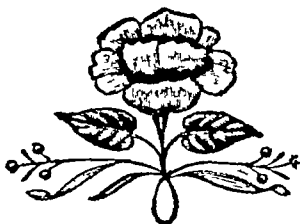
"मोहिनी-मन्त्र ?"—बोगाटीरेव ने दुहराया, और ठहाका मार कर हँस पड़ा। इसके बाद वह अपनी मूँछें पोंछते-पोंछते बोला—"तो तुम कुछ नहीं खाओ-पियोगे? अच्छा, तुम्हारी मर्ज़ी। तो तुम जाओगे न? एँ। और अगर वह कुछ न करे-करावे तो प्रार्थना-पत्र मुझे दे देना और मैं कल को सम्राट के हाथ में दे दूँगा।" उसने उच्च स्वर में चिल्लाते हुए, उठ कर क्रॉस-चिन्ह बताते हुए—ठीक उसी प्रकार अनायास भाव से, जिस प्रकार उसने मुँह पोंछा था—और फिर तलवार कसते हुए कहा।

"अच्छा सलाम, अब मुझे भाग जाना चाहिए।"

निखल्यूडोव ने कहा—"हम दोनों चल रहे हैं।" और उसने बोगाटीरेव का बलिष्ट चौड़ा हाथ उस प्रसन्न अनुभूति के साथ हिलाया जो किसी स्वस्थ कान्त पदार्थ के सम्बन्ध में उसके हृदय में सदैव उत्पन्न हो जाया करती थी। इसके बाद वह प्रवेश-द्वार पर से उससे बिदा हो गया।

यद्यपि उसे किसी प्रकार के भले की आशा न थी, पर तो भी वह बोगाटीरेव की बात मान कर टोवोरोव से मिलने चल दिया।

टोवोरोव जिस पद पर शोभा दे रहा था, यद्यपि उसमें उद्देश की विषमता का विलक्षण मिश्रण था, फिर भी उस पर केवल वही आदमी शोभा दे सकता था, जो बुद्धि का मन्द हो और नैतिक आचरण की दृष्टि से नीरस। और टोवोरोव में ये दोनों नकारात्मक गुण मौजूद थे। उसकी अवस्था की विषमता यह थी। उसका कर्त्तव्य था उस चर्च का बाह्य रूप में प्रतिपादन और उसकी रक्षा करना (चाहे हिंसात्मक उपायों से हो या अहिंसात्मक उपायों

से), जो स्वयं अपनी ही घोषणा के अनुसार भगवान द्वारा स्थापित किया गया था और जिसे न कोई नारकीय शक्ति नष्ट कर सकती थी न मानवी। इस दैवी और अमर संस्था का प्रतिपादन और संरक्षण होता था एक मानवी संस्था—पवित्र सायनाड—के द्वारा, जिसकी व्यवस्था टोवोरोव और उसके अधीनस्थ कर्मचारी करते थे। टोवोरोव इस विषमता को न देखता था। उसका सरोकार तो केवल इस बात से था कि कहीं कोई रोमन कैथलिक सम्प्रदाय का पादरी या कोई सम्प्रदायवादी उस चर्च को नष्ट न कर दे, जिसे नारकीय शक्ति तक कोई क्षति न पहुँचा सकती थी। टोवोरोव को उन सारे व्यक्तियों की भाँति, जो उस आधारभूत धार्मिक भाव से वञ्चित होते हैं, जो मानव जाति के भ्रातृत्व और समानता को मानता है—दृढ़ धारणा थी कि जन-साधारण उससे बिल्कुल इतर जीव हैं, और जिन बातों की जनता को आवश्यकता है, वह स्वयं उनके बिना भी काम चला सकता है। क्योंकि वास्तव में वह किसी में आस्था नहीं रखता था और अपनी इस अवस्था को अत्यन्त सुविधाजनक और आनन्दप्रद समझता था। पर साथ ही उसे भय था कि जन-साधारण भी कहीं ऐसे ही न हो उठें, और वह उन्हें इस विपत्ति से बचाने का—स्वय अपने ही शब्दों में—पवित्र उद्योग करने में सदैव तैयार रहता है।

एक पाकविद्या की पुस्तक मे हमने लिखा देखा है कि कुछ जन्तु जीवित उबाला जाना पसन्द करते हैं। टोवोरोव भी रूसी जनता का इसी प्रकार ज़िक्र करता, मानो वे सब स्वय मोहक भ्रान्ति में रहना चाहते हों। अन्तर इतना ही था कि टोवोरोव जिस समय यह

कहता तो उसका अभिप्रायः वास्तव में यही होता, जब कि पाक-विद्या की पुस्तक के सम्बन्ध में ऐसी बात नहीं कही जा सकती।

वास्तव में धर्म के प्रति उसकी अवस्था ठीक वैसी ही थी, जैसी उन कीड़ों के प्रति मुर्गी पालने वालों की होती है, जो अपनी मुर्ग़ियों को उन कीडों का भोजन कराते हैं। वे कीड़े बड़े घृणित होते हैं, पर मुर्ग़ियों का वह प्रिय खाद्य हैं, अतः मुर्गियों को कीड़ों का आहार कराना ठीक काम है।

निस्सन्देह इवेरियन, कज़ान और स्मोलेन्स्क की 'जनक-जननियों' की प्रतिमाओं की पूजा करना घोर मूर्तिपूजा है, पर जन-साधारण इसे ही पसन्द करते हैं, इसलिए यह भ्रान्त धार्मिक धारणा जारी रहनी चाहिए। बस, टोवोरोव की यही धारणा थी, और वह यह न विचारता था कि जन-साधारण भ्रान्त धार्मिक धारणाओं में केवल इसलिए रहना पसन्द करते हैं कि उसके जैसे निर्दय आदमी हमेशा से थे और हमेशा रहेंगे, जो स्वय ज्ञान का प्रकाश प्राप्त करने पर उनको भी उस निविड़ अन्धकार से निकलने में सहायता प्रदान करने के बजाय उस प्रकाश का उपयोग उलटे उन्हें गम्भीरतम गर्त में ढकेलते रहने में करते हैं।

जिस समय निखल्यूडोव ने प्रवेश किया, उस समय टोवोरोव अपनी केबीनेट में बैठा एक ऐसी कुलीन महन्तिनी महिला मे बातचीत कर रहा था, जो पश्चिमी रूस में सनातन यूनानी धर्म का प्रसार करने का पुनीत कार्य कर रही थी। वे लोग रोमन कैथलिक सम्प्रदाय के अनुयायी थे, पर यह नवीन धर्म उनके गले में जबर्दस्ती ठूँसा जा रहा था।

मुलाक़ाती कमरे में निखल्यूडोव को एक अफ़सर मिला, जिसने उससे आने का प्रयोजन पूछा, और जब उसे पता चला कि वह सम्राट के नाम एक प्रार्थना-पत्र देना चाहता है तो उसने पूछा कि क्या वह पहले प्रार्थना-पत्र पढ़ लेने की अनुमति देगा? निखल्यूडोव ने वह दे दिया और वह उसे कैबीनेट में ले गया। महन्तिनी अपना नक़ाब और हुड उड़ाती हुई अपने श्वेत हाथों में (जिनके नाख़ून ख़ूब सुपोषित थे) सन्यास दण्ड पकडे हुए कैबीनेट से बाहर चली गई। टोबोरोव प्रार्थना-पत्र पढ़ रहा था और सिर हिला रहा था। वह उसके स्पष्ट और ज़ोरदार शब्दों को पढ़ कर चकित रह गया था।

उसने प्रार्थना-पत्र पढ़ते-पढ़ते मन ही मन कहा—"यदि यह सम्राट के हाथ में जा पहुँचा तो वह न जाने क्या समझेंगे और क्या पूछ बैठेंगे।" उसने प्रार्थना-पत्र मेज़ पर रख दिया, घण्टी बजाई और निखल्यूडोव को भीतर लाने की आज्ञा दी।

उसे इन सम्प्रदायवादियों का मामला अच्छी तरह याद था; उसके पास पहले भी उनका प्रार्थना-पत्र आ चुका था। मामला इस प्रकार था—ये लोग वैसे ईसाई थे, पर यूनानी सनातन-धर्म से च्युत हो गए थे। पहले इन्हें उपदेश दिए गए, फिर इन पर मामला चलाया गया, पर वहाँ से मुक्त हो गए। इसके बाद विशप और गवर्नर ने आपस में सलाह करके घोषित कर दिया कि उनके विवाह अवैध हैं—और इस प्रकार पति को पत्नी से, और पिता को पुत्र से अलग करके निर्वासित करना शुरू कर दिया। यही पति-पत्नी और पिता अब प्रार्थना कर रहे थे कि उन्हें अलग न किया

जाय। टोवोरोव को याद आया कि किस प्रकार जब उसकी निगाह तले उक्त मामला लाया गया था तो वह द्विविधा में पड़ गया था कि क्या सचमुच इस व्यापार का अन्त करना उचित न होगा। पर बाद को उसने सोचा था कि यदि परिवार के व्यक्तियों को एक दूसरे से अलग करने की आज्ञा का समर्थन कर दिया जायगा तो उतना अनर्थ न होगा, जितना अनर्थ इन देहातियों को वहाँ रहने देने से होगा जहाँ यूनानी सनातन धर्मानुयायी रहते हैं; और इस प्रकार राष्ट्रीय धर्म के ह्रास होने का भय बना रहेगा। और इसमें बिशप का उत्साह भी विशेष रूप से देखा गया था, अतः उसने निश्चय किया था कि मामला जैसे चल रहा है, चलने दिया जाय।

पर अब उन सम्प्रदायवादियों की पीठ पर निखल्यूडोव जैसा सहायक खड़ा हो गया था और सम्भव था कि मामला सम्राट के आगे पहुँच जाता और उन्हें इसे नृशंसतापूर्ण कार्य बताया जाता—और भी—कुल बात विदेशी समाचार-पत्रों तक जा पहुँचती। अतः उसने तत्काल अनपेक्षित सङ्कल्प कर लिया।

वह निखल्यूडोव से खड़े-खड़े मिला और बोला—"कहिए कैसे मिज़ाज हैं?" उसने ऐसा भाव जताया मानो वह बड़ा काम-काजी आदमी हो। और इतना कहने के बाद ही वह फ़ौरन काम की बात में लग गया—"मैं इस मामले को जानता हूँ। नामों को देखते ही मुझे इस शोचनीय व्यापार की याद आ गई।" उसने निखल्यूडोव को प्रार्थना-पत्र दिखाते हुए कहा—आपने मुझे इसका स्मरण करा दिया, इसके लिए मैं आपका बड़ा आभारी हूँ। यह सब प्रान्तीय अधिकारियों के अनुचित उत्साह का परिणाम है।

निखल्यूडोव चुपचाप खड़ा रहा और अपने सामने आए हुए इस पीले, निश्चेष्ट चेहरे को देख कर उसके हृदय में उसके प्रति सहृदयता का नहीं, किसी और ही प्रकार का भाव उत्पन्न हो उठा।

"और मैं इन सारे फैसलों के रद्द करने की और देहातियों को अपने-अपने परिवार में जा मिलने की आज्ञा दे दूँगा।"

"तो मुझे सम्राट के पास प्रार्थना-पत्र भेजने की कोई ज़रूरत नहीं है?"

"मैं अपना निश्चयात्मक वचन देता हूँ!" उसने 'मैं' पर इस प्रकार ज़ोर डाल कर कहा मानों उसे स्वयं दृढ़ विश्वास था कि उसकी ईमानदारी के लिए 'उसका' वचन सबसे बड़ी गारण्टी है—"सबसे अच्छा यही रहेगा कि मैं फौरन लिख दूँ।" आप तशरीफ़ रखिए।

और वह मेज़ के पास जाकर लिखने लगा। निखल्यूडोव बैठा नहीं; वह इस तङ्ग चँदुली खोपड़ी और मोटे, नीली नसों वाले हाथ की ओर देखता रहा, जो इतनी शीघ्र गति से क़लम चला रहा था। और उसे आश्चर्य हुआ कि इस निर्जीव, भाव-शून्य से आदमी के हृदय में ऐसी क्या दया की बाढ़ आ गई जो यह इतनी सावधानतापूर्वक सम्प्रदायवादियों का कार्य करने में लग गया।

टोपोरोव ने लिफ़ाफ़ा बन्द करके मुस्कराहट जैसी रेखा उत्पन्न करने की चेष्टा करते हुए कहा—अब आप अपने मुवक्किलों को बता दीजिए।

निखल्यूडोव ने लिफ़ाफ़ा लेते हुए कहा—तो फिर इन लोगों को इतना कष्ट क्यों दिया गया?

टोवोरोव ने अपना सिर उठाया और वह मुस्कराया, मानो वह निखल्यूडोव के प्रश्न से प्रसन्न हुआ हो—यह तो मैं आपको नहीं बता सकता। मैं केवल इतना कह सकता हूँ कि प्रजा के हितों की रक्षा करते समय धार्मिक मामलों में अत्यन्त उत्साह की सम्भावना बनी रहती है, और यह अत्यन्त उत्साह की सम्भावना उतनी भयानक नहीं होती जितनी आजकल फैलती हुई उदासीनता . ..।

"पर यह कैसे हुआ कि धर्म के नाम पर धर्म और सदाचरण के प्रारम्भिक लक्षण को इस प्रकार भङ्ग किया गया—परिवारों को छिन्न-भिन्न कर दिया गया?"

टोवोरोव उसी प्रकार कृपा-भाव से मुस्कराता रहा और उसके रङ्ग-ढङ्ग से ज्ञात होता था कि वह निखल्यूडोव के प्रश्नों से मन ही मन प्रसन्न हो रहा है। वह अपने आपको राजनीतिक दूरदर्शिता के जिस उच्चतम शिखर पर पहुँचा हुआ समझता था, उस पर से उसे निखल्यूडोव की सारी बातें एक जैसी सुन्दर और एक पक्ष की प्रतीत होती थीं।

उसने कहा—"व्यक्तिगत दृष्टिकोण से आपको यह अवश्य दिखाई देता होगा, पर राज्य-शासन सम्बन्धी दृष्टिकोण से देखते सारी बातों का रूप बिलकुल ही बदल जाता है। अच्छा अब मैं आपसे विदा चाहूँगा!" और उसने सिर झुकाया और निखल्यूडोव की ओर अपना हाथ बढ़ाया।

निखल्यूडोव ने उसका हाथ दबाया और फिर चुपचाप शान्ति-पूर्वक बाहर चला गया। उसे मन ही मन पश्चात्ताप हो रहा था कि उसने उससे हाथ क्यों मिलाया?

उसने बाहर जाते-जाते मन ही मन कहा—"प्रजा के हित ! तुम्हारे हित नहीं !—शूद्र कहीं का !" और उसने उन लोगों का स्मरण किया, जिन पर उन संस्थाओं की कार्यशीलता का प्रयोग किया जाता है, जो धर्म के संरक्षण और जनता के शिक्षण का बीड़ा उठा कर ही आरम्भ होती हैं। उसने उस स्त्री का स्मरण किया, जिसे चुरा-छिपा कर शराब बेचने के अपराध में कैद कर लिया गया था। उस लड़के का स्मरण किया, जिसे चोरी के अपराध में क़ैद किया गया था। उस शोहदे का स्मरण किया, जिसे शोहदापन करने के अपराध में कैद किया गया था। उस अग्नि-काण्ड करने वाले का स्मरण किया, जिसे मकान में आग लगाने के अपराध में क़ैद किया गया था। उस बैङ्कर का स्मरण किया, जिसे जालसाज़ी के अपराध में कैद किया गया था, और अन्त में उस अभागी शुस्टोवा का स्मरण किया, जिसे केवल इसलिए कैद किया गया था कि वे उसके पेट से बात निकालना चाहते थे। इसके बाद उसने उन सम्प्रदायवादियों की बात सोची, जिन्हें सनातन-धर्म के विरुद्ध आचरण करने पर दण्ड दिया गया था, और गुर्केविच की बात सोची, जो प्रतिनिधि शासन चाहता था, और उसे स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ा कि इन सारे व्यक्तियों को जो जेल, निर्वासन यन्त्रणाएँ दी गई थीं वे कोई इसलिए नहीं कि उन्होंने कोई अवैध कार्य किया था या न्याय के विरुद्ध आचरण किया था; बल्कि केवल इसलिए कि वे उन श्रीमानों और शासकों के उस सम्पत्ति के उप-भोग करने में बाधा डालते थे, जो उन्होंने जन-साधारण से छीन ली थी। और वह चुरा-छिपा कर, बिना लायसेन्स शराब बेचने

वाली स्त्री, नगर में सेंध लगाने वाला चोर, विप्लवकारी घोषणा-पत्र छिपाने वाली शुस्टोवा, मिथ्या धार्मिक धारणाओं को अस्त-व्यस्त करने वाले सम्प्रदायवादी और प्रतिनिधि शासन चाहने वाला गुर्केविच—सब एक सिरे से बाधक थे। निखल्यूडोव को स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगा कि ये सारे अधिकारी—उनकी मौसी के पति से लगा कर, मय सीनेटरों और टोबोरोव के, ये मन्त्रित्व के पदों की शोभा बढ़ाने वाले, स्वच्छ—नियत और महत्वपूर्ण सब सज्जन केवल वास्तविक सङ्कट को दूर करने की चिन्ता में लगे रहते हैं। और इस प्रकार न केवल इस नियम का ही उल्लङ्घन किया जाता है, कि किसी एक निर्दोष व्यक्ति के दण्डित होने की अपेक्षा दस अपराधियों का बचे रहना अधिक अच्छा है, बल्कि इसके विपरीत किसी वास्तविक सङ्कटमय व्यक्ति से छुटकारा पाने के लिए दस निर्दोष व्यक्तियों को दण्ड दिया जाता है। ठीक जिस प्रकार किसी व्यक्ति का सड़ा हुआ अङ्ग काटते-काटते कोई उसका अच्छा अङ्ग भी काट डालता हो।

निखल्यूडोव को यह व्यक्तीकरण बड़ा सुबोध और सहज प्रतीत हुआ ; पर उसके सुबोधपन और सहजपन ने उसे द्विविधा में डाल दिया कि क्या उसे वह वास्तव में स्वीकार कर लेना चाहिए? क्या यह सम्भव है कि ऐसे जटिल प्रदर्शन का इतना सहज और इतना भयावह अभिव्यक्तीकरण हो सकता है? क्या यह सम्भव है कि ये न्याय, नियम, धर्म, और परमात्मा से सम्बन्ध रखने वाले शब्द निरङ्कुशता और नृशंसता के आवरण मात्र हैं?

खल्यूडोव उस दिन शाम को ही पीटर्सबर्ग से रवाना हो जाता, पर उसने मेरियट को थिएटर में मिलने का वचन दे दिया था; और यद्यपि वह जानता था कि उसे अपने वचन की रक्षा न करनी चाहिए, फिर भी उसने अपने आपको भुलावे में रक्खा कि वचन भङ्ग करना ठीक न होगा।

उसने स्वगत प्रश्न किया—"क्या मैं इन सारे प्रलोभनों का सम्वरण करने में समर्थ हूँ? मै अन्तिम बार प्रयत्न करके देखूँगा।"—पर इस आत्म-जिज्ञासा मे वह पूर्ण सरलता से काम न ले रहा था।

वह जब शाम की पोशाक पहने थिएटर में पहुँचा तो नाटक का दूसरा अङ्क आरम्भ हो गया था और उसमें वह प्रसिद्ध विदेशी ऐक्ट्रेस दुबारा और एक नए ढङ्ग से दिखा रही थी कि क्षयरोग-ग्रस्त स्त्रियाँ किस प्रकार मरती हैं।

थिएटर खचाखच भरा हुआ था। निखल्यूडोव के पूछने पर मेरियट के बॉक्स की ओर तत्काल और अत्यन्त सम्मानपूर्वक सङ्केत कर दिया गया। बॉक्स के बाहर एक नौकर वर्दी पहने खड़ा था। वह निखल्यूडोव को देख कर इस प्रकार झुका जिस प्रकार किसी परिचित व्यक्ति को देख कर झुका जाता है। उसने बॉक्स का द्वार खोला।

सामने की पंक्ति वाले बॉक्सों के सारे व्यक्ति—खड़े या बैठे, निकट या दूर, अपने भूरे, चमकीले, चँदुले या घुँघराले सिर लिए—उस कृश, अस्थिचर्मावशिष्ट एक्ट्रेस को, जो रेशम और लेस से सजी-धजी उनके सामने तड़प रही थी और अप्राकृत स्वर में कुछ कह रही थी, देखने में तन्मय थे।

दरवाज़ा खुलते ही किसी ने कहा 'हुश!' और निखल्यूडोव के चेहरे पर से होकर गर्म और ठण्डी हवा के दो झोंके गुज़र गए।

बॉक्स में मेरियट थी, एक बड़ी सी टोपी पहने महिला थी, और दो पुरुष थे—एक मेरियट का पति जनरल—लम्बे क़द का सुन्दर, कठोर और अभेद्य चेहरे और रोमन नाक वाला आदमी, जो वर्दी पहने था और दूसरा सुन्दर सा आदमी, जिसकी बड़ी गलमुच्छें ठोढ़ी पर से मुँडी हुई थीं।

पतली-दुबली नन्हीं सी मेरियट ने नीचे काट की पोशाक पहने, जिसमें से होकर उसके सुन्दर, सुडौल, ढलवाँ कन्धे चमक रहे थे और गर्दन के पास कन्धों की समाप्ति पर एक नन्हाँ सा काला तिल शोभा दे रहा था—तत्काल मुँह फेरा और स्वागत तथा कृतज्ञता की मुस्कराहट के साथ (जिसमें एक विशेष मर्म निहित था)

अपने पङ्खे से निखल्यूडोव को अपने पीछे की कुर्सी पर स्थान ग्रहण करने का सङ्केत किया।

पति ने निखल्यूडोव की ओर उस शान्त गम्भीर भाव से देखा, जिसके साथ वह हर एक काम किया करता था। और फिर उसका अभिवादन करके अपनी पत्नी से दृष्टि-विनिमय किया, जिसमें स्वामित्व, एक सुन्दरी स्त्री के पतित्व का भाव स्पष्ट रूप से प्रदर्शित होता था।

आत्म-कथन समाप्त होने पर थिएटर तालियों से गूँज उठा। मेरियट उठी और अपनी खसखसाती हुई रेशमी पोशाक हाथ में थाम कर बॉक्स के पीछे पहुँची और वहाँ उसने निखल्यूडोव का अपने पति से परिचय कराया।

जनरल ने अपने नेत्रों से बराबर मुस्कराते हुए कहा कि उसे बड़ी प्रसन्नता हुई और इसके बाद वह अबोध्य रूप से चुप हो गया।

निखल्यूडोव ने मेरियट से कहा—आपको वचन न दिया होता तो मैं आज चला गया होता।

निखल्यूडोव के शब्दों से जो ध्वनि निकलती थी, उसके उत्तर में मेरियट बोली—"यदि आपको मेरे देखने की उत्सुकता नहीं है, तो आपको वह आश्चर्यजनक ऐक्ट्रेस तो देखने को मिलेगी। क्यों जी, उसका अन्तिम दृश्य कितना सुन्दर था!"—उसने अपने पति की तरफ मुड़ कर पूछा।

पति ने अपना सिर हिलाया।

निखल्यूडोव ने कहा—इन सब बातों का मेरे हृदय पर कोई

प्रभाव नहीं पड़ता। मैं वास्तविक पीड़ाएँ इतनी देख चुका हूँ कि......।

"हाँ, बैठ जाइए और सुनाइए।"

पति सुनता रहा और उसके नेत्र अधिकाधिक व्यंग्य भाव से मुस्कराते गए।

"मैं उस स्त्री को देखने गया था, जिसे इतने दिनों कैद रखने के बाद अभी छोड़ा गया है। बेचारी बिलकुल ध्वस्त हो गई है।"

मेरियट ने अपने पति से कहा—मैंने तुमसे इसी स्त्री की बात कही थी।

पति ने शान्त भाव से अपनी मूँछों के नीचे से, व्यंग्य भाव से मुस्कराते हुए कहा—हाँ, मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई कि उसे स्वतन्त्र किया जा सका। मैं जाकर सिगरेट पी आऊँ।

निखल्यूदोव बैठा-बैठा प्रतीक्षा करता रहा कि मेरियट ऐसी कौन सी आवश्यक बात कहेगी। पर मेरियट ने न कुछ कहा ही, और न कुछ कहने की चेष्टा ही की। वह बराबर उस अभिनय के सम्बन्ध में—जिसका उसकी सम्मति में निखल्यूदोव पर विशेष रूप से प्रभाव पड़ना चाहिए था—बोलती और हास-परिहास करती रही।

निखल्यूदोव जान गया कि उसे कहना-सुनना कुछ नहीं है और वह केवल अपनी तड़क-भड़क की सन्ध्याकालीन पोशाक से प्रस्फुटित होते हुए रूप-लावण्य और कन्धों तथा नन्हें तिल की सुन्दरता से उसे चौंधिया देना चाहती है, और इससे उसे हर्ष भी हुआ और घृणा भी।

निखल्यूदोव के नेत्रों के लिए इस प्रकार की वस्तुओं पर जो

मनोहारी आवरण ढका रहता था वह तो न हटा था—पूर्ववत् था—पर अब मानो वह उस आवरण को भेद कर वस्तु-स्थिति को देख सकता था। उसने मेरियट की ओर देखा और उसकी मुग्ध-भाव से प्रशंसा की; पर साथ ही वह यह भी जानता था कि वह मिथ्या-वादिनी है और एक ऐसे पति के साथ रहती है जो शत-सहस्र मनुष्यों के रोदनाश्रुओं के द्वारा अपने उन्नति-पथ का निर्माण कर रहा है, और वह स्वयं इस ओर से पूर्णतया उदासीन है कि कल उसने जो कुछ कहा था वह बिलकुल असत्य था और उसकी हार्दिक कामना यदि कोई है तो यह कि—और इसका कारण न वह जानता था, न वह जानती थी—उसे अपने ऊपर किस प्रकार आसक्त कर ले। और इससे वह आकृष्ट भी हुआ और हताश भी। उसने कई बार उठने के लिए टोप उठाया, पर फिर भी बैठा रहा।

पर अन्त में जब मेरियट का पति अपनी मूँछों से आती तम्बाकू की दुर्गन्ध फैलाता हुआ और निखल्यूडोव की ओर घृणा-पूर्ण कृपाभाव से देखता हुआ आ पहुँचा तो निखल्यूडोव दरवाज़ा बन्द होने से पहले ही बॉक्स से बाहर निकल गया और अपना ओवरकोट लेकर थिएटर के बाहर चला गया।

नेवस्की रोड पर से घर की ओर जाते हुए उसकी दृष्टि बलात् एक लम्बे क़द और सुन्दर चेहरे-मुहरे की स्त्री की ओर उठ गई, जो उसके आगे-आगे बेहद तड़क-भड़क के कपड़े पहने जा रही थी। अपनी कुत्सित शक्ति की सचेतनता उसके चेहरे और शरीर के सारे अवयवों में विद्यमान थी। जो कोई उसके पास से निकलता या उसके पास से गुज़रता वही उसकी ओर घूर कर देखता। निखल्यू-

डोव जल्दी-जल्दी जा रहा था। और जब वह उसके पास से गुज़रा तो उसकी ओर देखे बिना न रह सका। उसका चेहरा सम्भवतः रँगा हुआ था, और सुन्दर दिखाई देता था। उस स्त्री ने उसकी ओर मुस्करा कर देखा और उसके नेत्र चमक उठे और कितनी विलक्षण बात थी कि निखल्यूडोव को सहसा मेरियट का स्मरण हो आया, क्योंकि जिस प्रकार वह होटल में आकृष्ट और हताश हुआ था, उसी प्रकार इस स्त्री को देख कर भी आकृष्ट और हताश हुआ।

निखल्यूडोव उसके पास से जल्दी-जल्दी गुज़र कर अपने आपसे रुष्ट होता हुआ मोरस्काया की ओर मुड़ गया और किनारे पर पहुँच कर चहलक़दमी करने लगा, जिससे वहाँ के एक पुलिस-मैन को आश्चर्य हुआ।

उसने मन में कहा—जिस समय मैं थिएटर में घुसा था तो उसने भी मेरी ओर इसी प्रकार मुस्करा कर देखा था और दोनों मुस्कराहटों का आशय बिलकुल एक था। अन्तर केवल इतना था कि इसने स्पष्ट और सहज रूप से कह दिया कि मेरी ज़रूरत है तो मुझे ले चलो, ज़रूरत नहीं है तो अपना रास्ता पकड़ो। और उसने बहाना बनाया था कि वह यह बात नहीं सोच रही है, बल्कि किसी उच्च और परिष्कृत विचार में मग्न है—यद्यपि मूल में यही एक बात थी। यह कम से कम सचाई से तो काम लेती थी, पर वह तो झूठ बोल रही थी। इसके अतिरिक्त इसे इस मार्ग का अव-लम्बन आवश्यकता से विवश होकर करना पड़ा था, जब कि वह उस मनमोहक, हताशकारी, भयावह वासना के साथ क्रीड़ा करके

अपना मनोरञ्जन कर रही थी। यह बाज़ारू स्त्री एक ऐसे दुर्गन्ध-पूर्ण, सड़े हुए पानी की भाँति है, जो उनके उपयोग में आता है जिनकी पिपासा उनकी घृणा से प्रबलतर है; वह थिएटर वाली एक ऐसा विष है जो अलक्षित भाव से जिस चीज़ को स्पर्श करता है, विषमय बना देता है।

उसने सोचा—पाशविक प्रकृति की पाशविकता बड़ी गर्हित वस्तु है, पर जब तक यह पाशविकता नग्न-रूप में रहती है, तब तक हम इसे अपनी आध्यात्मिकता के उच्च शिखर पर से खड़े-खड़े देखते और उसका तिरस्कार करते रहते हैं; और—चाहे उस नग्न-प्रलोभन को किसी ने सम्वरण किया हो या कोई पतित हो गया हो—वह रहता वही है जो पहले था। पर जब यही पाशविकता कविता और शिव-सौन्दर्य के चोगे में छिप जाती है और हमारे द्वारा अपनी आराधना कराना चाहती है, तब हम पूर्णतया उसके गर्भ में चले जाते हैं और पाशविकता की आराधना करने लगते हैं। उस समय हमें पाप और पुण्य का बोध नहीं रहता। उस समय यह बड़ा विकृत व्यापार हो उठता है!

निखल्यूडोव प्रासाद, सन्तरियों, दुर्ग, सट्टे के बाज़ार, नदी और नौकाओं की ओर देखता रहा और उसे यह सब स्पष्ट रूप से भासित होता रहा। और ठीक जिस प्रकार आज उत्तरी ग्रीष्म-रात्रि के राज्य में पृथ्वी पर सान्त्वनादायक अचल अन्धकार के प्रसार के स्थान पर किसी अज्ञात-प्रदेश से आते हुए निर्जीव विषण्ण प्रकाश का दौर-दौरा था, उसी प्रकार निखल्यूडोव की आत्मा में भी अज्ञान के विश्रामपूर्ण अन्धकार का लवलेश न रहा था।

सब कुछ स्पष्ट हो गया था। यह स्पष्ट हो गया था कि महत्व-पूर्ण और भली समझी जाने वाली सारी वस्तुएँ महत्वहीन और गर्हित हैं, और यह सारा विलास, वैभव और यह सारी चमक-दमक उन पुराने, जाने-पूछे पापों को ढकने का काम दे रही है, जो न केवल सदैव अदण्डित ही रहते हैं, बल्कि मनुष्य उन्हें नित्य नए आडम्बरों से विभूषित करने में संलग्न रहता है।

वह इन सारी बातों को भूल जाना, इनकी ओर से आँखें बन्द कर लेना चाहता था, पर यह सम्भव न था। यद्यपि उसके लिए उस प्रकाश का, जिसने उसके लिए यह सब उद्भासित किया था, उद्गम-स्थल देखना उतना ही असम्भव था जितना पीटर्सबर्ग पर फैले हुए प्रकाश का उद्गम-स्थल देखना; और यद्यपि यह प्रकाश उसे नीरस, मन्द और अस्वाभाविक प्रतीत हो रहा था, वह उस सबकी ओर से आँखें बन्द करने में असमर्थ था, जिसे उस प्रकाश ने उद्भासित कर दिया था, और इससे उसके हृदय में हर्षातिरेक और उत्कण्ठा की मिश्रित भावाभक्ति उद्दीप्त हो उठी।

स्को पहुँचते ही निखल्यूडोव मसलोवा को यह विषादपूर्ण समाचार सुनाने के लिए कि सीनेट ने उसकी अपील रद कर दी है और उसे अब साइबेरिया जाने को तैयार रहना चाहिए, सीधा जेल-अस्पताल पहुँचा। ऐडवोकेट ने सम्राट के नाम एक प्रार्थना-पत्र लिख दिया था, और निखल्यूडोव उसे मसलोवा से हस्ताक्षर कराने के लिए अपने साथ लेता आया था। पर उसे सफलता की बहुत कम आशा थी। और सब से अधिक विचित्र बात यह थी कि वह सफलता प्राप्त करने का इच्छुक भी न था। उसने साइबेरिया जाने और दण्डितों तथा निर्वासितों के बीच में वास करने के विचारों से अपने आपको इतना अभ्यस्त बना लिया था कि वह सहज रूप से कल्पना तक न कर सकता था कि यदि मसलोवा मुक्त हो गई तो वह अपने और उसके जीवन को किस साँचे में ढालेगा। उसे स्मरण आया

कि किस प्रकार अमेरिका के लेखक थोरू ने तत्कालीन दासत्व-प्रथा के सम्बन्ध में कहा था—"किसी ऐसी सरकार के राज्य में, जो अन्याय-पूर्वक लोगों को जेल में ठूंसती हो, न्यायप्रिय मनुष्य के लिए भी एक मात्र उपयुक्त स्थान जेल ही है।" पीटर्सबर्ग जाने और वहाँ के रङ्ग-ढङ्ग देखने के बाद से निख्ल्यूडोव भी इस प्रकार विचारने लगा था।

"हाँ, आजकल रूस में किसी ईमानदार आदमी के लिए उपयुक्त स्थान केवल जेल है!"—उसने मन ही मन कहा और यहाँ तक अनुभूति की कि यह बात व्यक्तिगत रूप से उस पर भी लागू होती है। इसी समय उसकी गाड़ी जेल के दरवाज़े पर जा लगी और उसने भीतर प्रवेश किया।

अस्पताल के द्वार-रक्षक ने उसे देखते ही पहचान लिया और उसे तत्काल बता दिया कि मसलोवा अब यहाँ नहीं है।

"क्यों?—कहाँ है फिर?"

"यहीं, जेल में।"

निख्ल्यूडोव ने पूछा—क्यों? यहां से क्यों हटाई गई?

द्वार-रक्षक ने घृणापूर्वक मुस्कराते हुए कहा—योर ऐक्सीलेन्सी, इन लोगों की बात आप क्या पूछते हैं? मेडिकल असिस्टेन्ट से लाग लग गई थी, इससे डॉक्टर साहब ने उसे फिर जेल में वापस भेज दिया।

निख्ल्यूडोव यह न जानता था कि मसलोवा और उसकी मनोवृत्ति उसके लिए कितना गम्भीर अर्थ रखती थी। इस सूचना से उस पर वज्रपात सा हो गया। उसे ठीक ऐसी ही अनुभूति होने

लगी जैसी किसी ऐसे आदमी को होती है जिसने किसी भयङ्कर और अनपेक्षित विपत्ति का समाचार सुना हो और उसका हृदय पीड़ा से उन्मथित हो उठा। सबसे पहले उसके हृदय में ग्लानि के भावों का उदय हुआ। कहाँ वह यह कल्पना करके कि मसलोवा की आत्मा में बड़ा भारी परिवर्तन हो रहा है, प्रफुल्लित हो रहा था, कहाँ अब वह अपनी ही दृष्टि में उपहासास्पद बन गया। वह सोचने लगा कि उसके आत्म-त्याग को ग्रहण न करके मसलोवा के सारे शब्द, उसके सारे आँसू और सारी भर्त्सनाएँ एक दूषित स्त्री की चाल-पट्टियाँ थीं, जिनके द्वारा वह उसका (निखल्यू-डोव का) सुन्दर से सुन्दर उपयोग करना चाहती थी। उसे स्मरण आया कि किस प्रकार अन्तिम भेंट के अवसर पर उसने उसमें हठ के लक्षण देखे थे। जिस समय उसने टोप पहना और अस्पताल के बाहर क़दम रक्खा, यह सारी बातें उसके दिमाग में घूम गईं।

"अब मुझे क्या करना चाहिए? क्या मैं अब भी उसके निकट आबद्ध हूँ? क्या उसके इस कार्य ने मुझे स्वतन्त्र नहीं कर दिया?" पर जब उसने अपने आपसे ये प्रश्न किए, उसे तत्काल ज्ञान हो गया कि यदि वह अपने आपको स्वतन्त्र समझने लगा और उससे सम्बन्ध त्याग बैठा तो इससे उसकी आन्तरिक अभिलाषा (अर्थात मसलोवा को दण्ड देने की इच्छा) तो पूरी क्या होगा, उल्टे वह अपने आपको दण्ड दे लेगा; और इससे वह भयातुर हो उठा।

"नहीं, अब जो कुछ हो चुका है उसमें किसी प्रकार का परि-वर्तन नहीं हो सकता—इससे मेरा सङ्कल्प उल्टे दृढ़तर हो जायगा।

उसकी जैसी मनोवृत्ति है, उसके अनुरूप वह जैसा कुछ आचरण करती है, करे। यदि वह मेडिकल असिस्टेण्ट के साथ सम्बन्ध करती है तो करती रहे। मैं वही करूँगा, जो मेरी आत्मा मुझे आदेश देगी। मेरी आत्मा मुझे आदेश देती है कि मैं अपनी स्वतन्त्रता का बलिदान कर दूँ। चाहे नाम-मात्र को ही सही, उससे विवाह करने और वह जहाँ कहीं भी भेजी जाय, वहीं उसका अनुसरण करने के मेरे सङ्कल्प में किसी प्रकार का अन्तर नहीं पड़ा है!"—निखल्यूडोव ने अस्पताल से जेल के विशाल लौहद्वार की ओर दृढ़ पग रख कर जाते-जाते मन ही मन प्रबल हठ के साथ कहा।

उसने ड्यूटी पर तैनात वार्डर से इन्सपेक्टर को सूचना देने को कहा कि वह मसलोवा से मिलना चाहता है। वार्डर निखल्यूडोव को जानता था और उसने उसके साथ परिचितों की तरह बातचीत करते-करते कहा कि जेल का वृद्ध इन्सपेक्टर पदच्युत कर दिया गया है और उसके स्थान पर एक नया, बड़ा कठोर अफ़सर आया है।

जेलर ने कहा—ये लोग इतने सख्त होते हैं कि कुछ हद-हिसाब नहीं। वह यहीं है, अभी इत्तिला किए देता हूँ।

नवीन इन्सपेक्टर जेल ही में था और वह तत्काल ही बाहर आ गया। वह एक लम्बे कद, चौड़ी हड्डी का विषण्ण आदमी था और बड़े शिथिल भाव से हाथ-पैर चलाया करता था। उसने निखल्यूडोव की ओर दृष्टि उठाए बिना ही कहा—मुलाक़ात सिर्फ़ मुलाक़ाती कमरे में और नियत दिन को हो सकती है।

"मगर मेरे पास सम्राट के नाम एक प्रार्थना-पत्र है; मुझे हस्ताक्षर कराने हैं।"

"उसे आप मुझे दे सकते हैं।"

"मुझे क़ैदी से ख़ुद ही मिलने की अनुमति दीजिए। मैं पहले हमेशा इसी तरह भेंट करता आया हूँ।"

इन्सपेक्टर ने निखल्यूडोव की ओर उड़ती हुई निगाह डालते हुए कहा—जी हाँ, पहले ऐसा होगा।

निखल्यूडोव ने हठ किया—मेरे पास गवर्नर का अनुमति-पत्र है।

इन्सपेक्टर ने उसी प्रकार नीची निगाह किए कहा—"लाइए, दिखाइए।"—और इतना कह कर उसने अपना शुष्क हाथ, जिसकी एक अँगुली में अँगूठी पड़ी हुई थी, उसकी ओर बढ़ा दिया। पत्र पढ़ कर उसने धीमे स्वर में कहा—ऑफ़िस में आइए।

इस बार ऑफ़िस ख़ाली था। इन्सपेक्टर मेज़ के आगे बैठ गया और काग़ज़-पत्र छाँटने लगा, जिससे स्पष्ट था कि वह भेंट के अवसर पर मौजूद रहना चाहता है।

जब निखल्यूडोव ने उससे पूछा कि क्या वह राजनीतिक क़ैदी वीरा दुखोवा से मिल सकता है, तो उसने संक्षेप उत्तर दे दिया कि वह नहीं मिल सकता। इसके बाद वह बोला—"राजनीतिक क़ैदियों से मिलना-जुलना बन्द है।"—और उसने फिर काग़ज़ों पर दृष्टि जमाई। निखल्यूडोव दुखोवा के नाम अपनी जेब में पत्र रक्खे ऐसी अनुभूति करने लगा, मानो वह कोई पाप करने का विचार कर रहा हो और उसकी भावनाएँ अकस्मात ध्वस्त कर दी गई हों।

जब मसलोवा कमरे में आई तो इन्सपेक्टर ने अपना सिर

उठाया और दोनों में से किसी की ओर देखे बिना कहा—"आप बातचीत कर लीजिए"—और इसके बाद वह अपने कागजों को उलटने-पलटने लगा।

मसलोवा आज भी सफेद जाकेट, पेटी और रूमाल पहने थी। जब उसने निखल्यूडोव के पास आकर उसकी शुष्क, कठोर मुद्रा देखी तो उसका चेहरा लाल हो उठा और वह अपने हाथ से जाकेट की गोट मसलती हुई नीची निगाह किए खड़ी रही।

उसकी यह उद्विग्नता निखल्यूडोव को अस्पताल के द्वार-रक्षक की बात का समर्थन करती प्रतीत हुई। वह उसके साथ पहले की भाँति ही व्यवहार करना चाहता था, पर इस समय वह उसे इतनी घृणित दिखाई दे रही थी कि वह उसके साथ हाथ तक न मिला सका।

उसने उसकी ओर निगाह उठाए या उसका हाल लिए बिना विपण्ण स्वर में कहा—मैं तुम्हें बुरा समाचार सुनाने आया हूँ। सीनेट ने अपील रद कर दी है।

"मैं पहले ही जानती थी कि अपील रद हो जायगी"—उसने विचित्र से स्वर में कहा, मानो वह साँस लेने की चेष्टा कर रही हो।

पहले निखल्यूडोव उससे पूछता कि वह पहले से ही यह कैसे जानती थी कि अपील रद हो जायगी; पर अब उसने केवल उसकी ओर देखा भर। उसकी आँखें डबडबाई हुई थीं।

पर इससे निखल्यूडोव न पसीजा, उल्टे उसका रोष उनके प्रति और भी बढ़ गया।

इन्सपेक्टर उठा और कमरे में चहलक़दमी करने लगा।

यद्यपि निखल्यूडोव उस समय उसके प्रति घोर अरुचि की अनुभूति कर रहा था, फिर भी उसने सीनेट के निर्णय पर अपने खेद की बात प्रकट करना उचित समझा।

उसने कहा—निराश मत होओ। सम्भव है, सम्राट के नाम प्रार्थना-पत्र ही काम कर जाय, और मुझे आशा है कि ।

"मैं उसकी बात नहीं सोच रही हूँ!"—उसने अपने गीले, तिरछे नेत्रों से उसकी ओर कातर भाव से देख कर कहा।

"फिर कौन सी बात सोच रही हो?"

"तुम अस्पताल गए होगे और वहाँ उन्होंने मेरे सम्बन्ध में न जाने क्या. . ।"

"फिर हुआ क्या? यह तुम्हारा काम है, तुम जानो!" निखल्यूडोव क्रुद्ध भाव से बोला और उसके तेवर चढ़ गए। उसके मुँह से अस्पताल का नाम सुनते ही आहत-गर्व का सुपुप्त निष्ठुर भाव एक नवीन प्रबलता के साथ उद्दीप्त हो उठा। उसने घृणा कुत्सा की मुद्रा धारण करके मन ही मन कहा कि उसके जैसे एक सांसारिक आदमी ने, जिसके साथ विवाह करने में संसार के अच्छे से अच्छे कुलीन परिवार की लड़की अपना सौभाग्य समझती, इस स्त्री का पति बनना मन्ज़ूर किया और इसने प्रतीक्षा तक न की और एक मेडिकल असिस्टेण्ट से प्रेम-व्यापार करना आरम्भ कर दिया!

उसने अपनी जेब से बड़ा सा लिफ़ाफ़ा निकाल कर मेज़ पर रखते हुए कहा—"ख़ैर, अब इस पर हस्ताक्षर कर दो।"—मस-

लोवा ने रूमाल से आँसू पोंछे और पूछा कि कहाँ और क्या लिखा जायगा।

निखल्यूडोव ने स्थल बनाया और वह अपने दाहिने हाथ का कफ़ बाएँ हाथ से सँभालती हु बैठ गई। वह उसके पीछे खड़ा रहा और चुपचाप उसकी कमर की ओर, जो दबे हुए भावावेश से काँप रही थी, देखता रहा, और उसके हृदय में दो प्रकार के भावों का भयङ्कर सङ्घर्ष होने लगा! आहत गर्व का भाव और उस पीड़ित, कष्टित जीवन के प्रति करुणा का भाव—और इस करुणा के भाव ने अन्त में विजय पाई।

पर वह यह स्मरण न कर सका कि उसके हृदय में सबसे पहले किस भाव ने प्रवेश किया; पहले करुणा ने प्रवेश किया या पहले उसे अपने पापों का—अपनी गर्हित करतूतों का, उनका जिनके लिए वह उसे धिक्कार रहा था—स्मरण आया? कुछ भी सही, वह अपने आपको अपराधी भी समझने लगा और उसे करुणा भी उत्पन्न हो आई।

मसलोवा ने हस्ताक्षर करने के बाद अपनी स्याही से भीगी अँगुली वास्कट से पोंछी और फिर अपने स्थान से उठ कर निखल्यू-डोव की ओर देखा।

निखल्यूडोव ने कहा—"कुछ भी हो, इस प्रार्थना-पत्र का कुछ भी परिणाम हो, मैं अपने सङ्कल्प में अचल हूँ।" और इस विचार ने कि उसने मसलोवा को उसके कृत्य के लिए क्षमा कर दिया, उसकी करुणा और कोमलता को उसके प्रति और भी प्रबल रूप दे दिया और वह उसे सान्त्वना देने की इच्छा से

कहने लगा—मैं जो कुछ कह चुका हूँ, करूँगा, वे तुम्हें जहाँ कहीं ले जाएँगे, मै तुम्हारे साथ रहूँगा।

उसने शीघ्रतापूर्वक बाधा दी—"लाभ ही क्या है?" यद्यपि उसका सारा चेहरा दमक उठा था।

"तुम इसका विचार करो तो अधिक अच्छा है कि तुम्हें मार्ग में किस-किस चीज की ज़रूरत होगी।"

"किसी ख़ास चीज़ की नहीं, धन्यवाद।"

इन्सपेक्टर आ पहुँचा और निख़ल्यूडोव उसकी किसी बात की प्रतीक्षा किए बिना वहाँ से विदा हो गया, और उसकी आत्मा में शान्ति, प्रफुल्लता और प्राणी मात्र के प्रति प्रेम के मिश्रित भावों का ऐसा प्रबल उद्वेग उठने लगा, जैसा पहले कभी न हुआ था। इस निश्चय ने कि मसलोवा का कोई भी कार्य उसके प्रति उसके (निखल्यूडोव के) प्रेम को नष्ट नहीं कर सकता, उसके हृदय को आह्लाद से भर दिया और उसे ऐसी उच्चता को पहुँचा दिया, जहाँ तक वह पहले कभी न पहुँच पाया था। वह यदि मेडिकल असिस्टेण्ट के साथ प्रेमालाप करती है तो करती रहे, यह उसका काम है, वह उसे अपने लिए प्रेम नहीं करता, उसके लिए और भगवान के लिए करता है।

और जिस प्रेम-षड्यन्त्र के लिए मसलोवा को अस्पताल से निकाला गया था और जिसकी निखल्यूडोव उसे वास्तविक अपराधिनी समझता था, वह निम्न लिखित था :—

मसलोवा को प्रधान नर्स ने औषधालय में बूटी की चाय लाने भेजा। औषधालय बरामदे के अन्त में था। वहाँ मसलोवा

को मेडिकल असिस्टेण्ट मौजूद मिला—लम्बा सा आदमी, लम्बा चेहरा—जो मसलोवा को बहुत दिनों से छेड़ रहा था। मसलोवा ने उससे छुटकारा पाने की चेष्टा में उसे इतने ज़ोर से धक्का दिया कि उसका सिर अलमारी से जाकर टकराया और उसमें से दो बोतलें गिरीं और टूट गईं।

संयोग की बात, उधर से प्रधान डॉक्टर भी निकला जा रहा था। उसने बोतलों के टूटने की आवाज़ सुनी और साथ ही कमरे से अत्यन्त उत्तेजित भाव से मसलोवा को भागते देखा और उसने क्रुद्ध स्वर में पुकार कर कहा:—

"अरी भलीमानस, अगर तूने यहाँ भी प्रेम-षड्यन्त्र करना शुरू किया तो मैं तुझे तेरे असली काम पर लगवा दूँगा।"—इसके बाद उसने अपने चश्मों पर से कठोर भाव से घूर कर मेडिकल असिस्टेण्ट से पूछा—यह सब क्या तमाशा है? क्या हो रहा था?

मेडिकल असिस्टेण्ट मुस्कराया और अपनी सफाई पेश करने लगा; पर डॉक्टर ने उसकी बात पर कोई ध्यान न दिया और अपना सिर उठा कर वह वार्ड में चला गया। उसने उसी दिन इन्सपेक्टर से कहला भेजा कि वह मसलोवा की जगह किसी अधिक संयत नर्स को भेजे।

बस, यही मेडिकल असिस्टेण्ट के साथ उसका प्रेम-षड्यन्त्र था। मसलोवा को प्रेम-षड्यन्त्र के अभियोग से निकाले जाने पर विशेष रूप से वेदना हुई, क्योंकि पुरुषों के साथ सम्पर्क को वह बहुत दिनों से अरुचि की दृष्टि से देखती आ रही थी और यह अरुचि निख्ल्यूदोव से भेंट होने के बाद से विशेष रूप से प्रबल हो

गई थी। इस विचार ने कि उसको भूत और वर्तमान अवस्था को ध्यान में रख कर प्रत्येक मनुष्य—और उनमें वह लम्बे चेहरे वाला मेडिकल असिस्टेण्ट भी—उसका अपमान करने और उसकी अस्वीकृति पर आश्चर्य प्रकट करने को अपना अधिकार समझता है, उसके हृदय में आत्म-करुणा उत्पन्न कर दी और उसके नेत्रों में आँसू आ गए। आज जब वह निखल्यूदोव के पास जाने लगी थी तो उसने दृढ सङ्कल्प कर लिया था कि वह इस मिथ्या अभियोग से, जिसकी बात—वह जानती थी—निखल्यूडोव ने अवश्य सुनी होगी, अपने आपको मुक्त करेगी। पर जब उसने अपनी सफ़ाई देनी शुरू की, तो उसे भास होने लगा कि वह उसकी बात पर विश्वास नहीं करता और उसकी सफाई से उसका सन्देह और भी पुष्ट होगा; और आँसुओं से उसका गला भर गया और वह चुप रह गई।

मसलोवा अब भी समझती थी और अब भी अपने आपको भुलावे में रखना चाहती थी कि उसने निखल्यूडोव को क्षमा नहीं किया है और वह उससे घृणा करती है—जैसा कि उसने उससे दूसरी भेंट के अवसर पर कह दिया था—पर वस्तुतः वह उसे एक बार फिर प्यार करने लगी थी और इतना प्यार करने लगी थी कि अनिच्छित रूप से वही सारे काम करती थी, जो वह उससे कराना चाहता था। उसने शराब पीना, सिगरेट पीना और दूसरों पर डोरे डालना छोड़ दिया था और अस्पताल में जाना स्वीकार कर लिया था—केवल इसलिए कि वह जानती थी कि उसकी यही इच्छा है और यदि वह उसके स्मरण कराने पर बराबर निश्चयात्मक स्वर में

उसका बलिदान ग्रहण करना और उससे विवाह करना अस्वीकार करती जाती है, तो केवल इसलिए कि वह उन गर्वीले शब्दों को बार-बार दुहराना पसन्द करती थी, जो उसके मुँह से एक बार निकल चुके थे, और साथ ही इसलिए भी कि वह जानती थी कि उससे विवाह करके वह कहीं का न रहेगा। उसने दृढ़ संकल्प कर लिया था कि वह उसका त्याग स्वीकार न करेगी, पर इस विचार ने कि वह उसे तिरस्कार की दृष्टि से देखता है और उसे अब भी वही समझता है जो वह अब तक रह चुकी है, उसके हृदय को मर्मान्तक वेदना हुई। उसे इस बात के विचार से कि वह मन ही मन समझता होगा कि उसने अस्पताल में सचमुच बुरा काम किया होगा, जितनी व्यथा हो रही थी उतनी अपनी अपील के रद्द होने की सूचना से नहीं।
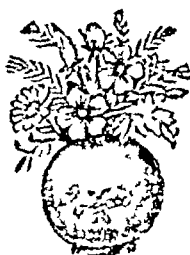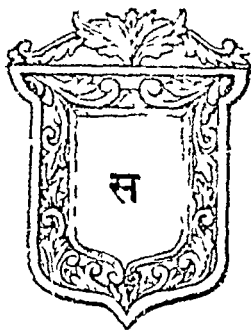
सम्भव था मसलोवा को कैदियों के पहले दल के साथ भेज दिया जाय, अतः निखल्यूडोव ने अपनी यात्रा की तैयारी पहले से ही करनी आरम्भ कर दी। पर अभी इतना काम करने को पड़ा था कि चाहे जितना परिश्रम किया जाता, उसका पूरा होना असम्भव था। अब पहले जैसी बात न थी। पहले उसे नए-नए काम निकालने पड़ते थे और इन सारे कामों का केन्द्र केवल एक व्यक्ति—डिमिट्री इवानिच निखल्यूडोव में अवस्थित रहता, और यद्यपि ये सारे काम उसी की व्यष्टि से सम्पर्क रखते, फिर भी उसे ये सारी संलग्नताएँ अत्यन्त श्रान्तकारिणी प्रतीत होतीं। अब उसकी सारी संलग्नताएँ डिमिट्री इवानिच निखल्यूडोव के बजाय दूसरे व्यक्तियों से सम्पर्क रखतीं, और उन सब में उसे एक विशेष आकर्षण और एक विशेष रुचि होती और ये संलग्नताएँ अपार थीं। बात यहीं तक न थी। पहले डिमिट्री इवानिच निखल्यूडोव की संलग्नताएँ उसे उद्विग्न और क्षुब्ध किए रखतीं; अब उनसे उसे उल्लास और प्रफुल्लता की अनुभूति होती।

आजकल निखल्यूडोव जिस प्रकार के कार्यों में संलग्न रहता, उन्हें तीन श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता था। अपनी मीन-मेख निकालने की आदत से मजबूर होकर ख़ुद निखल्यूडोव ने भी अपने कामों को तीन श्रेणियों मे विभक्त कर लिया था और वह अपने काग़ज़-पत्र इसी हिसाब से पोर्टफ़ालियो में सजा कर रखता था।

पहला काम मसलोवा से सम्बन्ध रखता था और इसमें सम्राट के नाम प्रार्थना-पत्र की ओर सम्राट की दृष्टि आकृष्ट करने के अनेक अवलम्बनों और उसकी यात्रा के लिए तैयारी करने की मुख्यता थी।

दूसरा काम था रियासत का बन्दोबस्त। उसने पनोवो में वहाँ की ज़मीन वहाँ के ग्रामीणों को इस शर्त पर दे दी थी कि वे जो लगान देंगे, वह उन्हीं के सम्बन्ध में ख़र्च किया जायगा। पर इस कार्यवाही को अभी वैध रूप देना और तदनुसार वसीयतनामा तैयार करना था। कुज़्मिन्स्की में उसने व्यवस्था की थी कि उसे किसानों से लगान मिलता रहेगा; पर अभी उसने लगान के विषय में कुछ निश्चित न किया था और साथ ही अभी उसे यह भी तय करना शेष था कि वह अपने निर्वाह के लिए कितना रखेगा और देहातियों के हित के लिए कितना ख़र्च करेगा। वह अभी तक यह न जानता था कि साइबेरिया तक जाने में उसका कितना व्यय होगा, अत. अभी उसने पूरी आय से वंचित होने का निश्चय न किया था, यद्यपि उस आय का आधा पहले से ही कर दिया था।

तीसरा काम था क़ैदियों की सहायता करना, क्योंकि अब सब अधिकाधिक उसीसे सहायता की याचना कर रहे थे?

जब निखल्यूडोव ने शुरू-शुरू में कैदियों से मिलना-जुलना शुरू किया था और वे उससे सहायता की याचना करते थे, तो उसने उनका विपत्ति-भार हलका करने के लिए तत्काल कार्य करना आरम्भ कर दिया था। पर शीघ्र ही उसके पास इतनी प्रार्थनाएँ आने लगीं कि उन सब पर ध्यान देना उसके लिए असम्भव हो गया। इससे स्वभावतया ही वह एक दूसरे प्रकार के कार्य में प्रवृत्त हुआ, और इस कार्य में उसे पहले तीनों कार्यों की अपेक्षा अधिक रुचि उत्पन्न हो गई।

यह नया कार्य था इस समस्या के हल करने का मार्ग ढूंढना—यह विलक्षण फ़ौजदारी कानून आख़िर क्या बला है, जिसकी बदौलत उस जेल को, जिसके निवासियों से वह परिचय प्राप्त कर चुका है, और पीटर्सबर्ग के पैट्रोपॅवलोव्स्की दुर्ग से लगा कर सख़ालिन द्वीप तक असंख्य अन्य जेलों को अस्तित्व मिला और जिनमें इस—निखल्यूडोव की धारणा के अनुसार—विलक्षण विधान के शत-सहस्र शिकार घुल-घुल कर मर रहे हैं—इसका जन्म क्यों हुआ? इसका जन्म कहाँ से हुआ?

निखल्यूडोव ने इन कैदियों के साथ व्यक्तिगत सम्पर्क करके, कारारुद्ध व्यक्तियों के आत्म-चरितों के द्वारा, और ऐडवोकेट और जेल के पादरी से पूछताछ करके यह निष्कर्ष निकाला कि इन अपराधी कहलाए जाने वाले क़ैदियों को पाँच श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है। पहली श्रेणी में वे लोग थे, जो पूर्णतया निर्दोष होने पर भी न्याय-दोष से दण्डित किए गए थे। इन लोगों में मैनशोव माता-पुत्र थे, जिन्हें अग्निकाण्ड करने वाला

समझा गया था और मसलोवा आदि थे। यद्यपि इनकी संख्या अधिक न थी—पादरी के अनुमान के अनुसार केवल सात प्रतिशत—पर उनकी अवस्था एक विशेष कौतूहल उत्पन्न कर देती थी।

दूसरी श्रेणी में वे लोग थे, जिन्हें एक विशेष अवस्था मे किए गए अपराधों के लिए दण्डित किया गया था—क्रोधावेश, ईर्षाग्नि, या मदोन्माद; ऐसी अवस्थाओं में जिनमें पड़ कर स्वयं उनके विधारक भी वही काम करते। निखल्यूडोव के निरीक्षण के अनुसार अपराधियों की आधे से अधिक संख्या इस श्रेणी से सम्बन्ध रखती थी।:

तीसरी श्रेणी में वे लोग थे, जिन्हें ऐसे कामों के लिए दण्ड दिया गया था, जिसे वे स्वयं तो नितान्त स्वाभाविक और अच्छा तक समझते; पर जिन्हें दूसरे आदमी—वे लोग, जिन्होंने विधानों की सृजना की थी, अपराध समझते थे। इन लोगों में बिना लाइसेन्स मदिरा का क्रय-विक्रय करने वाले, अवैध आयात-निर्यात करने वाले, राज्य और सम्राट के जङ्गलों से घास और लकड़ी काटने वाले, पर्वती दस्यु, और वे धर्म-भ्रष्ट लोग शामिल थे, जो गिर्जों में लूट-मार किया करते थे।

चौथी श्रेणी में वे लोग थे, जिन्हें केवल इसलिए क़ैद कर दिया गया था कि वे नैतिक आचरण में साधारण सामाजिक स्थिति से उच्चतर थे। इन लोगों में थे सम्प्रदायवादी, इनमें शामिल थे पोल और काकेशियन, जो स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए विद्रोहाचरण करते थे, इनमें थे राजनैतिक क़ैदी, समष्टिवादी और हड़ताली। निखल्यूडोव ने पता लगाया कि इस श्रेणी में बहुत

जन-संख्या सम्मिलित है, और उनमे कुछ ऐसे आदमी भी सम्मिलित हैं, जिन्हें रूस के सर्वोत्तम आदमी कहा जा सकता था और जिन्हे केवल अधिकारियों के मार्ग में आ पड़ने के कारण दण्डित किया गया था।

पाँचवीं श्रेणी में वे लोग थे, जिनके विरुद्ध समाज ने उनके पापाचरण की अपेक्षा कहीं अधिक पापाचरण किया था। ये लोग थे वहिष्कृत व्यक्ति जो, निरन्तर अत्याचारों और प्रलोभनों से हतबुद्धि हो गए थे, और निखल्यूडोव ने इस ढङ्ग के बहुत से आदमियो को जेलों में और जेलो से बाहर देखा था। वे जिन परिस्थितियो में रहते थे, वे स्वभावतया ही उन्हें उस ओर को प्रवृत्त करती थीं, जिन्हें अपराध के नाम से अभिहित किया जाता है। निखल्यूडोव ने जिन हत्यारों और चोरों से जानकारी की थी, उनका अधिकांश—उसके अनुमान से—इसी श्रेणी से सम्बन्ध रखता था। वह इस श्रेणी में उन भ्रष्ट और पतित जीवों को भी शामिल करता था जिन्हें अपराधवाद का नया स्कूल जन्मज अपराधी परिगणित करता था, और जिसके अस्तित्व को अपराध-विधान और दण्ड-विधान का प्रधान प्रमाण समझा जाता था। यह भ्रष्ट, पतित, नीच श्रेणी निखल्यूडोव की सम्मति में ठीक वैसी ही थी, जिनके विरुद्ध समाज ने पापाचरण किया था। अन्तर केवल इतना था कि समाज ने इनके विरुद्ध प्रत्यक्ष पापाचरण न किया था, इनके माता-पिताओं और पितामहों के विरुद्ध किया था।

निखल्यूडोव इस श्रेणी में ओखोलि नामक एक ऐसे अथक और कुशल चोर को देख कर विशेष रूप से चकित हुआ, जो एक

रगडी का हरामी लडका था, जिसका लालन-पालन एक वेश्यागृह मे हुआ था, जिसने तीस वर्ष की आयु तक पुलिसमैन से उत्तर नैतिक आचरण वाले व्यक्ति को देखा तक न था, और जो लडक-पन में ही चोरों के गिरोह में शामिल हो गया था। उसमें विनोद की असाधारण प्रतिभा थी, और इसकी बदौलत वह दूसरों को स्वभावतया ही अपनी ओर आकृष्ट कर लेता था। उसने नेख्लयू-दोव से अपने मामले के निपटारे की प्रार्थना की और साथ ही उसका, जजों का, वकीलों का और मानवी और ईश्वरीय विधानों का उपहास किया। दूसरा, सुन्दर फ़ेडोरोव था, जिसने डाकुओं का दल बना कर और ख़ुद उसका दलपति बन कर एक वृद्ध अधिकारी को लूट कर उसकी हत्या कर डाली थी। फ़ेडोरोव ग्रामीण था, जिसके पिता को उसके घर से अवैध रूप मे वञ्चित कर दिया गया था और जिसे सैनिक पेशा करते समय एक अफ़सर की रखेली के साथ प्रेम-सम्बन्ध स्थापित करने का कटु-फल भोगना पड़ा था। उसकी प्रकृति बड़ी मनोहारिणी और वासनामयी थी, जो किसी भी मूल्य पर आमोद-प्रमोद के लिए लालायित रहती थी। अपने जीवन भर में वह किसी ऐसे व्यक्ति से न मिला था, जिसने किसी भी कारण से अपने ऊपर किसी भी प्रकार का संयम रक्खा हो। उसने अपने जीवन भर में आमोद-प्रमोद के सिवा और किसी बात का नाम तक न सुना था। नेख्लयूदोव को स्पष्ट रूप में दिखाई पड़ा कि इन दोनों व्यक्तियों को प्रकृति-प्रदत्त उत्कृष्ट प्रतिभा प्राप्त है, पर इन्हें बरसाती पौधों की तरह उपेक्षापूर्वक कुचल दिया गया है। वह एक खोढ़े और एक स्त्री से भी मिला और उनकी मलीन

होने वाली नृशंसता और मृदुता से आरम्भ में उसे घृणा भी हुई, पर इनमें भी वह इटालियन स्कूल वाली उस जन्मज-अपराधी-मनोवृत्ति का चिह्न तक न पा सका। बल्कि उसे उनमें भी वे ही लोग दिखाई दिए जिन्हें वह व्यक्तिगत रूप से ठीक उतनी ही घृणा करता था जितनी जेल के दरवाज़े के बाहर खड़े पदकधारी और लेस से सुसज्जित व्यक्तियों से करता था।

और इस प्रकार उन लोगों के जेलों में रक्खे जाने के, जिनसे पूर्णतया समता रखने वाले अन्य लोग सड़कों पर स्वतन्त्र फिर रहे थे, कारणों का अनुसन्धान निखल्यूडोव का चौथा कार्य हो गया।

उसने इनका उत्तर पुस्तकों से पाने की आशा की और इस विषय से सम्बन्ध रखने वाली सारी पुस्तकें ख़रीद लीं। उसने लोम्ब्रोसो, गारोफालो, फेरी, लिट्ज़, माडस्ले, और टार्डे की कृतियों का अध्ययन और मनन आरम्भ किया। पर ज्यों-ज्यों वह पढ़ता गया, उसकी हताशा बढ़ती गई। उस पर भी वही बीती जो हमेशा से उन लोगों पर बीतती आई है, जो विज्ञान की शरण वैज्ञानिक बनने, तत्सम्बन्धी पुस्तकें लिखने या वाद-विवाद करने या शिक्षा देने के लिए नहीं, वरन् दैनिक जीवन के एक प्रश्न का उत्तर पाने के लिए लेते हैं। विज्ञान ने अपराध-विधान से सम्बन्ध रखने वाले अन्य अनेक प्रश्नों के अत्यन्त सूक्ष्म और कुशल उत्तर दिए थे; पर जिस प्रश्न का उत्तर वह चाहता था, उसका उसमें पता तक न था।

उसका प्रश्न सीधा-सादा था—"कुछ लोग क्यों और किस अधिकार से दूसरों को कष्ट और निर्वासन देते, कोड़े लगाते और

जान से मारते हैं, जब कि वे स्वयं भी उन्हीं जैसे हैं जिन्हें वे कष्ट और निर्वासन देते, कोड़े लगाते और जान से मारते हैं?" और इसके उत्तर में उसे इन विषयों का विवेचन प्राप्त हुआ कि मनुष्यों में स्वतन्त्र इच्छा-शक्ति है या नहीं; अपराध-प्रवृत्ति खोपड़ी की नाप के द्वारा जानी जा सकती है या नहीं; अपराध में वंश-परम्परा का कितना प्रभाव रहता है; क्या नीति-भ्रष्टता वंश-परम्परा के रूप में प्राप्त हो सकती है, विक्षिप्तता क्या है, मानसिक पतन क्या है, और मनोवृत्ति क्या है; जल-वायु, भोजन, अज्ञानता, प्रतिलिपि-प्रवृत्ति, मोहिनी, या वासना का अपराध पर क्या प्रभाव पड़ता है; समाज क्या है, उसके क्या कर्त्तव्य हैं—और आदि इत्यादि।

इन विवेचनों को देख कर निखल्यूडोव को याद आया कि किस प्रकार उसने स्कूल से घर को जाते हुए एक विद्यार्थी से पूछा था कि उसे हिज्जे करने आ गए या नहीं।

लड़के ने कहा—जी हाँ, मैं हिज्जे करना जानता हूँ।

"अच्छी बात है, 'रोग' के तो हिज्जे करो।"

"कुत्ते की टाँग के, या किस रोग के?"—लड़के ने घुमाई हुई निगाह से पूछा।

बस, निखल्यूडोव अपनी आधारभूत शङ्का का जो उत्तर चाहता था, उसके स्थान पर उसे वैज्ञानिक पुस्तकों में ठीक इसी प्रकार के उत्तर मिले। बड़ी विद्वत्ता, बड़ी बुद्धिमत्ता और बड़ी रोचकता, पर प्रमुख प्रश्न का उत्तर नदारद था—"कुछ लोग दूसरों को किस अधिकार से दण्ड देते हैं?"

और इस प्रश्न का उत्तर देना तो एक ओर, उल्टे दण्ड-विधान

का समर्थन और विवेचन करने के लिए दुनिया भर के तर्कवादों का आश्रय लिया गया था, और दण्ड-विधान की आवश्यकता को अनिवार्य रूप दे दिया गया था।

निखल्यूडोव ने काफी पढ़ा, पर अपनी असफलता का कारण कहीं-कहीं से, और अव्यवस्थित अध्ययन को समझ कर उसने बाद को कभी सुश्रृङ्खल रूप से पढ़ने पर उत्तर पाने की आशा की। वह अपने प्रश्न के उस उत्तर की सत्यता पर जान-बूझ कर विश्वास न करना चाहता था, जिसका सामना अब उसे अधिकाधिक करना पड़ रहा था।
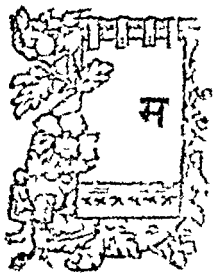
मसकोवा वाला कैदियों का दल पाँच जुलाई को रवाना होने वाला था और निख़्ल्यूदोव ने भी उसी दिन यात्रा करने का निश्चय किया।

उससे एक दिन पहले निख़्ल्यूदोव की बहिन और बहनोई उससे मिलने आए। निख़्ल्यूदोव की बहिन नैटाली इवानोवा रोगोझिन्स्काया उससे दस बरस बड़ी थी। निख़्ल्यूदोव अधिकतर उसी के लालन-पालन में बड़ा हुआ था। जब वह लड़का था तो वह उसे बहुत प्यार करती थी, बाद को अपने विवाह से पहले, तो दोनों में बड़ा ही घनिष्ट स्नेह हो गया, मानो दोनों बराबर के हों। उस समय वह पचीस बरस की स्त्री थी और वह पन्द्रह बरस का लड़का। उस समय वह निख़्ल्यूदोव के मित्र निकोलेन्का इर्टेनीव से प्रेम करती थी। बाद को उसका देहान्त हो गया। दोनों भाई-बहिन निकोलेन्का को

प्यार करते थे, और उसकी और अपनी उन सारी अच्छी बातों को प्यार करते थे, जो मनुष्य से मनुष्य का सम्पर्क और पारस्परिक सम्बन्ध स्थापित करती हैं।

इसके बाद से दोनों भाई-बहिन पतित हो गए थे। वह सैनिक उच्छृङ्खल जीवन के द्वारा, और वह एक ऐसे पुरुष से विवाह करने के द्वारा, जिसे वह वासनामय प्रेम के साथ प्यार करती थी, और जो न केवल उन सारी बातों की रत्ती भर परवाह ही नहीं करता था जो किसी समय उसके और उसके भाई के निकट इतनी प्रिय और पवित्र थीं, बल्कि उन नैतिकपूर्णता और मानव-जाति की सेवा की उच्चतम आकांक्षाओं का—जो किसी समय नैटाली के जीवन की एक मात्र प्रिय विभूतियाँ थीं—अर्थ तक न समझ सकता था, और इस सबको मिथ्या गर्व की अभिलाषा और इच्छा मात्र समझता था—केवल इसी प्रकार का अर्थ उसके लिए बोधगम्य हो सकता था।

नैटाली का पति किसी कुलीन और सम्पन्न घराने का न था, पर अपने वंश में बड़ा चलता-पुर्ज़ा था। वह उदार और अनुदार दोनों दलों में रह कर कौशलपूर्वक हथकण्डे फेंकता और जिससे अपनी स्वार्थसिद्धि की सम्भावना देखता, कुछ दिनों के लिए उसी का हो रहता। और इधर स्त्रियों को रिझाने में वह बड़ा सिद्धहस्त था। इस प्रकार उसने न्याय-विभाग में अपनी ख़ूब उन्नति कर ली। युवावस्था ढलने पर विदेश-यात्रा में उसने निखल्यूडोव से परिचय कर लिया था और फिर किसी प्रकार नैटाली को (उस समय तक उसकायुवावस्था भी ढल चुकी थी) अपने ऊपर रिझा लिया—

यद्यपि नैटाली की माँ यह सम्बन्ध अपनी पुत्री के लिए अनुपयुक्त समझती थी।

निखल्यूदोव अपने बहनोई को घृणा की दृष्टि से देखता था, यद्यपि वह इसे अपने आपसे छिपाने और इसके विरुद्ध सङ्घर्ष करने का प्रयत्न करता रहता था। निखल्यूदोव की तीव्र घृणा का कारण रोगो फिन्स्की की विचार-सङ्कीर्णता और स्वार्थपूर्ण दूषित प्रवृत्ति थी, पर इसका मूल कारण नैटाली थी, जो अपने पति की इतनी सङ्कीर्ण प्रकृति पर भी उसे इतनी वासना, इतने स्वार्थ और इतनी कामवृत्ति से प्यार करती थी और उसकी खातिर अपनी समस्त उदात्त वृत्तियों का गला घोंटे रहती थी।

निखल्यूडोव को नैटाली के उस बालोंदार, आत्मतुष्ट, गंजे सिर वाले आदमी की स्त्री होने की बात सोच कर हमेशा मर्मान्तक व्यथा होती। वह उनकी सन्तान तक के प्रति जुगुप्सा और घृणा की अनुभूति करता और जब उसने सुना कि नैटाली शीघ्र ही फिर एक बच्चे की माँ बनने वाली है तो उसे यह सोच कर बड़ा क्षोभ हुआ कि वह अपने पति जैसे अमानुषिक जन्तु के दूषित संक्रामक प्रभावों की एक बार फिर शिकार बन गई।

रोगो फ्रिन्स्की दम्पति मास्को अकेले आए थे। वह अपनी सन्तान—एक लड़का, एक लड़की—को घर ही छोड़ आए थे और यहाँ मास्को में उन्होंने सब से अच्छे होटल के सब से अच्छे कमरे किराए पर लिए थे। नैटाली सीधी अपनी माँ के परिचित भवन में पहुँची और वहाँ उसे ऐग्राफेना पैट्रोवा से पता चला कि निखल्यू-दोव एक किराए के घर में रहता है। वह सीधी वहीं पहुँची। वहाँ

उसे एक मैला-कुचैला नौकर मिला, जो एक अँधेरे बरामदे में—जहाँ रात-दिन लेम्प जलता रहता था—खड़ा था। उसने कहा कि प्रिन्स घर नहीं हैं।

नेटाली ने कहा कि वह उसके कमरे मे जाकर उसके लिए एक पुर्ज़ा लिखना चाहती है, और आदमी उसे ऊपर ले गया।

नेटाली ने अपने भाई के दोनों छोटे कमरों को अच्छी तरह देखा, और उसमें उसे उसका वह स्वच्छता-प्रेम दिखाई दिया जिसे वह अच्छी तरह जानती थी। वह हर एक चीज़ की विलक्षण सादगी देख कर चकित रह गई। उसकी लिखने की मेज़ पर उसने चिरपरिचित ताँबे के कुत्ते वाला पेपर वेट देखा। मेज़ पर जिस स्वच्छ ढङ्ग से लिखने की सामग्री और पोर्टफ़ालियो सजे हुए थे, वह भी उसका परिचित था। उसका परिचित हाथी-दाँत का टेढ़ा कागज़ तराश टार्ड की फ्रेञ्च पुस्तक में चिन्ह-स्वरूप रक्खा हुआ था, और उसके पास ही दण्ड-विधान पर एक जर्मन पुस्तक और हेनरी जार्ज की अङ्गरेज़ी पुस्तकें रक्खी हुई थीं।

उसने मेज़ के सामने बैठ कर एक पुर्ज़ा लिखा, जिसमें उसने उससे उसी दिन आने का अनुरोध किया और इसके बाद वह इन सारी चीज़ों पर आश्चर्य के साथ सिर हिलाते हुए वहाँ से चली गई।

इस समय नेटाली को अपने भाई से सम्बन्ध रखने वाली दो बातों में रुचि थी; कटूशा के साथ उसका विवाह, जिसकी चर्चा उसने अपने नगर में सुनी थी—क्योंकि चारों ओर इसी की चर्चा हो रही थी—और उसका ग्रामीणों को भूमिदान, जिसे बहुत से

लोग राजनीतिक और ख़तरनाक काम समझते थे। कट्‌शा के साथ विवाह करने की बात से नेट्‌ली को एक प्रकार प्रसन्नता हुई। वह मन ही मन उस दृढ़ता और निर्भीकता की प्रशंसा करने लगी, जो उसमें और स्वयं नेट्‌ली में भी समान रूप से विद्यमान थी। पर साथ ही इस विचार से वह रोमाञ्चित भी हो उठी कि उसका भाई ऐसी भयङ्कर स्त्री के साथ विवाह कर रहा है। और यह दूसरे प्रकार का भाव पहले प्रकार के भाव से प्रबलतर था, और उसने निश्चय किया कि वह उसे इस कार्य से रोकने का भरसक प्रयत्न करेगी, यद्यपि वह स्वयं जानती थी कि यह कार्य कितना कठिन है।

दूसरी, ग्रामीणों को भूमिदान कर देने की बात का उस पर कुछ विशेष प्रभाव न पड़ा, पर उसका पति इस पर बेतरह क्रुद्ध हुआ और उसने उसे सलाह दी कि वह अपने भाई को इससे रोके।

रोगो फिन्स्की ने कहा कि यह कार्य अन्यम की, उड़ चलने की और घमण्ड की हद है—और इसका एक मात्र सम्भव कारण कोई अजूबा बात कर दिखाने और चारों ओर अपनी चर्चा कराने की आकांक्षा है।

उसने कहा—मेरी समझ ही में नहीं आता कि देहातियों को इस शर्त पर ज़मीन देने में कि वे उसका लगान खुद अपने आपको ही दे दिया करें, उन्होंने कौन सी अक़्लमन्दी की बात सोची। यदि उनका यही इरादा था तो वह देहात-बङ्क के द्वारा अपनी ज़मीनें बेच क्यों नहीं डालते? तब तो ज़रा अक़्लमन्दी भी होती। यह तो बिलकुल दीवानापन है।

और रोगो फ़िन्स्की गम्भीर भाव से सोचने लगा कि किस प्रकार वह निख्ल्यूडोव का क़ानूनी वारिस बनेगा और उसने अपनी स्त्री को आदेश दिया कि वह अपने भाई से उसके इस विचित्र इरादे के सम्बन्ध में अवश्य बातचीत करे।
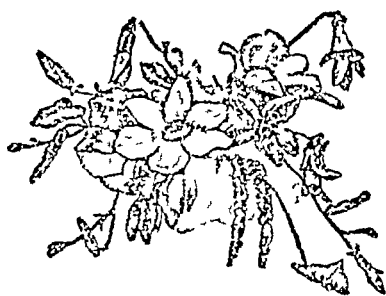
तीसवाँ परिच्छेद

ब निखल्यूडोव शाम को वापस आया और उसने अपनी बहिन का पुर्ज़ा देखा तो वह उससे मिलने को तत्काल चल दिया। माता की मृत्यु के बाद से दोनों की भेंट न हुई थी। नैटाली अकेली थी, उसका पति दूसरे कमरे में आराम कर रहा था। वह चुस्त काली रेशमी पोशाक पहने थी और उसके काले बाल ताज़े से ताज़े फ़ैशन के अनुरूप सजे हुए थे।

उसने अपने पति की आयु की होने पर भी उसकी ख़ातिर युवती दिखाई देने के लिए अपना रूप निखारने में जो कुछ प्रयास किया था सो स्पष्ट था।

अपने भाई को देखते ही वह उछल कर खड़ी हो गई और अपनी रेशमी पोशाक खसखसा कर उसकी ओर शीघ्रतापूर्वक बढ़ी। दोनों ने एक-दूसरे का चुम्बन किया और मुस्करा कर एक-दूसरे की ओर देखा। और उनमें वह रहस्यपूर्ण, मर्मयुक्त दृष्टि-

विनिमय हुआ, जिसे शब्दों के द्वारा व्यक्त नहीं किया जा सकता। इसके बाद शब्द निकले, जो मिथ्या थे।

निखल्यूडोव ने हर्ष के साथ ओठ फुलाते हुए कहा—तुम तो मोटी और युवती हो गई।

"और तुम दुबले हो गए।"

निखल्यूडोव ने कहा—और तुम्हारे पति कैसे हैं?

"वह आराम कर रहे हैं, रात को वह सोए नहीं थे।"

दोनों को बहुत कुछ कहना-सुनना था। पर वह शब्दों में नहीं, उनकी दृष्टि-विनिमय ने वह सब कुछ कह दिया, जो शब्द न कह सके थे।

"मैं तुम्हारे वास-स्थान तक गई थी।"

"मुझे मालूम है। वहाँ मै इसलिए जा रहा कि मेरा मकान बहुत बड़ा है। वहाँ से मेरा जी उचाट सा गया था और तबियत उदास रहती थी। मुझे वहाॅ की किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं है, इसलिए वह सब तुम ले लेना, मेरा मतलब असबाब से है।"

"हाॅ, ऐग्राफ़ेना पैट्रोवा ने मुझे बता दिया था। मै वहाॅ भी हो आई हूँ। बड़ा धन्यवाद, पर. ....।"

इसी समय होटल का वेटर चाँदी का चायदान ले आया। जब तक वह मेज़ लगाता रहा, दोनों चुप रहे। इसके बाद नैटाली मेज़ के आगे बैठ कर चुपचाप चाय तैयार करने लगी। निखल्यू-डोव भी कुछ न बोला।

अन्त में नैटाली ने साहसपूर्वक कहना आरम्भ किया—

"डिमिट्री, मुझे सब कुछ मालूम हो गया है।" और उसने निख-ल्यूडोव की ओर देखा।

"फिर क्या हुआ? अच्छी बात हुई।"

नैटाली ने कहा—अब तक उसने जैसा जीवन बिताया है, उसके बाद भी तुम उसके सुधार की आशा रखते हो?

निखल्यूडोव छोटी सी कुर्सी पर तन कर बैठ गया और उसकी बात ध्यानपूर्वक सुन कर उसका ठीक-ठीक अर्थ समझने और ठीक-ठीक उत्तर देने की चेष्टा करने लगा। मसलोवा के साथ अन्तिम बार मिलने के बाद से उसका हृदय जिस प्रकार प्रफुल्लित हो उठा था, उसी प्रकार अब भी था और वह अब भी मानव जाति के प्रति सदाकांक्षा और शान्त आह्लाद की अनुभूति कर रहा था।

उसने उत्तर दिया—मैं उसका नहीं, अपना सुधार करना चाहता हूँ।

नैटाली ने गहरी साँस ली। बोली—तो इसके लिए विवाह के अतिरिक्त और भी उपाय हैं।

"पर मैं इसी को अच्छा समझता हूँ। इसके अलावा इसके द्वारा मैं उस संसार में जा पहुँचूँगा, जहाँ मैं किसी के काम में भी आ सकूँगा।"

नैटाली ने कहा—मुझे तो विश्वास नहीं होता कि तुम सुखी रह सकोगे।

"मुझे अपने सुख की चिन्ता नहीं है।"

"ठीक, ठीक, पर यदि उसके हृदय है तो वह भी सुखी नहीं रह सकती—इसकी अभिलाषा तक नहीं कर सकती।"

"उसे इसकी अभिलाषा नहीं है।"

"मैं समझ गई; पर जीवन ।"

"हाँ, जीवन ?"

"जीवन की आकांक्षाएँ कुछ और ही होती हैं।"

"जीवन की आकांक्षा इसके सिवा और कुछ नहीं होती कि हमें अच्छे काम करने चाहिए।"—उसने नैटाली के चेहरे की ओर—जो मुँह और आँखों के पास दो-चार रेखाएँ पड़ने पर भी अभी तक सुन्दर बना हुआ था—देखते-देखते कहा।

वह बोली—"मेरी समझ में नहीं आता।"—और उसने गहरी साँस ली।

निखल्यूडोव ने विवाह के पहले की नैटाली का स्मरण करते हुए और शैशव-कालीन असंख्य स्मृतियों द्वारा आबद्ध मातृ-सुलभ प्रेम की अनुभूति करते हुए मन ही मन कहा—निरीह बहिन! यह इतनी कैसे बदल गई?

इसी समय सिर ताने, सीना निकाले, हल्के क़दम रखते हुए स्वाभाविक गति से रोगो फ़िन्स्की ने प्रवेश किया। उसका चश्मा, उसका चँदुलापन और उसकी काली दाढ़ी—एक सिरे से सब चमचमा रहे थे।

उसने अपने शब्दों पर अस्वाभाविक ज़ोर डालते हुए कहा—कहो, कुशल तो है?

दोनों ने हाथ मिलाए और रोगो फ़िन्स्की आरामकुर्सी में धीरे से धँस गया।

वह बोला—मैं तुम्हारी बातचीत में बाधा तो नहीं डाल रहा हूँ।

"मैं जो कुछ कह या कर रहा हूँ, उसे किसी से छिपाना नहीं चाहता।"—निखल्यूडोव बोला।

उन बालों से ढके हाथों को देखते ही और कृपापूर्ण आत्माश्वस्त ध्वनि को सुनते ही निखल्यूडोव की स्वाभाविक, सङ्कोचपूर्ण विनम्रता न जाने कहाँ चली गई।

नैटाली ने कहा—"हाँ, हम इन्हीं के इरादों की बातचीत कर रहे थे? तुम्हें चाय का प्याला दूँ?"—उसने चायदान उठाते हुए पूछा।

"धन्यवाद! क्यों, कुछ ख़ास इरादा है क्या?"

"यही उन कैदियों के साथ साइबेरिया जाने का इरादा, जिनमें की एक स्त्री के साथ मैंने अनुचित आचरण किया था।"—निखल्यूडोव कह उठा।

"मैंने तो सुना है कि बात उसके साथ ही जाने तक समाप्त नहीं हो जाती, कुछ और भी है।"

"जी हाँ, यदि वह चाहे तो उससे विवाह करने का भी।"

"सचमुच! पर यदि तुम्हें कुछ आपत्ति न हो तो क्या तुम मुझे अपना उद्देश बताओगे? मेरी समझ में तो कुछ न आ सका।"

"मेरा उद्देश यही है कि यह स्त्री . . .इस स्त्री को पतन-मार्ग की ओर......!"—निखल्यूडोव अपनी बात को भली प्रकार प्रकट न कर सकने के लिए अपने आप पर क्रुद्ध हो उठा—"मेरा उद्देश यह है कि अपराध मैंने किया है और दण्ड उसे मिल रहा है।"

"यदि उसे दण्ड मिल रहा है तो वह भी निर्दोष नहीं हो सकती।"

"वह बिलकुल निर्दोष है।"

और निखल्यूडोव ने सारी दुर्घटना का वर्णन अनावश्यक ओजस्विता के साथ कर डाला।

रोगो फिन्स्की ने कहा—हाँ, जूरी के अविवेकपूर्ण उत्तर के कारण प्रेसीडेण्ट लापरवाही अवश्य कर बैठा। पर इस ढङ्ग के मुक़-दमों के लिए सीनेट मौजूद है।

"सीनेट ने अपील रद्द कर दी।"

"यदि सीनेट ने अपील रद्द कर दी तो अपील करने का कोई पर्याप्त कारण ही न होगा!"—रोगो फिन्स्की ने इस प्रचलित धारणा को ध्यान में रखते हुए कि न्यायालयों में दूध का दूध और पानी का पानी हो जाता है, कहा—सीनेट किसी मामले की विशे-षता पर विचार नहीं कर सकती। यदि सचमुच कोई भूल है, तो सम्राट के आगे प्रार्थना करनी चाहिए।

"यह किया जा चुका है, पर सफलता की आशा कुछ भी नहीं है। सम्राट का ऑफ़िस डिपार्टमेण्ट को लिखेगा, डिपार्टमेण्ट सीनेट से परामर्श लेगा, सीनेट अपने निर्णय की पुष्टि करेगी और फल वही, निर्दोष को दण्ड देना, होगा।"

रोगो फ़िन्स्की ने कृपाभाव से मुस्कराते हुए कहा—"पहली बात तो यह है कि डिपार्टमेण्ट ऑफ़ मिनिस्ट्री सीनेट से परामर्श कभी नहीं लिया करता। वह असली काग़ज़-पत्र मँगवा भेजेगा, और यदि उनमें किसी प्रकार की भूल देखेगा तो उसीके अनुरूप कार्य करेगा। दूसरी बात यह है कि निर्दोष को कभी दण्ड नहीं दिया जाता, और यदि दिया भी जाता है तो बहुत कम, लाखों

मामलों में से किसी एक में। दण्ड केवल अपराधियों को ही दिया जाता है!"—रोगो फ़िन्स्की ने निश्चयात्मक स्वर में कहा और इसके बाद वह आत्म-सन्तोष के साथ मुस्कराया।

निखल्यूडोव ने अपने पड़ोसी के प्रति कुत्सा की अनुभूति करते हुए कहा—और मैं इससे बिलकुल उल्टी ही बात को ठीक समझता हूँ। मुझे पूरा निश्चय हो गया है कि विधान द्वारा दण्डित व्यक्तियों में से अधिकांश निर्दोष होते हैं।

"निर्दोष किस दृष्टि से?"

"वास्तविक दृष्टि से और किस दृष्टि से। वे उतने ही निर्दोष होते हैं, जितनी यह स्त्री विष देने के अभियोग से निर्दोष है, जितना वह देहाती हत्या करने के अभियोग से निर्दोष है जिससे मैं अभी मिल कर आ रहा हूँ; जितने वे माता-पुत्र निर्दोष हैं, जिन्हें दो-चार दिन में अग्निकाण्ड करने के अभियोग में दण्ड दिया जाने वाला है, यद्यपि स्वयं गृह-स्वामी ने घर में आग लगाई थी।"

"हाँ, न्याय-दोष होना बहुत सम्भव है, हमेशा से था, है और रहेगा। मानवी संस्थाएँ कभी पूर्णता प्राप्त नहीं कर सकतीं।"

"और इसके अतिरिक्त ऐसे भी बहुत से आदमी हैं, जिन्हें न करने पर भी ऐसे कार्यों के लिए दण्ड दिया गया है, जिन्हें समाज अपराध समझता है।"

"बात ऐसी नहीं है; हर एक चोर जानता है कि चोरी करना बुरा है और हमें चोरी नहीं करनी चाहिए, यह दुराचरण है।"—रोगो फ़िन्स्की ने उस शान्त, आत्माश्वासनपूर्ण, किञ्चित घृणा-

व्यञ्जक मुस्कराहट के साथ कहा, जो निख्ल्यूडोव को विशेष रूप से क्रुद्ध कर रही थी।

"जी नहीं, वह यह नहीं जानता, उससे लोग-वाग कहते हैं—'चोरी करना बुरा काम है'—और वह जानता है कि फैक्टरी का स्वामी वेतन दबा-दबा कर उनके परिश्रम की चोरी करता है, वह जानता है कि सरकार अपने कर्मचारियों के द्वारा उसे टैक्सों के रूप में बराबर लूटती रहती है।"

रोगो फ्रिन्स्की ने अपने साले के शब्दों की परिभाषा करते हुए कहा—यह तो खुल्लमखुल्ला अराजकता है।

निखल्यूडोव बोला—मैं नहीं जानता कि यह क्या है; मैं केवल वही कह रहा हूँ जो नित्य-प्रति होता रहता है। वह जानता है कि सरकार उसे लूटती है; वह जानता है कि हम भू-स्वामी उसे बहुत दिनों से लूटते आ रहे हैं; वह जानता है कि हमने उसे उस भूमि से वञ्चित कर दिया है, जो न्यायतः सबकी सम्पत्ति होनी चाहिए, और यदि उस भूमि से वह दो-चार डालियाँ आग जलाने को उठा लेता है तो हम उसे जेल में ठूँस देते हैं और उसे विश्वास दिलाते हैं कि वह चोर है। पर वह जानता है कि वह चोर नहीं है; वे लोग चोर हैं, जिन्होंने उसे उसकी भूमि से वञ्चित कर दिया है, और किसी रूप में सही, थोड़ा या बहुत, अपनी सम्पत्ति का अंश लेकर वह अपने कुटुम्ब के प्रति कर्तव्य का पालन कर रहा है।

रोगो फ्रिन्स्की को पूरा विश्वास हो गया कि निख्ल्यूडोव समष्टिवादी बन गया है, और कि समष्टिवाद के अनुरूप सारी भूमि को समान रूप से विभक्त करना चाहिए, और कि इस प्रकार

का विभक्तीकरण अत्यन्त मूर्खतापूर्ण होगा, और कि वह इसे बड़ी आसानी से प्रमाणित कर सकता है। अतः उसने शान्त भाव से कहना आरम्भ किया—मेरी समझ में तुम्हारी बात नहीं आती, और यदि आती भी है तो मैं उससे सहमत नहीं हूँ। अगर तुम आज उसे बाँट दोगे, तो कल को वह फिर परिश्रमी और चतुर लोगों के हाथ में जा पहुँचेगी।

"उसे बाँटने को कौन कहता है। ज़मीन किसी की सम्पत्ति न होनी चाहिए। वह ऐसी चीज़ न होनी चाहिए जिसे बेचा, ख़रीदा और गिरवी रक्खा जा सके।"

"मनुष्य में सम्पत्ति पर अधिकार रखने की प्रवृत्ति जन्म ही से होती है, यदि यह न हो तो ज़मीन जोतने की ओर प्रवृत्त ही कौन होगा? सम्पत्ति सम्बन्धी अधिकारों को नष्ट कर दिया जाय तो हम बर्बर हो जायँगे।"—रोगो फिन्स्की ने इन शब्दों का उच्चारण अधिकारपूर्वक किया। वस्तुत: व्यक्तिगत भू-स्वामित्व के अनुकूल यह तर्क हमेशा से पेश किया जाता रहा था और इसे सब अकाट्य समझते थे, और इसका आधार यह धारणा थी कि मनुष्यों की भूमि पर अधिकार करने की अभिलाषा उस पर क़ब्ज़ा रखने का अधिकार प्रमाणित करती है।

"बात इसके बिलकुल विपरीत है, यदि भूमि किसी एक व्यक्ति की सम्पत्ति न रहेगी, तो इस प्रकार बेजुती न पड़ी रहेगी, जिस प्रकार अब पड़ी रहती है, और उसके स्वामी ख़ुद तो उसका किसी प्रकार का उपयोग कर नहीं सकते, जो कर सकते हैं उन्हें भी नहीं करने देते।"

"पर डिमिट्री इवानिच, तुम जो कुछ कह रहे हो, निरा पागलपन है। क्या हमारे युग में भू-स्वामित्व का नष्ट किया जाना सम्भव है। मैं जानता हूँ कि यह तुम्हारा पुराना शौक़ है, पर मुझे—"और उसका चेहरा पीला पड़ गया और कण्ठ-स्वर काँप उठा। यह स्पष्ट था कि इस प्रसङ्ग का उससे बहुत गहरा स्वार्थ-सम्बन्ध है—"मुझे सिर्फ़ यही कहना है कि इस सम्बन्ध में कोई वास्तविक कार्य करने से पहले इस पर अच्छी तरह विचार कर लो।"

"क्या आप मेरे सम्बन्ध में बातचीत कर रहे हैं?"

"हाँ; मेरा कहना यही है कि हम एक विशेष परिस्थिति में उत्पन्न हुए हैं और उस परिस्थिति से उत्पन्न होने वाले उत्तरदायित्व को हमें वहन करना चाहिए, हमें उन अवस्थाओं की रक्षा करनी पड़ेगी जिनमें हमारा जन्म हुआ है, ये अवस्थाएँ हमें अपने पूर्वजों से उत्तराधिकार के रूप में प्राप्त हुई हैं और हमें इन अवस्थाओं को अपने उत्तराधिकारियों को तद्वत प्रदान कर देना चाहिए।"

"मेरा कर्तव्य है कि .....।"

पर रोगो फ़िन्स्की ने इस बाधा की कुछ चिन्ता न की और कहना जारी रक्खा—मैं अपनी या अपने बच्चों की बात नहीं कर रहा हूँ। मेरे बच्चों की स्थिति बनी-बनाई है; मैं इतना कमा लेता हूँ कि हम सब सुख से रह सकें, और मुझे आशा है कि मेरे बच्चे भी इसी प्रकार रह सकेंगे। इसलिए मैं जो तुम्हारे कार्य में—क्षमा करना, तुम यह कार्य अच्छी तरह सोच-विचार कर नहीं कर रहे हो—इतनी रुचि दिखा रहा हूँ, सो व्यक्तिगत उद्देश्य से प्रेरित

होकर नहीं—वास्तव में मैं तुम्हारे साथ सिद्धान्त की दृष्टि से सहमत नहीं हो सकता। मैं तुम्हें सलाह दूंगा कि पहले अच्छी तरह सोचो-विचारो और ऐसी पुस्तकों का अध्ययन करो .. ।

"आप अपना काम-काज आप देखने-भालने का और अध्ययन योग्य पुस्तकें चुनने का कार्य मुझी पर छोड़ दीजिए"—निखल्यूडोव ने कहा और उसका चेहरा पीला पड़ गया और हाथ ठण्डे हो गए। उसे बोध होने लगा कि उसे अपने आप पर अधिकार नहीं रहा। वह रुका और चाय पीने लगा।
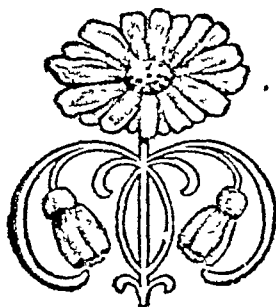
कुछ संयत होने पर निखल्यूडोव ने अपनी बहिन से पूछा—"और बच्चे कैसे हैं?" उसकी बहिन ने उसे बताया कि वह उन्हे उनकी दादी के पास छोड़ आई है। उसे यह देख कर हर्ष हुआ कि उसके पति के साथ उसके भाई का वाद-विवाद समाप्त हो गया और वह उसे बताने लगी कि किस प्रकार बच्चे ठीक उसी प्रकार यात्रा-यात्रा खेल रहे थे, जिस प्रकार किसी जमाने में वे दोनो खेला करते थे। और ठीक जिस प्रकार वे दोनों तीन गुड़ियों को गाडी में रखते थे और वह उनमें से एक को हबशी के नाम से पुकारता था और दूसरी को फ्रेञ्च महिला, उसी प्रकार वे नाम रख रहे थे और पुकार रहे थे।

निखल्यूडोव ने मुस्करा कर कहा—सचमुच, तुम्हें अभी तक याद है?

"हाँ; और सोचो तो ठीक उसी तरह खेलते हैं।"

क्षोभकारी वार्तालाप का अन्त हो गया था, और नैटाली निश्चिन्त हो गई थी, पर उसने अपने पति की उपस्थिति में वे बातें कहना उचित न समझा, जिन्हे केवल उसका भाई ही समझ पाता, अतः उसने साधारण वार्तालाप का सिलसिला छेड़ते हुए कमन्स्की की माँ के शोक की चर्चा आरम्भ कर दी। यह पीटर्सबर्ग का प्रिय विषय अब मास्को आ पहुँचा था। रोगो फ़िन्स्की ने द्वन्द-युद्ध की हत्या को साधारण अपराध-व्यवस्था की परिधि में न लिए जाने पर असन्तोष प्रकट किया। निखल्यूडोव ने इसका कुछ उत्तर दिया और एक नया वाद-विवाद छिड़ गया। पर दोनों प्रतिपक्षियों में से किसी ने अपने मन की सारी बातें नहीं कहीं, दोनों अपने विचारों पर दृढ रहे और मन ही मन एक दूसरे को धिक्कारने लगे। रोगो फिन्स्की को ज्ञात हुआ कि निखल्यूडोव उसे तिरस्कार की दृष्टि से देखता है और उसकी कार्यशीलता को धिक्कार रहा है, अतः उसने उसके विचारों का अनौचित्य प्रकट करना चाहा।

इधर निखल्यूडोव भू-सम्बन्धी व्यवस्था के मामले में अपने बहनोई को दख़ल देते देख कर उत्तेजित हो उठा था (वैसे वह मन ही मन अच्छी तरह जानता था कि उसकी बहिन, बहिन के पति और उसके बच्चों को उसके उत्तराधिकारी होने की हैसियत से, आपत्ति खड़ी करने का अधिकार है) और उसे यह बात सोच-सोच कर क्रोध आ रहा था कि जिस बात को वह (निखल्यूडोव) मूर्खता और अपराध समझता है, उसी को यह सङ्कीर्ण प्रकृति व्यक्ति संयत आश्वासन के साथ न्याय्य और वैध प्रतिपादित करने में लगा हुआ है। और इस संयत आश्वासन से निखल्यूडोव चिढ़ गया।

उसने पूछा—इसमें क़ानून कर ही क्या सकता था?

"कानून दोनों में से एक प्रतिद्वन्द्वी को साधारण हत्यारे की तरह साइबेरिया की खानों को निर्वासित कर सकता था।"

निखल्यूडोव के हाथ फिर ठण्डे हो चले। उसने गर्म होकर पूछा—और इससे लाभ क्या होता?

"यह न्याय होता।"

निखल्यूडोव ने कहा—मानो कानून का लक्ष्य न्याय करना है!

"और नहीं तो क्या है?"

"पूँजीपतियों के हितों की रक्षा करना! मेरी राय में तो क़ानून केवल हमारी श्रेणी के लाभ के लिए वर्तमान अवस्था को बनाए रखने के लिए है।"

रोगो श्निन्स्की ने शान्त भाव से मुस्करा कर कहा—यह तो एक अजीब बात है। अन्यथा कानून का लक्ष्य साधारणतया इससे बिलकुल दूसरा ही कहा जाता है।

"हाँ, सिद्धान्त रूप में चाहे भले ही हो, पर प्रकृत रूप में यह बात नहीं है, और इसका मैंने खुद पता लगाया है। क़ानून का लक्ष्य वर्तमान अवस्था को चिरस्थायी रखना है और इसके लिए वह उन राजनीतिक अपराधी कहलाने वाले व्यक्तियों को प्राण-दण्ड और यन्त्रणाएँ देता है, जो साधारण स्थिति से उच्चतर होते हैं और उसकी उन्नति करना चाहते हैं, और उन लोगों को भी प्राण-दण्ड और यन्त्रणाएँ देता है, जो उस स्थिति से निम्नतर होते हैं और जिन्हें नैतिक अपराधी कह कर पुकारा जाता है।"

"भई, मैं तुम्हारे साथ सहमत नहीं हो सकता। पहली बात

तो यह है कि मैं यह नहीं मान सकता कि राजनीतिक कार्य के अपराधियों को इसलिए दण्ड दिया जाता है कि वे साधारण स्थिति से उच्चतर होते हैं। अधिकांश में यह देखा गया है कि वे समाज का बहिष्कृत अङ्ग होते हैं, उतने ही दूषित-प्रकृति—यद्यपि दूसरे ढङ्ग से—जितने वे नैतिक अपराधी जिन्हें तुम स्थिति से निम्नतर कहते हो ?"

"पर मैं ऐसे आदमियों को जानता हूँ, जो नैतिक दृष्टि से अपने विचारकों से कहीं ऊँचे हैं ; वे सारे सम्प्रदायवादी नैतिक आचरण-सम्पन्न होते हैं—चाहे.... ... ।"

पर रोगो फ़िन्स्की व्याघात सहन करने का अभ्यस्त न था, अतः वह निख्ल्यूडोव की बात सुने बिना ही अपनी बात कहता रहा और निख्ल्यूडोव इससे और भी चिढ़ गया।

"न मैं इस बात को मान सकता हूँ कि क़ानून का उद्देश वर्तमान अवस्था बनाए रखना है। कानून का लक्ष्य है सुधार करना...।"

निख्ल्यूडोव कह उठा—वाह, क्या कहने हैं सुधार के !—जेलें भरी पड़ी हैं !

पर रोगो फ़िन्स्की बराबर अपनी बात कहता गया—या उन दूषित और पाशविक मनुष्यों को समाज से हटा देना, जो उसकी शान्ति के लिए ख़तरनाक होते हैं।

"और वह यह नहीं करता। समाज के पास सुधार करने या हटाने के साधन ही नहीं हैं।"

रोगो फ़िन्स्की ने बनाव मुस्कराहट के साथ कहा—वह कैसे ? मैं नहीं समझा।

निखल्यूडोव ने कहा—मेरे कहने का मतलब है कि केवल उन्हीं दो प्रकार की दण्ड-व्यवस्थाओं को विवेकपूर्ण कहा जा सकता था, जो पहले ज़माने में काम में लाई जाती थीं—अर्थात् शारीरिक दण्ड और प्राण-दण्ड। ज्यों-ज्यों मानवी प्रकृति कोमलतर होती जा रही है, ये दोनों दण्ड-व्यवस्थाएँ अधिकाधिक उपेक्षित होती जा रही हैं।

"कम से कम तुम्हारे मुँह से यह निकलना बड़ी विचित्र सी बात है।"

"जी हाँ, किसी आदमी को पीटना नितान्त बुद्धिमत्ता का कार्य है जिससे वह भी जान जाय कि उसे अब भविष्य में वह काम न करना चाहिए जिसके लिए वह पीटा जा रहा है, और साथ ही किसी आदमी का गला काट डालना भी उतना ही बुद्धि-मत्तापूर्ण है यदि उस आदमी का जीवन समाज की शान्ति के लिए आपदजनक समझा जाता हो। इन दण्डों में कुछ तो बुद्धि-विवेक है। पर किसी ऐसे आदमी को जो बेकारी या बुरी सङ्गति के कारण दूषित हो गया हो, जेल में ठूँसे रखना, उसे ऐसी अवस्था में डाल देना जहाँ उसे दोनों समय पेट भर कर भोजन मिला चला जाता है, और जहाँ वह बलात् अलस भाव से दिन बिताता और घोरतम दूषित आदमियों के संसर्ग मे रहता है, कहाँ की बुद्धिमत्ता है? एक आदमी को जनता के धन पर (प्रत्येक आदमी पर पाँच सौ रूबल से क्या कम ख़र्च होते होंगे?) टूला से इर्कु-ट्स्क और कुर्स्क से... ।"

"हाँ, पर कुछ भी सही, लोग-बाग इन लम्बी यात्राओं से

डरते हैं, और यदि ये यात्राएँ और ये जेलें न होतीं तो हम और तुम यहाँ इस तरह न बैठे होते !"

"इन जेलों से हमारा संरक्षण कहाँ होता है ? आदमी वहाँ एक निश्चित अवधि तक रक्खे जाते हैं और फिर छोड़ दिए जाते हैं। और इन जेलों से वे इतने दूषित और दुरात्मा बन कर निकलते हैं कि समाज का संरक्षण होने के स्थान पर उसकी आपत्ति की आशङ्का पहले से भी अधिक बढ़ जाती है।"

"तुम्हारे कहने का मतलब है कि सुधार-व्यवस्था में उन्नति होनी चाहिए ?"

"उसमें उन्नति हो ही नहीं सकती। सुधरी हुई जेलों पर जो रक़म ख़र्च होगी, वह आज जनता की शिक्षा के लिए ख़र्च की जाने वाली रक़म से भी बढ़ जायगी और इससे जनता पर और भी असह्य भार लद जायगा।"

रोगो फ़्रिन्स्की ने अपने साले की बात पर ध्यान न देकर कहा—पर सुधार सम्बन्धी त्रुटियों से क़ानून कहाँ अवैध सिद्ध हुआ ?

निख़ल्यूदोव ने अपना स्वर ऊँचा करके कहा—इन त्रुटियों की कोई औषधि नहीं है।

रोगो फ़्रिन्स्की ने कहा—फिर क्या करना चाहिए ? सबको मार डालना चाहिए ? या जैसी कि एक राजनीतिज्ञ ने सलाह दी थी, उनकी आँखें निकलवा लेनी चाहिए ?

"हाँ, यह काम निष्ठुर अवश्य होगा, पर इसका प्रभाव पड़ेगा। पर आजकल जो कुछ किया जाता है वह निष्ठुर तो है ही, इनका

कोई प्रभाव भी नहीं पड़ता। यह सब कुछ इतना मूर्खतापूर्ण है कि मेरी समझ में नहीं आता कि कोई समझदार आदमी अपराध-विधान जैसे अर्थहीन और वीभत्स व्यापार में किस प्रकार भाग ले सकता है।"

रोगो फिन्स्की का चेहरा पीला पड़ गया; उसने कहा—मगर संयोग की बात, मैं भी उसमें भाग लेता हूँ।

"यह आपका काम है—पर मेरी समझ में यह सब कुछ नहीं आता।"

रोगो फिन्स्की ने कम्पित स्वर में कहा—मेरा ख़्याल है कि तुम्हारी समझ में बहुत सारी बातें नहीं आतीं।

"मैंने अपनी आँखों से देखा है कि एक पब्लिक-प्रॉसीक्यूटर ने एक ऐसे लड़के को दण्ड दिलाने का कितना भरसक प्रयत्न किया था, जिसे देख कर किसी भी विकार-शून्य व्यक्ति के हृदय में सम-वेदना के भाव उदित हो उठते। मुझे एक ऐसी ही दूसरी घटना की बात याद है कि किस प्रकार एक सम्प्रदायवादी के साथ जिरह करके एक पब्लिक-प्रॉसीक्यूटर ने केवल धर्म-पुस्तक पढ़ने मात्र के अभियोग से उसे अपराधी प्रमाणित कर दिया था। संक्षेप में, न्यायालयों का कार्य इस प्रकार के विवेकहीन और निर्दय व्यापार करने मात्र में सन्निहित है।"

रोगो फिन्स्की ने उठते-उठते कहा—यदि मेरा ऐसा विचार होता तो मैं इस पद पर काम करता न दिखाई देता।

निखल्यूडोव ने अपने बहनोई के चश्मे में एक विशेष प्रकार की चमचमाहट देखी। उसने सोचा—"क्या ये आँसू हैं?"—और

सचमुच वे आहतगर्व के आँसू थे। रोगो फ्रिन्स्की ने खिड़की के पास जाते-जाते अपनी जेब से रूमाल निकाला, और खखारते हुए अपना चश्मा साफ़ करना शुरू किया, और चश्मा साफ़ करने के बाद अपने नेत्र भी साफ़ किए।

इसके बाद वह सोफा के पास लौट आया और चुपचाप सिगार सुलगा कर बैठ गया, बोला कुछ नहीं।

निखल्यूडोव को अपने बहिन-बहनोई को इस सीमा तक खिन्न करने पर मन ही मन आत्म-ग्लानि हुई—और विशेषकर उस अवसर पर, जब वह सदैव के लिए जा रहा था और उनसे उसके मिलने की फिर कोई सम्भावना न थी।

वह अस्त-व्यस्त भाव से उनसे विदा होकर घर वापस लौटा।

"मैंने उनसे जो कुछ कहा वह ठीक ही है—कम से कम उन्होंने कोई उत्तर न दिया—पर कहने का ढङ्ग ठीक न था। यदि मैं क्रुध्मा के वश में इस दर्जे तक हो सकता हूँ कि उन्हें खिन्न और निरीह नैटाली को आहत और दुःखित कर सकता हूँ, तब तो वास्तव में पहले से कुछ अधिक अन्तर न हुआ।"—उसने सोचा।

सलोवा कैदियों के जिस दल में जाने वाली थी, वह मास्को से तीन बजे की गाड़ी मे रवाना होने वाला था, अतः दल को रवाना होते देखने और कैदियों के साथ स्टेशन तक जाने में समर्थ होने के लिए निखल्यूडोव १२ बजे जेल पहुँचना चाहता था।

गत रात्रि के समय अपना असबाब बाँधते समय उसके हाथ अपनी डायरी लग गई और वह यत्र-तत्र पढ़ने लगा। अन्तिम बार उसने उसमें उस समय लिखा था, जब वह पीटर्सबर्ग को जा रहा था—"कटूशा मेरे त्याग को ग्रहण नहीं करना चाहती, वह स्वयं भी त्याग करना चाहती है। उसकी विजय हुई, और मेरी भी विजय हुई। मुझे प्रतीत ही होता है—पर साथ ही साथ विश्वास करते भय भी लगता है कि उसके अन्तराल में परिवर्तन-व्यापार जारी है, और यह देख कर मेरी प्रसन्नता की सीमा नहीं रहती। मुझे विश्वास करते भय तो लगता है, पर साथ ही मुझे प्रतीत भी होता है कि उसमें पुनः जीवन का सञ्चार हो चला है।" इससे

आगे एक स्थान पर लिखा हुआ था—"मुझे घोर मानसिक वेदना और घोर आत्मोल्लास की अवस्था पार करनी पड़ी है। मुझे पता चला कि उसने अस्पताल में बड़ा बुरा आचरण किया और सहसा मेरे हृदय में घोर व्यथा हो उठी। मैंने यह कभी न सोचा था कि इससे मुझे इतनी व्यथा होगी। मैंने उससे घृणा और कुत्सा के साथ बात की; पर सहसा मुझे स्मरण आया कि जिस बात के लिए मैं उससे घृणा कर रहा हूँ, उसी का अपराधी मैं स्वयं कितनी बार रह चुका हूँ—और हूँ (चाहे विचारों के द्वारा ही सही), और तत्काल मैं अपनी ही दृष्टि में क्षुद्र दिखाई देने लगा। मुझे उस पर दया आई और मुझे सुख-शान्ति प्राप्त हुई। यदि हम समय रहते अपनी आँख का शहतीर देख लिया करें तो हम कितने अधिक दयालु बने रहें!" इतना पढ़ने के बाद उसने लिखा—"मैं अभी नैटाली से मिल कर आ रहा हूँ, और आत्म-तुष्टि ने मुझे एक बार फिर निर्मम और कुत्सापूर्ण बना दिया और इस समय मेरा हृदय भारी है। पर अन्यथा सम्भव ही नहीं है। बस, कल को एक नए जीवन का आरम्भ होगा। पुराने जीवन को सदैव के लिए विदा! अनेकानेक नवीन संस्कार एकत्र हो गए हैं, पर मैं उन्हें इस समय व्यवस्थित रूप देने में असमर्थ हूँ।

जब दूसरे दिन सुबह निखल्यूदोव की आँख खुली तो उसके हृदय में जो भाव सब से पहले उठे, वे बहनोई के साथ लिखा होने के पश्चात्ताप के भाव थे।

उसने सोचा—मैं इस तरह नहीं जा सकता; मुझे जाकर उनसे मेल करना चाहिए। पर जब उसने अपनी घड़ी की ओर देखा

तो उसे पता चला कि उसके पास समय का बड़ा अभाव है, और उसे दल रवाना होने के समय तक किसी न किसी प्रकार वहाँ जा पहुँचना चाहिए। उसने झटपट सारी चीज़ें तैयार कीं, सामान को नौकर और टारस थियोडेसिया के पति, जो उसके साथ ही जा रहा था, के साथ स्टेशन पर भिजवा दिया और इसके बाद उसे जो गाड़ी सब से पहले मिली, उसी पर सवार होकर वह जेल की ओर रवाना हो गया।

कैदियों की गाड़ी और उसकी गाड़ी में केवल दो घण्टे का अन्तर था, अतः उसने मकान का किराया चुका दिया और वहाँ से सदैव के लिए विदा ली।

* * *

जुलाई का महीना था और मौसम बेहद गर्म था। पत्थरों, दीवारों और लोहे की छतों को शान्त रात्रि शीतल न कर पाई थी, और उनमें से गर्मी की ज्वालाएँ निकल-निकल कर निश्चेष्ट वायु में मिल रही थीं। बीच-बीच में यदि हवा का हल्का झोंका आता भी था, तो ठण्डा नहीं, अत्यन्त उष्ण, मिट्टी-धूल से भरा, और दुर्गन्धपूर्ण, जिसमें से ऑयलपेण्ट की गन्ध आ रही थी।

सड़कों पर बहुत कम आदमी दिखाई देते थे, और जो थे वे छाया की ओर रहने की चेष्टा कर रहे थे। हाँ, ताँबे जैसे तपे हुए चेहरे वाले ग्रामीण छाल के जूते पहने, उस तेज़ धूप में सड़क पर बैठे, जलती हुई रेत में कङ्कड़ अवश्य कूट रहे थे; और खिन्न पुलिस वाले अपने हॉलेण्ड बनियान पहने, नारङ्गी डोरी में पिस्तौल खोंसे निर्जीव और विषण्ण भाव से सड़क के बीचों-बीच में खड़े-खड़े

एक पाँव से दूसरे पाँव पर भार बदल रहे थे; और सूर्य की किरणों से तपती हुई सड़कों पर घण्टी बजाती हुई ट्रामकार गुज़र रही थीं, और घोड़ों को हॉलेण्ड नाल और चमड़े का मुखौटा पहना दिया गया था।

जिस समय निख्ल्यूडोव जेल के दरवाज़े पर पहुँचा, उस समय तक क़ैदियों का दल सहन में न आया था। क़ैदियों को देने-लेने का काम सुबह चार बजे से आरम्भ हुआ था और अब तक जारी था। दल में छः सौ तेईस आदमी थे और चौंसठ स्त्रियाँ थीं। उन सबको गिनना, रजिस्ट्री लिस्ट के अनुरूप हवाले करना, बीमारों और दुर्बलों को छाँट-छाँट कर अलग करना और सबको सैनिक यात्री दल के हवाले करना था। नया इन्सपेक्टर, उसके दो सह-कारी डॉक्टर, और मेडिकल असिस्टेण्ट, सैनिक यात्री दल का अफ़सर और क्लर्क—सब सहन में दीवार के नीचे छाया में लिखने की सामग्री और काग़ज़-पत्रों से ढकी मेज़ के सामने बैठे थे। वे क़ैदियों को एक-एक करके बुलाते, परीक्षा करते, दो-एक सवाल करते और नोट कर लेते।

सूर्य की किरणें शनैः-शनैः मेज़ के पास तक आ पहुँची थीं, और हवा का कहीं नाम-निशान तक न था, साथ ही पास खड़े क़ैदियों की श्वास से आती हुई दुर्गन्ध से जी घबरा उठता था।

सैनिकों का अफ़सर—एक लम्बे कद का लम्बमुँहा आदमी, जिसकी बाँहें छोटी और कन्धे ऊँचे थे—अपनी घनी मूँछों में सिगरेट का धुआँ फैलाता हुआ बोला—"हे भगवान, क्या इन सबका कभी अन्त न आएगा?"—उसने सिगरेट का गहरा दम

खींचा—आप लोग तो मुझे मार डालेंगे। आपको ये सब कहाँ से मिल गए? क्या और भी बहुत से हैं?

क्लर्क ने सूची की ओर दृष्टिपात किया—स्त्री-दल के अतिरिक्त चौबीस और हैं।

सैनिक अफ़सर ने क़ैदियों से, जो अभी तक मुआयना कराए बिना एक स्थान पर दल बनाए खडे थे, चिल्ला कर कहा—"अरे, तुम वहाँ क्यों खडे हो? आते क्यों नहीं?"—ये कैदी साज-सामान लादे, क़तार बनाए तेज़ धूप में पिछले तीन घण्टों से खडे हुए अपनी बारी की प्रतीक्षा कर रहे थे।

इधर जेल के सहन मे यह सब हो रहा था, उधर दरवाज़े के बाहर (जहाँ सन्तरी हस्ब मामूल रायफल लिए पहरा दे रहा था) कैदियों का सामान ढोने और अशक्त क़ैदियों को सवार करने के लिए कोई बीस गाड़ियाँ आ लगी थीं, और एक कोने मे क़ैदियों के नाते-रिश्तेदार और मिलने-जुलने वाले बैठे-बैठे कैदियों के बाहर निकलने, और अवसर मिलने पर उनसे दो-चार बातें करने और चीज़ देने की बाट देख रहे थे।

निखल्यूडोव इन्हीं लोगों में जाकर खडा हो गया। उसके उस स्थान पर खड़े-खड़े एक घण्टा बीतने के बाद बेड़ियों की झन-झनाहट, पगों की धमधमाहट, आदेशपूर्ण स्वर, खाँसना-खखारना और विराट जन-समुदाय की धीमी कानाफूसी सुनाई पड़ने लगी। यह अवस्था कोई पाँच मिनट तक रही और इसके बीच में कई जेलर बाहर आए और भीतर गए। अन्त में आदेश-वाक्य सुनाई पड़ा, विराट लौह-द्वार झन-झन करता हुआ खुल गया, बेड़ियों की

झनझनाहट पहले से अधिक बढ़ गई, और कैदियों के साथ जाने वाले सैनिकों का दल सफेद ब्लाउज़ पहने और हाथ में रायफ़ल लिए जेल के द्वार के आगे एक बड़ा सा वर्ग बना कर खड़ा हो गया। यह उनका दैनिक, अभ्यस्त कार्य दिखाई देता था। एक और आदेश-वाक्य सुन पड़ा, और कैदी मटीले रङ्ग की टोपियाँ अपने घुटे सिरों पर रक्खे, एक हाथ से कन्धे पर पड़ा थैला सँभालते, पैरों की बेड़ियाँ खखेड़ते और दूसरा हाथ हिलाते हुए दो-दो करके बाहर निकलने लगे।

सब से पहले सपरिश्रम कारावास वाले क़ैदी निकले; सब एक जैसे कपड़े पहने, ख़ाकी पाजामे, ख़ाकी चोगे, पीठों पर नम्बर पड़े हुए। वे सब—बुड्ढे और जवान, पतले और मोटे, पीले, लाल और काले, दाढ़ी वाले और दाढ़ी-विहीन, रूसी, तातार, यहूदी—अपनी बेड़ियाँ झनझनाते और बाँहें फुर्ती के साथ हिलाते, मानो वे दूरस्थ यात्रा करने के लिए बिलकुल कटिबद्ध हों, बाहर निकले, और दस कदम जाने के बाद रुक गए और चुपचाप चार-चार की कतार बना कर एक-दूसरे के पीछे खड़े हो गए। इसके बाद और भी घुटी चाँदों वाले आदमी जेल से निकलने लगे, जिनके पैरों में बेड़ियाँ न थीं, केवल हथकड़ियों ने एक-दूसरे के हाथ कसे हुए थे। इन्हें निर्वासन दण्ड मिला था। ये भी उतनी ही फुर्ती के साथ आए, आगे बढ़े, और चुपचाप रुक कर चार-चार की कतार बना कर खड़े हो गए।

इसके बाद इसी ढङ्ग से स्त्रियों का दल बाहर निकला; पहले सपरिश्रम कारावास वाली, जो ख़ाकी चोगे और रूमाल पहने थीं;

और उसके बाद निर्वासित या वे स्त्रियाँ जो स्वेच्छापूर्वक अपने कैदी पतियों के साथ जा रही थीं, अपनी निजी गाँव वाली या शहरी पोशाकें पहने। उनमें से कुछ स्त्रियाँ अपने ख़ाकी चोगों में बच्चे लपेटे हुए थीं। स्त्रियों के साथ ही लड़कियाँ और लड़के भी बाहर निकले और घोड़ों में चक्कर लगाते हुए नन्हें बछेरों की तरह स्त्रियों में घूमने लगे।

आदमियों ने चुपचाप खखारते हुए और बीच में दो-चार शब्द कहते हुए अपने-अपने स्थान ग्रहण किए।

स्त्रियाँ बिना रुके आगे बढ़ती रहीं। निख्ल्यूडोव को गुमान हुआ कि उसने उनमें मसलोवा को देख पाया है, पर वह तत्काल ही उस विराट जन-समुदाय में मिल गई और निख्ल्यूडोव को केवल कमर पर थैले लादे और बच्चों को लपेटे ख़ाकी प्राणी दिखाई दिए, जो अपने सारे मनुष्यत्व या कम से कम सारे स्त्रीत्व से वञ्चित से प्रतीत हो रहे थे।

यद्यपि सारे कैदियों की गणना जेल में पहले ही की जा चुकी थी, तथापि सैनिकों ने उन्हें फिर गिना और सूची से उनकी गणना का मिलान किया। इसमें बहुत देर लगी, विशेषकर इसलिए कि कैदी चल-फिर रहे थे, और इससे सैनिकों की गणना में गड़बड़ पड़ जाती थी।

सैनिक क़ैदियों को डपटते और धक्के देते (और कैदी रोषपूर्वक उनकी आज्ञा का पालन करते) और उन्हें दुबारा गिनते। गणना समाप्त होने पर सैनिकों के अफ़सर ने आदेश दिया और जन-समुदाय में अव्यवस्था और कोलाहल उत्पन्न हो गया। दुर्बल

स्त्री-पुरुष और बालक एक दूसरे से बढ़ जाने की चेष्टा में शीघ्रता-पूर्वक गाड़ियों की ओर झपटे और उनमें अपना सामान लादने और सवार होने लगे। रोदन करते हुए बच्चों को लिए स्त्रियाँ, जगह के लिए छीना-झपटी करते हुए उल्लसित बालक, और चिन्ता-शुष्क, निर्जीव क़ैदी गाड़ियों में सवार हुए।

कुछ क़ैदी अपनी टोपी उतार कर सैनिक अफसर के पास पहुँचे और उससे कुछ प्रार्थना करने लगे। बाद को निखल्यूडोव को पता चला कि वे गाड़ी में स्थान मिलने की प्रार्थना कर रहे थे। निखल्यूडोव ने देखा कि किस प्रकार अफ़सर ने क़ैदियों की ओर देखे बिना अपने सिगरेट में दम भरा और फिर अपनी छोटी बाँह एक कैदी के आगे हिलाई, और किस प्रकार वह क़ैदी अपना सिर कन्धों के बीच में छिपा कर पीछे कूद गया, मानो उसे घूँसे की आशङ्का हो।

अफसर ने ज़ोर से कहा—"मैं तुम्हे ऐसी सवारी दिलाऊँगा कि याद रहेगा। वहाँ पैदल पहुँचने के लिए क्या तुम्हारी टाँगे टूट गई हैं?" उनमें से केवल एक वृद्ध अवश्य ऐसा था, जिसकी प्रार्थना स्वीकार की गई थी, और निखल्यूडोव ने देखा कि किस प्रकार वह अपनी बेड़ियों युक्त टाँगों को खचेड़ता हुआ गाड़ी के निकट पहुँचा और किस प्रकार टोपी उतार कर प्रार्थना की! वह गाड़ी में स्वयं सवार न हो सका, क्योंकि वह अपनी बेड़ियों युक्त दुर्बल टाँगे ऊपर न उठा सका, और अन्त में गाड़ी की एक स्त्री ने उसे सहारा देकर ऊपर चढ़ा लिया।

जब गाड़ियों में असबाब लद गया और जिन्हें सवार होने की

अनुमति थी वे सवार हो गए, तो अफ़सर ने अपनी टोपी उतारी, माथा, चँदुला सिर और लाल गर्दन पोंछी, और फिर क्रास-चिन्ह बनाया।

उसने कहा—"मार्च", सिपाहियों की रायफ़लें झन्झना उठीं, कैदियों ने टोपियाँ उतारीं और क्रास-चिन्ह बनाया। जो उन्हें विदा करने आए थे, उन्होंने कुछ चिल्ला कर कहा और क़ैदियों ने उसका उत्तर दिया, स्त्री कैदियों के दल में उत्तेजना फैल गई; और कैदियों का दल ब्लाउज़ पहने, सिपाहियों से घिरा, बेड़ियों से जकड़े पाँवों से धूल उड़ाता हुआ चल पड़ा। सैनिक सब से आगे थे, उनके बाद बेड़ियाँ पहने सपरिश्रम कारावास वाले क़ैदी, उनके बाद हथकड़ियों से हाथ जकड़े ग्राम-सङ्घ द्वारा निर्वासित कैदी, उनके बाद स्त्रियाँ, उनके बाद असबाब से लदी गाड़ियों पर सवार दुर्बल कैदी थे। एक ऊँची लदी गाड़ी में एक स्त्री कपड़ा लपेटे बैठी थी और बुरी तरह चीख़-चिल्ला रही थी।
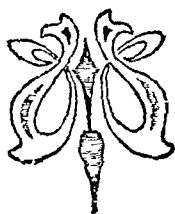
दियों की कतार इतनी लम्बी थी कि जब गाड़ियों के रवाना होने की बारी आई तो आगे के क़ैदी निगाह से ओझल हो गए थे। जब अन्तिम गाड़ी रवाना हो गई तो निखल्यूडोव अपनी किराए की गाड़ी में सवार हो गया और उसने गाड़ीवान को गाड़ी शीघ्रतापूर्वक चला कर उसे पुरुषों के दल के पास पहुँचा देने की आज्ञा दी, जिससे वह किसी परिचित कैदी से मिल सके और यदि सम्भव हो तो मसलोवा से पूछ सके कि उसके पास उसकी भेजी चीज़ें पहुँच गईं या नहीं।

बेहद गर्मी थी, हवा का कहीं चिन्ह तक न था, और सड़क के बीच में जाते हुए कैदी-दल के पैरों से उठी हुई धूल का बादल उनके सिरों पर फैला हुआ था। कैदी जल्दी-जल्दी जा रहे थे, अत निखल्यूडोव की गाड़ी को उन तक पहुँचने मे कुछ देर लगी। उन विचित्र और भयावह दिखाई देने वाले जीवों की एक

पंक्ति के बाद दूसरी अपरिचित पक्ति निखल्यूडोव के नेत्रों के आगे से गुज़रने लगी।

इसी प्रकार वे आगे बढ़ते चले जा रहे थे, एक जैसे कपड़े पहने, एक हज़ार पैरो को बढाते हुए, एक जैसे बँधे हुए, और अपने ख़ाली हाथ हिलाते हुए, मानो अपनी स्फूर्ति बनाए रखने के लिए। वे सब इतने अधिक थे, सबके सब इतने समान दिखाई देते थे, और सारे के सारे ऐसी विलक्षण अवस्था में ला डाले गए थे कि वे निखल्यूडोव को मनुष्य नहीं, कोई विलक्षण और भयावह जन्तु मात्र दिखाई दिए। उसका यह संस्कार कहीं उस समय जाकर नष्ट हुआ, जब उसने दण्डित कैदियों में फैडोरोव को और निर्वासितों मे परिहासपटु ओरवोटिव को, और एक शोहदे को देखा, जिसने उससे सहायता की याचना की थी। लगभग सारे क़ैदियों ने मुँह फेर कर उस गाड़ी और उसके सवार की ओर देखा। फैडोरोव ने अपना सिर पीछे की ओर किया, यह दिखाने के लिए कि वह निखल्यूडोव को पहचान गया है, ओरवोटिव ने आँख मारी, पर निषेध समझ कर सलाम किसी ने न किया।

निखल्यूडोव स्त्रियों के दल के पास पहुँच कर मसलोवा को तत्काल पहचान गया। वह दूसरी कतार में थी। पहली कतार में एक छोटी टाँगों और काली आँखों वाली भयावह स्त्री थी, जिसका चोग़ा पेटी से बँधा हुआ था। वह होरोशाव्का थी। उसके पास वाली स्त्री गर्भिणी थी और अपनी टाँगें कठिनता से खींचती आ रही थी। तीसरी मसलोवा थी, वह अपना थैला कन्धे पर डाले थी, और ठीक अपने सामने की ओर देखती जा रही थी। उसका चेहरा

शान्त और दृढ़ दिखाई दे रहा था। चौथी स्त्री अभी निरी युवती थी। वह छोटा सा लबादा पहने और गाँव वालियों की नाईं सिर पर रूमाल बाँधे फुर्ती के साथ आगे बढ़ी चली जा रही थी। यह सुन्दरी थियोडेसिया थी।

निखल्यूडोव गाड़ी से उतर पड़ा और स्त्रियों के पास पहुँचा। वह मसलोवा से पूछना चाहता था कि उसे उसकी भेजी चीज़ें मिल गईं या नहीं, और कि उसका जी कैसा है। पर इसी समय एक सैनिक सार्जएट उसकी ओर दौड़ कर आया और चिल्ला कर बोला—साहब, यह मत करो ; यह क़ानून के ख़िलाफ़ है।

पर जब वह पास आया और उसने निखल्यूडोव को पहचाना (जेल के सारे आदमी उसे पहचानते थे) तो उसने अपनी टोपी पर अँगुलियाँ छुलाईं और उसके सामने रुक कर कहा—"साहब, यहाँ नहीं , स्टेशन तक पहुँच जाने दो, यहाँ बातचीत करना मना है। . . .देखो ! पीछे मत रहो !" उसने क़ैदियों से चिल्ला कर कहा; और इसके बाद वह इतनी ज़ोर की गर्मी पड़ने पर भी, और अपने नए जूतों की कुछ चिन्ता न करके, फुर्ती के साथ दौड़ता हुआ चला गया।

निखल्यूडोव पैदल ही चल पड़ा और क़ैदियों की चाल के अनुरूप शीघ्रतापूर्वक आगे बढ़ता गया। यद्यपि वह कपड़े अधिक न पहने था, पर वह गर्मी के मारे व्याकुल हो गया, और उस धूल-धूसरित, गतिहीन वायु-मण्डल में श्वास तक लेना उसके लिए कठिन हो उठा।

कोई चौथाई मील पैदल चलने के बाद वह फिर गाड़ी में

सवार हो गया, पर सड़क के बीच में और भी गर्मी थी। उसने अपने बहनोई के साथ पिछले दिन के वार्त्तालाप का स्मरण करने की चेष्टा की, पर उस स्मृति ने उसे सुबह की भाँति उद्विग्न न किया। क़ैदियों के दलों और उनके मार्च और विशेषतया असह्य आतप के संस्कार ने उसे क्षीण कर दिया था।

सड़क के एक ओर बाड़े के पास पेड़ों के नीचे एक कुलफ़ी वाला घुटने जमाए बैठा था और उसके पास ही दो स्कूली लड़के खड़े थे। उनमें से एक लड़का सींग के चम्मच से कुलफ़ी का आनन्द लेने में मग्न था और दूसरे के लिए पीले से द्रव पदार्थ का गिलास तैयार किया जा रहा था।

निखल्यूडोव को भी कुछ ठण्डी चीज़ पीने की इच्छा हुई और उसने अपने गाड़ीवान से पूछा—यहाँ कहीं कुछ पीने योग्य चीज़ भी मिल जायगी?

गाड़ीवान ने कहा—"पास ही एक अच्छी सी दूकान है।"—और उसने गाड़ी मोड़ कर एक बड़े से साइनबोर्ड वाली दूकान के सामने खड़ी कर दी। मोटा-ताजा दूकानदार अपनी मेज़ के ऊपर मौजूद था और नौकर अपनी किसी समय की सफ़ेद कमीज़ें पहने मेजों पर बैठे थे। वे इस अजनबी ग्राहक को देख कर कौतूहलपूर्वक उठ खड़े हुए। निखल्यूडोव ने एक मीठी बोतल माँगी और खुद खिड़की के पास एक छोटी सी मेज़ के आगे, जिस पर गन्दा सा कपड़ा बिछा हुआ था, जा बैठा। एक दूसरी मेज़ पर दो आदमी बैठे हुए अपने माथे पोंछ-पोंछ कर मित्र-भाव से कुछ हिसाब लगा रहे थे और उनकी मेज़ पर चाय का सामान और एक सफ़ेद बोतल

रक्खी थी ! उनमें से एक का रङ्ग साँवला था और उसका सिर चँदुला था और उसके सिर के पीछे ठीक रोगो फिन्स्की के सिर की भाँति गिने-चुने बाल जमे हुए थे। उसे देख कर निखल्यूदोव को अपने बहनोई के साथ कल की बातचीत की और उस सम्बन्ध में उससे और नैटाली से मिलने की अपनी अभिलाषा की फिर याद आ गई।

उसने सोचा—"गाड़ी रवाना होने से पहले तो मैं उनसे शायद ही मिल सकूँ। एक पत्र लिखना अच्छा होगा।"—और उसने कागज़, लिफ़ाफ़ा और टिकट माँगा, और इसके बाद वह झागदार शीतल जल की घूँट लेते हुए मन ही मन सोचने लगा कि वह क्या लिखेगा। पर उसके विचार इतस्ततः घूमते रहे और वह पत्र की रचना न कर सका।

"प्रिय नैटाली,—कल तुम्हारे पति के साथ वार्तालाप का मेरे हृदय पर जो विषादपूर्ण प्रभाव पड़ा था, उसे अपने साथ लिए मैं विदा नहीं हो सकता।..... ..और आगे? कल मैंने उनसे जो कुछ कहा था, उसके लिए उनसे क्षमा माँगू? पर मैंने तो वही कहा था, जो मेरे हृदय में था। वह समझेंगे कि मैं अपनी कही बात वापस ले रहा हूँ। और इसके अलावा मेरे व्यक्तिगत मामलों में उनका दख़ल देना .... नहीं, मैं यह नहीं कर सकता ..।"—और उसे उस मनुष्य के प्रति, जो उसके स्वभाव और उसकी प्रकृति के लिए इतना विपरीत था, अपने हृदय में घृणा-कुत्सा फिर उद्दीप्त होती प्रतीत हुई।

गर्मी और भी तेज़ हो गई थी। सड़क के पत्थर और मकानों

की दीवारें उष्ण निःश्वास परित्याग करती प्रतीत हो रही थीं, पाँव रखने से झुलसे जाते थे, और जिस समय निखल्यूडोव ने गाड़ी के टूटे मड्गार्ड पर हाथ रक्खा तो उसका हाथ जल सा उठा।

ब निखल्यूडोव स्टेशन पर पहुँचा तो क़ैदी झरोखोंदार खिड़कियों वाली गाड़ियों में सवार हो गए थे। कुछ लोग उन्हें बिदा करने स्टेशन तक आए थे, पर उन्हें डिब्बों तक पहुँचने की आशा न थी, अतः वे दूर खड़े हुए थे।

उस दिन सैनिक दल को बड़ा कष्ट उठाना पड़ा था। जेल से स्टेशन को आते-आते पाँच क़ैदी सूर्य के उत्ताप से मर गए थे (उनमें से दो के प्राण निकलते हुए खुद निखल्यूडोव ने देखा था)। तीन को पुलिस के थाने में पहुँचा दिया गया था और दो के प्राण स्टेशन पर आकर निकल गए थे। सैनिकों को इसका तनिक क्षोभ न था कि उनके सुपुर्द किए गए पाँच आदमी—जो अभी न जाने कब तक जीवित रहते—मर गए। उन्हें चिन्ता केवल इस बात की थी कि कोई क़ानून की कार्यवाही न छूट जाय, और आज इतनी तेज़ धूप और गर्मी के दिन शवों को नियत स्थानों पर पहुँचाना, और

उनके कागज़-पत्र नियत अफ़सरों के हाथ में जाकर देना और उनके नाम निश्नी को जाने वाले कैदियों की सूची से काटना उनके लिए अवश्य कष्टदायक था।

बस, इसी में सारे सैनिक संलग्न थे, और जब तक यह सब समाप्त न हो जाय, तब तक गाड़ी के पास पहुँचने की किसी को इजाज़त न थी। पर निखल्यूडोव ने सैनिक सार्जेण्ट को रिश्वत दे दी और उसे गाड़ी तक पहुँचने की इजाज़त जल्दी मिल गई। सार्जेण्ट ने निखल्यूडोव को जाने तो दिया, पर साथ ही ताकीद कर दी कि वह झटपट बातचीत करके अफ़सरों की निगाह पड़ने से पहले-पहले वापस आ जाय। कुल मिला कर अठारह डिब्बे थे, और अफ़सरों के लिए नियत किए गए एक डिब्बे को छोड़ कर बाक़ी सब में क़ैदी भरे हुए थे। निखल्यूडोव ने डिब्बों के पास से गुज़रते हुए भीतर के वार्त्तालाप को सुना। सारे डिब्बों से ज़ञ्जीरों की झनझनाहट, उच्च और अनर्गल भाषा-प्रयोग-मिश्रित कोलाहल और चहल-पहल जारी थी। सारी बातचीत थैलों, पीने के पानी और बैठने की जगह से सम्बद्ध थी।

निखल्यूडोव ने एक डिब्बे में झाँका तो उसे दिखाई दिया कि दो सैनिक कैदियों के हाथों से हथकड़ियाँ उतार रहे हैं। कैदी अपने हाथ आगे बढ़ाते, एक सिपाही हथकड़ी में चाभी लगा कर उसे खोलता और दूसरा उसकी ज़ञ्जीर समेट लेता।

आदमियों के डिब्बे पार करने के बाद निखल्यूडोव स्त्रियों के डिब्बों के पास आया। दूसरे डिब्बे से उसके कान में एक स्त्री के कराहने की आवाज़ आई—आह! हाय! हाय राम!

निखल्यूडोव इस डिब्बे को पार करके एक सैनिक के निर्देशानुसार तीसरे डिब्बे के पास पहुँचा। जब उसने खिड़की में मुँह रक्खा तो उसकी नाक में पसीने की तीव्र गन्ध चढ़ी और कानों में तीक्ष्ण स्त्री-कण्ठ सुनाई दिए।

सारी सीटें गर्मी के मारे लाल, पसीने से तर, ज़ोर-ज़ोर से बोलती हुई स्त्री-कैदियों की, या अपनी निजी रङ्ग-बिरङ्गी पोशाकें पहने स्त्रियों से खचाखच भरी हुई थीं। निखल्यूडोव के चेहरे को खिड़की के पास देख कर पास की स्त्रियाँ शान्त हो गईं। मसलोवा सफेद जाकेट पहने और सिर नङ्गा किए सामने की सीट पर बैठी थी। सुन्दर सुस्मित थियोडेसिया उसके पास ही बैठी थी। उसने निखल्यूडोव को देखा तो मसलोवा को कुहनी से एक टहोका दिया और खिड़की की ओर सङ्केत किया।

मसलोवा ने झटपट उठ कर अपने काले-काले बालों पर रुमाल डाला। उसके पसीने से तर और गर्मी से लाल चेहरे पर मुस्कराहट की रेखा खिंच गई और वह खिड़की के पास आकर उसकी एक लोहे की छड़ पकड़ कर खड़ी हो गई।

उसने हर्षपूर्ण मुस्कराहट के साथ कहा—बड़ी गर्मी है।

"तुम्हें चीज़ें मिल गई थीं?"

"हाँ, धन्यवाद!"

"किसी और चीज़ की तो ज़रूरत नहीं है?"—निखल्यूडोव ने कहा। डिब्बे में से हवा भट्टी की लपक की तरह निकल रही थी।

"किसी चीज़ की नहीं। धन्यवाद!"

थियोडेसिया ने कहा—क्यों जी, पानी भी पीने को मिल जायगा ?

मसलोवा ने भी कहा—हाँ, पानी मिल जाता तो बड़ी बात होती।

"तो क्या तुम्हें पानी पीने को नहीं दिया गया ?"

"थोड़ा सा रक्खा था, निबट गया।"

"मैं सिपाही से अभी कहे देता हूँ। निझनी पहुँचने तक हम एक-दूसरे से न मिल सकेंगे।"

"तुम क्यों चल रहे हो ?"—मसलोवा ने पूछा, मानो वह जानती ही न हो, और साथ ही उसने निखल्यूडोव की ओर आनन्द से गद्गद् दृष्टि से देखा।

"मैं दूसरी गाड़ी से आ रहा हूँ।"

मसलोवा ने कुछ नहीं कहा, केवल एक गहरी साँस ली।

एक कठोर मुद्रा वाली स्त्री ने पुरुषोचित कठोर स्वर में कहा—"क्यों जी, क्या यह ठीक है कि बारह क़ैदियों को जान से मार डाला ?" यह कोरावलेवा थी।

निखल्यूडोव ने कहा—मैं बारह की बात तो नहीं जानता, दो को मैंने ख़ुद देखा है।

"और हमने सुना है कि बारह को मार डाला। और इन्हें कुछ न होगा ? सोचो तो सही। मरे ! कलमुँहे !"

निखल्यूडोव ने पूछा—और स्त्रियों में से कोई नहीं मरी ?

एक ठिगने क़द की नन्हीं सी स्त्री ने हँस कर कहा—"स्त्रियों में अधिक बल होता है। बस, एक वही ऐसी है जिसे यहीं बच्चा

जनने की सनक सवार हो गई है। वह देखो!"—उसने कहा, और जिस ओर से कराहने की आवाज़ आ रही थी, उस ओर को सङ्केत किया।

मसलोवा ने अपने ओठों से आनन्द की मुस्कराहट दूर रखने की चेष्टा करते हुए कहा—तुम पूछ रहे हो कि हममें से किसी को किसी चीज़ की ज़रूरत तो नहीं है, देखो, यह बेचारी कितनी बिलख रही है, क्या इसे यहीं नहीं छोड़ा जा सकता? तुम अफ़सरों से कह तो देखो . . .।

"मैं कहूँगा।"

"बस, एक बात और है; यह किसी भाँति अपने पति से मिल पाए तो क्या अच्छा हो!" उसने मुस्कराती हुई थियोडेसिया की ओर नेत्रों से सङ्केत करके कहा—"वह भी तो तुम्हारे साथ ही जा रहे हैं?"

एक सार्जेण्ट ने आकर कहा—बातें मत करिए।

यह वह सार्जेण्ट न था, जिसने उसे गाड़ियों तक आने दिया था। निख़्ल्यूडोव उस गर्भिणी स्त्री के कष्ट और थियोडेसिया के साथ टारस की भेंट की बात कहने के लिए किसी अफ़सर को देखने लगा। पर न तो उसे कोई अफ़सर ही मिला, और न किसी सिपाही ने ही उसे कुछ उत्तर दिया। वे सब दौड़-धूप कर रहे थे। कुछ किसी क़ैदी को एक डिब्बे से दूसरे डिब्बे में बिठा रहे थे, कुछ अपने लिए खाद्य सामग्री लाने के लिए इधर-उधर दौड़ रहे थे, और बाक़ी या तो गाड़ियों में सामान लाद रहे थे, या अपने अफ़सर के साथ जाती हुई एक महिला की सेवा-टहल में लगे हुए थे। उन्होंने निख़्ल्यूडोव के प्रश्नों का उत्तर अनिच्छापूर्वक दिया।

जब पहली घण्टी बज गई तब कहीं जाकर निखल्यूडोव को अफ़सर दिखाई दिया। छोटी बाँहों वाला अफसर अपने चौड़े हाथों से अपनी मुँह ढकने वाली मूँछों को पोंछ-पोंछ कर और कन्धे उचका-उचका कर एक कारपोरल को किसी बात के लिए डाट-डपट रहा था।

उसने निखल्यूडोव से पूछा—आप क्या चाहते हैं?

"आप एक ऐसी स्त्री को लिए जा रहे हैं, जो प्रसव-वेदना से व्याकुल हो रही है, इसलिए मैंने सोचा कि यदि उसे ....।"

"आप उसे प्रसव-वेदना से व्याकुल होने दीजिए! हम इसकी देख भाल फिर करेंगे?"—और वह अपनी छोटी बाँहें हिलाता हुआ अपनी गाड़ी की ओर दौड़ गया।

इसी क्षण निखल्यूडोव के पास से गार्ड हाथ में सीटी लिए दौड़ता निकल गया और प्लेटफ़ॉर्म और स्त्रियों के डिब्बे से रोने और प्रार्थना करने की आवाज़ें आने लगीं।

निखल्यूडोव प्लेटफॉर्म पर टारस के पास खड़ा-खड़ा देखता रहा कि किस प्रकार मुँडे सिर वाले क़ैदियों को लिए लोहे की छड़ों वाले डिब्बे एक के बाद दूसरे फिसले चले जा रहे हैं। इसके बाद स्त्रियों का डिब्बा आया, फिर वह जिसमें से अभी तक प्रसव-वेदना-व्याकुल स्त्री के रोने-चिल्लाने की ध्वनि आ रही थी, फिर तीसरा जिसकी खिड़की पर स्त्री कैदी खड़ी थीं। उनमें से मसलोवा भी थी और उसने निखल्यूडोव की ओर कातर मुस्कराहट के साथ देखा।

जिस गाड़ी से निखल्यूडोव जाने वाला था, उसके आने में अभी दो घण्टे की देर थी। उसने सोचा था कि इस अन्तर में वह अपनी बहिन से मिल आएगा, पर सुबह की सारी घटनाओं का उस पर ऐसा गहरा आन्तकारी प्रभाव पड़ा था कि वह निर्जीव सा हो गया और फर्स्ट क्लास रिफ्रेशमेण्ट रूम के एक सोफ़ा पर बैठते ही उसे ऐसी गहरी नींद आई कि वह हाथ पर सिर रख कर अचेत हो गया।

ड्रेस कोट पहने और रूमाल हाथ पर डाले एक वेटर आया और उसे जगा कर बोला—हुज़ूर, आपका नाम प्रिन्स निखल्यूदोव है न? आपको एक महिला खोज रही है।

निखल्यूडोव चौंक कर उठ बैठा और उसने आँखें मलते-मलते प्रातःकाल की सारी घटनाओं का स्मरण किया। उसने कल्पना के नेत्रों द्वारा देखा कि कैदियों का दल जा रहा है, सूर्य की तीव्र गर्मी से मर कर गिरे आदमियों को पुलिस के थाने में ले जाया जा

रहा है, रेल के डिब्बों की खिड़कियों में लोहे की छड़ें लगी हुई हैं, जिनमें से एक का प्रसव-चीत्कार सुनाई दे रहा है, और दूसरी उसकी ओर कातर-भाव से मुस्करा रही है।

पर उसके भौतिक नेत्रों के सामने की वस्तु-स्थिति बिलकुल भिन्न थी; गुलदस्तों, क़न्दीलों, मिट्टी के साजों से सजी मेज़, उसके चारों ओर फुर्तीले वेटर, कमरे के अन्त में एक अलमारी, और शीशियों की क़तार और फलों की तश्तरी और शराब बेचने वाला, और उससे शराब ख़रीदने वाले यात्रियों की पीठ।

जब निखल्यूडोव उठ कर बैठ गया और अपने विचारों को शनैः-शनैः संयत करने लगा, तो उसने देखा कि कमरे के सारे आदमी दरवाज़े की ओर कौतूहल—जिज्ञासा की दृष्टि से देख रहे हैं। उसने यह भी देखा कि आदमियों का एक बड़ा दल एक ऐसी कुर्सी को ला रहा है, जिस पर एक महिला बैठी है, और इस महिला का सिर एक ख़ास ढङ्ग के महीन और हवा में फहराते हुए क़सीदे से लिपटा हुआ है। निखल्यूडोव को अर्दली को देख कर ख्याल हुआ कि वह उसे जानता है, और जब उसने उनके साथ सुनहरी डोरी वाली टोपी पहने द्वार-रक्षक को देखा तो उसका रहा-सहा सन्देह जाता रहा। एक भड़कीली पोशाक वाली सहचरी ऐप्रन और बाहरी खोल डाले हाथ में पारसल, ज़नानी छत्तरी, और चमड़े का गोल सा बटुआ लिए कुर्सी के पीछे-पीछे आ रही थी। इस जलूस के पीछे-पीछे मोटे ओठों और पक्षाघात से भारी हुई गर्दन वाला वृद्ध प्रिन्स कोरश्चेगिन सिर पर सफ़री टोपी पहने आया; उसके बाद उसकी लड़की मिसी और उसका चचेरा

भाई मिशा आया; और इनके साथ निखल्यूडोव का परिचित कूट-नीतिज्ञ ओस्टन, चपटा गोल सिर लिए और सदैव की भाँति खिला हुआ चेहरा और प्रवृत्ति लिए आया। वह मुस्मित मिसी से कोई बात बड़ी ओजस्विता के साथ, पर साथ ही कुछ विनोद के साथ, कहता जा रहा था। सबके पीछे रुष्ट भाव से सिगरेट के दम लगाता हुआ डॉक्टर आया। कोरश्चेगिन परिवार अपने नगर के निकट वाली रियासत से प्रिन्सेज की बहिन की निकनी वाली रियासत में जा रहा था।

जलूस—कुर्सी ले जाने वाले आदमी, सहचरी और डॉक्टर—दर्शकों के हृदयों में सम्मान और कौतूहल के भावों का सञ्चार करता हुआ महिलाओं के वेटिङ्ग रूम में ग़ायब हो गया, और प्रिन्स कोरश्चेगिन वहीं रह गया। उसने वेटर को आवाज़ दी और मेज़ के आगे बैठ कर खाने-पीने की सामग्री लाने की आज्ञा दी। मिसी और ओस्टन भी इसी कमरे में रह गए, और दोनों बैठने ही वाले थे कि उन्होंने द्वार पर अपनी एक परिचित महिला को देखा। दोनों उसके पास चले गए। यह नैटाली रोगो फ़्रिन्स्काया थी।

नैटाली ऐग्राफेना पैट्रोला के साथ रिफ़्रेशमेण्ट रूम में आई और दोनों ने कमरे में चारों ओर दृष्टि दौड़ा कर देखा। नैटाली की निगाह मिसी और अपने भाई पर एक साथ पड़ी। उसने अपने भाई की ओर केवल सिर हिलाया और पहले वह मिसी के पास पहुँची; पर उसका चुम्बन करने के बाद ही वह तत्काल अपने भाई की ओर मुड़ी।

उसने कहा—"तो तुम्हें खोज कर ही छोड़ा।"—निखल्यूडोव

मिसी, मिशा और ओस्टन से सलाम-दुआ करने और दो-चार बातें करने के लिए उठ खड़ा हुआ। मिसी ने उसे बताया कि उनके निजी ग्राम्य-भवन में आग लग गई है, इसीलिए सब उसकी मौसी के यहाँ जा रहे हैं। ओस्टन एक अग्नि-काण्ड की विनोदपूर्ण कहानी सुनाने लगा।

निखल्यूडोव उसकी तरफ कोई ध्यान न देकर अपनी बहिन की ओर मुड गया।

"कितनी प्रसन्नता की बात है जो तुम आ गईं।"

वह बोली—"मैं तो बहुत देर से आई हुई हूँ। ऐग्राफेना पैट्रोला मेरे साथ आई हैं।"—और उसने वृद्धा ऐग्राफ़ेना पैट्रोला की ओर सङ्केत किया, जो वाटर प्रूफ़ और टोपा पहने ज़रा फ़ासले से खडी थी। उसने निखल्यूडोव का सहृदयता और किञ्चित अस्त-व्यस्तता मिश्रित रोष के साथ (वह वार्तालाप में बाधा न डालना चाहती थी) अभिवादन किया।

"और हम तुम्हें हर जगह खोज फिरीं।"

"मैं यहाँ सो गया था। कितनी प्रसन्नता की बात है जो तुम आ गईं।"—उसने फिर दुहराया—"मैं तो तुम्हें पत्र लिख रहा था।"

नैटाली ने सशङ्कित होकर पूछा—सचमुच ? किस लिए ?

दूसरे सज्जनों ने देखा कि भाई-बहिन में कोई अन्तरङ्ग वार्तालाप छिडने वाला है, अत. वे वहाँ से हट गए। निखल्यूडोव अपनी बहिन के साथ खिडकी के पास एक मखमली सोफ़ा पर बैठ गया, जिस पर एक कम्बल, एक सन्दूक़, और कुछ और चीजें रक्खी हुई थीं।

निखल्यूडोव ने कहा—कल तुम्हारे यहाँ से आने के बाद मेरी इच्छा हुई कि मैं दुबारा जाऊँ और अपना खेद प्रकट करूँ; पर मैं यह न जानता था कि तुम्हारे पति उसे किस रूप में ग्रहण करेंगे। मैं उनसे आतुरता में बहुत-कुछ कह गया और इसका मुझे बड़ा क्षोभ हुआ।

उसकी बहिन ने कहा—"मुझे मालूम था, मुझे विश्वास था कि तुमने जान-बूझ कर कुछ नहीं किया। तुम तो ख़ुद ही जानते हो!"—और उसके नेत्रों में आँसू आ गए और उसने अपने भाई का हाथ छुआ।

वाक्य यद्यपि स्पष्ट न था, पर निखल्यूडोव उसका मर्म पूर्णतया समझ गया, और उस मर्म से उसका हृदय पसीज उठा। उसके शब्दों का अभिप्राय था कि इसमें तो कोई सन्देह नहीं कि वह अपने पति से इतना प्रेम करती है कि उसमें तन्मय हुई रहती है, पर साथ ही वह अपने भगिनी-प्रेम को भी प्राणों से अधिक रक्षा करती है, और जब वह दोनों में किसी प्रकार का मन-मुटाव देखती है तो उसे बड़ा क्लेश होता है।

सहसा निखल्यूडोव को धूप से मरे क़ैदियों की बात याद आ गई और वह बोला—आह! आज मैंने कैसा बुरा दृश्य देखा है! दो क़ैदियों को मार डाला गया!

"मार डाला गया? वह कैसे?"

"हाँ, मार ही डाला गया। क़ैदियों को तड़पती धूप में चलाया और दो के प्राण निकल गए।"

"असम्भव! क्या आज? अभी?"

"हाँ, आज। मैंने लाशें अपनी आँख से देखी हैं।"

"पर वे मारे कैसे गए ? उन्हें मारा किसने ?"—नैटाली ने पूछा।

निखल्यूडोव यह देख कर चिढ़ गया कि नैटाली भी इन प्रश्नों को अपने पति की दृष्टि से देखती है। बोला—जिन्होंने उन्हें बाहर निकलने को मजबूर किया उन्होंने ही मारा !

ऐग्राफ़ेना पैट्रोला भी उनके पास आ खड़ी हुई थी। बोली—हे मेरे राम !

"हमें गुमान तक नहीं होता कि इन अभागों के ऊपर क्या बीतती है। पर इसका गुमान रहना ज़रूर चाहिए !"—निखल्यूडोव ने कहा और इसके बाद वृद्ध कोरश्चेगिन की ओर देखा, जो गले में रुमाल लपेटे और सामने बोतल रक्खे उसी की ओर देख रहा था।

उसने आवाज़ दी—निखल्यूडोव, आकर थोड़ा सा जल-पान न करोगे ? लम्बे सफ़र से पहले कुछ पेट में डाल लेना चाहिए।

निखल्यूडोव ने निमन्त्रण अस्वीकार कर मुँह फेर लिया।

नैटाली ने कहा—पर अब तुम क्या करना चाहते हो ?

"जो कुछ मैं कर सकता हूँ, मैं ख़ुद नहीं जानता, पर अन्दर से कोई कहता है कि मुझे कुछ न कुछ करना ज़रूर चाहिए। और जो कुछ मैं कर सकता हूँ, करूँगा।"

"अच्छा, समझ गई। और इनके सम्बन्ध में क्या रहा ?"—उसने कोरश्चेगिन की ओर मुस्करा कर देखते हुए कहा—"क्या सचमुच सब कुछ समाप्त हो गया ?"

"बिलकुल !—और जहाँ तक मैं समझता हूँ, दोनों पक्षों में से किसी को इसका पछतावा नहीं है।"

"यह बड़े खेद की बात है, और मुझे बड़ा दु:ख हुआ। मिसी मुझे भाती है। ख़ैर, ऐसा ही सही, पर तुम अपना पाँव क्यों फँसाना चाहते हो?"—उसने लजाते हुए कहा—"तुम जा क्यों रहे हो?"

"मैं जा रहा हूँ, क्योंकि मुझे जाना चाहिए।"—निख्ल्यूदोव ने गम्भीर और शुष्क भाव से कहा—मानो वह इस प्रसङ्ग को ही समाप्त करना चाहता हो। पर तत्काल ही वह अपनी शुष्कता पर लज्जित हो गया। उसने अपनी पुरानी दासी की ओर देखा और उसकी उपस्थिति में अपनी बहिन से अपने सङ्कल्प की बात दुहराने की इच्छा और भी बलवती हो उठी। उसने मन ही मन सोचा—"मैं इससे कह ही क्यों न दूँ कि मेरे मन में क्या है?—ऐग्राफ़ेना भी सुन लेगी!"

उसने कहना आरम्भ किया—पर उसका स्वर कम्पित हो उठा, जिस प्रकार इस प्रसङ्ग की बात छेड़ते समय उसका स्वर सदैव कम्पित हो जाया करता था—तुम कट्टशा को चाहने की बात को कहती होगी? वह मेरे आत्म-त्याग को ग्रहण नहीं करना चाहती और उसके स्थान पर स्वयं अपना बलिदान कर रही है, जो उसकी जैसी अवस्था में बड़ी बात है, और यदि उसकी यह क्षणिक मनोवृत्ति नहीं है, तो मैं उसके इस आत्म-बलिदान को ग्रहण नहीं कर सकता। इसलिए मैं उसके साथ-साथ जा रहा हूँ, और जहाँ कहीं वह जायगी वहीं मैं भी जाऊँगा और भरसक उसका विपत्ति-भार हल्का करने की चेष्टा करूँगा।

नैटाली ने कुछ न कहा। ऐग्राफेना ने नैटाली की ओर प्रश्नात्मक दृष्टि से देखा और सिर हिलाया। इसी समय महिलाओं के वेटिङ्ग-रूम में से फिर वही जुलूस निकला। वही सुन्दर अर्दली फ़िलिप और बढ़िया पोशाक वाला दरबान प्रिन्सेज़ कोरन्चेगिन को लिए जा रहे थे। प्रिन्सेज़ ने उन्हें रोका और एक ओर हटाया। और निखल्यूडोव को अपने पास आने का सङ्केत किया, और उसके आने पर उसने, मन ही मन इस आशङ्का से भयभीत होते हुए कि वह ज़ोर से न दबा दे, अपना सफेद हाथ कातर, अलस भाव से उसकी ओर बढ़ा दिया।

"कितनी भयङ्कर है!"—उसका मतलब गर्मी से था।—"मैं तो इसे सहन नहीं कर सकती, यह जल-वायु तो मेरे प्राण लेकर छोड़ेगा।"—और रूसी जल-वायु की भयङ्करता की दो-चार बातें करने और निखल्यूडोव को उनसे आकर मिलने का न्यौता देने के बाद उसने अपने आदमियों को चलने का सङ्केत किया।

जब कुर्सी उठा ली गई तो उसने अपना लम्बा चेहरा निखल्यू-डोव की ओर फेर कर कहा—भूल मत जाना, आना ज़रूर।

प्रिन्सेज़ का जलूस फ़र्स्ट क्लास गाड़ियों की ओर मुड़ा; निखल्यूडोव, उसका नौकर और थैला लिए टारस बाँई ओर।

निखल्यूडोव टारस की कहानी नैटाली को पहले ही सुना चुका था, अब उसकी ओर सङ्केत करके बोला—यह मेरा साथी है।

जब निखल्यूडोव थर्ड क्लास के डिब्बे के आगे रुक गया और उसका नौकर और टारस भीतर घुस गए तो नैटाली बोली—क्या इसमें जाओगे?

निखल्यूडोव ने कहा—मुझे यही पसन्द है। मेरे साथ टारस भी तो जा रहा है। और हाँ, एक बात कहना भूल गया। मैंने अभी अपनी कुमिन्स्की वाली जायदाद किसानों को नहीं दी है, सो यदि कहीं मेरा देहान्त हो जाय तो वह तुम्हारे बच्चों को मिलेगी।

नेटाली ने कहा—डिमिट्री, ऐसी बातें मत करो।

"और यदि मैं उस जायदाद को दे भी डालूँ, तो और सारी चीज़ें उन्हीं की हैं, क्योंकि मेरे विवाह करने की सम्भावना नहीं है—और यदि विवाह हो भी गया, तो मेरी कोई सन्तान न होगी, इसलिए।"

नेटाली ने कहा—"अच्छा भैया, ऐसी बातें मत करो!"—पर निखल्यूडोव साफ़ देख रहा था कि वह उसके मुँह से यह बात सुन कर प्रसन्न हुई थी।

उधर फ़र्स्ट क्लास के एक डिब्बे के आगे लोग-बाग खड़े अभी तक उस डिब्बे में झाँक-झाँक कर देख रहे थे, जिसमें प्रिन्सेज़ कोरचेगिन सवार कराई गई थी। अधिकांश यात्री अपने-अपने स्थानों पर बैठ गए थे। कुछ देर से आए यात्री दौड़ते हुए प्लेट-फ़ॉर्म के तख़्तों को खड़खड़ा रहे थे। गार्ड दरवाज़े बन्द कर रहा था और यात्रियों से सवार होने और यात्रा न करने वालों से बाहर निकलने का अनुरोध कर रहा था।

निखल्यूडोव उस छोटे से गन्धपूर्ण डिब्बे में घुस गया। पर तत्काल ही वह डिब्बे के अन्त में लगे छोटे से प्लेट-फ़ॉर्म पर पहुँच गया।

नैटाली अपना फ़ेशनेबिल टोपा और शिरोवस्त्र धारण किए ऐग्राफ़ेना पैट्रोला के साथ डिब्बे के पास खडी रही। वह कुछ न कुछ बात कहने की चेष्टा कर रही थी। ऐसे अवसरो पर जो अभ्यस्त शब्द—'मुझे पत्र लिखना'—कहा जाया करता है, नैटाली उसे भी मुँह से न निकाल सकी, क्योंकि किसी ज़माने मे दोनों बहिन-भाई इस शब्द का उपहास करते थे। उन दोनो के हृदयो मे जो मातृ-सुलभ और भगिनी-सुलभ मृदुल स्नेहोद्रेक हो रहा था, वह आर्थिक चर्चा के कारण बात की बात में क्लिष्ट हो गया था। दोनों एक-दूसरे से दूर जा पड़े थे, अत. जब गाड़ी चल पड़ी तो नैटाली को हर्ष हुआ और उसने शोकपूर्ण मुद्रा के साथ सिर हिला कर कहा—डिमिट्री भैया, राम-राम!

पर गाड़ी गुज़रते ही उसे चिन्ता हुई कि वह अपने भाई के साथ हुई बातचीत को अपने पति के आगे किस प्रकार दुहरावेगी, और उसका मुख क्षुब्ध और गम्भीर हो गया।

निखल्यूडोव भी—यद्यपि अपनी बहिन के प्रति उसके हृदय में मृदुल से मृदुल भाव थे—इस भेंट के बाद विषण्णता और अस्तव्यस्तता की अनुभूति करने लगा था और जब गाड़ी चल पडी तो उसे भी हर्ष ही हुआ। उसे अनुभूति हुई कि वह किसी समय की नैटाली, जो उसके हृदय के इतने सन्निकट थी, अब नही रही; अब उसका स्थान उस साँवले रङ्ग के, बालों वाले, विलक्षण, क्षोभ-कारी मनुष्य की क्रीतदासी ने ले लिया है। जिस समय उसने उस प्रसङ्ग की चर्चा की थी, जिसे वह समझता था कि वह उसके पति को विशेष रूप से आनन्ददायक होगा—अर्थात् जायदाद का

किसानों को देना, और उत्तराधिकार—उस समय उसका चेहरा जिस प्रकार खिल उठा था, उसमें उसने स्पष्ट रूप से इसी के दर्शन किए थे।

और इससे वह मन ही मन उदास हो गया।
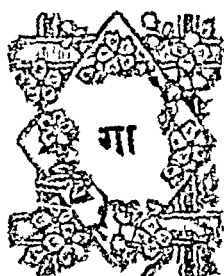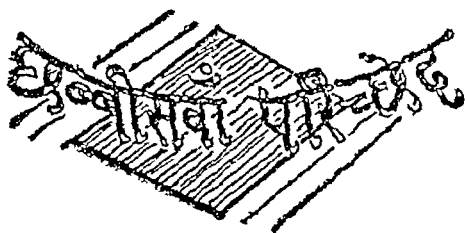
ड़ी दिन भर कड़ी धूप में खड़ी रही थी, अत उसमें इतनी गर्मी थी कि निख्ल्यूडोव भीतर न जाकर डिब्बे के छोटे से प्लेट-फ़ॉर्म पर खड़ा रहा। पर वहाँ भी हवा का नाम-निशान न था, और जब गाड़ी इमारतों से गुज़र गई, तब कहीं जाकर वह खुली हवा में साँस ले सका।

उसने अपनी बहिन के सामने जो शब्द व्यवहृत किए थे, उन्हीं को उसने फिर दुहराया—'हाँ, मार ही डाले गए!' और उसके शत-सहस्र संस्कारों में से एक उस नवयुवक क़ैदी का संस्कार विशेष रूप से उद्दीप्त हो उठा, जिसे उसने अपने सामने दम तोड़ते देखा था।

उसने सोचा—और सब से भयङ्कर बात यह है कि उसकी हत्या हुई है, पर यह कोई नहीं जानता कि किसने हत्या की है। पर उसकी हत्या अवश्य हुई है। और सारे क़ैदियों की भाँति उसे भी मैसलेनीकोव के आदेशानुसार जेल से बाहर निकाला गया

होगा। मैसलेनीकोव ने अपने स्वाभाविक मूर्खतापूर्ण घुमाव-फिराव के साथ छपे हुए सिरनामे वाले कागज़ पर आदेश दिया होगा और क्षण भर के लिए भी अपने आपको अपराधी न समझा होगा। और डॉक्टर भी निश्चय ही अपने को अपराधी न समझता होगा। उसने ठीक-ठीक अपने कर्त्तव्य का पालन किया था और दुर्बलों को अलग कर दिया था। वह यह पहले से कैसे जान सकता था कि इतनी असह्य गर्मी हो जायगी, और कैदियों को इतनी देर बाद ले जाया जायगा, और इतने बड़े दल के रूप में ? और जेल-इन्सपेक्टर ? जेल-इन्सपेक्टर ने तो केवल अपने अफ़सर के आदेश का पालन किया था कि अमुक दिन इतने पुरुष और इतनी स्त्रियाँ क़ैदी और निर्वासित, भेजे जायँगे। यात्री-सैनिक-दल का अफ़सर भी अपराधी नहीं ठहराया जा सकता; क्योंकि उसका काम एक स्थान से मनुष्यों की नियत संख्या लेना, और दूसरे स्थान पर नियत संख्या हवाले कर देना भर है। वह सब कैदियों को यथा-स्वभाव ले चला, और पहले से यह न जान सका कि उन जैसे दो स्वस्थ पुरुष एकाएक मर जायँगे। अपराधी कोई नहीं है, पर तो भी उन आदमियों की हत्या इन्हीं ने की है, जो अपने आपको उनकी मृत्यु का दोषी नहीं समझते।

निखल्यूडोव सोचता रहा—इन सबका मूल कारण यह है कि ये सारे आदमी—गवर्नर, इन्सपेक्टर, पुलिस-अफ़सर और पुलिसमैन—समझते हैं कि ऐसी भी परिस्थितियाँ हैं, जिनमें मनुष्यों में परस्पर मानवी सम्बन्ध बनाए रखने की आवश्यकता नहीं है। यदि ये—मैसलेनीकोव, और इन्सपेक्टर, और सैनिक

अफसर—गवर्नर, इन्सपेक्टर और सैनिक-अफ़सर न होते तो इस घोर आतप में क़ैदियों को बाहर भेजने से पहले बीस बार सोच लेते—रास्ते में बीस बार रुकते, और यदि किसी को थका-माँदा, या मुँह फैलाता देखते तो उसे कहीं छाया में ले जाते, पानी देते, आराम पहुँचाते, और यदि इतने पर भी कोई दुर्घटना हो जाती तो समवेदना करते। पर यह सब करना तो एक ओर, उन्होंने दूसरों को भी यह करने से रोका, केवल इसलिए कि उन्हें मनुष्यों की ओर मनुष्यों के प्रति अपने कर्त्तव्यों की कुछ चिन्ता न थी, चिन्ता थी केवल उन पदों की, जिन पर वे स्वयं जा मौजूद हुए थे, और उन पदों की बाध्यता को उन्होंने मानवी सम्पर्कों से भी प्रमुख स्थान दे दिया था। बस सारी बात यही है। यदि हम एक बार स्वीकार कर लें (चाहे क्षण भर के लिए भी किसी विशेष परिस्थिति में ही सही) कि सहबन्धुओं के प्रति प्रेमभावना से भी कोई अधिकतर महत्वपूर्ण वस्तु हो सकती है, तो संसार में फिर कोई ऐसा अपराध नहीं है जिसे हम निर्दोष भावना के साथ न कर सकें।

निखल्यूडोव जिस डिब्बे में सवार हुआ था, वह यात्रियों से आधा भरा था। टारस मार्ग के दाहिनी ओर बैठा हुआ अपने सामने बैठे हुए हृष्ट-पुष्ट आदमी से (निखल्यूडोव को बाद को मालूम हुआ कि वह माली है और एक नए स्थान पर काम करने जा रहा है) सजीवतापूर्वक बातचीत कर रहा था। उसने निखल्यू-डोव के लिए एक स्थान घेर रक्खा था। निखल्यूडोव उसके पास पहुँचा।

टारस के सामने बैठे माली ने निखल्यूडोव के ठीक चेहरे को

ओर देखते हुए मित्रता-सूचक स्वर में कहा—आओ सरकार, बैठ जाओ, हम थैले यहाँ डाल लेंगे।

टारस ने मुस्कराते हुए कहा—"हुज़ूर, जगह तङ्ग है, पर अब तो हम यार हो गए हैं।" और इतना कह उसने अपना एक मन का थैला फूल की तरह उठा लिया और उसे वह खिड़की के पास ले गया।

उसने मित्रता और सहृदयता के मारे दमकते हुए कहा—बहुतेरी जगह; फिर थोड़ी देर खड़े ही रहेंगे तो क्या हर्ज है? और कुछ नहीं तो बेञ्च के नीचे ही सरक जायँगे। हम ख़ूब आराम में हैं।

टारस अपने सम्बन्ध में कहा करता था कि वह जब तक पी न ले तब तक बात नहीं कर सकता। वह कहा करता था कि पीने से उसे अपनी बात प्रकट करने में कुछ कठिनाई नहीं होती और वह धड़ल्ले के साथ बोलता चला जाता है। और सचमुच, जब टारस संयत रहता तो किसी से कुछ न कहता—पर एक बार पी लेने पर फिर वह बड़ी ज़िन्दादिली के साथ बातचीत करने लगता। ऐसे अवसरों पर वह ख़ूब बोलता, अच्छे और सरल-सहज ढङ्ग से बोलता, और विशेषकर सहृदयता के साथ बोलता, जो उसके मृदुल नीले नेत्रों से और उसके ओठों पर सदैव विराजी रहने वाली मुस्कराहट में दिखाई देती रहती थी।

आज भी उसकी यही अवस्था थी। निखल्यूडोव के आगमन से उसकी कहानी में व्याघात पड़ गया था, पर जब उसने अपना थैला रख दिया तो वह फिर अपने स्थान पर आ बैठा और अपने मज़बूत हाथ अपनी गोद में रख कर और अपने सामने बैठे माली

के ठीक नेत्रों में झाँकते हुए उसने अपनी कहानी का सिलसिला फिर शुरू कर दिया। वह अपने नए मित्र से अपनी स्त्री की बात विशेष रूप से कह रहा था—उसे साइबेरिया क्यों भेजा जा रहा है, और अब वह उसके साथ क्यों जा रहा है।

निखल्यूडोव ने इस कहानी का विशेष विवरण पहले कभी न सुना था, अतः वह कान लगा कर सुनने लगा। जब वह आया तो कहानी उस स्थल पर आ पहुँची थी, जब विष देने की चेष्टा की जा चुकी, और घर वालों ने पता लगा लिया था कि यह थियोडेसिया की करतूत है।

टारस ने अपनी हार्दिक मित्रता के साथ निखल्यूडोव को सम्बोधित करके कहा—अपना दुखड़ा रो रहा हूँ। मुझे ऐसा जिगरी आदमी मिल गया तो उससे कहने बैठ भी गया।

निखल्यूडोव ने कहा—ठीक।

"तो यार, मामले की ख़बर यों हुई। माँ ने रोटी हाथ में ले ली और कहा—'लो, मैं थाने में रपट लिखाने जाती हूँ।' मेरे बाप बुड्ढे हैं, बड़े इन्साफ़ वाले; बोले—'देख री, टारस की माँ, वह अभी निरी बच्ची है, और उसे अपने किए की ख़ुद कुछ सुध-बुध नहीं है। हमें उस पर दया करनी चाहिए। अपने आप समझ जायगी।' पर मेरी माँ भला कब मानने वाली थी? बोली—'यह यहाँ रही तो एक-एक करके सबको सुला देगी।' तो दोस्त, वह थाने चली ही गई। थानेदार हमारी गर्दन पर आ सवार हुआ और गवाहियाँ तलब करने लगा।"

माली ने कहा—और तुम?

"अरे यार, मेरी क्या पूछते हो, पेट में दर्द, तड़पा-तड़पा फिरूँ; बुरा हाल। अँतड़ियाँ बाहर आ गईं, मुँह से बोल न निकले। ख़ैर, हमारी घोड़ी जुतवाई, थियोडेसिया को गाड़ी में बिठाया, और उसे थाने ले चला। फिर उसे मैजिस्ट्रेट के यहाँ ले गए। और वह जो पहले से कहती आ रही थी, वही आख़िर तक कहती रही। उसने मैजिस्ट्रेट के सामने भी साफ़-साफ कह दिया कि उसे विष कहाँ से मिला, और उसने आटा कैसे माडा, और रोटी कैसे पोई। मैजिस्ट्रेट ने पूछा—'तूने ऐसा क्यों किया?' वह बोली—'क्यों किया? क्योंकि वह मुझे फूटी आँख नहीं भाते। मै उनके साथ रहने से साइबेरिया में रहना अच्छा समझती हूँ।' समझे? मेरे लिए कह रही थी!"—टारस ने मुस्करा कर कहा।

"हाँ, तो दोस्त, उसने सब कुछ खुल्लम-खुल्ला कह दिया। फिर जेल होनी ही थी। बाप घर अकेले लौटे। फ़सल का मौका भी आ लगा था, और घर में माँ ही एक औरत बची थी, और सो भी बुड्ढी। फिर हमने सोचा कि क्या करना चाहिए। क्या वह ज़मानत पर नहीं छूट सकती? बाप गए, और एक अफ़सर से मिले—'नहीं! चले जाओ!' वह कोई पाँच अफ़सरों से मिले होंगे और पाँचों ने यही टका सा जवाब पकड़ा दिया। हम तो निराश हो चुके थे, पर भला हो एक मुन्शी का—इतना चलता-पुर्ज़ा, कि तुमने आज तक देखा न होगा। वह बोला—'पाँच रूबल दो और उसकी ज़मानत कराने का मेरा ज़िम्मा रहा।' ख़ैर, कहने-सुनने से तीन रूबल पर राज़ी हो गया। फिर दोस्त मैंने क्या किया? थियोडेसिया ने जो कपड़ा बुन कर तैयार किया था, उसी को गिरवी रख दिया

और रुपए उसके हवाले किए। और उसके पुर्जा लिखने की देर थी कि—"टारस ने इस प्रकार कहा मानो वह गोली छूटने की बात कह रहा हो—"वही बात हुई। मैं उस समय तक पक्का हो गया था और उसे लेने गया।

"सो यार, मै शहर आया, घोड़ी को बाँधा, काग़ज़ निकाला और जेल पहुँचा। अफसर बोला—'क्या चाहता है?' मैंने धड़ाके के साथ जवाब दिया—'अपनी जोरू, जिसे तुमने जेल में बन्द कर रक्खा है।' वह बोला—'ठहरो!' मै बेञ्च पर बैठ गया। तीसरा पहर हो गया, सूरज ढल गया, तब कहीं अफ़सर की सूरत दिखाई दी। बोला—'मेरा नाम बीरनको है?' 'हाँ, है तो।' 'अच्छा तो फिर इसे ले जा।' और दरवाज़ा खुला और वह अपने ही कपड़ों में मेरे सामने आ खड़ी हुई। 'आओ, चलो।' 'तुम पाँव-पाँव आए हो क्या?' 'नहीं, गाड़ी लेकर।' सो भाई, मैं उसे लेकर सराय में आया, साईस को पैसे चुकाए; और घोड़ी गाड़ी में जोती, और जितनी घास थी वह सब गाड़ी में बिछा दी, जिससे वह सुख के साथ बैठ जाय। ऊपर से बोरी बिछा दी। न वह कुछ बोली, न मैं कुछ बोला। घर पास आ गया तो वह बोली—'और अम्माँ जी कैसे है? जीती हैं?' 'हाँ, जीने को क्या हुआ है?' वह बोली—'जी, मुझे क्षमा करो, मेरी बड़ी भूल हुई। मुझे ख़ुद ही सुध न थी कि मैं क्या कर रही हूँ।' मैंने कहा—'इस ज़बानी जमा-ख़र्च से मामला सुधरने से रहा। मैंने तो तुझे कभी का क्षमा कर दिया।' वह कुछ न बोली। हम घर आ गए। वह मेरी माँ को देखते ही उसके पैरों पर गिर पड़ी। माँ बोली—'बहू, भगवान तुझे क्षमा

करें।' और बाप ने कहा—'कहो बेटी, अच्छी हो? अजी अब जो हो गया सो हो गया। अब समझ-सोच के सुख के साथ रहो। इन झगड़ों में क्या धरा है? स्कोरोडिनो में फसल खड़ी है, उसे लादने की फ़िक्र करो। उस जुती-बोई एकड भर ज़मीन पर वह राई उगी है कि आज तक न उगी थी। सब खेती उलझी खड़ी है और बोझ के मारे दब गई है, अब उसे काटना चाहिए। टारस और उसकी बहू वहाँ चले जायँगे तो सब ठीक-ठाक हो जायगा।' सो दोस्त, उस घड़ी से थियोडेसिया ने वह मन लगा कर काम किया कि हम सब देख कर दङ्ग रह गए। हमने तीन डिसन्टया ज़मीन लगान पर उठा दी, और जई और राई की इतनी भरपूर खेती हुई कि मैं तुमसे क्या कहूँ। मैं काटूँ, और वह पूले बाँधे; और कभी-कभी वह भी काटने में लग जावे। वैसे मैं काम ख़ूब कर लेता हूँ; घबराता नहीं, पर वह मुझसे भी अच्छी निकली, वह जिस काम में हाथ लगाती है, पूरा करके छोड़ती है। वह फ़ुर्तीली है, जवान है, और उसकी नस-नस में नया ख़ून भरा हुआ है। और काम की बात तो यह लो कि वह उसके पीछे इतनी हाथ धोकर पड गई कि मुझे उसे रोकना पड़ा। हम घर लौटे, अँगुलियाँ सूज गईं, बाँहों में दर्द; पर घर में आने की देर थी कि वह थोडी देर बैठने की तो कौन कहे, सीधी खलियान जा पहुँची, दूसरे दिन के लिए पूले बनाने लगी। कितनी बदल गई थी!"

माली ने पूछा—और तुम्हारे ऊपर भी कुछ पसीजी?

"पसीजी?—अजी मुझसे इस तरह चिपटी रहती मानो दोनों का एक प्राण हो। मेरे मन में जो बात होती, फौरन ताड जाती।

पहले माँ कितनी गुस्से में थी ; पर उसे भी कहना पड़ा—'हमारी थियोडेसिया तो बिलकुल बदल ही गई। पहले की कोई बात ही नहीं!' एक बार हम पूले लादने को गाड़ियाँ लिए जा रहे थे। मैं और वह आगे की गाड़ी में थे और बाकी सब पीछे की गाड़ी में। मैंने थियोडेसिया से पूछा—'क्यों री, तूने यह कैसे किया होगा?' वह बोली—'कैसे बताऊँ? बस, इतनी सी बात थी कि तुम्हारे साथ रहने को जी नहीं करता था। ऐसा जी में आता था कि मरना लाख दर्जे अच्छा, तुम्हारे साथ रहना अच्छा नहीं।' मैंने पूछा—'और अब?' और वह बोली—'अब तुम यहाँ वास करते हो।'—और उसने अपने कलेजे पर हाथ रक्खा।"—टारस यहाँ रुका और आनन्द-पूर्वक सिर हिला कर मुस्कराने लगा, मानो उसे आश्चर्य हुआ है—"हमने फसल घर लाकर डाली ही थी कि मैं रस्से सुखाने चला गया और जब घर लौटा तो क्या देखता हूँ कि"—यहाँ टारस रुका, मानो वह कुछ सोच रहा हो—"थियोडेसिया के नाम सम्मन आए हैं। हम इस बीच में उस बात को बिलकुल भूल ही गए थे, जिसका उस पर मुक़दमा चलता था।"

माली ने कहा—"इन्हें दया-ममता तो कुछ होती नहीं। दया-ममता होती तो किसी प्राणी का नाश करते क्यों न लजाते? एक आदमी का ज़िक्र है"—और माली ने अपनी कहानी आरम्भ की, पर इसी समय गाड़ी धीमी पड़ गई।

वह बोला—लो, स्टेशन आ गया।

तीसरा
भाग

परस्पर रसहीन अवैध सम्बन्ध इतनी दृढ़ता से स्थापित हो गया था कि स्त्री को या तो अपने स्त्रीत्व का उपभोग कराना पड़ता था या आठ पहर चौंसठ घड़ी चौकन्ना रहना पड़ता था। निरन्तर सशङ्कित और आत्म-रक्षा में तत्पर रहना बड़ा कष्टदायक होता था, और मसलोवा को विशेष रूप से इन आक्रमणों का सामना करना पड़ता था, क्योंकि उसकी सूरत-शक्ल ज़रा अच्छी थी, और उसकी जीवनी का वृत्तान्त सब कोई जानता था। वह अब इन सारे पुरुषों के सतत अनुनय का जिस दृढ़ प्रतिरोध से सामना करती थी, उससे वे मन ही मन रुष्ट हो जाते थे और उनके हृदय में एक और ही प्रकार का भाव—कुत्सा का भाव—उत्पन्न हो गया था। पर अपनी इस शोचनीय अवस्था में भी थियोडेसिया और टारस की बदौलत वह कुछ निश्चिन्तता की अनुभूति करती थी। टारस ने जब सुना कि उसकी स्त्री को छेड़ा जा रहा है, तो वह निझनी नोवगोरोड में स्वत. ही गिरफ़्तार हो गया था और उसके साथ-साथ साधारण कैदियों की भाँति यात्रा करने लगा था।

राजनीतिक दल में शामिल होने की अनुमति मिलने के बाद से मसलोवा की अवस्था हर प्रकार से सरल हो गई। अव्वल तो राजनीतिक कैदियों को अच्छा भोजन और अच्छा वासस्थान मिलता था, और उनके साथ उतनी उद्दण्डता का व्यवहार नहीं किया जाता था। दूसरी बात यह थी कि अब मसलोवा के साथ कोई छेड़छाड़ न किया करता था और इस प्रकार उसे अपने उस अतीत का निरन्तर स्मरण करने को—जिसे भूल जाने को वह इतनी उत्सुक थी—बाध्य न होना पड़ता था, फलतः उसमें बहुत

बड़ा अन्तर हो गया था। पर सब से अधिक लाभ की बात यह थी कि इस दल में आकर उसने कुछ ऐसे व्यक्तियों से जान-पहचान की जिनका उसके चरित्र पर निश्चयात्मक और अत्यन्त लाभकारी प्रभाव पड़ा।

जहाँ कहीं पड़ाव पडता, मसलोवा को राजनीतिक दल में सम्मिलित होने की अनुमति दे दी जाती, पर जब यात्रा करने का अवसर आता तो बलिष्ट और स्वस्थ स्त्री होने के कारण उसे साधारण कैदियों के साथ ही यात्रा करनी पडती। इन साधारण कैदियों के साथ दो राजनीतिक कैदी भी यात्रा कर रहे थे—एक मेरी पैवलोटना शैरिनिना, वही भूरी-भूरी बड़ी आँखों वाली मांसल सुन्दर लडकी, जिसे निखल्यूडोव ने वीरा दुखोवा से भेंट करने के दिन देखा था, और दूसरा सायमनसन, वही बिखरे बालों और घुसी आँखो वाला साँवला युवक, जिसे निखल्यूडोव ने उसी दिन देखा था और जो अब याकुटस्क प्रान्त में निर्वासित होकर जा रहा था। मेरी पैवलोटना इसलिए पैदल जा रही थी कि उसने अपनी सवारी उस गर्भिणी स्त्री को दे दी थी, और सायमनसन इसलिए जा रहा था कि वह विशेषाधिकार का उपयोग करना अन्यायपूर्ण समझता था। इस प्रकार ये तीनो तड़के ही अन्य साधारण कैदियों के साथ रवाना हो जाते, गाडियों वाले कैदी बाद को आते, और इसी तरह का सिलसिला उस समय तक जारी रहता जब तक कोई बड़ा सा शहर न आ जाता, जहाँ वे सब नए सैनिक अफ़सर के हवाले कर दिए जाते।

सितम्बर का महीना था, पानी पड चुका था, सुबह का

वक्त था, शीतल हवा के तेज़ झोंके आ रहे थे, और बारी-बारी से बर्फ़ और पानी गिर रहे थे। पड़ाव के सहन में साधारण कैदियों का दल (कोई चार सौ आदमी और पचास स्त्रियाँ) एकत्र हो गया था; उनमें से कुछ सैनिक अफ़सर के इर्द-गिर्द जमा थे, और वह विशेष रूप से नियुक्त कैदियों को बाक़ी कैदियों में बाँट देने के लिए दो दिन के गुज़ारे योग्य रुपया दे रहा था। सिक्के गिनते कैदियों और खाद्य-पदार्थ बेचती स्त्रियों के कण्ठ-स्वर स्पष्ट रूप से सुनाई पड़ रहे थे।

कट्शा और मेरी पैवलोटना ऊँचे जूते और बालोंदार कोट पहने और सिरों से शाल बाँधे घर में से सहन में आ गईं जहाँ उत्तरी दीवारों की ओट में हवा से रक्षा करती हुई स्त्रियाँ अपनी-अपनी चीज़ें देने में एक-दूसरे से बढ़ जाने का प्रयत्न कर रही थीं। उनमें से किसी के पास अण्डे थे, किसी के पास दूध, किसी के पास मांस, किसी के पास गुर्दा, किसी के पास मछली, किसी के पास गोश्त के टुकड़े। एक के पास पका हुआ सुअर भी था।

सायमनसन भी रबड़ की जाकट और रबड के जूते पहने (वह शाकाहारी था, अतः मारे गए पशुओं की खाल को व्यवहार में न लाता था) सहन में खड़ा दल के रवाना होने की प्रतीक्षा कर रहा था। वह 'पोर्च' के पास खड़ा हुआ अपनी नोट-बुक में कोई ऐसी बात लिख रहा था जो उसे तभी सूझी थी। उसने लिखा—"यदि कोई जीवाणु आदमी के नाख़ून का मुआयना करे, तो वह उसे निर्जीव कह उठेगा। इसी प्रकार हम भू-खण्ड की परीक्षा करते हैं और उसे निर्जीव कह देते हैं। पर यह ठीक नहीं है।"

मसलोवा ख़रीदे हुए अण्डे, रोटी, मछलियाँ और बिस्कुट अपनी झोली में रख रही थी और मेरी पैवलोटना स्त्रियों को मूल्य चुका रही थी। इसी समय क़ैदियों में गति उत्पन्न हुई। सब शान्त होकर अपना-अपना स्थान ग्रहण करने लगे। अफ़सर ने बाहर निकल कर रवाना होने से पहले आवश्यक आज्ञाएँ दीं।

सब कुछ यथा-स्वभाव किया गया। क़ैदियों की गणना की गई, उनके पैरों की ज़ञ्जीरों की परीक्षा की गई, जिन्हें दो-दो मिल कर जाना था उनके हाथों में हथकड़ियाँ लगा दी गईं। पर सहसा अफ़सर के अधिकारपूर्ण क्रुद्ध चीत्कार, आघात और बच्चे के रोने-चीख़ने की आवाज़ सुनाई दी। क्षण भर के लिए सब निस्तब्ध हो गए और फिर जनसमुदाय में फुसफुसाहट फैल गई। मसलोवा और मेरी पैवलोटना उस ओर को गईं, जहाँ से चीत्कार-ध्वनि आई थी।

ब मेरी पैवलोटना और कट्टूशा घटनास्थल पर पहुँचीं तो उन्होंने जो कुछ देखा वह यह था— अफसर—हट्टा-कट्टा आदमी बड़ी-बड़ी मूँछें, तेवर चढ़ाए गालियाँ बकता हुआ अपने दाहिने हाथ की हथेली मसल रहा था, जिसमें क़ैदी पर आघात करने के कारण चोट लग गई थी। उसके सामने एक लम्बे क़द का पतला सा क़ैदी अपने शरीर के लिए अत्यन्त छोटा कोट और अत्यन्त छोटा पाजामा पहने खड़ा हुआ एक हाथ से अपने क्षत-विक्षत; रक्त-रञ्जित चेहरे को पोंछ रहा था और दूसरे हाथ से चीख़ती-चिल्लाती, शाल में लिपटी नन्हीं सी लड़की को पकड़े हुए था।

अफसर ने चिल्ला कर कहा—वह मरम्मत बनाऊँगा कि नानी याद आ जायगी (अश्लील गाली)। बदमाश ज़ुबानदराज़ी करता है! (और गाली)। तुझे यह औरतों को सौंपनी पड़ेगी। अरे चलो, देर क्या लगा रक्खी है?

अपराधी को गाँव की पञ्चायत ने निर्वासन दण्ड दिया था

और वह टोमस्क से यहाँ तक (अपनी स्त्री के ज्वर में देहान्त होने के बाद से) अपनी लड़की को अपने साथ ही ला रहा था। यहाँ अफसर ने उसने हाथ में हथकड़ी लगाने की आज्ञा दी। उसने कहा कि यदि हथकड़ी लग गई तो वह लड़की को किस तरह ले जा सकेगा ? इस पर अफ़सर चिढ़ गया (वह उस दिन पहले से ही बिगड़ा हुआ था) और उसने तुरन्त आज्ञापालन न करने के अपराध में उपद्रवी कैदी को मारा।

एक सैनिक आहत-क़ैदी के पास खड़ा-खड़ा अपनी भवों के के नीचे से विषण्ण भाव से कभी अफ़सर की ओर देख रहा था, कभी आहत-कैदी की ओर, और कभी नन्ही लड़की की ओर। उनके पास ही एक दाढ़ी वाला कैदी एक हाथ में हथकड़ी लगाए खड़ा था। अफसर ने सैनिक को लड़की को ले जाने की दुबारा आज्ञा दी। जनसमुदाय की फुसफुसाहट और भी बढ़ गई।

कैदियों के पीछे से किसी ने भारी स्वर में कहा—टोमस्क से यहाँ तक तो बेचारे को बाँधा न गया था। लौंडिया कोई पिलिया तो है नहीं।

किसी दूसरे ने कहा—अब यह बच्ची किसके पास रहेगी ? यह भी कोई क़ानून है ?

अफ़सर को मानो भिड़ ने काट खाया। वह क़ैदियों की भीड़ में दौड़ पड़ा और चिल्ला उठा—यह कौन बोला ? मैं तुम्हें क़ानून सिखाऊँगा। तू बोला ? तू ? तू ?

ठिगने क़द और चौड़े मुँह के एक कैदी ने कहा—सभी कह रहे हैं, क्योंकि.........'

पर उसकी बात समाप्त होने से पहले ही अफसर ने उसके मुँह पर टीले हाथ की दुहत्तड़ मारी। "क्यों? ग़दर? मैं तुम्हें सिखाऊँगा, ग़दर किस तरह किया जाता है। तुम सबको कुत्तों की तरह गोली से मरवा दूँगा, और अफसर और खुश होंगे। ले जाओ लड़की को।"

भीड़ में सन्नाटा छा गया। एक सैनिक ने लड़की को खींच लिया। लड़की बुरी तरह गला फाड़ रही थी। हथकड़ी वाला क़ैदी चुपचाप आगे को हाथ बढ़ा कर खड़ा हो गया।

अफ़सर ने अपनी तलवार की पेटी ठीक करते-करते कहा—इसे औरतों में ले जा।

नन्हीं लड़की का चेहरा लाल हो गया था, और वह ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला-चिल्ला कर शाल में से अपने हाथ निकालने की चेष्टा कर रही थी। मेरी पैवलोटना भीड़ में से निकल कर अफ़सर के पास पहुँची।

उसने कहा—आप इस लड़की को मुझे ले जाने की अनुमति देंगे?

"तुम कौन हो?"

"राजनीतिक क़ैदी।"

मेरी पैवलोटना के सुन्दर मुखड़े और विशाल मनोहर नेत्रों का अफ़सर पर गहरा प्रभाव पड़ा (उसने क़ैदियों का चार्ज लेते समय भी उसे विशेष रूप से लक्षित किया था)। वह उसकी ओर कुछ देर तक चुपचाप देखता रहा, मानो कुछ सोच रहा हो, इसके बाद वह बोला—अगर चाहो तो ले जाओ; मुझे कोई उज्र नहीं है।

तुम्हारे लिए तो दया-ममता दिखा देना बड़ा आसान काम है! मगर जो कहीं कैदी हाथ से निकल गया तो कौन जवाब देगा?

मेरी पैवलोटना ने कहा—बच्चे को गोद में लेकर कैसे निकल जायगा?

"तुम्हारे साथ माथा-पच्ची करने का मेरे पास वक्त नहीं है। चाहो तो ले जाओ।"

सैनिक ने कहा—दे दूँ?

"हाँ, दे दो।"

मेरी पैवलोटना ने बच्ची को अपने पास आने को फुसलाते हुए कहा—आ लल्ली, मेरे पास आ।

पर चीख़ती-चिल्लाती लड़की सिपाही की गोद में से अपने पिता की ओर बाँहें फैलाती रही और मेरी पैवलोटना के पास जाने को राज़ी न हुई।

मसलोवा ने अपने झोले में से एक बिस्कुट निकालते हुए कहा—मेरी पैवलोटना ठहरो; देखो मेरे पास आई जाती है।

नन्हीं लड़की मसलोवा को जानती थी और जब उसने उसकी सूरत और बिस्कुट को देखा तो वह चुपचाप उसके पास चली गई। शान्ति छा गई, दरवाज़े खोल दिए गए, कैदी बाहर निकले और कतार बना कर खड़े हो गए। सैनिकों ने उनकी फिर गणना की। थैलों को गाड़ियों पर लाद दिया गया और दुर्बलों को उनके ऊपर बिठा दिया गया। मसलोवा लड़की को गोद में लेकर स्त्रियों के दल में थियोडेसिया के पास जा खड़ी हुई। अफ़सर ने चलने का आदेश दे दिया और उसने गाड़ी में पाँव रक्खा ही था कि सायमन-

सन—जो इस सारी कार्यवाही को चुपचाप देख रहा था—लम्बे-लम्बे निश्चयपूर्ण पगों से चल कर उसके पास पहुँचा और बोला—आपने बहुत बुरा किया।

"अपनी जगह पर जाओ; इन बातों से तुम्हारा कोई सरोकार नहीं।"

"सरोकार है। मैं आपको बताना चाहता था कि आपने बहुत बुरा काम किया और मैंने आपको बता दिया।"—सायमनसन ने अपनी घनी भवों के नीचे से अफ़सर के ठीक चेहरे की ओर एकटक देखते हुए कहा।

अफ़सर ने सायमनसन की बात पर ध्यान न दिया। उसने चिल्ला कर कहा—"तैयार? मार्च!" और वह ड्रायवर के कन्धे का सहारा लेकर गाड़ी में सवार हो गया। दल घने जङ्गल में जाती हुई कीचड़ से भरी सड़क पर, जिसके दोनों ओर पानी की खाइयाँ थीं, फैल गया।
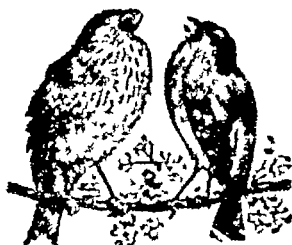
समें तो कोई सन्देह नहीं कि राजनीतिक कैदियों का वन्दी-जीवन काफी कठोर था, पर मसलोवा ने शहर में छः साल तक जो विलासपूर्ण, कामलिप्त, भ्रष्ट-जीवन व्यतीत किया था, और पिछले कई महीनों में उसे साधारण कैदियों के साथ रह कर जेल का जो अनुभव हुआ था, उसके बाद इस दल के संसर्ग में आकर उसे विशेष आनन्द हुआ। दिन की बीस मील की यात्रा और हर दो दिन बाद एक दिन के आराम ने मसलोवा की शारीरिक अवस्था में बहुत कुछ उन्नति कर दी, और अपने नवीन सहयात्रियों के सम्पर्क से वह एक ऐसे नवीन, रोचक जीवन की अनुभूति करने लगी जिसके दर्शन उसे पहले कभी न हुए थे। वह इन सबको आश्चर्यजनक जीव समझती और मन ही मन समझती कि इनसे भेंट होने से पहले तक वह इस प्रकार के जीवों के अस्तित्व की कल्पना तक न कर सकती थी।

उसने कहा—यह लो! और मैं दण्ड मिलने पर रो रही थी। मुझे तो इसके लिए परमात्मा का रात-दिन धन्यवाद देना चाहिए।

अब मुझे वह सब मालूम होने लगा है जो और किसी तरह मालूम न होता।

वह यह बिना किसी प्रयास के सुगमतापूर्वक समझ गई कि वे किस उद्देश से प्रेरित होकर ये कार्य करते हैं, और स्वयं भी जनता में से होने के कारण वह उनके साथ पूर्ण रूप से सहानुभूति करने लगी। वह समझ गई कि ये जनता के हित के लिए खड़े हुए हैं, और अधिकार-प्राप्त श्रेणी का विनाश करना चाहते हैं, और स्वय उच्च-श्रेणी से सम्बन्ध रखने पर भी अपने सुख-ऐश्वर्य और स्वच्छन्दता को लात मार कर अपने प्राणों की बाज़ी लगा रहे हैं। मसलोवा उन्हें इस कारण विशेष रूप से श्रद्धा की दृष्टि से देखने लगी।

वह अपने सारे राजनीतिक सङ्गियों के संसर्ग को आनन्दप्रद समझती, पर मेरी पैवलोव्टना का संसर्ग उसे विशेष रूप से भाता। उसे उसका ससर्ग केवल आनन्दप्रद ही लगता हो, सो बात न थी—वास्तव में वह उसे एक ख़ास, श्रद्धापूर्ण प्रेम की दृष्टि से देखने लगी थी। वह इस बात से विशेष रूप से प्रभावित हुई कि उसके जैसी धनी जनरल की सुन्दरी कन्या जो तीन भाषाओं में बात कर सकती थी, जो कुछ रुपया उसका भाई उसके पास भेजता, ग़रीबों को दे डालती, और स्वय मज़दूरों की लड़कियों की तरह रह कर दिन काटती, फटे-पुराने कपड़े पहनती और अपने बनाव-सिंगार की ओर कोई ध्यान न देती। मसलोवा के लिए यह मोहिनी मन्त्र डालने की प्रवृत्ति का पूर्ण अभाव नई बात थी, और इसीलिए वह उसकी ओर विशेष रूप से आकृष्ट हो गई थी।

मसलोवा को विदित था कि मेरी पैवलोटना यह बात जानती थी, और इस पर हर्षित भी होती थी कि वह सुन्दर है, पर-पुरुषों पर उसके रूप का जो प्रभाव पड़ता वह हर्षदायक भी न कहा जा सकता था। वह इससे संशङ्कित रहती थी और उसे घृणा-मिश्रित भय लगा रहता कि कहीं वह किसी पुरुष के प्रेम मे न फँस जाय। उसके पुरुष-सङ्गी इस बात को जानते थे और उसके साथ कभी प्रेम न करते थे—या यदि करते थे तो छिपा-छिपी—और उसके साथ ठीक अन्य पुरुषों जैसा आचरण करते थे। पर अपरिचित व्यक्ति कभी-कभी उसके साथ छेड़-छाड कर बैठते थे, और ऐसे अवसरो पर उसका असाधारण शारीरिक बल—जिसका उसे गर्व था—उसकी सहायता करता था।

उसने हँसते-हँसते कत्यूशा से कहा—एक दिन ऐसा हुआ कि एक आदमी सड़क पर मेरे पीछे लग गया। टलने का नाम ही न ले। अन्त में लाचार होकर मैंने उसे पकड कर ऐसा झकझोरा कि वह भयभीत होकर भाग गया!

उसके कथनानुसार वह क्रान्तिकारिणी इस कारण बन गई थी कि वह उच्च-श्रेणी के लोगों के रहन-सहन को बचपन से घृणा की दृष्टि से देखती आ रही थी और साधारण लोगों का रहन-सहन पसन्द करती थी। उस पर ड्राइङ्ग रूम के बजाय नौकरों के हॉल में, या रसोई-घर में या अस्तबल में समय व्यतीत करने पर हमेशा डाट-डपट पड़ती रहती।

उसने कहा—पर बावर्चिनों और कोचवानों के संसर्ग में मुझे बड़ा आनन्द आता, और महिलाओं और सज्जनों के संसर्ग से मेरा

जी ऊब जाता। फिर जब मैं कुछ सोचने-समझने योग्य हुई तो मैंने देखा कि हमारा रहन-सहन बिलकुल निन्द्य है। मेरी माता का देहान्त तो बहुत पहले ही हो चुका था, और पिता से मैं कुछ हिली-मिली न थी, अतः उन्नीस बरस की आयु में मैं एक सहेली के साथ फैक्टरी में काम करने को निकल खड़ी हुई।

फ़ैक्टरी छोड़ने के बाद वह एक गाँव में आ रही और वहाँ से फिर शहर में आ गई। यहाँ इन सबने एक मकान लिया, जहाँ एक गुप्त छापाख़ाना खोला। यहाँ मेरी पैवलोटना पकड़ी गई और उसे सपरिश्रम कारावास दण्ड दिया गया। वह स्वयं तो अपने विषय में कभी कुछ कहती ही न था, पर मसलोवा ने दूसरों की ज़बानी पता लगा लिया था कि उसे दण्ड दिए जाने का कारण यह था कि जब पुलिस ने छापा मारा और एक क्रान्तिकारी ने एक सिपाही को गोली से मार दिया तो सारा दोष इसने अपने ऊपर ओढ़ लिया।

कटूशा मेरी पैवलोटना को पहचानने लगी तो उसने देखा कि वह चाहे जिस अवस्था में हो, अपनी कभी चिन्ता नहीं करती, केवल दूसरों की सहायता करने को, दूसरों का—बड़ा या छोटा—दुःख दूर करने को कटिबद्ध रहती। उसका एक नवीन राजनीतिक साथी क़ैदी नोवोडोरोव कहता कि वह परोपकार-क्रीड़ा में ही सदैव संलग्न रहा करती है। और बात ठीक थी। उसके समस्त जीवन का सारभूत कार्य केवल दूसरों की सहायता करने के अवसर की खोज करते रहना था, ठीक जिस प्रकार शिकारी शिकार की खोज में लगे रहते हैं। और इस प्रकार की क्रीड़ा उसके जीवन का एक ऐसा

अविच्छिन्न अङ्ग हो गई थी कि जो उसे जानते थे वे उसके उपकारों के प्रति कृतज्ञ न होते, बल्कि उससे इसकी प्रतीक्षा करते।

जब मसलोवा राजनीतिक कैदियों के दल में पहली बार आई तो मेरी पैवलोटना को उसके प्रति घृणा और अरुचि उत्पन्न हुई। कटूशा ने यह बात लक्ष्य की। पर उसने यह भी देखा कि एक बार अपने इन भावों पर अधिकार करने के बाद मेरी पैवलोटना उसके साथ विशेष अनुराग और मृदुलता से बरतने लगी। एक ऐसे असाधारण जीव की अनुरक्ति और मृदुलता पाकर मसलोवा का हृदय इतना उद्वेलित हो उठा कि उसने उसे अपना समूचा हृदय दे डाला; और अचेत भाव से वह उसकी अनुकरिणी बन गई और बलात् उसके प्रत्येक कार्य की नक़ल करने की चेष्टा करने लगी। इधर मेरी पैवलोटना भी कटूशा के इस गम्भीर और श्रद्धा-पूर्ण प्रेम से उद्वेलित हुई और उसने भी इसका उत्तर देना सीखा। उन दोनों के विशेष रूप से अन्तरङ्ग होने का एक विशेष कारण उनकी स्त्री-पुरुष सम्पर्क विषयक घृणा थी। एक उस प्रकार की वासना, आसक्ति को इसलिए घृणा की दृष्टि से देखती थी कि उसकी सारी रोमाञ्चकारी व्यवस्था का उसने प्रत्यक्ष अनुभव किया था, दूसरी ने इसका प्रत्यक्ष अनुभव कभी न किया था, और वह इसे एक अबोध और साथ ही मानवी गौरव के लिए गर्हित और लाञ्छनापूर्ण पदार्थ समझती थी।
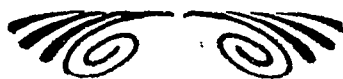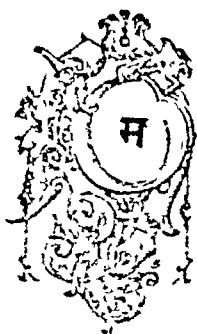
मसलोवा ने जिन प्रभावों के आगे आत्म-समर्पण किया था उनमें एक प्रभाव मेरी पैवलोटना का था, और इसका मूल कारण यह था कि मसलोवा मेरी पैवलोटना को प्यार करती थी। दूसरा प्रभाव सायमनसन का था और इसका मूल कारण यह था कि सायमनसन मसलोवा को प्यार करता था।

मनुष्य मात्र अंशतः अपने और अंशतः दूसरों के विचारों के अनुरूप आचरण किया करते हैं। कोई मनुष्य अपने विचारों के अनुरूप आचरण किस हद तक करता है, और दूसरे के विचारों के अनुरूप किस हद तक—इन मनुष्यों में विभेद करने वाली यह भी एक प्रमुख बात है। कुछ मनुष्यों के लिए विचार करना एक प्रकार की मानसिक क्रीड़ा है। वे अपने बुद्धि-विवेक का उपयोग अधिकतर अवसरों पर इस प्रकार करते हैं, मानो वह एक ऐसा पहिया हो जिसमें फीता न लगाया गया हो, और वे अपने आचरण को दूसरों के विचारों के प्रचलित रिवाजों के और प्राचीन परिपाटियों के अनुरूप स्थिर करते हैं। कुछ मनुष्य अपने ही विचारों को अपने

समस्त आचरणों की कार्यकारिणी शक्ति समझते हैं और अपने ही बुद्धि-विवेक के निर्देशों का पालन करते हैं, वे यदि दूसरों की सम्मति को ग्रहण करते भी हैं तो यदा-कदा, और सो भी खूब जाँच-परख लेने के बाद। सायमनसन इसी ढङ्ग का आदमी था। वह हर एक बात को अपने ही बुद्धि-विवेक के द्वारा जाँचता और इसके बाद वह जिस निष्कर्ष पर पहुँचता उसी के अनुरूप आचरण करता।

जब वह स्कूल में पढ़ता ही था तो उसने निष्कर्ष निकाला कि उसका पिता सरकारी दफ़्तर में वेतनाधिकारी के पद पर काम करके जो अर्जन करता है सो ईमानदारी का पैसा नहीं है, और उसने अपने पिता से साफ़ साफ़ कह दिया कि वह रुपया जनता को पहुँचना चाहिए। जब उसके पिता ने उसकी बात पर कान देने के बजाय उसकी ख़बर ली, तो वह अपने पिता के घर से निकल खड़ा हुआ और उसकी आय का उपभोग करने से उसने इन्कार कर दिया। जब उसने निष्कर्ष निकाला कि समस्त वर्तमान बुराइयाँ अज्ञानता के कारण हैं, तो उसने यूनीवर्सिटी छोड़ते ही जन-सङ्घ में नाम लिखा लिया और एक गाँव में स्कूल-मास्टर के पद से निर्भीकतापूर्वक शिष्यों और ग्रामीणों को वे सब बातें बताना शुरू कर दिया जिन्हें वह न्याय-सिद्ध समझता था, और उन बातों का खुल्लमखुल्ला खण्डन करना शुरू कर दिया जिन्हें वह अन्यायपूर्ण समझता था।

उसे गिरफ़्तार किया गया और उस पर मुक़दमा चलाया गया। विचार के अवसर पर उसने निष्कर्ष सिद्ध किया और अपने विचारकों से साफ़-साफ़ कह दिया कि उन्हें उसका विचार करने का

कोई अधिकार नहीं है। पर जब विचारकों ने उसकी बात पर कोई ध्यान न दिया और अपना न्याय-निर्णय व्यापार जारी रक्खा तो उसने निश्चय किया कि वह उनके प्रश्नों का कोई उत्तर न देगा, और जब उससे प्रश्न पूछे गए तो वह गूँगा-बहरा बना बैठा रहा।

उसे आर्चेञ्जल प्रान्त को निर्वासित कर दिया गया। वहाँ उसने धार्मिक शिक्षण-संघ स्थापित किया और उसकी समस्त कार्यशीलता उसी में संलग्न रहने लगी। उसका शिक्षण इस सिद्धान्त पर अवस्थित था कि विश्व के समस्त पदार्थ नित्य हैं। कोई नाशवान नहीं है, और कि जिन पदार्थों को हम प्राण-रहित या चेतना-विहीन समझते हैं, वे वास्तव में उस महान् चेतन शरीर के विभिन्न अङ्ग हैं जो हमारे लिए बोधगम्य नहीं है और मनुष्य का कर्त्तव्य उस महान् चेतन शरीर के अङ्ग की हैसियत से उसके और उसके विभिन्न अङ्गों के प्राण-रस को सजीव रखना है। और फलत: वह प्राण विनाश को पाप समझता था, और क्या युद्ध और प्राण-दण्ड, और क्या अन्य किसी प्रकार का संहारकृत्य—चाहे मनुष्य का हो, चाहे पशु-पक्षी का—वह सबका विरोध करता। विवाह के सम्बन्ध में भी उसने अपना निजी तथ्य स्थिर कर रक्खा था; वह समझता था कि सृजना मानवी कार्यशीलता का निम्नतर अंश है; उच्चतर अंश है सम्प्रति वर्तमान प्राणियों की सेवा करना। उसे अपने इस तथ्य की पुष्टि इस बात से मिली कि रक्त में रक्ताणु विद्यमान रहते हैं। उसकी सम्मति में बीजाणु भी रक्ताणुओं जैसे ही हैं, और उनका कार्य है मानवी शरीर के दुर्बल अंगों की सहायता करना। बस जिस दिन से उसने यह तथ्य स्थिर किया, उसी

दिन से वह उसके अनुरूप आचरण करने लगा (यद्यपि वह अपनी युवावस्था में उच्छृङ्खल जीवन व्यतीत कर चुका था)। वह अपने आपको और मेरी पैवलोटना को भी मानवी रक्ताणु मात्र समझता था।

उसके कट्टूशा विषयक प्रेम से उसके इस तथ्य में किसी प्रकार का व्याघात उपस्थित नहीं हुआ, क्योंकि वह प्लेटोनिक प्रेम करता था, और समझना था कि उसके इस प्रेम से उसके रक्ताणु की हैसियत से कार्य करने में किसी प्रकार का व्यतिक्रम पड़ना तो दूर, उल्टे एक प्रकार का सवेदन प्राप्त होगा।

नैतिक तो क्या, प्रकृत से प्रकृत समस्याओ तक का वह अपने निजी ढङ्ग से निर्णय करता। सारे प्रकृत कार्यो के लिए उसका कोई न कोई सिद्धान्त अवश्य था, कितने घण्टे काम करना चाहिए, कितने घण्टे आराम करना चाहिए, किस ढङ्ग का भोजन करना चाहिए, किस ढङ्ग के कपडे पहनने चाहिए और किस प्रकार घर को प्रकाशित या गर्म करना चाहिए।

इतना सब होते हुए भी सायमनसन बड़ा लजीला और शर्मीला था, पर एक बार निश्चय कर लेने के बाद वह किसी विघ्न-बाधा की चिन्ता न करता था।

और अपने प्रेम के द्वारा इस मनुष्य ने मसलोवा पर एक निश्चयात्मक प्रभाव डाल रक्खा था। मसलोवा ने स्त्री-सुलभ आत्म-प्रेरणा के द्वारा शीघ्र ही जान लिया कि वह उसे प्रेम की दृष्टि से देखता है। और इस बात ने कि वह एक ऐसे पुरुष के हृदय में प्रेम उत्पन्न कर सकती है, उसे अपनी ही दृष्टि में चढ़ा

दिया। निग्लयूडोव ने जो उससे विवाह करने में तत्परता प्रकट की थी सो अतीत की बातों के कारण, और उदाराशयता के वशवर्ती होकर, पर सायमनसन उसे उसकी असली अवस्था में—वर्तमान अवस्था में—वह जैसी कुछ थी—प्रेम करता था, और इसलिए प्रेम करता था कि वह उसे प्रेम करता था। और उसे अनुभूति होती थी कि सायमनसन उसे एक ऐसी असाधारण स्त्री समझता है, जिसमें अलौकिक नैतिक विभूतियाँ विद्यमान हैं। वह स्वयं अच्छी तरह न जानती थी कि उसमें वे अलौकिक नैतिक विभूतियाँ हैं, पर उसे हताश न करने के लिए, और इसलिए भी कि हमेशा किसी बात का उज्ज्वल अंश ग्रहण करना चाहिए, वह अपनी आत्मा के पूरे योग के साथ अपने अन्दर वे सभी उच्चतम विभूतियां उद्दीप्त करने की चेष्टा करने लगी, जिनकी वह किसी भी रूप में कल्पना कर सकती थी। संक्षेप में, उसने अपने आपको भरसक अच्छा बनाने की चेष्टा की।

इस प्रेम-व्यापार का आरम्भ तब से हुआ था जब जेल में एक मुलाक़ाती-दिन मसलोवा ने उसे अपनी घनी भवों के पीछे से सहृदयतापूर्ण नेत्रों के साथ अपनी ओर निर्निमेष भाव से देखते पाया था। उस समय भी मसलोवा ने लक्षित कर पाया था कि यह कैसा विलक्षण आदमी है, और उसके फैले हुए असंयत बालों और तेवर चढ़े माथे से उत्पन्न हुई चेहरे की कठोरता, और दृष्टि में व्यञ्जित होती निर्दोषिता और मृदुलता के विलक्षण योग की ओर भी उसका ध्यान गया था। इसके बाद दूसरी बार उसने उसे टोमस्क में देखा, जहाँ उसे राजनीतिक दल में मिलने की आज्ञा

मिल गई थी। और यद्यपि दोनों में से किसी ने किसी से आधी बात न कही, तथापि दोनों में जो दृष्टि-विनिमय हुआ वह इस बात की स्वीकारोक्ति था कि उन्हें एक-दूसरे का स्मरण है, और कि दोनों एक-दूसरे के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। इसके बाद भी दोनों में कभी किसी प्रकार का गम्भीर वार्तालाप न हुआ, पर मसलोवा को मन ही मन बोध होता कि वह जब कभी उसकी उपस्थिति में बोलता, उसके शब्द उसी को सम्बोधित किए गए होते, और वह उसी को ख़ातिर बोलता, और अपने हृदय के भाव स्पष्ट करने के लिए भरसक सरलता से काम लेता। पर जब से दोनों मिल कर साधारण कैदियों के दल के साथ यात्रा करने लगे तब से दोनों में विशेष रूप से घनिष्ट सम्पर्क स्थापित हो गया।
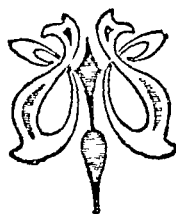
पर्म से विदा होने से पहले निख्ल्यूदोव कट्यूशा से केवल दो बार मिल सका—एक बार निझनी नोवगोरोड में, जहाँ कैदियों को लोहे के तार के बाड़े वाली नौका में सवार कराया गया था, और दूसरी बार पर्म ही के जेल-ऑफिस में। इन दोनों अवसरों पर उसने कट्यूशा को सङ्कोचपूर्ण और निर्मम पाया। जब उससे उसने पूछा कि उसे किसी चीज़ की ज़रूरत तो नहीं है, और क्या वह आराम से है, तो उसने उनका उत्तर देने में अवज्ञा, सङ्कोच और—निख्ल्यूदोव की धारणा के अनुसार—उसी रोषपूर्ण भर्त्सना से काम लिया जिसका परिचय वह पहले भी कई बार दे चुकी थी। उसकी विषण्ण मानसिक अवस्था—जो वस्तुतः पुरुषों की छेड़-छाड़ का परिणाम थी—निख्ल्यूदोव को व्यथित करने लगी। उसे आशङ्का हुई कि इस यात्रा के कारण वह जिस कष्टकर और पतनकारी अवस्था में जा पड़ी है, उससे प्रभा-

वित होकर वह एक बार फिर उसी मानसिक क्षोभ, विह्वलता और आत्म-विराग के गर्त में न जा गिरे, जिसके कारण वह पहले उससे चिढ गई थी और शोक-विस्मृत के लिए सिगरेट और शराब पीने लगी थी। पर यात्रा के इस अंश मे वह किसी भी रूप में उसकी सहायता करने में असमर्थ था, क्योंकि वह उससे मिल ही न पाता था। जब वह राजनीतिक क़ैदियो में आ मिली तब कहीं निखल्यूडोव ने देखा कि उसकी आशङ्काएँ कितनी निराधार हैं और जिस आन्तरिक परिवर्तन की वह इतनी कामना कर रहा था, वह किस प्रकार उत्तरोत्तर प्रबल से प्रबलतर होता जा रहा है। जब वह उससे पहली बार टोमस्क में मिला तो उसे वह ठीक वैसी ही दिखाई दी जैसी मास्को से विदा होने के समय थी। उसने उसे देख कर न तेवर बदले, न अस्तव्यस्तता प्रकट की, बल्कि उससे हर्ष-पूर्वक सहज भाव से भेंट की और उसने जो कुछ उसके लिए किया, और विशेषकर वर्तमान सङ्गियों में लाने के लिए उसका धन्यवाद दिया।

दल के साथ यात्रा करते-करते दो महीने बीतने के बाद उसके आन्तरिक परिवर्तन की छाया उसके चेहरे-मुहरे पर भी आ पड़ी। वह पहले की अपेक्षा कृश हो गई, उसका चेहरा धूप से झुलस गया, माथे पर और मुँह के चारों ओर झुर्रियाँ खिंच गईं, और वह अपेक्षाकृत वयस्क दिखाई देने लगी। अब उसके माथे पर बालों के लच्छे आकर न पड़ते थे, और उसके सारे बाल रूमाल से ढके रहते थे। उनके बँधने के ढङ्ग से, कपड़े-लत्ते पहनने और उठने-बैठने, चलने-फिरने से मोहिनी-मन्त्र फूँकने की प्रवृत्ति का आभास तक

न मिलता था। और इस भयक रूप में भारी परिवर्तन को देख कर निखल्यूदोव मन ही मन बड़ा सुखी होने लगा।

अब उसके प्रति वह बिलकुल नूतन ही भावों की अनुभूति करने लगा। इस भावानुभूति का उस प्रथम कवित्वमय प्रेम से कोई सामञ्जस्य न था, न उसे उसके उस वासनामय प्रेम से ही कुछ लेना-देना था, और तो और, मुकदमे के बाद विवाह करने के निश्चय से उत्पन्न हुई कर्त्तव्यपालन करने की आत्म-तुष्टि-मिश्रित सन्तोष-भावना में भी उसके साथ कोई समानता न थी। वर्तमान भाव केवल करुणा और मृदुलता के भाव थे। इन भावों की अनुभूति उसने पहली बार तब की थी, जब उसने उसे जेल में पहली बार देखा था, और दूसरी बार तब जब मेडिकल असिस्टेंट के साथ कल्पित प्रेम-लीला वाली बात से (अब उसे सत्य वृत्तान्त मालूम हो गया था) उत्पन्न हुई कुत्सा-मिश्रित घृणा को वश में करके उसने उसे मन ही मन क्षमा कर दिया था। बस, इसी प्रकार के भावों ने उसके हृदय पर अधिकार जमा लिया था; अन्तर केवल इतना था कि पहले वे अस्थायी थे, अब उन्होंने स्थायी रूप धारण कर लिया था। अब वह जो कुछ सोचता, या जो कुछ करता, उसमें एक प्रकार की करुणा और कोमलता का समावेश अवश्य रहता, और करुणा और कोमलता अकेले उसी के प्रति नहीं, बल्कि प्राणीमात्र के प्रति। इन भावों ने निखल्यूदोव के उस अगाध प्रेम के स्रोत को खोल दिया मालूम होता था, जिसके प्रवाहित होने का उसकी आत्मा में कोई साधन न मिलता था, और जो अब हर एक के लिए प्रवाहित होने लगा था।

यात्रा के दिनों में निखल्यूडोव के उदार-भाव इतने उद्दीप्त हो उठे कि वह कोचवानों और साधारण सैनिकों से लगा कर जेल-इन्सपेक्टरों और गवर्नरों तक से समान भाव से मृदुल और कोमल आचरण करने लगा।

अब जब मसलोवा राजनीतिक दल में तब्दील कर दी गई तो निखल्यूडोव भी स्वभावतया ही इस दल के अनेक व्यक्तियों से परिचित होने लगा। उसे पहले इकाटेरिङ्गवर्ग में मिलने-जुलने का संयोग हुआ, जहाँ उन सबको एक ही बड़ी सी कोठरी में बन्द कर दिया गया था, और अन्य अनेक प्रकार की सुविधाएँ दी गई थीं—और फिर सड़क पर उन पाँच पुरुषों और चार स्त्रियों के साथ, जिनमें मसलोवा को तब्दील किया गया था। इस प्रकार राजनीतिक निर्वासितों के सम्पर्क में आने पर निखल्यूडोव को उनके सम्बन्ध में बद्धमूल धारणाओं में परिवर्तन करना पड़ा।

क्रान्तिकारी आन्दोलन के आरम्भ से ही (और १ मार्च को द्वितीय ऐलेक्जेण्डर की हत्या के बाद से विशेष रूप से) निखल्यूडोव क्रान्तिकारियों को अरुचि और घृणा की दृष्टि से देखता आ रहा था। वे सरकार के विरुद्ध युद्ध करने में जिन गुप्त और निर्दयतापूर्ण षड्यन्त्रों का आश्रय लेते थे, और सरकारी अफसरों की हत्या करने में जिस जघन्य निर्ममता का परिचय देते, उससे निखल्यूडोव को घोर अरुचि उत्पन्न होती थी। और क्रान्तिकारियों का सहज गुण, आत्म-महत्व उसे विशेष रूप से खटकता था। पर अब उन्हें अन्तरङ्ग रूप से जानने के बाद, और यह जानने के बाद कि उन्हें सरकार के

हाँथों क्या-क्या यातनाएं सहनी पड़ी हैं, निखल्यूडोव समझ गया कि उनके लिए इसका अन्यथा होना सम्भव ही न था।

अपराधी कहलाये जाने वाले क़ैदियों पर जो अत्याचार किए जाते थे, वे चाहे लाख भयावह और विवेकहीन सही, फिर भी दण्ड मिलने से पहले और बाद को उनके साथ न्याय से कुछ समानता रखने वाला आचरण अवश्य किया जाता होगा, पर राजनीतिक क़ैदियों के सम्बन्ध में उस समानता के भी कहीं दर्शन न होते थे—जैसा कि निखल्यूडोव ने शुस्टोवा और अपने नवीन परिचितों के मामलों में देखा। इन लोगों के साथ जाल में पकड़ी गई मछलियों जैसा व्यवहार किया जाता था। जाल में पकड़ी गई मछलियों को किनारे पर निकाल लिया जाता है, बड़ी-बड़ी मछलियों को उपयोग के लिए चुन लिया जाता है, और शेष को उपेक्षा-पूर्वक किनारे पर नष्ट होने के लिए छोड़ दिया जाता है। सरकार ऐसे सैकड़ों निर्दोषों को पकड़ कर (जो किसी के लिए आपत्तिजनक न हो सकते थे) वर्षों तक जेलों में डाले रखती, जहाँ पर उन्हें क्षय-रोग हो जाता, दिमाग़ बिगड़ जाता, या वे आत्म-हत्या कर लेते, और उन्हें इस प्रकार डाले रखने का कोई विशेष कारण न होता, केवल यही कि अफ़सरों का जी न चाहता था, या यह कि मैजिस्ट्रेट के पूछने-ताछने पर, सम्भव है, वे कुछ काम की बात कह दें। बहुधा सरकार तक उन्हें निर्दोष समझती; पर उनके भाग्य का निर्णय या तो किसी पुलिस-अफसर के या पब्लिक-प्रॉसीक्यूटर के, या मैजिस्ट्रेट के, या गवर्नर के, या गुप्तचर के वहम, सुविधा या शान पर निर्भर रहता। इनमें के किसी अफ़सर का जी न लगा, या

उसने प्रसिद्धि प्राप्त करनी चाही, और बस उसने बहुत सारे आदमियों को गिरफ्तार करवा डाला और अपने या अपने से उच्चतर अफ़सरों के वहम के अनुसार कुछ को जेल में डाल दिया, कुछ को छोड़ दिया। उच्च पदस्थ कर्मचारी ने भी इसी प्रकार के उद्देश्य से प्रेरित होकर, या जिसमें कहीं मिनिस्टर साहब नाराज़ न हो जायँ, इस ख़्याल से किसी को दुनिया के दूसरे कोने पर निर्वासित कर दिया, किसी को एकान्त कारावास दण्ड दे दिया, किसी को साइबेरिया लाद दिया, किसी को कठोर परिश्रम का दण्ड दे दिया, किसी को प्राण-दण्ड दे दिया, और यदि किसी अच्छी-भली महिला ने सिफ़ारिश कर दी, तो किसी को छोड़ भी दिया।

उनके साथ ठीक वैसा ही व्यवहार किया जाता, जैसा युद्ध के अवसर पर किया जाता है, और स्वभावतया ही उनके साथ जिस प्रकार के साधनों का उपयोग किया जाता, वे ख़ुद भी उन्हीं साधनों का उपयोग करते। और जिस प्रकार सैनिक जन-साधारण की सम्मति के वातावरण में अपने उन नृशंस कृत्यों को, जिन्हें वे मृत्यु के मुख में पड़ कर करते हैं, इस रूप से छिपाते हैं कि वे उल्टे वीरतापूर्ण कार्य प्रतीत होते हैं, उसी प्रकार ये क्रान्तिकारी भी निरन्तर सर्व-साधारण के ऐसे वातावरण में घिरे रहते हैं, जो सङ्कट में पड़ कर, अपनी स्वच्छन्दता का बलिदान करके और मृत्यु का आह्वान करके किए गए निष्ठुर कार्यों को निन्द्य के स्थान पर यशपूर्ण रूप दे देता है। और इसमें ही निखल्यूडोव इस विस्मयकारी प्रदर्शन का रहस्य समझ सका कि भीरु से भीरु प्रकृति का व्यक्ति, जो किसी पर

आघात करने की तो कौन कहे, किसी की पीड़ा तक को सहन नहीं कर सकता—इस प्रकार शान्तभाव से हत्या-काण्ड करने को उतारू क्यों हो जाता है; किस प्रकार इस श्रेणी के लगभग सारे मनुष्य निर्दिष्ट अवसरों पर—आत्म-रक्षा के अवसर पर या उद्दिष्ट लक्ष्य-प्राप्ति के प्रयास में, या जनसाधारण के कल्याण के लिए—हत्या-काण्ड को वैध और न्यायोचित समझने लगते हैं। क्रान्तिकारी अपने महत्कार्य को—और फलतः स्वयं अपने आपको जो महत्त्व अन्वित करते थे, उसका उद्गम-स्थल स्वभावतया ही उस महत्त्व से प्रभावित होता था जो सरकार अपने कार्यों से अन्वित करती थी, और उस निर्दयता से भी जिसके साथ वह क्रान्तिकारियों को कुचला करती थी। उन्हें जो-जो यन्त्रणाएं सहन करने को विवश किया जाता था, उन्हें सहन करने में समर्थ होने के लिए उन्हें बाध्य होकर अपने सम्बन्ध में उच्च सम्मति निर्धारित करनी पड़ती थी।

जब निख्ल्यूडोव इन्हें अच्छी तरह जान सका तो उसे निश्चय हो गया कि न तो वे कुछ लोगों की कल्पना के अनुरूप गर्हित पिशाच हैं, न और बहुत से लोगों की धारणा के अनुसार अनुपम वीर; वे वास्तव में साधारण जीव हैं, जिनमें कुछ असाधारणतया अच्छे हैं, कुछ असाधारणतया बुरे—जैसा कि दैनिक जीवन में देखने में आता है।

इनमें से कुछ तो क्रान्तिकारी इसलिए बने थे कि वास्तव में वर्त-मान बुराइयों के विरुद्ध संघर्ष करना अपना कर्त्तव्य समझते थे, पर इनमें से कुछ ऐसे भी थे जो इस क्षेत्र में स्वार्थपूर्ण आकांक्षायुक्त प्रवृत्ति से प्रेरित होकर उतरे थे। किन्तु अधिकांश इस क्षेत्र में

सङ्कट में पड़ने और अपने प्राणों से खिलवाड़ करने की उत्कट पिपासा से प्रेरित होकर उतरे थे। निखल्यूडोव इस पिपासा का अपने सैनिक-जीवन में स्वयं अनुभव कर चुका था। यह पिपासा उस समय विशेष रूप से बलवती होती है, जब कोई युवा, और सजीवता से भरा हुआ होता है। पर ये क्रान्तिकारी जनसाधारण से इस बात में विभिन्न थे कि इनका नैतिक आचरण अपेक्षाकृत ऊँचा था। वे न केवल आत्म-संयम, कष्ट-सहिष्णुता, विश्वास-पात्रता, सत्यवादिता, और स्वार्थहीनता का पालन करना ही अपना कर्त्तव्य समझते, बल्कि जन-कल्याण के लिए हर प्रकार का—प्राणों तक का—बलिदान करना भी अपना कर्त्तव्य समझते। फलतः उनमें से जो सबसे अच्छे होते वे नैतिक दृष्टि से इतने ऊँचे होते जहाँ तक पहुँचना साधारण व्यक्ति के लिए सम्भव न होता, और जो सबसे बुरे होते, वे इतने बुरे होते कि साधारण से साधारण व्यक्ति भी उनका क्या मुकाबला कर पाते। उनमें से बहुत से मिथ्यावादी और सरलता-शून्य होते और साथ ही आत्माश्वस्त और गर्वीले भी बने रहते। अतएव निखल्यूडोव उनमें से कुछ के साथ श्रद्धा, और हार्दिक प्रेम तक का आचरण करने लगा, और कुछ के प्रति उदासीन की अपेक्षा कुत्सापूर्ण अधिक बना रहा।

निसल्यूडोव क्रिल्टसोव नामक एक क्षय-रोग ग्रस्त सपरिश्रम निर्वासन दण्ड दण्डित युवक को विशेष भाव की दृष्टि से देखने लगा। यह युवक भी कटूशा के दल में ही था। इसके साथ निसल्यूडोव का परिचय इकाटेरिनबर्ग में हुआ था, और उसने इसके साथ मार्ग में कई बार बात-चीत की थी। एक बार ग्रीष्म-ऋतु में निसल्यूडोव ने अपना सारा दिन इसी के पास पडाव में काट दिया, और इसने अपनी कहानी सुनाई कि किस प्रकार वह क्रान्तिकारी हो गया था। उसका पिता दक्षिणी रूस का एक सम्पन्न भू-स्वामी था और उसे बाल्यकाल ही में छोड़ कर मर गया था। उसकी माँ ने ही उसका पालन-पोषण किया था। वह स्कूल और यूनीवर्सिटी दोनों में सफल रहा, और परीक्षा में गणित के लड़कों में सर्व-प्रथम रहा। उसे यूनीवर्सिटी ने विदेश में जाकर शिक्षा ग्रहण करने के लिए चुन लिया। पर उसने निर्णय करने में विलम्ब कर दिया। वह एक के प्रेम में फँसा हुआ था, विवाह करने का विचार कर रहा था, और ग्राम्य-शासन में

भाग लेने की बात भी सोच रहा था। वह सारे काम करना चाहता था, और यह तय न कर सका कि उसे क्या करना चाहिए। इसी अवसर पर उसके कुछ यूनीवर्सिटी के मित्र विद्यार्थियों ने उससे एक महत्कार्य के लिए धन की याचना की। वह जानता था कि महत्कार्य क्रान्तिकारी कार्य के सिवा और कुछ नहीं है, पर उसने मित्रता का विचार करके, मिथ्या गर्व के झोंक में आकर, और इस आशङ्का से कि कहीं वे उसे डरपोक न समझने लगें, धन दे दिया, यद्यपि उस समय तक वह क्रान्तिकारी कार्यों में रुचि न रखता था। जिन्हें रुपया दिया गया था, वे पकड़े गए और उनके पास से एक पुर्ज़ा बरामद हुआ जिससे साबित हो गया कि धन क्रिल्टसोव ने दिया है। उसे गिरफ़्तार किया गया, थाने ले जाया गया, और फिर जेल में डाल दिया गया।

क्रिल्टसोव ने अपनी ऊँची चारपाई पर बैठे-बैठे, कुहनियाँ घुटनों पर टेक कर, अपने सुन्दर नेत्रों से निखल्यूडोव की ओर देखते हुए खोखले सीने में से आवाज़ निकालते हुए कहा—"जेल में कुछ अधिक कड़ाई न थी। हम दीवार थपथपाने के अतिरिक्त और ढङ्गों से भी बातचीत कर लेते थे। हम बरामदों में घूम लेते, अपने खाद्य पदार्थ और तम्बाकू आपस में बाँट लेते, और शाम को एक स्वर में गाते भी थे। मेरा गला बड़ा अच्छा था। हाँ, यदि मेरी माँ को इतना सन्ताप न होता तो मेरा जीवन बड़ा सुखी और रोचक रहता। मैंने जेल में प्रसिद्ध पैट्रोव से परिचय किया—वही पैट्रोव, जिसने बाद को दुर्ग में शीशे से अपने प्राण दे दिए थे। मैंने और बहुत से क़ैदियों से भी जान-पहचान की। मैंने अपने बग़ल की

कोठरियों के दो आदमियों से भी जान-पहचान की। दोनों एक ही मामले में पकड़े गए थे। उनके पास पोलैण्ड के घोषणा-पत्र निकले थे, और उन पर रेलवे-स्टेशन को जाते हुए सैनिकों के बन्धन से निकल भागने का अभियोग चलाया गया था। एक पोल था—लोज़िन्स्की, दूसरा यहूदी था—ऐज़ोवस्की। यह ऐज़ोवस्की अभी निरा लड़का था। कहता था, सत्रह बरस की उम्र है, पर पन्द्रह बरस से अधिक का क्या होगा। दुबला पतला, नाटा, फुर्तीला, काले चमकीले नेत्र, और अन्य यहूदियों की भाँति गला बड़ा सुरीला। उसकी आवाज़ अभी जमी न थी, पर फिर भी वह ग़ज़ब के गले से गाता था। हाँ, तो मैंने उन दोनों को मुक़द्दमे के दिन अपनी कोठरियों से जाते देखा। उन्हें सुबह ले जाया गया और शाम को उन्होंने आकर कहा कि उन्हें मृत्यु-दण्ड दिया गया है। इसकी किसी को आशा न थी। उनका मामला ही साधारण सा था—उन्होंने केवल निकल भागने की चेष्टा की थी, और बस। किसी को घायल भी तो न किया था। और फिर ऐज़ोवस्की जैसे दुधमुँहे बालक के प्राण लेना कितना अमानुषिक था। और हम सबने जेल में समझ लिया कि यह सब उन्हें डराने के लिए किया गया है, और वास्तव में उन्हें दण्ड न दिया जायगा। शुरू-शुरू में हम उत्तेजित रहे और फिर इस प्रकार हमने अपने आपको समझा लिया और इसी प्रकार दिन बीतते गए।

ख़ैर, एक दिन चौकीदार मेरे द्वार पर चुपचाप आकर भेद भरे स्वर में कहता है कि बढ़ई आगए हैं और टिकटिकी तैयार कर रहे हैं। शुरू-शुरू में मेरी समझ में कुछ न आया। यह क्या? यह कैसी

टिकटिकी? पर वृद्ध चौकीदार इतना उत्तेजित हो रहा था कि मैं फौरन जान गया कि टिकटिकी दो आदमी के लिए तैयार की जा रही है। मेरी इच्छा थी कि दीवार थपथपा कर अपने साथियों को सूचना दे दूँ, पर साथ ही आशङ्का हुई कि वे दोनो भी सुन लेंगे। साथी भी चुप थे। यह स्पष्ट था कि बात सबको मालूम हो गई थी। उस दिन शाम को बरामदे में और कोठरियों मे श्मशान जैसी निस्तब्धता छाई रही। हमने न दीवार थपथपाई, न गाना गाया। रात के दस बजे चौकीदार ने आकर सूचना दी कि मास्को से फाँसी देने वाला आ पहुँचा है। बस वह इतना कह कर चल पड़ा। मैं उसे बुलाने लगा। सहसा ऐज़ोवस्की की आवाज़ बरामदे में गूँज उठी—'क्या मामला है? उसे क्यों बुला रहे हो?' मैंने कहा कि मैंने तम्बाकू मँगवाया था। पर शायद वह ताड़ गया और बोला—'आज हमने गाना क्यों नहीं गाया? और आज हमने दीवारें क्यों नहीं थपथपाईं?' मुझे याद नहीं कि मैंने क्या उत्तर दिया, पर तत्काल ही मैं पीछे हट गया, जिससे मुझे उससे बातचीत न करनी पडे। हाँ, वही भयङ्कर रात थी। मैं रात भर कान खड़े किए आहट सुनता रहा। सहसा प्रात:काल से पहले बरामदे का दरवाज़ा खुला और एक, दो, तीन, बहुत से आदमी आने सुनाई पड़े। मैं अपने दरवाज़े के झरोखे के पास जाकर खड़ा हो गया। सबसे पहले इन्सपेक्टर गुज़रा। वह मोटा-ताज़ा आदमी था और वैसे दृढ और निश्चित सा दिखाई दिया करता था, पर इस समय उसका रङ्ग बेहद पीला पड़ा हुआ था, आँखें नीचे थीं, और वह भयभीत दिखाई दे रहा था। उसके पीछे-पीछे उसका सहकारी

आया ; शोकमग्न पर दृढ़;' और सबके पीछे से चौकीदार। सब मेरे दरवाज़े से गुज़रे और बगल वाले दरवाज़े पर जाकर रुक गए। सहकारी ने विचित्र से स्वर में पुकार कर कहा—'लोज़िन्स्की, उठ कर साफ़ कपड़े पहन लो!' हाँ, इसके बाद दरवाज़ा खुलने की चरमराहट सुनाई दी। इसके बाद मेरे कानों में लोज़िन्स्की के बरामदे के दूसरी ओर जाने की आवाज़ आई। मुझे केवल इन्सपेक्टर दिखाई दे रहा था। वह बेहद पीला पड़ा हुआ था और बार-बार अपने बटन को खोल रहा और बन्द कर रहा था और कन्धे उचका रहा था। हाँ, इसके बाद मानो किसी चीज़ से डर कर वह रास्ता छोड़ कर एक ओर को हो गया। यह लोज़िन्स्की था। वह इन्सपेक्टर के पास से गुज़र कर मेरे दरवाज़े के सामने आ खड़ा हुआ। बड़ा सुन्दर युवक था; ठीक पोलिश चेहरे-मुहरे का; चौड़े कन्धे; सुन्दर-कोमल बालों से सिर इस प्रकार ढका हुआ मानो टोपी रक्खी हो। आँखें नीली और सुन्दर। स्वस्थ, कान्त और सजीव। वह ठीक मेरे झरोखे के सामने आ खड़ा हुआ और मुझे उसका पूरा चेहरा दिखाई पड़ने लगा, चेहरा रक्तहीन सा हो गया था और भयङ्कर लगता था।

उसने कहा—क्रिल्टसोव, कोई सिगरेट है? मैंने कुछ सिगरेट निकाल कर पहुँचा देने चाहे, पर सहकारी इन्सपेक्टर ने झटपट सिगरेट केस निकाल कर उसके आगे कर दिया। उसने एक सिगरेट निकाला, सहकारी ने दियासलाई जलाई, उसने सिगरेट सुलगाया और दम खींचा, और चिन्ता-निमग्न सा हो गया। फिर मानो सहसा उसे कोई बात याद आ गई हो, वह बोला—'यह

अन्याय है, निर्दयता है। मैंने कोई अपराध नहीं किया। मैंने तो—।' मैं उसके चेहरे की ओर निर्निमेष दृष्टि से देख रहा था। मैंने देखा कि उसके युवा, श्वेत गले में कोई चीज़ काँप सी उठी हो। इसी समय मेरे कानों में यहूदी-सुलभ उच्च स्वर में ऐज़ो-वस्की की आवाज़ सुनाई दी। लोज़िन्स्की सिगरेट फेंक कर द्वार से हट गया। इसके बाद ऐज़ोवस्की मेरे दरवाज़े के सामने आ खड़ा हुआ। उसका चञ्चल काले नेत्रों वाला शिशु-सुलभ मुखड़ा लाल और भीगा हुआ था। वह भी साफ़ सफ़ेद कमीज़ पहने था। पाजामा बहुत चौड़ा था और वह उन्हें बार-बार खींच रहा था। उसका सारा शरीर थर-थर काँप रहा था। वह अपना कातर चेहरा मेरे झरोखे के पास ले गया—'क्रिल्टसोव, क्या सचमुच डॉक्टर ने मुझे खाँसी की दवा दी है ? मेरी तबी-यत ठीक नहीं है। मैं थोडी सी दवा और पिऊँगा।' उसका क्या आशय था, सो मैं कभी न समझ सका। हाँ, सहसा सह-कारी इन्सपेक्टर ने कठोर मुद्रा धारण की और उमी खिंचे हुए स्वर में कहा—'यह क्या मज़ाक है ? चलो।' ऐसा प्रतीत हुआ कि ऐज़ोवस्की यह समझने में असमर्थ सा हो गया है कि उसके भाग्य में क्या बदा है। वह झटपट चल पडा—चल क्या पड़ा, बरामदे में सबके आगे-आगे दौडने लगा। पर सहसा वह पीछे को हटा और मेरे कानो में उसकी महीन, तीक्ष्ण आवाज़ और चीखना-चिल्लाना आने लगा। इसके बाद पैरों की थपथपाहट और कोलाहल सुनाई दिया। वह रो और सिसक रहा था। चीत्कार-ध्वनि क्षीण से क्षीणतर होती गई, और अन्त में दरवाज़ा खनखनाया और फिर सब कुछ

शान्त हो गया। ..... हाँ, उन्हें फाँसी पर लटका दिया। दोनों के गले रस्सी से घोंट दिए गए। एक चौकीदार ने—पहले वाले ने नहीं—आकर कहा कि उसने यह सब अपनी आँखों से देखा। उसने कहा कि लोज़िन्स्की ने तो कुछ प्रतिरोध न किया, पर रोज़ोवन्स्की बहुत देर तक हाथ-पैर मारता रहा, और अन्त में उन्हें उसके सिर में रस्सी का फन्दा ज़बरदस्ती पहनाना पड़ा। हाँ, चौकीदार ज़रा मूर्ख सा था। बोला—सरकार, पहले तो उन्होंने मुझसे कहा था कि बड़ा भयङ्कर दृश्य होगा, पर वह तो ज़रा भी भयङ्कर न निकला। जब वे लटका दिए गए तो उन्होंने केवल दो बार कन्धे उचकाए—इस तरह—और उसने दिखाया कि किस प्रकार उनके कन्धे उछल रहे थे—फिर फाँसी वाले ने रस्सी कस दी, फन्दा तङ्ग हो गया; बस, चलो छुट्टी हुई; वे हिले तक नहीं।

और क्रिल्टसोव ने चौकीदार के शब्द दुहराए—"ज़रा भी भयङ्कर नहीं"—और मुस्कराने की चेष्टा की, पर इसके बजाय वह फूट-फूट कर रो पड़ा।

इसके बाद वह बहुत देर तक चुपचाप बैठा बैठा अपने गले में उठती हुई सिसकियों को दबाने की चेष्टा करता रहा।

उसने किञ्चित संयत होकर कहा—"बस, उसी क्षण मैं मैं क्रान्तिकारी बन गया।"—और उसने दो-चार शब्दों में अपनी कहानी समाप्त कर दी।

वह नैरोडोवोल्स्टोव से सम्बन्ध रखता था और 'ध्वंसकारी दल' का मुखिया था। इस दल का उद्देश्य था सरकार को इतना तङ्ग करना, जिससे वह विवश होकर स्वयं ही इस्तीफ़ा दे

दे। इस सम्बन्ध में वह पीटर्सबर्ग गया, कीफ़ गया, ओडेसा गया, और विदेश गया और हर जगह सफल रहा। इसके बाद एक ऐसे आदमी ने उसके साथ विश्वासघात किया जिस पर वह पूरा भरोसा रखता था। उसे गिरफ्तार किया गया, उस पर मुक़दमा चलाया गया, और दो बरस तक जेल में रखने के बाद उसे प्राण-दण्ड दिया गया, पर बाद को प्राण-दण्ड को आजीवन कठोर निर्वासन के दण्ड में परिवर्तित कर दिया गया।

उसे क्षय जेल ही में हो गया था और जैसी अवस्था में वह इस समय रक्खा गया था, उसमें वह कुछ महीनों से अधिक न जी सकता था। वह यह स्वयं भी जानता था, पर उसे इस पर तनिक पछतावा न था। वह कहता कि यदि उसे दूसरा जन्म मिले, तो उसमें भी वह उन अवस्थाओं का विनाश करने की चेष्टा करे जिनमें ऐसी घटनाएँ सम्भव हो सकती है जो उसने देखी हैं।

इस आदमी की कहानी और उसके प्रति सौहार्द भाव के द्वारा निखल्यूडोव ऐसी बहुत सी बातें जान गया जिन्हें पहले न समझ सका था।

स दिन सैनिक अफसर को नन्ही लड़की के ऊपर क़ैदियों से मुठभेड़ करनी पड़ी थी उस दिन निखल्यूदोव देर से जागा। (उसने रात गाँव की सराय में बिताई थी) और उसे पास ही के शहर से जाती हुई सरकारी डाक के लिए पत्र लिखने में भी काफ़ी देर हो गई, अतः वह सराय से नियत समय पर विदा न हो सका और क़ैदियों के दल को सड़क पर जा पकड़ने के बजाय दूसरे पड़ाव वाले गाँव में कहीं सन्ध्या के समय पहुँच सका।

सराय की मालकिन एक असाधारण स्थूल मोटी गर्दन वाली वयस्क महिला थी। निखल्यूदोव ने आग सेंक कर स्वच्छ से कमरे में चाय पी (इस कमरे में यत्र-तत्र मूर्तियाँ और चित्र टँगे हुए थे)। चाय पीने के बाद निखल्यूदोव कटूशा से भेंट करने के लिए अफ़-सर से अनुमति माँगने चल दिया। पिछले छः पड़ावों पर उसे कटूशा से भेंट करने की अनुमति न दी गई थी। यद्यपि अफ़सर कई बार बदले गए, पर उसे पड़ाव में किसी ने न आने दिया था।

इस कड़ाई का कारण यह था कि उधर से होकर एक बड़ा भारी जेल-अफ़सर गुज़रने वाला था। अब वह बड़ा भारी अफसर क़ैदियों के दल को बिना देखे ही गुज़र गया था और अब निखल्यूडोव को आशा थी कि सुबह जिस अफसर ने क़ैदियो का चार्ज लिया है वह भी अन्य अफ़सरों की भाँति उसे क़ैदी से मिलने की अनुमति दे देगा।

साइबेरियन रोड के किनारों पर स्थित अन्य सभी पड़ावों की भाँति यह पड़ाव भी एक सहन से घिरा हुआ था, जिसके चारो ओर नोकदार बाड़ा लगा हुआ था। इस पड़ाव के अहाते में तीन इकमञ्ज़िले मकान थे। उनमें से सब से बड़ा क़ैदियों के लिए था, उससे छोटा सैनिकों के लिए, और तीसरी ओर सब से छोटे मकान में ऑफ़िस था और इसमें अफ़सर ने डेरा डाला था। इन तीनों मकानों की खिड़कियाँ प्रकाश से जगमगा रही थीं, और इस प्रकार के अन्य सारे प्रकाशों की नाईं घर के सुख-विश्राम का प्रदर्शन कर रही थीं। अन्तर केवल इतना था कि यहाँ का सुख-प्रदर्शक प्रकाश विशेष रूप से भ्रामक था। घरों के 'पोर्चों' के आगे लैम्प जल रहे थे, और दीवार के सहारे जलते हुए पाँच लेम्पों ने सहन को प्रकाशित कर रक्खा था।

निखल्यूडोव एक सार्जेण्ट के साथ-साथ सहन में पड़े तख़्ते पर से होता हुआ सब से छोटे मकान के पास पहुँचा। यहाँ सार्जेण्ट आगे बढ़ गया और तीन क़दम जाने के बाद उसने निखल्यूडोव को बाहरी कमरे में जाने का सङ्केत किया, जहाँ एक छोटा सा लेम्प जल रहा था और कमरा धुएँ से भरा हुआ था। चूल्हे के पास एक सिपाही

छोटी कमीज़ पहने बैठा था। उसके पैर में केवल एक जूता था और दूसरे जूते से वह चायदानी के कोयले सुलगाने के लिए पङ्खे का काम ले रहा था। उसने निख्लयूदोव को देख कर आग सुलगाना छोड़ दिया और उसका चमड़े का कोट उतार कर वह भीतर चला गया।

"हुज़ूर, आपसे कोई मिलने आए हैं?"

एक रुद्ध स्वर ने कहा—अच्छा, अन्दर भेज।

सैनिक ने कहा—"आप जाकर दरवाज़े पर पहुँचिए।" और वह चाय बनाने में लग गया।

दूसरे कमरे में छत से लटकते हुए लैम्प का प्रकाश हो रहा था, और अफ़सर—सुन्दर मूँछें, बेहद लाल चेहरा—ऑस्ट्रियन जाकट पहने (जो उसके चौड़े सीने और बलिष्ठ कन्धों पर बिलकुल फिट बैठती थी) एक ऊँची मेज़ के आगे बैठा था। मेज़ पर उसके भोजन का अवशिष्ट अंश और दो बोतलें रक्खी थीं। कमरा ख़ूब गर्म था और उसमें तम्बाकू की दुर्गन्ध और सस्ते से इत्र की तेज़ महक आ रही थी। निख्लयूदोव को देख कर अफ़सर अपने स्थान से उठा और उनकी ओर व्यङ्गपूर्ण और सन्देहयुक्त दृष्टि से देखने लगा।

उसने पूछा—"आप क्या चाहते हैं?"—और उत्तर की प्रतीक्षा न करके उसने द्वार में से चिल्ला कर कहा—"चर्नोव! लाया? कर क्या रहा है?"

"अभी लाया!"

"मैं तेरी 'अभी लाया' ज़रा सी देर में निकाल दूँगा, याद रखना!"—अफ़सर ने चिल्ला कर कहा और उसके नेत्र चमक उठे।

सैनिक ने ज़ोर से कहा—"आ रहा हूँ!" और उसने चाय-दानी लाकर मेज़ पर रख दी।

निखल्यूडोव चुपचाप खड़ा देखता रहा। सैनिक चायदानी मेज़ पर रख कर बाहर चला गया। अफ़सर उसकी ओर इस प्रकार देखता रहा मानो वह यह निर्णय कर रहा हो कि किस स्थान पर आघात करना अच्छा रहेगा। इसके बाद अफ़सर ने चाय बनाई, चौखूँटी प्याली निकाली, और फिर अपने बॉक्स में से कुछ बिस्कुट निकाल कर मेज़ पर रक्खे। इसके बाद वह निखल्यूडोव की ओर घूमा और बोला—बताइए, मैं आपकी क्या सेवा करूँ?

निखल्यूडोव ने उसी प्रकार खड़े-खड़े कहा—मैं एक क़ैदी से मिलना चाहता हूँ।

अफ़सर ने कहा—राजनीतिक क़ैदी? उनसे मिलने-जुलने की मुमानियत है।

निखल्यूडोव बोला—जिस स्त्री का मैं ज़िक्र कर रहा हूँ, वह राजनीतिक नहीं है।

अफ़सर ने कहा—अच्छा! हाँ, आप बैठिए तो।

निखल्यूडोव बैठ गया। बोला—वह राजनीतिक कैदी नहीं है। उसे मेरी प्रार्थना पर उच्च अफ़सरों ने राजनीतिक क़ैदियों के साथ रहने की आज्ञा दे दी है।

अफ़सर ने बात काट कर कहा—हाँ, मैं उसे जानता हूँ। वही कुछ साँवली सी? हाँ, इसका बन्दोबस्त किया जा सकता है। आप सिगरेट न पिएँगे?

उसने निखल्यूडोव की ओर सिगरेट का बॉक्स सरका दिया

और फिर दो प्यालों में चाय उलट कर एक प्याला उसकी ओर बढ़ाते हुए कहा—आज्ञा है?

"धन्यवाद! मैं उससे भेंट करना .....।"

"पूरी रात पड़ी है। अभी काफ़ी वक़्त है। मैं उसे आपके पास बुलवाए देता हूँ।"

"पर क्या मैं वहाँ जाकर उससे नहीं मिल सकता? उसे बुलवाया क्यों जाय?"

"राजनीतिक क़ैदियों में? यह क़ानून के ख़िलाफ़ है।"

"मुझे कई दफ़ा पहले भी वहाँ जाकर मिलने की अनुमति दे दी गई थी। अगर यह आशङ्का हो कि मैं उन्हें कोई चीज़ पकड़ा दूँगा, तो यह मैं उसके द्वारा भी कर सकता था।"

"जी नहीं, उसकी तलाशी ले ली जाती है।"—और अफ़सर अस्वाभाविक ढङ्ग से हँसा।

"तो फिर आप मेरी ही तलाशी क्यों नहीं ले लेते?"

अफ़सर ने बोतल मेज़ पर निकल्यूडोव की ओर बढ़ाते हुए कहा—अच्छी बात है; हम इसके बग़ैर ही काम चला लेंगे। हाँ, तो पीजिएगा न? नहीं? अच्छी बात है, जैसी आपकी मर्ज़ी। यहाँ साइबेरिया में किसी शिक्षित व्यक्ति से मिल कर बड़ी प्रसन्नता होती है। आप जानते ही हैं, हमारा काम कितना बुरा है; और जिसे अच्छे काम की आदत पड़ी हो, उसे तो यह बहुत ही बुरा लगता है। हमारे बारे में लोगों का ख़याल है कि हम बिलकुल उजड्ड और गँवार होते हैं, यह किसी को याद नहीं रहता कि हमारा जन्म किसी दूसरी ही अवस्था के लिए हुआ था।

इस अफ़सर का लाल चेहरा, इत्र, अँगूठियाँ, और विशेषकर उसका क्षोभकारी अट्टहास निखल्यूडोव को नितान्त अरोचक प्रतीत हुआ, पर आज (और आज ही नहीं, यात्रा के आरम्भ से ही) वह ऐसी गम्भीर मनोयोगपूर्ण मानसिक अवस्था में था, जिसमें किसी व्यक्ति के साथ घृणा और तिरस्कार का व्यवहार करना असम्भव हो जाता है, बल्कि आज वह सारे मनुष्यों के आगे—अपने ही शब्दों में—हृदय खोल कर रख देने को प्रवृत्त हो रहा था। अतः जब उसने अफ़सर की बात सुनी और उसकी मानसिक अवस्था का आभास पाया, तो उसने गम्भीर भाव से कहा—मैं तो समझता हूँ कि आपके जैसी अवस्था में भी पीड़ितों को सहायता करके मनुष्य को शान्ति मिल सकती है।

"उनकी पीड़ाएँ हैं ही क्या? आप जानते नहीं कि ये लोग कैसे होते हैं?"

"ये लोग कोई दूसरी दुनिया के तो हैं नहीं, हमीं जैसे हैं।"

"इसमें कोई सन्देह नहीं कि उनमें भाँति-भाँति के लोग हैं, और उन पर स्वभावतया ही दया आती है। हममें से कुछ तो दया-ममता का नाम तक नहीं जानते, पर मुझसे जहाँ तक हो सकता है, मैं उनकी विपत्ति को दूर करने की चेष्टा करता रहता हूँ। मैं खुद कष्ट सह लेता हूँ, उन्हें नहीं होने देता। दूसरे अफ़सर क़ायदे-क़ानून की पाबन्दी की धुन में गोली तक मार देते हैं, पर मुझे उन पर तरस आता है.........आज्ञा है।" और उसने दूसरा प्याला उँडेल कर निखल्यूडोव की ओर बढ़ाया—"और यह औरत कौन है, जिससे आप मिलना चाहते हैं?"

निख्ल्यूदोव ने कहा—वह एक अभागी स्त्री है, जो एक वेश्या-लय में जा फँसी थी। उस पर विष देने का झूठा अभियोग लगा दिया था। वैसे वह बड़ी ही अच्छी स्त्री है।

अफ़सर ने अपना सिर हिलाया। बोला—"हाँ, ऐसा भी कभी-कभी हो जाता है। मैं आपको ऐमा नाम की एक लड़की का ज़िक्र सुनाता हूँ। वह कज़ान में रहती है; जन्म से तो हंगेरियन थी, पर उसकी आँखें बिल्कुल फ़ारस-निवासियों जैसी थीं।" और उसके स्मरण-मात्र से उसके ओठों पर बलात् मुस्कराहट नाच उठी—उसके चेहरे पर वह नमक था कि वह काउण्टेस बनने योग्य थी।

निख्ल्यूदोव ने अफ़सर की बात काटी और पहला प्रसङ्ग छेड़ा।

"मेरी समझ में तो आप अपने चार्ज में दिए गए आदमियों के दु:ख-भार को बहुत कुछ हलका कर सकते हैं, और मुझे विश्वास है कि इस तरह आपको बड़ा आनन्द मिलेगा।"—निख्ल्यूदोव ने एक-एक शब्द का उच्चारण इस प्रकार स्पष्ट रूप से करते हुए कहा, मानो वह किसी विदेशी से या किसी बालक से बात कर रहा हो।

अफ़सर निख्ल्यूदोव की ओर चमकते हुए नेत्रों से देखता हुआ आतुर-भाव से उसकी बात की समाप्ति की प्रतीक्षा करने लगा, जिससे वह अपनी फ़ारसी आँखों वाली हंगेरियन का ज़िक्र छेड़ सके। यह स्पष्ट था कि उक्त हंगेरियन स्त्री का चित्र उसके स्मृति-पटल पर इस प्रकार स्पष्ट-रूप से अङ्कित हो उठा था कि उसका ध्यान पूर्ण रूप से उसी में तन्मय हो गया था।

उसने कहा—जी हाँ, जी हाँ, बिलकुल ठीक; मुझे सचमुच

उन पर तरस आता है—पर मैं आपसे इस ऐमा की बात कहना चाहता हूँ। आपका क्या ख़याल है, उसने.... ।

निख़्लयूडोव ने कहा—मुझे इसमें रुचि नहीं है, और मैं आपको साफ़-साफ़ बता देना अपना कर्त्तव्य समझता हूँ कि यद्यपि किसी समय मैं ख़ुद बिलकुल दूसरे ही ढङ्ग का आदमी था, पर अब मुझे स्त्रियों के साथ इस प्रकार के सम्पर्क से घृणा है।

अफ़सर ने निखल्यूडोव की ओर भीत-दृष्टि से देखा। उसने कहा—आप थोडी चाय और लेंगे ?

"जी नहीं, धन्यवाद।"

अफसर ने आवाज़ दी—बर्नोव ! आपको वाकूलोव के पास ले जाओ और उससे कहो कि वह आपको एकान्त राजनीतिक कमरे में पहुँचा दे। वहाँ आप निरीक्षण के समय तक रुक सकते हैं।
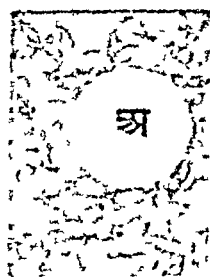
अर्दली के साथ निख्लयूदोव सहन में पहुँचा, जो लैम्पों के धुँधले प्रकाश से प्रकाशित हो रहा था।

एक सैनिक ने पूछा—कहाँ को?

अर्दली सैनिक ने उत्तर दिया—नं० पाँच वाले एकान्त कमरे को।

"इधर से न जा सकोगे; ताला बन्द है। घूम कर जाना होगा।"

"क्यों?"

"क्यों क्या? सार्जेन्ट का पट्टा वाली लेकर गाँव में चला गया है।"

"आइए, फिर इधर से चलें।"

सैनिक निख्लयूदोव को तख्तों पर से होकर एक दूसरे मार्ग से निकाल ले चला। निख्लयूदोव के कान में सहन ही से मकान के भीतर का जन-कोलाहल सुनाई पड़ने लगा, ठीक जिस प्रकार उड़ने को तैयार शहद की मक्खियाँ छत्ते पर भिनभिनाती हैं; पर

जब वह निकट आया और द्वार खोला गया तो जनरव प्रबलतर गया और उसके कानों में चीत्कार, अट्टहास और गाली-गलौज की स्पष्ट आवाज़ आने लगी। उसके कानों में ज़ञ्जीरों के झन-झनाने की आवाज़ आई और नाक में दुर्गन्ध घुसी।

निखल्यूडोव जब कभी इस प्रकार का जनरव सुनता या दुर्गन्ध सूँघता तो उसके शरीर में व्यथाकारी रोमाञ्च उत्पन्न हो जाता और उसके हृदय में नैतिक मिचलाहट के भाव उत्पन्न हो जाते, और फिर यही नैतिक मिचलाहट शारीरिक मिचलाहट में बदल कर एक दूसरी को उत्तरोत्तर प्रबल करने लगती।

निखल्यूडोव ने घुसते ही क्या देखा कि एक कोने में दुर्गन्ध-पूर्ण टब के किनारे पर एक स्त्री बैठी है और एक क़ैदी अपनी घुटी चाँद पर टेढ़ी टोपी रक्खे उसके सामने खड़ा है। दोनों कुछ बातें कर रहे थे। निखल्यूडोव को देख कर आदमी ने आँख मारी और कहा—ख़ुद ज़ार भी बहता पानी नहीं रोक सकते।

पर स्त्री झेंप सी गई और अपने लँहगे की गोट नीची करने लगी।

प्रवेश-द्वार के बाद एक बरामदा शुरू होता था, जिसमें से होकर कई दरवाज़े खुलते थे। पहला कमरा परिवार-गृह था, दूसरा कुमार-गृह, और अन्त के दो छोटे कमरे राजनीतिक कैदियों के लिए अलग कर दिए गए थे।

इमारत में केवल डेढ सौ आदमियों की गुञ्जायश थी; पर इस समय वह इतनी भरी हुई थी कि उसमें साढ़े चार सौ आदमी मौजूद थे, और कमरों में न आ सकने के कारण बरामदों में भीड़

जगाए हुए थे। कुछ लेटे या बैठे थे, बाक़ी या तो चायदानियाँ लिए आ रहे थे या उनमें गर्म पानी भर कर ला रहे थे। गर्म पानी भर कर लाने वालों में से एक तारस था। उसने निख्ल्यूदोव के पास पहुँच कर स्नेहपूर्वक अभिवादन किया। तारस का सहृदय चेहरा नाक और आँख के नीचे क्षत-विक्षत हो रहा था।

निख्ल्यूदोव ने पूछा—क्यों, क्या हुआ?

तारस ने मुस्करा कर उत्तर दिया—कुछ हो ही गया।

सैनिक ने कहा—ये लोग हमेशा लड़ते-झगड़ते रहते हैं।

तारस के पीछे आने वाले क़ैदी ने कहा—सब औरतों के ऊपर। अन्धे फ़ेद्का से भिड़ गया था।

"और थियोडोसिया कैसे है?"

"भली-चंगी है। मैं उसकी चाय के लिए पानी लिए जा रहा हूँ।"—तारस ने उत्तर दिया, और इसके बाद वह परिवार-गृह में चला गया।

राजनीतिक क़ैदियों को दो छोटे-छोटे कमरों में रक्खा जाता था, जिनके दरवाज़ों का रुख एक बरामदे में जाकर खुलता था, जिसे मकान के बाक़ी हिस्से से अलग कर दिया गया था। इस ओर आकर निख्ल्यूदोव ने देखा कि सायमनसन रबड़ की जाकट पहने हाथ में लकड़ी का टुकड़ा लिए चूल्हे के आगे झुका बैठा है।

निख्ल्यूदोव को देख कर उसने बिना उठे ही उसकी ओर अपनी घनी भवों के पीछे से निहारते हुए अपना हाथ बढ़ा दिया।

उसने मर्मपूर्ण मुद्रा के साथ ठीक निख्ल्यूदोव के चेहरे में

झाँकते हुए कहा—बड़ी प्रसन्नता की बात है जो तुम आ गए। मैं आपसे कुछ कहना चाहता था।

निखल्यूडोव ने पूछा—कहिए-कहिए ; क्या बात है ?

"बाद को बातें हो जायँगी। इस वक़्त मैं घिरा हुआ हूँ।" और इतना कह कर सायमनसन ने फिर चूल्हे की ओर मुँह फेर लिया। वह चूल्हे को इस प्रकार गर्म कर रहा था जिससे यथासम्भव कम उष्णता का क्षय हो।

निखल्यूडोव दरवाज़े में घुसने ही वाला था कि इसी समय चूल्हे की ओर झाँवे की झाड़ू से कूड़ा-करकट बुहारती हुई मसलोवा आ पहुँची। वह सफेद जाकट पहने थी, उसका लहँगा उड़ता हुआ था, और धूल से बालों की रक्षा करने के लिए रूमाल माथे तक बँधा हुआ था। निखल्यूडोव को देख कर उसका चेहरा लाल हो उठा, वह तन कर खड़ी हो गई और झाड़ू हाथ से डाल कर अपने हाथ लहँगे से पोंछती हुई उसके सामने रुक गई।

निखल्यूडोव ने उससे हाथ मिला कर कहा—तो कमरों की सफाई हो रही है—ऐं न ?

उसने मुस्करा कर उत्तर दिया—"हाँ, यह तो मेरा पुराना काम है। पर गर्द का भी कुछ ठिकाना है ! तुम अनुमान न कर सकोगे कि यह क्या बला है। साफ़ करते-करते हाथ रह गए। क्यों जी सूख गया क्या ?" उसने सायमनसन की ओर मुड़ कर पूछा।

सायमन ने उसकी ओर एक विशेष प्रकार की दृष्टि से—जो निखल्यूडोव की निगाह से बची न रह सकी—देखते हुए कहा—हाँ, सूखा ही समझो।

"अच्छी बात है, मैं आकर ले जाऊँगी, और सुखाने को चोगे भी लेती आऊँगी।.. ....हमारे सङ्गी-साथी सब उस कमरे में हैं।" उसने दूसरे कमरे की ओर जाते-जाते निखल्यूडोव से पहले कमरे की ओर सङ्केत करके कहा।

निखल्यूडोव कमरे का दरवाज़ा खोल कर भीतर पहुँचा। उसमें दीवार से सटे तख्ते पर रक्खे टीन के दिए का प्रकाश फैल रहा था। कमरे में ठण्ड थी, और उड़ती हुई धूल, सीलन और तम्बाकू की गन्ध आ रही थी। छोटा सा टीन का दिया अपने पास के पदार्थों पर प्रकाश फेंक रहा था, पर बिछौने अँधेरे में थे, और दीवारों पर चञ्चल काली छाया फैल रही थी।

दो राजनीतिक क़ैदियों को खाद्य-पदार्थ की व्यवस्था का काम सौंपा गया था, और वे दोनों गर्म पानी लेने गए थे। बाक़ी लगभग सारे राजनीतिक क़ैदी वहीं मौजूद थे। इन्हीं में निखल्यूडोव की पुरानी परिचिता वीरा दुखोवा भी थी। छोटे बाल, माथे की नस फूली हुई, पहले की अपेक्षा दुबली और पीली। वह ख़ाकी जाकट पहने और अपने आगे काग़ज़ का तख्ता बिछाए बैठी थी और कम्पित हाथों से सिगरेट बना-बना कर डाल रही थी।

ऐमिली रण्टसेवा को निखल्यूडोव सारे राजनीतिक क़ैदियों में सब से अधिक प्रफुल्लतादायिनी समझता था। वह भी वहीं मौजूद थी। वह सबकी गृह-व्यवस्था का भार लेती थी और अधिक से अधिक कष्टकर परिस्थिति में उत्फुल्लता और गृह-सुलभ सुख का वातावरण उत्पन्न कर देती थी। वह लम्प के पास बैठी हुई प्यालों को साफ़ कर-कर के अपने कुशल हाथों से चारपाई पर

बिछे कपडे पर रखती जा रही थी। रणटसेवा सादी सी सूरत की स्त्री थी। उसके चेहरे पर बुद्धिमत्ता और मृदुता की छाप लगी हुई थी, और जब वह मुस्कराती थी तो उसका चेहरा सहसा उल्लसित, सजीव और मनोहर हो जाता था। उसने निखल्यूडोव का स्वागत इसी प्रकार की मुस्कराहट के साथ किया।

उसने कहा—अच्छा! हमने तो समझा था कि आप रूस को वापस चले गए।

एक अँधेरे कोने में मेरी पैवलोटना भी नन्ही सी सुन्दर बालों वाली लड़की के साथ संलग्न थी, और लड़की अपने शिशु-सुलभ मृदुल लहजे में लगातार बातें करती जा रही थी।

मेरी पैवलोटना ने निखल्यूडोव से कहा—"कितना अच्छा हुआ जो आप आ गए? कटूशा से भेंट हो गई क्या? हमारा नया अतिथि देखा है?" और उसने नन्हीं लड़की की ओर सङ्केत किया।

अनातोले क्रिल्टसोव भी यहीं मौजूद था; वह फैल्टबूट पहने अपने हाथ अस्तीनों में घुसेड़े एक कोने में दुहरा हुआ बैठा था। उसने निखल्यूडोव की ओर ज्वर-प्रज्वलित नेत्रों से देखा। निखल्यूडोव उसके पास जाने लगा, पर दरवाज़े के दाहिनी ओर चश्मा और रबड़ की जाकट पहने एक लाल घूँघर वाले बालों वाला व्यक्ति सुन्दर सुस्मित ग्रेबेट्स से बातें कर रहा था। यह प्रसिद्ध विप्लव-वादी नोवोडोरोव था। निखल्यूडोव ने उससे झटपट अभिवादन किया। यह व्यापार झटपट समाप्त कर डालने की उसे विशेष रूप से आतुरता थी, क्योंकि इन सारे राजनीतिक क़ैदियों में यही एक ऐसा व्यक्ति था, जो उसे फूटी आँख न सुहाता था। जब नोवोडो-

रोव ने निखल्यूडोव की ओर देखा तो चश्मे के पीछे से उसके नील-वर्ण नेत्र चमक उठे, और उसने अपना तङ्ग हाथ उसकी ओर बढ़ाया।

उसने स्पष्ट व्यंग्य-विद्रुप के साथ कहा—कहिए, यात्रा मे ख़ूब आनन्द आ रहा है न?

निखल्यूडोव ने जान-बूझ कर व्यंग्य विद्रुप की अवज्ञा की और उसके कथन को सौजन्योचित प्रश्न मान कर उत्तर में कहा—"जी हाँ, बहुत सी रोचक बातें भी हैं।" और वह झटपट क्रिल्टसोव की ओर बढ़ गया।

वैसे निखल्यूडोव ने उदासीनता का भाव दिखाया, पर वास्तव में वह उदासीन नाम को भी न था, और कुछ क्षोभकारी बात कहने या करने की इच्छा से प्रेरित होकर नोवोडोरोव ने जो उक्त शब्द कहे थे, उन्होंने निखल्यूडोव की कोमल प्रवृत्ति में व्याघात उत्पन्न कर दिया, और वह विषण्ण और उदास हो गया।

उसने क्रिल्टसोव का ठण्डा और काँपता हुआ हाथ दबा कर कहा—"कहो, कैसे हो?" क्रिल्टसोव ने झटपट अपना हाथ फिर आस्तीन में घुसेड़ते हुए कहा—"अच्छा ख़ासा हूँ; पर शरीर को गर्मी नहीं आती। बेतरह भींग गया था। और यहाँ सर्दी का भी कुछ हद हिसाब है? देखिए, खिड़की का शीशा टूटा हुआ है।" उसने लोहे की छड़ों के पीछे लगी खिड़की के टूटे शीशे की ओर सङ्केत करके कहा—"और आप कैसे हैं? हमसे मिलने क्यों नहीं आए?"

"मुझे अनुमति ही नहीं मिली। अफ़सर बड़े कठोर थे। पर आज का अफ़सर दयालु है।"

क्रिल्टसोव बोला—दयालु, बेशक ! ज़रा मेरी से तो पूछिए, आज सुबह उसने क्या किया।

मेरी पैवलोटना ने कोने में से सुबह का सारा वृत्तान्त सुनाया कि किस प्रकार पड़ाव से रवाना होते समय नन्हीं लड़की के कारण बाप को मार खानी पडी थी।

वीरा दुखोवा ने निश्चयात्मक स्वर में, पर साथ ही भीत अनिश्चित मुद्रा से इधर-उधर देखते हुए कहा—इसका सङ्गठित विरोध करने की आवश्यकता है। लाडिमिर सायमनसन ने विरोध किया भी, पर उससे क्या होता था।

क्रिल्टसोव ने विषएण भाव से तेवर बदल कर कहा—"तुम किस तरह का विरोध चाहती हो ?" दुखोवा की कृत्रिमता, उद्विग्नता और बनावटी रङ्ग-ढङ्ग से क्रिल्टसोव पहले से चिढ़ा हुआ दिखाई देता था।

उसने निखल्यूडोव से कहा—"आप कटूशा की खोज में हैं क्या ? वह तो दिन भर काम में लगी रही। यह पुरुषों का कमरा उन्होंने ही साफ़ किया है और अब वह स्त्रियों का कमरा साफ़ करने गई हैं। पर इन मक्खियों से पीछा किस तरह छुडाया जाय, ये तो जीता भक्षण कर रही हैं। और वहाँ मेरी क्या कर रही हैं ?" उसने उस कोने की ओर सङ्केत करके, जिसमें मेरी पैवलोटना बैठी थी, पूछा।

रण्टसेवा ने कहा—अपनी धर्म-पुत्री के बाल काढ रही हैं।

क्रिल्टसोव ने कहा—और हमारे ऊपर जुएँ जो चढ जायँगी ?

मेरी पैवलोटना ने कहा—"नहीं जी, मुझे इसका ध्यान

इस मनुष्य के सारे व्यक्तित्व से उसके चाल-ढाल, रङ्ग-ढङ्ग, कण्ठ-स्वर, और मुद्रा से सजीवता और मनोल्लास टपका पड़ता था। दूसरा नवागन्तुक इसके बिलकुल विपरीत था। वह हताश और शोकमग्न दिखाई देता था। ठिगना क़द, चौड़ी हड्डी, गेहुँआ रङ्ग, पतले ओठ, और सुन्दर स्वच्छ विशाल नेत्र, जिनका पारस्परिक अन्तर किञ्चित अधिक था। वह पुराना-धुराना कोट पहने था, पैरों में फुल-बूट और लकड़ी के बूट पहने हुए था, और हाथों में दूध के बर्तन और छाल के बने दो गोल डिब्बे पकड़े हुए था। उसने ये पदार्थ रपटसेवा के सामने रख दिए, और निखल्यूडोव को देख कर केवल तनिक सी गर्दन झुका कर उसका अभिवादन किया, और फिर द्विविधापूर्वक अपना गीला हाथ उसकी ओर बढ़ा दिया। इसके बाद उसने अपने खाद्य-पदार्थ बाहर निकालने शुरू किए।

ये दोनों राजनीतिक क़ैदी जनसाधारण में से थे। पहला नबाटोव नामक एक किसान था, दूसरा मारकेल कोन्ड्राटीप नाम का एक मिल-मज़दूर। मारकेल इन विप्लववादियों में पूरा आदमी बन कर शरीक हुआ था, नबाटोव अठारह साल की उम्र में ही शामिल हो गया था। नबाटोव ने अपनी ग्राम्य-शिक्षा समाप्त करने के बाद अपनी असाधारण योग्यता के कारण हाई-स्कूल में प्रवेश किया। वहाँ वह पढ़ता भी रहा और साथ ही विद्यार्थियों को पढ़ा-पढ़ा कर अपनी जीविकार्जन भी करता रहा। यहाँ उसे सुवर्ण-पदक प्राप्त हुआ। वह यूनीवर्सिटी की शिक्षा के लिए नहीं गया, क्योंकि उसने निश्चय कर लिया कि वह जनता में जाकर अपने दलित बन्धुओं में ज्ञान का प्रचार करेगा। उसने इसका आरम्भ एक

क़स्बे में सरकारी क्लर्क बन कर किया। उसे शीघ्र ही गिरफ़्तार कर लिया गया, क्योंकि वह किसानों को पढ़-पढ़ कर सुनाया करता था और उसने उनका सहकारी-उद्योग-सङ्घ बनाया था। उसे आठ महीने तक क़ैद रक्खा गया और इसके बाद उसे छोड़ दिया गया। पर उसके ऊपर पुलिस की निगाह बराबर बनी रही। मुक्त होते ही वह एक गाँव का स्कूल-मास्टर बन गया और यहाँ भी उसने वही किया जो उसने पहले गाँव में किया था। उसे फिर गिरफ़्तार किया गया और अबकी बार चौदह महीने तक जेल में डाल रक्खा गया। इस बार उसके राजनीतिक सिद्धान्त और भी दृढ़ हो गए।

इसके बाद उसे पर्म प्रान्त को निर्वासित कर दिया गया। यहाँ से वह निकल भागा। इसके बाद उसे सात महीने तक फिर जेल में डाल रक्खा गया और आर्चेंञ्जल को निर्वासित कर दिया गया। उसने फिर निकल भागने की चेष्टा की, पर उसे फिर गिरफ्तार किया गया और अब की बार याकुटस्क प्रान्त को निर्वा-सित कर दिया गया। इस प्रकार वय प्राप्त होने के बाद से उसका आधा जीवन जेलों और निर्वासनों में कटा। ये घटनाएँ उसकी मनोवृत्ति को तिक्त न बनाती थीं। वह भग्न-हृदय होने के स्थान पर उनसे सजीवता प्राप्त करता था। वह बड़ा जिन्दा-दिल युवक था, उसकी पाचन शक्ति ख़ूब तीव्र थी, और उसमें सजीवता, उत्फुल्लता और स्फ़ूर्ति कूट-कूट कर भरी हुई थी। वह किसी बात का पछतावा न करता, कभी भविष्य की बात न सोचता, और अपनी सारी बुद्धिमत्ता और सारे व्यावहारिक ज्ञान का उपयोग वर्तमान की बातों में करता। यदि मुक्त होता तो अपनी उसी

उद्देश-सिद्धि के लिए प्रयत्न करता—श्रमजीवियों और विशेषकर किसानों में ज्ञान-प्रसार करता और उन्हें सङ्गठित करता। यदि जेल मे डाल दिया जाता तो भी बाह्य-संसार के साथ सम्पर्क रखने मे उतना ही सफल और व्यावहारिक बना रहता, और परिस्थिति के अनुरूप अपने और अपने सङ्गी-साथियों के रहन सहन को व्यवस्थित बनाने मे संलग्न रहता। प्रधान बात यह थी कि वह मिलनसार था—सङ्घ का सदस्य था। ऐसा प्रतीत होता था कि वह अपने लिए कुछ नहीं चाहता था और बहुत थोड़े में सन्तुष्ट हो जाता था, पर वह अपने कॉमरेडों के लिए बहुत कुछ चाहता था, और इसके लिए अथक भाव से नींद और भूख की चिन्ता छोड़ कर भौतिक और मानसिक प्रयत्न करता था। किसान की हैसियत से वह परिश्रमी, सूक्ष्मदर्शी और कुशल था, वह आत्मसंयम रखता, बिना किसी प्रयास के विनम्र बना रहता, और दूसरों की इच्छाओं के प्रति ही नहीं, सम्मतियों के प्रति भी ध्यान देता। उसकी विधवा माता—अपढ़, अज्ञानता के अन्धकार में पाली-पोसी गई वृद्धा स्त्री—अभी जीवित थी और जब वह मुक्त होता तो उसके पास भी बीच-बीच में फेरा लगा आता। जब वह घर रहता तो अपनी माँ के समस्त दैनिक कार्यों में भाग लेता, काम-काज में उसका हाथ बँटाता, अपने पुराने लँगोटिया यारों के साथ समय बिताता, उनके साथ बैठ कर कागज़ की बत्ती को कुत्ते के पन्जे के आकार का बना कर चिलम में लगा कर सस्ती तम्बाकू पीता, उनकी घूँसे-बाज़ी में शरीक होता, और उन्हें समझाता कि किस प्रकार सरकार उन्हें धोखा दे रही है, और किस प्रकार उन्हें इस प्रवञ्चना-जाल

को छिन्न-भिन्न कर डालना चाहिए। जब कभी वह भावी विप्लव की बात सोचता या कहता, तो वह जनता की—जिसमें उसका भी जन्म हुआ था—अवस्था में किसी बड़े भारी परिवर्त्तन की कल्पना न करता ; वह उन्हें लगभग वर्तमान अवस्था में ही देखता ; अन्तर केवल इतना ही था कि उस अवस्था में सरकारी अफ़सरों और ज़मींदारों का अभाव होगा और किसानों को ज़मीन की कमी न रहेगी। उसके अनुसार विप्लव को जनसाधारण के रहन-सहन के मौलिक रूपों में किसी प्रकार का परिवर्तन न करना चाहिए, उसे उस विशाल प्रासाद को नष्ट-भ्रष्ट न कर डालना चाहिए ; केवल उस सुदृढ़, सुन्दर, प्राचीन भवन की भीतरी दीवारों में यत्किञ्चित् परिवर्त्तन करने से काम चल जायगा, जिसे वह प्राणों से अधिक चाहता था—और इस मामले में वह नोवोडोरोव और उसके अनुयायी मारकेल कोन्ड्राटीव की सम्मति के विरुद्ध था।

धार्मिक धारणाओं के सम्बन्ध में भी वह पूरा ग्रामीण था। वह पञ्चभूत सम्बन्धी समस्याओं में कभी न पड़ता, सब पदार्थों के मूल-तत्व की बात कभी न सोचता और भावी जीवन के सम्बन्ध में कभी माथा-पच्ची न करता। लाप्लेस* की भाँति उसके निकट

---

* कहा जाता है कि जब लाप्लेस ने नैपोलियन के आगे अपनी 'Mecanique Celeste' नामक रचना पेश की तो नैपोलियन ने कहा—"महाशय लाप्लेस, मैंने सुना है कि आपने यह बृहत् पुस्तक विश्व-व्यवस्था पर लिखी है, पर आपने इसके निर्माता का एक स्थान पर भी ज़िक्र नहीं किया है।" इस पर लाप्लेस ने उत्तर दिया—

भी ईश्वर एक ऐसी विभावना था, जिसकी उसे अभी तक आवश्यकता न पड़ी थी। उसे संसार के आरम्भ से सम्बन्ध रखने वाली समस्याओं से कोई सम्पर्क न था, और उसे इससे कोई प्रयोजन न था कि मूसा की बात ठीक है या डारविन की। डारविनवाद उसके सहयोगियों के लिए बड़ी महत्वपूर्ण वस्तु था, पर उसके लिए यह भी मानसिक क्रीड़ा का उतना ही रोचक पदार्थ था, जितना छः दिन में विश्व-सृजना।

इस समस्या में कि संसार का आरम्भ किस प्रकार हुआ, उसे तनिक रुचि न थी, क्योंकि उसके सामने एक मात्र यही समस्या उपस्थित रहती थी कि इस संसार में अच्छी से अच्छी तरह किस प्रकार रहा जाय। वह भावी जीवन की चिन्ता कभी भूल कर भी न करता था। उसके हृदय में अपने पूर्वजों से प्राप्त हुआ एक गहरा संस्कार मौजूद रहता (और सारे श्रमजीवियों में इसी प्रकार का संस्कार मौजूद रहता है) कि ठीक जिस प्रकार जीव और वनस्पति नित्य पदार्थ हैं, उनका कभी नाश नहीं होता, वे केवल अपना रूप मात्र बदल लेते हैं—घास, दाने का रूप धारण कर लेती है, दाना खाद्य पदार्थ का, मेंढक का बच्चा मेंढक का रूप धारण कर लेता है, और तितली का बच्चा तितली का—इसी प्रकार मनुष्य भी नित्य पदार्थ है, उसका कभी नाश नहीं होता, वह केवल अपना

"श्रीमन्, मुझे इस प्रकार की विभावना की आवश्यकता ही नहीं पड़ी।" उस समय लाप्लेस निरा युवक था, अतः यह सम्भव नहीं मालूम पड़ता कि यह वाक्य उसीने कहा होगा, यद्यपि इस सम्बन्ध में उसका नाम बहुधा लिया जाता है।

रूप बदल लेता है। बस, इसी में वह आस्था रखता था, और फलत. मृत्यु का निर्भीक भाव से सामना करता था, और वीरता-पूर्वक उन सारे कष्टों को सह लेता था, जो उसे उसकी ओर ले जाते थे। उसे उनको बात ज़बान पर लाने की न चिन्ता थी, न वह उनका ज़िक्र करना जानता ही था। उसे काम से रुचि थी और वह किसी न किसी व्यावहारिक कार्य में लगा रहता था, और इससे भी सन्तुष्ट न होकर अपने कॉमरेडों को भी उस ओर प्रवृत्त करता था।

दूसरा राजनीतिक कैदी मारकेल कोन्ड्राटीव भी साधारण जनता में से ही था, पर यह बिलकुल दूसरे ही ढङ्ग का आदमी था। उसने पन्द्रह वर्ष की आयु से काम करना आरम्भ किया। उसके हृदय में अस्पष्ट सी धारणा थी कि उसके साथ अन्याय किया गया है, अत. उस धारणा को दबाने के लिए उसने सिगरेट और शराब पीना आरम्भ कर दिया। अपने ऊपर अन्याय किए जाने का बोध उसे पहली बार तब हुआ जब बड़े दिन के अवसर पर उसके स्वामी की स्त्री ने उन सबको (कारख़ाने में काम करने वाले बच्चों को) बड़े दिन के वृक्ष का निमन्त्रण दिया। इस अवसर पर उसे एक पैसे की सीटी मिली, एक सेब, एक पत्तर चढ़ी, मिठाई और एक अञ्जीर। पर स्वामी के बच्चों को वे भेंटें दी गईं जो इस लोक से सम्बन्ध ही रखती न दिखाई देती थीं, और जिनमें—उसे बाद को पता चला कि—पचास रूबल से अधिक ख़र्च किए गए थे। जब वह तीस वर्ष का हो गया तो उस कारख़ाने में एक प्रसिद्ध विप्लववादिनी महिला श्रमजीवियों की भाँति काम करने आई, और उसने

कोन्ड्राटीव की उत्कृष्ट योग्यता देख कर उसे पुस्तकें और पैम्फलेट पढ़ने को दिए, उसे उसकी अवस्था का बोध कराया और बताया कि उससे वह निस्तार किस प्रकार पा सकेगा। जब कोन्ड्राटीव की समझ में अच्छी तरह आ गया कि इस अनाचार व्यापार से वह अपने आपको और अपने बन्धुओं को मुक्त कर सकता है, तो वर्तमान वस्तु-स्थिति के अन्याय उसे विशेष रूप से खलने और विशेष प्रकार से निष्ठुर प्रतीत होने लगे, और वह केवल स्वतन्त्र ही होने को आतुर हो उठा हो, सो बात न थी। जिन लोगों ने अब तक इस अमानुषिक अनाचार का जाल फैला रक्खा था, उन्हें दण्ड देने की अभिलाषा भी उसके हृदय में बेतरह बलवती हो उठी। उसे बताया गया कि यह सब कुछ ज्ञान के द्वारा ही सम्भव हो सकता है, अतः वह जी-जान से ज्ञान प्राप्त करने में लग गया। यह तो स्पष्ट न था कि ज्ञान के द्वारा समष्टिवाद के आदर्श की सिद्धि किस प्रकार हो सकेगी, पर उसे इस पर अवश्य दृढ़ आस्था थी कि जिस ज्ञान के द्वारा वह उन परिस्थितियों के अनौचित्य और अनाचार का बोध कर सका है, जिनमें अब तक उसका जीवन कटा है, वही ज्ञान स्वयं अनौचित्य और अनाचार का भी नाश कर देगा। इसके अतिरिक्त ज्ञान के द्वारा वह दूसरों की आँखों में उन्नतर हो सकेगा। अतः उसने सिगरेट तथा शराब पीना छोड़ दिया और अपना अवकाश का समय ज्ञान-उपलब्धि में लगाना शुरू कर दिया।

विप्लववादिनी ने उसे पढ़ाना शुरू किया, और उसकी ज्ञान-पिपासा, और उस पिपासा को शान्त करने की असाधारण शक्ति को देख कर वह चकित रह गई। दो साल के अन्दर उसने बीज-

गणित, रेखा-गणित और इतिहास का (जिससे उसे विशेष रुचि थी) पर्याप्त ज्ञान प्राप्त कर लिया, और कविता, गद्य-काव्य और समालोचना साहित्य—सब से अभिज्ञता प्राप्त कर ली, और समष्टिवाद साहित्य का ज्ञान विशेष रूप से प्राप्त किया।

विप्लववादिनी को गिरफ़्तार किया गया, और उसके साथ ही कोन्ड्राटोव को भी, क्योंकि उनके पास वर्जित पुस्तकें पाई गई थीं। दोनों को जेल में डाला गया और फिर वोलोग्डा प्रान्त को निर्वासित कर दिया गया। यहाँ कोन्ड्राटोव ने नोवोडोरोव से परिचय किया, और भी क्रान्तिकारी साहित्य पढ़ा, और इससे उसके समष्टिवाद के सिद्धान्त और भी दृढ़ हो गए। निर्वासन की अवधि समाप्त करने के बाद वह एक हड़ताल का नेता बना, कारख़ाना नष्ट-ध्वस्त कर दिया गया और डायरेक्टर की हत्या कर दी गई। कोन्ड्राटोव को गिरफ्तार करके साइबेरिया को निर्वासित कर दिया गया।

वर्तमान आर्थिक अवस्थाओं के सम्बन्ध में उसके जिस प्रकार के नकारात्मक विचार थे, उसी प्रकार के विचार धर्म के सम्बन्ध में भी थे। जिस धर्म में उसका पालन-पोषण किया गया था, उसकी अनर्गलता देख लेने और उसके जाल से—प्रारम्भ में प्रयास के साथ, पर बाद को हर्षपूर्वक—छुटकारा पाने के बाद से, वह, मानो अपने और पूर्वजों के साथ सदियों से की गई प्रवञ्चना का बदला लेने की प्रवृत्ति से प्रेरित होकर, पुरोहितों और धार्मिक सिद्धान्तों का विपाक्तऔर क्रुद्ध व्यंग्य-उपहास करने से कभी न अघाता था।

वह स्वभाव से ही उदासीन प्रकृति का था, अपनी तुष्टि बहुत थोड़े से कर लेता था, और बचपन से काम करने में अभ्यस्त

अन्य सारे मनुष्यों की नाईं वह भी खूब काम कर सकता था, और किसी भी प्रकार के शारीरिक कार्य को सहज भाव से शीघ्रता-पूर्वक समाप्त कर डालता था। पर जेलों और पड़ावों में प्राप्त हुए अवकाश के समय पर वह जान देता था, क्योंकि ऐसे अवसरों पर वह स्वाध्याय जारी रख सकता था। आजकल वह कार्ल मार्क्स की पहली जिल्द का अध्ययन कर रहा था और उसे अपने थैले में इस प्रकार छिपा कर रखता था मानो वह कोई अमूल्य निधि हो। वह अपने सारे कॉमरेडों से सङ्कोच और उदासीनता का व्यवहार करता। एक नोवोडोरोव अवश्य ऐसा था जिसके प्रति वह विशेष रूप से आकृष्ट था और जिसके सारे तर्कों को वह अकाट्य सत्य मान लिया करता था।

स्त्रियों के प्रति उसके हृदय में अदम्य घृणा थी; उन्हें वह सारी कार्यशीलताओं में बाधा-स्वरूप समझता था। पर वह मसलोवा पर दया करता था और उसके साथ मृदुलता का आचरण करता था, क्योंकि उच्च श्रेणी के लोग निम्न श्रेणी के मनुष्यों का जिस प्रकार दलन-पीड़न और दुरुपयोग करते हैं, वह मसलोवा को उसका एक उदाहरण समझता था। और इसी कारण से वह निखल्यूडोव को अरुचि की दृष्टि से देखता था, अतः वह उससे बहुत कम बातचीत करता, उससे कभी हाथ तक न मिलाता, केवल अपना हाथ उसकी ओर बढ़ा देता, जिसमें वह उसे दबा सके।

ग्नि ख़ूब प्रज्वलित हो उठी थी और चूल्हा भभक रहा था। चाय तैयार हो गई थी, और प्यालों में उलट दी गई थी। उसमें दूध भी मिला दिया गया था, और रोटी, बिस्कुट, मक्खन, अण्डे और बछड़े का सिर—सब भली प्रकार सजा कर कपड़े पर फैला दिए गए थे। चारपाई से मेज का काम लिया गया था और सब वहाँ एकत्र होकर खा-पी और हँस-बोल रहे थे। रण्टसेवा बक्स पर बैठी-बैठी चाय बना रही थी और सब उसके चारों ओर इकट्ठा थे। एक क्रिल्टसोव ऐसा था जो अपने स्थान पर उसी प्रकार पड़ा-पड़ा निखल्यूडोव से बातें कर रहा था। उसने अपना गीला ओवरकोट उतार दिया था और अब वह अपना सूखा कोट लपेटे पड़ा था।

इतनी सर्दी और गीली ज़मीन की यात्रा करने और यहाँ आकर गन्दगी और अव्यवस्था पाने के बाद, चारों ओर स्वच्छता और सफ़ाई करने के बाद, और अन्त में भोजन करने और

गर्म चाय पीने के बाद अब सब विशेष मनोल्लासपूर्ण अवस्था में थे।

दीवार के पीछे से आती हुई साधारण क़ैदियों के पैरों की धम-धमाहट, चीत्कार-ध्वनि और गाली-गलौज की आवाज़, जो उन्हें बार-बार उस वातावरण का ध्यान दिला देती थी, से उनकी विश्राम प्रवृत्ति उलटे और बलवती होती प्रतीत हो रही थी। समुद्र से घिरे द्वीप की तरह यहाँ भी इन्हें थोड़े से समय के लिए पतन और कष्ट परम्परा के वातावरण से बचे रहने की सुखदायिनी अनुभूति हो रही थी। इससे उनकी सजीवता उत्तरोत्तर उद्दीप्त हो रही थी। वे दुनिया भर की बातें करते, पर अपनी वर्तमान अवस्था और अपने भावी रहन-सहन की बात ज़ुबान पर न लाते। जैसा कि युवा पुरुषों और स्त्रियों में—विशेष कर अब उन्हें बलात् एक स्थान पर रख दिया गया हो—हुआ करता है, इनमें भी सहमति और असहमति तथा पारस्परिक अनुराग का विलक्षण मिश्रित व्यापार ज़ोर-शोर से जारी था। लगभग सब किसी न किसी के अनुराग में निमग्न थे। नोवोडोरोव सुस्मित सुन्दरी ग्रबेट्स पर आसक्त था। यह एक कच्ची उम्र की नासमझ लड़की थी, जो पढ़ने-लिखने को घर से निकली थी, और क्रान्ति की बातों की ओर से बिलकुल उदासीन थी; पर तत्कालीन विप्लववाद के प्रभाव में आकर इसने जान-बूझ कर यह विपत्ति अपने सिर पर मोल ली थी, और अब उसे निर्वासन दण्ड दे दिया गया था। अपने अभियोग के विचार, जेल और निर्वासन के सारे समय में उसके जीवन का एक मात्र कार्य-कलाप पुरुष-समाज की अनुराग-

दृष्टि प्राप्त करना भर रहा—ठीक जो अवस्था उसके स्वतन्त्र होने की दशा में थी। अब यात्रा में उसे इस बात से बड़ी सान्त्वना मिलती थी कि नोवोडोरोव उस पर अनुरक्त हो गया था और वह भी उससे प्रेम करने लगी थी। वीरा दुखोवा अपने आप पर अनुरक्त होने को सदैव कटिबद्ध रहती थी, पर इस प्रकार के मनोविकार वह किसी दूसरे के हृदय में उत्पन्न न कर सकती थी—चाहे वह परस्पर प्रेम-व्यापार के लिए कितनी ही लालायित क्यों न रहती हो। वह कभी नवाटोव की ओर खिचती और कभी नोवोडोरोव की ओर। क्रिल्टसोव मेरी पैवलोटना के प्रति प्रेम-जैसे मनोविकारों की अनुभूति करता था। वह उसे पुरुषोचित प्रेम की दृष्टि से देखता था, पर यह जान कर कि वह इस प्रकार के अनुराग को किस दृष्टि से देखती है, वह उसे उसकी सेवा-शुश्रूषा के प्रति कृतज्ञतापन के आवरण में छिपाए रहता। नवाटोव और रणटसेवा का परस्पर सम्बन्ध अत्यन्त जटिल और दुर्बोध्य था। जिस प्रकार मेरी पैवलोटना पूर्ण पवित्र कुमारी थी, उसी प्रकार रणटसेवा साध्वी पतिव्रता स्त्री थी।

अभी वह सोलह बरस की थी, स्कूल ही में पढ़ती थी कि वह रणटसेवा नामक यूनिवर्सिटी के विद्यार्थी के प्रेम में फँस गई और यूनिवर्सिटी की शिक्षा समाप्त करने के पहले ही उन्नीस वर्ष की अवस्था में उसने उससे विवाह कर लिया। यूनिवर्सिटी के शिक्षण के चौथे साल में उसका पति विद्यार्थियों के ही झगड़े-झञ्झट में फँस गया और उसे पीटर्सबर्ग से निर्वासित कर दिया गया, और इसके बाद वह विप्लववादी बन गया। उस ज़माने में

वह डॉक्टरी पढ़ रही थी, वह भी पढ़ना-लिखना छोड़ कर पति के पीछे हो ली और स्वयं भी विप्लववादिनी बन गई। यदि वह अपने पति को सर्वोत्तम और सर्वोत्कृष्ट प्रतिभा-सम्पन्न व्यक्ति न समझती तो उसके प्रेम में न फँसती, और यदि उसके प्रेम में न फँसती तो उससे विवाह न करती। पर उसके प्रेम में फँसने और उसके साथ विवाह करने के बाद अब वह जीवन और उसके लक्ष्यों को स्वभावतया उसी दृष्टिकोण से देखती, जिस दृष्टिकोण से उसका सर्वोत्तम और सर्वोत्कृष्ट प्रतिभा सम्पन्न पति देखता। प्रारम्भ में पति की धारणा थी कि जीवन का लक्ष्य पढ़ना-लिखना है, अत. उसने भी पढ़ने-लिखने में मन लगाया, फिर बाद को वह विप्लववादी बन गया, अत उसने भी वही किया। वह अत्यन्त स्पष्ट रूप से बता सकता था कि वर्तमान अवस्था अधिक दिनों तक जारी न रहेगी, और कि हर एक नागरिक का कर्त्तव्य है कि वह इस अवस्था के साथ सङ्घर्ष करे और उस अवस्था के उत्पन्न करने की चेष्टा करे जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को स्वच्छन्दतापूर्वक आत्मोन्नति करने का अवसर मिल सके। रुसटेवा को भास हुआ कि वह भी वस्तुत इसी प्रकार की अनुभूति और विचार करती है; पर वास्तव में वह उन सारी बातों को चिरन्तन सत्य समझती, जिन्हें उसका पति ठीक समझता, और केवल उसकी आत्मा के साथ अपनी आत्मा की पूर्ण एकरूपता स्थापित करने में मग्न रहती, क्योंकि यही एक ऐसी अवस्था थी जिसके द्वारा उसे पूर्ण नैतिक तुष्टि हो सकती थी।

पति-विछोह बड़ा दारुण रहा (बालक को उसने अपने पास

ही रक्खा), पर वह उसे दृढ़ता और संयम के साथ सहन कर गई। क्योंकि यह सब कुछ उसके पति के लिए था, और ऐसे महत्कार्य के लिए था जिसके अच्छे होने में उसे तनिक भी संशय न था, क्योंकि स्वयं उसका पति उसे कर रहा था। वह कल्पना के द्वारा हर समय अपने पति के पास मौजूद रहती, और उसके लिए इस समय भी किसी दूसरे पुरुष को अनुरागपूर्ण दृष्टि से देखना उतना ही असम्भव था जितना उसकी साक्षात् उपस्थिति में होता। पर नबाटोव के एकान्त और पवित्र प्रेम ने उसे पिघला दिया था और वह उद्विग्न रहती थी। यह सदाचारी, दृढ़ पुरुष, उसके पति का मित्र, उसके साथ भाई जैसा आचरण रखना चाहता था, पर उसके आचरण से कुछ और भी प्रकट होता था और इससे दोनों भयभीत हुए रहते थे, पर साथ इससे उनके कष्टमय जीवन को एक प्रकार की सरसता प्राप्त हो गई थी।

इस प्रकार इस राजनीतिक वर्ग में केवल मेरी पैवलोटना और कोन्ड्राटोव ही ऐसे व्यक्ति थे, जो सब प्रकार के प्रेम-व्यापारों से निर्लेप थे।
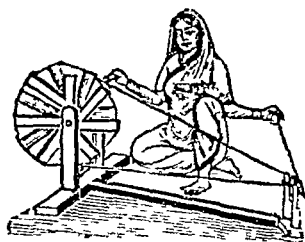
य पीने के बाद नटूशा के साथ एकान्त वार्तालाप का अवसर पाने की आशा में निख्ल्यूदोव क्रिल्टसोव के पास बैठा-बैठा बातें करता रहा। बातों के सिलसिले में निख्ल्यूदोव ने क्रिल्टसोव को यह भी बताया कि किस प्रकार अपराधी करमानोव ने एक निर्वासन दण्ड प्राप्त युवक को—जो उसकी सूरत-शक्ल से मिलता-जुलता था—नाम परिवर्तन करने को राज़ी कर लिया था, जिससे वह उसके बजाय निर्वासन स्थान को जा सके और युवक उसके स्थान पर नमक की खानें खोदने चला जाय। क्रिल्टसोव मनोयोगपूर्वक सुनता और निख्ल्यूदोव की ओर जलते हुए नेत्रों से देखता रहा।

वह सहसा बोल उठा—हाँ, कभी-कभी मैं सोचता हूँ कि जिन लोगों के लिए हम यह सब कर रहे हैं वे हमारे साथ ही चल रहे हैं। और ये कौन हैं? यही लोग, जिनकी ख़ातिर हमें ले जाया जा रहा है, और तिस पर भी उन्हें जानना तो एक ओर, हम उन्हें

जानने की चेष्टा तक नहीं करते। और वे इससे भी गए बीते हैं। वे हमें घृणा की दृष्टि से देखते हैं और हमें अपना शत्रु समझते हैं। कितनी भयङ्कर बात है!

नोवोडोरोव ने बातचीत सुन कर दूर से कहा—इसमें भयङ्कर होने की क्या बात है? जनता शक्ति की—और केवल शक्ति की पूजा करती है। आज सरकार के हाथ में शक्ति है, और वे सरकार की पूजा करते हैं और हमें घृणा की दृष्टि से देखते हैं। कल शक्ति हमारे हाथ में आ जायगी और वे हमारी पूजा करने लगेंगे।

इसी समय दीवार के पीछे से ज़ञ्जीरों की झनझनाहट और गाली-गलौज की आवाज़ सुनाई दी। दीवार पर किसी पदार्थ का थपाका हुआ और फिर चीख़-चिल्लाहट सुनाई दी। किसी को पीटा जा रहा था और कोई चिल्ला रहा था—ख़ून! दौड़ो!

नोवोडोरोव ने शान्त भाव से कहा—देखिए न, हैवान क्या कर रहे हैं! हमारा इन जैसे लोगों के साथ क्या सम्बन्ध हो सकता है?

क्रिल्टसोव ने चिढ़ कर कहा—"आप उन्हें हैवान कहते हैं, और निख़ल्यूडोव अभी-अभी मुझे एक वृत्तान्त सुना रहे थे।" और उसने बताया कि किस प्रकार मेकर नामक एक गाँव वाले क़ैदी ने अपनी जान जोखिम में डाल कर निख़ल्यूडोव को इस नाम-विनिमय की सूचना दी थी—"यह हैवानों का काम नहीं है, यह वीरता है।"

नोवोडोरोव ने नाक-भौं चढ़ा कर कहा—भावुकता! इन लोगों के हृदयों में किस प्रकार के भाव काम करते रहते हैं, और

वे किस प्रकार के उद्देश्य से प्रेरित होकर कार्य करते हैं, यह हमारी समझ से बाहर की बात है। आपको उसके इस कार्य में उदाराशयता दिखाई देती है, पर यह भी तो सम्भव है कि उसने उस अपराधी ने डाह के कारण सूचना दे दी हो।

सहसा मेरी पैंक्लोटना बिगड़ पड़ी—मेरी समझ में नहीं आता कि आपको किसी दूसरे में किसी प्रकार की अच्छाई क्यों नहीं दिखाई देती?

"पर यदि अच्छाई हो ही नहीं तो दिखाई कैसे दे?"

"जब आदमी अपनी जान हथेली पर रख कर यह सूचना देता है तो निश्चय ही उसमें अच्छाई है।"

नोवोडोरोव बोला—"मेरी समझ में तो यदि हमें संसार में कुछ काम करना है तो उसकी पहली शर्त यह है कि"—(इस अवसर पर कोन्द्राटोव ने लैम्प के आगे अपना स्वाध्याय बन्द करके अपने शिक्षक के उपदेश की ओर मन लगाया)—"हमें दिखावे में कभी न आना चाहिए, बल्कि वस्तु-स्थिति के उसके वास्तविक रूप में दर्शन करने चाहिए। हमें जनता के मङ्गल के लिए भरसक प्रयत्न करना चाहिए और उसके एवज की बिलकुल आशा न रखनी चाहिए। जब तक जनता वर्तमान निष्क्रिय अवस्था में रहेगी, तब तक वह हमारी कार्यशीलता का लक्ष्य मात्र रहेगी, हमारे काम में हाथ किसी प्रकार न बटा सकेगी।" उसने कहना जारी रक्खा, मानो वह कोई व्याख्यान दे रहा हो—"अतएव जब उन्नति-कार्य के घटित हुए बिना जिसके लिए हम सतत उद्योग कर रहे हैं उनसे किसी प्रकार की सहायता की आशा रखना भ्रामक है।"

क्रिल्टसोव ने उत्तेजित होकर कहा—कैसा उन्नति-कार्य? हम गला फाड़ कर चिल्लाते हैं कि हम निरङ्कुश शासन के विरुद्ध हैं; पर यह नितान्त भयङ्कर निरङ्कुशता नहीं तो क्या है?

नोवोडोरोव ने शान्त भाव से कहा—निरङ्कुशता का नाम तक नहीं है। मैं तो केवल इतना कह रहा हूँ कि मैं उस पथ को जानता हूँ जिस पर जनता को यात्रा करना होगा, और मैं उन्हें वह पथ दिखा सकता हूँ।

"पर यह आपने कैसे जान लिया कि वह पथ निर्भ्रान्त है। मेरे ख़याल से तो इसकी जड़ में भी उस निरङ्कुशता के अणु छिपे हुए हैं, जिसके द्वारा ईसाई धर्म के विरुद्ध विचार रखने वालों का पीड़न किया गया था और जिसके द्वारा फ्रेञ्च विप्लव का दारुण कष्ट-व्यापार घटित हुआ था। वे भी विज्ञान के द्वारा एक निर्भ्रान्त सत्य जानने की बात कहते थे।"

"यदि उन्होंने ग़लती की तो इससे यह कहाँ साबित हुआ कि मैं भी ग़लती करूँगा? इसके अतिरिक्त शून्य-आदर्शवादियों की उड़ान और निर्भ्रान्त अर्थ-विज्ञान की भित्ति पर अवस्थित वस्तु-स्थिति में आकाश-पाताल का अन्तर है।"

नोवोडोरोव का कण्ठ-स्वर कमरे में गूँज रहा था। एक वही बोल रहा था, और सब चुप थे।

जब क्षण भर के लिए शान्ति हुई तो मेरी पेवलोवना ने कहा—इनमें हरदम बहस छिड़ी रहती है।

निखल्यूडोव ने उससे पूछा—और आपकी इसमें क्या सम्मति है?

"मेरी समझ में तो क्रिल्टसोव की बात ठीक है कि हमें अपने विचार लोगों के गले में ज़बरदस्ती न ठूँसने चाहिए ।"

निखल्यूदोव ने मुस्करा कर कट्यूशा से पूछा—"और तुम, कट्यूशा ?" वह उसके उत्तर की उत्कण्ठापूर्वक प्रतीक्षा करने लगा, पर साथ ही उसे आशङ्का थी कि वह कहीं कोई भोंडी बात न कह बैठे ।

कट्यूशा ने कहा—"मेरी समझ में तो रय्यत पर अत्याचार किया जा रहा है ।" और उसका चेहरा लज्जा से लाल हो उठा—"मेरी समझ में उन पर घोर अत्याचार किया जा रहा है ।"

नवाटोव ज़ोर से कह उठा—ठीक, मसलोवा, सोलह आने ठीक । रय्यत पर घोर अत्याचार किया जा रहा है, और यह अत्याचार बन्द होना चाहिए ; बस यही हमारा महाकार्य है ।

नोवोड्वोरोव ने क्षुब्ध भाव से कहा—"यह तो क्रान्ति का बड़ा विचित्र उद्देश्य है ।" और वह चुपचाप सिगरेट पीने लगा ।

क्रिल्टसोव ने फुसफुसा कर कहा—"मैं इससे बातचीत नहीं कर सकता ।" और वह चुप हो गया ।

निखल्यूदोव ने कहा—न करना ही अच्छा है ।

बारहवाँ परिच्छेद

यद्यपि नोवोडोरोव को सारे क्रान्तिकारी आदर-भक्ति की दृष्टि से देखते थे, और यद्यपि वह विद्वान था और अपने आपको बडा बुद्धिमान् समझता था, तथापि निखल्यूदोव उसे उन लोगों में से समझता था जो क्रान्तिकारी होते हुए भी साधारण नैतिक स्थान से वहुत नीचे गिरे हुए थे। उसकी बौद्धिक शक्ति निश्चय ही वड़ी थी, पर उसने अपने सम्बन्ध में जो सम्मति निर्धारित कर रक्खी थी वह उससे कहीं अधिक वड़ी थी और उसकी बौद्धिक शक्ति से कही आगे जा पहुँची थी।

वह सायमनसन की प्रकृति से विलकुल विरुद्ध प्रकृति का आदमी था। सायमनसन उनमें से था जिनमें पुरुपोचित अणु विशेष रूप से विद्यमान रहते हैं और जिनके कार्य बुद्धि-विवेक के द्वारा निश्चित तथा निर्धारित किए जाते हैं। इसके विपरीत नोवोडोरोव उन लोगों में से था जिनमें स्त्रियोचित अणु विशेष रूप से विद्यमान रहते हैं, और जिनका बुद्धि-विवेक अंशतः उन लक्ष्यों की सिद्धि में सन्नद्ध रहता है जिन्हें उनके भाव स्थिर करते हैं, और अंशतः उन भावों द्वारा प्रेरित कार्यों के प्रतिपादन में।

यदि नोवोडोरोव से पूछा जाता कि उसका क्रान्तिकारी कार्य-कलाप किस प्रकार का है, तो शायद वह उसका अत्यन्त ओजस्वितापूर्वक और अत्यन्त प्रभावोत्पादक ढङ्ग से वर्णन करता, पर निखल्यूडोव को उसका सारा राजनीतिक कार्य-कलाप महत्वाकांक्षा और दूसरों पर सिक्का जमाए रखने की अभिलाषा की नींव पर स्थित दिखाई दिया। शुरू-शुरू में स्कूल और यूनिवर्सिटी में विद्यार्थियों और शिक्षकों में उसने दूसरों के विचारों को जानने और उन्हें ठीक-ठीक रूप में व्यक्त करने की शक्ति द्वारा एक विशेष सम्मान प्राप्त कर लिया था, क्योंकि इन संस्थाओं में इन विशेषताओं का बड़ा मूल्य समझा जाता था। यहाँ तक तो वह सन्तुष्ट रहा। पर जब उसने अध्ययन समाप्त किया और उसे डिप्लोमा मिल गया और उसके इस प्रभुत्व का अन्त हो गया तो उसने एक दूसरे वर्ग में प्रभुत्व स्थापित करने के लिए (कम से कम क्रिल्टसोव यही कहता था) सहसा अपने विचारों में परिवर्तन कर दिया और वह मॉडरेट लिबरल के स्थान पर नारो डोवोल्स्टोव का घोर अनुयायी बन गया।

उसमें वे नैतिक और ललित गुण तो थे नहीं, जो संशयों और द्विविधाओं को जन्म देते हैं, अत: उसने विप्लववादी समाज में शीघ्र ही वह स्थान प्राप्त कर लिया जिससे वह सन्तुष्ट हो गया—अर्थात वह एक दल का मुखिया बन गया। जब वह एक मार्ग ग्रहण कर लेता था तो फिर कभी संशय-सन्देह न करता था, और फलतः उसे निश्चय रहता था कि उसके द्वारा किसी प्रकार की भूल होना सम्भव ही नहीं है। उसे सब कुछ नितान्त सहज, स्पष्ट और निश्चित दिखाई

देता था। और उसके दृष्टिकोण की सङ्कीर्णता और एकपक्षता की बदौलत सचमुच सब कुछ स्पष्ट और सहज हो जाता था। उसके कथनानुसार आदमी को तर्क-विहित होने भर की आवश्यकता है, और बस, सारा काम सिद्ध है। उसका आत्म-विश्वास इतना प्रबल था कि या तो उससे लोगों को अरुचि हो जाती थी, या वे उसके आगे माथा झुका देते थे। उसकी कार्यशीलता का क्षेत्र नवयुवक-वर्ग था, और वे उसके असीम आत्म-विश्वास को गहनता और बुद्धिमत्ता समझ बैठते थे। अतः अधिकांश उसके आगे चुपचाप आत्म-समर्पण कर देते थे और इस प्रकार विप्लववादी समाज में उसकी बड़ी धाक रहती थी। उसकी कार्यशीलता का लक्ष्य एक ऐसी सामूहिक क्रान्ति उत्पन्न करना था जिसमें वह सारी सत्ता हड़प कर सके और एक नई कौन्सिल का सङ्गठन कर सके। उसकी बनाई गई एक नवीन शासन-व्यवस्था कौन्सिल के सामने पेश की जाने को थी, और उसे एकान्त विश्वास था कि इस व्यवस्था से समस्त व्याधियों का अन्त हो जायगा, और कौन्सिल उसे निश्चय ही पास कर देगी।

उसके सहयोगी उसका आदर तो करते थे, पर उससे प्रेम न करते थे। वह स्वयं किसी से प्रेम न करता था, और सारे योग्य व्यक्तियों को अपना प्रतिद्वन्द्वी समझता था। यदि उसका बस चलता तो वह हँसी-ख़ुशी उनके साथ ठीक वैसा ही आचरण करता जैसा वयस्क बन्दर थोड़ी उम्र के बन्दरों के साथ किया करते हैं। वह दूसरे लोगों की सारी बौद्धिक शक्तियों और सारी योग्यताओं को नोच कर फेंक देता जिससे वह अपनी प्रतिभा का अबाध प्रसार

कर सके। वह केवल उन्हीं लोगों के साथ अच्छा आचरण करता जो उसके आगे सिर झुकाते। अब इस यात्रा में वह कोरचागीव (जिस पर उसके प्रचार का असाधारण प्रभाव पड़ा था) के साथ और वीरा दुखोवा तथा नन्हीं सी सुन्दर ग्रेबेट्स (जो उस पर रीझी हुई थी) के साथ बड़ा अच्छा आचरण करता। यद्यपि सिद्धान्त रूप से वह महिला-आन्दोलन का समर्थक था, पर मन ही मन वह उन स्त्रियों को छोड़ कर जिनसे वह हृदय से प्रेम करता (और अब वह ग्रेबेट्स पर आसक्त था) और बाकी सारी स्त्रियों को मूर्ख और तुच्छ समझता। इन स्त्रियों को वह असाधारण समझता और उनकी विशेषताओं की तह तक पहुँचने में एकमात्र अपने आपको ही समर्थ समझता।

स्त्री-पुरुष सम्पर्क सम्बन्धी समस्या का निबटारा उसने बड़े सहज भाव से कर डाला था—अर्थात् उनमें स्वच्छन्द सम्पर्क स्थापित किया जाय और इसके अनुरूप वह आचरण भी करता था।

उसके एक नाममात्र की स्त्री थी, और एक वास्तविक स्त्री, और अब वह उन दोनों से असम्पृक्त हो गया था क्योंकि अब उसे भास होने लगा था कि उनमें पारस्परिक प्रेम का अभाव है। अब वह ग्रेबेट्स के साथ स्वच्छन्द सम्पर्क स्थापित करने का विचार कर रहा था। वह निखल्यूदोव को तिरस्कार की दृष्टि से देखता था, क्योंकि—उसके शब्दों में—वह मसलोवा को लेकर 'उल्लू-बसन्त' का आचरण कर रहा था। पर उसे तिरस्कार की दृष्टि से देखने का एक प्रधान कारण था, और वह यह कि निखल्यूदोव वर्तमान दूषणों के सम्बन्ध में सम्मति निर्धारित करने में और उनका सुधार करने

के उपायों का अवलम्बन करने में जिस स्वतन्त्रता से काम लेता वे नोवोडोरोव के दृष्टिकोण के अनुरूप तो थे ही नहीं, वे सोलह आने उसी के (निखल्यूडोव के)—अर्थात् 'उल्लू बसन्त' के— दृष्टिकोण के अनुरूप थे। निखल्यूडोव जानता था कि उसके प्रति नोवोडोरोव के हृदय में क्या भाव हैं, और यात्रा भर में उसे जो एकरूपता और सहृदयता की अनुभूति होती रही, उसके होते हुए भी वह इस क्रान्तिकारी को उसीके सिक्के में दाम चुकाने को विवश हो जाता। उसे क्षोभ होता, पर तो भी वह उसके प्रति अपने हृदय की प्रबल घृणा और अरुचि को न दबा सकता।

सरे कमरे से अफसरों का कण्ठ-स्वर सुनाई पड़ने लगा। सारे कैदी शान्त हो गए, और इसके बाद सैनिकों के साथ सर्जेण्ट ने पदार्पण किया। मुआयने का समय आ पहुँचा था। सर्जेण्ट ने सबकी गणना की, और जब निखल्यूडोव की बारी आई तो उसने सहृदयतापूर्ण वशिष्टता के साथ कहा—प्रिन्स, मुआयने के बाद आप यहाँ न ठहर सकेंगे—अब आप जाइए।

निखल्यूडोव जानता था कि इसका क्या अर्थ है; वह सर्जेण्ट के पास पहुँचा, और उसके हाथ में तीन रूबल का नोट पकड़ा दिया।

"अच्छी बात है; आपके साथ कुछ बस भी तो नहीं चलता। ऐसी ही इच्छा है तो और थोड़ी देर ठहर जाइए।"—इतना कह कर सर्जेण्ट जाने लगा, पर इसी क्षण एक और सर्जेण्ट एक क़ैदी को लेकर आ पहुँचा। उस क़ैदी के छोटी सी दाढ़ी थी, और उसकी आँख के नीचे आघात का चिन्ह था।

क़ैदी ने कहा—मैं लौंडिया को लेने आया हूँ।

एक बालक का गूँजता हुआ कण्ठ-स्वर सुनाई पड़ा—"बापू, आ गए!" और साथ ही रण्टसेवा की गोद से एक झब्बेदार नन्हा सा सिर निकल आया। रण्टसेवा, कटूशा और मेरी पैवलोटना की सहायता से अपना पेटीकोट काट-छाँट कर लड़की की घँघरी तैयार कर रही थी।

क़ैदी बुज़ोवकिन ने स्नेहप्लुत स्वर में कहा—हाँ, बेटी, मैं आ गया।

मेरी पैवलोटना ने बुज़ोवकिन के क्षत-विक्षत चेहरे की ओर करुणा भाव से देखते हुए कहा—यहाँ यह मौज में है। इसे यहीं छोड़ जाओ।

"बापू, ये तो मुझे नए-नए कपड़े बना रही हैं।"—लड़की ने रण्टसेवा के सीने-पिरोने की ओर सङ्केत करके कहा—"अच्छे-अच्छे, लाल-लाल!"—उसने बातें बनाते-बनाते कहा।

रण्टसेवा ने बच्ची का आलिङ्गन करके कहा—तू हमारे ही पास सोएगी न?

"हाँ। और बापू भी?"

रण्टसेवा का चेहरा मुस्कराहट से खिल उठा। उसने कहा—"नहीं बापू नहीं।" और फिर पिता की ओर घूम कर कहा—अच्छी बात है, यह हमारे ही पास रहेगी।

पहले सर्जेण्ट ने कहा—"हाँ, इसे यहीं छोड़ जाओ।" और वह दूसरे सर्जेण्ट के साथ बाहर चला गया।

उनके कमरे से बाहर कदम रखते ही नबाटोव बुज़ोवकिन के

सरे कमरे से अफ़सरों का कण्ठ-स्वर सुनाई पड़ने लगा। सारे कैदी शान्त हो गए, और इसके बाद सैनिकों के साथ सर्जेण्ट ने पदार्पण किया। मुआयने का समय आ पहुँचा था। सर्जेण्ट ने सबकी गणना की, और जब निख्ल्यूडोव की बारी आई तो उसने सहृदयतापूर्ण घनिष्टता के साथ कहा—

प्रिन्स, मुआयने के बाद आप यहाँ न ठहर सकेंगे—अब आप जाइए।

निख्ल्यूडोव जानता था कि इसका क्या अर्थ है; वह सर्जेण्ट के पास पहुँचा, और उसके हाथ में तीन रूबल का नोट पकड़ा दिया।

"अच्छी बात है; आपके साथ कुछ बस भी तो नहीं चलता। ऐसी ही इच्छा है तो और थोड़ी देर ठहर जाइए।"—इतना कह कर सर्जेण्ट जाने लगा, पर इसी क्षण एक और सर्जेण्ट एक क़ैदी को लेकर आ पहुँचा। उस क़ैदी के छोटी सी दाढ़ी थी, और उसकी आँख के नीचे आघात का चिन्ह था।

क़ैदी ने कहा—मैं लौंडिया को लेने आया हूँ।

एक बालक का गूँजता हुआ कण्ठ-स्वर सुनाई पड़ा—"बापू आ गए!" और साथ ही रण्टसेवा की गोद से एक झब्बेदार नन्हा सा सिर निकल आया। रण्टसेवा, कट्रशा और मेरी पैवलोटना की सहायता से अपना पेटीकोट काट-छाँट कर लड़की की घँघरी तैयार कर रही थी।

कैदी वुज़ोवकिन ने स्नेहप्लुत स्वर में कहा—हाँ, बेटी, मैं आ गया।

मेरी पैवलोटना ने वुज़ोवकिन के क्षत-विक्षत चेहरे की ओर करुणा भाव से देखते हुए कहा—यहाँ यह मौज में है। इसे यहीं छोड़ जाओ।

"बापू, ये तो मुझे नए-नए कपड़े बना रही हैं।"—लड़की ने रण्टसेवा के सीने-पिरोने की ओर सङ्केत करके कहा—"अच्छे-अच्छे, लाल-लाल!"—उसने बातें बनाते-बनाते कहा।

रण्टसेवा ने बच्ची का आलिङ्गन करके कहा—तू हमारे ही पास सोएगी न?

"हाँ। और बापू भी?"

रण्टसेवा का चेहरा मुस्कराहट से खिल उठा। उसने कहा—"नहीं बापू नहीं।" और फिर पिता की ओर घूम कर कहा—अच्छी बात है, यह हमारे ही पास रहेगी।

पहले सर्जेण्ट ने कहा—"हाँ, इसे यहीं छोड़ जाओ।" और वह दूसरे सर्जेण्ट के साथ बाहर चला गया।

उनके कमरे से बाहर क़दम रखते ही नबाटोव वुज़ोवकिन के

पास पहुँचा और उसका कन्धा थपथपा कर बोला—हाँ, तो दोस्त, क्या सचमुच करमानोव नाम बदलना चाहता है?

बुज़ोवकिन का मृदुल, सहृदय चेहरा सहसा विषादपूर्ण हो उठा, और उसके नेत्रों पर एक धुँधला पर्दा सा छा गया। उसने धीमे स्वर में कहा—"अजी, हमें कुछ पता नहीं।" और उसी आवरण के साथ वह अपनी लड़की की ओर मुड़ा और बोला—"अक्सुटका, मालकिनों के पास सीधी-सादी बनी रहना; दंगा मत करना।" और इसके बाद वह शीघ्रतापूर्वक बाहर निकल गया।

नवाटोव ने कहा—यह नाम बदलने की बात बिल्कुल ठीक है और यह अच्छी तरह जानता है। आपका क्या करने का इरादा है?

निखल्यूदोव ने कहा—मैं आगे के पड़ाव पर चल कर अधिकारियों से कहूँगा। मैं दोनों क़ैदियों को पहचानता हूँ।

सब चुप थे और सब को आशङ्का थी कि नए सिरे से बहस न छिड़ जाय।

सायमनसन अब तक अपनी बाँह का तकिया लगाए चुपचाप लेटा हुआ था। अब वह उठा और सावधानतापूर्वक बीच में बैठे हुए आदमियों को पार कर निश्चयात्मक भाव से निखल्यूदोव के पास पहुँचा।

"क्या आप अब मेरी बात सुन सकेंगे?"

"अवश्य।" और निखल्यूदोव ने उठ कर उसके पीछे हो लिया।

कटूशा ने विस्मित भाव से निगाह उठा कर देखा, और निखल्यूदोव की निगाह से निगाह मिलते ही वह लजा गई और उसने अपना सिर हिलाया मानो वह अस्त-व्यस्त हो।

बाहर आने पर सायमनसन ने कहना आरम्भ किया—"मैं आपसे जो कुछ कहना चाहता था वह यह है।" यहाँ अपराधियों का शोर-गुल और भी अधिक सुनाई दे रहा था। निखल्यूडोव ने मुँह बनाया, पर सायमनसन ने इस पर तनिक भी क्षोभ प्रकट न किया। "मैं अपना कर्त्तव्य...।" पर उसे विवश होकर रुकना पड़ा, क्योंकि इसी समय दरवाजे के पास ही दो अपराधी क़ैदी लड़ने-झगड़ने और शोर-गुल मचाने लगे थे।

एक आवाज़ ने कहा—अबे बौदम, मेरे नहीं थे, वह तो दिया।

दूसरी आवाज़ चिल्ला उठी—शैतान का बच्चा, तेरी साँस रुक जाय।

इसी समय मेरी पैवलोटना भी बाहर निकल आई। उसने कहा—"यहाँ बातचीत कैसे हो सकती है। उस कमरे में ठीक रहेगा; जहाँ वीरा अकेली है।" और वह दूसरे दरवाज़े के पास पहुँची। यह छोटा सा कमरा था, शायद एकान्त कारावास के लिए बनाया गया था, पर अब राजनीतिक स्त्री क़ैदियों को दे दिया गया था। वीरा दुखोवा सिर से पैर तक ओढ़े पड़ी थी।

मेरी पैवलोटना ने कहा—बेचारी के सिर में दर्द है, सोई पड़ी है, कोई बात न सुनेगी; मैं भी चली।

सायमनसन ने कहा—नहीं, तुम यहीं ठहरो। मैं किसी से कोई बात छिपा कर नहीं रखता, और तुमसे तो और भी कम छिपाऊँगा।

"अच्छी बात है।"—मेरी पैवलोटना ने कहा और इसके बाद वह बालकों की नाईं अपना शरीर इधर से उधर हिलाती हुई

चारपाई के पैताने जा बैठी और अपने विशाल नेत्रों से किसी दूरस्थ पदार्थ की ओर देखती हुई उनकी बात सुनने लगी।

सायमनसन ने कहना आरम्भ किया—तो मुझे जो कुछ कहना है वह यह है। कट्टशा मसलोवा के साथ आपका जिस प्रकार का सम्पर्क है उसको देखते हुए मैं उसके साथ अपने सम्पर्क की बात आपको बताना अपना कर्त्तव्य समझता हूँ।

सायमनसन ने निखल्यूडोव से बात करने में जिस स्पष्टवादिता और सरलता से काम लिया, निखल्यूडोव उसकी प्रशंसा किए बिना न रह सका।

"मैं आपका मतलब नहीं समझता।"—उसने कहा।

"मेरा मतलब यह है कि मैं कट्टशा मसलोवा से विवाह करना चाहता हूँ।"

मेरी पैवलोटना ने सायमनसन की ओर घूरते हुए कहा—कितनी विलक्षण बात है!

सायमनसन ने कहना जारी रक्खा—इसलिए मैंने उससे अपनी स्त्री बनने की बात कहने का निश्चय कर लिया है।

निखल्यूडोव ने कहा—तो फिर मैं इसमें क्या कर सकता हूँ? यह उसीके हाथ में है।

"ठीक, मगर वह आपके बिना किसी प्रकार का निश्चय नहीं कर सकती।"

"क्यों?"

"क्योंकि जब तक उसके साथ आपका सम्पर्क अनिश्चित है, तब तक वह किसी प्रकार का निश्चय नहीं कर सकती।"

"जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, सब कुछ निश्चित है। मैं वही करना चाहता हूँ जिसे मै अपना कर्त्तव्य समझता हूँ; और साथ ही उसके विपत्ति-भार को भी हलका करना चाहता हूँ। पर मैं उसे किसी प्रकार के बन्धन में नहीं रखना चाहता।"

"ठीक, पर वह आपका त्याग ग्रहण नहीं करना चाहती।"

"कुछ त्याग भी हो।"

"और मैं जानता हूँ कि उसका यह सङ्कल्प अटल है।"

"तो फिर, मुझसे इसका ज़िक्र करने की कोई आवश्यकता न थी।"

"वह चाहती है कि आप इस बात को स्वीकार कर लें कि जो उसका विचार है वही आपका भी है।"

"मैं यह किस तरह स्वीकार कर सकता हूँ कि जिस काम को मैं अपना कर्त्तव्य समझता हूँ उससे मैं पराङ्मुख रहूँ? मैं केवल इतना ही कह सकता हूँ कि मैं स्वच्छन्द नहीं हूँ और वह स्वच्छन्द है।"

सायमनसन कुछ क्षण के लिए चुप रहा; फिर बोला—अच्छी बात है; मैं ही कह दूँगा। आपको यह न समझना चाहिए कि मैं उस पर मोहित हो गया हूँ। वह एक विलक्षण, उत्कृष्ट जीव है, जिसने बहुत से कष्ट झेले हैं, और इसीलिए मैं उसे प्रेम करता हूँ। मैं उससे कुछ नहीं चाहता। मैं केवल उसके विपत्ति-भार को हलका करना चाहता हूँ; यही मेरी अभि......

निखल्यूडोव सायमनसन के कण्ठ-स्वर में कम्प देख कर चकित रह गया।

सायमनसन ने फिर कहना आरम्भ किया—"लापा है। यदि वह आपकी सहायता ग्रहण नहीं करना चाहती, तो मेरी सहायता ग्रहण करे। यदि वह राज़ी हो गई तो मैं अपने आपको ऐसे स्थान में ले जाए जाने की प्रार्थना करूँगा जहाँ उसे ले जाया जायगा। चार वर्ष कोई अनन्त काल तो है नहीं। मैं उसके पास बना रहूँगा, और सम्भव है, उसके विपत्ति-भार को हलका करने में समर्थ हो सकूँ..... " और वह फिर रुक गया; भावावेश के कारण और अधिक कुछ न कह सका।

निखल्यूडोव ने कहा—मुझे क्या कहना-सुनना है? मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि उसे आपके जैसा रक्षक मिल सका ..।

सायमनसन ने बात काट कर कहा—मैं केवल इतना ही जानना चाहता हूँ कि जब आप उसे इतना प्रेम करते हैं, और उसके कल्याण के लिए इतने लालायित रहते हैं तो क्या आप मेरे साथ उसके विवाह को अच्छा न समझेंगे?

निखल्यूडोव ने कहा—निश्चय ही।

"यह सब उसी पर निर्भर है। मैं केवल इतना चाहता हूँ कि इस कष्टित प्राणी को कुछ विश्राम मिल सके।"—सायमनसन ने ऐसी शिशु-सुलभ कोमलता के साथ कहा जो उसके जैसे विपण्ण दिखाई पड़ने वाले प्राणी के लिए विचित्र सी बात थी।

सायमनसन उठा, निखल्यूडोव के पास पहुँचा, सलज्ज भाव से मुस्कराया और उसका चुम्बन किया।

"तो मैं उससे कहे देता हूँ।"—और वह चला गया।

चौदहवाँ परिच्छेद

मेरी पैवलोटना ने पूछा—"कहिए, आपकी क्या धारणा है? प्रेम में निमग्न—सिर से पैर तक प्रेम मे निमग्न! यह तो एक ऐसी बात हो गई जिसकी मुझे लाटियर सायमनसन से स्वप्न में भी आशा न थी—कि उनके जैसा पुरुष किसी के प्रेम में निमग्न हो जायगा, और सो भी बिलकुल अल्हड़ छोकरों की भाँति! कितनी विचित्र बात है, और यदि आप सच पूछें तो कितनी खेदजनक बात है!" और उसने लम्बी साँस ली।

निखल्यूडोव ने पूछा—पर वह—कटूशा? वह उस मामले को किस दृष्टि से देखती है?

"वह?" मेरी पैवलोटना—प्रश्न का यथासम्भव ठीक-ठीक उत्तर देने की इच्छा से—कुछ रुकी, और फिर बोली—"वह? देखिए न, उसका अतीत चाहे कुछ रहा हो, वैसे उसकी प्रकृति बड़ी ही सदाचारपूर्ण है—और उसके भाव कितने उत्कृष्ट है! वह आपसे प्रेम करती है, और ठीक ठीक प्रेम करती है, और उसे प्रसन्नता है कि वह आपको अपने साथ न बाँधने का नकारात्मक उपकार

कर सकी। आपके साथ विवाह करना उसके लिए घोर पतन का कारण होता, उसके अतीत से भी भयङ्कर, अत. वह इसके लिए कभी सहमत नहीं हो सकती। पर तो भी आपकी उपस्थित से यह उद्विग्न हो उठती है।"

"तो फिर मैं क्या करूँ—अदृश्य हो जाऊँ ?"

मेरी मृदुल शिशु-सुलभ ढङ्ग से मुस्कराई और बोली—हाँ, अंशत·।

"कोई अंशत· अदृश्य किस प्रकार हो सकता है ?"

"मै तो बौरङ्गी बाते कर रही हूँ। पर जहाँ तक उसका सम्बन्ध है, मैं आपको बता देना चाहती हूँ कि शायद वह सायमनसन के हर्षातिरेकपूर्ण प्रेम के बौरङ्गेपन से अवगत है—अभी तक उन्होंने उसे बताया नहीं है—और इसमें वह अपना बडप्पन भी समझती है और साथ ही भयभीत भी होती है। वैसे मैं इस प्रकार के मामलों में किसी प्रकार की सम्मति प्रकट करने के अयोग्य हूँ; फिर भी विश्वास है कि सायमनसन के भावों में और साधारण से साधारण मनुष्य के भावों में कुछ अन्तर नहीं है, यद्यपि उन्होंने उन पर पर्दा डाल रक्खा है; वह कहते हैं कि यह प्रेम उनकी कार्य-शक्ति को जाग्रत करता है, और यह प्लेटोनिक प्रेम है, पर मैं जानती हूँ कि चाहे यह कितना ही विलक्षण क्यों न हो, फिर भी इसके मूल में गर्हित व्यापार ... वही जघन्यता उपस्थित है जो नोवोडोरोव और ग्रेबेहस के बीच में है।"

मेरी पैवलोटना मुख्य प्रसङ्ग से च्युत हो गई थी, क्योंकि यह विषय उसे बहुत प्रिय था।

निखल्यूडोव ने पूछा—तो फिर अब मुझे क्या करना चाहिए ?

"मेरी समझ में तो आपको उसे सारी बातें कह डालना चाहिए। सब बातों की सफाई होना अच्छा है। उससे बात कर लीजिए। मैं उसे बुलाए देती हूँ। बुला दूँ न ?

निखल्यूडोव ने कहा—हाँ बुलवा दीजिए।

मेरी पैवलोटना बाहर चली गई।

निखल्यूडोव इस छोटे से कमरे में अकेला रह गया। वीरा-दुखोवा का सुषुप्तावस्था का मृदुल श्वास और बीच-बीच में कराहट, दरवाज़ों के पीछे से आते हुए क़ैदियों के निरन्तर कलरव और अट्टहास-ध्वनि—निखल्यूडोव इन सबको सुनता रहा और उसके ऊपर एक विचित्र प्रकार के भाव ने अधिकार कर लिया। सायमन-सन ने उससे जो कुछ कहा था उसने उसे उस स्वत. स्थापित कर्त्त-व्य शृङ्खला से बन्धन-मुक्त कर दिया था जो क्षणिक दुर्बल अवसरों पर उसे कठोर और विलक्षण प्रतीत होती थी, पर तो भी उसे एक प्रकार के विषाद की—और न केवल विषाद की ही, बल्कि मनोव्यथा की भी—अनुभूति होने लगी। उसे भास होने लगा कि सायमनसन की इस तत्परता ने उसके (निखल्यूडोव के) आत्म-त्याग की विलक्षणता को नष्ट कर दिया, और इस प्रकार अब अपनी और दूसरों की दृष्टि में उसका मूल्य कम हो गया। यदि सायमनसन जैसा उत्कृष्ट व्यक्ति कटूशा से किसी प्रकार आबद्ध न रहने पर भी उसके साथ अपना जीवन सम्बद्ध करने को तैयार हो सकता है तो उसका आत्म-त्याग कुछ विशेष महत्त्व का न रहा। साधारण ईर्ष्या की भावना का पुट भी थोड़ा-बहुत अवश्य मिला

रहा होगा। वह कटूशा के प्रेम का इतना अभ्यस्त हो गया था कि वह इस बात को क्षण भर के लिए भी मानने को तैयार न था कि वह किसी और व्यक्ति से भी प्रेम कर सकती है या नहीं।

इसके अतिरिक्त उसने उसके निर्वासन-दण्ड काटते समय उसके पास रहने की जो योजनाएँ स्थिर की थीं अब वे भी अस्त-व्यस्त हो गई थीं। यदि उसने सायमनसन से विवाह कर लिया तो फिर उसकी उपस्थिति का कोई प्रयोजन न रहेगा और उसे नई योजनाएँ स्थिर करनी पड़ेंगी।

अभी उसे अपने इन भावों का विश्लेषण करने का अवसर न मिला था कि इसी समय दरवाज़ा खुला, अपराधियों की चीत्कार-ध्वनि ज़ोर-ज़ोर से आने लगी (आज उनमें कुछ विशेष व्यापार जारी था) और कटूशा ने कमरे में प्रवेश किया।

वह फुर्ती के साथ क़दम रखती हुई उसके पास आ पहुँची। बोली—मुझे मेरी पैवलोटना ने भेजा है।

"हाँ, मुझे तुमसे कुछ आवश्यक बात करनी है। बैठ जाओ। लाडियर सायमनसन के साथ बातचीत हो रही थी।"

वह अपनी गोद में हाथ डाल कर बैठ गई थी, और पूर्ण शान्त दिखाई देती थी, पर निखल्यूडोव के मुँह से सायमनसन का नाम निकलने की देर थी कि उसका चेहरा लाल सुर्ख़ हो उठा।

उसने पूछा—उन्होंने क्या कहा था?

"उन्होंने कहा है कि वह तुमसे विवाह करना चाहते हैं।"

कटूशा का मुख-मण्डल मनोव्यथा के मारे फूल उठा, पर उसने कहा कुछ नहीं, केवल अपने नेत्र नीचे कर लिए।

"वह मेरी सहमति या मेरी सलाह ले रहे थे। मैंने उनसे कह दिया है कि यह बिलकुल तुम्हारे ही हाथ में है—इसका निश्चय तुम ख़ुद करोगी।"

"हाय, इन सारी झञ्झटों का क्या अर्थ है? ?" उसने ओठों में कहा और निखल्यूडोव के नेत्रों की ओर उस तिर्छी चितवन से देखा, जिसका उस पर हमेशा से विलक्षण प्रभाव पड़ता आया था। वे कुछ क्षणों तक चुपचाप बैठे रहे, और एक-दूसरे के नेत्रों में झाँकते रहे, और इस दृष्टि-विनिमय ने एक-दूसरे से सारी बातें कह दी।

निखल्यूडोव ने कहा—हाँ, इसका निश्चय तुम ख़ुद करोगी।

"मैं क्या निश्चय करूँगी?.इसका निश्चय पहले से ही हो चुका है।"

निखल्यूडोव ने कहा—नहीं, तुम्हें निश्चय करना होगा कि क्या तुम लाडियर सायमनसन का प्रस्ताव स्वीकार करने को तैयार हो।

कटूशा ने भृकुटी चढ़ा कर कहा—मैं उनकी किस ढङ्ग की स्त्री बनूँगी—मैं एक कैदी? मैं लाडियर सायमनसन का सर्वनाश भी क्यों करूँ?

"पर यदि दण्ड उठा दिया गया तो?"

"अजी, मुझे अकेली छोड़ दो; मुझे और कुछ नहीं कहना है।" और वह कमरे से चल दी।

व निखल्यूडोव कट्यूशा के पीछे-पीछे पुरुषों के कमरे में आया तो उसे सारे राजनीतिक कैदी असाधारणतया उत्तेजित दिखाई दिए। नवाटोव हर जगह जाता, हर किसी से जान-पहचान करता, और हर बात को देखता-भालता; आज वह सबके पास ऐसा समाचार लाया जिससे सब हक्के-बक्के रह गए। समाचार यह था कि उसने एक दीवार पर पैटलिन नामक एक क्रान्तिकारी की लिखी पंक्तियाँ देख पाई थीं। इस क्रान्तिकारी को सपरिश्रम कारावास दण्ड दिया गया था, और सबकी धारणा थी कि वह अब से बहुत पहले करा पहुँच गया होगा; पर अब पता चला कि वह हाल ही में उधर से होकर गुज़रा है और जिस दल के साथ भेजा गया है, उसमें वही अकेला राजनीतिक कैदी है।

दीवार पर लिखा था—"१७ अगस्त को मुझे अपराधियों के साथ अकेले रवाना कर दिया गया। नेवेरोव मेरे साथ ही था, पर

वह कज़ान के पागलख़ाने में फाँसी खाकर मर गया। मैं सकुशल और प्रसन्न हूँ, और मङ्गल की आशा करता हूँ।

सबके साथ पैटलिन की अवस्था और नेवेरोव की आत्म-हत्या के सम्भावित कारण की चर्चा कर रहे थे। केवल क्रिल्टसोव चुप-चाप बैठा हुआ चिन्तित मुद्रा के साथ प्रज्ज्वलित नेत्रों से सामने की ओर एकटक दृष्टि से देख रहा था।

रणटसेवा ने कहा—मेरे पति ने कहा था कि पैट्रोपैवलोवस्की में एक स्वप्न आया था।

नोवोडोरोव ने कहा—हाँ, वह कवि था, वह स्वप्नाविष्ट रहा करता था; ऐसे आदमी एकान्त कारावास सहन नहीं कर सकते। इधर जब मुझे एकान्त कारावास में रक्खा गया तो मैंने अपने विचारों को इधर-उधर कभी न भटकने दिया, बल्कि अपनी दिनचर्या को अत्यन्त व्यवस्थित रूप में रक्खा, और इसीलिए मैं उसे इतनी अच्छी तरह सहन कर सका।

नवाटोव ने व्याप्त-शोक जनता को दूर करने की इच्छा से कहा—आदमी सभी कुछ सहन कर लेता है। मेरी ही देखिए! जब मुझे बन्द किया गया तो मुझे और प्रसन्नता हुई। वैसे आदमी सारी बातों से भयभीत रहता है, वह गिरफ्तार किए जाने से डरता है और दूसरों को जेल में लाने और सारे कार्य को धक्का पहुँचाने की आशङ्का करता है, पर जहाँ उसे बन्द किया गया कि सारा झगड़ा समाप्त हो गया। अब वह आराम के साथ बैठ कर सिगरेट पिया करे, और बस।

"मेरी पैवलोटना ने क्रिल्टसोव की परिवर्त्तित, सुती हुई मुद्रा

की ओर चिन्तित भाव से देख कर पूछा—तुम तो उन्हे जानते ही होगे ?

क्रिल्टसोव ने सहसा इस प्रकार दम ले-लेकर कहना आरम्भ किया, मानो वह वहुत देर से चीख-चिल्ला या गा रहा हो—"नेवेरोव स्वल्पाविष्ट था ? नेवेरोव उनमें से था, हमारे द्वार-रक्षक के शब्दों मे, जो 'इस पृथ्वी पर अधिक नही पाए जाते।' हाँ......उसकी प्रकृति हीरे की भाँति थी। कोई भी उसके हृदय तक पैठ सकता था। झूठ बोलना तो क्या, वह बात का छिपाना तक न जानता था। किसी की बात सहन न कर सकता था, स्वाभिमान की मूर्ति था। हाँ... उसका स्वभाव वडा जटिल और बडा समृद्ध था। वह इन जैसे...। पर अब इन बातों में क्या रक्खा है ?"—वह कुछ रुका और फिर क्रुद्ध-भाव से तेवर बदल कर बोला—"यहाँ हम इसी बात पर लड-झगड़ रहे हैं, पहले हमें जनता को शिक्षित करना चाहिए और फिर सामाजिक व्यवस्था मे परिवर्त्तन करना चाहिए, या पहले सामाजिक व्यवस्था में परिवर्त्तन करना चाहिए ? हम-तर्क युद्ध करते है कि हमें किस प्रकार का सङ्घर्ष करना चाहिए ? शान्तिमय आन्दोलन के द्वारा या भीतिवाद के द्वारा ? हम बहस करते हैं, पर वे बहस नहीं करते। वे अपना काम जानते हैं; वे इसकी चिन्ता नहीं करते कि कितने आदमियों का विनाश होगा, दर्जनों का या सैकडों का ? और आदमी भी कैसे ? नहीं, वे चाहते ही यह हैं कि अच्छे-अच्छे आदमियों का विनाश हो जाय। हाँ, हर्ज़न ने कहा था कि जब समाज से दिसम्बरियों का विनाश कर दिया गया तो हमारे समाज की नैतिक अवस्था का ह्रास हो चला। मेरी भी यही

धारणा है। उस समय हर्ज़ेन और उसके अनुयायियों का विनाश किया गया था, अब नेवेरोव जैसे।"

नवाटोव ने उल्लासपूर्ण स्वर में कहा—चाहे कुछ करें, इन सबको समूल नष्ट न किया जा सकेगा। फिर भी नस्ल जारी रखने के लिए कुछ न कुछ रह ही जायँगे।

क्रिल्टसोव ने अपना स्वर ऊँचा करके और व्याघात की कुछ चिन्ता न करके कहा—न, अगर हमने उन पर किसी प्रकार की दया दिखाई तो नस्ल भी न रहेगी। मुझे सिगरेट लाओ।

मेरी पैवलोटना ने कहा—अच्छी अनातोले, सिगरेट मत पियो। नुकसान देगा।

क्रिल्टसोव ने क्रुद्ध भाव से कहा—"अजी मुझे छोड़ो भी।" और उसने सिगरेट सुलगाया, पर तत्काल ही वह खाँसने और हिलने-डुलने लगा, मानो उस पर दौरा पड़ा हो। बलग़म निकाल कर उसने फिर कहना आरम्भ किया—"हम जो कुछ कर रहे हैं, उससे काम न चलेगा। अब बहस करने का समय नहीं है, हम सङ्गठित होकर ... उनका विध्वंस करने का समय है।"

"पर वे भी तो आदमी ही हैं।"

"नहीं, वे आदमी नहीं हैं, वरना वे वह न कर सकते जो कर रहे हैं ..।" नहीं..."सुना है कि एक प्रकार के बमों और ग़ुब्बारों का निर्माण किया गया है। जी में आता है कि एक ग़ुब्बारे पर सवार होकर इन सबको बमों से पाट दें, ठीक जिस तरह खटमलों को मारते हैं, और उस समय तक दम न लें, जब तक ये समूल नष्ट न हो जायँ। हाँ...क्योंकि...।" उसने अपना कथन जारी रखने की

चेष्टा की, पर वह पहले से भी अधिक भयङ्कर वेग से खाँसने लगा, उसका चेहरा लाल सुर्ख़ हो गया और इतने ही मे उसके मुँह से रक्त की धारा बह निकली। नवाटोव बर्फ़ लाने दौड़ा। मेरी पैव-लोटना ने उसे सुगन्धित औषधि दी, पर उसने जल्दी-जल्दी भारी साँस लेते हुए, उसे अपने शुष्क-श्वेत हाथ से एक ओर को हटा दिया और नेत्र बन्द कर लिए। जब बर्फ़ और शीतल जल से उसे कुछ सान्त्वना मिली तो निखल्यूडोव ने भी सब से विदा ली, और अपनी प्रतीक्षा में कुछ देर से खड़े सर्जेण्ट के साथ वह बाहर चला गया।

इधर अपराधी भी शान्त हो गए थे और अधिकांश सो रहे थे। कैदी चारपाइयों पर, उनके नीचे, और आस-पास सब जगह पड़े हुए थे, पर इतने पर भी सब उन कमरों में न आ सके थे, और उनमें से बहुत से क़ैदी बाहर बरामदों में अपने सिरों के नीचे थैले रक्खे और गीले चोगे लपेटे लेटे हुए थे। खुले हुए दरवाज़ों से खर्राटे, कराहटों और सुषुप्त कण्ठ-स्वरों का शब्द सुनाई पड रहा था और बाहर बरामदे में गूँज रहा था। इधर-उधर—हर जगह जेली चोग़ों से लिपटे हुए मानव जीवों का गुत्थित समुदाय पड़ा हुआ था। यदि कोई जाग रहा था तो कुमार-भवन में एक कन्दील की प्राय: समाप्त मोमबत्ती के प्रकाश में (जिसे उन्होंने सर्जेण्ट को देखते ही बुझा दिया था) कुछ आदमी, या बाहर बरामदे में लैम्प के प्रकाश में नङ्गा वृद्ध, जो अपनी मिरजई उतार कर जुएँ बीन रहा था। यहाँ की दुर्गन्धिपूर्ण घिचपिच की समता मे राज-नीतिक कैदियों के कमरे की गन्ध कहीं स्वच्छ प्रतीत होती थी।

धुँआ देता हुआ लम्प धुँधला प्रकाश दे रहा था, मानो वह कुहासे में जल रहा हो और साँस तक लेना दूभर दिखाई देता था। बरामदा पार करने के लिए सँभाल-सँभाल कर एक-एक क़दम के लिए रिक्त स्थान खोजना पड़ता था। तीन आदमियों को बरामदे में भी स्थान न मिल सका था और वे बाहरी कमरे के पास दुर्गन्धिपूर्ण टपकते हुए टब के निकट पड़े हुए थे। उनमें से एक को निखल्यूडोव जानता था। यह एक वृद्ध चौड़म था और उसे निखल्यूडोव ने क़ैदियों के दल के साथ जाते हुए देखा था। दूसरा एक बारह साल का लड़का था, जो दो क़ैदियों के बीच में, एक की टाँग पर सिर रक्खे पड़ा था।

दरवाज़े से बाहर निकल कर निखल्यूडोव ने गहरी साँस ली और वह बहुत देर तक बर्फ़ीली हवा का घूँट भरता रहा।

चेष्टा की, पर वह पहले से भी अधिक भयङ्कर वेग से खाँसने लगा, उसका चेहरा लाल सुर्ख़ हो गया और इतने ही में उसके मुँह से रक्त की धारा बह निकली। नवाटोव बर्फ़ लाने दौड़ा। मेरी पैव-लोटना ने उसे सुगन्धित औषधि दी, पर उसने जल्दी-जल्दी भारी साँस लेते हुए, उसे अपने शुष्क-श्वेत हाथ से एक ओर को हटा दिया और नेत्र बन्द कर लिए। जब बर्फ़ और शीतल जल से उसे कुछ सान्त्वना मिली तो निखल्यूडोव ने भी सब से विदा ली, और अपनी प्रतीक्षा में कुछ देर से खडे सर्जेण्ट के साथ वह बाहर चला गया।

इधर अपराधी भी शान्त हो गए थे और अधिकांश सो रहे थे। कैदी चारपाइयों पर, उनके नीचे, और आस-पास सब जगह पड़े हुए थे, पर इतने पर भी सब उन कमरों में न आ सके थे, और उनमें से बहुत से कैदी बाहर बरामदों में अपने सिरों के नीचे थैले रक्खे और गीले चोगे लपेटे लेटे हुए थे। खुले हुए दरवाजों से ख़र्राटे, कराहटों और सुपुप्त कण्ठ-स्वरों का शब्द सुनाई पड रहा था और बाहर बरामदे में गूँज रहा था। इधर-उधर—हर जगह जेली चोगों से लिपटे हुए मानव जीवों का गुत्थित समुदाय पडा हुआ था। यदि कोई जाग रहा था तो कुमार-भवन मे एक कन्दील की प्राय: समाप्त मोमबत्ती के प्रकाश में (जिसे उन्होंने सर्जेण्ट को देखते ही बुझा दिया था) कुछ आदमी, या बाहर बरामदे में लैम्प के प्रकाश में नङ्गा वृद्ध, जो अपनी मिरजई उतार कर जुएँ बीन रहा था। यहाँ की दुर्गन्धिपूर्ण घिचपिच की समता मे राज-नीतिक कैदियों के कमरे की गन्ध कहीं स्वच्छ प्रतीत होती थी।

पर विचार करने लगा। दुर्गन्धि-पूर्ण टब से छूटती हुई जल-धारा में कैदी की टाँग पर सिर रख कर पड़े हुए लड़के का दृश्य उसे सब से अधिक भयावह लग रहा था।

सायमनसन और कटूशा का वार्तालाप चाहे कितना ही अनपेक्षित सही, उसने उस पर विचार न किया। इस सम्बन्ध में उसकी अवस्था इतनी जटिल और अनिश्चित थी कि उसने उसका विचार ही अपने मन से निकाल कर फेंक दिया। पर दुर्गन्धिपूर्ण वायु में साँस लेते हुए, और टब से निकलते हुए, सड़े पानी में लोटते हुए उन अभागे जीवों का, और विशेषकर क़ैदी की टाँग पर सिर रख कर लेटे हुए सुसुप्त बालक के निर्दोष चेहरे का चित्र उसके मानस-पटल पर अधिकाधिक स्पष्टता के साथ उदित होता रहा और वह उससे पीछा न छुड़ा सका।

केवल इस बात से अभिज्ञ रहना कि कहीं किसी दूरस्थ प्रदेश मे कुछ लोग ऐसे है जो अपने ही जैसे अन्य लोगों को भाँति-भाँति के अमानुषिक तिरस्कारों, व्यथाओं और पतनों के द्वारा सतत भाव से यन्त्रणाएँ देते हैं; और तीन मास तक इस यन्त्रणा-पतन-व्यापार को अपनी आँखों से देखना—दो भिन्न पदार्थ थे। निखल्यूडोव इस बात को जानता था। उसने इन तीन महीनों में एक से अधिक बार स्वगत प्रश्न किया था—"क्या मै ही पागल हो गया हूँ, जो मुझे वे बातें दिखाई देती हैं जो दूसरों को दिखाई नही देतीं, या यही लोग पागल हैं जो ऐसी बातें करते है, जो मेरी आँखों के आगे आती हैं?" पर साथ ही वे सब (और उनकी संख्या काफ़ी थी) वे सारी बाते, जो उसे इतनी विस्मयकारी और
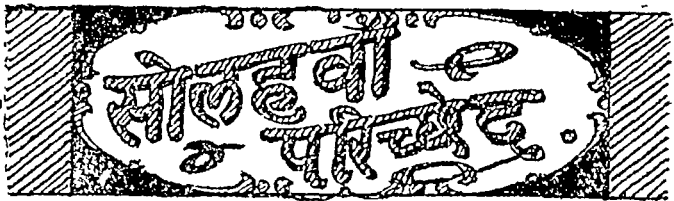
काश स्वच्छ हो गया था और तारे निकल आए थे। दो-एक स्थानों को छोड़ कर और बाकी सब जगह कीचड पर बर्फ़ जम गई थी। निखल्यूडोव ने अपनी सराय को वापस लौट कर अँधियाली खिडकी का दरवाज़ा खटखटाया और द्वार खोलने को एक श्रमजीवी नङ्गे पैरों दौड आया। निखल्यूडोव ने भीतर प्रवेश किया। भीतर के कमरों से गाड़ीवानों के ख़र्राटे की आवाज़ आ रही थी, और सहन से घोडों के जई चवाने की आवाज़ आरही थी। सामने के कमरे की मूर्तियो को एक लाल लैम्प प्रकाशित कर रहा था, और उस कमरे से पसीने की दुर्गन्धि आ रही थी। कमरे के अर्द्ध भाग के पीछे से एक मजवूत फेफडों वाले आदमी की ज़ोरदार ख़र्राटे की आवाज़ सुनाई दे रही थी। निखल्यूडोव ने अपने कपड़े उतारे, मोमजामे वाले सोफा पर चमड़े का सफ़री तकिया रक्खा, और इसके बाद वह कम्बल बिछा कर बैठ गया और उस दिन की देखी घटनाओं

पर विचार करने लगा। दुर्गन्धि-पूर्ण टब से छूटती हुई जल-धारा मे क़ैदी की टाँग पर सिर रख कर पड़े हुए लड़के का दृश्य उसे सब से अधिक भयावह लग रहा था।

सायमनसन और कटूशा का वार्तालाप चाहे कितना ही अनपेक्षित सही, उसने उस पर विचार न किया। इस सम्बन्ध में उसकी अवस्था इतनी जटिल और अनिश्चित थी कि उसने उसका विचार ही अपने मन से निकाल कर फेंक दिया। पर दुर्गन्धिपूर्ण वायु मे साँस लेते हुए, और टब से निकलते हुए, सड़े पानी में लोटते हुए उन अभागे जीवों का, और विशेपकर कैदी की टाँग पर सिर रख कर लेटे हुए सुसुप्त बालक के निर्दोप चेहरे का चित्र उसके मानस-पटल पर अधिकाधिक स्पष्टता के साथ उदित होता रहा और वह उससे पीछा न छुडा सका।

केवल इस बात से अभिज्ञ रहना कि कही किसी दूरस्थ प्रदेश मे कुछ लोग ऐसे है जो अपने ही जैसे अन्य लोगों को भाँति-भाँति के अमानुपिक तिरस्कारो, व्यथाओं और पतनों के द्वारा सतत भाव से यन्त्रणाएँ देते हैं; और तीन मास तक इस यन्त्रणा-पतन-व्यापार को अपनी आँखों से देखना—दो भिन्न पदार्थ थे। निखल्यूडोव इस बात को जानता था। उसने इन तीन महीनों में एक से अधिक बार स्वगत प्रश्न किया था—"क्या मै ही पागल हो गया हूँ, जो मुझे वे बाते दिखाई देती हैं जो दूसरों को दिखाई नहीं देतीं, या यही लोग पागल हैं जो ऐसी बातें करते हैं, जो मेरी आँखों के आगे आती हैं?" पर साथ ही वे सब (और उनकी संख्या काफी थी) वे सारी बाते, जो उसे इतनी विस्मयकारी और

भयङ्कर प्रतीत होती थी, इतने प्रबल आत्माश्वासन के साथ, कि वे जो कुछ कर रहे हैं वह नितान्त आवश्यक, और महत्वपूर्ण कार्य है, करते कि उन्हें पागल समझना कठिन था, न वह यही विश्वास कर सकता था कि वह स्वयं पागल हो गया है, क्योंकि वह अपने विचारों की एक-रूप स्वच्छता की ओर से सचेत था। बस, वह इस एक समस्या को लेकर अस्त-व्यस्त हुआ रहता।

पिछले तीन महीनों में उसने जो कुछ देखा था उसका उस पर इस प्रकार प्रभाव पडा :—

स्वतन्त्र जनता में जो लोग नितान्त उद्विग्न, नितान्त क्रोधी, नितान्त उत्तेजनशील, नितान्त उत्कृष्ट, प्रतिभा-सम्पन्न और परम प्रबल, पर साथ ही निरे भोले और निरे सीधे-सादे होते, उन्हें मामले-मुक़दमों के द्वारा या सरकारी आदेशों के द्वारा जाल में फाँस लिया जाता। ये लोग अवशिष्ट स्वतन्त्र व्यक्तियों में से अधिकांश व्यक्तियों की समता में कुछ अधिक सङ्कटदायक न होते, पर पहले इन्हें जेलों में बन्द रक्खा जाता, फिर साइबेरिया को निर्वासित कर दिया जाता, और वहाँ उन्हें बिना किसी काम-धन्धे के, पूर्ण निष्क्रिय भाव से महीनों और सालों तक, अपने बन्धु-बान्धवों से असम्पृक्त, प्रकृति से विच्छिन्न और समस्त उपयोगी कार्यों से असम्बद्ध रख कर, खाने-पीने को दिया जाता। यह पहली बात थी।

दूसरी बात यह थी कि इन लोगों को इस वातावरण में टाल कर दुनिया भर की अनावश्यक लाञ्छनाओं का भाजन बनाया जाता; हथकड़ियाँ और बेड़ियाँ, और घुटे सिर और लज्जाजनक

परिधान ; अर्थात् उन्हें जीवन के उन प्रधान अङ्गों से वञ्चित कर दिया जाता जिनके द्वारा दुर्बल चरित्र व्यक्ति साधु-जीवन व्यतीत करने को प्रेरित होते हैं—लोक-लाज, आत्म-गरिमा और मानवी मर्यादा की सचेतनता।

तीसरी बात यह थी कि इन लोगों को इन बन्दी-गृहो के लिए स्वाभाविक संक्रामक रोगों का, बलात्क्षय का और आघातों का (और बीच-बीच में सूर्यताप, अग्नि-काण्ड अथवा जल-दुर्घटना का भी) सतत भाव से भय बना रहता था, अतः उन्हें ऐसी परिस्थिति मे समय बिताना पडता, जिनमें पट कर अच्छे से अच्छे सदाचारी से सदाचारी आदमी भी आत्म-रक्षण के भावों से प्रेरित होकर अत्यन्त से अत्यन्त कठोर और भयङ्कर कृत्य कर डालते है, और जो ऐसा करते हैं उन्हे क्षन्तव्य समझते हैं।

चौथी बात यह थी कि इन लोगों को बलात् उन लोगों के संसर्ग में रक्खा जाता जो जीवन और मुख्यतः इन संस्थाओ के द्वारा विशेष रूप से भ्रष्ट हो चुके होते—व्यभिचारी, हत्यारे और धूर्त—और इनका प्रभाव उन पर ठीक यही पडता जो.... पर पडता है।

और पाँचवी बात यह थी कि इन लोगों के साथ जिस ढङ्ग का अमानुषिक व्यवहार किया जाता; स्त्री, बालक, वृद्ध प्रपीडित करने, छडों और कोड़ों का स्वच्छन्द व्यवहार करने, भागे हुए अपराधी को जीवित या मृत पकड़ लाने वाले को पुरस्कार देने, काम-लिप्सा शान्त करने के लिए पति-पत्नी का विच्छेद करके उनका दूसरों की पत्नियों और पतियों के साथ सम्पर्क स्थापित करने, और गोली

की जेलों ने और सारे पड़ावों ने वडी सफलता के साथ हल किया है। सीधे-सादे धर्म-भीरु सदाचारी रूसी ग्रामीण पकड़े जाते और अपनी पहली सारी धार्मिक धारणाओं को भूल जाते और एक नई जेल की धारणा ग्रहण करते जिसके आधार में एक मात्र यह विभावना छिपी रहती कि यदि लाभ होने की सम्भावना हो तो मानव-जीवन पर घोर से घोर अत्याचार करना या उसके विरुद्ध जघन्य से जघन्य कृत्य करना न्याय्य है। जेल में रहने के वाद इन लोगो को पूरा वोध हो जाता था कि उनके साथ जो कुछ किया जा रहा है उसके अनुरूप विचार करने से यही तथ्य निकलता है कि गिर्जे और उपदेश भ्रातृभाव और श्रद्धा-भक्ति के जिन नैतिक विधानों की शिक्षा देते हैं वे प्रकृत जीवन में उठा कर एक ओर रख दिए जाते हैं, अत उन्हें भी उन विधानों का पालन करने की कोई आवश्यकता नहीं है। निखल्यूडोव ने वन्दी-जीवन के इस प्रभाव को अपने सारे परिचित क़ैदियों में लक्षित किया—उसने यह प्रभाव फैडोरोव में देखा, और मेकर मे देखा, और टारस तक मे देखा जो कैदियों के साथ दो मास बिताने के वाद नैतिक आचारशून्य वातें करने लगा था। उसे इस यात्रा में पता चला कि किस प्रकार शोहदे निकल भागते हैं और साथ ही अपने कॉमरेड क़ैदियों को भी भाग चलने को राज़ी कर लेते हैं, और किस प्रकार उन्हें जङ्गल में ले जाकर उनका मांस भक्षण करते हैं। उसने स्वयं देखा कि किस प्रकार एक क़ैदी ने मनुष्य-मांस भक्षण का अपराध स्वयं स्वीकार किया था। और सब से अधिक भयङ्कर वात यह थी कि मनुष्य-मास भक्षण कोई अपूर्व घटना न थी, वल्कि इसकी पुनरावृत्ति वरावर होती रहती थी।

इस प्रकार की संस्थाओं में जिस प्रकार का दुराचार सिखाया जाता है उसे पूर्णतया हृदयङ्गम करने के बाद ही एक रूसी का एक ऐसे शोहदे के रूप में परिणत होना सम्भव था जो निट्जे की नवीन से नवीन शिक्षा को भी मात करता था और जिसके लिए संसार का कोई काम वर्जित नहीं था और कोई वस्तु निषिद्ध नहीं थी, और जो अपनी इस जघन्य शिक्षा को पहले क़ैदियों में, और फिर मुक्त होने पर जनता में प्रसारित किया करता था।

इस सारे व्यापार का एक मात्र अभिव्यञ्जना अपराधों को रोकना हो सकती थी, 'आतङ्क उत्पन्न करना हो सकती थी, अपराधियों का सुधार करना हो सकती थी, और पुस्तकों के शब्दों में 'वैध प्रतिहिंसा' का आचरण करना हो सकती थी। पर वस्तुत फल इसके बिलकुल विपरीत हुआ करता था। दूषणों का अन्त होने के स्थान पर उलटा प्रसार होता था, भयातुर होने के बजाय अपराधी प्रोत्साहित होते थे। बहुत से शोहदे स्वेच्छापूर्वक जेल में फिर लौट आए थे; सुधार के स्थान पर उनमें दुनिया भर की बुराइयाँ व्यवस्थित रूप से ठूँस दी जाती थीं; और अप्रकृत प्रतिहिंसा प्रवृत्ति, सरकारी उपायों के द्वारा नष्ट होने के स्थान पर, लोगों मे और भी प्रबल रूप धारण कर लेता था।

निखल्यूडोव ने स्वगत प्रश्न किया—"तो फिर यह सब क्यों किया जाता है?" और वह इसका कोई उत्तर न पा सका।

और सब से अधिक आश्चर्य की बात यह थी कि ये घटनाएँ आकस्मिक भ्रम या प्रमादवश, या एक आध बार न होती थीं, बल्कि इनका चक्र अनेक शताब्दियों से चला आ रहा था, अन्तर

केवल इतना था कि शुरू-शुरू मे लोगों की नाकों मे नकेल डाल दी जाती थी और कान काट लिए जाते थे ; फिर एक ऐसा ज़माना आया जब उन्हे लोहों से दाग कर लोहे की सलाख़ों से बोध दिया जाता था ; और अब उनके हाथ-पैरों में हथकड़ियाँ-बेड़ियाॅ पहना कर गाड़ियों के बजाय रेल पर सवार करा कर निर्वासित कर दिया जाता था।

जो लोग सरकारी नौकरियों में होते वे यह तर्क पेश करते कि उसके असन्तोष और रोष का एक मात्र कारण बन्दीगृहों की दोषपूर्ण और अपूर्ण व्यवस्था है, और यदि नए ढङ्ग के बन्दीगृह बनवाए जायॅ तो ये सारी शिकायतें दूर हो जायँ ; पर निखल्यूडोव को इस बात से सन्तोष न होता, क्योंकि वह जानता था कि उनके रोष, क्रोध का बन्दीगृह के अच्छे या बुरे प्रबन्ध से कोई सम्बन्ध नहीं है। उसने बिजली की घण्टियों वाली नवीन जेलों की बात पढी थी, और टार्ड द्वारा नियोजित बिजली के द्वारा प्राण लेने की बात भी पढी थी, और इस संस्कृत हिंसा ने उसके रोष, असन्तोष को और भी उद्दीप्त कर दिया था।

पर उसे सब से अधिक रोष और क्रोध इस बात से हुआ कि न्यायालयों मे और मन्त्रि-मण्डल में ऐसे आदमी भरे पड़े है जो जनता के कोष से मोटी-मोटी तनख्वाहे केवल इस बात की लेते है कि वे अपने ही जैसे अधिकारियों द्वारा, अपने ही जैसी प्रवृत्ति द्वारा प्रेरित होकर, लिखी हुई विधान-सम्बन्धी पुस्तकों के हवाले देकर, लिखित-विधानों को भङ्ग करने वाले किसी विशिष्ट कार्य पर यह या वह धारा अनुरूपित करते हैं। और इन धाराओं के अनुसार उक्त

कार्यों के अपराधियों को ऐसे स्थानों पर भेज देते हैं जहाँ फिर उन्हें उनके दर्शन नहीं होते, और वहाँ से तथाकथित अपराधी निर्दय, कठोर इन्सपेक्टरों, जेलरों और सहयात्री सैनिकों की ममता पर छोड दिए जाते है और वहाँ वे हज़ारों लाखों की संख्या मे नैतिक और भौतिक दोनों प्रकार से नष्ट हो जाते हैं।

अब जेलों के सम्बन्ध में अन्तरङ्ग अवगति प्राप्त करने के बाद निखल्यूडोव को पता चला कि कैदियों मे जो दुनिया भर के दूषण—मदिरापान, द्यूत, व्यञ्जन, नृशंसता और मनुष्य-मांस भक्षण जैसे वीभत्स अपराध तक—उत्पन्न हो जाते हैं, वे न आकस्मिक हैं, न नैतिक ह्रास के कारण, न अपराधपूर्ण प्रवृत्ति वाले व्यक्तियों की जघन्य नृशंसता के कारण (चाहे सरकार के समर्थक कूडमग्ज़ वैज्ञानिक इसका कितना ही प्रतिपादन करें) बल्कि इस कल्पनातीत भ्रान्ति का अनिवार्य परिणाम है कि मनुष्यों को एक-दूसरे को दण्ड देने का अधिकार है। निखल्यूडोव ने देखा कि मनुष्य-मांस भक्षण जैसी जघन्य प्रवृत्ति का बीजारोपण जङ्गलो मे नहीं हुआ था। उसका जन्म हुआ था, मन्त्रि-मण्डलों और कमेटियों में, और राजकीय विभागों में; जङ्गलों मे तो उसका परिपाक मात्र हुआ था। उसने देखा कि उसका बहनोई, और बाक़ी सारे वकील और मन्त्री से लगा कर अदालत के प्यादे तक न्याय और जन-कल्याण की तनिक चिन्ता नहीं करते—चाहे बातें कितनी ही किया करें—बल्कि केवल उन रूबलो की चिन्ता करते हैं जो उन्हें उनकी उन करतूतों के शुल्क-स्वरूप दिए जाते हैं जिनके कारण इतना पतन और इतना पीड़न व्यापार दिखाई देता है। सब कुछ स्पष्ट था।

"तो क्या इस सबका मूल कारण भ्रान्ति है? क्या ऐसा कोई प्रबन्ध नहीं किया जा सकता, जिसके अनुसार इन सारे अफसरों को वेतन दे दिए जायँ और आगे मिलने वाले वेतनों का भी भुगतान पहले से कर दिया जाय, और इनसे यह सारा काम छुड़वा दिया जाय?" और जब वह अपने मतिष्क में निरन्तर रूप से प्रश्नवित होते हुए इन विचारों में निमग्न हुआ सोफ़ा पर लेटा और उसकी आँख लगी, तो मुर्गे दूसरी बार बाँग दे चुके थे।
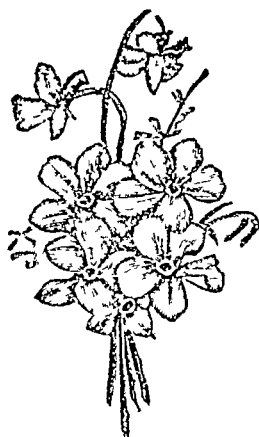
ब निखल्यूडोव की आँख खुली तो गाड़ीवान उससे बहुत पहले सराय से चले गए थे। सराय की मालकिन चाय पीकर अपनी मोटी, पसीने से भीगी हुई गर्दन पोंछती हुई आई और बोली कि एक सिपाही पड़ाव से पुर्जा लाया है। पुर्ज़ा मेरी पैव-लोटना के पास से आया था। उसने लिखा था कि उन्होंने जितना समझा था, क्रिल्टसोव का दौरा उससे कहीं भयङ्कर निकला। पहले तो हमने उन्हें यहीं रोक रखना चाहा और उनके साथ ही रुक जाने की इच्छा की, पर इसकी अनुमति नहीं दी गई और अब वह हमारे साथ जा रहे हैं; कौन जाने, किस घड़ी क्या हो जाय। कृपा करके ऐसा प्रबन्ध करिए जिससे आगे के गाँव में उन्हें ठहराया जा सके और उनके साथ हममें से कोई रुक सके। यदि रुकने की अनुमति प्राप्त करने के लिए उनके साथ विवाह करना वाञ्छित हुआ तो मैं इसके लिए भी तैयार हूँ।

निखल्यूडोव ने सराय के लडके को अड्डे से गाडी जुतवा लाने की आज्ञा दी और स्वयं जल्दी-जल्दी असबाब बाँधा। अभी उसने अपनी चाय समाप्त न की थी कि बर्फीली कीचड पर खड़खड़ाती हुई तीन घोडो वाली घुँघरूदार गाडो आ लगी। निखल्यूडोव ने मोटी गर्दन वाली मालकिन को दाम चुकाए, और इसके बाद वह झटपट गाडी में सवार हो गया और गाडीवान को आज्ञा दी कि जितनी जल्दी सम्भव हो सके, वह गाडी दौडाता हुआ कैदियों के दल के पास पहुँच जाए। अभी गाडी सङ्घ के चरागाह के द्वार से बाहर न निकली थी कि थैलों और बीमारों से लदी गाडियाँ बर्फ़ीली कीचड़ पर—जो अब पहियों से चिकनी हो चली थी—खडखडाती हुई जाती दिखाई दी। अफसर मौजूद न था; वह आगे चला गया था। सिपाहियो ने शराब पी रक्खी थी, और वे सडक के किनारे-किनारे मौज के साथ हँसी-दिल्लगी करते हुए चल रहे थे। बहुत सारी गाडियाँ थीं। आगे की गाड़ियों में छ-छ: की संख्या में रोगी क़ैदी बैठे हुए थे; अन्त की तीन गाडियों में तीन-तीन राजनीतिक कैदी थे—नोवोडोरोव, ग्रवेट्स और कोण्ड्राटीव एक गाड़ी में सवार थे; रण्टसेवा, नवाटोव, और वह स्त्री जिसे मेरी पैवलोटना ने अपना स्थान दे दिया था, दूसरी गाडी में। तीसरी गाडी में पुआल के ढेर पर तकिए पर सिर रक्खे क्रिल्टसोव पडा था और उसके पास गाड़ी के ऐन सिरे पर 'मेरी पैवलोटना बैठी थी। निखल्यूडोव ने गाडीवान को गाड़ी रोकने की आज्ञा दी, वह उतरा और क्रिल्टसोव के पास पहुँचा। एक उन्मत्त सिपाही ने हाथ हिला कर वर्जित किया, पर निखल्यूडोव ने उसकी ओर कोई ध्यान न

दिया और वह क्रिल्टसोव की गाडी की पट्टी पकड कर पैदल चलने लगा। क्रिल्टसोव भेड की खाल का कोट और बालोंदार टोपी पहने था, उसके मुँह से पट्टी बँधी हुई थी, और वह पहले की अपेक्षा कहीं पीला और दुर्बल दिखाई दे रहा था। उसके सुन्दर नेत्र बहुत बडे और ओज्ज्वल दिखाई दे रहे थे। गाड़ी के धचोके बराबर लग रहे थे। उसने निखल्यूडोव की ओर एकटक दृष्टि से देखा; पर जब निखल्यूडोव ने उससे स्वास्थ्य सम्बन्धी प्रश्न किया तो उसने क्रुद्ध भाव से अपना सिर हिलाया और आँखे बन्द कर लीं। गाडी के धचोके सहने के लिए उसे अपनी सारी अवशिष्ट शक्ति से काम लेना पड रहा था। मेरी पैवलोव्ना दूसरी ओर बैठी थी, उसने निखल्यूडोव की ओर मर्म-भरी दृष्टि से देखा, जिससे क्रिल्टसोव की अवस्था के विषय में उसकी चिन्ता व्यक्त हुई। इसके बाद वह तत्काल ही उल्लसित भाव से बातचीत करने लगी।

उसने गाडियों की गडगडाहट को भेद कर ऊँचे स्वर में कहा—ऐसा मालूम पडता है कि अफ़सर को ग्लानि उत्पन्न हुई है। बुज़ोवकिन की हथकडी उतरवा दी गई है और वह अपनी बच्ची को खुद लिए जा रहा है। कट्ूशा और सायमनसन भी उसी के साथ हैं, और वीरा भी। वीरा ने मेरा स्थान ले लिया है।

क्रिल्टसोव ने कुछ बात कही, जो गडगडाहट के कारण सुनाई न दे सकी, और उसने बलग़म दबाने के प्रयास में भृकुटी चढा कर अपना सिर हिलाया। इसके बाद निखल्यूडोव उसकी बात सुनने के लिए उसकी ओर झुका, और उसने अपना मुँह खोल कर फुसफुसा कर कहा—"अब अच्छा हूँ। पर कहीं फिर सर्दी न लग

जाय।" निखल्यूडोव ने सहमति-सूचक ढङ्ग से सिर हिलाया और मेरी पैवलोटना के साथ एक बार फिर दृष्टि-विनिमय किया।

क्रिल्टसोव ने प्रयासपूर्वक मुस्करा कर कहा—तीन अङ्गों की समस्या का क्या समाचार है? हल नहीं होती?

निखल्यूडोव की समझ में बात न आई और मेरी पैवलोटना ने उसे समझाया कि क्रिल्टसोव गणित की उस प्रसिद्ध समस्या की ओर निर्देश कर रहा है, जिसमें सूर्य, चन्द्रमा और पृथ्वी की अवस्था की परिभाषा की गई है, और इससे उनका अभिप्राय निखल्यूडोव, कट्रशा, और सायमनसन के पारस्परिक सम्बन्ध से है। क्रिल्टसोव ने यह जताने के लिए कि मेरी पैवलोटना उसके विनोद को ठीक समझ सकी, सिर हिलाया।

निखल्यूडोव ने कहा—समस्या का हल करना मेरे हाथ में नहीं है।

मेरी पैवलोटना ने पूछा—आपको मेरा पत्र मिल गया था। आप करेंगे न?

निखल्यूडोव ने कहा—'निश्चय ही।' और क्रिल्टसोव के चेहरे पर असन्तोष की मुद्रा देख कर वह अपनी गाडी पर लौट आया और ऊबड-खाबड़ सडक पर धचोके देती हुई गाडी के दोनों पार्श्व पकड़ कर तीन चौथाई मील के गिर्द में फैली हुई ख़ाकी चोग़ों, भेड़ की खाल के कोटों, ज़ञ्जीरों और हथकडियों से लदी हुई कैदी-पल्टन को देखता हुआ आगे बढ़ने लगा। सड़क के दूसरे किनारे पर निखल्यूडोव को कट्रशा का नीला शाल, दुखोवा का काला कोट, और सायमनसन की मुड़ी टोपी और सफ़ेद मोज़ों पर गर्म

पट्टियाँ दिखाई दीं। सायमनसन स्त्रियों के साथ-साथ जा रहा था और उनमें कोई ज़ोरदार बातचीत हो रही थी।

जब उन्होंने निख्ल्यूडोव को देखा, तो उसका अभिवादन किया, और सायमनसन ने गम्भीर भाव से अपनी टोपी उठाई। निखल्यूडोव को कुछ कहना-सुनना न था, अतः उसने गाड़ीवान को न रोका, और गाड़ी शीघ्र ही उन्हें पार कर गई। चिकनी सड़क पर आ पहुँचने पर गाड़ी फिर तेज़ी से चल पड़ी, पर बीच-बीच में गाड़ीवान को सड़क के दोनों किनारों पर फैली हुई गाड़ियों को बचाने के लिए घूम-फिर कर जाना पड़ता था।

सड़क में गहरे गड्ढे हो गए थे और वह नाशपातियों और शीशम के पेड़ों के जङ्गल में से होकर गई थी। पेड़ों की पत्तियाँ पीली पड़ गई थीं, पर अभी झड़ी न थीं, और इस प्रकार जङ्गल ने उज्ज्वल शोभा धारण कर ली थी। कैदियों का आधा दल पार करते-करते जङ्गल समाप्त हो गया। अब सड़क के दोनों ओर खेत फैले दिखाई दिए, और कुछ दूरी पर गिर्जे की चोटी का क्रॉस और चक्र-चिन्ह दीख पड़ा। बादल ग़ायब हो गए थे, मौसम साफ हो गया था, सूर्य पेड़ों के ऊपर चमक रहा था और उसके प्रकाश में पत्तियाँ, बर्फ़ीले ताल और मठ का सुनहरा क्रॉस और चक्र-चिन्ह चमचमा रहे थे। कुछ दाहिनी ओर हट कर नील-वर्ण दूरी में पर्वतमाला श्वेत सी दिखाई दे रही थी। गाड़ी एक बड़े से गाँव में घुसी। गाँव की सड़क पर रूसी और अन्य देशीय लोग—स्त्री और पुरुष, मदोन्मत्त और स्वस्थ-संयत—एकत्र थे। मदिरा-लोलुप स्त्री-पुरुष मदिरा की दूकानों के आगे खड़े होकर बातचीत, हास-

परिहास कर रहे थे। किसी नगर का नैकट्य स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहा था।

गाड़ीवान गाड़ी के दाहिनी ओर बैठा अपनी दाहिनी ओर के घोड़े को चाबुक से मार कर और लगाम खींच कर अपने गाड़ी हाँकने का कौशल दिखाने की इच्छा से उसे बड़ी फ़ुर्ती से नदी की ओर ले जाने लगा। नदी को नाव के द्वारा पार करना था। नाव का बेड़ा उन्हीं की ओर आ रहा था और आधा पाट समाप्त कर चुका था। कोई बीस गाड़ियाँ पार होने की बाट देख रही थीं। निखल्यूडोव को अधिक प्रतीक्षा न करनी पड़ी। बेड़ा बहाव में आकर शीघ्रतापूर्वक किनारे आ लगा।

दीर्घकाय, हृष्ट-पुष्ट शरीर और चौड़े कन्धों वाले मूक केवटों ने भेड़ की खाल के कोट पहने, अपने अभ्यस्त हाथों से लङ्गर डाला, बेड़े की गाड़ियों को उतारा, और किनारे की गाड़ियों को बेड़े पर सवार किया। सारा बेड़ा गाड़ियों और घोड़ों से भर गया, और घोड़े पानी देख कर दुलत्तियाँ झाड़ने लगे। विराट, द्रुतगामिनी नदी नौकाओं के इर्द-गिर्द टकरा कर रस्सों को खींचने लगी। जब बेड़ा भर गया और निखल्यूडोव की गाड़ी और घोड़े, एक-एक करके सवार करा लिए गए, तो नाविकों ने प्रवेश-द्वार रोक लिया और किनारे पर खड़े आदमियों की अनुनय-विनय की ओर कोई ध्यान न देकर रस्सी खोल दी।

बेड़े पर निस्तब्धता थी: नाविकों के बूटों और घोड़ों की टापों के आघातों के अतिरिक्त और कुछ सुनाई न देता था।

निखल्यूडोव बेड़े के किनारे पर खड़ा हुआ उस विराट नदी की ओर देखने लगा। उसके कल्पनाकाश में दो चित्र बार-बार उदित हो रहे थे। उनमें से एक चित्र था क्रोध में प्राण देने वाले क्रिल्टसोव के सिर हिलाने का, दूसरा चित्र था सायमनसन के साथ-साथ कट्यूशा के चुस्ती के साथ क़दम रख-रख कर मार्ग तय करने का। पहले प्रकार के—मरने को असम्मत क्रिल्टसोव के मरणासन्न चित्र के—संस्कार ने उसे विषादपूर्ण और खिन्न कर दिया। दूसरे प्रकार के—सजीवता से भरी हुई कट्यूशा के चित्र के—संस्कार ने निखल्यूडोव के मन में बलात् निर्जीवता उत्पन्न कर दी, यद्यपि उसे प्रसन्न होना चाहिए था कि उसे सायमनसन जैसे व्यक्ति का प्रेम प्राप्त हो सका, और वह अन्त में सत्य पथ पा सकी।

नगर से एक बड़े से घण्टे का निनाद बराबर आ रहा था। बग़ल में खड़ा निखल्यूडोव के गाड़ीवान ने, और बेड़े के अन्य सारे आदमियों ने अपनी टोपियाँ उतारीं और क्रॉस-चिन्ह बनाए।

एक छोटे से कद का बिखरे बालों वाला वृद्ध अवश्य ऐसा था जिसने न टोपी उतारी, न क्रॉस-चिन्ह बनाया। निखल्यूडोव ने इसे पहले कभी न देखा था। यह इस समय रेलिङ्ग के पास खड़ा हुआ निखल्यूडोव की ओर एकटक देख रहा था। वृद्ध थेगले लगा कोट, मोटा पाजामा और गठा हुआ जूता पहने था। उसकी गर्दन में झोली पड़ी थी और सिर पर बहुत दिनों तक इस्तेमाल की गई बालों की टोपी रक्खी हुई थी।

निखल्यूडोव के गाड़ीवान ने अपनी सीधी की हुई टोपी को यथास्थान रखते हुए वृद्ध से पूछा—क्यों बुड्ढे, प्रार्थना क्यों नहीं करते? बपतिस्मा नहीं हुआ है क्या?

चीथड़ों से लदे हुए वृद्ध ने निश्चयात्मक, क्षोभकारी स्वर में, एक-एक शब्द का स्पष्ट रूप से उच्चारण करते हुए, शीघ्रतापूर्वक कहा—प्रार्थना किससे करें?

ड्राइवर ने ऐंठते-इमठते कहा—किससे? ईश्वर से, और किससे?

"और तुम मुझे दिखा सकते हो कि तुम्हारा यह ईश्वर कहाँ बैठा है?"

इस वृद्ध की मुद्रा से कुछ ऐसी गम्भीरता और दृढ़ता टपकती थी कि ड्राइवर को बोध हुआ कि उसका पाला एक अचल प्रकृति व्यक्ति के साथ पड़ा है, अतः वह कुछ झेंप सा गया; पर वह अपनी इस झेंप को प्रकट न करना चाहता था, अन्यथा उपस्थित में उसकी हँसी होती, इसलिए उसने झटपट उत्तर दिया—कहाँ बैठा है? स्वर्ग में और कहाँ?

"और तुम वहाँ फेरा लगा आए हो क्या ?"

"मैं चाहे वहाँ फेरा लगा आया होऊँ या न लगा आया होऊँ, यह सब कोई जानता है कि ईश्वर से प्रार्थना की जाती है।"

वृद्ध ने उसी कठोर, गम्भीर भृकुटी के साथ कहा—ईश्वर को कभी किसी ने नहीं देखा। उसे विघोपित करने वाला एक मात्र उसका पुत्र था, जो अब उसके हृदय में वास करता है।

ड्राइवर ने अपनी चाबुक का दस्ता अपनी पेटी में करते हुए और अपने घोड़े की ज़ीन ठीक करते हुए कहा—बस, मालूम पड़ गया कि तुम ईसाई नहीं हो, आले-दिवाले की पूजा करने वाले हो।

कोई हँसा।

पास ही खड़े एक अधेड़ आदमी ने कहा—बाबा, तुम्हारा धर्म क्या है ?

वृद्ध ने पहले ही की भाँति दृढ़ और निश्चयात्मक स्वर में कहा—मेरा कोई धर्म नहीं है, क्योंकि मैं अपने सिवा और किसी में आस्था नहीं रखता।

निखल्यूडोव ने उससे वार्तालाप आरम्भ करते हुए कहा—तुम्हें अपने ऊपर आस्था कैसे हो गई ? सम्भव है, तुम भूल कर रहे होगे।

वृद्ध ने निश्चयात्मक भाव से सिर हिला कर कहा—मैंने अपने जीवन में कभी भूल नहीं की।

निखल्यूडोव ने पूछा—तो फिर ये इतने सारे धर्म क्यों हैं ?

"आदमी अपने आप पर आस्था नहीं रखता, दूसरों पर

आस्था रखता फिरता है, इसीलिए इतने धर्म उत्पन्न हो गए हैं।' कभी मैं भी दूसरों पर आस्था रक्खा करता था; और तब मैं दल-दल में फँस गया था, और यह न जानता था कि इससे किस प्रकार निकला जाय। सनातनी और नवीन धर्मावलम्बी, यहूदी और ख़िलेस्टी, पोपट्सी और बेज़पोपोट्सी, ग्रवस्ट्रियक और मोलोकन और स्कोपट्स्की—सारे धर्म और सारे सम्प्रदाय केवल अपनी बड़ाई करना जानते थे, और इसीलिए बन्द आँखों वाले पिल्लों की तरह इधर-उधर टटोलते फिरते हैं। धर्म चाहे जितने हों, पर सार-वस्तु एक है, और वह आप में है, वह मुझमें है, वह उसमें है। इसलिए यदि हर एक आदमी अपने आप पर आस्था रखने लगे तो सब सङ्गठित हो जायँ; सब अपना स्वरूप ग्रहण कर लें और सबका एक रूप हो जाय।"

वृद्ध पुरुष ज़ोर-ज़ोर से बोल रहा था और बीच-बीच में चारों ओर निगाह डाल लेता था। यह स्पष्ट था कि वह अपना वक्तव्य यथासम्भव अधिक से अधिक व्यक्तियों को सुनाना चाहता था।

"और तुम्हारी यह अवस्था बहुत दिनों से है?"

"मेरी? बहुत दिनों से। इन लोगों को मुझे यन्त्रणाएँ देते यह तेईसवाँ साल है।"

"यन्त्रणाएँ देते! वह कैसे?"

"बस, जिस तरह इन्होंने ईसा को यन्त्रणाएँ दी थीं उसी तरह ये मुझे भी यन्त्रणाएँ दे रहे हैं। ये लोग मुझे पकड़ते हैं और कभी अदालतों में ले जाते हैं, कभी पादरियों के सामने, कभी स्क्राइबों के सामने, और कभी पारसियों के सामने। एक बार इन्होंने मुझे

पागलख़ाने में भी डाल दिया था, पर ये मेरा बिगाड़ क्या सकते हैं?—मैं जीवन्मुक्त ठहरा। मुझसे पूछते हैं—'तुम्हारा क्या नाम है?' और समझते हैं कि मैं उन्हें अपना नाम बताऊँगा। पर मैं अपना कोई नाम नहीं बताता। मेरा नाम ही कोई नहीं; मैंने सब कुछ दे डाला, मेरा न कोई नाम है, न कोई देश, न कोई निवास-स्थान। मैं बस ख़ुद ही हूँ। "तुम्हारा नाम क्या है?" "मनुष्य।" "तुम्हारी आयु क्या है?" मैं बोला—"मैं वर्ष नहीं गिना करता, गिन भी नहीं सकता; मैं सदैव से हूँ और सदैव रहूँगा।" "तुम्हारे माता-पिता कौन हैं?" "मेरा कोई माता-पिता नहीं है, पृथ्वी माता, और ईश्वर के सिवा मेरा और कोई नहीं है। ईश्वर ही मेरा पिता है।" "और ज़ार! तुम ज़ार को मानते हो?" "क्यों नहीं, वह अपने घर का ज़ार है, मैं अपने घर का ज़ार हूँ।" इस पर वे आपस में कहते हैं—"इससे बातें करने में क्या रक्खा है?" और मैं उत्तर देता हूँ—"और तुमसे कहता कब हूँ कि मुझसे बातें करो?" और बस मुझे पीड़ाएँ देना शुरू कर दिया गया।"

निख़्ल्यूडोव ने पूछा—और अब तुम कहाँ जा रहे हो?

"जहाँ राम ले जाय। जहाँ काम मिल जाता है, कर लेता हूँ। काम नहीं हो सकता तो भीख माँग लेता हूँ।"

वृद्ध ने देखा कि किनारा आ लगा है, अतः वह अपना कथन समाप्त करके विजय-सूचक मुद्रा के साथ श्रोताओं की ओर मुड़ा। निख़्ल्यूडोव ने जेब से बटुआ निकाला और उसे कुछ देना चाहा, पर उसने अस्वीकार कर दिया और कहा—मैं यह ग्रहण नहीं करता, हाँ, रोटी ग्रहण कर लेता हूँ।

"अच्छा, तो क्षमा करो।"

"क्षमा करने की कोई बात नहीं है, आपने मुझे किसी तरह दुःख नहीं पहुँचाया है, और मुझे दुःख पहुँचाना सम्भव भी नहीं है।"—वृद्ध ने अपनी गर्दन में झोली डालते-डालते कहा।

इधर गाड़ी उतार कर घोड़े जोते जा चुके थे।

निखल्यूडोव नाविक को कुछ देकर गाड़ी में सवार हुआ। ड्राइवर बोला—सरकार, आप उससे इतनी देर तक न जाने कैसे बातें करते रहे। यही बाज़ारू शोहदा है, और बस।
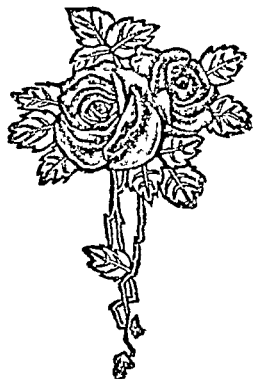
दी-तट पार कर लेने के बाद ड्राइवर ने निखल्यूडोव से पूछा—किस होटल को ले चलूँ सरकार?

"कौन सा होटल सब से अच्छा है?"

"साइबेरियन होटल से अच्छा और कौन सा हो सकता है, पर दुखोव का होटल भी बुरा नहीं है।"

"जहाँ चाहो, ले चलो।"

ड्राइवर फिर तिर्छा बैठ गया और गाड़ी फ़ुर्ती के साथ चलाने लगा। नगर इस ढंग के अन्य सारे नगरों की ही भाँति था। वही घर, वही ऊँची खिड़कियाँ और हरी छतें, वही गिर्जे, प्रमुख सड़कों पर वही दूकानें और भण्डार, और वही पुलिसमैन। पर प्रायः सारे मकान लकड़ी के बने हुए थे और सड़कें पटी हुई न थीं। एक प्रधान सड़क पर, होटल के द्वार पर गाड़ीवान ने गाड़ी रोकी, पर वहाँ कोई कमरा ख़ाली न था, अतः वह दूसरे होटल को गाड़ी ले चला। और यहाँ आकर निखल्यूडोव को—जहाँ तक आराम और स्वच्छता

का सम्बन्ध था—दो महीने बाद एक बार फिर वही अभ्यस्त वातावरण मिला। यद्यपि जिस कमरे में उसे स्थान दिया गया था, वह कुछ सजा-बजा न था, पर दो महीने तक सरायों, गाड़ियों और देहाती मकानों में दिन काटने के बाद उसने इसी को ग़नीमत समझा। सब से पहले उसे पिस्सुओं से पीछा छुड़ाने की चिन्ता हुई। पड़ाव से आने के बाद लाख चेष्टा करने पर भी वह इन पिस्सुओं से पीछा न छुड़ा पाता था। उसने असबाब खोला, रूसी बाथ लिया, और फिर शहरी पोशाक पहनी—इस्तरी लगी कमीज़, कुछ मसोसा हुआ पाजामा, फ़्रॉक कोट और ओवर कोट—और इसके बाद वह गवर्नर से भेंट करने को चला। होटल वाले ने गाड़ी बुलवाई, जिसका घोड़ा बड़ा बढ़िया था। वह शीघ्र ही एक विशाल भवन के पोर्च में जा पहुँचा, जिसके आगे सन्तरी और एक पुलिसमैन खड़े थे। भवन के आगे-पीछे उद्यान था, जिसमें...... के पेड़ों के अतिरिक्त, जिनकी नग्न शाखाएँ फैली हुई थीं,...... के पेड़ भी थे। जनरल की तबीयत अच्छी न थी और वह किसी से भेंट न करते थे; पर तो भी निखल्यूडोव ने उनके पास अर्दली के हाथ अपना कार्ड पहुँचा दिया, और अर्दली अनुकूल उत्तर लेकर वापस आया।

"आप भीतर पधारिए।"

हॉल, अर्दली, प्यादे, ज़ीने, पॉलिश किए फ़र्शों वाली नृत्यशाला—सब कुछ पीटर्सबर्ग जैसा ही था, अन्तर केवल इतना ही था कि इसमे वैभव और अस्वच्छता के चिन्ह विशेष रूप से विद्यमान थे।

निर्भीक थे, कुशल थे, रोबदार सूरत-शक्ल वाले थे, और मदोन्मत्त होने पर भी व्युत्पन्न-मति का परिचय देते थे, और यही कारण था जो उन्हें इतने ऊँचे और सार्वजनिक पद पर नियत किया और बने रहने दिया गया था।

उन्हें निखल्यूडोव ने बताया कि जिस व्यक्ति के साथ उसका घनिष्ट सम्पर्क है, वह एक स्त्री है कि उसको अनुचित रूप से दण्ड दिया गया है, और कि उसकी ओर से सम्राट के पास प्रार्थना-पत्र भेजा गया है।

जनरल ने कहा—अच्छा, फिर?

"मुझे पीटर्सबर्ग में वचन दिया गया था कि इस स्त्री के दण्ड-निर्णय की सूचना मुझे इस मास में और इस स्थान पर भेज दी जायगी......।"

जनरल ने अपना हाथ फैलाया और मोटी-सोटी अँगुलियों से घण्टी बजाई। इस बीच में उनका निखल्यूडोव की ओर देखना, और सिगरेट पीना, और ज़ोर-ज़ोर से खाँसना बराबर जारी था।

निखल्यूडोव बोला—तो मैं यही चाहता हूँ कि इस स्त्री को उस समय तक यहीं रोक रक्खा जाय, जिस समय तक सम्राट का उत्तर न आ जाय।

एक अर्दली वर्दी पहने दाखिल हुआ।

जनरल ने अर्दली से कहा—"जाकर पूछो, अन्ना वैसलोटना उठ बैठीं या नहीं, और थोड़ी सी चाय और ले आओ।" इसके बाद उन्होंने निखल्यूडोव की ओर देखते हुए पूछा—"हाँ, तो फिर?"

"मेरा दूसरा अनुरोध इसी दल के एक राजनीतिक क़ैदी के सम्बन्ध में है।"

जनरल ने मर्म-भरे ढङ्ग से सिर हिला कर कहा—सचमुच ?

"वह बेहद बीमार है, मरणासन्न है—और शायद उसे यहाँ के अस्पताल में छोड़ दिया जायगा। उसके साथ एक राजनीतिक स्त्री क़ैदी रुक जाना चाहती है।"

"इसके साथ उसका कोई नाता नहीं है ?"

"जी नहीं, पर यदि उसे उसके पास रहने दिया जाय तो वह उससे विवाह कर लेगी।"

जनरल प्रोज्ज्वल नेत्रों से निखल्यूडोव की ओर देखते रहे और उसे पराजित करने की स्पष्ट इच्छा से प्रेरित होकर, सिगरेट पीते हुए चुपचाप उसकी बात सुनते रहे।

जब निखल्यूडोव ने अपना कथन समाप्त कर दिया तो जनरल ने मेज़ पर से एक किताब उठाई और अपनी अँगुलियाँ भिगो कर उसके सफे पलट कर विवाह सम्बन्धी धाराओं को खोजा।

उन्होंने पुस्तक से दृष्टि उठा कर पूछा—और उसे क्या दण्ड मिला है ?

"उसे—स्त्री को ? सपरिश्रम निर्वासन।"

"तब तो फिर विवाह के द्वारा भी इस दण्ड से दण्डित व्यक्ति की अवस्था में कोई अन्तर नहीं पड सकता।"

"जी हाँ, पर .....।"

"क्षमा करिए। यदि उसके साथ कोई स्वतन्त्र व्यक्ति विवाह करेगा तो भी उसे अपना दण्ड भोगना पड़ेगा। ऐसे अवसरों पर

निर्भीक थे, कुशल थे, रोबदार सूरत-शक्ल वाले थे, और
होने पर भी व्युत्पन्न-मति का परिचय देते थे, और यही
जो उन्हें इतने ऊँचे और सार्वजनिक पद पर नियत किया
रहने दिया गया था।

उन्हें निखल्यूदोव ने बताया कि जिस व्यक्ति के साथ
घनिष्ट सम्पर्क है, वह एक स्त्री है कि उसको अनुचित रूप
दिया गया है, और कि उसकी ओर से सम्राट के पास आ
भेजा गया है।

जनरल ने कहा—अच्छा, फिर?

"मुझे पीटर्सबर्ग में वचन दिया गया था कि इस स्त्री के
निर्णय की सूचना मुझे इस मास में और इस स्थान पर भे
जायगी......।"

जनरल ने अपना हाथ फैलाया और मोटी-मोटी अँगुलि
ने घण्टी बजाई। इस बीच में उनका निखल्यूदोव की
देखना, और सिगरेट पीना, और ज़ोर-ज़ोर से खाँसना बरा
जारी था।

निखल्यूदोव बोला—जो मैं यही चाहता हूँ कि इस स्त्री
उस समय तक यहीं रोक रक्खा जाय, जिस समय तक सम्राट प

"मेरा दूसरा अनुरोध इसी दल के एक राजनीतिक क़ैदी के सम्बन्ध में है।"

जनरल ने मर्म-भरे ढङ्ग से सिर हिला कर कहा—सचमुच ?

"वह बेहद बीमार है, मरणासन्न है—और शायद उसे यहाँ के अस्पताल में छोड़ दिया जायगा। उसके साथ एक राजनीतिक स्त्री कैदी रुक जाना चाहती है।"

"इसके साथ उसका कोई नाता नहीं है ?"

"जी नहीं, पर यदि उसे उसके पास रहने दिया जाय तो वह उससे विवाह कर लेगी।"

जनरल प्रोज्ज्वल नेत्रों से निखल्यूडोव की ओर देखते रहे और उसे पराजित करने की स्पष्ट इच्छा से प्रेरित होकर, सिगरेट पीते हुए चुपचाप उसकी बात सुनते रहे।

जब निखल्यूडोव ने अपना कथन समाप्त कर दिया तो जनरल ने मेज़ पर से एक किताब उठाई और अपनी अँगुलियाँ भिगो कर उसके सफे पलट कर विवाह सम्बन्धी धाराओं को खोजा।

उन्होंने पुस्तक से दृष्टि उठा कर पूछा—और उसे क्या दण्ड मिला है ?

"उसे—स्त्री को ? सपरिश्रम निर्वासन।"

"तब तो फिर विवाह के द्वारा भी इस दण्ड से दण्डित व्यक्ति की अवस्था में कोई अन्तर नहीं पड़ सकता।"

"जी हाँ, पर......।"

"क्षमा करिए। यदि उसके साथ कोई स्वतन्त्र व्यक्ति विवाह करेगा तो भी उसे अपना दण्ड भोगना पड़ेगा। ऐसे अवसरों पर

यह प्रश्न उठता है, दोनों में से किसका दण्ड गुरुतर है। स्त्री का या पुरुष का ?"

दोनों को सपरिश्रम कारावास का दण्ड दिया गया है।

जनरल ने हँस कर कहा—तो दोनों का जोड़ा है। स्त्री को भी वही दण्ड मिला है जो उसे मिला है। पुरुष बीमार है इसलिए उसे यहाँ छोड़ा जा सकेगा, और उसका कष्ट दूर करने के लिए जो कुछ किया जा सकेगा, किया जायगा। पर स्त्री के सम्बन्ध में यह बात है कि यदि वह विवाह कर ले तो भी उसके साथ नहीं रुक सकती।

अर्दली ने आकर सूचना दी—श्रीमती जी काफी पी रही हैं।

जनरल ने सिर हिलाया और कहा—पर मैं इस पर एक बार फिर विचार करूँगा। उन दोनों के क्या नाम हैं ? आप लिख दीजिए।

निखल्यूदोव ने दोनों के नाम लिख दिए।

मरणासन्न व्यक्ति से भेंट करने की प्रार्थना के उत्तर में जनरल ने असहमति प्रकट की और कहा—मैं यह भी न करा सकूँगा। वैसे मुझे आप पर किसी तरह का शुभा नहीं है, पर आप इस कैदी में और अन्य क़ैदियों में दिलचस्पी लेते हैं और आपके पास पैसा है, और यहाँ हम लोग पैसे के लिए सब कुछ करने को तैयार हो जाते हैं। मुझे आदेश दिए जाते हैं—"रिश्वत का नाम-निशान मिटा दो।" पर जब हर कोई रिश्वत लेता है तो उसे किस तरह मिटाया जा सकता है ? और ओहदा जितना छोटा हुआ, रिश्वत के लोग उतने ही अधिक लालायित रहे। इन तीन हज़ार मील से अधिक की दूरी पर यदि कोई इसका पता लगाना भी चाहे तो कैसे करे ?

वहा तो छोट स छोटा अफ़सर भी अपने आपको छोटा-मोटा ज़ार समझता है, ठीक जिस तरह मैं अपने आपको यहाँ ज़ार समझे बैठा हूँ (और जनरल हँसे)। आप राजनीतिक क़ैदियों को देखने गए होंगे, आपने कुछ मुट्ठी गर्म की होगी, तब कही आपको अनुमति मिली होगी ?? है न यही बात ?

"जी हाँ, यही बात है।"

"मैं जानता हूँ कि आप रिश्वत देने को वाध्य हो गए होंगे। आप किसी राजनीतिक कैदी के साथ समवेदना करते हैं और उससे किसी न किसी प्रकार भेंट करना चाहते हैं, और इन्स्पेक्टर या सैनिक रिश्वत इसलिए ले लेता है कि वह बारह आने रोज़ का मज़दूर है, और उसे अपने बाल-बच्चों का पेट भरना पड़ता है। उसकी और आपकी अवस्था में मैं भी वही करता जो उसने और आपने किया। पर मैं अपनी अवस्था में कानून से इञ्च भर भ्रष्ट नहीं होना चाहता, क्योंकि आख़िर मैं भी तो आदमी ही हूँ, सम्भव है मुझे भी दया आ जाय। मैं शासन-विधान-सङ्घ का सदस्य हूँ और मुझे यह पद कुछ ख़ास शर्तों पर दिया गया है, और मुझे इन शर्तों को हर हालत में पूरा करना चाहिए।.. हाँ, तो अब यह कज़िया तो ख़तम हुआ, अब आप बताइए, राजधानी में क्या हो रहा है।" और इसके बाद जनरल ने अपनी विद्वत्ता, बुद्धिमत्ता और मानवी सहृदयता प्रकट करने की स्पष्ट अभिलाषा से प्रेरित होकर भाँति-भाँति के प्रश्न करने और वृत्तान्त सुनाने आरम्भ कर दिए।

नरल ने निखल्यूडोव को विदा करते-करते कहा—और हाँ, आजकल आप कहाँ ठहरे हुए हैं? दुखोव के यहाँ? बड़ी बुरी जगह है। आज शाम को पाँच बजे आकर हमारे साथ भोजन करिए। आप अंग्रेज़ी बोलना जानते होंगे?

"जी हाँ, जानता हूँ।"

"बहुत ठीक! आजकल यहाँ एक अंग्रेज़ यात्री आया हुआ है। वह निर्वासन समस्या का अध्ययन कर रहा है और साइबेरिया की जेलों का निरीक्षण कर रहा है। वह भी आज हमारे साथ ही भोजन करेगा, आप भी अवश्य आइए और उससे भेंट करिए। हम पाँच बजे भोजन करते हैं, और मेरी स्त्री समय की बड़ी पाबन्द है। उसी समय मैं आपको उस स्त्री और उस रोगी के सम्बन्ध में भी उत्तर दूँगा। सम्भव है, उसके साथ यहाँ किसी को छोड़ा जा सके।"

जनरल से विदा लेकर निखल्यूडोव पोस्ट ऑफ़िस की ओर

गाडी में रवाना हुआ ; उसे इस समय अत्यन्त सजीवता और स्फूर्ति की अनुभूति हो रही थी।

पोस्ट ऑफ़िस निचली कुर्सी का कमरा था। कुछ कर्मचारी बाडे के पीछे बैठे हुए थे और जनता की आवश्यकताओं को पूरा कर रहे थे। जनता काफ़ी एकत्र थी। एक कर्मचारी सिर झुकाए ख़तों पर मुहर लगा-लगा कर दूसरे हाथ से फ़ुर्ती के साथ हटाता जा रहा था। निखल्यूडोव को अधिक देर तक प्रतीक्षा न करनी पड़ी। उसके नाम डाक से जो कुछ आया था वह उसके हवाले फ़ौरन कर दिया गया। बहुत कुछ आया था, कई पत्र, रुपया, पुस्तकें और 'European Messenger' का ताज़ा अङ्क। पत्रों में एक बढ़िया सा रजिस्टर्ड लिफाफा था, जिस पर स्वच्छ लाल मुहर लगी हुई थी। उसने मुहर तोडी और लिफाफे में सैलेनिन का पत्र और कोई सरकारी काग़ज़ देख कर वह बेतरह उत्तेजित हो उठा और उसके हृदय की गति बन्द हो गई। यह कटूशा के प्रार्थना-पत्र का उत्तर था। कैसा उत्तर होगा? अस्वीकृति तो न होगी? निखल्यू-डोव ने नन्हे-नन्हें अस्पष्ट अक्षरों मे लिखे गए पत्र पर निगाह दौडाई और मानो उसके सिर चिन्ता का भार उतर गया। उसने लम्बी साँस ली। उत्तर अनुकूल था।

सैलेनिन ने लिखा था—"प्रिय मित्र, हमारे अन्तिम वार्तालाप का मेरे ऊपर बड़ा गहरा प्रभाव पड़ा। मसलोवा के सम्बन्ध में तुम्हारी बात ही ठीक निकली। मैंने मामले को ध्यानपूर्वक देखा है, और अब मुझे पता चलता है कि उसके साथ घोर अन्याय किया गया है। इसकी औषधि केवल अपील-कमेटी के हाथ में थी,

और तुमने उसके सामने मामला पेश किया भी। मामले के विचार में मैंने भी सहायता दी, और मैं इस पत्र के साथ ही दण्ड-परिवर्तन सम्बन्धी काग़ज़ की नक़ल भेजता हूँ। तुम्हारी बुआ कैथ-रीना इवानोला ने मुझे तुम्हारा पता बताया था, और उसी पते पर मैं यह पत्र भेज रहा हूँ। असली काग़ज़ उस स्थान पर भेजा गया है, जहाँ मसलोवा को मामला चलने से पहले क़ैद रक्खा गया था, और वहाँ से वह सम्भवतः फ़ौरन ही साइबेरिया के प्रधान अफ़सर के पास भेज दिया जायगा। यह हर्षदायक समाचार तुम्हें सब से पहले मैं ख़ुद ही सुनाना चाहता था। सप्रेम, सेलेनिन।"

सरकारी काग़ज़ की प्रतिलिपि इस प्रकार थी —"सम्राट के नाम भेजे गए प्रार्थना-पत्रों का ऑफ़िस। (यहाँ अनेकानेक सरकारी विधि-विधानों का उल्लेख किया गया था।) हिज़ मैजेस्टी के ऑफिस के प्रधान के आदेशानुसार देहाती स्त्री कैटेरीना मसलोवा को उसके प्रार्थना-पत्र के उत्तर में सूचित किया जाता है कि सम्राट महोदय ने दया करके उसके सपरिश्रम निर्वासन दण्ड को साइ-बेरिया के किसी अपेक्षाकृत कम दूर स्थान पर साधारण निर्वासन के रूप में बदल दिया है।"

यह समाचार बड़ा हर्षदायक और महत्वपूर्ण था। निख्ल्यू-डोव मसलोवा के लिए, और साथ ही अपने लिए अधिक से अधिक जिस बात की कामना कर सकता था वह पूरी हो गई थी। इसमें सन्देह नहीं कि उसकी नवीन अवस्था के साथ ही नवीन जटि-लताओं का भी जन्म होगा। यदि वह क़ैदी बनी रहती तो उसके

साथ विवाह करने का इसके सिवा कोई अर्थ न होता कि वह उसके कष्ट-भार को हलका कर सकता। पर अब उन दोनों के एक साथ जीवन व्यतीत करने के मार्ग में कोई बाधा न थी, और निखल्यूडोव ने अभी इसकी कोई तैयारी न की थी। और इसके अलावा सायमनसन के साथ जो उसका नवीन सम्बन्ध स्थापित हो गया है, उसका क्या रहा? उसने कल जो शब्द कहे थे उनका क्या मर्म था? और यदि वह सायमनसन के साथ वैध सम्बन्ध स्थापित करने को सहमत हो गई तो यह उसके लिए मङ्गलदायक होगा या अमङ्गलदायक? वह इन सारे प्रश्नों का कोई निर्णय न कर सका और उसने उन पर विचार करना ही छोड़ दिया। उसने सोचा—"यह सब कुछ स्वतः ही धीरे-धीरे सुलझ जायगा; मुझे इस सम्बन्ध मे अभी कोई चिन्ता न करनी चाहिए, वल्कि जितनी जल्दी सम्भव हो उतनी जल्दी उसे यह शुभ समाचार सुनाना और मुक्त कराना चाहिए।" उसने सोचा कि सरकारी काग़ज़ की नकल ही काफी होगी, अतः वह पोस्ट ऑफ़िस से गाडी में सवार होकर सीधा जेल की ओर चला।

यद्यपि उसे उस दिन प्रात.काल गवर्नर से जेल में प्रवेश करने की कोई अनुमति न मिली थी, तथापि वह व्यक्तिगत अनुभव के द्वारा जानता था कि वड़े अफसर जो काम नहीं करते, उसे निम्नस्थ कर्मचारी सहज में कर देते हैं, अत. वह प्रयत्न करके जेल में जाने और कटूशा को यह सम्वाद सुनाने और सम्भव हो तो उसे मुक्त कराने, और साथ ही क्रिल्टसोव के स्वास्थ्य के सम्बन्ध में पूछताछ करने, और सुबह गवर्नर ने जो कुछ कहा था,

वह उसे और मेरी पैवलोटना को सुनाने की इच्छा से सीधा जेल पहुँचा।

जेल का इन्सपेक्टर लम्बे क़द का रोबदार सूरत वाला व्यक्ति था, जिसकी मूँछें और गलमुच्छे मुँह के पास आकर मुड़ गईं थीं। वह निखल्यूडोव से बड़े कठोर भाव से मिला और उसने उससे साफ़-साफ़ कह दिया कि वह अपने अफ़सर की विशेषाज्ञा बिना किसी बाहरी आदमी को क़ैदियों से भेंट करने की अनुमति नहीं दे सकता। जब निखल्यूडोव ने कहा कि उसे बड़े-बड़े शहरों तक में क़ैदियों से भेंट करने की अनुमति मिलती रही है, तो उसने उत्तर दिया :—

"होगा, मगर मैं अनुमति नहीं दे सकता।" और उसके लहजे से व्यञ्जित होता था—"तुम शहरी लोग समझते होगे कि हमें हका-बका कर दोगे, पर हम पूर्वदेशीय साइबेरिया वाले भी क़ायदा-क़ानून जानते हैं, और इसकी तुम्हें शिक्षा तक दे सकते हैं।"

सम्राट के ऑफ़िस के आदेश की प्रतिलिपि का इन्सपेक्टर पर कुछ प्रभाव नहीं पड़ा। उसने गिने-चुने शब्दों में निखल्यूडोव के जेल में जाने के अनुरोध को अस्वीकार कर दिया। वह निखल्यूडोव के इस सरल निष्कर्ष पर कि आदेश की प्रतिलिपि ही क़ैदी को मुक्त कराने के लिए पर्याप्त होगी, घृणा-व्यञ्जक ढङ्ग से मुस्कराया और बोला कि कोई भी हो, उसकी मुक्ति के लिए सब से पहले उसके अफ़सर का आदेश उसे मिलना चाहिए। हाँ, वह मसलोवा को यह सूचना देने को अवश्य तैयार हो गया कि उसके दण्ड-परिवर्तन की राजाज्ञा हो गई है। उसने यह भी वचन दिया कि उसके अफ़सर

के पास से आज्ञा आने के बाद वह मसलोवा को घण्टे भर भी जेल में न रक्खेगा और उसे तत्काल मुक्त कर देगा। उसने क्रिल्टसोव का भी कोई समाचार न दिया, और यह तक बताने से इनकार कर दिया कि इस नाम का कोई कैदी वहाँ है भी या नहीं। और इस प्रकार निखल्यूडोव लगभग ख़ाली हाथ गाडी मे सवार होकर होटल वापस आ गया।

इन्स्पेक्टर की कठोरता का कारण यह था कि जेल में नियत संख्या से दुगुनी संख्या में क़ैदी ठूसने के कारण Typhus ज्वर फैल गया था। गाडीवान ने निखल्यूडोव को बताया—सरकार, रोज़ बीसियों आदमी मर रहे हैं। कोई महामारी सी आ गई है। आज ही बीस आदमी दफ़नाए गए हैं।
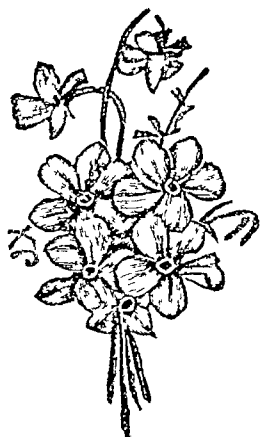
इक्कीसवाँ परिच्छेद

जेल से कोरा जवाब मिलने पर भी निखल्यूडोव उसी उल्लसित सजीवता के साथ गवर्नर के ऑफ़िस की ओर यह देखने के लिए रवाना हो गया कि मसलोवा की राजाज्ञा अभी वहाँ आई या नहीं। राजाज्ञा अभी न आई थी, अत निखल्यूडोव सीधा होटल पहुँचा और उसने तत्काल सैलेनिन और ऐडवोकेट को पत्र लिखे। पत्र समाप्त करने के बाद उसने घडी की ओर देखा और उसे पता चला कि जनरल के भोज में सम्मिलित होने का समय आ पहुँचा।

मार्ग में वह फिर मन ही मन आश्चर्य करने लगा कि कटूशा दण्ड सम्बन्धी राजाज्ञा को किस प्रकार ग्रहण करेगी। वह अब किस प्रकार दिन व्यतीत करेगी? वह उसके साथ किस रूप में रहेगा? और सायमनसन के प्रेम की क्या दशा होगी? उसके साथ उसका कैसा नाता रहेगा? उसने स्मरण किया कि कटूशा में क्या कुछ

परिवर्त्तन हो गया है, और इससे उसे उसके अतीत का स्मरण हो आया।

उसने मन ही मन कहा—"मुझे इस समय इन बातों पर विचार न करना चाहिए।" और उसने उसी प्रकार अपने मन से इन विचारों को तिरोहित कर दिया। उसने मन ही मन कहा—"समय आएगा तो देखा जायगा।" और वह सोचने लगा कि वह जनरल से क्या कहेगा।

जनरल का सहभोज अमीरों और उच्च अफसरों के वैभव के अनुरूप बड़ी शान का रहा, और इन कई महीनों से विलासपूर्ण सामग्रियों का तो क्या पूछना, जीवन की दैनिक आवश्यकताओं तक से वञ्चित रहने के बाद निखल्यूडोव को अभ्यस्त वातावरण में आकर और सुख ऐश्वर्य का आनन्द लेकर बड़ा ही हर्ष हुआ। गृह-स्वामिनी पीटर्सबर्ग की प्रसिद्ध महिला थी, निकोलस प्रथम के जमाने में राज-दरबार की मेड ऑफ़ ऑनर रह चुकी थीं, और फ्रेञ्च अत्यन्त सुगमता और रूसी अत्यन्त भद्दे तरीके से बोलती थीं। वह ख़ूब तन कर चलती, और जब हाथ हिलातीं तो कुहनियाँ कमर के पास रखतीं। वह अपने पति की दुर्बलता के प्रति शान्त, पर किञ्चित विषण्ण सहृदयता का आचरण करती, और अतिथियों के साथ बेहद नम्रता के साथ पेश आतीं, पर साथ ही यह भी न भूल जाती कि कौन क्या है। उन्होंने निखल्यूडोव का इस प्रकार स्वागत किया जिस प्रकार किसी अन्तरङ्ग वर्ग के सदस्य का किया जाता है। उनकी परिष्कृत पर साथ ही अलक्षित सी चाटुकारिता ने निखल्यूडोव को अपने

सद्‌गुणों की ओर से एक बार फिर सचेत कर दिया, और उसे एक प्रकार सन्तोष की अनुभूति हुई। उन्होंने उसे अवगत कर दिया कि वह उसके उस उदात्त, पर किञ्चित विलक्षण आचरण से अभिज्ञ हैं जिससे प्रेरित होकर वह साइबेरिया आया है, और कि वह उसे एक असाधारण व्यक्ति समझती हैं। इस संस्कृत चाटुकारिता के, और जनरल के भवन के वैभव ऐश्वर्य के वशवर्ती होकर निखल्यूडोव इस सुन्दर वातावरण का, स्वादिष्ट भोजन का, और अपने वर्ग के शिक्षित समुदाय के साथ वार्तालाप करने के सुख और निश्चिन्तता का जी भर कर आनन्द लेने लगा, और उसे अनुभूति होने लगी कि उसके अस्तित्व के पिछले कुछ महीने वास्तव में स्वप्न थे, और वह प्रकृत जगत में अब कहीं जाकर प्रवेश कर पाया है।

गृह-सदस्यों—जनरल की पुत्री, पुत्री के पति, और एक एडीकाङ्ग—के अतिरिक्त एक अङ्गरेज़ था। एक व्यापारी था जो सोने की खानों में रुचि रखता था, और एक दूरस्थ साइबेरियन नगर का गवर्नर था। निखल्यूडोव को ये सब लोग हर्षदायक प्रतीत हुए।

अङ्गरेज़ स्वस्थ व्यक्ति था और उसका चेहरा गुलाब की तरह खिला हुआ था। वह बहुत बुरी फ्रेञ्च बोलता था, पर अपनी निजी भाषा पर उसका बड़ा सुन्दर और प्रभावोत्पादक अधिकार था। उसने बहुत कुछ देखा था, और उसका अमेरिका, भारत, जापान और साइबेरिया विषयक वृत्तान्त अत्यन्त रोचक था।

सोने की खानों में रुचि रखने वाला युवक व्यापारी (एक

देहाती का पुत्र) लण्डन की बनी रात की पोशाक पहने था, और उसकी कमीज़ में हीरे के बटन लगे हुए थे। उसके घर पर पुस्तकों का बड़ा सुन्दर संग्रह था, और वह परोपकार के कार्यों में खुली मुट्ठी दान दिया करता था; उसके विचार उदार यूरोपियन थे। यह युवक निखल्यूडोव को विशेष रूप से रोचक और उल्लसित प्रतीत हुआ। उसने इसे नवीन यूरोपियन सभ्यता के स्वस्थ रूसी ग्रामीणों पर पड़ने वाले प्रभाव का सुन्दर समीचीन उदाहरण समझा।

दूरस्थ साइबेरियन नगर का गवर्नर वही सरकारी डिपार्टमेंण्ट का भूतपूर्व डाइरेक्टर था जिसकी निखल्यूडोव के पीटर्सबर्ग वास के अवसर पर शहर भर में चर्चा हो रही थी। वह मांसल शरीर का अत्यन्त पतले बालों वाला व्यक्ति था, जिसके नेत्र नीले थे, हाथ सुपोषित और श्वेत थे, अँगुलियों में अँगूठियाँ पड़ी थीं, और वह मृदुल भाव से मुस्कराता था; उसके शरीर का निचला भाग असाधारणतया मोटा था। गृह-स्वामी इस गवर्नर का आदर करते थे क्योंकि चारों ओर रिश्वत खाने वाले भरे-पड़े थे, और वही अकेला ऐसा व्यक्ति था जो रिश्वत न लेता था। गृह-स्वामिनी को गाने-बजाने का बड़ा शौक़ था, और वह स्वयं भी बड़ा बढ़िया पियानो बजाना जानती थीं। वह इस गवर्नर का आदर इसलिए करती थीं कि वह भी सङ्गीत का प्रेमी था और उनके गान-वाद्य में योग दिया करता था। निखल्यूडोव इस व्यक्ति के दूषणों से परिचित था, पर इस समय वह इतना उल्लसित-प्रफुल्लित था कि यह व्यक्ति तक उसे अरोचक प्रतीत न हुआ।

उज्ज्वल वर्ण का नीली-भूरी ठोडी वाला सजीव एडीकाङ्ग सतत भाव से सेवा करने की तत्परता प्रकट करता। निखल्यूडोव को उसका मृदुल स्वभाव बहुत भाया। पर सुन्दर युवा दम्पति—जनरल की पुत्री और उसका पति—उसे सब से अधिक अच्छे लगे। पुत्री सौन्दर्य-विहीन सूरत वाली सीधी-सादी युवती थी जो हर समय अपनी पहली दो सन्तानों में तन्मय हुई रहती थी। उसका पति लिबरल था, मास्को यूनीवर्सिटी से उसने ऑनर्स पास किया था। यह एक सरल चित्त, तीक्ष्ण बुद्धि युवक था, गवर्नमेण्ट सर्विस में था, Statistics एकत्र करने मे संलग्न रहता, और देशी दलों में विशेष रुचि प्रकट करता, और उनको नष्ट होने से बचाने का प्रयत्न करता। जनरल पुत्री इस युवक पर मोहित हो गई थी और माता-पिता के साथ बहुत दिनों तक मोर्चा लेने के बाद कहीं उससे विवाह करने मे सफल हो सकी थी।

इन सारे व्यक्तियों ने निखल्यूडोव के साथ न केवल सहृदयता और तन्मयता का ही व्यवहार किया, बल्कि वे ऐसे रोचक व्यक्ति से भेंट करके हर्षित भी हुए। जनरल वर्दी पहने और श्वेत क्रॉस धारण किए आए; उन्होंने निखल्यूडोव को इस प्रकार आव-भगत की, जिस प्रकार किसी घनिष्ट मित्र की आवभगत की जाती है। उन्होंने अतिथियों से बग़ल वाली मेज़ पर चल कर वोडका पीने और कुछ क्षुधोत्तेजक पदार्थ खाने का अनुरोध किया। जनरल ने निखल्यूडोव से पूछा कि सुबह उनके पास से जाकर उसने क्या-क्या किया, और निखल्यूडोव ने बताया कि वह पोस्ट ऑफ़िस गया था, और उन्हें सूचना दी कि उस उच्छिष्ट स्त्री का दण्ड साधारण

निर्वासन मे परिवर्त्तित कर दिया गया है, और अन्त में उससे एक बार फिर जेल में जाकर भेट करने की आज्ञा का अनुरोध किया।

जनरल को असन्तोष हुआ कि सहभोज के अवसर पर काम की बात चला दी गई। उन्होंने भृकुटी चढाई, कहा कुछ नही।

इसी समय मेज़ के पास अङ्गरेज़ आ पहुँचा और उन्होंने उससे कहा —एक गिलास वोडका पीजिए!

अङ्गरेज़ ने एक गिलास पिया, और कहा कि वह गिर्जा और कारख़ाना देखने गया था, और उसने विशाल निर्वासन वन्दीगृह का निरीक्षण करने की इच्छा प्रकट की।

जनरल ने निखल्यूडोव से कहा—"बस, बस, ठीक रहा; आप दोनों साथ-साथ जा सकेंगे।" उन्होंने एडीकाङ्ग से कहा—"इन्हें एक पास दे दो।"

निखल्यूडोव ने पूछा—आप कब चलिएगा?

अङ्गरेज़ ने कहा—मैं जेल में रात को जाना अच्छा समझता हूँ। सब मौजूद रहते हैं, और उन्हे कोई तैयारी करने का मौका नहीं मिलता; इससे उन्हें उनकी वास्तविक अवस्था मे देखने का अवसर मिलता है।

जनरल ने कहा—"अच्छा, यह उनका दर्शन उनके वास्तविक वैभव में करना चाहते हैं। करने दीजिए, मैं क्या करूँ? मै लिख-लिख कर थक गया। अब विदेशी समाचार-पत्रों मे छपा हुआ पढेंगे तो पता चलेगा।" और इतना कह कर वह भोजन की मेज़ के पास पहुँचे, जहाँ गृह-स्वामिनी अतिथियों को उनके स्थान दिखा रही थीं।

निखल्यूडोव गृह-स्वामिनी और अङ्गरेज़ के बीच में बैठा। उसके सामने गवर्नर-पुत्री और भूतपूर्व डायरेक्टर बैठे। भोजन के समय का वार्तालाप कभी ज़ोर पकड़ जाता, कभी फीका पड़ जाता, कभी भारत-सम्बन्धी चर्चा चलती, जिसका वृत्तान्त अङ्गरेज सुनता; कभी टोनकिन युद्ध-यात्रा का ज़िक्र चलता, जिसके विरुद्ध जनरल अपना घोर असन्तोष प्रकट करते ; कभी साइबेरिया की रिश्वत और अन्य दूषणों की चर्चा चलती। निखल्यूडोव को ये सारी बातें अरोचक लगीं।

पर भोजन के बाद काफी पीते समय अङ्गरेज़, गृह-स्वामिनी, और निखल्यूडोव में ग्लेडस्टन सम्बन्धी सजीव वार्तालाप छिड़ गया, और निखल्यूडोव ने देखा कि उसके मुँह से बड़ी मार्के की बातें निकल रही हैं और अङ्गरेज़ उसकी ओर विशेष रूप से आकृष्ट हो गया है। सुन्दर स्वादिष्ट भोजन करने, और सुन्दर स्वादिष्ट शराब पीने के बाद आरामकुर्सी पर कुलीन, संस्कृत व्यक्तियों के समाज में बैठ कर निखल्यूडोव को कॉफ़ी के घूंट भरने में अनिर्वचनीय आनन्द आया। और जब अङ्गरेज़ के अनुरोध पर गृह-स्वामिनी भूतपूर्व डायरेक्टर के साथ पियानो के पास पहुँचीं और बिथोवन की पाँचवीं गत बजाने लगीं तो निखल्यूडोव को भास होने लगा कि बस, इससे अधिक सुख-आनन्द सम्भव ही नहीं है। उसे असीम आत्म-सन्तोष की अनुभूति हुई, मानो उसने अभी जान पाया हो कि वह कितना भला आदमी है।

विशाल पियानो असाधारण तथा सुन्दर था। बिथोवन की

पाँचवीं रात असाधारण तथा ललित और व्यवस्थित थी—कम से कम निखल्यूडोव को यही प्रतीत हुआ—और वह अपने अनेक सद्गुणों से इतना प्रभावित हो उठा कि उसकी नाक में सनसनी सी होने लगी।

निखल्यूडोव ने गृह-स्वामिनी को, उसे इतना सुख-प्रमोद प्रदान करने के लिए—जिससे वह इतने अधिक काल से वञ्चित था—धन्यवाद दिया, और इसके बाद वह रवाना होने ही वाला था कि इसी समय जनरल की पुत्री उसके पास निश्चित मुद्रा के साथ आ पहुँची और लजाती-लजाती बोली—आपने मेरे बच्चों की बात पूछी थी—आप उन्हें देखेंगे?

माँ ने अपनी पुत्री की विजयिनी सरलता पर मुस्कराते हुए कहा—यह तो समझती है कि इसके बच्चों को सब कोई देखना चाहते हैं। प्रिन्स को इसमें तनिक भी रुचि नहीं है।

निखल्यूडोव इस आह्लादपूर्ण मातृस्नेह की प्रबल बाढ़ से उद्वेलित हो उठा और बोला—नहीं-नहीं, मुझे बेहद रुचि है; मुझे उनके पास ले चलिए।

जनरल अपने जमाई, सोने की खान वाले व्यापारी और एडीकाङ्ग के साथ ताश की मेज़ पर जा बैठे थे, वहाँ से हँसते-हँसते बोले—यह देखो! प्रिन्स को अपने बच्चे दिखाने लिए जा रही है। जाइए, प्रशंसा करिए।

युवती स्त्री इस विचार से कि उसकी सन्तानों के सम्बन्ध में अब फैसला होने वाला है, स्पष्टतया ही उत्तेजित हुई दिखाई पड़ती थी। वह शीघ्रतापूर्वक निखल्यूडोव के आगे-आगे अन्तःपुर

की ओर चली। तीसरे और ऊँचे कमरे में ढके हुए लैम्प के प्रकाश में दो छोटी-छोटी चारपाइयाँ बिछी दिखाई देती थीं और उनके बीच में एक सहृदय सूरत वाली चौड़ी हड्डी की धाय बैठी हुई थी। उसने उठ कर अभिवादन किया। माँ पहले बिछौने पर झुकी, जिस पर एक दो वर्ष की कन्या शान्त-भाव से पड़ी हुई सो रही थी और उसके बालों के लम्बे गुच्छे तकिए पर फैले हुए थे।

माँ ने नीली-सफ़ेद चादर को, जिसके नीचे से एक नन्हा सा पैर निकल आया था, सीधा करते हुए कहा—इसका नाम केटी है। सुन्दर है न? अभी बिसात ही कितनी है; दो बरस की तो है ही।

'बड़ी सुन्दर है!"

"यह वासुक है। यह नाम इसके नाना ने रक्खा है। बिलकुल दूसरे ही चेहरे-मुहरे का है। साइबेरियन लगता है—ऐ न?"

निखल्यूडोव ने एक नन्हें से मांसल लड़के को पेट के बल सोते हुए देख कर कहा—बड़ा सुन्दर लड़का है।

माँ ने सगर्व उल्लसित मुस्कराहट के साथ कहा—हाँ।

निखल्यूडोव को जञ्जीरों का, मुण्डे सिरों का, लड़ाई-झगड़ों का और आचार-भ्रष्टता का स्मरण आया। मरणासन्न क्रिल्टसोव का, कट्टशा का और उसके अतीत का ध्यान आया, और उसने यहाँ जो कुछ देखा वह उसे पवित्र, परिष्कृत सुख प्रतीत हुआ, और वह इसकी प्राप्ति की लालसा और डाह करने लगा। उसने बच्चों की बार-बार प्रशंसा की, और उनके माँ की उत्सुकता अंशतः शान्त हुई। इसके बाद वह उसके साथ ड्राइङ्ग-रूम में आया, जहाँ

अङ्गरेज़ जेल जाने के लिए उसकी बाट देख रहा था। दोनों ने गृह-स्वामी-स्वामिनी से और युवा दम्पति से विदा ली, और इसके बाद दोनों पोर्च में पहुँचे।

ऋतु बदल गई थी। बर्फ़ ख़ूब गहरा पड़ गया था और सड़क और छतें, और पोर्च की सीढ़ियाँ, और गाड़ी की बम, और उद्यान के पत्ते, और भवन का पिछला भाग—एक सिरे से सब बर्फ़ से ढँक गए थे।

अङ्गरेज़ अपनी गाड़ी अलग लाया था। निखल्यूडोव उसे जेल चलने की आज्ञा देकर अपनी गाड़ी में सवार हो गया। उसे इस समय कर्त्तव्य-पालन करने की क्षोभकारी अनुभूति होने लगी और उसकी गाड़ी अङ्गरेज़ की गाड़ी के पीछे-पीछे बर्फ़ में से होकर कठिनाई के साथ चली।

ल की मनहूस इमारत और उसका सन्तरी, और दरवाज़े मे जलता हुआ लेम्प, और खिडकियों की क़तार से छन कर आती हुई प्रकाश-पंक्ति—इन सबके सम्मिलित योग से, बर्फ की श्वेत-स्वस्थ चादर पडे रहने पर भी प्रातःकाल से भी अधिक विषादकारी रूप धारण कर लिया था।

रोबदार इन्सपेक्टर दरवाज़े के पास आकर खड़ा हो गया। उसने लेम्प के प्रकाश में निखल्यूडोव और अङ्गरेज़ को दिया गया पास पढ़ा, और आश्चर्य के साथ अपने सुन्दर कन्धे उचकाए, पर पास के आदेश अनुरूप उसने आगन्तुकों को अपने पीछे आने का अनुरोध किया। वह उन्हें सहन में ले गया, और वहाँ से एक दरवाज़े से निकाल कर सीढियों पर से एक ऑफिस में ले गया। उसने दोनों को बैठने को स्थान दिए, और पूछा कि वह उनकी क्या सेवा करे। जब उसे पता चला कि निखल्यूडोव

मसलोवा से मिलना चाहता है तो उसने तत्काल एक जेलर को उसे वहाँ लाने की आज्ञा दी। इसके बाद वह अङ्गरेज़ के प्रश्नों के उत्तर देने को तत्पर हुआ। निखल्यूडोव ने दुभाषिए का काम किया।

अङ्गरेज़ ने पूछा—जेल कितने आदमियों के लिए बनाई गई है? उसमें कितने आदमी हैं? ..कितने मर्द?...कितनी औरतें?... कुछ बच्चे भी?. .उनमें से कितनों को खान खोदने का दण्ड दिया गया है? उनमें कितने निर्वासित हैं? ..कितने रोगी हैं?

निखल्यूडोव शब्दों की ओर बिना कुछ ध्यान दिए दोनों को एक दूसरे का प्रश्न समझाता गया। इस आसन्न भेंट के विचार मात्र के उसे जैसी त्रस्त व्यस्तता की अनुभूति हो रही थी, वैसी पहले कभी न हुई थी। वह अङ्गरेज़ के एक वाक्य का अर्थ समझा ही रहा था कि इतने ही मे द्वार के वाहर पग-ध्वनि सुनाई दी, द्वार खुला, और सदैव की भाँति पहले जेलर ने और फिर सिर से रूमाल बाँधे और जेल की जाकट पहने कटूशा ने प्रवेश किया और उसके शरीर में सनसनी उत्पन्न हो गई।

जब वह नीची निगाह किए जल्दी-जल्दी उसकी ओर आई तो उसके मस्तिष्क में ये विचार घूम गए—"मैं जीना चाहता हूँ, मैं परिवार और सन्तान चाहता हूँ—मैं मनुष्यों की भाँति रहना चाहता हूँ।"

वह उठा और उसकी ओर बढ़ा। मसलोवा का चेहरा उसे कठोर और अरोचक प्रतीत हुआ। उसका चेहरा ठीक वैसा ही था, जब उसने पहली वार उसकी भर्त्सना की थी। उसका चेहरा पहले

लाल हो उठा, फिर पीला पड़ गया, और वह उद्विग्नतापूर्वक अँगुली से अपनी जाकट का कोना उमेठने लगी। उसने एक बार निगाह उठा कर उसकी ओर देखा और फिर नीची आँखें कर लीं।

"तुम्हें मालूम है, तुम्हारी सज़ा बदल दी गई है?"

"हाँ, जेलर ने मुझे बताया था।"

"बस, असली काग़ज़ आने की देर है, फिर तुम छूट जाओगी और हम तय करेंगे कि हमें कहाँ रहना चाहिए। हम दोनों निर्णय करेंगे।"

मसलोवा ने झटपट उसकी बात काट कर कहा—मुझे कुछ निश्चय करना नहीं है। जहाँ व्लाडियर सायमनसन जायँगे, वहीं मैं भी जाऊँगी।

उद्विग्नता होते हुए भी उसने अपने नेत्र उठा कर ठीक उसके चेहरे की ओर देखा और इन शब्दों का उच्चारण इस प्रकार शीघ्रता और स्पष्टतापूर्वक किया, मानो उसने यह उत्तर पहले से ही तैयार कर रक्खा हो।

"सचमुच?"

"देखो न डिमिट्री इवानिच, वह चाहते हैं कि मैं उनके साथ रहूँ...!" वह भयभीत होकर बीच ही में रुक गई और अपना वाक्य शुद्ध करके बोली—"वह चाहते हैं कि मैं उनके पास रहूँ। मुझे इससे अधिक और क्या चाहिए? मुझे इसे सुख समझना चाहिए। मुझे और क्या लेना है?......।"

निखल्यूदोव ने मन ही मन सोचा—"दोनों में से एक बात अवश्य है। या तो यह सायमनसन के प्रेम में मतवाली हो रही है

और जिसे मैं आत्म-त्याग समझता था, उसे बिलकुल ग्रहण नहीं करना चाहती ; या यह अब भी मुझे प्रेम करती है और मेरे ही भले के लिए मुझे अस्वीकार करके सायमनसन के साथ नाता जोड़ना, और इस प्रकार सदैव के लिए अपना टण्टा समाप्त करना चाहती है।" और निखल्यूढोव को ग्लानि उत्पन्न हुई और वह जान गया कि वह लजा रहा है।

उसने पूछा—और क्या तुम भी उन्हें प्रेम करती हो ?

"प्रेम करने और न करने में क्या रक्खा है ? मैंने यह सारे पचड़े छोड़ दिए हैं। और फिर लाटियर सायमनसन वैसे भी कितने असाधारण आदमी हैं।"

निखल्यूडोव बोला—निस्सन्देह वह बड़े भले आदमी हैं, और मेरी समझ में......

पर मसलोवा ने उसकी बात फिर काट दी, मानो उसे आशङ्का हो कि कहीं वह आवश्यकता से अधिक बात न कह डाले, या ख़ुद उसे अपनी पूरी बात कहने का अवसर न मिले।

उसने उसकी ओर अपनी अगाध चितवन से देखते हुए कहा—नहीं ढिमिट्री इवानिच, मैं तुम्हारी इच्छा के अनुसार काम नहीं कर रही हूँ, इसके लिए मुझे चमा करो। हाँ, यही होना ठीक भी है। तुम भी तो जीवन धारण करो।

उसने ठीक वही बात कही थी, जो वह अब से कुछ चण पहले स्वयं मन ही मन कह रहा था। पर अब वह उस ढङ्ग से विचार न कर रहा था, अब वह बिलकुल दूसरे ही ढङ्ग से सोच रहा था। उससे वञ्चित होने के साथ-साथ वह जिन-जिन पदार्थों से वञ्चित हो रहा

था, उसके लिए उसे न केवल लज्जा ही आ रही थी, बल्कि खेद भी हो रहा था।

उसने कहा—मुझे इसकी आशा न थी।

उसने मुस्करा कर उत्तर दिया—तुम यहाँ रह-रह कर क्यों कष्ट उठा रहे हो? तुमने बहुतेरा कष्ट उठा लिया।

"मैंने कोई कष्ट नहीं उठाया था। इसी में मेरा कल्याण, और मेरी यही अभिलाषा है कि यदि कर सकूँ तो इसी प्रकार तुम्हारी सेवा करता रहूँ।"

"हम दोनों को"—उसने "हम दोनों को" कहते हुए निखल्यूडोव की ओर निगाह उठा कर देखा—"कुछ न चाहिए। तुमने मेरा बहुतेरा उपकार किया। यदि मैं तुम्हारे निकट...।" वह कुछ और कहना चाहती थी, पर उसकी आवाज़ काँप उठी और वह कुछ न कह सकी।

निखल्यूडोव ने कहा—कम से कम तुम्हें मुझे धन्यवाद देने का कोई कारण नहीं है।

"इन बातों में क्या रक्खा है? भगवान ही हमारा लेखा-जोखा करेंगे।"—उसने कहा और उसके काले नेत्र आँसुओं से चमचमा उठे।"

निखल्यूडोव ने कहा—तुम कितनी भली स्त्री हो।

"मैं और भली?"—उसने आँसुओं के साथ कहा, और उसके चेहरे पर कातर मुस्कराहट उदित हो गई।

अङ्गरेज़ ने कहा—आप तैयार हैं क्या?

"हाँ, अभी लीजिए।"—निखल्यूडोव ने कहा, और कट्टरता से

क्रिल्टसोव की बाबत पूछा। कट्रूशा ने झटपट अपने उद्वेलन पर अधिकार और जो कुछ वह जानती थी, बताया। क्रिल्टसोव बहुत दुर्बल हो गया था और उसे शफाखाने भेज दिया गया था। मेरी पैवलोटना को उसकी बड़ी चिन्ता हो रही थी, उसने धाय बन कर शफाखाने में जाने की इच्छा प्रकट की, पर उसे अनुमति न दी गई।

कट्रूशा ने अङ्गरेज़ को निखल्यूडोव की प्रतीक्षा में खड़े देख कर कहा—तो फिर मैं जाऊँ ?

निखल्यूडोव ने उसकी ओर हाथ बढ़ा कर कहा—मैं तुमसे अन्तिम विदा कभी न लूँगा, मैं तुमसे फिर मिलूँगा।

कट्रूशा ने बड़े ही धीमे स्वर में कहा—"क्षमा करो।" दोनों के नेत्र मिले और निखल्यूडोव ने उस विचित्र चितवन और उस कातर मुस्कराहट को देख कर, जिसके साथ उसने 'विदा' के स्थान पर 'क्षमा करो' कहा था, जान लिया कि उसके इस निश्चय के जो दो सम्भावित कारण हो सकते थे, उनमें से दूसरा कारण ही वास्तविक कारण है। वह उसे प्यार करती थी और समझती थी कि उसके जीवन के साथ अपने जीवन को ग्रन्थित करके वह उसके जीवन का सर्वनाश कर देगी। उसने सोचा, सायमनसन के साथ नाता जोड़ कर वह निखल्यूडोव को बन्धन-मुक्त कर सकेगी, और उसे इस बात की प्रसन्नता हो रही थी कि वह अपनी मनोवाञ्छा पूरी कर सकी और साथ ही उससे बिछुड़ते हुए उसका हृदय विदीर्ण हो रहा था।

उसने निखल्यूडोव का हाथ दबाया, शीघ्रतापूर्वक मुँह फेरा और वह कमरे से चली गई !

निखल्यूदोव जाने को तैयार था, पर उसने देखा कि अंग्रेज़ अपनी नोटबुक में कुछ लिख रहा है, अतः उसने विघ्न डालना उचित न समझा और वह दीवार के सहारे रक्खी काठ की बेंच पर बैठ गया। सहसा उसके ऊपर श्रान्ति का प्रबल आक्रमण हुआ। उसकी श्रान्ति का कारण न निद्रा-विहीन रात्रि थी, न यात्रा और न उत्तेजन; वास्तव में वह जीवन धारण करने से बेतरह ऊब उठा था। वह बेंच से पीठ लगा कर बैठ गया, नेत्र बन्द किए और क्षण भर में वह घोर निद्रा में अचेत हो गया।

इन्सपेक्टर ने पूछा—अब आप कोठरियाँ देखने चलिएगा?

निखल्यूदोव ने आँखें खोलीं और निगाह उठा कर देखा, और वह अपने आपको जेल में पाकर चकित रह गया। अंग्रेज़ ने नोट-बुक में दर्ज करना समाप्त कर दिया था, और उसने कोठरियों का मुआयना करने की इच्छा प्रकट की थी।

श्रान्त और अन्यमनस्क निखल्यूदोव उठ कर चुपचाप उसके पीछे-पीछे हो लिया।
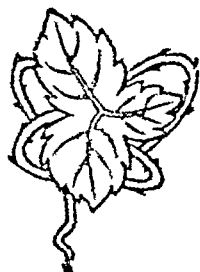
नि खल्यूडोव और अङ्गरेज़ इन्सपेक्टर साथ-साथ बाहरी कमरे में पहुँचे और वहाँ से दुर्गन्धियुक्त बरामदे में गए, जहाँ उन्हें दो कैदियों को पेशाब करते देख कर अत्यन्त आश्चर्य हुआ। इसके बाद वे उस वार्ड में पहुँचे, जहाँ सपरिश्रम कारावास वालों को रक्खा जाता था। कैदी अपनी-अपनी चारपाइयों पर जा लेटे थे। वे सिरहाना और पैताना बारी-बारी सिर बना कर पंक्तिबद्ध रूप में लेटे थे। उनकी संख्या कोई सत्तर होगी। जब मुलाक़ातियों ने वार्ड में प्रवेश किया तो तमाम कैदी अपनी-अपनी चारपाइयों से उछल कर खड़े हो गए। दो कैदी न उठे। एक ज्वराक्रान्त युवक था, और दूसरा एक वृद्ध था, जो ज़ोर-ज़ोर से कराह रहा था।

अङ्गरेज़ ने पूछा कि क्या युवक बहुत दिनों से बीमार है। इन्सपेक्टर ने उत्तर दिया कि वह उसी दिन सुबह से बीमार पड़ गया है, पर वृद्ध को पेट की पीड़ा बहुत दिनों से है, पर उसे अस्पताल में न ले जाया जा सका, क्योंकि वह खचाखच भरी हुई थी। अङ्गरेज़

ने असन्तोषपूर्वक सिर हिलाया, कहा कि वह इन क़ैदियों से कुछ कहना चाहता है, और निख्ल्यूदोव से अपना दुभाषिया बनने की प्रार्थना की। अब पता चला कि साइबेरिया के निर्वासन स्थलों और जेलों का अध्ययन करने के अतिरिक्त अङ्गरेज़ का एक और भी लक्ष्य है, और वह आस्था और शरण से मुक्ति मिलने का उपदेश देना है।

उसने कहा—इनसे कहिए कि प्रभु ईसा उनसे प्रेम और करुणा करते थे और उन्हीं के लिए उन्होंने प्राण-त्याग किया। यदि वे इसमें आस्था रक्खेंगे, तो निश्चय ही उनका उद्धार होगा। जिस समय वह बोल रहा था, उस समय सारे क़ैदी चुपचाप अपने हाथ लटकाए खड़े थे। उसने कहा, इस पुस्तक की बात कह दीजिए, इनमें से कोई इसे पढ़ सकता है?

उसमें से बीस ऐसे थे जो पढ़ सकते थे।

अङ्गरेज़ ने अपने थैले में से कुछ जिल्दबँधी धर्म-पुस्तकें निकालीं और बहुत से कठोर-काले नाख़ून वाले दृढ़ हाथ, मोटी आस्तीनों में से एक-दूसरे को धकियाते हुए आगे बढ़ गए। उसने इस वार्ड में दो धर्म-पुस्तकें दीं।

दूसरे वार्ड में भी यही सब कुछ हुआ। वही दुर्गन्धिपूर्ण वायु, वही खिड़कियों के बीच में लटकती हुई मूर्तियाँ, वही दरवाज़े के बाएँ हाथ पर रखे हुए पानी का टब; क़ैदी एक दूसरे से सटे हुए पङ्क्तिबद्ध लेटे हुए थे, और वे भी उसी प्रकार उछल कर खड़े हो गए और अपने हाथ लटका कर चुपचाप खड़े रहे। तीन न खड़े हुए; उनमें से दो उठ कर बैठ गए, पर तीसरे ने उनकी ओर दृष्टिपात

तक न किया। ये तीनों भी बीमार थे। अङ्गरेज़ ने उसी प्रकार उपदेश दिया और उसी प्रकार दो धर्म-पुस्तकों का वितरण किया।

तीसरा वार्ड इससे भी अधिक दुर्गन्धिपूर्ण था। इसमे चार बीमार थे। जब अङ्गरेज़ ने पूछा कि सारे कैदियों को एक स्थान पर क्यों नहीं रक्खा गया, तो इन्स्पेक्टर ने उत्तर दिया कि क़ैदी स्वयं यह न चाहते थे कि उनके रोग संक्रामक नहीं हैं, और कि मेडिकल असिस्टेण्ट उन सबकी देख-भाल रखता है और जो आवश्यक होता है, करता है।

एक ने बड़बड़ा कर कहा—एक पखवाड़े से उसकी सूरत तक दिखाई नहीं दी।

इन्स्पेक्टर ने कोई उत्तर न दिया और वह उन्हें दूसरे वार्ड में ले चला। उसी प्रकार द्वार खोला गया, उसी प्रकार सब उछल कर खड़े हो गए, और उसी प्रकार अङ्गरेज़ ने धर्म-पुस्तकें बाँटीं—पाँचवें और छठे, दाहिने और बाएँ वार्ड में भी यह सब हुआ।

सपरिश्रम कारावास वालों के वार्ड से वे निर्वासितों के वार्ड की ओर चले। निर्वासितों के वार्ड से वे उस वार्ड में चले, जहाँ ग्राम्य पञ्चायतों द्वारा निर्वासितों को और स्वेच्छापूर्वक जाने वालो को रक्खा गया था। इन जाड़े में ठिठुरते, क्षुधा-पीड़ित, आलसी, रोगी, पतित और ज्वराक्रान्त व्यक्तियों को जङ्गली जानवरो की तरह एक-एक करके दिखाया गया।

जब अङ्गरेज़ धर्म-पुस्तकों की नियत संख्या बाँट चुका, तो उसने और बाँटना बन्द कर दिया और कोई उपदेश न दिया। विषादकारी दृश्य ने और विशेषकर दम घोटने वाले वातावरण

ने उस तरह की सजीवता को नष्ट कर दिया और वह एक वार्ड से दूसरे में चुपचाप जाने और इन्स्पेक्टर के कथन के उत्तर में केवल 'ठीक-ठीक' कहने लगा।

निख्लयूदोव भी उसके साथ-साथ चलता रहा, मगर किसी स्वप्नाविष्ट की भाँति, न उससे आगे बढ़ने से इनकार करते बनता था, न वहाँ से खिसक चलते बनता था। और उसकी थकावट एवं उदासी की वही अवस्था थी।
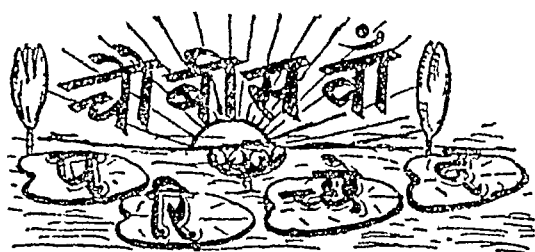
निखल्यूडोव को एक निर्वासितों वाले वार्ड में उस वृद्ध का देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ, जिसने उस दिन सुबह उसके साथ नदी पार की थी। यह जरा-जीर्ण वृद्ध चारपाइयों के पास फ़र्श पर नङ्गे पैरों, मटियाले रङ्ग की, कन्धे से फटी, थेगले लगी कमीज़ पहने और टाँगों में उसी प्रकार का फटा-पुराना पाजामा डाले बैठा था। उसने नवा-गन्तुकों की ओर कठोर और प्रश्नात्मक दृष्टि से देखा कमीज़ के छिद्रों में से उसका सुता हुआ कृश शरीर अत्यन्त अशक्त और तेजहीन दिखाई देता था, पर उसके चेहरे पर इस समय प्रातःकाल की अपेक्षा अधिक गम्भीरता और सजीवता विराज रही थी। जब अफ़सर ने प्रवेश किया तो अन्य सारे वार्डों की भाँति इस वार्ड के आदमी भी उछल कर खड़े हो गए, पर वृद्ध उसी प्रकार निश्चेष्ट

भाव से बैठा रहा। उसके नेत्र चमक गए, उसकी भवों में रोष के बल पड़ गए।

इन्स्पेक्टर ने कहा—खड़ा हो!

वृद्ध हिला तक नहीं, केवल घृणापूर्वक मुस्कराता रहा।

"तेरे दास तेरे सामने खड़े हैं। मैं तेरा दास नहीं हूँ। तेरे माथे पर मुहर लगी हुई है... ?"—उसने इन्स्पेक्टर के माथे की ओर सङ्केत करके कहा।

इन्स्पेक्टर ने धमकाते हुए उसकी ओर बढ़ कर कहा—क्या कहता है?

निखल्यूडोव ने झटपट कहा—मैं इस आदमी को जानता हूँ। इसे क्यों गिरफ़्तार किया गया है?

"पुलिस ने इसे यहाँ इसलिए पकड़ कर भेजा है कि इसके पास पासपोर्ट नहीं है। हम इन लोगों से कहते-कहते हार गए कि वे ऐसे आदमियों को यहाँ न भेजा करें, पर वे लोग ध्यान ही नहीं देते।"—इन्स्पेक्टर ने वृद्ध की ओर क्रुद्ध भाव से देखते हुए कहा।

वृद्ध ने निखल्यूडोव से कहा—अच्छा, अब बता कि तू भी ईसा-शत्रु के गिरोह का है?

निखल्यूडोव ने उत्तर दिया—नहीं, मैं सिर्फ़ देखने आया हूँ।

"तो क्या तू यह देखने आया है कि ईसा-शत्रु मनुष्यों को किस प्रकार यन्त्रणाएँ देता है? उसने मनुष्यों को पींजरे में बन्द कर रक्खा है, पूरी पल्टन को बन्द कर रक्खा है। मनुष्य को चोटी का पसीना एड़ी तक बहा कर रोटी खानी चाहिए, पर यह बन्द

करके ख़ाली बैठे रोटी देता है, और फिर ये मनुष्य पशुओं से भी गए-बीते हो जाते हैं।"

अङ्गरेज़ ने पूछा—यह क्या कह रहा है?

निखल्यूडोव ने बताया कि वृद्ध इन्स्पेक्टर को, आदमियों को जेल में बन्द रखने के लिए दोष दे रहा है।

अङ्गरेज़ ने कहा—इससे पूछिए कि जो क़ानून के विरुद्ध हों, उनके साथ इसकी समझ में कैसा व्यवहार करना चाहिए?

निखल्यूडोव ने वाक्य का उल्था किया।

वृद्ध अपनी दन्त-पंक्ति दिखा कर विलक्षण भाव से हँस पड़ा। बोला—क़ानून! पहले उसने सबका सर्वस्व हरण कर लिया, सबके अधिकारों को छीन लिया, और सारी पृथ्वी पर अधिकार कर लिया—इन सबका वह स्वयं स्वामी बन बैठा। और जो उसके विरुद्ध थे, उनके प्राणों का विनाश कर दिया, और फिर हरण करने और हत्या करने के विरुद्ध क़ानून बना डाले। उसे इन कानूनों की रचना कुछ पहले करनी चाहिए थी।

निखल्यूडोव ने उल्था किया! अङ्गरेज़ मुस्कराया।

"पर फिर भी इससे यह तो पूछिए कि चोरों और हत्यारों के साथ कैसा व्यवहार किया जाय?"

निखल्यूडोव ने इसका उल्था रूसी भाषा में किया।

वृद्ध ने कठोर भाव से भृकुटी चढ़ा कर कहा—इससे कह दो कि पहले यह अपने माथे से ईसा-शत्रु की मुहर दूर कर दे, फिर इसे पता चलेगा कि न कोई चोर है, न कोई हत्यारा! कह दो।

जब निखल्यूडोव ने वृद्ध के शब्दों का उल्था किया, तो अङ्गरेज़

बोला—"यह पागल है।" और वह अपने कन्धे उचका कर कोठरी से चल पड़ा।

वृद्ध ने कहा—"तू अपना काम देख, दूसरों को उनके हाल पर छोड़ दे। इस बात को केवल ईश्वर जानता है कि किसे प्राणदण्ड देना चाहिए और किसे क्षमा करना चाहिए, हम कुछ नहीं जानते। अपना स्वामी तू ख़ुद बन, फिर किसी स्वामी की आवश्यकता न पड़ेगी। जा-जा।" उसने क्रुद्ध भाव से तेवर चढ़ाते हुए और प्रोज्ज्वल नेत्रों से वार्ड से जाने में विलम्ब करते हुए निखल्यूडोव की ओर देखते हुए कहा—"क्या अभी देख-देख कर तेरा पेट नहीं भरा कि किस प्रकार ईसा-शत्रु के दास मनुष्यों का रक्त पिस्सुओं से चुसवाते हैं? जा! जा!"

निखल्यूडोव वार्ड से निकल कर अङ्गरेज़ के पास पहुँचा, जो एक खुले दरवाज़े के आगे खड़ा हुआ इन्स्पेक्टर से पूछ रहा था कि यह काहे की कोठरी है।

"यह शवगृह है।"

अङ्गरेज़ ने कहा—"अच्छा!" और उसने भीतर जाने की इच्छा प्रकट की।

शवगृह कोई बहुत बड़ा न था। दीवार के सहारे लटकता हुआ लेम्प अपने धुँधले आलोक से एक कोने में पड़े कुछ थैलों और लकड़ी के गट्ठों को और चारपाइयों पर पड़े चार शवों को प्रकाशित कर रहा था। पहला शव मोटे कपड़े की कमीज़ पहने हुए था। यह एक लम्बा आदमी था, जिसकी छोटी सी दाढ़ी थी और सिर आधा मुँडा हुआ था, शरीर बिलकुल पीला पड़ गया

था, नीले हाथों को वक्षस्थल पर क्रॉस के रूप में रक्खा गया होगा, पर अब वे वहाँ से अलग हो गए थे, टाँगें अकड गई थीं और पैर उमठ कर पट्टी के नीचे जा गिरे थे। उसके पास ही एक नङ्गे सिर, नङ्गे पैर वाली वृद्धा स्त्री सफ़ेद पेटीकोट और जाकट पहने पडी थी और उसके सिर के गिने-चुने बालों की पट्टी ढकी हुई न थी। उसके परली ओर एक और आदमी ऊदे रङ्ग का कपडा पहने पड़ा था। इस रङ्ग को देख कर निखल्यूडोव को कुछ स्मरण सा आया।

उसने निकट आकर इस शरीर को ध्यानपूर्वक देखा।

ऊपर को उठी हुई छोटी सी नुकीली दाढ़ी; सुन्दर सुडौल नाक, उन्नत श्वेत ललाट, पतले घूँघर वाले बाल—निखल्यूडोव को परिचित अवयव पहचानने में देर न लगी, पर उसे अपने नेत्रों पर विश्वास न आया। कल उसने इस मुख को क्रुद्ध, उत्तेजित और पीड़ा-व्यथित अवस्था में देखा था, आज यह शान्त, निश्चेष्ट और भयङ्कर रूप से सुन्दर दिखाई दे रहा था। हाँ, यह क्रिल्टसोव ही था, या कहना चाहिए कि यह उसके भौतिक अस्तित्व का अवशिष्ट चिन्ह था। "उसने इतने कष्ट क्यों भोगे? उसने जीवन धारण क्यों किया? क्या अब यह सब उसकी समझ में आ गया होगा?" निखल्यूडोव ने सोचा और उसे कोई उत्तर न मिला, उसे मृत्यु के अतिरिक्त और कुछ दिखाई न दिया, और उसे मूर्च्छना सी आ गई। अङ्गरेज़ से विदा लिए विना ही वह वाहर आया और गाड़ी में बैठ कर सीधा होटल वापस आ गया।
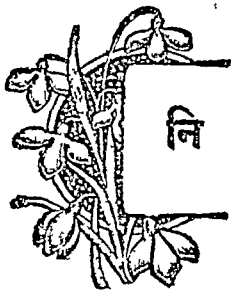
खल्यूडोव सोया नहीं, बल्कि बहुत देर तक कमरे में चहलकदमी करता रहा। उसका कटूशा सम्बन्धी व्यापार समाप्त हो गया था। अब उसकी आवश्यकता न थी, और इससे उसे ग्लानि और क्षोभ हो रहा था। उसका दूसरा कार्य-कलाप अभी समाप्त होना तो एक ओर, उसकी पूर्ण कार्यशीलता चाहता था। और यह वीभत्स पैशाचिकता, जिससे उसने इधर कुछ दिनों से और विशेषकर आज जेल में अभिज्ञता प्राप्त की थी—यह पैशाचिकता, जिसने उस सीधे-सादे भले क्रिल्टसोव का प्राण संहार कर डाला था—एकान्त भाव से अपना विजयपूर्ण शासन कर रही थी और उसका पराभव करने की या उसका पराभव करने का उपाय तक जानने की उसे कोई सम्भावना दिखाई न देती थी। उसके कल्पना-पटल पर उन अनेकानेक पतित मनुष्यों के चित्र उदित हो गए, जिन्हें उदासीन जनरलों, प्राक्यूररों और इन्स्पे-

क्टरो ने जेल में डाल रक्खा था। उसे उस विलक्षण स्वेच्छाचारी वृद्ध मनुष्य का स्मरण आया, जो अधिकारी-वर्ग को अभियोग दे रहा था और इसलिए पागल समझा जाता था। और उसे अन्य शवों में पड़े उस क्रिल्टसोव के सुन्दर निर्जीव मुखडे की याद आई, जिसने क्रोध में प्राण दे दिए थे। और एक बार फिर, और द्विगुणित प्रबलता के साथ उसके सामने वही एक प्रश्न उपस्थित हुआ कि क्या वह स्वयं पागल है, या वे लोग पागल हैं जो अपने होश-हवास दुरुस्त समझते हैं, और यह सारा वीभत्स व्यापार करते रहते हैं और वह इसका उत्तर पाने के लिए आकुल हो उठा है।

वह चहलकदमी और सोच-विचार करते-करते थक गया, और अन्त में लेम्प के पास सोफ़ा पर बैठ कर यन्त्र की भाँति मेज पर पड़ी उस धर्म-पुस्तक को उठा कर उलटने-पलटने लगा, जिसे अङ्गरेज़ ने उसे स्मृति-चिन्ह के बतौर भेट की थी, और जो उसने कमरे में आकर जेब ख़ाली करते समय निरपेक्ष भाव से मेज़ पर डाल दी थी।

उसने मन ही मन कहा—कहा जाता है कि इसमें सारी बातों का उत्तर मिल जाता है। वह एक स्थल खोल कर पढ़ने लगा—"उस अवसर पर भक्तगण प्रभु ईसा के पास आए और पूछने लगे कि स्वर्ग के साम्राज्य में कौन सब से बडा है। और उन्होंने एक बालक को बुलाया और उसे उनके बीच में बिठा कर कहा—देखो, मैं तुम्हें बताए देता हूँ, जब तक तुम सब भी इस बालक जैसे ही न बन जाओगे, तब तक तुम स्वर्ग में कभी प्रवेश न कर सकोगे। अतएव जो कोई अपने आपको इस नन्हें बालक की भाँति विनीत बनाएगा, वही स्वर्ग के साम्राज्य में सब से बड़ा समझा जायगा।"

निखल्यूडोव को स्मरण आया कि जब-जब उसने अपने आपको विनीत बनाया, तभी तब उसे शान्ति और जीवनोल्लास की अनुभूति हुई, और वह कह उठा—हाँ-हाँ, यह सत्य है, यह सत्य है ।

"और जो कोई मेरे नाम पर ऐसे एक नन्हे बालक को ग्रहण करेगा, वह मुझे ग्रहण करेगा। पर जो कोई मुझमें आस्था रखने वाले ऐसे किसी बालक का तिरस्कार करेगा, उसके लिए यही अच्छा है कि उसके गले में एक बड़ा सा पत्थर बाँध दिया जाय, और उसे समुद्र के गर्भ में ढकेल दिया जाय।" (मैथ्यू १८, ५-६)

"यह किस लिए है?"—"जो कोई ग्रहण करेगा।" ग्रहण कहाँ करेगा? और 'मेरे नाम पर' का क्या अर्थ है—उसने मन ही मन कहा। ये शब्द उसे बिलकुल अर्थहीन प्रतीत हुए। "और उसके गले में पत्थर क्यों? और समुद्र का गर्भ किस लिए? नहीं, इसका यह अर्थ नहीं है—यह कुछ स्पष्ट नहीं है, कुछ बोधगम्य नहीं है।" उसे स्मरण आया कि किस प्रकार उसने अपने जीवन में अनेक बार धर्म-पुस्तक पढ़ने का बीड़ा उठाया था, और किस प्रकार अर्थ-सम्बन्धी अस्पष्टता के कारण उसे उससे अरुचि उत्पन्न हो गई थी। उसने ७,८,९,१० में तिरस्कार के अवसरों का और कि वे अवश्य आएँगे, और गेहेना में धक्के देकर मनुष्यों को दण्ड देने का, और उन-उन फरिश्तों का वर्णन पढ़ा, जो स्वर्ग में परम पिता के दर्शन करते हैं। उसने सोचा—यह बड़े परिताप की बात है कि यह इतनी अबोध्य है; फिर भी इसमें कुछ अच्छी बातें भी हैं।

उसने पढना शुरू किया—"क्योकि मनुष्य का पुत्र खोए हुए जीवों का उद्धार करने आया था।" तुम क्या समझते हो?

यदि किसी आदमी के पास सौ भेड़ें हों और उनमें से एक भटक जाय, तो क्या वह निन्यानबे भेड़ों को छोड़ कर एक भेड की खोज में न चला जायगा, और क्या वह पर्वतों में घूम-फिर कर उस भटकी भेड़ की खोज न करेगा ? और यदि वह भेड़ उसे मिल जाती है तो मैं तुम्हें बताए देता हूँ कि वह उन निन्यानवे भेड़ों की अपेक्षा उस भेड़ का अधिक आनन्द मनाएगा जो भटक कर चली गई थी।

"यह तुम्हारे स्वर्गस्थ पिता की इच्छा नहीं है कि इनमें से किसी एक का विनाश हो।"

"हाँ, यह पिता की इच्छा नहीं है कि इनका विनाश हो, और फिर भी यहाँ सैकड़ों-सहस्त्रों प्राणियों का विनाश किया जा रहा है; और उनका उद्धार करने की कोई सम्भावना नहीं है।"—उसने मन ही मन कहा, और आगे पढ़ना शुरू कर दिया।

"इसके बाद पीटर आया और उनसे बोला—'प्रभु, मेरा बन्धु कितनी बार मेरे विरुद्ध अपराध करता रहे और मैं कितनी बार उसे क्षमा करता रहूँ ? सात बार ?' प्रभु ईसू ने उससे कहा—मैं तुझसे सात बार को नहीं कहता, बल्कि सत्तर सात्त वार को कहता हूँ।"

"इसलिए स्वर्ग के साम्राज्य की समता एक ऐसे राजा से दी गई है, जो अपने दासों के साथ अपना हिसाब तय कर रहा था। और जब उसने हिसाब तय करना आरम्भ किया तो उसके सामने एक ऐसा दास लाया गया, जिस पर राजा के दस हज़ार दिरहम चाहते थे, पर उसके पास जितनी रकम न निकल सकी उसके लिए उसने आज्ञा दी कि दास को और उसकी स्त्री को तथा उसके बालकों को बेच कर रक़म अदा की जाय। इस पर दास पृथ्वी पर गिर पड़ा

और अपने स्वामी से प्रार्थना करने लगा—"प्रभु, आप सन्तोष करिए, मैं सब भुगता दूँगा।" और उस दास के स्वामी ने दया करके उस दास को छोड़ दिया और अपना क़र्ज़ माफ़ कर दिया। पर जब दास बाहर निकला तो उसे एक दूसरा दास दिखाई दिया, जिस पर उसके सौ पेन्स चाहते थे, और उसने उसका गला पकड़ लिया और कहा—"जो मेरा चाहता है, भुगता।" इस पर वह दास पृथ्वी पर गिर पड़ा और प्रार्थना करने लगा—"सन्तोष रख, मैं तेरा कर्ज़ भुगता दूँगा।" पर उसने सन्तोष नहीं रक्खा और उसे उस समय तक के लिए जेल में डलवा दिया, जब तक वह उसका हिसाब साफ़ न कर दे। जब अन्य दासों ने यह सब देखा तो उन्हें बड़ा तरस आया और उन्होंने आकर अपने स्वामी को सारी कहानी सुनाई। इस पर स्वामी ने उस नौकर को बुलवाया और कहा—"धूर्त दास, तूने मुझसे प्रार्थना की थी, इसलिए मैंने अपना कर्ज माफ कर दिया। फिर जिस प्रकार मैंने तुझ पर दया की थी, उसी प्रकार तू अपने सङ्गी दास पर दया नहीं कर सकता था?"

सहसा निखल्यूडोव ज़ोर से कह उठा—"और क्या यह सब यही है?" और उसके समूचे व्यक्तित्व ने उत्तर दिया—"हाँ, यह सब यही है।"

और आध्यात्मिक जीवन व्यतीत करने वालों के साथ बहुधा जो घटित होता है, वही निखल्यूडोव के साथ भी घटित हुआ। पहले जो विचार उसे विलक्षण, अनर्गल और उपहासास्पद तक प्रतीत होता था, वह आए-दिन के अनुभवों से पुष्ट होता गया और अन्त में सहसा सहज, निर्भ्रान्त निश्चय के रूप में प्रकट हो उठा।

बस, इसी प्रकार इस विचार को वह स्पष्ट रूप से हृदयङ्गम कर सका कि मानव-समुदाय जिस दूषण से पीडित हो रहा है, उससे उद्धार पाने का एकमात्र उपाय यही है कि मनुष्य को अपने आपको ईश्वर के समक्ष हरदम अपराधी समझना चाहिए, और फलत. दूसरों को दण्ड देने या उनका सुधार करने में अपने आपको असमर्थ समझना चाहिए। अब उसकी समझ में साफ़-साफ आ गया कि वह जो जेलों मे दुनिया भर के भीषण वीभत्स कृत्य और उनके करने वालों की शान्त आत्माश्वासन देखता आ रहा है, उसका एकमात्र कारण यह है कि मनुष्य वह करने की चेष्टा करता है जो किया जाना असम्भव है। अर्थात् स्वयं दूषण-सङ्कुल होते हुए दूसरों के दूषणों का सुधार करना। गर्हित, कुत्सित व्यक्ति, गर्हित कुत्सित व्यक्तियों का सुधार करने की चेष्टा कर रहे थे और समझते थे कि वे व्यवस्थित यान्त्रिक साधनों से ऐसा कर सकेंगे। इस सबका परिणाम यह होता था कि लुब्ध और लोलुप व्यक्ति इस कृत्रिम दण्ड और सुधार को व्यवसाय बना लेते थे। स्वयं तो नितान्त भ्रष्ट होते ही थे, दूसरों को भी निरन्तर भ्रष्ट और व्यथित करते रहते थे। अब उसकी समझ में स्पष्ट रूप से आ गया कि ये सारे वीभत्स रोमाञ्चकारी व्यापार कहाँ से उत्पन्न होते हैं, और उनका अन्त करने के लिए उसे वही उत्तर सब से अधिक उपयुक्त जँचा, जो प्रभु ईसा ने पीटर को दिया था—"सदैव, सबको, और अनन्त बार क्षमा करते रहो, क्योंकि इस संसार में ऐसा कोई नहीं है, जो स्वयं अपराधी न हो, और फलत. ऐसा कोई नहीं है, जो दूसरों को दण्ड दे सकता हो या उनका सुधार कर सकता हो।"

निखल्यूडोव ने सोचा—"पर व्यावहारिक रूप में यह सिद्धान्त इतना सरल नहीं रह सकता।" पर उसे यह देख कर आश्चर्य हुआ कि निश्चय ही यह सिद्धान्त इस समस्या की न केवल सिद्धान्त-रूप से ही औषधि है, बल्कि प्रकृत रूप से भी। अब उसे इस जानी-पूछी आपत्ति से कोई अस्तव्यस्तता न होती थी। "पर अपराधियों के साथ कैसा आचरण किया जाय? उन्हें अदण्डित रूप से मुक्त करना तो ठीक न होगा?" उस समय तो यह आपत्ति कुछ सार्थक होती, यदि यह प्रमाणित कर दिया जाता कि दण्ड-व्यवस्था से अपराधों की संख्या में कमी हो गई है या उसने अपराधियों को सुधार दिया है, पर जब इसके विपरीत बात प्रमाणित हो चुकी है, और यह स्पष्ट हो चुका है कि आदमियों का सुधार करना आदमियों के बूते की बात नहीं है, तो एकमात्र विवेकपूर्ण बात यही हो सकती है कि इस सारे अर्थहीन, हानिकर, अनैतिक और नृशंस यन्त्रणा-व्यापार का अन्त कर दिया जाय। अनेक शताब्दियों से अपराधी समझे जाने वाले व्यक्तियों को प्राण-दण्ड दिया जाता रहा है। पर क्या इससे अपराधियों का विनाश हो गया? उनका विनाश होना तो एक ओर, उनकी संख्या में दो प्रकार से वृद्धि होती रही। अब निखल्यूडोव की समझ में आया कि समाज और सामाजिक व्यवस्था जो अक्षुण्ण बनी हुई है, उसका श्रेय उन वैध अपराधियों को नहीं है, जो दूसरों के अभियोगों का विचार करके उन्हें दण्ड देते हैं, बल्कि उस सरल मानव-समुदाय को है, जो इस पतनकारी वातावरण के होते हुए भी उसी प्रकार एक-दूसरे के साथ प्रेम और समवेदना करते हैं।

अपने इस तथ्य की पुष्टि पाने के लिए निखल्यूडोव ने धर्म-पुस्तक को प्रारम्भ से पढ़ना शुरू किया। जब उसने उसे समाप्त किया तो आज पहली बार उसे उसमें उन सुन्दर, शून्य अतिशयोक्तिपूर्ण और अव्यवहार्य विचारों के स्थान पर, सरल, सहज, प्रकृत विधानों के दर्शन हुए, जिन्हें यदि व्यावहारिक रूप दिया जाय तो सामाजिक जीवन में आश्चर्यजनक और पूर्णतया नवीन अवस्थाएँ उत्पन्न हो जायँ, जिनमें न केवल उस हिंसा का ही चिन्ह लुप्त हो जाय, जिसे देख कर निखल्यूडोव का हृदय इस प्रकार क्रोध से भर जाता था, बल्कि मनुष्य द्वारा प्राप्य उच्चतम स्वर्गीय विभूति—पृथ्वी पर स्वर्गीय सत्ता—प्राप्त हो जाय। वे पाँच विधान ये थे:—

पहला विधान (मैथ्यू ५, २१-२६) था कि मनुष्य को अपने सहबन्धु को न मारना चाहिए, उसे उससे अप्रसन्न तक न होना चाहिए, उसे किसी को निरर्थक न समझना चाहिए, और यदि वह किसी से लड़-झगड पड़ा हो, तो अपनी करतूत परमात्मा के सामने लाने (उससे प्रार्थना करने) से पहले ही उसे उससे मेल-जोल कर लेना चाहिए।

दूसरा विधान (मैथ्यू ५, २७-३२) था कि मनुष्य को व्यभिचार न करना चाहिए, और स्त्री के सौन्दर्य को अपनी भोग-लिप्सा का साधन तक न बनाना चाहिए, और यदि एक बार किसी स्त्री के साथ उसका नाता हो गया हो, तो उससे कभी विश्वासघात न करना चाहिए।

तीसरा विधान (मैथ्यू ५, ३३-३७) था कि मनुष्य को शपथ के बन्धन में कभी न बँधना चाहिए।

चौथा विधान (मैथ्यू ५, ३८-४२) था कि मनुष्य को ईंट का जवाब पत्थर से न देना चाहिए, बल्कि यदि उसके एक गाल पर थप्पड मारा गया हो तो उसे दूसरा गाल भी आगे कर देना चाहिए ; उसे क्षमा कर देना चाहिए। आघात को विनीत भाव से सहन कर लेना चाहिए, और किसी की सेवा करने से कभी मुँह न मोड़ना चाहिए।

पाँचवाँ विधान (मैथ्यू ५, ४३-४८) था कि मनुष्य को अपने शत्रुओं से न घृणा करनी चाहिए, न लडना चाहिए; बल्कि उनसे प्रेम करना, उनको प्रसन्न करना और उनकी सेवा करना चाहिए।

निखल्यूडोव लेम्प की ओर निर्निमेष भाव से देखता हुआ बैठा रहा और उसका हृदय निस्तब्ध सा हो गया। उसने मानव-जीवन की निदारुण अस्तव्यस्तता का स्मरण किया और स्पष्ट रूप से देखा कि यदि इन विधानों का पालन किया जाय तो मनुष्य का जीवन क्या से क्या हो जाय। उसकी आत्मा में एक ऐसे आह्लादातिरेक की बाढ़ आ गई, जिसकी अनुभूति उसने पहले कभी न की थी। ऐसा मालूम होता था मानो उसे बहुत दिनो की श्रान्ति और व्यथा-वेदना के बाद सुख और स्वच्छन्दता प्राप्त हो गई।

रात भर उसकी आँख न लग सकी, और जैसा कि धर्म-पुस्तक पढने वाले अनेकानेक व्यक्तियों के साथ घटित हुआ करता है, आज पहली बार उसे उन शब्दों मे एक नवीन अर्थ छिपा दिखाई दिया। वे पहले भी अनेक बार उसके सामने पढ़े गए थे, पर उसने कोई ध्यान न दिया था। वह इन आवश्यक, महत्वपूर्ण और हर्षदायक उद्‌घाटनों के घूंट इस प्रकार लेता रहा, जिस प्रकार स्पञ्ज जल का शोषण करता है। उसने जो कुछ पढ़ा, उसे जाना-बूझा प्रतीत

हुआ, और जिस बात को वह बहुत दिनों से जानता था, पर जिस पर न आन्तरिक हृदय से आस्था रख पाता था, न जिसके सम्पूर्ण मर्म से परिचित हो पाता था, उसकी ओर से अब वह सचेत हो उठा और उसे उसकी पुष्टि होती दिखाई दी। अब वह उसके मर्म से अवगत था और उस पर आस्था रखता था। अब वह न केवल इस मर्म से ही अवगत था, और न केवल इस पर आस्था ही रखता था कि यदि मनुष्य इन विधानों का पालन करे तो उसे उच्चतम स्वर्गीय विभूति प्राप्त हो सकती है, बल्कि वह इस बात से भी अवगत था और इस तथ्य पर भी आस्था रखता था कि इन विधानो का पालन करना मनुष्य-मात्र का कर्त्तव्य है, कि इसी में जीवन का एकमात्र सार निहित है, और कि इन विधानों से तनिक भी च्युत होने पर मनुष्यों को तत्काल उसका अभिशाप भोगना पड़ता है। सारे शिक्षण से यही एक तथ्य प्रस्रवित होता था। अङ्गूर के बाग वाले दृष्टान्त से इसकी स्पष्ट व्याख्या हो गई थी।

अङ्गूरों के माली समझते थे कि जिन अङ्गूरों के बाग़ में उन्हें स्वामी ने काम करने को भेजा है, वे उन्हीं की सम्पत्ति हैं, उस बाग़ के सारे पदार्थों की सृजना उन्हीं के लिए हुई है और उनका एकमात्र कर्त्तव्य उस बाग़ में जीवन के आनन्द लेना है। वे अपने स्वामी की बात भूल गए थे और जो कोई उन्हें उनके स्वामी का स्मरण कराता था, उसे वे मार डालते थे।

निखल्यूडोव ने सोचा—और क्या हम सब भी यही नहीं कर रहे हैं? हम भी अपने आपको अपने जीवन का स्वामी समझते हैं, और सोचते हैं कि जीवन आमोद-प्रमोद करने के लिए दिया

गया है?' पर यह सब कुछ अनर्गल है। हमें यहाँ किसी व्यक्ति-विशेष की इच्छा से, और किसी उद्देश्य से भेजा गया है। और हमने निश्चय कर लिया है कि जीवन का उद्देश्य आमोद-प्रमोद करना मात्र है, और इसीलिए हमें ये सारे कष्ट और परिताप सहन करने पड़े हैं। स्वामी के द्वारा काम करने के लिए भेजे गए कर्त्तव्य-पराङ्मुख श्रमजीवियों की भी यही दशा होती है। हम सबके स्वामी की अभिलाषा इन विधानों में निहित है, और एक बार इन विधानों के अनुरूप आचरण करने पर फिर स्वर्ग-साम्राज्य हमारी ही वस्तु है। फिर मनुष्य के लिए 'पृथ्वी पर अन्यतम मङ्गल स्थापित करना' बाएँ हाथ का खेल है।

"पहले भगवान के राज्य का और पुण्य मार्ग का अन्वेषण कर और ये सारे पदार्थ तुझे स्वतः ही प्राप्त हो जायँगे।" पर हम इन पदार्थों का अन्वेषण करते हैं, और इसीलिए हमें असफलता पर असफलता प्राप्त होती है।

"बस, यही मेरे जीवन का उद्देश्य है। अभी एक कार्य कठिनता से समाप्त हुआ होगा कि दूसरा कार्य आरम्भ हो गया।"

उस दिन रात में निखल्यूडोव के लिए एक बिलकुल ही दूसरे जीवन का आविर्भाव हुआ। कारण कि उस रात के बाद से उसने जो कुछ भी कार्य किया, उसके निकट उसका मर्म बिलकुल ही विभिन्न प्रकार का रहा।

उसके इस नवजीवन का किस प्रकार अन्त होगा, यह केवल समय ही बताएगा।

॥ समाप्त ॥